मुग़ल सम्राट बाबर

मुग़ल सम्राट बाबर

लेखक

डॉ० राधेश्याम

एम. ए. डी. फिल. (इलाहाबाद)

मध्यकालीन एवं आधुनिक

इतिहास विभाग

इलाहाबाद विश्वविद्यालय

इलाहाबाद



बिहार हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

सम्मेलन-भवन, कदम कुआँ

पटना-३

विश्वविद्यालय-स्तरीय ग्रंथ-निर्माण-योजना के अंतर्गत भारत सरकार (शिक्षा एवं समाज-कल्याण-मंत्रालय) के शत-प्रतिशत अनुदान से बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित।

●

प्रकाशित ग्रंथ-संख्या : ८१

●

प्रथम संस्करण : जनवरी, १९[illegible]४—२००० प्रतियाँ

●

मूल्य : रु० १४.०० (चौदह रुपए मात्र)

●

प्रकाशक :
बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी
सम्मेलन-भवन,
पटना—८००००३

●

मुद्रक :
लीडर प्रेस,
३, लीडर रोड
इलाहाबाद

प्रस्तावना

शिक्षा-संबंधी राष्ट्रीय नीति-संकल्प के अनुपालन के रूप में विश्वविद्यालयों में उच्चतम स्तरों तक भारतीय भाषाओं के माध्यम से शिक्षा के लिए पाठ्य-सामग्री सुलभ करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने इन भाषाओं में विभिन्न विषयों के मानक ग्रंथों के निर्माण, अनुवाद और प्रकाशन की योजना परिचालित की है। इस योजना के अंतर्गत अंग्रेजी तथा अन्य भाषाओं के प्रामाणिक ग्रंथों का अनुवाद किया जा रहा है तथा मौलिक ग्रंथ भी लिखाए जा रहे हैं। यह कार्य भारत सरकार विभिन्न राज्य सरकारों के माध्यम से तथा अंशतः केंद्रीय अभिकरण द्वारा करा रही है। हिंदी-भाषी राज्यों में इस योजना के परिचालन के लिए भारत सरकार के शत-प्रतिशत अनुदान से राज्य-सरकार द्वारा स्वायत्तशासी निकायों की स्थापना हुई है। बिहार में इस योजना का कार्यान्वयन बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी के तत्वावधान में हो रहा है।

योजना के अंतर्गत प्रकाश्य ग्रंथों में भारत सरकार द्वारा स्वीकृत मानक पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग किया जाता है, ताकि भारत की सभी शैक्षणिक संस्थाओं में समान पारिभाषिक शब्दावली के आधार पर शिक्षा का आयोजन किया जा सके।

प्रस्तुत ग्रंथ बाबर डॉ० राधेश्याम की मौलिक कृति है, जो भारत सरकार के शिक्षा एवं समाज-कल्याण-मंत्रालय के शत-प्रतिशत अनुदान से बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित की जा रही है। यह ग्रंथ विश्वविद्यालय-स्तर के विद्यार्थियों के लिए महत्त्वपूर्ण होगा, ऐसा विश्वास है।

आशा है, अकादमी द्वारा मानक ग्रंथों के प्रकाशन-संबंधी इस प्रयास का सभी क्षेत्रों में स्वागत किया जाएगा।

लक्ष्मीनारायण सुधांशु

पटना,
दिनांक १५-१-७४

अध्यक्ष
बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी

प्रकाशकीय

प्रस्तुत ग्रंथ बाबर डॉ० राधेश्याम की मौलिक रचना है। डा०, राधेश्याम जी विद्वान, इतिहास-विषय के अध्यापक और अनुभवी लेखक हैं। यह ग्रंथ इन्होंने बड़े परिश्रमपूर्वक लिखा है। आशा की जाती है कि यह ग्रंथ विश्वविद्यालय-स्तर के विद्यार्थियों के लिए लाभदायक होगा।

इसका मुद्रण-कार्य लीडर प्रेस, इलाहाबाद ने किया है। इसके प्रूफ-संशोधन का कार्य लेखक ने स्वयं करने की कृपा की है। श्रीयुत एस० के० तिवारी, श्री निरंजन लाल श्रीवास्तव, एवं श्री बुद्धिसेन शर्मा, ये सभी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

शिवानन्द प्रसाद

पटना
दिनांक १५-१-७४

निदेशक
बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी

पूजनीय

अम्मा व बाबू

को

सादर समर्पित

दो शब्द

बावर का जीवन, उसकी कृतियाँ, उपलब्धियाँ तथा साहित्यिक योगदान इतिहासकारों, फारसी तथा तुर्की साहित्यकारों के लिये सदैव से एक रोचक विषय रहा है। उसके जीवन के सभी पहलुओं एवं व्यक्तित्व में इतना आकर्षण था कि आधुनिक इतिहासकारों एवं साहित्यकारों की दृष्टि बार-बार उसी पर केन्द्रित रही। परवर्ती एवं आधुनिक इतिहासकारों ने उसके हृदयग्राही गुणों, उदार प्रकृति, आकर्षक एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं नम्र स्वभाव की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

हिन्दुस्तान में मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बावर के जीवन एवं उसके क्रिया-कलापों पर अनेक ग्रंथ आंग्ल भाषा में लिखे जा चुके हैं। सर्वप्रथम, विलियम अर्सकिन ने "बाबरनामा" का अनुवाद "मेमायर्स ऑव ज़हीरुद्दीन मोहम्मद बाबर" (लन्दन, १८२६) के शीर्षक के अंतर्गत किया। तदुपरान्त लिडिन और अर्सकिन ने "लाइफ ऑव बाबर इम्परर ऑव हिन्दुस्तान" (लन्दन, १८४४) नामक ग्रंथ की रचना की। दस वर्ष पश्चात् विलियम अर्सकिन ने अपनी खोज के आधार पर "हिस्ट्री ऑव इण्डिया" (बाबर एण्ड हुमायूं) (लन्दन, १८५४) की रचना की। सम्भवतः उनसे प्रेरणा ग्रहण करते हुए श्रीमती बेवरिज ने "बाबरनामा" का अंग्रेजी में अनुवाद कर १९२१ ई० में पुनः इतिहासकारों का ध्यान बाबर की ओर आकृष्ट किया। श्रीमती बेवरिज की अमूल्य कृति एवं शोध-निबंधों का स्वागत सभी समकालीन एवं परवर्ती इतिहासकारों ने किया। श्रीमती बेवरिज द्वारा किये गये अनुवाद और शोध कार्य के आधार पर बाबर पर अन्य ऐतिहासिक ग्रंथों की रचना कालान्तर में हुई। बाबर पर लिखे गये ग्रंथों एवं शोध-निबंधों में कमी केवल इतनी ही थी कि वे मुख्यतः "बाबरनामा" पर आधारित थे अथवा इन ग्रंथों में परवर्ती ऐतिहासिक ग्रंथों का बहुत ही कम प्रयोग किया गया। यही नहीं, उक्त ग्रंथों

में बाबर के व्यक्तित्व का पूर्णरूपेण निरूपण भी नहीं किया जा सका। प्रोफेसर रश्ब्रुक विलियम्स की कृति "ऐन अम्पायर विल्डर ऑव दी सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" में, जो कि बाबर पर सुप्रसिद्ध एवं उत्कृष्ट रचना है, उन्होंने बाबर के राजनैतिक एवं व्यक्तिगत जीवन का १५३० ई० तक संक्षिप्त ब्योरा तो अवश्य प्रस्तुत किया, किन्तु उसके प्रशासन एवं उसकी नीतियों पर पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला। यही कमी अन्य कृतियों में भी खटकती है।

स्नातकोत्तर कक्षाओं के लिये मुग़ल सम्राटों के इतिहास पर हिन्दी में ग्रंथों की अभी तक बड़ी कमी है। इस कमी को पूरा करने की दृष्टि से मैंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना की है। मैंने फारसी के उपलब्ध मूल ग्रंथों और उनके अनुवादों का प्रयोग किया है। जिन मूल ऐतिहासिक ग्रंथों को मैंने प्राथमिकता एवं महत्ता दी है केवल उन्हीं का नाम टिप्पणियों में दिया है। यह कृति शोध-प्रबंध के प्रणयन की दृष्टि से नहीं लिखी गई। मेरा उद्देश्य स्नातकोत्तर कक्षाओं के हिन्दी माध्यम के विद्यार्थियों, जिनकी संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है, में मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के प्रति रुचि उत्पन्न करना और उनके समक्ष उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व एवं उसकी उपलब्धियों को सही ढंग से रखना है। जिस ढंग से मैंने आधुनिक इतिहासकारों के बाबर से सम्बंधित कुछ विचारों का खण्डन किया है सम्भव है कि पाठकगण उससे सहमत न हों। किन्तु जहाँ कहीं भी मैंने ऐसा किया है वहाँ अपने तर्क और व्यक्तिगत दृष्टिकोण दोनों ही सामने रख दिये हैं।

प्रस्तुत कृति की रचना करते समय मुझे वयोवृद्ध एवं प्रख्यात इतिहासकार डा० तारा चन्द, जो अब हमारे बीच नहीं हैं, से प्रेरणा मिली। मेरे कार्य में उनकी रुचि अंत तक बनी रही। किन्तु दुर्भाग्यवश कृति के प्रकाशन में विलम्ब के कारण वे इसे प्रकाशित कृति के रूप में न देख सके। अपने गुरु श्रद्धेय डा० बनारसी प्रसाद सक्सेना, भूतपूर्व अध्यक्ष मध्यकालीन एवं आधुनिक इतिहास विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय तथा जोधपुर विश्वविद्यालय का भी मैं अत्यन्त आभारी हूँ जिन्होंने समय-समय पर मुझे उक्त कृति की रचना के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण सुझाव तथा निर्देशन दिये। उन्होंने इस कृति की प्रस्तावना भी लिखी है जिसका आभार प्रगट करने के लिये मेरे पास उपयुक्त शब्द नहीं हैं। श्रद्धेय डा० विशेश्वर प्रसाद, भूतपूर्व अध्यक्ष इतिहास

विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय एवं कुलपति भागलपुर विश्वविद्यालय के प्रति मैं विशेष रूप से आभारी हूँ, जिनकी रुचि इस कृति के लेखन एवं प्रकाशन में निरन्तर बनी रही। मैं अपने परम मित्र डा० लईक अहमद, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, यूइंग क्रिश्चियन डिग्री कालेज, इलाहाबाद, श्री ब्रह्मदेव प्रसाद अम्बष्ट, के० पी० जायसवाल इन्सटीच्यूट पटना, डा० जे० एम० बनर्जी तथा अपने शोध-छात्र श्री इशरत हुसेन अन्सारी का भी विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने प्रस्तुत ग्रंथ की रचना में मेरी सहायता की। डा० जेड० ए० देसाई, आर्कियालॉजिकल सव ऑव इण्डिया, नागपुर का मैं बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने बाबरकालीन अभिलेखों की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट किया और इस विषय पर प्रकाशित सामग्री मुझे भेजी। डा० जमीरुद्दीन सिद्दीक़ी, रीडर, इतिहास विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, ने "मकतूबाते शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही" की पाण्डुलिपि में से शेख गंगोही का बाबर के नाम पत्र की प्रतिलिपि भेजकर मुझे अनुग्रहीत किया। मेरी धर्मपत्नी कमला ने इस कार्य में जिस प्रकार हाथ बटाया उसके लिये मैं उनका हृदय से आभारी हूँ। अंत में, मैं बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी को धन्यवाद देता हूँ जिसने मेरी कृति प्रकाशन हेतु स्वीकार की।

प्रस्तुत कृति को मुद्रित करने में श्री सन्तोष तिवारी, मैनेजर, जाब विभाग, लीडर प्रेस, श्री एन० एल० श्रीवास्तव, तथा श्री बुद्धिसेन जी शर्मा ने जिस प्रकार तत्परता दिखाई, उसके लिए मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ!

मेरी इस कृति में जो त्रुटियाँ रह गई हैं उनके लिये केवल मैं ही उत्तरदायी हूँ जिसके लिये पाठकगण मुझे क्षमा करेंगे। आशा है कि मेरी इस कृति से वे लाभान्वित होंगे। उनके सुझावों को मैं सहर्ष स्वीकार करूँगा।

प्राक्कथन

जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर इतिहासकारों के लिए हमेशा से एक रोचक विषय बना रहा है। अंग्रेजी भाषा में उसके जीवन चरित्र पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं जिनमें उसकी आश्चर्यजनक कृतियों का विवरण दिया गया है। अर्स्किन ने अत्यन्त विस्तार से फरग़ना से लेकर भारत विजय तक का हाल लिखा है। तथा प्रो० रश्ब्रुक विलियम्स ने आकर्षक शैली द्वारा अपने पूर्ववर्ती लेखक का अनुसरण करते हुए कुछ विशेष पहलुओं पर प्रकाश डाला है। उन्होंने पानीपत और खनुवा की लड़ाइयों की व्यूह रचना का चित्रण करके बाबर की सामरिक सूझबूझ और उसकी श्रेष्ठ सैनिक व्यवस्था को प्रदर्शित करते हुए पश्चिमी इतिहासकारों के इस विचार का समर्थन किया है कि रणक्षेत्र में भारतीय कौशल सदैव ही निम्न कोटि का रहा है।

किन्तु इन महान ग्रन्थकारों का दृष्टिकोण केवल एक ही दायरे तक सीमित रहा है और वह है बाबर की सैनिक सफलता। भारत में निरन्तर विजयों की पृष्ठभूमि में उसकी प्रारंभिक कठिनाइयों पर एक प्रकार से पर्दा पड़ जाता है। इब्राहीम लोदी तथा राणा सांगा की हार के मुक़ाबले में शैबानी खां की जीत धूमिल सी हो जाती है। स्वभावतः बाबर के गुण उभर आते हैं और उसके दोष दब जाते हैं। यद्यपि इसमें संदेह नहीं कि बाबर एक वीर योद्धा था और धैर्य से परिपूर्ण। विकट से विकट संकट में भी वह हताश न होता था और अपनी आकांक्षाओं को न दबाता था, बल्कि उनको ऊपर ही उठाए रहता था। परन्तु इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि ऐसे भी अवसर आए जब कि उसको अपमानजनक समझौते करना पड़े या उसको हार की संभावना से ही विचलित होना पड़ा। शैबानी खां के तो नाम से ही उसके होश उड़ जाते थे। अपने इस उज़बेग शत्रु से जान बचाने के लिए उसको अपनी बहन को भी समर्पित करना पड़ा। फिर जब वह काबुल में था तब इतनी सूचना पाते ही कि शैबानी खां उस ओर आ रहा है उसने

पूर्व दिशा में भागने का विचार दृढ़ कर लिया। तत्पश्चात्, पानीपत और खनवा के रण क्षेत्रों में भी ऐसे अवसर आए जब कि इस शेर-ए-बबर का पित्ता पिघलने लगा। उसके बहादुर सिपाही राजपूतों के दमख़म से काँपते थे। उनका साहस क़ायम रखने के लिए उसको नाटकीय चालें खेलना पड़ीं। कहने का तात्पर्य यह है कि उसके सैनिक कौशल का जो प्रशस्तिगान किया गया है वह अतिरंजित है।

प्रोफ़ेसर रशब्रुक विलियम्स ने बाबर को साम्राज्य निर्माता की संज्ञा दी है। यह भी अतिशयोक्ति है क्योंकि जब हम उसके समकालीन शाह इस्माईल सफवी का स्मरण करते हैं तो हमको बाबर की निम्नता सुस्पष्ट हो जाती है। इस्माईल ने जो सफवी साम्राज्य स्थापित किया वह अधिक स्थायी और अधिक गौरवपूर्ण सिद्ध हुआ। इसका निश्चायक प्रमाण यह भी है कि बाबर उसी की सहायता के बल पर तीसरी बार समरकन्द पर अधिकार कर सका। इतिहासकारों ने उसके पहले दो बार समरकन्द के आधीनीकरण को भी एक विलक्षण कृति बताया है। वह विलक्षण केवल इस अर्थ में थी कि बाबर अभी एक बालक ही था। इस अवस्था में उसका इतना महत्वाकांक्षी होना आश्चर्यजनक अवश्य था। परन्तु जिस प्रकार उसने समरकन्द पर अधिकार किया उसमें उसके सामरिक कौशल का कोई भी चिह्न नहीं मिलता और न उसने क़ाबुल ही किसी विलक्षण सैनिक चाल से अधिकृत किया। केवल अनुकूल परिस्थितियों ने उसका साथ दिया।

आधुनिक युग के इतिहासकारों ने बाबर का प्रशस्तिगान तो किया है किन्तु दो मौलिक प्रश्नों का उत्तर नहीं दिया है। प्रथम यह कि यदि उसमें अद्भुत सैनिक गुण थे तो प्रारंभिक जीवन में अपनी ही मातृभूमि में उसको बार-बार क्यों भटकना पड़ा? और दूसरा यह कि तैमूर और चंगेज खां का वंशज होते हुए भी वह अपने ही देश में विदेशी क्यों हो गया? इसमें संदेह नहीं है कि बाबर में असाधारण गुण थे, परन्तु इनका क्रमशः विकास हुआ और अनुभव द्वारा यह परिपक्व हुए। इसलिए यह धारणा कि वह शुरू से ही कौशल संपन्न था एक भारी भ्रम है और इस भ्रम का प्रमुख कारण है भारत में उसकी अलंटित विजयों का चित्रण। इतिहासकारों ने इसमें भी अतियुक्ति-पूर्ण शब्दावली का प्रयोग किया है और वास्तविकता पर एक हद तक पर्दा डाल दिया है। उसको पानीपत एवं खनवा की विजय इतनी आसानी से

नहीं प्राप्त हुई जैसा कि बताया जाता है। इन संग्रामों में विपक्षी दलों की वही दशा थी जो कि बाबर की सर-ए-पुल के मैदान में रही थी। समान साधनों और समान रणनीति के टकराव में उसे नीचा भी देखना पड़ा। काबुल आने के पश्चात् जब कि उसका ईरान से सम्पर्क स्थापित हुआ तब ही वह अपनी सैनिक व्यवस्था में नए साधनों को शामिल कर सका। अतः भारत के योद्धाओं को केवल तुर्की या अफ़ग़ान वीरों का ही सामना न करना पड़ा बल्कि अग्नि-अस्त्र शस्त्रों का भी मुक़ाबला करना पड़ा। प्रोफेसर रश्बुक विलियम्स ने पानीपत या खनवाँ के रणक्षेत्रों में बाबर के व्यूह रचना का जो चित्र दिया है वह मूलतः इब्राहीम लोदी या राणा सांगा की व्यूह रचना से विभिन्न नहीं दिखाई पड़ता। यदि दोनों में मार्मिक अन्तर है तो इतना ही है कि बाबर में तोपखाने का और तुलुग़मा का प्रयोग किया जिसका अभी भारत में प्रचलन न था। यदि परंपरागत रण नीति का ही बाबर ने पालन किया होता तो संभवतः उसको भारत से वैसे ही भागना पड़ता जैसे कि उसको सर-ए-पुल का मैदान छोड़ना पड़ा था।

बाबर का जीवन युद्ध करते ही व्यतीत हुआ तथा सामान्य रूप से इतिहासकारों ने इसी पहलू पर अधिक बल दिया है, परन्तु उसके जीवन के और भी कई दिलचस्प पहलू हैं जिन पर प्रकाश डालना आवश्यक है। बाबर एक निर्भीक योद्धा तो था ही इसके साथ साथ वह कवि और साहित्य निर्माता भी था। उसकी आत्मकथा इतिहास एवं साहित्य की एक अनुपम थाती है। इसके अतिरिक्त वह जीव विज्ञान और वनस्पति विज्ञान का भी शास्त्री था। उसको कला में केवल रुचि ही न थी बल्कि वह उसका पारखी भी था। उसके बारे में यह सही ही कहा गया है कि उसकी दृष्टि एक कलाकार की दृष्टि थी और उसकी लेखन शैली कवि-साहित्यकार की शैली थी। उसके धार्मिक विचार लचीले और उदार थे। यद्यपि उसने ग़ाज़ी की उपाधि तो धारण की पर उसके अधिकांश शत्रु-उसके सहधर्मी ही थे। इस संदर्भ में इस उपाधि का अधिक महत्व प्रतीत नहीं होता। राजनीतिक लाभ प्राप्ति के लिए वह अपनी धार्मिक निष्ठा को भी तिलांजलि देने में समर्थ था। इन मानों में वह एक विचित्र व्यक्ति था। उसकी बुद्धि पैनी थी तथा शत्रु एवं मित्र का वह न केवल उचित मूल्यांकन ही कर सकता था बल्कि उनके चरित्र का निर्पेक्ष भाव से चित्रमय चित्रण भी कर सकता था। कहने का तात्पर्य यह

है कि बाबर के जीवन चरित्र की व्याख्या न केवल राजनीतिक एवं सामजिक दृष्टि से ही होना चाहिएँ बल्कि उसके सर्वांगिक गुणों के पृष्ठभूमि में होना चाहिए ।

डा० राधेश्याम ने प्रस्तुत पुस्तक में इस अभाव को बहुत ही अच्छी तरह ही से पूरा किया है। उन्होंने समस्त उपलब्ध सामग्री का सिंहावलोकन और अध्ययन करके अपने विचारों को पेश किया है। इनमें आलोचना और प्रशंसा दोनों ही का सम्मिश्रण और संतुलन है। बाबर की सामरिक कृतियों पर बल देते हुए उसके शासन प्रबंध तथा उसकी धार्मिक नीति पर भी प्रकाश डाला है। अतः हिन्दी भाषा में तो अभी तक इस प्रकार की कोई भी रचना मेरी नजर से नहीं गुजरी है। अंग्रेजी भाषा में कई टकसाली ग्रन्थ तो हैं किन्तु उनका दायरा इतना व्यापक नहीं है। इसके अलावा जो मूल सामग्री अंग्रेजी लेखकों को प्राप्त न थी लेखक ने उसका भी बहुत ही विवेक से प्रयोग किया है। मुझे पूर्ण आशा है कि इतिहास विषय के पठन-पाठन करने वालों के लिए यह रचना अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के लिखने का प्रोत्साहन तो स्वर्गीय डाक्टर तारा चन्द ने दिया था और वह ही इसकी प्रस्तावना लिखते परन्तु उनकी अकस्मात् मृत्यु के कारण यह उत्तरदायित्व मुझे ग्रहण करना पड़ा। मैं सहर्ष इस पुस्तक को इतिहास के प्रेमियों के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

प्रयाग
१–१–७४

विषय सूची

प्रथम अध्याय

प्रारम्भिक जीवन

मुग़ल सम्राट बाबर

भारत में मुग़ल साम्राज्य का संस्थापक ज़हीरुद्दीन मुहम्मद था। उसका उपनाम बाबर था। उसका जन्म ६ मुहर्रम ८८८ हि० (१४ फरवरी, १४८३ ई० को फरग़ाना में हुआ। हैदर मिर्ज़ा दोघ़लत के अनुसार उलुग़ मिर्ज़ा के एक दरबारी विद्वान मौलाना मुनीर मर्ग़ीनानी ने बाबर की जन्म तिथि "शश मुहर्रम" शब्दों में निकाली।[1] समकालीन ज्योतिषियों के मतानुसार बाबर के जन्म का दिन एवं वर्ष दोनों ही शुभ थे। वर्ष की संख्या में ८ का तीन बार आना और दिवस की संख्या में ६ का तीन बार आना एक अद्वितीय सन्तुलन है जो कि एक सुप्रसिद्ध जीवन का परिचायक है।[2] बाबर के पिता का नाम उमर शेख़ मिर्ज़ा था। वह हज़रत नासिरुद्दीन ख़्वाजा नक़्शबन्दी के वंशज ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार का परम भक्त था। उमर शेख़ मिर्ज़ा के अनुरोध पर ही उक्त ख़्वाजा ने नवजात शिशु का नामकरण किया।[3] चूँकि

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृष्ठ १७३; फ़िरिश्ता ने लिखा है कि हिसामी कराकुली ने बाबर की जन्म-तिथि इस पद में दी है :—

"शश मुहर्रम ज़ाद आं शाहे मुकर्रम,
तारीख़-ए-मौलिदश हम आमद शश मुहर्रम"

—तारीख़-ए-फ़िरिश्ता, (मू० ग्रन्थ), पृ० १९१; मुहम्मद अली ग़नी ने हिसामी कराकुली का नाम मुहम्मद हुसैन कराकुली दिया है—'ए हिस्ट्री आफ़ दि परशियन लैंगुएज एण्ड लिटरेचर ऐट दि मुग़ल कोर्ट, बाबर टु अकबर' भाग १, पृ० १।

२. अकबर नामा (मू०) भाग १, पृ० ८६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२४-२५।

३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० १७३; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२५।

तुर्कों को पूरा नाम उच्चारण करने में असुविधा होती थी, इस कारण उन्होंने उसका सूक्ष्म नाम वावर रख लिया, अतः इतिहास में वह इसी नाम से प्रसिद्ध हुआ ।

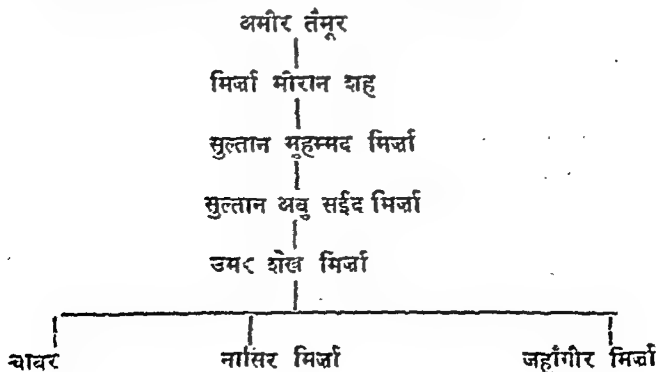
वावर की धमनियों में मध्ययुग के दो सर्वश्रेष्ठ एवं सुविख्यात विजेताओं और साम्राज्य निर्माताओं का रक्त प्रवाहित था । माता की ओर से वह चंगेज़ खान का वंशज था[1] और पिता की ओर से तैमूर लंग

---

१. वावर की आत्मकथा में उसकी माँ के वंश का जो प्रक्षिप्त विवरण दिया गया है वह इस प्रकार से है :— यूनुस खान चंगेज़ खान के द्वितीय पुत्र का वंशज था । कुतलुग निगार खानुम वावर की माँ, यूनुस खान की दूसरी पुत्री थी । युनुस खान पुत्र वाएस खान, पुत्र शेर अली उग़लान, पुत्र मुहम्मद खान, पुत्र ख़िज्र ख्वाजा खान, पुत्र तुग़लक तीमूर खान, पुत्र ईसन वुग़ा खान, पुत्र दावा खान, पुत्र वोरक खान, पुत्र ईसून तवा खान, पुत्र मौतू खान, पुत्र चग़ताई खान, पुत्र चंगेज़ खान—वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १६; अकवर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२४; प्रो० रशब्रुक विलियम्स ने अरस्किन और पेवेट डी० कोर्टिले द्वारा किये गए 'वावर नामा' के अनुवाद के आधार पर वावर की माँ की वंशावली इस प्रकार से दी है—वावर की मां कुतलुग़ निगार खानुम, पुत्री यूनुस खान, पुत्र वाएस खान, पुत्र शेर अली खान, पुत्र मुहम्मद ख्वाजा खान, पुत्र ख़िज्र ख्वाजा खान, पुत्र तुग़लक तीमूर खान, पुत्र ईसन वुग़ा खान, पुत्र दावा चिचान, पुत्र वोरक खान (ग्यासुद्दीन) पुत्र सुंकार, पुत्र कामग़ार, पुत्र चग़ताई पुत्र चंगेज़ खान—"ऐन इम्पायर विलडर आफ़ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", (दिल्ली), पृ० २२; इस प्रकार प्रो० रशब्रुक विलियम्स ने जो वंशावली दी है वह वावर नामा में दी गई प्रक्षिप्त वंशावली से भिन्न है । वावर नामा की प्रक्षिप्त वंशावली में चग़ताई खान के पुत्र मौतूखान और पौत्र का नाम ईसून तवा खान वताया गया है और वोरक खान को ईसून तवा खान का पुत्र वताया गया है । जव कि अरस्किन ने वोरक खान को सुंकर का पुत्र, कामग़ार का पौत्र और कामग़ार को चग़ताई खान का पुत्र वतलाया है ।

का।[1] आश्चर्य नहीं कि उसको दोनों ही वंशों की उलझी हुई पारस्परिक विरोधी गुत्थियों का केवल सामना ही नहीं करना पड़ा वरन् उनका शिकार भी होना पड़ा। इससे पूर्व कि हम बाबर की प्रारम्भिक कठिनाइयों पर दृष्टि डालें, आवश्यक यह प्रतीत होता है कि उन गुत्थियों का स्पष्टीकरण कर दिया जाय जो कि मध्य एशिया की राजनीति में चंगेज़ खाँ और तैमूर के कार्य-कलापों के फलस्वरूप उत्पन्न हो गई थीं। इस सन्दर्भ में यह भी कह देना उचित होगा कि बाबर के जीवन पर इन दोनों महान् व्यक्तियों के आदर्श एवं उद्देश्यों का पूर्णरूपेण प्रभाव पड़ा। मध्य युगीन इतिहास में यह संधिकाल कहा जा सकता है। इस समय नई और पुरानी परम्पराएँ टकराईं और एक नई व्यवस्था का जन्म हुआ। इसी सन्धि युग में ११५९ ई० में मंगोल जाति में एक प्रतिभाशाली, कर्मठ, साहसी, महत्वाकांक्षी व्यक्ति का जन्म हुआ जिसका नाम चंगेज़ खान था। उसमें वे सब गुण विद्यमान थे, जो मंगोलों की विभिन्न एवं बिखरी जातियों को एक सूत्र में बाँध सके तथा उनकी एकत्रित शक्ति के बल-बूते पर एक विशाल साम्राज्य का निर्माण कर सके। अपने देश के चरागाहों से मंगोल योद्धाओं की टोलियाँ लेकर चंगेज खान ने निकटवर्ती प्रदेशों पर आक्रमण किया और धीरे-धीरे उसकी गगन चुम्बी पताकाएँ समस्त एशिया में लहराने लगीं। उसने पेकिंग पर विजय पाई और सम्पूर्ण उत्तरी चीन पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित कर ली। तत्पश्चात् उसकी मंगोल सेनाओं ने मावराउन्नहर के तुर्कों पर आक्रमण किया, उसके पश्चात् वह खुरासान तथा ख्वारिज़म के सुप्रसिद्ध एवं समृद्धिशाली नगरों की ओर बढ़ीं। एक एक

१. पिता की ओर से बाबर की वंशावली इस प्रकार से है—



कर उन्होंने सबको लूटा और मिट्टी में मिला दिया। फिर यह लोग आँधी के समान कन्धार, गज़नी इत्यादि प्रदेशों को पददलित करते हुए सिंध नदी के तट तक पहुँच गए और यहाँ तक तुर्की प्रभाव एवं सत्ता को नष्ट-भ्रष्ट कर डाला।

चंगेज़ खान एक महान् विजेता ही नहीं वरन् एक विशाल साम्राज्य एवं शासन व्यवस्था का संस्थापक भी था और दूरदर्शी भी। वह जानता था कि संस्थापक की मृत्यु के पश्चात् साम्राज्य अधिक समय तक नहीं ठहरते। वह यह भी जानता था कि जिन अमंगोल जातियों पर उसने तलवार के बल पर जो विजय प्राप्त की थी वह अस्थायी है; उसके आँख मूंदते ही वह समस्त पराजित जातियाँ पुनः अपनी खोई हुई शक्ति एवं प्रतिष्ठा को प्राप्त करने के लिए उठ खड़ी होंगी। वास्तव में प्राचीन एवं मध्ययुग में विशाल साम्राज्य को एकता के सूत्र में बाँध कर रखना एक असम्भव कार्य था। इस विषमता से बचने के लिए चंगेज़ खान ने अपने जीवन काल में ही अपने साम्राज्य का विभाजन कर दिया। अपने ज्येष्ठ पुत्र जूजी को उसने किपचाक के मैदान दे दिए। किन्तु जूजी अपने पिता के जीवन काल में ही परलोक सिधार गया। जूजी की मृत्यु के पश्चात् उसका हिस्सा उसके पुत्र बातू (१२४३-१२५६) को प्रदान कर दिया गया। इसमें सर नदी के निचले प्रदेशों से लेकर कालासागर तथा कैस्पियन सागर के तट तक फैले हुए प्रदेश सम्मिलित थे। बातू ने अपनी विजयों द्वारा अपने वंश का गौरव बढ़ाया और साम्राज्य की सीमाएँ पूर्वी योरुप तक बढ़ा ली। बातू की नवीं पीढ़ी में एक ऐसे व्यक्ति का जन्म हुआ जिसने न केवल अपने वंश का गौरव ही बढ़ाया वरन् एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना कर मध्य एशिया की राजनीति में उथल-पुथल भी मचा दी।

इस व्यक्ति का नाम उज़बेग खान था। वह एक लोकप्रिय शासक था। व्यक्ति की प्रतिभा एवं गुणों की परख करना तथा ऐसे गुण सम्पन्न व्यक्ति को सम्मानित करना वह जानता था। उसी की प्रेरणा के फलस्वरूप उसकी जाति के लोगों ने इस्लाम धर्म को स्वीकार किया। अतः इस घटना की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिए जूजी की जाति के वे लोग, जिन्होंने इस्लाम धर्म ग्रहण किया और जो उसके समर्थक थे, उज़बेग जाति के नाम से प्रसिद्ध हुए। वे उज़बेग खान के जीवन काल में तत्कालीन राजनीति में भाग

लेकर नाम कमा न सके। और न ही उजबेग खान की मृत्यु के पश्चात् तथा उसके उत्तराधिकारियों के समय ही उजबेग सामूहिक शक्ति के रूप में हमारे सामने आते हैं। उजबेग खान की मृत्यु के लगभग डेढ़ सौ वर्ष उपरान्त जब किपचाक के मैदानों की वे जातियां जो कि गोल्डन होर्डस् (Golden Hordes) के नाम से प्रसिद्ध थीं, चार भागों में तितर-बितर हो गई, और जब कि रूस में होने वाले राजनीतिक परिवर्तनों से मुस्लिम सत्ता खतरे में पड़ गई, उस समय इसी जाति के एक व्यक्ति, अबुलखैर का भाग्योदय हुआ। अबुलखैर ने उजबेगों की सहायता से दश्त किपचाक पर अपना स्वतंत्र प्रभाव स्थापित कर लिया। वह एक कुशल शासक था। उसके उजबेग अनुचरों ने उसकी तन-मन से सेवा की तथा उसे शक्ति प्रदान कर एक प्रतिभाशाली शासक बनाया। ईसाई जगत के उत्तर दिशा में जब मुस्लिम सत्ता के विरुद्ध तूफ़ान उठा तब, दश्त किपचाक से उसे भागना पड़ा। अबुलखैर ने अपने तम्बुओं और असभ्य कबीली जातियों को समेट कर पूर्वी चरागाहों में शरण ली। यहाँ उसकी ख्याति इतनी बढ़ी कि अबू सईद, मुहम्मद जुकी तथा हुसैन बैक़रा जैसे तैमूरी शासकों ने भी उससे सहायता माँगी।

अबुल खैर ने कभी भी अपने जीवन काल में विशाल प्रदेशों को जीत` का स्वप्न नहीं देखा क्योंकि वह जानता था कि तत्कालीन परिस्थिति में मध्य एशिया में किसी प्रदेश पर विजय प्राप्त करना इतना आसान कार्य नहीं है। यही कारण है कि तैमूरी परिवार के वंशजों के आपसी संघर्ष एवं गृहयुद्ध में उनका पक्ष लेकर उन्हें सहायता पहुँचाने तक ही उसने अपना कार्य सीमित रखा। यह कहा जाता है कि जब भी कभी वह अपनी सेनाओं को ले कर अबू सईद या मिनुचेहेर मिर्ज़ा या सुल्तान हुसेन की सहायता करने के लिए निकला, उसके उजबेग सैनिक सदैव धन लेकर वापस घर लौटे। रेगिस्तान के किसी भी शासक को ४० वर्षों में इतनी ख्याति प्राप्त नहीं हुई जितनी कि अबुल खैर को। लेकिन तुर्कमानो की एक कहावत है कि 'एक ही फूँक से जिस प्रकार रेगिस्तान की बालू उड़ाई जा सकती है, उससे भी कहीं जल्दी एक मनुष्य का भाग्य उजाड़ा जा सकता है।' यह कहावत अबुल खैर के बारे में चरितार्थ होती है। अबुल खैर की बढ़ती हुई शक्ति एवं प्रभाव को देखकर कुछ लोग उससे जलने लगे। निकटवर्ती मैदानों में रहने वाले 'भूरी दाढ़ी' वाले लोग उसके शत्रु हो गए। यही नहीं, उसके निकटतम

सम्बन्धी, जिनमें कि बर्की सुल्तान भी एक था, उसके विरुद्ध हो गया। इन लोगों ने मिल कर उसे शक्तिहीन कर दिया और एक युद्ध में उसे मार डाला। उसके परिवार के सदस्य तितर-बितर हो गये। उसके ११ पुत्रों में से शैख़ हैदर सुल्तान ही नाम मात्र को उसका उत्तराधिकारी बना। उसका प्रभाव-क्षेत्र बहुत ही सीमित था और कार्य-क्षेत्र संकुचित। आम उज़बेगों की दृष्टि अबुल ख़ैर के एक प्रतिभाशाली, साहसी एवं युवक पौत्र युवराज मुहम्मद शैबानी जो कि 'शाह-ए-बख़्त' (भाग्यशाली) के नाम से प्रसिद्ध था, पर थी। अपनी युवावस्था में ही शैबानी ने अपने पराक्रम के अनेक ज्वलन्त उदाहरण प्रस्तुत कर दिए थे। आगे चलकर यही शैबानी बाबर का समकालीन एवं कट्टर प्रति-द्वन्द्वी बना।

बाबर के दूसरे शत्रु उसके मामा थे, जो कि चंगेज़ ख़ान के द्वितीय पुत्र चग़ताई ख़ान के वंशज थे। चग़ताई ख़ान के विशाल राज्य के तीन असमान भाग थे (१) सर दरिया एवं कशगर के उस पार के बीहड़ चरागाह वाले प्रदेश (२) कशगर और यारकन्द का मध्य प्रदेश (३) सर नदी के दक्षिण का प्रदेश जिसका विस्तार हिन्दुकुश तक था जो कि अत्यन्त समृद्धिशाली प्रदेश था। यहाँ अनेक हरे भरे खेत तथा गुन्जान नगर बसे हुए थे। यहाँ की आबादी भी स्थायी थी। चग़ताई ख़ान मंगोलों का महान् ख़ान था। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका विशाल साम्राज्य तथा मंगोलों के महान ख़ान का पद दो भागों में विभाजित हो गया--(१) साम्राज्य का एक भाग जिसमें कशगर भी शामिल था मंगोलों के एक ख़ान के हाथ में रहा (२) साम्राज्य का दूसरा भाग, ट्रान्स आक्सियाना, अन्य मंगोल ख़ान के पास चला गया। साम्राज्य के प्रथम भाग में चग़ताई ख़ान का उत्तराधिकारी ईसन बुग़ा ख़ान हुआ। ईसन बुग़ा के पश्चात् तोलक तीमूर वहाँ का शासक हुआ। उसके ही राज्यकाल में मंगोलों की शाखा ने इस्लाम धर्म स्वीकार किया। ईसन बुग़ा ख़ान की मृत्यु के उपरान्त ही इस क्षेत्र में मंगोल सत्ता क्षीण होने लगी थी। इसके दो प्रमुख कारण थे, एक तो मंगोलों के पारिवारिक झगड़े और दूसरा तैमूर का बढ़ता हुआ वैभव। इस पर भी ख़ान परम्परा मिट्टी में न मिली। १४२२ ई० में ख़ान के उच्च पद के लिए दो दावेदार थे (१) ईसन बुग़ा द्वितीय और (२) यूनुस ख़ान। ईसन बुग़ा ने अपने प्रतिद्वन्द्वी यूनुस ख़ान को मार भगाया। यूनुस ख़ान हार कर समरकन्द पहुँचा, जहाँ उसने पहले तीमूरी शासक उलुग़

वेग मिर्ज़ा की शरण ली; तत्पश्चात् वहाँ से भाग कर खुरासान के तीमूरी शासक शाह रुख मिर्ज़ा के पास शरण ली। उलुग़ वेग मिर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त उसने समरकन्द राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों, ताशकन्द और सीरम पर आक्रमण किया। प्रारम्भ में तो उसे कोई विशेष सफलता न प्राप्त हुई किन्तु दुबारा जब उसने पुनः आक्रमण किया तो उसे शत्रु का कठोर विरोध सहना पड़ा। ईसन बुग़ा के समरकन्द पर द्वितीय आक्रमण से पूर्व अबू सईद मिर्ज़ा ने अपने सभी प्रतिद्वन्द्वियों को, जो कि समरकन्द के सिंहासन के दावेदार थे, परास्त कर लिया और उसने समरकन्द के सिंहासन को अधिकृत कर लिया। कालान्तर में जब ईसन बुग़ा ने सीमावर्ती प्रदेशों पर आक्रमण किया तो अबू सईद मिर्ज़ा ने आगे बढ़ कर उसका सामना किया और उसे युद्ध में परास्त किया। तत्पश्चात् ईसन बुग़ा के स्थान पर उसने यूनुस खान को मंगोलों का महान खान बनाया। कृतज्ञता के भार को उतारने के उद्देश्य से तथा जो सहायता समरकन्द के शासक सुल्तान अबू सईद ने उसके प्रतिद्वन्द्वी के विरुद्ध की थी उसका मूल्य चुकाने के विचार से यूनुस खान ने अपनी तीन पुत्रियों का विवाह अबू सईद के तीन पुत्रों से कर दिया। इनमें से एक बाबर की माँ थी जिसका नाम कुतलुग़ निगार खानुम था। यूनुस ख़ान की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र महमूद खान मंगोल साम्राज्य के पूर्वी भाग का शासक बना और उसकी उपाधि ज्येष्ठ खान हुई। उसका छोटा भाई जो कि पश्चिमी भाग का शासक था कनिष्ठ खान के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यह दोनों बाबर के मामा थे।

पिता की ओर से बाबर तैमूर के वंश की ६ठीं पीढ़ी में था। अमीर तैमूर एशिया का द्वितीय महान् विजेता, साम्राज्य संस्थापक एवं प्रशासक था। उसने चंगेज़ खान की साम्राज्यवादी भावनाओं को पुनः जाग्रत किया। यद्यपि चंगेज़ खान का नाम भयावह आक्रमणों एवं विध्वंसात्मक कार्यवाहियों के साथ मुसलमान ज्योतिषी जोड़ने लगे थे, फिर भी उन रौंदे हुए प्रदेशों में उसका नाम अब भी भारी भरकम समझा जाता था। वहाँ के शासक उस महान् मंगोल खान से अपने वंश की उत्पत्ति बताते हुए गौरव का अनुभव करते थे। किन्तु अमीर तैमूर ने ऐसा न किया। इसके कई कारण थे। महान् मंगोल खान चंगेज खान और उसके काल में बहुत कम अन्तर था। कुछ भी हो, जहाँ तक तैमूर का प्रश्न है, वह तुर्कों की बरलास जाति में से एक था। तुर्कों की इस जाति के लोगों में एक विशेषता थी कि वे अपने

आचार-विचार एवं व्यवहार में अन्य तुर्की जातियों से भिन्न थे और जिन लोगों के सम्पर्क में प्राय: आया करते थे वे उन्हीं की सभ्यता और संस्कृति में अपने को रँग लिया करते थे। प्रारम्भ में ख़लीफ़ाओं ने उन्हें अपना अंग रक्षक नियुक्त किया। तत्पश्चात् वे धीरे-धीरे ईरानी सभ्यता एवं संस्कृति के सम्पर्क में आए और उन्होंने उसके तत्व ग्रहण किए। आगे चलकर ख़लीफ़ाओं ने उन्हें उच्च पदों पर नियुक्त करना प्रारम्भ किया। शक्तिहीन ख़लीफ़ाओं की दुर्बलता का लाभ उठाते हुए उन्होंने अपने-अपने प्रान्तों में अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी। हार कर ख़लीफ़ाओं को उन्हें ज़बरदस्ती अपने-अपने प्रान्तों में स्वतंत्र रहने देना पड़ा।

चंगेज़ ख़ान के विप्लवकारी एवं सर्वनाशक युद्धों ने तुर्कों की शक्ति एवं उनके गौरव को मिट्टी में मिला दिया। किन्तु यह झंझावात जितनी शीघ्रता से आया था उतनी शीघ्रता से समाप्त हो गया। जिस विशाल साम्राज्य की स्थापना उसने की थी वह पतनोन्मुख होने लगा; चग़ताई ख़ान को विरासत में ट्रान्स अक्सियाना जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, प्राप्त हुआ था। उसी के शासन काल में तुर्कों ने यहाँ प्रवेश करना प्रारंभ कर दिया। आकार एवं वेष-भूषा में यह तुर्क जातियाँ मंगोल जाति के समान थीं, अतएव शीघ्र ही दोनों जातियाँ आपस में घुल-मिल गईं। तुर्क आए थे तो सेवक के रूप में किन्तु शनैः शनैः उनका प्रभाव इतना बढ़ गया कि चग़ताई मंगोलों को उनसे भिन्न समझना कठिन हो गया। तुर्कों ने कालान्तर में चग़ताई सुलतानों को कठपुतली की तरह नचाना प्रारम्भ कर दिया। मंगोलों की चग़ताई जाति तुर्कों के प्रभाव में इतनी अधिक आ गई कि समस्त ट्रान्स आक्सियाना में तुर्की भाषा का प्रयोग होने लगा और तुर्की सभ्यता एवं संस्कृति फैलने लगी। सबसे आश्चर्यजनक बात तो यह है कि चग़ताई मंगोल शासक अपनी मंगोल मातृभाषा को भी भूल गए और तुर्की बोलने लगे। तुर्की भाषा ही समाज एवं दरबार की भाषा बन गई। जब तक चग़ताई शासक शक्तिशाली रहे, तुर्क उनकी तन मन से सेवा करते रहे और स्वामिभक्ति प्रदर्शित करते रहे। जैसे ही चग़ताई मंगोल शासकों की शक्ति क्षीण होने लगी तो इन्हीं तुर्कों ने धीरे-धीरे शासन की बागडोर अपने हाथ में ले ली और महत्वपूर्ण पद हड़प लिए। अन्य शब्दों में उन्होंने अपने स्वामी का स्थान ग्रहण कर लिया।

तुर्कों की बरलास शाखा के एक पराक्रमी व्यक्ति तैमूर ने ट्रान्स अक्सियाना में अपनी धाक जमा दी और इसी प्रदेश में चंगेज़ खान की भाँति राजनीतिक उथल-पुथल मचा दी। उसका प्रारम्भिक जीवन एवं कृत्य साहसमयी गाथाओं से भरा हुआ था। बड़ी ही कुशलता पूर्वक वह ट्रान्स अक्सियाना के सिंहासन पर बैठा। उसने निकटवर्ती प्रदेशों पर आक्रमण किए, और उन्हें जीता और इस प्रकार चंगेज़ खान के वैभव एवं गौरव को इसी प्रदेश में पुनः प्रतिष्ठित कर दिया। थोड़े ही समय में उसने इतनी कीर्ति प्राप्त कर ली कि उसका नाम चंगेज़ खान के नाम के साथ लिया जाने लगा। कुछ इतिहासकारों ने कल्पना एवं जनश्रुति के आधार पर दोनों विजेताओं को एक ही पितामह की सन्तान बतलाया है। कुछ भी हो, तैमूर ने अपने बाहुबल द्वारा एक विशाल साम्राज्य, टर्की से लेकर तुर्किस्तान तक, वोलगा से लेकर भारत वर्ष की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं तक, जिसमें मध्य एशिया, कोचक, फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान आदि अनेक देश शामिल थे, स्थापित किया। इस विशाल प्रदेश को तथा अनेक समृद्धिशाली राज्यों को उसने तथा उसके अश्वारोहियों ने निर्दयतापूर्वक रौंद डाला। उसकी विजयों का वृत्तान्त हृदय को दहला देने वाली कहानियों से भरा हुआ है। ये कहानियाँ न तो पढ़ने में और न ही सुनने में रुचिकर लगती हैं। तैमूर के जीवन चरित में एक ही ऐसी बात थी जिसे कि हम घोर अन्धकार में एक सुनहरी किरण कह सकते हैं कि साहित्य और कला से उसे प्रेम था। उसने अपने राज्य काल में पुरानी ईरानी सभ्यता एवं संस्कृति को प्रोत्साहन देकर पुनः जागृत कर प्रतिष्ठित कर दिया। उसने अनेक विदेशी साहित्यकारों, कलाकारों, दार्शनिकों को प्रश्रय दिया। यही नहीं, साहित्य में रुचि लेकर तथा उसका सृजन कर उसने सबके सामने एक उदाहरण प्रस्तुत किया। फलस्वरूप उसके उमराव, वज़ीर एवं उसके परिवार के सदस्यों ने भी कवियों, साहित्यकारों तथा कलाकारों को प्रश्रय देकर, तथा कालेज, मस्जिद एवं अस्पताल स्थापित कर मध्य एशिया में एक नवीन साँस्कृतिक वातावरण उत्पन्न किया। बौद्धिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में मध्य एशिया में जो प्रगति इस काल में हुई उसका बहुत कुछ श्रेय तैमूर को है।

अपने जीवनकाल में तैमूर ने जिस विशाल साम्राज्य की स्थापना की वह चंगेज़ खान के साम्राज्य से भी कम समय तक स्थायी रह सका। जबकि

चंगेज़ ख़ान के वंशजों ने अपने पिता एवं पितामह की कीर्ति में चार-चाँद लगाने में कोई कसर न उठा रखी, तैमूर की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी गृह युद्ध में ही फँस कर रह गए । तैमूर की मृत्यु १७ फ़रवरी, १४०५ ई० को ७१ वर्ष की आयु में हुई । अभी उसका नश्वर शरीर दफ़नाया भी न गया था और शोक सम्बन्धी रस्में पूर्ण भी न हो पाई थीं कि उसके उत्तराधिकारियों में सिंहासन के लिए युद्ध छिड़ गया । शाह रुख मिर्ज़ा को छोड़कर जो कि इस समय ख़ुरासान में था, तैमूर के अन्य सभी पुत्र उसके जीवन काल में ही स्वर्ग सिधार चुके थे । अपनी मृत्यु के कुछ समय पूर्व उसने अपने पौत्र पीर मुहम्मद ख़ाँ को, जो कि इस समय काबुल तथा भारतवर्ष के उत्तरी पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों का अधिकारी था तथा जिसके गुणों में तैमूर को अत्यधिक विश्वास था, अपना उत्तराधिकारी घोषित कर दिया था । जिस समय तैमूर की मृत्यु हुई उस समय पीर मुहम्मद काबुल में सुरा एवं सुन्दरी में मस्त था। यदि इस समय वह विलासपूर्ण जीवन की निद्रा से जग कर अपनी सेनाओं के साथ समरकन्द की ओर कूच करता तो उसे सिंहासन को अधिकृत करने में तनिक भी कठिनाई न होती । उसकी विलम्बना के कारण कुछ समय के लिए समरकन्द जो तैमूर के विशाल साम्राज्य की राजधानी थी, राजनीतिक दाँव-पेंच व राजनीतिक षड्यन्त्रकारियों का केन्द्र बन गयी । अवसर का लाभ उठाते हुए मीरान शाह के पुत्र सुल्तान खलील मिर्ज़ा ने, जिसकी आयु इस समय केवल २१ वर्ष की होगी, ताशकन्द से समरकन्द की ओर कूच किया । समरकन्द पहुँचकर शाही कोश में संचित धन का प्रयोग करते हुए उसने अमीरों की स्वामिभक्ति मोल ले ली और उन्हें अपने पक्ष में कर लिया । वे सभी अमीरों जो पीर मुहम्मद को तैमूर का वास्तविक उत्तराधिकारी मान कर उसे सिंहासन पर बिठाने का यत्न कर रहे थे उसके पक्ष में हो गए । इन्हीं अमीरों के सहयोग से वह समरकन्द के सिंहासन पर बैठा। आक्सस के उस पार तक फैले हुए प्रदेश पर खलील मिर्ज़ा ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर तैमूरी उमराव वर्ग की महत्वाकांक्षाओं पर कुछ समय के लिए पानी फेर दिया किन्तु इस सफलता के उपरान्त भी वह तूफ़ान के सामने एक तिनके के समान सिद्ध हुआ। वह स्वप्नों में खोया रहता था । उसकी शिष्टता तथा कल्पनाओं ने उसे शासक न बनाकर कवि बना दिया ।

उसने अपने पितामह द्वारा की गई संचित पूँजी को उदारतापूर्वक लुटा दिया, वरिष्ठ नौकरों को पदच्युत कर दिया, और शीघ्र ही अपने को लोक की दृष्टि में अप्रिय बना लिया। उसने शाद-मुल्क जो हाजी सैफुद्दीन की एक दासी थी, के साथ विवाह कर अमीरों को रुष्ट कर दिया। उसके प्रेम में वह इतना विह्वल हो गया कि उसे किसी बात की सुधि ही न रही। ऐसी स्थिति में चारों ओर असन्तोष उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। इस बढ़ते हुए असन्तोष की झलक हमें अमीर खुदादाद तथा शेख नूरुद्दीन की विद्रोहात्मक कार्यवाहियों में मिलती है, जिन्होंने तुर्किस्तान के कुछ प्रान्तों तथा फ़रगना के एक भाग पर अपना अधिकार जमा दिया। लगभग इसी समय रेगिस्तान की स्वतंत्र जातियों ने भी विद्रोह कर अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी। ऐसे गम्भीर समय में भी सुल्तान खलील मिर्ज़ा अपनी प्रेयसी शाद-मुल्क की प्रशंसा में कविताएँ लिखता रहा। दूसरी ओर पीर मुहम्मद ने भी समरकन्द के सिंहासन को प्राप्त करने के लिए, अपनी सेनाओं के साथ आक्सस की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। सुल्तान खलील मिर्ज़ा को जैसे ही इस आक्रमण की सूचना मिली, उसने एक सेना इस आक्रमण को विफल बनाने के लिए रवाना की। किन्तु उस सेना ने उसका साथ न दिया। सुल्तान खलील को हताश होकर अपने ही सैनिकों से युद्ध करना पड़ा। इस युद्ध में वह सफल तो हुआ किन्तु इसी समय एक दूसरी समस्या ने उसे चिन्तित कर दिया। उसके भतीजे मिर्ज़ा सुल्तान हुसैन ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया और आक्सस के किनारे एक स्वतन्त्र राज्य की स्थापना करने का प्रयास प्रारम्भ किया। सुल्तान खलील उसके विरुद्ध बढ़ा। जिग़दालिक के मैदान में दोनों ही प्रतिद्वन्द्वियों में घमासान युद्ध हुआ। सुल्तान खलील मिर्ज़ा विजयी अवश्य हुआ किन्तु अब तक गृह युद्ध की ज्वाला चारों ओर बुरी तरह से भड़क चुकी थी। पीर मुहम्मद ने आक्सस को पार किया, किन्तु खलील ने उसे परास्त कर पीछे हटा दिया। उसने एक बार पुनः सिंहासन को हस्तगत करने की चेष्टा की किन्तु उसमें भी उसे सफलता न प्राप्त हुई। अब तक अत्यधिक मदिरापान तथा भोग करने के कारण उसकी शक्ति क्षीण हो चुकी थी। उसके शरीर में जो कुछ भी रह गया था वह सब उसके वजीर ने १४०६ ई० में उसका वध करके समाप्त कर दिया। पीर मुहम्मद की मृत्यु से खलील मिर्ज़ा को दक्षिण की ओर से होने वाले

आक्रमणों से कुछ समय के लिए मुक्ति मिल गई। उत्तर में ख़ुदादाद तथा नूरुद्दीन की विद्रोही कार्यवाहियों के कारण स्थिति लगभग ज्यों की त्यों बनी रही। धीरे-धीरे सभी अमीर विद्रोहियों के पक्ष में हो गए। सुल्तान खलील मिर्ज़ा को विद्रोही अमीरों ने बन्दी बना लिया और ख़ुदादाद ने समरकन्द का सिंहासन उसके हाथों से छीन लिया।

ख़ुदादाद भी समरकन्द में अधिक दिनों तक चैन से न बैठ सका। तैमूरी वंश का एक मात्र प्रतिनिधि शाह रुख मिर्ज़ा ट्रान्स आक्सियाना में होने वाली राजनीतिक गतिविधियों तथा घटनाओं को देख कर चुप न बैठ सका। हिरात के शासक के रूप में शाह रुख मिर्ज़ा की ख्याति अब तक चारों ओर फैल चुकी थी। वह तैमूरी वंश का सबसे प्रसिद्ध, प्रतिभाशाली, सर्व-गुण सम्पन्न व्यक्ति था। उसने अपने वंश का नाम उज्ज्वल किया। अपने दरबार में उसने अनेक विद्वानों, साहित्यकारों, कलाकारों, कवियों को प्रश्रय दिया तथा ईरानी सभ्यता और संस्कृति को प्रोत्साहित किया। ज्योतिष से उसे विशेष अनुराग था। अपने जीवन काल में उसने कई वेध शालाएं स्थापित कीं। जब तक पीर मुहम्मद जीवित रहा या सुल्तान ख़लील की प्रभुसत्ता समरकन्द में बनी रही, शाह रुख़ मिर्ज़ा ने आक्सस के उस पार के देशों की ओर कभी भी अपनी निगाह न डाली। ख़ुरासान के ईरानी वातावरण से वह प्रसन्न रहा। किन्तु अब जब कि ट्रान्स आक्सियाना में होने वाली घटनाएँ उसके वंश के अस्तित्व को समाप्त करने के लिए कटिबद्ध होती हुई दिखाई देने लगीं, तो वह युद्ध से अपने को न रोक सका। अपने भतीजे सुल्तान खलील मिर्ज़ा के भाग्य के सितारे को डूबता हुआ देख कर शाह रुख़ मिर्ज़ा उसके विरोधी शत्रु ख़ुदादाद की खोज में चल पड़ा। ख़ुदादाद उसके सामने आने का साहस न कर सका और समरकन्द छोड़ कर ताशकन्द की ओर भाग गया। ख़ुदादाद ने ताशकन्द पहुँच कर मंगोल राजकुमार मुहम्मद खान से सहायता माँगी किन्तु मुहम्मद खान ने शाह रुख मिर्ज़ा से शत्रुता मोल लेना उचित न समझा। उसने अपने भाई शमा जहान को ख़ुदादाद को बन्दी बनाने के लिए भेजा। शीघ्र ही ख़ुदादाद बन्दी बना लिया गया और मुहम्मद खान ने उसका सिर काट कर मंगोलों की मित्रता के उपहार स्वरूप शाह रुख के पास भिजवा दिया। इस महत्वपूर्ण घटना के उपरान्त ही शाह रुख मिर्ज़ा के पास सुल्तान खलील मिर्ज़ा लाया गया।

शाह रुख मिर्ज़ा ने उसका स्वागत किया और उसे ईराक़ का प्रान्तपति नियुक्त किया। ईराक़ की ओर प्रस्थान करते समय मार्ग में सुल्तान खलील की मृत्यु हो गई। अगले वर्ष शाह रुख मिर्ज़ा ने आक्सस को पुनः पार कर ट्रान्स आक्सियाना के विद्रोहियों से निबटने का प्रयास किया। अमीर शेख़ नूरुद्दीन युद्ध में परास्त हुआ और वह ताशकन्द की ओर भाग गया। ट्रांस आक्सियाना में होने वाले विद्रोहों का दमन करने के उपरान्त शाह रुख मिर्ज़ा ने सीरिया व अरबिस्तान को छोड़ कर अपने पिता के साम्राज्य पर अपना पूर्णरूप से प्रभुत्व स्थापित किया।

१४०६ ई० से १४४८ ई० तक अपनी राजधानी हिरात से ही शाह रुख मिर्ज़ा अपने विशाल साम्राज्य पर शासन करता रहा। १४४८ ई० में शाह रुख मिर्ज़ा की मृत्यु हुई। मध्य एशिया के राजनीतिक क्षितिज पर जो शान्ति अभी तक बनी हुई थी वह उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो गई। आकाश में पुनः बादल छा गए। गृहयुद्ध ने शाह रुख की प्रशासनिक व्यवस्था समाप्त कर तैमूरियों को शक्तिहीन कर दिया। शाह रुख की मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र उलुग़ बेग मिर्ज़ा सिंहासन पर बैठने के हेतु खुरासान की ओर बढ़ा। अभी वह मार्ग ही में था कि उसे सूचना प्राप्त हुई कि उसके भतीजे अला-उत-दौलत और बेसनगार मिर्ज़ा के पुत्र ने, हिरात पर अपना अधिकार जमा कर उसके पुत्र अब्दुल लतीफ़ को बन्दी बना लिया है। हिरात पहुँचने पर उलुग़ बेग मिर्ज़ा ने उससे युद्ध करना उचित न समझा, क्योंकि उसके अपने पुत्र की जान अला-उत-दौलत के हाथों में थी। उसने अला-उत-दौलत से एक समझौता किया जिसके अनुसार यह तय हुआ कि अला-उत-दौलत, अब्दुल लतीफ़ को रिहा कर देगा, और उसके आदमियों को छोड़ देगा तथा शाह रुख मिर्ज़ा की सम्पत्ति को वह वापस कर देगा। समझौते की पहली शर्त तो अला-उत-दौलत ने पूरी कर दी किन्तु दूसरी और तीसरी शर्तों को पूर्ण न किया। ऐसी परिस्थिति में उलुग़ बेग मिर्ज़ा के लिए युद्ध करना अनिवार्य हो गया। उसने अला-उत-दौलत को तुरनाव के युद्ध में परास्त किया, और उसे मशहद की ओर भगा दिया। तत्पश्चात् उलुग़ बेग मिर्ज़ा हिरात का शासक बना। किन्तु उलुग़ बेग मिर्ज़ा अधिक समय तक शासन न कर सका।

तुरनाव के युद्ध में अब्दुल लतीफ़ के सतत् प्रयत्नों के कारण ही उलुग बेग मिर्ज़ा को अपने शत्रु अला-उत-दौलत के विरुद्ध सफलता प्राप्त हुई थी। किन्तु

उलुग़ बेग मिर्ज़ा ने अपने पुत्र अब्दुल लतीफ़ की प्रशंसा न कर अपने दूसरे पुत्र अब्दुल अज़ीज़ की प्रशंसा की, जिससे अब्दुल लतीफ़ कुढ़ गया। कुछ समय तक अब्दुल लतीफ़ शान्त रहा। आगे चलकर उसने बल्ख का प्रान्त अपने पिता से ले लिया और वहाँ विद्रोह कर दिया। अपनी सेना के साथ उसने आक्सस को पार किया और युद्ध में अपने पिता को बुरी तरह परास्त कर, उसे और अपने छोटे भाई अब्दुल अज़ीज़ को बन्दी बना लिया। कुछ समय उपरान्त उसने अपने अब्बास नामक ईरानी ग़ुलाम के हाथों अपने पिता उलुग मिर्ज़ा का वध करा कर अपनी बर्बरता का परिचय दिया। इस प्रकार यद्यपि अब्दुल लतीफ़ अपने पिता के सिंहासन पर तो बैठ गया किन्तु शीघ्र ही उसे अपने पापों का मूल्य चुकाना पड़ा।

तैमूर के दूसरे पुत्र का नाम मिर्ज़ा मीरान शाह था। बाबर उसी का वंशज था। मीरान शाह के अधिकार में सीरिया, ईराक और अज़र बैंगज़ान के प्रदेश थे। वह विशेषकर तबरेज़ में ही रहा करता था, क्योंकि यहाँ की जलवायु उसके अनुकूल थी। दुर्भाग्यवश मीरान शाह तुर्कमानों के एक कबीले से लड़ता हुआ हत हो गया। उसकी मृत्यु के समय उसका ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान मुहम्मद समरकन्द ही में अपने चाचा शाह रुख मिर्ज़ा के पास था। शाह रुख मिर्ज़ा सुल्तान मुहम्मद से बहुत ही स्नेह करता था। शाह रुख मिर्ज़ा की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र उलुग़ बेग मिर्ज़ा का व्यवहार भी उसके प्रति ज्यों का त्यों बना रहा। जब सुल्तान मुहम्मद मृत्यु शय्या पर था और उलुग़ बेग मिर्ज़ा उसको देखने के लिए आया तो उसने अपने पुत्र अबू सईद का हाथ अपने चचेरे भाई के हाथों में रख कर उससे उसके पालन पोषण की याचना की। जब तक उलुग बेग मिर्ज़ा जीवित रहा तब तक उसने अपने वचन को पूरी तरह से निबाहा। अबू सईद ने भी अपने चाचा उलुग़ बेग मिर्ज़ा की खूब सेवा की जिससे प्रसन्न होकर चाचा ने अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर दिया।

अबू सईद अपने श्वसुर और अपने साले अब्दुल लतीफ़ के पारस्परिक झगड़ों से दूर ही रहा। वह यह जानता था कि उलुग़ बेग मिर्ज़ा राजनीतिक झगड़ों में फंसा हुआ है तथा उसकी कीर्ति का सितारा अस्त हो रहा है। अतएव उसने अपने पालक एवं श्वसुर की कठिनाइयों से पूरा लाभ उठाया। उस युग में स्वामिभक्ति की परिभाषा ही कुछ और हुआ करती थी। सच तो यह है कि

आजकल की भाँति राजनीति में उस समय भी स्वामिभक्ति नाम की कोई वस्तु न थी। अवसर पाते ही अबू सईद ने अपने श्वसुर की ओर से पीठ फेर ली और उसका वध हो जाने दिया। तत्पश्चात् उसने समरकन्द को अधिकृत करने के लिए दो बार प्रयास किया किन्तु वह असफल रहा। अन्तिम बार वह पकड़ लिया गया, किन्तु वह भाग कर बुखारा पहुँचा। इस घटना के कुछ ही समय उपरान्त अब्दुल लतीफ़ का वध उलुग़ मिर्ज़ा के बाबर हुसैन नामक नौकर ने, जिसने कि अपने स्वामी के वध का बदला लेने का प्रण किया था, कर दिया। अब्दुल लतीफ़ के वध के उपरान्त शाह रुख मिर्ज़ा का पौत्र अब्दुलाह मिर्ज़ा, जिसने कि उलुग़ मिर्ज़ा की दूसरी पुत्री से विवाह किया था, समरकन्द के सिंहासन पर बैठा। अबू सईद ने भी सिंहासन के लिए दावा किया, किन्तु सफलता उसके हाथ न लगी। वह अन्त में उज़बेगों के सरदार अबुल खैर ख़ाँ के पास गया। उज़बेग सैनिकों के साथ उसने अब्दुलाह मिर्ज़ा पर आक्रमण किया। एक ही युद्ध में अबू सईद ने उसकी जान ले ली और उसका मुकुट छीन लिया। इस प्रकार से अबू सईद समरकन्द के सिंहासन पर विराजमान हुआ और ट्रान्स अक्सियाना का शासक बना।

अबू सईद मिर्ज़ा बहुत ही महत्वाकांक्षी व्यक्ति था। अपने पूर्वजों की ही भाँति वह यह कहा करता था कि संसार में दो विजेता एक साथ नहीं रह सकते हैं। उनकी योजनाओं की पूर्ति के लिए इसका दायरा बहुत ही छोटा है। विस्तारवादी नीति का अनुसरण करते हुए उसने उत्तरी फारस, अफ़गानिस्तान तथा मेकरान के विशाल प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। अपने साम्राज्य का विस्तार करते समय उसे मंगोलों तथा उज़बेगों से भी मुठभेड़ करनी पड़ी। उनके पारस्परिक मामलों में वह दिलचस्पी लेता रहा और उनको एक दूसरे के विरुद्ध उकसाता रहा। विस्तारवादी नीति का अनुसरण करते रहने के कारण, यद्यपि कुछ समय तक तो उसका साम्राज्य सुरक्षित रहा, किन्तु आगे चल कर उसका विशाल साम्राज्य शक्तिहीन होने लगा। जब तक कि मंगोल और उज़बेग अपने व्यक्तिगत मामलों में उलझे रहे और उनमें सत्ता के लिए संघर्ष होता रहा तब तक अबू सईद का पलड़ा भारी रहा।

मंगोलों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर अबू सईद ने उनके नेता सुल्तान बाएस से मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की। सुल्तान बाएस

के पुत्र युनुस खाँ ने जब अपने पिता के विरुद्ध विद्रोह किया तो अबू सईद ने संरक्षण देने के बहाने उसे अपने पास बुला लिया। जैसे ही यूनुस खाँ उसके पास पहुँचा, उसने तुरन्त उसे बन्दी बना लिया और उसके साथियों को मौत के घाट उतार कर उसे उसके पिता के पास भेज दिया। अबू सईद के इस व्यवहार से सुल्तान वाएस प्रसन्न हुआ और कुछ समय के लिए अबू सईद तथा मंगोलों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहे। सुल्तान वाएस की मृत्यु के उपरान्त पुनः अबू सईद और मंगोलों के सम्बन्ध जैसे के तैसे हो गए। मंगोलों के ज्येष्ठ खान एवं नेता ईसन बुग़ा खान अबू सईद के बढ़ते हुए प्रभाव को न सहन कर सका। उसने ट्रान्स आक्सियाना पर आक्रमण कर पुरानी शत्रुता उभाड़ दी। उसने ताशकन्द को लूटा, तथा जैक्सारटज़ तक के विशाल प्रदेशों को भी रौंद डाला और इस विशाल प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। मंगोल सरदार ईसन बुग़ा खान की इस आक्रामक कार्यवाही से अबू सईद भयभीत हुआ। उसने शीघ्र ही अपना रंग बदला और यूनुस खान का पक्ष लेना प्रारंभ किया। उसने यूनुस खान को अपने भाई ईसन बुग़ा का विरोध करने तथा मुग़लिस्तान पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का सुझाव दिया। यूनुस खाँ उसकी बातों में आ गया और उसने अपने भाई का विरोध करना प्रारंभ किया। इस प्रकार अबू सईद को मंगोलों को आपस में लड़ाने तथा उनकी विस्तारवादी नीति को विफल बनाने का अवसर मिला। जब मंगोलों को वास्तविकता का ज्ञान हुआ तो वे अपनी आपसी वैमनस्यता के लिए अबू सईद को ही दोषी ठहराने लगे और तैमूरियों से घृणा करने लगे।

१४५८ ई० में ईसन बुग़ा खाँ की मृत्यु हुई। यूनुस खाँ मंगोलों का नेता बना। अबू सईद यूनुस खाँ की दुर्बलताओं से भलीभाँति परिचित था। अतएव सर्वप्रथम उसने उसके आधिपत्य को मानने से इन्कार कर दिया। इससे पूर्व तैमूर व उसके वंशज ऊपरी तौर से चगताई खाँ के वंश की प्रभुता सदैव से मानते चले आ रहे थे। अबू सईद केवल इतने से ही सन्तुष्ट न हुआ। जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है कि उसने यूनुस खाँ, को इस बात पर भी विवश किया कि वह अपनी तीन पुत्रियां का विवाह उसके तीन पुत्रों के साथ कर दे। यह दोनों ही बातें यूनुस खाँ के लिए अपमानजनक थीं। वह तैमूरियों को कैसे श्रेष्ठ मान सकता

था ? तैमूरियों की अपेक्षा मंगोल अब भी शक्तिशाली थे । उनके अधीन अब भी एक विशाल साम्राज्य था । यूनुस खाँ ने अबू सईद के नेतृत्व में तैमूरियों की बढ़ती हुई शक्ति एवं बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं को देखा । वह मन-ही-मन कुढ़ता रहा । अबू सईद की महत्वाकांक्षाएँ उसको असह्य थीं । अबू सईद के व्यवहार से वह रुष्ट हुआ और उसके विनष्ट होने की प्रतीक्षा करने लगा।

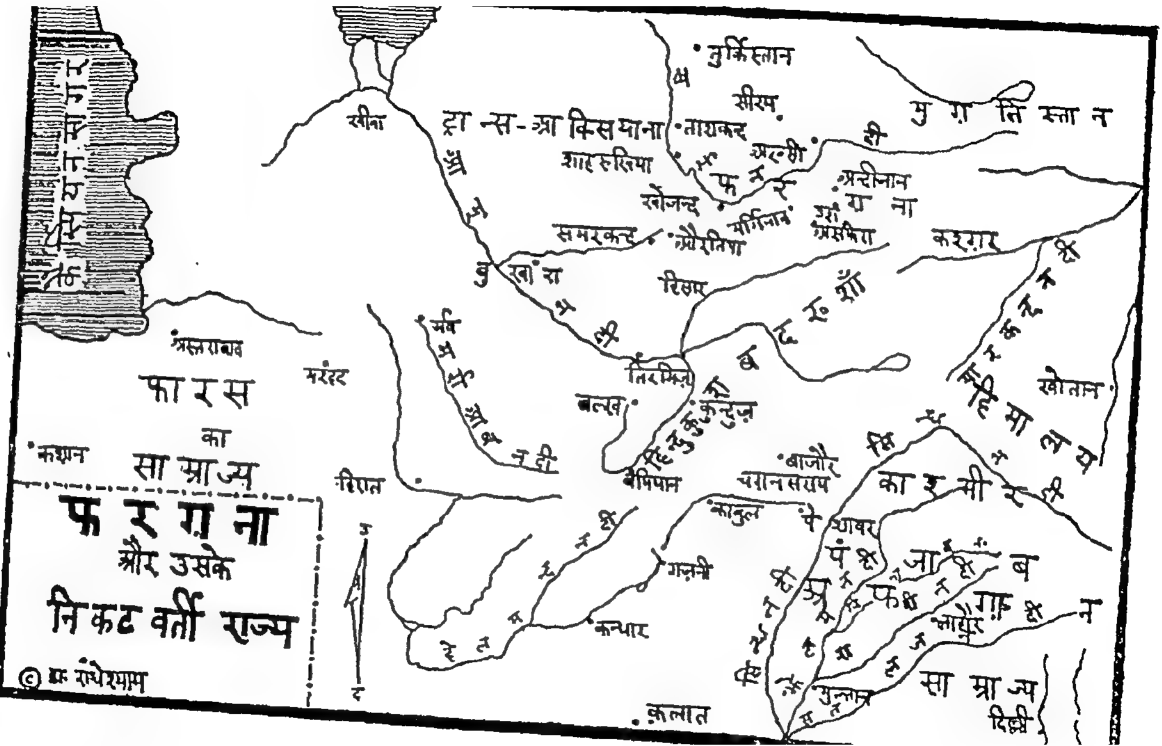
तैमूरी अबू सईद के मंगोलों से सम्बन्ध तो खराब थे ही, उज़बेगों से भी सम्बन्ध कालान्तर में खराब हो गए। पन्द्रहवीं शताब्दी के मध्य तक विभिन्न उज़बेग जातियाँ एकता के सूत्र में बँध चुकी थीं । अबुल खैर खाँ के नेतृत्व में एक उजबेग संघ का निर्माण हुआ और धीरे-धीरे उज़बेगों का प्रभाव बढ़ने लगा। शीघ्र ही वे तैमूरियों के सम्पर्क में आए। उलुग़ बेग मिर्ज़ा की मृत्यु के बाद जब तैमूरी साम्राज्य पर काले बादल मँडराने लगे, चारों ओर विद्रोह की ज्वाला भड़कने लगी और जब सम्पूर्ण साम्राज्य गृह-युद्ध की लपटों में आ गया, तो उसे बचाने के लिए अबू सईद ने ही उज़बेगों की सहायता ली और उन्हीं की सहायता से वह समरकन्द के सिंहासन पर बैठा। उज़बेगों के ऋण को चुकाने के लिए उसने अपनी पुत्री का विवाह अबुल खैर खाँ से कर दिया । किन्तु अबुल खैर खाँ के नेतृत्व में उज़बेगों की बढ़ती हुई शक्ति को वह सहन न कर सका और उसके विरुद्ध हो गया। इससे पूर्व कि वह खुल कर उज़बेगों के साथ संघर्ष करता, १४६६ ई० में ईराक़ की दयनीय घटना में उसका अन्त हो गया। दो तुर्कमान जातियों के पारस्परिक झगड़ों का निबटारा करने के हेतु उसने अज़रबैजान पर आक्रमण कर दिया। अर्दबिल के निकट एक सँकरी घाटी में तुर्कमानों ने उसे घेर लिया और उसे उसकी सेना सहित मौत के घाट उतार दिया। केवल कुछ ही सैनिक इस दयनीय घटना की सूचना देने के लिए हिरात पहुँच सके।

अबू सईद तथा अबुल खैर खाँ की मृत्यु के बाद उज़बेगों तथा तैमूरियों, दोनों ही की प्रतिष्ठा कुछ समय के लिए मध्य एशिया में समाप्त हो गई। उज़बेग संघ, जिसका निर्माण अबुल खैर खाँ ने किया था, उसका विघटन हो गया। यूनुस खान ने अबुल खैर खाँ के उत्तराधिकारी बारूज़ सुल्तान पर शीघ्र ही आक्रमण किया और उसे तथा उसके परिवार के लगभग सभी

सदस्यों को समाप्त कर दिया । भाग्यवश उसके परिवार के दो सदस्य, जो कि उसके ही पुत्र थे, यूनुस खाँ से बच कर भाग निकले । मुहम्मद शैबानी खाँ तथा उसका छोटा भाई मुहम्मद सुल्तान बहादुर भाग कर ट्रांस आक्सियाना पहुँचे जहाँ उन्होंने शरण ली । जिस प्रकार का व्यवहार अबू सईद मिर्ज़ा ने अबुल खैर खान के साथ किया और उसके उत्तराधिकारियों ने बारूज सुल्तान के साथ किया, उसे मुहम्मद शैबानी खाँ अपने जीवन में कदापि न भूल सका । आगे चलकर जब वह उज़बेगों का सरदार बना तो उसने तैमूरियों तथा मंगोलों को शक्तिहीन बना देने तथा उनसे बदला लेने में कोई कसर न उठा रक्खी ।

अबू सईद मिर्ज़ा की मृत्यु के पश्चात् उसका साम्राज्य टुकड़े-टुकड़े हो गया । कुछ भाग तो उसके पुत्रों के हाथ में रहे और कुछ परायों के हाथ में चले गए । सुल्तान अहमद मिर्ज़ा तो समरकन्द और बुखारा का शासक हुआ, सुल्तान महमूद मिर्ज़ा ने हिन्दूकुश और असफेरा के मध्य का प्रदेश अधिकृत कर लिया । उलुग़ बेग मिर्ज़ा का काबुल व गज़नी पर अधिकार रहा और उमर शेख मिर्ज़ा को फरग़ाना मिला । खुरासान का उपजाऊ और समृद्धिशाली प्रदेश तैमूर के अन्य वंशज सुल्तान हुसैन बैक़रा के हाथ लगा तथा अबा बक्र दौघ्लत ने कशग़र पर अधिकार कर लिया ।

संक्षेप में यह कहना यथेष्ठ होगा कि इस समय मध्य एशिया की राजनीतिक दशा विचित्र थी । तैमूर के वंशजों में न केवल एकता का अभाव था वरन् उनमें पारस्परिक द्वन्द्व और वैमनस्यता भी थी । एक दूसरे को फूटी आँख से भी न देख सकता था । तैमूरी शासक उज़बेगों, मंगोलों तथा ईरानियों से घिरे हुए थे । इस पर भी वे निरन्तर आपस में लड़ते रहे । इन तैमूरी शासकों में से उमर शेख मिर्ज़ा तो महत्वाकांक्षी भी था और झगड़ालू भी । अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के कारण उसकी अपने भाई अथवा समरकन्द के शासक सुल्तान अहमद मिर्ज़ा से सदैव खटकती ही रहती थी । अन्य भाइयों से भी उसके सम्बन्ध मैत्रीपूर्ण न थे । यूनुस खाँ का प्रभावशाली व्यक्तित्व ही उसके दामादों की पारस्परिक वैमनस्यता को रोके रखता था । अन्य शब्दों में एक ओर तो उमर शेख मिर्ज़ा और उसके भाई, दूसरी ओर मंगोल और अबुल खैर का वंशज शैबानी खाँ, सभी एक दूसरे विरुद्ध घात लगाए बैठे हुए थे । ऐसी विषम परिस्थितियों में ही



फरगना
और उसके
निकटवर्ती राज्य
© रा. राधेश्याम
फारस
का
साम्राज्य
तुर्किस्तान
सीरम
ट्रान्स-आक्सियाना
ताशकन्द
शाहरुखिया
खोजन्द
समरकन्द
अन्दीजान
मुगलिस्तान
काशगर
बुखारा
हिसार
तिरमिज़
बल्ख
कुन्दुज़
बामियान
बाजौर
काबुल
ग़ज़नी
कन्धार
कलात
खोतान
हिमालय
काश्मीर
मुल्तान
दिल्ली
अस्तराबाद
मरव
हेरात
कशान
सिंध नदी

बाबर का बाल्यकाल बीता। उसके लिए भावी आपदाओं का आभाव न था।

फरग़ाना का राज्य, जो कि बाबर को अपने पिता की मृत्यु के पश्चात् विरासत में मिला, ५०,००० वर्ग मील तक फैला हुआ था। उसकी जलवायु उत्तम थी, उपज अच्छी थी और जहाँ शिकार खेलने के लिए अनेक स्थान थे।[1] प्रकृति ने फरग़ाना को एक भौगोलिक इकाई बना दिया था। फरगना के तीन ओर ऊँचे-ऊँचे पहाड़ थे, जो कि पश्चिम दिशा को छोड़ कर सभी ओर से उसकी रक्षा करते थे। फरग़ाना के पूर्व में कशग़र, पश्चिम में समरकन्द, और दक्षिण में बदख़शाँ के पहाड़ थे। इन पहाड़ों की घाटियों में से पश्चिम से पूर्व की ओर सर नदी बहा करती थी जो कि निचले मैदानों को दो भागों में पृथक कर देती थी। नदी के उत्तर में सात प्राशासनिक क्षेत्र और नदी के दक्षिण में पाँच प्रशासनिक क्षेत्र थे। नदी के दक्षिण में जो सात समृद्धिशाली प्राशासनिक क्षेत्र थे, और जिन पर सदैव आक्रमणकारी आक्रमण किया करते थे, वे इस प्रकार हैं:—अन्दीजान, उश, मर्गिनान, असफेरा, खोजन्द, कन्द-ए-बादाम, तथा हा दरवेश। सर नदी के उत्तर में स्थित, अख्सी और कसान दो समृद्धिशाली प्रान्त थे। दक्षिणी प्रदेश में अन्दीजान नामक शहर सम्पूर्ण प्रान्त की राजधानी थी। बाबर अपनी आत्म-कथा में लिखता है—"मावराउन्नेहर में समरकन्द तथा केश के अतिरिक्त अन्दीजान के दुर्ग से बड़ा दुर्ग कोई भी नहीं है। इसमें तीन द्वार हैं। अरक़ दक्षिण की ओर स्थित है। क़िले में ६ जलधारायें बहती हैं और यह बड़े आश्चर्य की बात है कि सभी का उद्‌गम-स्थान एक नदी है। क़िले की खाई के बाहर की ओर पत्थर की एक बड़ी चौड़ी सड़क है। क़िले के आस-पास के स्थानों को यह सड़क पृथक करती है।[2]" अन्दीजान के दक्षिण-पूर्व में उश स्थित है, जिसकी रक्षा दक्षिण-पूर्व की पर्वतीय शृंखला 'बारा कोह' करती है।[3] अन्दीजान के पश्चिम में ४७ मील तथा ४$\frac{1}{2}$

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १-२।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृष्ठ ४६६।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४-६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृष्ठ ४६६।

फरलांग की दूरी पर मर्गीनान स्थित है, जो कि उस समय अंगूर व ख़ूबानी के लिए प्रसिद्ध था। मर्गीनान के दक्षिण-पश्चिम में लगभग ६५ मील की दूरी पर असफेरा है, जो कि एक पर्वतीय प्रदेश है, और जो चार भागों में विभाजित है—असफेरा, वारुख, सूख, होशियार।[1] अन्दीजान के पश्चिम में, १८७ मील और दो फरलांग पर तथा समरकन्द के के पूर्व में २८ मील पर, खोजन्द स्थित है। जहाँ तक कन्द-ए बादाम तथा हा दरवेश नामक शहरों का सम्बन्ध है, उनकी महत्ता उस समय, सैनिक एवं आर्थिक दृष्टि से बहुत कम थी। किन्तु फरग़ना की वास्तविक कुंजी थी अख़्सी का सुप्रसिद्ध शहर, जिसके चारों ओर दीवारें थीं, और उन दीवारों के बीच, सुदृढ़ दुर्ग। अख़्सी शहर सर्र नदी के उत्तर में स्थित था। यहाँ से शत्रु की फौजें बड़ी सरलता से फरग़ना में प्रवेश कर सकती थीं। एक बार इस शहर पर अधिकार करने के पश्चात् शत्रु उसे आधार बना कर, नदी को पार कर फरगना राज्य की दूसरी बचाव की सीमा को पार कर नदी के उत्तर में स्थित सभी प्रदेशों को अपने अधिकार में ले सकता था। सर्र नदी को पार करने के पश्चात् वह उन उपजाऊ प्रदेशों को जो कि सर्र नदी के किनारे से पहाड़ियों तक फैले हुए थे रौंद सकता था तथा वहाँ के रहने वाले लोगों को अन्दीजान या मर्गीनान में रहने के लिए अपनी इच्छानुसार बाध्य कर सकता था तथा उन्हें अपने अधिकार में ले सकता था। वास्तव में सर्र नदी के उत्तर में स्थित सभी शहरों के निवासियों की रक्षा का भार अख़्सी पर था, और यही कारण है कि उमर शेख मिर्ज़ा ने इस शहर को अपनी राजधानी बनाया।"[2]

फरग़ना का राज्य उपजाऊ प्रदेशों, फल, जलवायु, हरे-भरे चरागाहों, की दृष्टि से बहुत उत्तम ही क्यों न हो, किन्तु उसकी आय से उमर शेख मिर्ज़ा तनिक भी सन्तुष्ट न था। अपने भाग्य से वह बहुत असन्तुष्ट था। फरग़ना जैसे छोटे से राज्य में, कभी भी वह शान्तिपूर्वक न

---

१. बाबर नामा (अनु०) १, पृष्ठ ७; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृष्ठ ४६७-८।

२. बाबर नामा (अनु०) १, पृष्ठ १०; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत' (बाबर) पृष्ठ ४६६।

रह सका। इसके कई कारण थे । वह स्वयं महत्वाकांक्षी था । आन्तरिक समस्याओं एवं वाह्य आक्रमणों के भय के कारण, उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उमराव वर्ग विभिन्न गुटों में विभाजित था । गुटों की संकीर्णता एवं उनकी पारस्परिक कलह, उसके लिए एक समस्या बन कर रह गई थी । दूसरी ओर, उसके अपने परिवार के सदस्य जो कि उससे शत्रुता रखते थे, उसे तनिक समय के लिए भी शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने का अवसर नहीं देना चाहते थे । वे उसे उसके राज्य से वंचित करने की चेष्टा में लगे हुए थे । ऐसी स्थिति में अपने उमराव को सदैव व्यस्त रखने के लिए तथा आर्थिक समस्या को हल करने के लिए उमर शेख़ मिर्ज़ा के सामने एक ही मार्ग था कि वह अपने हितों की रक्षा के लिए, निकटवर्ती शासकों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करता रहे तथा उनके राज्यों पर आक्रमण करता रहे । अपने राज्य की सीमाओं को प्रत्येक दिशा में वढ़ाने के लिए सर्वप्रथम उसने अपने भाग्यशाली भाई सुलतान पर आक्रमण किया । उसके राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों को हस्तगत करने के पश्चात् उसने समरकन्द व बुखारा के उमराव के साथ मिलकर उसके विरुद्ध षडयन्त्र रचना प्रारम्भ किया। उमर शेख़ मिर्ज़ा की विस्तारवादी नीति ही ने सुल्तान अहमद मिर्ज़ा को उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने के लिए उकसाया। सुल्तान अहमद मिर्ज़ा एक विशाल सेना लेकर फरगना की ओर वढ़ा । उसने फरगना के सीमान्त प्रदेशों पर आक्रमण किया तथा उन पर अपना अधिकार स्थापित करने की चेष्टा की । यही नहीं, इस आक्रमण के पश्चात् वह फरगना राज्य को अपने राज्य में मिला लेने की चेष्टा में लगा रहा। अन्त में, सुल्तान अहमद के इन आक्रमणों से तंग आकर और जब उसमें उसका सामना करने की क्षमता न रह गई तब उमर शेख़ मिर्ज़ा ने अपने श्वसुर एवं मंगोलों के महान् खान, यूनुस खाँ से उसके विरुद्ध सहायता माँगी। इस प्रकार मंगोलों की सहायता से उसने सुल्तान अहमद के प्रत्येक आक्रमण का सामना किया और उसकी सेनाओं को आगे न वढ़ने दिया तथा उसे आगे चल कर बाध्य किया कि वह फ़रगना के राज्य को विजित करने की अपनी योजना समाप्त कर दे । किन्तु मंगोलों से यह सहायता प्राप्त करने के लिए उसे बहुत बड़ा मूल्य चुकाना पड़ा । बाबर स्वयं इसकी चर्चा करते हुए अपनी आत्मकथा में लिखता है कि, "प्रत्येक बार जब मिर्ज़ा, खान को अपनी सहायता के लिए

फरग़ाना बुलाता था तो उसे भूमि प्रदान करता था।"[1] फलस्वरूप, धीरे-धीरे न केवल फरगना राज्य की सीमाएँ ही घट गई वरन् तैमूरी शासकों के निजी मामलों में भी मंगोलों का नेता, यूनुस खाँ अधिक से अधिक हस्तक्षेप करने लगा और उसकी शक्ति बढ़ने लगी। सर्वप्रथम यूनुस खाँ के हाथों में ताशकन्द चला गया और फिर शाहरुखिया का प्रान्त। इन दोंं प्रान्तों को प्राप्त करने के पश्चात् यूनुस खाँ और शक्तिशाली बन गया और अधिक से अधिक प्रदेशों को अधिकृत करने की उसकी भूख बढ़ गई। इस प्रकार यूनुस खाँ की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाएँ उमर शेख के लिए घातक सिद्ध हुई। लगभग इसी समय मंगोलों के अन्य सरदार भी तैमूरियों को शक्तिहीन करने के प्रयास में लगे हुए थे। यद्यपि महान् खान सुल्तान अहमद, पूर्वी मुग़लिस्तान में ही डटा रहा, किन्तु उसके ज्येष्ठ पुत्र सुलतान महमूद ने, जो कि इस समय मंगोल साम्राज्य के पश्चिमी प्रदेशों पर शासन कर रहा था, धीरे-धीरे फरगना के राज्य तक अपने अधीन प्रान्तों की सीमाएँ बढ़ा लीं! उसकी विस्तारवादी नीति से प्रेरणा ग्रहण करते हुए यूनुस खान और उसके पुत्र ने भी अपने राज्यों की सीमाएँ बढ़ाना प्रारम्भ किया। यूनुस खाँ एवं सुल्तान अहमद के पुत्र सुल्तान महमूद खान, दोनों ही ने मिल कर तैमूरियों के आपसी झगड़ों से पूरा-पूरा लाभ उठाने की योजना बनाई। सुल्तान महमूद खांन ने अख्सी के दुर्ग को विजित करने का प्रयास किया। यूनुस खां व सुल्तान महमूद खां दोनों यह जानते थे कि अख्सी के दुर्ग को विजित करने के उपरान्त मंगोलों को एक प्राकृतिक सीमा मिल जाएगी और फरग़ना का द्वार उनके लिए खुल जायगा। वास्तव में दोनों ही फरग़ना के राज्य को अधिकृत करना चाहते थे। अपने लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु; यूनुस खाँ उमर शेख मिर्जा से मिल गया और उसे अख्सी का दुर्ग सौंप देने के लिए उसने मना लिया। उमर शेख ने यूनुस खाँ को अख्सी का दुर्ग कुछ समय के लिए सौंप दिया। किन्तु जब उसे यह आभास हुआ कि यदि अख्सी का दुर्ग यूनुस खाँ या अन्य मंगोल नेता के हाथ में रहा तो उसे कभी भी अपने राज्य से हाथ धोना पड़ सकता है, तो उसने शीघ्र ही उसे वापस ले लिया और ताशकन्द व शाहरुखिया के सीमान्त प्रान्तों का भी दावा किया। कुछ समय तक शक्तिका

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १२।

सन्तुलन उमर शेख़ मिर्ज़ा के पक्ष में ही रहा। लेकिन यूनुस खाँ की मृत्यु (१४८६-८७ ई०)[1] के पश्चात् ही, उसके भाग्य ने उसका साथ छोड़ दिया। वास्तव में यूनुस खाँ के गम्भीर व्यक्तित्व के कारण ही उमर शेख मिर्ज़ा व उसके भाई सुलतान अहमद मिर्ज़ा, जिनको कि उसने अपनी पुत्रियाँ विवाह में दी थीं, के मध्य सन्तुलन बना रहा। उसकी मृत्यु के बाद ही, राजनैतिक दृश्य बदल गया और उसके साथ ही साथ उमर शेख मिर्ज़ा की समस्याओं का रूप भी।

यूनुस खाँ की मृत्यु के पश्चात् ही, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा, महमूद खान तथा उमर शेख़ मिर्ज़ा ने ताशकन्द व शाहरूखियाँ का प्रश्न पुनः उठाया। सुल्तान अहमद तथा उमर शेख़ मिर्ज़ा ने इस बात पर बल दिया कि ताशकन्द व शाहरूखिया के प्रान्त, यूनुस खाँ को इस समझौते पर दिए गए थे कि जब तक उन दो प्रान्तों पर उनके अधिकारों का निश्चय नहीं हो जाता तब तक वे उसके हाथों में रहेंगे। किन्तु यूनुस खाँ के ज्येष्ठ पुत्र सुल्तान महमूद खाँ जो कि निकटवर्ती प्रदेशों पर शासन कर रहा था, ने दोनों प्रान्तों को वापस देने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार अख़्सी, ताशकन्द, शाहरूखिया के प्रान्तों, के लिए, फरग़ना के शासक उमर शेख़ मिर्ज़ा, समरकन्द के शासक सुल्तान अहमद मिर्ज़ा और मंगोल सुल्तान महमूद खाँन में झगड़ा प्रारम्भ हुआ। लगभग इसी समय कशग़र व खोतान के शासक, अबू बक्र दोग़लत ने फरग़ना राज्य की सीमाओं पर स्थित उज़किन्त नामक स्थान पर एक दुर्ग बनाया और फरगना राज्य पर छापे मारना प्रारम्भ किया और उसे विजित करने की चेष्टा में वह लग गया।

इस प्रकार १४८६-८७ ई० के पश्चात् उमर शेख मिर्ज़ा, जिसे कि डाक्टर रामप्रसाद त्रिपाठी ने 'तरंग काक' कह कर पुकारा है, को अपने राज्य की रक्षा करते समय अनेक वाह्य आक्रमणकारियों एवं शत्रुओं का सामना करना पड़ा। मंगोल शासक सुलतान महमूद खान, अबू बक्र दोग़लत, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा सभी की आंखें फरग़ना के राज्य पर लगी हुई थीं, और उन्हीं की महत्वाकांक्षाओं ने उसे विचलित कर रखा था। यूनुस खाँ से वर्षों तक मित्रता बनाए रखने के कारण उसे कोई विशेष लाभ न हुआ। यही कारण था कि

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृष्ठ ११४-१।

वह अब मंगोलों से घृणा करने लगा था।[1] अपने बाह्य शत्रुओं को ठिकाने लगाने के लिए उसने अपना सब कुछ, बिना कुछ सोच विचार किए हुए, एक बारगी दाँव पर लगा दिया। वह अपने सैनिकों के साथ उश्तुर की ओर बढ़ा। उश्तुर के दुर्ग को विजित कर वह अपनी राजधानी अख्सी को वापस लौट गया। कुछ समय पश्चात् जब मंगोल सुल्तान महमूद खान को यह ज्ञात हुआ कि उमर शेख उश्तुर में नहीं है, और न ही उसके पास उश्तुर की रक्षा करने के लिए उपयुक्त साधन ही हैं तो उसने अपने छोटे भाई अहमद, जो कि इस समय उत्तरी मंगोलिस्तान पर शासन कर रहा था, को सहायता के लिए बिना बुलाये ही, उश्तुर पर आक्रमण किया, उसे अधिकृत कर लिया तथा दुर्ग के अन्दर की जनता को मौत के घाट उतार दिया। उश्तुर की रक्षा करते समय उमर शेख ने अपने कुछ बहुत ही अच्छे सैनिकों को खो दिया।[2] यही नहीं, उक्त घटना के पश्चात् उसमें बढ़ कर आक्रमण करने की शक्ति भी न रही। कुछ वर्षों तक वह शान्त रहा। इस अवधि में सम्भवतः वह अपने किये पर पश्चात्ताप करता रहा कि व्यर्थ में उसने अपने साले सुल्तान महमूद खाँ पर आक्रमण किया, उश्तुर विजित किया और उससे शत्रुता मोल ली। कुछ भी हो, यह सभी बातें केवल उसकी अदूरदर्शिता के कारण हुई। दिन-प्रतिदिन उसकी शक्ति क्षीण होने लगी और प्रतिष्ठा मिट्टी में मिलने लगी।

उमर शेख मिर्ज़ा की पराजय से उसका भाई सुल्तान अहमद मिर्ज़ा प्रसन्न हुआ और उससे सन्तुष्ट भी हुआ, किन्तु साथ ही मंगोल सुल्तान महमूद खान द्वारा उश्तुर अधिकृत करने पर वह कुछ चिन्तित भी हुआ। उसे ऐसा आभास हुआ कि उमर शेख मिर्ज़ा को शक्तिहीन करने के पश्चात् मंगोल सुल्तान उसके विरुद्ध अवश्य बढ़ेगा और न केवल उसे भी शक्तिहीन करने का, वरन् उसके राज्य को हस्तगत करने का प्रयास करेगा। इससे पूर्व कि वह इस दिशा में पग उठाए, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा स्वयं १,५०,००० सैनिकों के साथ ताशकन्द की ओर बढ़ा।[3] तारीख-ए-रशीदी के रचयिता के

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृष्ठ १२।
२. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृष्ठ ११५।
३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृष्ठ ११५।

अनुसार ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार ने सुल्तान अहमद मिर्ज़ा के पास यह कहलवाया भी कि वह उससे व्यर्थ झगड़ा मोल न लेकर सन्धि कर ले, परन्तु सुल्तान अहमद मिर्ज़ा ने उसके सुझाव की ओर तनिक भी ध्यान न दिया।[1] इस आक्रमण की सूचना मिलते ही मंगोल सुल्तान महमूद खान उसका सामना करने के लिए आगे बढ़ा। उसने ताशकन्द और सर्र नदी के मध्य पड़ाव डाला और सुल्तान अहमद मिर्ज़ा को सर्र नदी पार कर लेने दी। उसके आगे बढ़ते ही, मंगोल सुल्तान महमूद खान पर उसने सामने से आक्रमण कर दिया। अभी दोनों दलों में युद्ध चल ही रहा था कि शैबानी खाँ[2] ने जो कि सुल्तान अहमद की सेना में था, अपने सेनानायक के साथ विश्वासघात करते हुए उसका साथ छोड़ दिया, और पार्श्व से सुल्तान महमूद खान की ओर से लड़ना प्रारम्भ किया। शैबानी खां ने तैमूरी सेना पर इस प्रकार आक्रमण किया कि सुल्तान मिर्ज़ा की सेना में आतंक छा गया और उसके सैनिक भयभीत होकर उसी नदी की ओर भागने लगे जिसे वे पार करके आए थे। इस पर मंगोलों ने उनका पीछा किया। सुल्तान अहमद मिर्ज़ा के अनेक सैनिक युद्ध में मारे गये और जो नदी की ओर अपनी आत्मरक्षा हेतु भागे, वे नदी को पार न कर सके, और उसी में डूब गए। अनेक कठिनाइयों के पश्चात् सुल्तान अहमद मिर्ज़ा अपनी राजधानी समरकन्द पहुँच सका।[3]

मंगोल सुल्तान महमूद खान द्वारा पराजित होने पर दोनों तैमूरी शासकों, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा और उमर शेख मिर्ज़ा को यह चाहिए था

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११५।

२. शैबानी खान (शाही बेग खान) शाह बुदाग़ओग़लान (शाह बुदाग़ सुल्तान) का पुत्र तथा अबुल खैर खान का पौत्र था। शाह बुदाग़ सुल्तान की मृत्यु के पश्चात् शाही बेग खान को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। भाग कर वह मवारु- न्नहर आया, और सुल्तान अहमद मिर्ज़ा के एक उमराव की सेना में भर्ती हो गया। जिस समय यह युद्ध सुल्तान अहमद मिर्ज़ा तथा सुल्तान महमूद खान में हुआ उस समय शाही बेग खान के अन्तर्गत ३,००० सैनिक थे। तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११६।

३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११५; रशब्रुक विलियम्स, 'एन इम्पायर बिल्डर आफ़ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी', पृ० २८।

कि वे अपनी आपसी वैमनस्यता का परित्याग कर अन्य तैमूरी शासकों के साथ मिलकर, मंगोलों के विरुद्ध एक तैमूरी संघ का निर्माण करते और मंगोलों पर आक्रमण कर उन्हें शक्तिहीन कर तैमूरी वंश की प्रतिष्ठा को बनाए रखते। काश: वे ऐसा कर सकते। दुर्भाग्यवश उन्होंने ऐसा न किया। उनमें से किसी ने अन्य तैमूरी शासकों से सहयोग की न प्रार्थना की और न ही अपने शत्रुओं की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने की उन्होंने कोई चेष्टा की। फलस्वरूप मंगोल दिन प्रतिदिन सुलतान महमूद खान के नेतृत्व में शक्तिशाली होते गए। समरकन्द पहुँच कर सुलतान अहमद ने मंगोल सुलतान, महमूद खान के साथ सन्धि-वार्ता प्रारम्भ की[1] और उमर शेख मिर्ज़ा के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करने की योजना बनाई। दोनों शासकों में यह निश्चय हुआ कि वे मिलकर फरगना पर आक्रमण करेंगे और उसे विजित करने की चेष्टा करेंगे। इस समझौते को कार्यान्वित करने हेतु सुलतान अहमद मिर्ज़ा ने अपनी एक पुत्री का विवाह मंगोल सुलतान महमूद खान से किया।[2]

जैसे ही इस सन्धि की सूचना उमर शेख मिर्ज़ा को मिली, उसने तुरन्त ही अपने सैनिकों को एकत्र किया और उन्हें लड़ाई के मैदान में उतारा। उसने निकटवर्ती शासकों, सुलतान अहमद मिर्ज़ा तथा उसके मित्र सुलतान महमूद खाँ के राज्य के सीमावर्ती प्रदेशों पर आक्रमण किया। इस प्रकार उसने स्वयं पुनः दोनों शासकों को विवश किया कि वे उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ करें। वास्तव में वह ऐसी परिस्थिति में फँसा हुआ था कि शान्तिपूर्वक बैठना या आक्रमण करना, दोनों ही उसके राज्य के हितों के लिए

---

१. मिर्ज़ा हैदर दोघलत के अनुसार सुलतान अहमद मिर्ज़ा ने महान् सन्त ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरारी से क्षमा याचना कर अपने किए पर पश्चाताप प्रकट किया और उनके माध्यम से सुलतान महमूद खान से सन्धि की। इसी समय क़राग़ज़ बेगम के सम्बन्ध में भी वादविवाद हुआ और अन्त में सुलतान अहमद मिर्ज़ा को क़राग़ज़ बेगम, जो कि सम्भवतः वैमनस्यता का एक कारण रही होगी, का विवाह सुल्तान महमूद खान से करना पड़ा। तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११६, ११८।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, 'ऐन इम्पीयर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी,' पृ० २८।

घातक थे। प्रो० रशब्रुक विलियम्स का यह कथन कि अपने पूर्व अनुभव से उसने सीखने की चेष्टा न की, न्यायसंगत प्रतीत नहीं होता[1] और न ही डा० रामप्रसाद त्रिपाठी का यह कथन कि "समुचित शासनिक, आर्थिक, एवं नैतिक साधनों के अभाव में भी उसे फ़िरदौसी के शाहनामे में दर्ज वीरों की बराबरी करने की धुन थी," न्याय संगत प्रतीत होता है। मदिरा और माजूम के नशे में उसकी कल्पना उसे भयानक सीमा तक ले जाती थी[2] यह कथन भी उसकी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उचित प्रतीत नहीं होता है। वास्तव में सुल्तान अहमद मिर्ज़ा एवं मंगोल सुल्तान महमूद खान की सैनिक कार्यवाहियों ने, तथा उनकी राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने, उमर शेख को विवश कर दिया था कि अपनी सुरक्षा के लिए वह कुछ न कुछ सैनिक कार्यवाही करता रहे। अतः केवल उसी को दोषी ठहराना उचित नहीं प्रतीत होता। जब मंगोल सुल्तान महमूद खान तथा सुल्तान अहमद उसके आक्रमणों और उसकी चालों से तंग आ गए, तो उन्होंने उसे बिल्कुल ही शक्तिहीन कर देने का दृढ़ संकल्प किया।[3] १४६४ ई० में पूर्व-योजनानुसार उन्होंने फरग़ाना पर आक्रमण किया। सुल्तान अहमद मिर्ज़ा समरकन्द की ओर बढ़ा। सर नदी के दक्षिण से फरग़ाना को जाने वाले मार्ग पर वह चला और उसने फ़रग़ाना की राजधानी, अन्दीजान पर आक्रमण किया। दूसरी ओर से सुल्तान महमूद खान, एक विशाल सेना लेकर, सर नदी के निकट की पहाड़ियों के दर्रे को पार करता हुआ, अख़्सी के दुर्ग की ओर बढ़ा। इस प्रकार एक ही समय में फ़रग़ना पर दो ओर से आक्रमण किए गए। इस अभियान का पहला

१. प्रो० रशब्रुक विलियम्स, 'ऐन इम्पायर बिल्डर आफ़ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी', पृ० २८।
२. डा० रामप्रसाद त्रिपाठी, "राइज़ एण्ड फाल आफ दि मुग़ल इम्पायर", पृ० ६।
३. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४-१५; हैदर मिर्ज़ा दोग़लत के अनुसार सुल्तान अहमद मिर्ज़ा ने जब फरग़ाना के राज्य पर आक्रमण किया और उमर शेख़ मिर्ज़ा की अकस्मात् मृत्यु हो गई तो बाबर को सिंहासन पर बिठा कर उमर शेख के अमीरों ने सुल्तान महमूद खान को अपनी रक्षा करने के लिए बुलवाया। तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०) पृ० ११६; अकबरनामा (अनु०) भाग १ पृ० २२०।

चरण सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ और ऐसा प्रतीत होने लगा कि फरग़ना शत्रुओं के हाथों में शीघ्र ही आ जायेगा। लेकिन ऐसा न हुआ। उमर शेख मिर्ज़ा ने आक्रमणकारियोंकी चुनौती स्वीकार कर ली और अपनी कमरमें दो तलवारें बाँधकर वह उनका सामना करने के लिए तैयार हो गया। उसने अपनी राजधानी अन्दीजान की सुरक्षा का प्रबन्ध किया। उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र बाबर को, जिसकी आयु इस समय केवल ग्यारह वर्ष की थी, वहाँ का गवर्नर नियुक्त किया। ख़ुदाए बिरदी तथा अन्य विश्वस्त सरदारों को उसे परामर्श देने व उसकी सहायता करने के लिए वहाँ छोड़ कर, वह स्वयं अपने राज्य के पूर्वी प्रदेशों की सुरक्षा करने के लिए चल पड़ा। अख्सी पहुँच कर उसने शत्रु का मुकाबिला करने का दृढ़ संकल्प किया। इससे पूर्व कि दोनों दलों में घमासान युद्ध होता, एक ऐसी आकस्मिक घटना घटी जिसने युद्ध की दिशा ही बदल दी और फ़रग़ाना का राज्य शत्रु के हाथों में आने से बच गया। उमर शेख मिर्ज़ा जिसे कबूतर पालने का बहुत ही शौक था, एक दिन कबूतरों के उस मंझे पर, जिसे कि उसने पास की एक पहाड़ी पर बनवाया था और जिसके नीचे नदी बहती थी, चढ़ा, यकायक उसकी नींव हिली, और मंझा उस पर आ गिरा और उसी समय उसकी मृत्यु हो गई।[1] यह घटना ४ रमज़ान, ८९९ हि० ८ जून, १४९४ ई० को घटित हुई।[2] उमर शेख मिर्ज़ा की आयु उस समय ३९ वर्ष की थी।[3]

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १३; तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११९; रिज़वी, 'मुग़ल कालीन भारत' (बाबर) भाग, १, पृ० ६०८; अकबरनामा (अनु०) भाग १ पृ० २२० ; फ़िरिश्ता, 'तारीख़-ए-फ़िरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० १९१।

२. बाबर ने अपने 'आत्म चरित्र' में लिखा है कि "उमर शेख मिर्ज़ा करारे के ऊपर से कबूतर उड़ा रहे थे कि वे कबूतर एवं कावली सहित गिर कर मृत्यु को प्राप्त हो गए।" बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १३; रिजवी, 'मुग़ल कालीन भारत', (बाबर) पृ० ४७१, फ़िरिश्ता, 'तारीख़-ए-फ़िरिश्ता' पृ० १९१।

३. उनका जन्म समरकन्द में ८६० हि० (१४५६ ई०) में हुआ था—बाबरनामा (अनु०) भाग, १, पृ० १३; रिज़वी, 'मुग़ल कालीन भारत', (बाबर) पृ० ४७१; अकबरनामा (अनु०) भाग १ पृ० २२०।

अपने आत्म-चरित्र में बावर ने अनेक व्यक्तियों के बारे में संक्षिप्त विवरण दिये हैं। इन चरित्र-चित्रों से उसकी "आत्मकथा", बहुत ही रोचक बन गयी है। अपने पिता उमर शेख़ मिर्ज़ा के सम्बन्ध में वह लिखता है कि, 'उनका डील-डौल ठिंगना, शरीर गठा हुआ, दाढ़ी गोल तथा चेहरा भरा हुआ था। वे बड़े तंग वस्त्र धारण करते थे। कबा का बन्द बाँधते समय अपने पेट को भीतर करके पिचका लेते थे। और बाँधते समय जब वे ऐसा न कर पाते थे तो अधिकांश अवसरों पर ऐसा होता था कि बन्द टूट जाते थे। खाने और पहनने में वे कोई आडम्बर पसन्द नहीं करते थे। वे पगड़ी को दस्तारपेंच प्रथानुसार बाँधते थे। उस समय पगड़ियों को चार पेंच प्रथानुसार बाँधा जाता था। लोग उस समय बिना मरोड़े पगड़ी बाँधते थे और पीछे थोड़ा सा टुकड़ा लटका रहने देते थे। ग्रीष्म ऋतु, दरबार के अतिरिक्त, वे अधिकांशतः मुग़ल टोपी पहनते थे। वे अपने आचार-विचार में हनफी धर्म का पालन करते थे। वे पाँचों समय की नमाज़ पढ़ना कभी न भूलते थे। साथ ही वे ख्वाजा उबैदुल्लासह अहरारी के शिष्य थे और कुरान पढ़ने में काफी समय लगाते थे। कभी-कभी ख्वाजा की गोष्ठी में भी वे उपस्थित रहा करते। ख्वाजा उनका इतना अधिक सम्मान करते थे कि वे उन्हें अपना पुत्र कह कर बुलाते थे। वे ख़मेरू व मसनवी का अध्ययन किया करते थे। कविता करने में उन्हें रुचि न थी। हाँ, "शाहनामा" के अध्ययन में उन्हें बहुत रुचि थी। वे बड़े दानी थे और उदारता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे बड़े ही सुशील, शिष्टाचारी, वाक्पटु, मीठी वाणी बोलने वाले वीर एवं पराक्रमी व्यक्ति थे। बाण चलाने में यद्यपि वे साधारण व्यक्तियों की तरह थे, किन्तु उनके घूँसे की चोट बड़ी ज़ोर की होती थी। अन्य राज्यों पर अधिकार जमाने की महत्वाकांक्षा के कारण वे बहुत सी संधियों को युद्ध में, तथा मित्रता को शत्रुता में परिवर्तित कर देते थे। वे अपने प्रारम्भिक जीवन में अत्यधिक मदिरापान करते थे। बाद में वे सप्ताह में एक बार अथवा दो बार मदिरापान की गोष्ठी आयोजित करने लगे। गोष्ठियों में वे बड़े ही उत्तम ढंग से व्यवहार करते थे। ऐसे अवसरों पर वे बड़े उत्तम शेर पढ़ा करते थे। जीवन के अन्तिम काल में वे माजूम का अत्यधिक सेवन करने लगे थे। नशे की तरंग में वे बहक जाया करते थे। वे बड़े रसिक व्यक्ति थे और प्रेमियों के अनेक गुण उनमें पाए जाते थे। वे शतरंज बहुत खेलते थे और कभी-कभी पासे का खेल भी खेलते थे।"[1]

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १५-१६; अबुल फ़जल ने भी उमर

इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि फ़रग़ना का शासक उमर शेख़ मिर्ज़ा, जो कि स्वयं एक शिक्षित एवं सौम्य व्यक्ति था, ने अपने ज्येष्ठ पुत्र, बाबर के लिए प्रारम्भिक शिक्षा का प्रबन्ध न किया हो। यद्यपि इस बालक के बाल्यकाल एवं उसकी प्रारम्भिक शिक्षा के बारे में हमें कुछ भी मालूम नहीं है, किन्तु फिर भी, उस बालक को जिसके कमज़ोर कन्धों पर फ़रग़ना राज्य के प्रशासन का भार पड़ा उसको देखते हुए हम इतना अवश्य कह सकते हैं कि अब तक उसके ऊपर ख़्वाजा उबैदुल्लाह अहरार, उमर शेख़ तथा कुतलुग़ निगार के व्यक्तित्व की पूरी छाप पड़ चुकी थी। वह उन्हीं की तरह धार्मिक, सरल, महत्वाकांक्षी, विद्वान, साहसी, निडर एवं उदार था।[1] उसमें वे सभी गुण विद्यमान थे जिन पर तैमूरियों को घमण्ड था।

जिस समय बाबर सिंहासन पर बैठा उस समय उसकी आयु ग्यारह वर्ष चार महीने[2] और आठ दिन की थी। अपने पिता की मृत्यु के समय वह अन्दीजान में चार बाग़ में था। यहीं उसे यह दुखद समाचार ५ रमज़ान ८९९ हि०, मंगलवार ९ जून, १४९४ को प्राप्त हुआ।[3] अन्दीजान के दुर्ग की रक्षा करने के लिए वह

शेख़ मिर्ज़ा का, सूक्ष्म एवं संक्षिप्त विवरण दिया है—अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २१९; रिज़वी, 'मुगल कालीन भारत', (बाबर) पृ० ४७२-७३।

१. मुहम्मद अब्दुल ग़नी का यह कहना है कि बाल्यकाल में बाबर के चरित्र को बनाने एवं उसमें साहित्यिक रुचि पैदा करने का श्रेय, शेख़ मजीद, ख़ुदाए विरदी, बाबा कुली और मौलाना अब्दुल्लाह, उपनाम ख़्वाजा मौलाना काज़ी को था। बाबर ने इन विद्वानों के नाम अपनी आत्मकथा में दिए हैं। देखिए—'ए हिस्ट्री आफ दी परशियन लैंग्वेज एण्ड लिटरेचर ऐट दि मुगल कोर्ट,' भाग १, पृ० ४८।

२. किन्तु बाबर ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि वह १२ वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठा। बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १; तारीख़-ए-रशीदी के रचयिता के अनुसार बाबर की उम्र इस समय १२ वर्ष की थी। रिज़वी, 'मुगल कालीन भारत' (बाबर) पृ० ६०८; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२५।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १३; नफ़ायसुल मआसिर, रिज़वी, 'मुग़लकालीन भारत', (बाबर) पृ० ३४३; तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११९।

तुरन्त वापस लौट पड़ा। जैसे ही वह मिर्ज़ा द्वार पर पहुँचा, शीरीं तग़ाई नामक अमीर ने उसके घोड़े की रक़ाब पकड़ ली और उसे नमाज़गाह की ओर यह बतलाने के लिए ले गया कि फरग़ना पर दो ओर से आक्रमण होने के कारण परिस्थिति गम्भीर हो गई है, चारों ओर अनिश्चय का वातावरण है और ऐसी स्थिति में यह सम्भव है कि अन्दीजान के कुछ उमराव, उसको व उसके पिता के राज्य को सुलतान अहमद मिर्ज़ा के हाथों में समर्पित कर दें। शीरीं तग़ाई ने बाबर को राय दी कि वह उज़किन्त की ओर भाग जाय और वहाँ की निकटवर्ती पहाड़ियों में जाकर शरण ले ले। उसने बाबर से यह भी कहा कि समय मिलने पर वह अपने मामाओं के पास जाकर रह सकता है। जब अन्दीजान के दुर्ग में नियुक्त उमराव को, जिनमें से ख्वाजा मौलाना-ए-क़ाज़ी भी था, बाबर के अन्दीजान छोड़ने की बात मालूम हुई, तो उन्होंने शीघ्र ही उमर शेख़ मिर्ज़ा के वृद्ध दर्जी एवं सेवक, ख्वाजा मुहम्मद को उसके पास उसका भय दूर करने के लिए तथा उसे चार बाग़ से वापस लाने के लिए भेजा। ख्वाजा मुहम्मद अपने कार्य में सफल हुआ। बाबर ने अन्दीजान के दुर्ग में प्रवेश किया, जहाँ ख्वाजा-मौलाना ए-क़ाज़ी तथा राज्य के अन्य उमराव ने उसके सम्मुख सिर झुकाया। यहाँ सम्पूर्ण परिस्थिति पर विचार-विमर्श हुआ। यह निश्चय किया गया कि आक्रमणकारियों ने तलवार फेंक कर जो चुनौती दी है उसे स्वीकार कर लिया जाय तथा डट कर उनका मुक़ाबला किया जाय। उमर शेख़ मिर्ज़ा के अन्य उमराव, याकूब तथा क़ासिम कुचीन भी इसी समय मर्गिनान से आ पहुँचे। उन्होंने बाबर का साथ दिया। इस प्रकार सभी बेगों की सहायता से बाबर दुर्ग की रक्षा की तैयारी में लग गया।

इसी बीच सुलतान अहमद मिर्ज़ा ने औरतिपा, खोजन्द तथा मर्गिनान को अधिकृत कर लिया और अपनी सेनाओं के साथ क़ाबा तक, जो कि फ़रग़ना की राजधानी, अन्दीजान, से बहुत दूर न था, आगे बढ़ आया और वहीं पड़ाव डाल दिया। राजधानी के निकट शत्रु के आ पहुँचने के कारण दुर्ग के अन्दर के लोग कुछ भयभीत हुए। घबराहट की अवस्था में, बाबर के बेग, तरह-तरह के प्रस्ताव उसके समक्ष रखने लगे। यदि बाबर उनमें से किसी प्रस्ताव को स्वीकार कर लेता तो उसे अवश्य ही फ़रग़ना के राज्य से हाथ धोना पड़ता। अन्दीजान के एक उमराव, दरवेश गाऊ ने यह सुझाव दिया कि बाबर को सुलतान अहमद मिर्ज़ा के हाथों में सौंप दिया जाय, ताकि वह समरक़न्द वापस लौट जाय और अपनी सेनाओं

को अन्दीजान से हटा ले। उसके इस सुझाव पर बिना सोचे हुए ही, बाबर के कुछ समर्थकों ने उसे मौत के घाट उतार दिया। जैसे ही उस विश्वासघाती का सिर उसके शरीर से पृथक किया गया वैसे ही दुर्ग के अन्दर के सभी उमराव एक मत के हो गए तथा शत्रु की ओर से वे सतर्क भी हो गए।

दुर्ग की रक्षा व युद्ध करने से पूर्व, बाबर के कुछ उमराव ने केवल समय पाने की इच्छा से, सुलतान अहमद मिर्ज़ा से बातचीत प्रारम्भ की। यह कहना कठिन है कि क्या वास्तव में सुलतान अहमद के साथ वे किसी प्रकार का समझौता करना चाहते थे अथवा सुलतान अहमद भी किसी समझौते के लिए उत्सुक था। उनकी बातचीत से ऐसा प्रतीत होता है कि दोनों ही एक दूसरे को कूटनीतिक दाँव-पेंचों में उलझा रखना चाहते थे और अवसर पाते ही अपने लक्ष्य की प्राप्ति करना चाहते थे। कुछ भी हो, बाबर के अमीरों ने ख्वाजा-ए-काज़ी तथा ख्वाजा हुसैन के भाई औज़ून हसन को सुलतान अहमद मिर्ज़ा के पास भेज कर बाबर की ओर से यह कहलवाया कि फ़रग़ना को विजित करने के पश्चात् "वह वहाँ अपना एक सेवक अवश्य ही नियुक्त करेगा। बाबर भी उसके सेवक एवं पुत्र की भाँति है, और यदि वह उसे सेवा करने का अवसर प्रदान करता है तो उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से तथा शीघ्रतापूर्वक प्राप्त हो जायेगी।" लेकिन, सुलतान अहमद मिर्ज़ा, जिसे बाबर एक 'सौम्य, कमजोर, कम बात करने वाला' व्यक्ति कहता है, को अन्दीजान के उमराव के हृदय की बात समझने में देर न लगी। अतः बिना अपने अमीरों से परामर्श लिए हुए या उनकी बातों पर विचार किए हुए, वह शीघ्र ही अपनी सेनाओं के साथ क़ावा से अन्दीजान के दुर्ग का घेरा डालने के लिए चल पड़ा।[1]

सुलतान अहमद के इस प्रकार कूच करने से बाबर व उसके अमीरों को कुछ आश्चर्य हुआ। अभी तक घेराबन्दी को रोकने के लिए की गई तैयारियाँ पूर्ण न हो पाई थीं। दुर्ग के अन्दर के लोग बहुत हतोत्साहित थे। उन्हें न तो अपने भविष्य का ही ज्ञान था और न ही वे यही समझ सके थे कि बाबर के प्रति कितने उम-

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३०; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत", (बाबर,) पृ० ४८३; फिरिश्ता; "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९२।

राव वफ़ादार हैं। लगभग इसी समय आक्रमणकारियों ने अन्दीजान की दीवारों के नीचे अपने पड़ाव डाल दिये। कुछ समय पश्चात् उन्होंने जब दुर्ग के अन्दर के लोगों के साथ सन्धि-वार्ता की तो सभी को आश्चर्य हुआ। भाग्य ने बाबर व उसके समर्थकों का साथ दिया। कारण यह कि शत्रु की सेनाओं को अचानक अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ गया। क़ावा से अन्दीजान की ओर बढ़ते समय सुल्तान अहमद की सेना के घोड़ों में बीमारी फैल गई जिसके कारण हजारों की संख्या में घोड़े मरने लगे। यही नहीं, मार्ग में उन्हें किसानों व सैनिकों, दोनों के ही विरोध का सामना करना पड़ा। बाबर अपनी आत्मकथा में ठीक ही लिखता है कि, "उन्होंने हमारी प्रजा तथा सेना को इस प्रकार संगठित एवं दृढ़ पाया कि वे जब तक उनके शरीर में प्राण रहते तब तक वीरतापूर्वक प्राणों की बलि देने में संकोच न करते।"[1] इसके अतिरिक्त, एक कारण और था जिसने उन्हें मौत के मुँह में डाल दिया। क़ावा से अन्दीजान की ओर बढ़ते समय, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा व उसकी सेना को क़ावा की दलदली नदी को पार करना पड़ा। उसे पुल के बिना किसी अन्य स्थान से पार नहीं किया जा सकता था। जब उसकी विशाल सेना ने पुल पार करना प्रारम्भ किया तो पुल के संकीर्ण होने के कारण बहुत से घोड़े एवं ऊँट धक्के लगने से नदी में गिर कर समाप्त हो गए।[2] इससे पूर्व, तीन-चार वर्ष पहले, यही सेना चीर घाट पर बुरी तरह पराजित हुई थी। इस समय सुल्तान अहमद मिर्ज़ा को उसी घटना की याद आ गई। बहुत ही दयनीय स्थिति में अन्दीजान के निकट पहुँच कर उसने दरवेश मुहम्मद तरखान द्वारा बाबर के पास सन्धि का प्रस्ताव भेजा। दुर्ग के अन्दर के सैनिकों की दशा भी सन्तोष-जनक न थी, अतः बाबर के सहयोगियों ने याकूब के पुत्र हसन को बात करने के लिए भेजा। नमाज़गाह के समीप हसन की भेंट दरवेश मुहम्मद तरखान से हुई और वे सन्धि करके वापस लौट गए। सन्धि की क्या शर्तें थीं, इस सम्बन्ध में हमें कुछ भी मालूम नहीं। बाबर तथा अन्य सभी इतिहासकार इस पर मौन हैं। सन्धि के पश्चात् सुल्तान अहमद मिर्ज़ा अपनी सेनाओं के साथ

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ४८३।
२. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ३१; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६२।

शीघ्रतापूर्वक अपने देश समरकन्द को लौट गया।[1] इस प्रकार वह तूफ़ान जो कि बाबर व उसके राज्य को हिलाए दे रहा था शान्तिपूर्वक निकल गया।

किन्तु दूसरी ओर से एक नया खतरा पैदा हुआ। सुल्तान अहमद मिर्ज़ा के साथ किए गए समझौते के अनुसार मंगोलों का नेता, महान् सुल्तान महमूद खान, इसी बीच, खोजन्द नदी के उत्तर से होता हुआ आगे बढ़ा और उसने अख्सी के दुर्ग पर घेरा डाल दिया। इस आक्रमण की सूचना पाकर वाएस लधारी और मीर ग्यास तग़ाई, कसान के दुर्ग से भाग खड़े हुए तथा आगे चलकर वे सुल्तान महमूद खान से अख्सी के दुर्ग के निकट आकर मिल गए। उनके इस व्यवहार के बावजूद, जहाँगीर मिर्ज़ा, अली दरवेश बेग, मिर्ज़ा कुली कोकुलदाश, मुहम्मद बाक़िर बेग तथा शेख अब्दुल्लाह के नेतृत्व में सभी उमराव अख्सी के दुर्ग की रक्षा और आक्रमणकारियों का डट कर मुकाबला करते रहे। सुल्तान महमूद खान ने अनेक बार दुर्ग पर आक्रमण किए, शत्रु से लड़ाइयाँ लड़ीं, किन्तु दुर्ग को विजय करने में उसे तनिक भी सफलता नहीं प्राप्त हुई। जब उसे अपने मित्र, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा की वापसी की सूचना मिली, तो वह कुछ भयभीत हुआ। घबराहट के कारण वह बीमार पड़ गया। निरन्तर युद्ध करते रहने से वह थक तो गया ही था, अतः अधिक समय तक अख्सी में उसने ठहरना उचित न समझा और ताशकन्द वापस लौट गया।[2]

इससे पूर्व कि बाबर व उसके उमराव फ़रग़ाना राज्य के प्रशासन की कुछ व्यवस्था कर सकते और चैन से बैठ सकते, काशग़र के शासक अबू बक्र दोग़-

---

१. बाबरनामा (अनु०) १, पृ० ३१; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २२६; नफ़ायसुल-माआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ३४४; बाबरनामा, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत," (बाबर) पृ० ४८३; हैदर मिर्ज़ा दोग़लत के अनुसार जब सुल्तान अहमद मिर्ज़ा मरिगनान पहुँचा तो बीमार पड़ गया। उसने शीघ्र ही बाबर से संधि कर ली और समरकन्द की ओर चल पड़ा। तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११८; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, १९२।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०; ३१-३२; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२६; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९२।

लत ने फ़रग़ना राज्य की कमज़ोरियों से लाभ उठाने का विचार किया। उसने फ़रग़ना पर आक्रमण कर दिया। कुछ वर्षों पूर्व अबू बक्र दोग़लत ने अपनी सत्ता कश्ग़र तथा खोतान में स्थापित कर ली थी। अब केवल अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के विचार से उसने निकटवर्ती राज्यों की ओर ध्यान देना प्रारम्भ किया। फ़रग़ना की आन्तरिक दशा से वह भलीभाँति परिचित था। अतः अपनी विस्तारवादी नीति को उचित रूप से कार्यान्वित करने की अभिलाषा में उसने उज़किन्त के निकट एक दुर्ग का निर्माण करवाया और फ़रग़ना राज्य के सीमान्त प्रदेशों पर छापे मारना प्रारंभ किया। उमर शेख़ मिर्ज़ा की मृत्यु, उसके अल्पवयस्क पुत्र बाबर का फ़रगना के सिंहासन पर बैठना, तथा सुलतान अहमद मिर्ज़ा और सुलतान महमूद ख़ान की फ़रग़ना राज्य को आपस में विभाजित करने में असफलता, तथा फ़रग़ना के उमराव की वैमनस्यता ने ही अबू बक्र दोग़लत को अपने राज्य की सीमाएँ बढ़ाने के लिए प्रेरणा दी। सुलतान अहमद मिर्ज़ा व सुलतान महमूद ख़ान से अवकाश पाने के बाद, बाबर के अमीरों ने अबू बक्र दोग़लत की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं को रोकने की योजना बनाई। उन्होंने ख़्वाजा-ए-क़ाज़ी को अन्य उमराव के साथ उसे पीछे हटाने के लिए भेजा। फ़रग़ना के सैनिकों के आगे बढ़ते ही वह घबरा गया। उसे अपने पर इतना भी विश्वास न रह गया कि व फ़रग़ना के सैनिकों का सामना कर सकता। अतः उसने ख़्वाजा के साथ सन्धि-वार्ता प्रारम्भ की। ख़्वाजा को उसने मध्यस्थ बनाते हुए, बाबर से याचना की कि वह उसे किसी प्रकार कश्ग़र वापस लौट जाने दे। बाबर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और उसे कश्ग़र जाने दिया।[1]

विपत्ति के इस काल में, उमर शेख़ मिर्ज़ा के वृद्ध एवं युवक उमराव ने डटकर स्थिति का सामना किया। किन्तु विपदा के बादल हटते ही यह उमराव, उमर शेख़, मिर्ज़ा के तीन पुत्र,—बाबर, जहाँगीर और नासिर मिर्ज़ा—में बँट गए। पहले तो इन अमीरों ने इन युवराजों के पैतृक राज्य की रक्षा करने की हर प्रकार से चेष्टा की और फिर फ़रग़ना की राजनीति में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ किया। अन्दीजान के तीन वरिष्ठ उमराव, ख़्वाजा

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३५; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, १६२।

मौलाना, काज़ी हसन और क़ासिम कुचीन ने बाबर के हितों को सुरक्षित रखने में कोई क़सर न उठा रखी। दूसरी ओर, अली दरवेश बेग, मिर्ज़ा कुली कोकुलदाश, मुहम्मद बाक़िर बेग, और शेख़ अब्दुल्लाह, जहाँगीर मिर्ज़ा के हेतु अख़्सी के दुर्ग की सुरक्षा करते रहे। इसी प्रकार बाएस लघारी, मिर्ज़ा ग्यास तग़ाई और अन्य उमराव, यह सोचकर कि बाबर व जहाँगीर मिर्ज़ा के समर्थकों को सम्भवतः बाह्य आक्रमणकारियों के आक्रमणों को रोकने में सफलता न प्राप्त हो, नसीर मिर्ज़ा को अपने साथ कसान ले गए। कुछ समय पश्चात् वे सुलतान महमूद ख़ान से जाकर मिल गए और उसी के साथ अख़्सी के दुर्ग को विजित करने चल पड़े। किन्तु जब सुलतान महमूद ख़ान को इस अभियान में सफलता न प्राप्त हुई तो मीर ग्यास उसी के पास रुक गया, और उसकी सेना में भर्ती हो गया और बाएस लघारी, नासिर मिर्ज़ा के साथ सुलतान अहमद मिर्ज़ा की सेवा में चला गया। मीर ग्यास और बाएस लघारी के साथ छोड़ देने और नसीर मिर्ज़ा को सुलतान अहमद मिर्ज़ा को सौंप देने के पश्चात् भी उमर शेख़ मिर्ज़ा के दो अन्य पुत्रों की स्थिति में तनिक भी अन्तर न पड़ा। बाबर के लिए यह अच्छी बात हुई कि विश्वासघाती अपने असली रूप में सामने आये और उसे छोड़ कर चले गए।

इस प्रकार बाबर व उसके समर्थकों की कठिनाइयाँ कुछ कम हुई। बाबर के उमराव को कुछ समय मिला कि वे फ़रग़ना के राज्य की सुरक्षा के लिए कुछ प्रशासनिक कार्य करें और कुछ आवश्यक मामलों पर ध्यान दें। इसी बीच बाबर के पिता उमर शेख़ का परिवार अख़्सी से अन्दीजान आ गया था। अतः यह आवश्यक समझा गया कि शोक सम्बन्धी रस्में पूरी कर ली जावें। इस अवसर पर अपने पिता की पुण्य स्मृति में, बाबर ने सभी ग़रीबों और अनाथ व्यक्तियों को भोजन और उपहार प्रदान किये। तत्पश्चात् बाबर की दादी, एहसान दौलत बेगम, ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ली, और फ़रग़ना राज्य का प्रशासन उसने स्वयं देखना प्रारंभ किया। उसके महत्वपूर्ण सुझावों के ही कारण शान्ति एवं सुव्यवस्था की स्थापना हो सकी। उसने अपना ध्यान प्रशासन एवं सेना दोनों ही की ओर दिया। सम्भवतः उसी के सुझाव पर, याकूब के पुत्र हसन को अन्दीजान का गवर्नर नियुक्त किया गया और उसे दुर्ग के मुख्य द्वार की रक्षा का भार सौंपा गया। कासिम कुचीन को उश के प्रशासन हेतु नियुक्त किया गया; औज़ून हसन

को अख़्सी के दुर्ग की रक्षा का कार्य-भार सौंपा गया और अली दोस्त तग़ाई को मर्गिनान की रक्षा के लिए नियुक्त किया गया। राज्य के पदों को इस प्रकार वितरित करते समय अन्य उमराव के हितों का भी ध्यान रखा गया। बाबर ने इसकी चर्चा करते हुए स्वयं लिखा है कि विपत्ति के इस काल में, जिन उमराव ने मेरी सेवा करते समय स्वामिभक्ति दिखाई, उन्हें मैंने जागीरें (विलायत) व ज़मीन (ईर) या पद (मौज़ा) या सरदारी (जीगा) या वृत्ति (वज़ह) प्रदान की।[1] प्रत्येक व्यक्ति को, उसके ओहदे और समाज में उसके स्थान के हिसाब से, विलायत, भूमि, पद व सरदारी, तथा वज़ह प्रदान की गई।[2] इस प्रकार समस्त प्रशासन को व्यवस्थित करने की चेष्टा की गई, और यह प्रयास किया गया कि राज्य में शान्ति एवं सुरक्षा स्थापित हो। साथ ही उमराव वर्ग को उसकी नई जिम्मेवारियों के प्रति अवगत कराया गया।

नई समस्याओं का सामना करने के हेतु अभी प्राशासनिक व्यवस्था पूर्ण भी न हुई थी कि यकायक बाबर को सुलतान अहमद मिर्ज़ा की मृत्यु की सूचना प्राप्त हुई। सुलतान अहमद मिर्ज़ा जिस समय अन्दीजान[3] से लौटा उस समय वह बहुत दुर्बल हो गया था। बीमारी की अवस्था ही में उसने यात्रा की। फलस्वरूप मार्ग में उसकी दशा और भी चिन्ताजनक हो गई और ऑरतिपा के निकट अक़सू नामक स्थान पर उसकी मृत्यु, ४० वर्ष की आयु में शव्वाल माह के मध्य में, हि० ८९९ जुलाई १४९४ ई० को हो गई।[4] उसके कोई पुत्र न था जो कि उसके विशाल राज्य, जो समरकन्द बुखारा, ताशकन्द, सैराम, खोजन्द व ऑरतिपा तक फैला हुआ था, का उत्तराधिकारी बन सकता। उसकी मृत्यु के कारण, मध्य एशियाई राज्य में

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३२-३३, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ० ४८४।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३३, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत', (बाबर) पृ० ४८४; तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११९।

३. मिर्ज़ा हैदर दोग़लत के अनुसार सुलतान अहमद मिर्ज़ा मर्गिनान से ही वापस लौट गया था—तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११९।

४. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३३।

शक्ति का सन्तुलन बिगड़ गया। स्थिति पर नियन्त्रण रखने के लिए उसके उमराव ने एक मत होकर एक दूत को, उसके छोटे भाई सुल्तान महमूद मिर्ज़ा, जो कि इस समय बदख़शाँ से लेकर अफसेरा व हिन्दुकुश की पहाड़ियों तक फैले हुए विशाल क्षेत्र पर शासन कर रहा था, के पास भेजा। उन्होंने उसे समरकन्द के सिंहासन पर बैठाने के लिए आमन्त्रित किया। समरकन्द के उमराव के इस निमंत्रण को सुल्तान महमूद मिर्ज़ा ने स्वीकार कर लिया। उसने अपने पुत्रों के हाथों में हिसार व बुखारा का शासन सौंपा और स्वयं समरकन्द की ओर कूच किया। बिना किसी रुकावट के वह समरकन्द के सिंहासन पर बैठ गया।[1] इस प्रकार हिन्दुकुश की पहाड़ियों से लेकर समरकन्द तक फैले हुए विशाल प्रदेश उसके हाथों में आ गए। थोड़े ही समय में समुचित साधनों का प्रयोग कर, उसने नए प्रांतों में शान्ति एवं सुव्यवस्था स्थापित की। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि वह एक शक्तिशाली शासक था। प्रशासक के सभी गुण उसमें विद्यमान थे। किन्तु अपने व्यवहार तथा अपनी ही त्रुटियों के कारण वह बदनाम हो गया। समरकन्द के उमराव ने कुछ और ही सोचकर उसे बुलवाया था किन्तु अब अपनी अपेक्षा उन्होंने उसे कहीं अधिक शक्तिशाली एवं निर्भीक पाया। जब उन्होंने यह अच्छी तरह समझ लिया कि वह उन्हें सिर ऊपर न उठाने देगा तो राज्य के विभिन्न भागों में उन्होंने गड़बड़ियाँ प्रारम्भ कीं। उनके नेता, मलिक मुहम्मद मिर्ज़ा, जो कि मिनुचिहर मिर्ज़ा का पुत्र था तथा सुल्तान अबू सईद मिर्ज़ा का भतीजा था, ने अन्य मिर्ज़ाओं के साथ मिलकर राज्य की बागडोर अपने हाथों में लेने की असफल चेष्टा की। उन सभी व्यक्तियों को पकड़ लिया गया और कुक-सराय में भेज दिया गया। यद्यपि मलिक मुहम्मद मिर्ज़ा सुल्तान महमूद मिर्ज़ा के पिता के भाई का पुत्र तथा उसका ही दामाद था, फिर भी उसने उसे न छोड़ा, और अन्य मिर्ज़ाओं के साथ मौत के घाट उतरवा दिया। इस षड्यन्त्र का दमन करने के पश्चात् सुल्तान महमूद मिर्ज़ा ने अपना ध्यान शासन को सुधारने की ओर दिया। उसने लगान की दर बढ़ा दी और पाई-पाई वसूल करने पर जोर दिया। उसके लगान सम्बन्धी एवं कर सम्बन्धी कानून सभी लोगों के

---

१. तारीख-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ११६।

लिए थे ; यहाँ उसने वर्षों से चली आई हुई उस परम्परा का परित्याग कर दिया, जिसके अनुसार ख्वाजा उबैदुल्लाह के सभी अनुयायी करों से मुक्त थे। उनसे भी उसने बड़ी क्रूरतापूर्वक कर व लगान वसूल करना प्रारम्भ किया तथा ख्वाजा के बच्चों के साथ बहुत ही बुरा बर्ताव किया। फलस्वरूप समरकन्द के धार्मिक लोगों तथा ख्वाजा के अनुयायियों ने उसके विरुद्ध आवाज़ उठाई और उन सभी कानूनों को रद्द करने की माँग की। इसका उस पर तनिक भी प्रभाव न पड़ा। इसके अतिरिक्त दिन-प्रतिदिन वह विलास-प्रिय होता गया। उसकी भाँति उसके उमराव भी मदिरा के नशे में घृणित कार्य करने लगे तथा जनता को सताने लगे। हिसार में खुसरो शाह व उसके साथी भी नशे में चूर तथा दुराचार में लिप्त रहने लगे। एक बार उसका एक सेवक किसी व्यक्ति की पत्नी को भगा कर ले गया। उस स्त्री के पति ने खुसरो शाह से न्याय की माँग की तो उसने उत्तर दिया, "वह बहुत समय तक तेरे पास रही अब कुछ समय तक उसके पास रहने दे।"[1] चारों ओर इतना व्यभिचार फैल चुका था कि शहरी दूकानदारों व तुर्की सैनिकों के जवान पुत्रों को भी घर से निकलते डर लगता था कि कहीं उन्हें लौंडेबाज़ न पकड़ लें। लोग उसके आतंकपूर्ण व्यवहार से तंग आ चुके थे। किन्तु सुलतान महमूद मिर्ज़ा ने न तो खुसरो शाह की ओर ध्यान दिया और न अपने ही आचरण को सँभालने की चेष्टा की। वह पुराने ढर्रे पर चलता रहा।

कुछ समय पश्चात् उसने अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाने का निश्चय किया। इसलिए उसने निकटवर्ती राज्यों पर दृष्टि डाली। फ़रग़ाना की आन्तरिक दशा को मालूम करने में उसे देर न लगी। उसने उसे विजित करने और अपनी भूख मिटाने का दृढ़ संकल्प किया। फ़रग़ाना की आन्तरिक दशा इस समय अच्छी न थी। फ़रग़ाना का राज्य बाबर जैसे शिशु के हाथों में था, जिसे प्रशासन के बारे में तनिक भी अनुभव न था। उसके दो और छोटे भाई थे, जिनका भी उतना ही अपने पिता के राज्य पर अधिकार था। तैमूरी परम्परा के अनुसार उमर शेख़ का राज्य उनमें बराबर-बराबर विभाजित

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ४६१।

होना चाहिए था। परन्तु बाबर ने ऐसा न किया जिसके फलस्वरूप, उमराव वर्ग कई गुटों में विभाजित हो गया। उमर शेख़ मिर्ज़ा कालीन उमराव ने तो यह सोचा था कि जैसा उचित समझेंगे, वे अपने शासक को मोड़ लेंगे। परन्तु बाबर के उच्च विचारों एवं दृढ़ता के कारण ऐसा करने में वे असफल रहे। न ही वे उसके भाइयों को ही उसके विरुद्ध भड़काने में सफल हो सके। कुछ भी हो, अपने जीवन में वे असन्तुष्ट थे, और उनमें से कुछ ऐसे थे जिन्हें बाबर व उसके भाइयों से कोई भी दिलचस्पी न थी। वे केवल अपने ही हितों की रक्षा करना चाहते थे। संक्षेप में फ़रग़ना राज्य में राजनीतिक अशान्ति थी। उमराव वर्ग में एकता का अभाव था। ऐसी परिस्थिति में, सुलतान महमूद मिर्ज़ा को पूर्ण विश्वास हो गया कि फ़रग़ना पर वह सफलतापूर्वक विजय प्राप्त कर सकता है। उसने बाबर के पास अपना राजदूत, अब्दुल कुद्दूस बेग को भेजा। अब्दुल कुद्दूस बहुमूल्य उपहार, जिसमें सोने-चाँदी के पिस्ते भी थे, लेकर बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। यह उपहार सुलतान महमूद मिर्ज़ा ने अपने ज्येष्ठ पुत्र मसूद मिर्ज़ा के विवाह के उपलक्ष्य में भेजे थे। मसूद मिर्ज़ा का विवाह स्वर्गीय सुलतान अहमद मिर्ज़ा की द्वितीय पुत्री सालिहा सुलतान से कुछ दिनों पूर्व ही हुआ था। बाबर के पास राजदूत भेजने का एक कारण और था। अब्दुल कुद्दूस बेग, याकूब के पुत्र हसन, जो कि अन्दीजान के दुर्ग का मालिक था, का सम्बन्धी था, और उसी के द्वारा वह हसन को अपनी ओर मिलाना चाहता था कि जब वह अन्दीजान पहुँचे तो दुर्ग के द्वार उसके लिए खोल दिए जायें। अब्दुल कुद्दूस को अपने कार्य में कोई भी कठिनाई न हुई। उसने हसन के साथ तरह-तरह के वायदे किए और उसके व्यवहार से सन्तुष्ट होकर वह समरकन्द वापस लौट गया।[1]

इस प्रकार १४९४ ई० के अन्त में हसन ने बाबर को गद्दी से उतारने और उसके छोटे भाई जहाँगीर मिर्ज़ा को उस पर बैठाने का निश्चय किया। जहाँगीर मिर्ज़ा को वह अपने हाथ की कठपुतली बना कर फ़रग़ना पर शासन करना चाहता था। उसे अपनी इस योजना में उन असन्तुष्ट बेगों, जिनमें से मुहम्मद बाक़िर बेग, सुलतान महमूद दुलदाई और उनका पिता भी

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ० २९३।

था, का पूरा-पूरा समर्थन प्राप्त हुआ। किन्तु इससे पूर्व कि वह अपनी योजनाओं को कार्यान्वित करता, बाबर के कुछ खास बेगों को, उससे बात करते समय, उसकी योजनाओं का आभास मिल गया। जो कुछ उसके मन में था, उन्होंने पता लगा लिया। बिना समय नष्ट किए, उनमें से कुछ बेगों ने, जिनमें से ख्वाजा काज़ी, क़ासिम कुचीन, और अली दोस्त तग़ाई थे, शीघ्र ही बाबर की दादी एहसान दौलत बेगम के पास जाकर उसे षड्यन्त्र की सूचना दी। एहसान दौलत ने षड्यंत्र समाप्त करने व षड़यन्त्रकारियों को दण्ड देने का भार अपने कन्धों पर लिया। उसने बाबर को कुछ विश्वासपात्र बेगों के साथ दुर्ग के बाहरी द्वार से, दुर्ग में से हसन और उसके सहयोगियों को पकड़ने के लिए भेजा। हसन वहाँ न था। वह शिकार खेलने गया था। बाबर ने उसके सहयोगियों पर आकस्मिक आक्रमण किया और उन्हें बंदी बना लिया। जब हसन को इसकी सूचना मिली तो वह समरकन्द की ओर सुलतान महमूद मिर्ज़ा से सहायता लेने के लिए भागा। लेकिन क़न्द-ए-बादाम पहुँच कर उसने अपना इरादा बदल दिया, और अख़्सी पर आक्रमण करने का निश्चय किया। उसने यह सोचा कि यदि वह अख़्सी के दुर्ग को विजित कर लेता है तो वहाँ से वह अन्दीजान पर आक्रमण कर उसे जीत सकता है तथा वहीं ठहर कर अपने मित्र सुलतान महमूद मिर्ज़ा के आने की प्रतीक्षा भी कर सकता है। एहसान दौलत बेगम व बाबर को जब अख़्सी के दुर्ग पर आक्रमण करने की उसकी योजना के बारे में पता चला तो उन्होंने उसके आक्रमण को रोकने के लिए शीघ्र ही कार्यवाही की। उन्होंने अनेक बेगों व उमराव को उसके विरुद्ध रवाना किया। इन बेगों व सैनिकों ने छोटी-छोटी सैनिक टुकड़ियों को आगे भेजा। हसन उनका सामना करने के लिए आगे बढ़ा। उसने इन दलों को उस स्थान पर जहाँ कि उन्होंने रात्रि में पड़ाव डाला था, चारों ओर से घेर लिया और उन पर बाणों की वर्षा की। किन्तु रात्रि के अन्धकार में उसी के एक सेवक के कमान से एक तीर एकाएक छूटा, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। इस प्रकार हसन की योजना मिट्टी में मिल गई। वास्तव में उसने एहसान दौलत बेगम के प्राशासनिक गुणों को आँकने में त्रुटि की। वह सदैव उसे शक्तिहीन समझता रहा और यही सोचता रहा कि एक स्त्री व बालक उसका सामना कैसे कर सकेंगे। उसे यह बात कदापि मालूम न थी कि एहसान दौलत व बाबर, दोनों को ही

इस समय वरिष्ट उमराव जैसे ख्वाजा-ए-काज़ी, क़ासिम कुचीन, तथा अली दोस्त तग़ाई का सहयोग प्राप्त है। सुल्तान महमूद मिर्ज़ा, जो कि अपने ही राज्य में बहुत बदनाम हो गया था, के लिए अपनी ही योजना को कार्यान्वित करना घातक सिद्ध हुआ और उसने स्वयं ही अपने लिए कब्र खोद ली। दूसरे, हसन ने ऐसे समय बावर के विरुद्ध पग उठाया, जिस समय, उसके मित्र सुल्तान महमूद मिर्ज़ा के लिए बहुत ही कठिन था कि वह समरकन्द छोड़ कर उसकी सहायता के लिए प्रस्थान कर सकता।

याकूब के पुत्र, हसन की मृत्यु के साथ ही वह ख़तरा भी टल गया, जिससे बावर की प्रतिष्ठा को कभी भी हानि पहुँचने की सम्भावना हो सकती थी। हसन अन्दीजान का बहुत ही शक्तिशाली एवं प्रभावशाली उमराव था। हसन की मृत्यु के पश्चात् बावर के भाग्य ने करवट ली। भाग्य ने उसका साथ देना प्रारम्भ किया। जनवरी १४९५ ई० को उसके एक अन्य प्रतिद्वन्द्वी एवं विरोधी की मृत्यु हो गई। वह था समरकन्द का शासक सुल्तान महमूद मिर्ज़ा।[1] उसकी आकस्मिक मृत्यु के कारण बावर को कुछ शान्ति अवश्य मिली, किन्तु उसके राज्य के आन्तरिक मामले उसके मस्तिष्क पर बोझ बने रहे। यद्यपि कुछ समय के लिए वह दक्षिण व उत्तर की ओर से आक्रमण करने वाले समरकन्द के शासक के हाथों से बचा रहा, फिर भी अब तक वह समय न आया था जबकि वह निकटवर्ती राज्यों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ करता और अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाता।

सुल्तान महमूद मिर्ज़ा की मृत्यु के पश्चात् समरकन्द के राज्य की दशा बहुत ही ख़राब हो गई। चारों ओर आतंक छा गया। दरबार में अमीरों के मध्य शक्ति तथा राज्य के विभाजन के लिए संघर्ष प्रारम्भ हुआ। स्वर्गीय सुल्तान महमूद मिर्ज़ा के पाँच पुत्र और ग्यारह पुत्रियाँ थीं। उसकी मृत्यु के समय उसके दो बड़े लड़के सुल्तान मसूद मिर्ज़ा और सुल्तान बैसन्गर मिर्ज़ा, हिसार व बुख़ारा में थे। कुछ समय तक सुल्तान महमूद मिर्ज़ा

१. उसकी मृत्यु ४३ वर्ष की अवस्था में हुई। उसके राज्य में समरकन्द, बुख़ारा, व बदख़्शाँ सम्मिलित थे। उसके पाँच पुत्र थे—सुल्तान मसूद मिर्ज़ा, सुल्तान अली मिर्ज़ा, सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा, बैसन्गर मिर्ज़ा और सुल्तान वाएस मिर्ज़ा-अहसान-उत-तवारीख़, (अनु०) पृ० ५; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत," (बावर) पृ० ४९४-६; बावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ४५।

के वज़ीर ख़ुसरो शाह ने अपने स्वामी की मृत्यु की ख़बर छिपा कर रखी। समरकन्द के राज्य को उसने हड़पने की चेष्टा की तथा शाही राजकोष पर अपना अधिकार जमा दिया। किन्तु वह अपना प्रभुत्व बहुत दिनों तक न बनाए रख सका। अन्त में सुलतान महमूद मिर्ज़ा की मृत्यु की ख़बर चारों ओर फैल गई। समरकन्द की जनता जो ख़ुसरो शाह से घृणा करती थी, ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया। अहमद हाजी बेग और तरख़ानों ने इस विद्रोह को दबा दिया। उन्होंने ख़ुसरो शाह को राजधानी से निकाल दिया और उसे कुछ संरक्षकों के साथ हिसार भेज दिया। इसके पश्चात् तरख़ानों ने उत्तराधिकार का प्रश्न बैसन्गर मिर्ज़ा के पक्ष में तय किया और उसे बुख़ारा से आने के लिए निमंत्रित किया। बैसन्गर के आने के पश्चात् उसे समरकन्द के सिंहासन पर बैठाया गया। जैसे ही वह सिंहासन पर बैठा, समरकन्द में गड़बड़ियाँ पुनः प्रारम्भ हो गई। सुलतान महमूद मिर्ज़ा के ज्येष्ठ पुत्र, सुलतान मसूद के राज्याधिकार को ठुकराने के कारण उमराव का एक और गुट बन गया। जुनैद बारलास के नेतृत्व में इन्हीं अमीरों ने चग़ताइयों के महान् ख़ान सुलतान महमूद ख़ान को, समरकन्द के आन्तरिक मामलों को सुलझाने व सुलतान मसूद के हितों की सुरक्षा करवाने के लिए आमंत्रित किया। सुलतान महमूद ख़ान ने उनका निमन्त्रण स्वीकार किया और विशाल सेना लेकर समरकन्द पर आक्रमण कर दिया। कान-बाई का दुर्ग विजित करने के लिए वह आगे बढ़ा। किन्तु बैसन्गर मिर्ज़ा भी उसी समय उसको रोकने के लिए चल पड़ा। कान-बाई के निकट दोनों में घोर युद्ध हुआ। सुलतान महमूद ख़ान के सेनापति हैदर कोकुलदाश, जो कि रण-विद्या में बहुत कुशल था, ने अग्रिम दल का नेतृत्व किया। अभी युद्ध हो ही रहा था कि बैसन्गर की सहायता के लिए हिसार और समरकन्द से विशाल सेनाएँ आ पहुँचीं और उसने हैदर कोकुलदाश को बुरी तरह परास्त किया, उसे बन्दी बना लिया और मंगोल सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। जो लोग बन्दी बनाए गए उन्हें बैसन्गर मिर्ज़ा की उपस्थिति में क़त्ल कर दिया गया। क़त्ल किए हुए सैनिकों की संख्या इतनी अधिक हो गई कि बैसन्गर को तीन बार अपना शिविर एक स्थान से दूसरे स्थान पर लगाना पड़ा।[1]

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ० ४६६।

कान-बाई के युद्ध के उपरान्त, वैसन्गर मिर्ज़ा ने निकटवर्ती राज्यों के सीमावर्ती प्रदेशों को जीत कर अपनी स्थिति को सुदृढ़ करना प्रारम्भ किया। उसकी विशाल विजय सम्बन्धी योजनाओं के सामने बाबर को अपना कार्य-क्षेत्र सीमित ही रखना पड़ा। फिर भी उसकी आँखें समरकन्द में होने वाली दिन-प्रतिदिन की घटनाओं की ओर लगी रहीं। क्योंकि वैसन्गर की विस्तारवादी नीति उसके लिए घातक सिद्ध हो रही थी। उसके राज्य के छोटे-छोटे टुकड़े धीरे-धीरे, उसके नए प्रतिद्वन्द्वी के हाथों में जाने लगे।

कुछ ही महीनों के अन्दर बाबर के एक मंगोल सरदार, इब्राहीम सुरु ने असफेरा के दुर्ग को विजित कर लिया और वहाँ सुल्तान वैसन्गर मिर्ज़ा के नाम का खुतबा पढ़ा।[1] इब्राहीम सुरु की बढ़ती हुई शक्ति से बाबर चिन्तित हुआ। असफेरा के दुर्ग को वापस लेने के लिए वह उस ओर बढ़ा। असफ़ेरा पहुँच कर उसने दुर्ग पर घेरा डाला और दीवारों को खोदना प्रारम्भ किया। इब्राहीम सुरु जब अकेला इस आक्रमण का सामना न कर सका तो उसने वैसन्गर को अपनी सहायता के लिए बुलाया। चूंकि वैसन्गर इस समय सुल्तान महमूद खाँन के विरुद्ध व्यस्त था, अतः वह सहायक सेना असफेरा भेजने में असमर्थ रहा। कुछ समय तक इब्राहीम सुरु बाबर का सामना करता रहा। यद्यपि इस संघर्ष में बाबर को खुदाए-बिर्दी जैसे अफसरों से हाथ धोना पड़ा, किन्तु फिर भी वह अपने निश्चय पर अटल रहा। अन्त में विवश होकर इब्राहीम सुरु को जून, १४६५ ई० में असफेरा का दुर्ग बाबर को समर्पित करना पड़ा। वह स्वयं अपने गले में तलवार लटका कर बाबर के सामने उपस्थित हुआ। बाबर ने उसे क्षमा कर दिया और अपनी सेवा में ले लिया।[2]

बाबर, इब्राहीम सुरु के विद्रोह को दबाने व असफेरा के दुर्ग को विजित करने में जिस समय व्यस्त था उसी समय मीर मुग़ल के पिता अब्दुल वहाब

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५२; फ़िरिश्ता, 'तारीख-ए-फ़िरिश्ता' (मू० ग्रन्थ), पृ० १६२।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५२-५३; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६२; ब्रिग्स, "राइज आफ दि मुहम्मडन पावर इन इण्डिया," (लन्दन १८२६) भाग २, पृ० ६।

शगावल ने बैसन्गार मिर्ज़ा के हाथों में खोजन्द का दुर्ग समर्पित कर दिया।[1] इससे कुछ दिनों पूर्व औरतिपा, जो कि उमर शेख़ मिर्ज़ा के हाथों में था, बाबर के हाथों से निकल कर सुलतान अली मिर्ज़ा के अधिकार में आ गया। सुलतान अली अपने भाई बैसन्गार मिर्ज़ा की ओर से वहाँ शासन करता रहा। इन प्रदेशों को खोने के साथ-साथ बाबर को अन्य समस्याओं का भी सामना करना पड़ा। एक ओर तो बैसन्गार मिर्ज़ा परछाई की तरह उसका पीछा कर रहा था, दूसरे इन प्रदेशों के हाथ से निकल जाने के कारण उसे आर्थिक हानि हुई, तीसरे जीगरक जैसी असभ्य जातियों में उत्पन्न जागरूकता के कारण उस पर कठिनाइयों का पहाड़ टूट पडा। इन कठिनाइयों का सामना करते हुए भी, बाबर एक विशाल सेना लेकर खोजन्द को वापस लेने के लिए चल पड़ा। जैसे ही खोजन्द के दुर्ग के निकट वह पहुँचा, अब्दुल वहाब शगावल, दुर्ग की कुंजियाँ लेकर बाहर निकला और उन्हें बाबर के हाथों में सौंप दी।[2] इससे पूर्व कि वह खोजन्द से उन जातियों को दबाने तथा उन्हें पूर्णरूप से अपने अधीन करने का प्रयास करता, उसे ज्ञात हुआ कि सुलतान महमूद ख़ान शाहरुख़िया में पड़ाव डाले हुए पड़ा हुआ है। क्योंकि वह एक निकटवर्ती प्रान्त में उपस्थित था, बाबर ने उससे मिलने का विचार किया। अपने वास्तविक उद्देश्य पर तनिक भी प्रकाश न डालते हुए वह अपनी आत्म-कथा में केवल इतना ही लिखता है कि, "वह मेरे पिता व बड़े भाई के समान हैं अतः मैं उसकी सेवा में उपस्थित हो जाऊँ और पिछली घटनाओं के कारण यदि उसके मन में मेरे प्रति कोई शंका हो तो उसे दूर कर दूँ। वहाँ पहुँच कर मैं उसकी बातें निकट से सुन सकूँगा और उसके दरबार के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकूँगा।"[3] उसकी इन बातों से यह पता चलता है कि अपने को कठिनाईयों से घिरा पाकर उसने सुलतान महमूद ख़ान से मिलकर उससे सहायता प्राप्त करनी चाही। उसके मामा और चाचा, सभी उसके शत्रु सिद्ध हो चुके थे। फिर भी सुलतान महमूद ख़ान जो

१. बाबरनामा (अनु०)भाग १, पृ० ५४।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५४; रिज़वी "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ० ५०१।
३. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५४।

कि उसका मामा था, उससे उसे यह आशा थी कि वह मुसीबत की इन घड़ियों में उसकी सहायता अवश्य करेगा। दूसरे उसके लिए यह सुअवसर था कि वह अख्सी जाकर वहाँ की भौगोलिक दशा और आन्तरिक मामलों की जानकारी प्राप्त कर ले, तथा खान को यह आश्वासन भी दिला दे कि उसके मन में किसी प्रकार का उसके विरुद्ध विचार नहीं है। कुछ भी हो, बिना किसी अन्य विचार के, स्वच्छन्द मन से, बाबर अपने मामा सुलतान महमूद खान से, जो कि इस समय शाहरुखिया के बाहर हैदर कोकुलदाश द्वारा लगाए हुए उद्यान में ठहरा हुआ था, भेंट करने गया। वह एक चार गुम्बद वाले शामियाने में, जो कि उद्यान के मध्य में लगाया गया था, बैठा हुआ था। बाबर इस भेंट के बारे में लिखता है कि, "मैंने उसके सामने तीन बार झुक कर उसका अभिवादन किया, उसने खड़े होकर मेरा स्वागत किया। आँखों ही आँखों में हम एक दूसरे को देखते रहे, तत्पश्चात् वह अपनी जगह जाकर बैठ गया। मेरे अभिवादन करने के पश्चात् उसने मुझे अपने पास बुलाया और उसने मेरे प्रति सहृदयता एवं मित्रतापूर्ण व्यवहार किया।"[1]

मामा व भान्जे की यह भेंट बिल्कुल ही साधारण थी। उन्होंने किसी प्रकार का कोई समझौता नहीं किया और न ही बचाव या आक्रमण के सम्बन्ध में कोई सन्धि उन्होंने की। न ही उन्होंने भविष्य के लिए कोई भी योजना बनाई और न ही उन्होंने यह तय किया कि अपनी शक्ति को बढ़ाने व उसे सदृढ़ करने के लिए वे एक दूसरे की क्या सहायता कर सकते हैं। न ही इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने-अपने विचार ही प्रकट किए। इसके कई कारण थे। तैमूरी शासक न तो मंगोलों को अपने आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने देना चाहते थे और न ही उनके व्यवहार को वे पसन्द करते थे। इस समय जब कि उसका स्वयं भविष्य ही अन्धकार में था, महान् खान के साथ सन्धि करने से उसे तनिक भी लाभ न होता। इसके विपरीत मंगोलों के साथ सन्धि करना उन्हें अत्यधिक शक्तिशाली बना देना सिद्ध होता। मंगोलों के शक्तिशाली हो जाने से मध्य एशियाई राजनीति का सन्तुलन अवश्य बिगड़ जाता। तत्कालीन परिस्थिति में तैमूरी शासकों की शक्ति बनाए रखने के लिए यह ही उचित

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५४; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ५०१।

था कि महान् ख़ान सुलतान महमूद ख़ान को किसी प्रकार का अवसर न दिया जाय कि वह अपने प्रभुत्व को बढ़ा सके। अतः बिना सन्धि किए हुए, वह ख़ान के पास से किन्दिरलिक दर्रो को पार करता हुआ अख़्सी व अन्दीजान की ओर चल पड़ा।[1]

अख़्सी पहुँच कर उसने अपने पिता के मज़ार के सामने सिर झुकाया और उसके चक्कर लगाए और फिर वह अन्दीजान की ओर बढ़ा। अन्दीजान की ओर बढ़ते समय उसने यह सोचा कि क्यों न वह एक विशाल सेना सैय्यद क़ासिम बेग के नेतृत्व में, कशग़र व फ़रग़ना के मध्य रहने वाली जिगरक जाति से कर वसूल करने के लिए भेज दे। उसने ऐसा ही किया। जिगरक जाति बहुत ही धनी थी। उसके पास घोड़े, भेड़ें और योक अधिक से अधिक संख्या में थे परन्तु फिर भी वे सरलता से कर कभी न देते थे। इससे कर वसूल करके वह अपने सैनिकों के वेतन का भुगतान भी करना चाहता था। सैय्यद क़ासिम बेग़ ने वहाँ पहुँच कर २०,००० भेड़ें और १,५०० घोड़े कर के रूप में जिगरक जाति से वसूल किए और वे सब बाबर ने अपने सैनिकों को सन्तुष्ट करने के लिए उनमें बाँट दिए।[2]

जिगरक जाति पर सफलता प्राप्त करने से बाबर के सैनिकों का हौंसला बढ़ गया। उसने अपनी एक फ़ौज औरतिपा के दुर्ग को वापस अपने हाथों में लेने के लिए भेजा। बाबर की फ़ौज के आने की सूचना पाते ही, सुलतान अली मिर्ज़ा ने अपने संरक्षक शेख़ जुनून अरग़ून को दुर्ग की रक्षा करने का भार सौंपा और स्वयं माहा के पहाड़ी प्रदेशों की ओर भाग खड़ा हुआ। अभी बाबर खोजन्द व औरतिपा के बीच ही में था कि उसने ख़लीफ़ा को शेख़ जुनून अरग़ून के पास भेज कर यह कहलवाया कि वह दुर्ग उसके सैनिकों को सौंप दें। किन्तु शेख़ ने ख़लीफ़ा को बन्दी बना लिया और आदेश दिया कि उसे मार डाला जाय। ख़लीफ़ा वहाँ से भाग खड़ा हुआ और अनेक मुसीबतों के पश्चात् वह बाबर के पास पहुँचा। शेख़ जुनून अरग़ून को बहुत ही शक्तिशाली पाकर

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, ५४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृष्ठ ५०१।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ५५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५०१।

बाबर अन्दीजान वापस लौट गया। जैसे ही वह पीछे हटा, उसका मामा सुल्तान महमूद खान, ज्येष्ठ खान एक विशाल सेना लेकर औरतिपा की ओर अग्रसर हुआ और उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। दुर्ग की रक्षा अधिक समय तक न कर सकने पर, शेख जुनून अरगून ने दुर्ग को खान के हाथों में सौंप दिया। खान ने दुर्ग की रक्षा का भार मुहम्मद हुसैन गुरखान दोघ्लत पर डाल दिया। इस प्रकार ९०८ हि०। १५०३ ई० तक मुहम्मद हुसैन के हाथों में औरतिपा का दुर्ग रहा।[1]

यद्यपि इस अवसर पर बाबर को औरतिपा को विजय करने में कोई सफलता प्राप्त न हुई किन्तु फिर भी वह अपने भाग्य से सन्तुष्ट था। उसे यह सन्तोष था कि उसने अब तक इब्राहीम सुरु के विद्रोह का दमन कर लिया है, असफ़ेरा और खोजन्द के दुर्गों को पुनः वापस ले लिया है, जिगरिक जाति से कर वसूल कर लिया है और अपने राज्य की सीमाओं को भलीभाँति सुरक्षित कर लिया है। सैनिक दृष्टि से इन अभियानों में उसकी सफलता उसके लिए बहुत ही महत्वपूर्ण थी। इन अभियानों में सफलता मिलने के कारण उसमें आत्मविश्वास बढ़ा। वह अपने कार्य के प्रति जागरूक हुआ, और उसे अपनी नई समस्याओं व उत्तरदायित्व का आभास हुआ। अन्दीजान पहुँचने के उपरान्त उसने युद्ध के लिए सामग्री एकत्रित एवं सैनिक संगठन करना प्रारम्भ किया। इससे पूर्व कि वह अपने किसी निकटवर्ती राज्य के शासक के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही करे, उसके लिए ऐसा करना बहुत ही आवश्यक था।

एक ओर तो उसके हाथ अपनी तलवार की धार तेज़ करने में लगे रहे दूसरी ओर उसकी आँखें समरक़न्द को विजय करने के लिए लालायित रहीं। बचपन से ही समरक़न्द उसके मन में बस गया था। मध्यकाल में समरक़न्द का राजनैतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक महत्व था। समरक़न्द का नाम अमीर तैमूर के वैभव एवं उसकी महानता से संलग्न था। समरक़न्द एक व्यापारिक केन्द्र था तथा एक ऐसा शहर जहाँ कि विभिन्न जाति, धर्म एवं वर्ग के लोग आया जाया करते थे। यही नहीं उसका नाम उच्चकोटि के सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में लिया जाता था। मध्य-एशियाई राजनीति का केन्द्र भी उसे

---

१. बाबरनामा; (अनु०) भाग १; पृ० ५५–५६; नुफ़ाय-सुल्-माआसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ३४४।

माना जाता था। इस ऐतिहासिक शहर का स्वामी ही, मध्य एशियाई राजनीति में सक्रिय भाग लेने की आशा रख सकता था। यहाँ से किसी दिशा में वह अपनी तलवार को घुमा सकता था, किसी प्रदेश को विजित कर सकता था तथा एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने का स्वप्न भी देख सकता था। यही कारण है कि समरकन्द सदैव बाबर के स्वप्नों में रहा। जीवन के प्रथम चरण में ऐसा कोई भी क्षण न था, जब कि समरक़न्द की ओर से इसका ध्यान हट गया हो या उसने समरकन्द की राजनीति में दिलचस्पी लेना बन्द कर दिया हो या वहाँ शासन करने वाले व्यक्तियों के बारे में उसने सोचना समाप्त कर दिया हो।

महान् खान सुलतान महमूद खान की मंगोल सेनाओं को कान बाई के युद्ध में बुरी तरह परास्त करने के पश्चात् समरक़न्द के शासक बैसन्गर मिर्ज़ा को खुरासान के शक्तिशाली शासक सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा जो कि अमीर तैमूर के ज्येष्ठ पुत्र का वंशज था, का सामना करना पड़ा। इस समय वह अपने परिवार के सभी राजकुमारों से शक्तिशाली था। वह एक विद्वान और सभ्य व्यक्ति था, जिसने अपने दरबार में अनेक साहित्यकारों, कलाकारों को आश्रय दे रखा था। उसका दरबार बहुत ही शानदार और भव्य था। वह स्वयं महत्वाकांक्षी, साहसी और वीर था और सदैव अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करने का तथा अपने पड़ोसियों की कमज़ोरियों का लाभ उठाने का अवसर ढूंढ़ा करता था। अपनी राजधानी हिरात से वह अपने विशाल साम्राज्य पर शासन किया करता तथा साम्राज्य के दूरस्थ प्रदेशों पर भी नियन्त्रण रखता था। यह देखकर कि बैसन्गर मिर्ज़ा गृह-युद्ध में फँसा हुआ है, सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा एक विशाल सेना को लेकर हिसार की ओर बढ़ा। शीत-ऋतु के प्रारम्भ हो जाने पर उसने तिरमिज़ में पड़ाव डाल दिया। नदी के उस पार से सुलतान बैसन्गर मिर्ज़ा के बड़े भाई सुलतान मसूद मिर्ज़ा ने उसे देख लिया, और वह एक विशाल सेना लेकर उस पर दृष्टि रखने के लिए आगे बढ़ा। तिरमिज़ के निकट उसने भी अपना पड़ाव डाल दिया। शीतकाल में दोनों प्रतिद्वन्द्वियों की सेनाएँ एक दूसरे की गतिविधियों पर कड़ी निगाह डाले पड़ी रहीं। इसी बीच, खुसरो शाह ने अपनी स्थिति कुन्दुज़ में सुदृढ़ कर ली और अपने भाई वली को सुलतान मसूद मिर्ज़ा की सहायता के लिए रवाना किया। शीत-ऋतु के समाप्त होते ही सुलतान हुसैन बैक़रा, जो कि बहुत ही अनुभवी सेनानायक था, नदी के किनारे तक आगे बढ़ गया, और कुछ दूर

तक फ़ासला तय करने के पश्चात् पुन: लौट पड़ा । तत्पश्चात् उसने धोखे से शीघ्र ही नदी को पार किया और सुलतान मसूद मिर्ज़ा की फौजों पर वह टूट पड़ा। सुलतान मसूद पर आकस्मिक आक्रमण न कर उसने अब्दुल लतीफ़ बख्शी को ५००–६०० सवारों के साथ उसी नदी के किलिफ़ नामक घाट की ओर रवाना किया। फिर दोनों सेनाओं ने नदी को पार किया और सुलतान मसूद मिर्ज़ा के सामने आकर डट गईं। इस प्रकार सुलतान मसूद मिर्ज़ा ने अपने को दोनों ओर से घिरा पाया। बाक़ी चग़नानी व उसके भाई ने उसे यह परामर्श भी दिया कि वह शीघ्र से शीघ्र आक्रमणकारियों पर आक्रमण कर दें किन्तु उसने उनकी बात न मानी। उसने अपने शिविर को उठा लिया और दुर्ग में शरण ले ली। सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा हिसार के दुर्ग की ओर बढ़ा और उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। लगभग इसी समय उसने अपने ज्येष्ठ पुत्र बदी उज़-ज़मान मिर्ज़ा के नेतृत्व में, इब्राहीम हुसैन मिर्ज़ा और मुहम्मद वली बेग, जुनून अरगून के साथ, दो सैनिक दल कुन्दुज की ओर भेजे, जहाँ खुसरो-शाह डट कर बैठा हुआ था। उसने एक अन्य सैनिक दल, अपने दूसरे पुत्र मुजफ्फर हुसैन मिर्ज़ा के नेतृत्व में मुहम्मद बरन्दुक बारलास के साथ, खुतलान पर आक्रमण करने के लिए भेजा।[1]

सुलतान हुसैन बैक़रा की इन सैनिक कार्यवाहियों की सूचना जैसे ही सुलतान मसूद मिर्ज़ा को प्राप्त हुई उसने तुरन्त हिसार का दुर्ग छोड़ दिया और समरक़न्द की ओर भाग खड़ा हुआ। वह काम-रूद की घाटी को पार कर, सरा तक के दर्रे से होकर समरक़न्द जाने के लिए चल पड़ा। अनेक कठिनाईयों के पश्चात् वह समरक़न्द पहुँचा जहाँ कि उसने अपने भाई बैसन्गर को सुलतान हुसैन मिर्ज़ा के आक्रमण की सूचना दी और उसे यह बताया कि शत्रु घर में घुस आया है। उसके हिसार छोड़ने के कारण चारों ओर आतंक छा गया। फिर भी बैसन्गर ने तनिक भी हिम्मत न हारी। वली खुतलान के दुर्ग की रक्षा करने के लिए लौट गया। इसी प्रकार बाक़ी चग़नानी, महमूद बारलास और कुचबेग का पिता सुलतान अहमद यह सब व्यक्ति हिसार के दुर्ग में ही डटे रहें और उसकी रक्षा करने की चेष्टा में लगे रहे। अपने राज्य की सुरक्षा करने के हेतु इन सब कदमों के उठाने के पश्चात् भी उज-

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५७–५८।

बेग सैनिक यही सोचते रहे कि थोड़े ही समय में शत्रु को समरकन्द के राज्य को विजित करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जावेगी और उनके लिए यहाँ ठहरना निरर्थक है। अतः उनमें से अनेक उज़बेग सैनिक समरक़न्द को छोड़ कर चले गए। हमज़ा सुलतान और महदी सुलतान अपने उज़बेग सैनिकों के साथ क़रत-गीन चले गए। कुछ समय पश्चात् मुहम्मद दोघ्लत और सुलतान हुसैन दोघ्लत भी अपने मुगल सैनिकों के साथ उनसे जाकर मिल गए। यह सोचकर कि कहीं यह लोग उसके राज्य में घुस कर गड़बड़ियाँ न पैदा करें या उसका ही पासा पलट दें, सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा ने इब्राहीम तरख़ान और याक़ूब-ए-अय्यूब को एक सेना के साथ उनका पीछा करने और उन्हें खदेड़ देने के लिए भेजा।[1] सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के सैनिकों द्वारा करकतग़ीन से भगाए जाने पर, हमज़ा सुलतान, और उसका पुत्र मामक़ सुलतान, महदी सुलतान, मुहम्मद दोघ्लत, उसका भाई सुलतान हुसैन दोघ्लत, अन्य उज़बेगों व मुगलों के साथ अन्दीजान पहुँचे, जहाँ उन्होंने बाबर की शरण ली और वे उसकी सेवा में भर्ती हो गए (मई-जून १४९५ ई०)।[2]

यद्यपि इस समय बैसन्गर मिर्ज़ा का साथ अनेक उज़बेग व मुग़ल सैनिकों ने छोड़ दिया, फिर भी उसकी स्थिति में तनिक भी अन्तर न आया। हिसार के दुर्ग रक्षक उसकी रक्षा करते रहे। सुलतान हुसैन बैक़रा दुर्ग के और निकट आ गया और उसने दुर्ग को विजित करने की हर तरह से चेष्टा की। यद्यपि हिसार के दुर्ग का घेरा बाबर ने स्वयं अपनी आँखों से न देखा था, फिर भी उसने इस घेरे का वर्णन बहुत ही उत्तम ढंग से किया है। वह लिखता है कि, "रात और दिन, किसी समय भी किसी को भी विश्राम करने का समय न था, प्रत्येक व्यक्ति दुर्ग की दीवारों की नींव को खोदने, उसको तोड़ने, और हयगोलों और चर्खियों से दुर्ग के अन्दर के लोगों को हताहत करने में व्यस्त था। दुर्ग की दीवारों में तीन या चार स्थानों पर दीवारें भेदी गईं और उनमें बारूद भरा गया। जब एक दीवार में आगे द्वार तक बारूद बिछा

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ० २०३-४।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५८-५९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ० ५०३-४।

दी गई तब दुर्ग के अन्दर के लोगों ने बारूद को हटा दिया और उसमें आग लगा दी जिससे कि मिर्ज़ा के लोगों को बहुत ही परेशानी हुई, उन्होंने उस स्थान को जहाँ से धुंआ आ रहा था वह छेद बन्द कर दिया जिससे धुंआ वापस लौट गया और उस धुंएँ ने लोगों को मौत के मुँह से भगा दिया। अन्त में शहर के लोगों ने घेरा डालने वालों पर डोलों से पानी डाल कर उन्हें भगा दिया। दूसरे दिन शहर के लोगों का एक दल बाहर निकला, और उसने मिर्ज़ा के आदमियों को जो दीवारों में बारूद भर रहे थे उन्हें वहाँ से भगा दिया। किन्तु एक बार मिर्ज़ा के शिविर से हयगोलों व चर्खियों के निरन्तर आक्रमण के कारण, दुर्ग के उत्तरी ओर के बुर्ज में दरार पड़ गई और रात्रि में सोते समय की नमाज़ के समय वह बुर्ज गिर गया। उसी समय मिर्ज़ा के कुछ वीर सैनिकों ने उससे आक्रमण करने की अनुमति माँगी, किन्तु उसने यह कहकर कि "इस समय रात्रि है", उन्हें अनुमति देने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन प्रातः होने से पूर्व दुर्ग के अन्दर के लोगों ने बुर्ज को पुनः ज्यों का त्यों बना लिया। उस दिन भी दुर्ग पर कोई भी हमला न हुआ, वास्तव में दो या ढाई महीने की घेराबन्दी के इस दौरान में सिवाय दीवारों में छेद कर बारूद भरने, पत्थरों को फेंकने और दीवार को तोड़ने के, एक बार भी दुर्ग पर आक्रमण न किया गया।"[1] इस प्रकार जिस समय कि सुलतान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा हिसार के दुर्ग की लोहे जैसी दीवारों को तोड़ने में व्यस्त था, लगभग उसी समय, बदी-उज़ ज़मान मिर्ज़ा ने भी कुन्दुज के दुर्ग पर दो बार आक्रमण कर दुर्ग को विजित करने की चेष्टा की परन्तु खुसरो शाह ने दोनों ही बार उसके आक्रमणों को बेकार कर दिया।[2] अन्त में बदी उज-ज़मान मिर्ज़ा को पीछे हटना पड़ा। वहाँ से चल कर तलीक़ान की अलग़ू पहाड़ियों में उसने पड़ाव डाला। खुसरो शाह ने अपने भाई वली को अन्य लोगों के साथ इस्कमिश फ़ुलूल तथा उसके निकट की पहाड़ियों में उसे घेरने के लिए भेजा। इसी समय मुहिब्ब अली भी आ पहुँचा। खुतलान नदी के तट पर उसने बदी-उज-ज़मान मिर्ज़ा के कुछ आदमियों पर आक्रमण किया और उनके टुकड़े टुकड़े कर डाले। उसका अनुसरण करते हुए सईदीन अली व उसके छोटे भाई क़ुली बेग

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १ पृ० ५६।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६०।

और बहलोल-ए-अय्यूब तथा अन्य लोगों ने ख्वाजा चगिल के निकट अम्बर-कोह के किनारे ख़ुरासानियों पर आक्रमण किया किन्तु वे सभी लोग भगा दिए गए।

इस प्रकार कई मोर्चों पर समरकन्दियों व ख़ुरासानियों में युद्ध होते रहे। इन युद्धों में समरकन्दियों को निरन्तर सफलता मिलती रही। हिसार में शिशिर ऋतु में होने वाली वर्षा के कारण आक्रमणकारियों को अनेक कष्ट उठाने पड़े। वैसन्गार को अपनी अधीनता स्वीकार न कर दे सकने पर तथा दुर्ग को विजित करने में जब सुलतान हुसैन वैक़रा को कोई सफलता न प्राप्त हुई तो उसने सन्धि वार्ता प्रारम्भ की। दुर्गवासियों की ओर से महमूद बारलास और शत्रु की ओर से भोजन चखने वाला, हाजी पीर के मध्य बात-चीत प्रारम्भ हुई सुलतान हुसैन वैक़रा ने सुलतान महमूद मिर्ज़ा की ज्येष्ठ कन्या बेगा बेगम, जो कि ख़ान ज़ादा बेगम से उत्पन्न हुई थी, से अपने पुत्र हैदर मिर्ज़ा, जो कि पियान्दा बेगम से उत्पन्न हुआ था, का विवाह करना तय ठहराया। विवाहोत्सव होने के पश्चात् उसने घेरा उठा लिया और कुन्दुज़ की ओर रवाना हो गया।[1]

कुन्दुज़ पहुँचकर सुलतान हुसैन वैक़रा ने दुर्ग के चारों ओर कुछ खाइयाँ खोदी और दुर्ग पर घेरा डालने का प्रवन्ध किया। दो बार उसने ख़ुसरो शाह पर आक्रमण किया, पर उसे कोई भी सफलता न प्राप्त हुई। कुछ समय उपरान्त वदी उज़-ज़मान के मध्यस्थ करने पर ही युद्ध में बनाए हुए वन्दियों का आदान-प्रदान हुआ और सन्धि हुई। इस प्रकार ख़ुरासान के शासक सुलतान हुसैन वैक़रा को, जिसने कि अपने राज्य की सीमाओं के विस्तार का स्वप्न देखा था, समरकन्द राज्य की एक इंच भूमि को विना विजय किए हुए तथा वैसन्गर के आत्मसम्मान को विना ठेस पहुँचाए ही, वल्ख़ वापस लौटना पड़ा।

सुलतान हुसैन वैक़रा की इस असफलता से तथा उसके अपने देश लौट जाने से वावर को कुछ शान्ति मिली होगी। शक्ति के लिए किए गए इस संघर्ष में यदि वैसन्गर की हार होती या सुलतान हुसैन वैक़रा युद्ध में परास्त हो जाता तो उसका प्रभाव वावर के भाग्य पर अवश्य पड़ता।

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ६१।

यदि कहीं सुलतान हुसैन बैक़रा समरक़न्द के सिंहासन पर बैठ जाता, तो बाबर के स्वप्न अधूरे रह जाते। यदि, बाबर समरकन्द को विजय करने का प्रयास भी करता तो उसे इस समय सुलतान हुसन बैक़रा व बैसन्गर मिर्ज़ा जैसे प्रतिद्वन्द्वियों के विरुद्ध सफलता भी न प्राप्त होती और एक पराजय से उसके राजनैतिक जीवन का अन्त हो जाता। यह अच्छा ही हुआ कि जीवन की इस विषम घड़ियों में, जबकि उसकी स्थिति फ़रग़ना ही में डाँवा-डोल थी, बाबर बैसन्गर व सुलतान हुसैन मिर्ज़ा के संघर्ष को दूर से देखता रहा। तत्कालीन राजनैतिक गतिविधियों को देख कर उसे आभास हुआ कि एक न एक दिन अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में उसे सफलता अवश्य प्राप्त होगी।

इसी वर्ष रमज़ान के महीने में (मई-जून १४९६ ई०) में तरख़ानियों ने समरकन्द में विद्रोह कर दिया। इस विद्रोह के कई कारण थे। कुछ दिनों से बैसन्गर मिर्ज़ा हिसार से आने वाले लोगों, जिनमें से कुछ उसके बचपन के साथी थे, उनके प्रति अधिक सहानुभूति प्रदर्शित करने लगा था। उसके उमराव में सबसे प्रिय शेख़ अब्दुल्लाह बारलास था। अब्दुल्लाह बारलास के पुत्रों के साथ बैसन्गर के घनिष्ट सम्बन्ध थे। यह बात न तो तरख़ान और न समरक़न्दी उमराव सहन कर सके। उन्होंने उसे गद्दी पर से हटाने व उसके छोटे भाई सुलतान अली को सिंहासन पर बैठाने के लिए षड्-यन्त्र रचा। बुख़ारा से दरवेश मुहम्मद करशी गया और वहाँ से सुलतान अली मिर्ज़ा को समरक़न्द ले आया और उसे सुलतान घोषित कर दिया। इसके पश्चात् षड्यन्त्रकारी नव-उद्यान में चले गए। उन्होंने बैसन्गर को बन्दी बना लिया। उसके साथ बन्दी की तरह व्यवहार किया और फिर उसे दुर्ग में ले गए, जहाँ कि दोनों मिर्जाओं को उन्होंने एक स्थान पर बैठा दिया। षड्यन्त्रकारियों ने उसके पश्चात् बैसन्गर को गुकसराय, जहाँ कि तैमूर के वंशज या तो जब उन्हें सिंहासन पर बैठाना होता था अथवा मौत के घाट उतारना होता था या उन्हें अन्धा करना होता था, भेजने का विचार किया। बैसन्गर बहाना बनाकर बुस्तान सराय के पूर्व में स्थित एक शाही महल में चला गया। तरख़ान महल के द्वार पर खड़े के खड़े ही रह गए, बैसन्गर वहाँ से मुहम्मद कुली कुचीन और हसन के साथ भाग निकला। जब तरख़ानियों को इस बात की सूचना मिली तो यह पता लगा कर कि

वह कहाँ छुपा हुआ है उस ओर चल पड़े। उन्होंने ख्वाजा को ख्वाजा, जिसने कि बैसनगर को शरण में रखा था, से अनुरोध किया कि वह उसे सौंप दें। किन्तु ख्वाजा ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और वे भी उसे बाध्य न कर सके, क्योंकि उनकी दृष्टि में ख्वाजा का बहुत ही मान था। कुछ दिनों पश्चात् ख्वाजा अब्दुल मकरम, अहमद हाजी बेग और कुछ अन्य उमराव सैनिक और शहर के निवासियों ने तरखानों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। वे बैसनगर को ख्वाजा के भवन से ले गए और सुलतान अली मिर्ज़ा व तरखानों को उन्होंने दुर्ग में घेर लिया और दुर्ग की घेरा बन्दी प्रारम्भ कर दी। तरखान उनके सामने न ठहर सके। अतः वे दुर्ग से निकल कर इधर-उधर भाग गए। मुहम्मद मजीद तरखान बुखारा चला गया। सुलतान अली मिर्ज़ा और दरवेश मुहम्मद तरखान बन्दी बना लिए गए। दरवेश मुहम्मद को मार डालने के लिए आदेश दिया गया।[1] सुलतान अली को अन्धा बनाने के लिए उसे गुक सराय ले जाया गया जहाँ उसकी आँखों में गर्म सलाई फेरी गई। किन्तु सलाई फेरने वाले की चतुरता से उसकी आँखें बच गई, और दुर्ग से भाग कर वह ख्वाजा यहिया के पास चला गया, जहाँ से वह चल कर तरखानों के पास बुखारा पहुँचा। सुलतान अली के बुखारा भाग जाने के कारण समरक़न्द में पुनः राजनैतिक उथल पुथल प्रारम्भ हुई।[2]

जैसे ही बैसन्गार मिर्ज़ा को यह मालूम हुआ कि उसका अनुज सुलतान अली मिर्ज़ा बुखारा पहुँच गया है और तरखानों से जाकर मिल गया है, वैसे ही एक सेना के साथ उसने उस ओर कूच किया। उसके आगे बढ़ते ही, सुलतान अली मिर्ज़ा शहर के बाहर निकल आया। उसने अपनी सेनाओं को रणभूमि में उतारा और युद्ध में बैसन्गार को बुरी तरह परास्त किया। पराजित होकर बैसन्गार सीधे अपने राजधानी समरक़न्द की ओर भागा।

जब बाबर को बैसन्गार की पराजय की सूचना प्राप्त हुई उस समय समरक़न्द गृह-युद्ध में फँसा हुआ था। उसकी इस पराजय से प्रोत्साहित होकर बाबर ने समरकन्द पर आक्रमण करने, उसे विजित करने और अपने पूर्वज अमीर तैमूर के सिंहासन पर बैठने का निश्चय किया। यद्यपि उसकी आयु

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६३।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६३।

इस समय केवल चौदह वर्ष की ही थी और किसी भी भाँति बैसन्गार व सुल्तान अली से वह शक्तिशाली न था, और न उसके पास असीमित साधन ही थे, किन्तु फिर भी वह उनसे टक्कर लेने के लिए इच्छुक था। ऐसा प्रतीत होता है कि समरक़न्द की आन्तरिक दशा ने ही उसे एवं उसके चचेरे भाइयों, सुल्तान अली मिर्ज़ा तथा सुल्तान मसूद मिर्ज़ा को उसका पूरा-पूरा लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित किया। सुल्तान अली मिर्ज़ा और सुल्तान मसूद मिर्ज़ा, जो कि स्वयं तैमूर के वंशज थे, समरक़न्द के सिंहासन का उत्तराधिकारी बाबर को अवश्य मानते थे, और यह भी समझते थे कि तैमूर के सिंहासन पर जितना उनका अधिकार है, उतना ही उसका, और वे यह भी चाहते थे कि यदि उसका अधिकार समरक़न्द पर हो जावे तो न केवल बैसन्गार से बदला लेने ही में सफल होंगे बल्कि तैमूरी राज्यों में सन्तुलन भी स्थापित हो जायेगा। दूसरे, इसी समय पश्चिम की ओर से उज़बेगों की बढ़ती हुई शक्ति उन सभी तैमूरी शासकों के लिए भयानक सिद्ध हो रही थी। तीनों मिलकर उज़बेगों की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने का विचार भी रखते थे। तीसरे, तीनों शासकों को बैसन्गार के विरुद्ध कुछ न कुछ शिकायत थी, जिसके फलस्वरूप, तीनों ने मिलकर समरक़न्द पर आक्रमण करने की योजना बनाई और समरक़न्द पर आक्रमण किया। सुल्तान अली मिर्ज़ा ने समरक़न्द के दुर्ग को विजित करने का दृढ़ संकल्प किया और उसने दुर्ग के चारों ओर घेरा डाल दिया। अभी दुर्ग का घेरा चल ही रहा था कि सुल्तान मसूद, जिसकी इन्द्रियां वश में न थीं को समरक़न्द की एक स्त्री से प्रेम हो गया, जिसके फलस्वरूप इस अभियान में अन्य दो साथियों को वह पूरा-पूरा सहयोग न दे सका। बाबर को युद्ध सम्बन्धी ज्ञान भी न था, जो कि सुल्तान अली की पूर्णरूप से सहायता करता। कुछ भी हो तीनों व्यक्ति तीन अथवा चार महीनों तक समरक़न्द के दुर्ग का घेरा डाले पड़े रहे। दुर्ग की दीवारों में छेद करके बारूद भर सकने में सफलता न पाकर, तीनों ने आपस में स्थिति पर विचार विमर्श किया। शीत ऋतु के प्रारम्भ होने के कारण, उन्होंने यह तय किया कि वे अपनी-अपनी राजधानियों को वापस लौट जाएँगे। सुल्तान अली और बाबर ने आपस ही में समझौता किया कि वे अगले वर्ष पुनः समरक़न्द को विजय करने की चेष्टा करेंगे।[1] इस प्रकार पहाड़ियों

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०.६४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत,"

को पार कर, बाबर फ़रग़ना वापस लौट गया। फ़रग़ना पहुँचकर उसने अपना ध्यान सेना के संगठन की ओर दिया। सुल्तान मसूद मिर्ज़ा, जो कि शेख़ अब्दुल्लाह बारलास की पुत्री से प्रेम में बुरी तरह फँसा हुआ था, ने उससे विवाह कर लिया और हिसार वापस लौट गया। उसने बैसुन्गर को पराजित करने व समरकन्द को विजित करने की महत्वाकांक्षा को तिलांजलि दे दी। सुल्तान मसूद के इस व्यवहार से बाबर के हृदय को ठेस अवश्य पहुँची होगी, क्योंकि वह समरक़न्द इसी उद्देश्य से गया था कि उन दो भाइयों की सहायता से वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। परन्तु सुलतान मसूद के कारण वह ऐसा न कर सका। हाँ, समरक़न्द को देखने का उसे अवसर अवश्य मिल गया।[1]

समरक़न्द के इस असफल अभियान के साथ, बाबर के जीवन का प्रथम चरण समाप्त होता है। फ़रग़ना के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् वह राजनैतिक गतिविधियों को समझने में लगा रहा। उसने अपने को महत्वाकांक्षी और वरिष्ठ उमराव वर्ग द्वारा घिरा हुआ पाया। उसने देखा कि उमर शेख़ मिर्ज़ा के उमराव विभिन्न गुटों में विभाजित हो गए हैं, और प्रत्येक गुट अपने ही हाथों में राजनैतिक शक्ति लेना चाहता है। मंगोल व उज़्बेग सैनिकों व उमराव के आचरण, उनके व्यवहार तथा अपने चाचाओं व मामाओं, चचेरे भाईयों के आपसी सम्बन्ध, उनके व्यवहार तथा उसके प्रति उनके विचारों को उसने समझने की चेष्टा की। उसे यह समझने में देर न लगी कि फ़रग़ना का राज्य आन्तरिक एवं बाह्य शत्रुओं से घिरा हुआ है। शासक, उमराव, सैनिक सभी, राजनीति के दाँव-पेंच में फँसे हुए हैं। यद्यपि वह केवल एक बालक ही था, जिसने अभी केवल चौदह शरद्-ऋतुएँ और चौदह ग्रीष्म-ऋतुएँ ही देखी थीं किन्तु ऐसी कोई भी बात न थी जिसे वह समझ न सका। कोई भी चिन्ता, कोई भी कठिनाई, उसे अपनी प्रतिभा को

(बाबर) पृ० ५०५; फिरिश्ता, "तारीख़े-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, १९३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राईज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० ६।

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, ६४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ०. ५०५।

विकसित करने और अपने निश्चय पर डटे रहने से न रोक सकी। अपनी दादी एवं राज्य के वरिष्ठ उमराव जो कि उसके पक्ष में थे, उनके सहयोग से वह शासन के विभिन्न अंगों को समझने व सँभालने का प्रयास करता रहा। सुलतान हुसैन वैक़रा द्वारा हिसार का घेरा, अपने चचेरे भाइयों द्वारा समरक़न्द के दुर्ग का घेरा और अनेक युद्ध-अभियान, जिसमें कि उसके परिवार के सदस्यों ने भाग लिया और जिनके सम्बन्ध में उसने सुना, या जिनमें उसने स्वयं भाग लिया तथा जिनकी चर्चा वह अपनी आत्म-कथा में करता है, उससे उसने कुछ सीखा और कुछ ज्ञान प्राप्त किया। अब तक स्वयं वह कुछ गिने-चुने अभियानों में ही भाग ले चुका था, किन्तु अन्य अभियानों एवं युद्धों के विषय में जो जानकारी उसे प्राप्त हुई, उसके आधार पर उसे अवश्य ज्ञात हो गया कि अभियान कैसे ले जाए जाते हैं, युद्ध-योजना कैसे बनाई जाती है, दुर्ग पर घेरा किस प्रकार डाला जाता है तथा युद्ध किस प्रकार लड़े जाते हैं। उसकी दादी एहसान दौलत बेगम ने उसको बाल्यावस्था में अमीर तैमूर व चंगेज़ खां के पराक्रम की जो कथाएँ सुनाईं, उसका भी प्रभाव उसके मस्तिष्क पर पड़ा। इसी प्रकार, ख्वाजा अब्दुल्लाह अहरारी जैसे महान् सन्त के शिष्यों, एहसान दौलत बेगम जैसी वीरांगना और ख्वाजा मुहम्मद काज़ी जैसे कुशल प्रशासक तथा समकालीन राजनैतिक वातावरण ने ही उसके विचारों एवं मस्तिष्क को एक स्वस्थ रूपरेखा प्रदान की और उसे निर्भीक एवं साहसी बनाया।

द्वितीय अध्याय

समरक़न्द की विजय

समरक़न्द की विजय

बावर की आयु अभी केवल चौदह वर्ष की ही थी कि उसके हृदय में अपने विचारों को साकार बनाने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। अब वह अपने को एक बालक न समझकर 'एक वयस्क एवं योद्धा समझने लगा था, जो कि ख्याति एवं महानता पाने के लिए उत्सुक था; जो कि बन्धन से मुक्त होना चाहता था, और अपने को अपने प्रतिद्वन्द्वियों के विरुद्ध राजनीति के अद्भुत खेल में सामने लाना चाहता था। यह एक ऐसा खेल था जिसमें एक साम्राज्य दाँव पर था और विभिन्न राज्य गोट की भाँति थे।'[1] १४९६ ई० और १४९७ ई० की शीत ऋतुएँ अन्दीजान में व्यतीत करने के पश्चात् तथा सैनिक तैयारियाँ पूर्ण कर शिशिर ऋतु में बाबर ने समरक़न्द पर पुनः आक्रमण करने का विचार करते हुए अपना साहसी जीवन प्रारम्भ किया। पिछले कई महीनों में उसने अपनी योजनाएँ गुप्त रखीं, और अपनी दृष्टि को सदैव समरक़न्द की ओर लगाए रखा। अन्त में अवसर आने पर जब उसे ज्ञात हुआ कि उसके मित्र, सुलतान अली मिर्ज़ा के घुड़सवारों ने रकाब अपने हाथों में ले ली है और वे समरक़न्द की ओर प्रस्थान कर रहे हैं, तो वह भी मई, १४९७ ई० में अन्दीजान से उस ओर रवाना हुआ। इस अभियान पर अग्रसर होने से पूर्व राजधानी के प्रशासन का कार्य उसने अली दोस्त तग़ाई व औज़ून हसन को सौंप दिया। समरक़न्द की ओर बढ़ते समय हजारों स्वप्न उसकी आँखों के सामने से आये और गए कि सफलता मिलने पर उसे कैसा अनुभव होगा। उसे सफलता की पूरी आशा थी।

हम पहले ही बता चुके हैं कि समरक़न्द के शासक बैसन्गर मिर्ज़ा व उसके भाइयों के आपसी सम्बन्ध अच्छे न थे। तलवारें म्यान से एक बार बाहर निकल चुकी थीं और अब उनके लिए वापस म्यान में जाना कठिन था।

१. प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, ४१।

समरक़न्दी उमराव की सहायता से बैसन्गर मिर्ज़ा ने महदी सुल्तान के अधीन एक विशाल सेना सुल्तान अली मिर्ज़ा को आगे बढ़ कर रोकने के लिए भेजी। सुल्तान अली ने अब्दुल क़रीम उशरित को उसके आक्रमण को रोकने के लिए भेजा। कुफ़ीन के निकट दोनों सेनानायकों में घमासान युद्ध हुआ, जिसमें महदी सुल्तान ने अब्दुल करीम उशरित को बुरी तरह परास्त किया। अब्दुल करीम की हार के पश्चात् उज़बेग सैनिक टुकड़ियाँ भाग खड़ी हुई और उन्होंने शैबानी ख़ान की शरण ली। इस घटना के पश्चात् ही समरक़न्दी सैनिकों की एक सेना, बैसन्गर मिर्ज़ा के नेतृत्व में आगे बढ़ी और उसने सर-ए-पुल नामक स्थान पर पड़ाव डाला। दूसरी ओर से सुल्तान अली मिर्ज़ा ख़्वाजा करज़ून की ओर बढ़ा। जैसे ही उसके आगे बढ़ने की सूचना प्राप्त हुई, वैसे ही ख़्वाजा अब्दुल मकारम ने आँध के ख़्वाजा मुनीर के कहने पर वाएस लघारी, मुहम्मद बाक़िर, क़ासिम डुल्दाई तथा अन्य व्यक्तियों के साथ बुख़ारा की ओर बढ़ कर उनको रोकने के लिए प्रस्थान किया। जब वे बुख़ारा पहुँचे तो उन्होंने शहर व दुर्ग की रक्षा करने वालों को अधिक संख्या में और शक्तिशाली पाया। शहर में न घुस सकने पर वे बैसन्गर मिर्ज़ा से मिलने के लिए वहाँ से चल पड़े। अब दोनों ही भाई प्रतिद्वन्द्वियों के रूप में आमने सामने थे।[1]

जब बाबर यार इलाक़ पहुँचा तो उसे ज्ञात हुआ कि दोनों मिर्ज़ा एक दूसरे के सामने पड़ाव डाले पड़े हुए हैं। अतः उसने तुलून ख़्वाजा मुग़ल को २००० या ३००० सैनिकों के साथ सुल्तान अली का साथ देने के लिए आगे रवाना किया। बाबर के इस सैनिक दल को देख कर बैसन्गर चिन्तित हुआ। उसने यह कभी नहीं सोचा था कि बाबर भी अपनी सेना के साथ दूसरी ओर से अग्रसर होकर सुल्तान अली को सहायता पहुँचाने आ जाएगा। उसने तुरन्त ही शिविर उठा लिया और भाग खड़ा हुआ। वह ठीक समय पर वहाँ से भाग गया, क्योंकि उसी रात्रि बाबर की सेना के एक दल ने उसके पार्श्व भाग पर आक्रमण कर दिया, उसे अधिक क्षति पहुँचाई और अनेक सैनिकों को मार कर बहुत अधिक सम्पत्ति छीन ली। इसमें सफलता पाने के कारण बाबर का उत्साह और भी बढ़ गया। दो दिन पश्चात् बाबर अपने

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६५।

मित्र सुलतान अली के साथ। किए गए वायदे के अनुसार शिराज़, जो कि कासिम बेग दुल्दाई के अधीन था, पहुंचा। शिराज़ का दरोगा आक्रमणकारियों के आक्रमण को अधिक दिनों तक न रोक सका और उसने दुर्ग समर्पित कर दिया। शिराज़ का दुर्ग इब्राहीम सारु को सौंप दिया गया। शिराज़ के प्रशासन का प्रबन्ध कर, दूसरे दिन ईदुल-फितर का व्रत समाप्त कर, बाबर समरकन्द की ओर बढ़ा और उसने आब-ए-यार नदी के दूसरे किनारे पर पड़ाव डाला। आक्रमणकारी की निरन्तर सफलताओं, शिराज की रक्षा न कर सकने तथा वैसन्गर की बुज़दिली के कारण समरकन्द की जनता और भी भयभीत हुई। यह देखकर कि आक्रमणकारी के विरुद्ध किसी प्रकार की सफलता उन्हें नहीं प्राप्त हो सकती है, कासिम बेग दुल्दाई, वएस लघारी, मुहम्मद सिग़ाल का पौत्र हसन और मुहम्मद वएस लगभग २०० से ३०० व्यक्तियों के साथ वैसन्गर का साथ छोड़ कर बाबर से जाकर मिल गए। प्रारम्भ में बाबर उन्हें अपनी सेवा में लेने के लिए हिचकिचाया, चूंकि उसे न तो उन पर विश्वास था और न ही वह उनके चाल चलन से सन्तुष्ट था। वे सब लालची तथा अवसरवादी थे। लेकिन फिर भी शत्रु पर सफलता पाने के लिए, उसके लिए यह आवश्यक हो गया कि उन्हें वह अपनी सेवा में ले ले और उनकी सेवाओं का उपयोग करे। कुछ भी हो उसका यह अनुमान कि एक न एक दिन वे उसको हानि पहुँचाने का प्रयास अवश्य करेंगे, सत्य सिद्ध हुआ। जब वह क़रा बुलाक़ में ठहरा हुआ था, अनेक लोगों ने आकर उससे उनकी शिकायत की कि वे कुछ गाँवों के मुखियों के साथ जो कि उसको सहायता देने के लिए आ रहे थे, क्रूरतापूर्वक व्यवहार कर रहे हैं। बाबर यह सहन न कर सका। वह उन्हें बताना चाहता था कि वह उनका स्वामी है और वह अनुशासन के पक्ष में है। अतः अनुशासन भंग करने के आरोप में, उसने क़ासिम बेग कुचीन को आदेश दिया कि उनमें से दो व्यक्तियों के वह टुकड़े-टुकड़े कर दे। इस प्रकार के दण्ड देने से अन्य लोगों को भी यह मालूम हो गया कि बाबर किस धातु का बना हुआ है और वे सतर्क हो गए। यद्यपि कुछ समय तक मंगोल शान्त रहे किन्तु जब भी उन्हें अवसर मिलता वे न तो विद्रोह करने से और न उसका सर्वनाश करने की योजना बनाने से चूकते। संक्षेप में मंगोलों के कारण भी बाबर को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।[1]

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६८।

क़रा बुलाक़ से कूच करते हुए, ज़र-अफ़शाँ नदी को पार कर आक्रमण-कारी सेना ने याम में पड़ाव डाला। उसी दिन बाबर के कुछ सैनिकों की मुठभेड़, बैसन्गर मिर्ज़ा के अग्रिम दल से हुई। इस मुठभेड़ में सुलतान अहमद तम्बल घायल हुआ तथा ख्वाजाकी-मुल्ला-ए-सद्र हताहत हुआ और शेष व्यक्ति पड़ाव पर लौट आए। अभी वह याम ही में पड़ाव डाले हुए पड़ा हुआ था कि एक दिन मुसलमान व्यापारियों को उसके सैनिकों ने लूट लिया। इस कारण चारों ओर शोर गुल मचा। बाबर ने शीघ्र ही आदेश दिया कि बिना किसी विलम्ब के, जो वस्तुएँ सैनिकों ने छीन ली गई है वे सब व्यापारियों को वापस कर दी जायें। इस घटना के सम्बन्ध में वह बड़े गौरव के साथ लिखता है कि, "हमारी सेना में इतना अधिक अनुशासन था कि जब यह आदेश दिया गया कि प्रत्येक वस्तु लौटा दी जाय तो दूसरे दिन प्रथम पहर के पूर्व कोई ऐसी वस्तु न थी जो उनके स्वामियों को न लौटा दी गई हो, यहाँ तक कि धागे का एक टुकड़ा तथा टूटी हुई सुई तक हमारे आदमियों के पास न रही।"[1] फिर भी यह विश्वास करना बहुत ही कठिन प्रतीत होता है कि उसके सैनिकों में इतना अनुशासन था। बाबर के उपरोक्त कथन में सत्यता कम दिखाई देती है। किन्तु इन शब्दों से हमें उसकी न्यायप्रियता का कुछ आभास अवश्य मिल जाता है।

याम से प्रस्थान करके उसकी सेनाएँ खान युर्ती में, जो कि समरकन्द से लगभग ३ करोह पर है, ठहरीं। यहाँ से बाबर ने अग्रिम दल की कई टुकड़ियों को समरकन्द शहर पर घेरा डालने के लिए रवाना किया। शेष लोग पीछे ही रहे। आक्रमणकारियों तथा समरकन्दियों में कई बार झड़पें हुईं, किन्तु आक्रमणकारियों को तनिक भी सफलता प्राप्त न हुई। आगे चलकर दुर्ग-रक्षकों ने आक्रमणकारियों पर कठोर प्रहार कर उन्हें युद्ध में परास्त करने के लिए एक चाल चली। उन्होंने बाबर के पास शीघ्रतापूर्वक यह समाचार भेजा कि, "यदि तुम लोग रात्रि में गारे-आशिकां की ओर आ जाओ तो हम लोग क़िला समर्पित कर देंगे।"[2] शत्रु की इस चाल को

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ६७; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५०७।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ६७; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ ५०८।

न समझ कर, वावर अपने सबसे अच्छे-अश्वारोहियों को लेकर उसी रात्रि मग़ाक के पुल के निकट पहुँचा और वहाँ से उसने कुछ उत्तम अश्वारोहियों एवं पैदल सिपाहियों के दल को निश्चित स्थान पर भेजा। यह लोग शत्रु के जाल में फँस गए। उन अच्छे सैनिकों में से हाजी, जो वावर के वचपन का साथी था तथा मुहम्मद कन्दूर संगाक और ३० अन्य सैनिक मारे गए। इस क्षति के वावजूद भी वावर अपने निश्चय पर अटल रहा। गर्मी भर वावर की सैनिक कार्यवाहियाँ चलती रहीं। खान युर्ती से उसके सैनिक दिशा में वढ़ते रहे तथा ऊँचे-नीचे प्रदेशों में स्थित दुर्गों पर विजय प्राप्त करते रहे। औरगूत में उसके सैनिकों को डट कर मुकावला करना पड़ा। उनको सहायता प्रदान करने के लिए वह आगे वढ़ा। वहाँ पहुँच कर उसने दुर्ग को जीता, परन्तु ख्वाजा-ए-क़ाजी के अनुरोध पर दुर्गवासियों को छोड़ दिया। इसके वाद वह समरकन्द पुनः वापस लौट आया और उसने अवरोध प्रारम्भ किया। खान युर्ती से चलकर वह वाग़-ए-मैदान के पीछे कलवा के चरागाह में जाकर ठहरा। अधिक से अधिक संख्या में समरकन्दी उसे आगे वढ़ने से रोकने के लिए आये और मुहम्मद चप के पुल के निकट वे ठहर गए। अभी वावर के सैनिक अच्छी तरह पड़ाव में रुक भी न पाए थे कि एकाएक कुछ समरकन्दी वहाँ आए और वावा कुली को वन्दी वना कर वे दुर्ग में ले गए। कुछ दिनों पश्चात् वावर ने कुलवा चरागाह के ऊपरी भाग पर, जो कि कोहिक पहाड़ी के पीछे था, वचाव की दृष्टि से वहाँ पड़ाव डाला। पड़ाव को एक स्थान से दूसरे स्थान पर वदलने के कारण, शत्रु ने सोचा कि आक्रमणकारी अपने वचाव की तैयारी कर रहा है। अतः समरकन्दी वाहर निकल आए और मिर्ज़ा के पुल व शैख़-जादा-द्वार को पार करते हुए मुहम्मद चप के पुल तक आगे वढ़ आए। उनके आगे वढ़ने पर वावर ने उन्हें रोकने व उनके आक्रमण को विफल वनाने का आदेश दिया। घमासान युद्ध के पश्चात् समरकन्दी पीछे हट गए। इस युद्ध में वावर के अनेक सैनिक हताहत हुए। इस अवसर पर यद्यपि हाफिज दुल्दाई का पुत्र मुहम्मद मिस्कीन तथा मुहम्मद क़ासिम नवीरा वन्दी वना लिए गए, किन्तु मुहम्मद क़ासिम नवीरा को उसका छोटा भाई हसन नवीरा छुड़ा लाया। समरकन्दियों पर यह सफलता कुछ अर्थों में पूर्ण सिद्ध हुई। समरकन्दियों को पीछे हटा कर दुर्ग में जाने के लिए विवश कर देने पर, वावर को इतना समय मिल गया कि वह सरलतापूर्वक शीत-पड़ाव में, जहाँ कि वह कुछ दिनों पूर्व ही जाकर ठहर गया

था, भलीभाँति जम कर बैठ जाय। दूसरे, उसे अवसर मिल गया कि वह उन लोगों से, जिन्होंने उसके सैनिकों को ग़ोर आशिक़ा के निकट मार डाला था, बदला ले ले।[1]

शीत ऋतु प्रारम्भ होने तक बाबर को अपने अभियान में कोई विशेष सफलता प्राप्त न हुई, सिवा इसके कि वह दुर्ग पर निरन्तर आक्रमण करता रहा। और उसने दुर्ग के अन्दर के लोगों को बुरी तरह परेशान कर दिया। शीत ऋतु प्रारम्भ होते ही उसके सामने नई-नई समस्याएँ और नए-नए प्रश्न आए। क्या उसे अपने देश को वापस लौट जाना चाहिए या अगले वर्ष पुनः दुर्ग को विजित करने का प्रयास करना चाहिए या उसे कुलबा में ही रुक कर शीत-ऋतु व्यतीत करनी चाहिए और शत्रु पर दृष्टि रखनी चाहिए अथवा उसे समरकन्द विजय करने व वहाँ के भव्य सिंहासन पर बैठने के स्वप्न का परित्याग कर देना चाहिए? या उसे अगले किसी अच्छे मौसम तक अपनी योजनाओं को स्थगित कर देना चाहिए? ये सभी प्रश्न उसके सामने आए। उनका हल निकालने के लिए उसने अपने अमीरों को बुलाया। उसने उनसे परामर्श लिया। अन्त में यह तय किया गया कि किसी उपयुक्त दुर्ग में शरण लेकर उन्हें शीत ऋतु बितानी चाहिए और शीत ऋतु समाप्त होने पर पुनः सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर देनी चाहिए। अतएव, बाबर ने ख्वाजा-ए-दीदार की ओर प्रस्थान किया। वहाँ पहुँचकर उसने पड़ाव डालने के लिए अपने लोगों को नियुक्त किया। जब ये पड़ाव तैयार हो गए तो उसकी सेना कुलबा से यहाँ आई और इन पड़ावों में रहने लगी।[2]

इसी बीच जब कि बाबर अपने सैनिकों को कुलबा से शीत-पड़ावों में लाने में व्यस्त था, बैसन्गर मिर्ज़ा ने बार-बार शैबानी ख़ाँ से अनुरोध किया कि वह उसे सैनिक सहायता प्रदान करे।[3] जिस दिन बाबर अपनी सम्पूर्ण सेना को

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ७३; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेंचुरी," पृ० ४४।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ७३; तारीख़-ए-फिरिश्ता, (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ७३; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू०ग्रन्थ) पृ० १९२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राईज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ७।

ख्वाजा-ए-दीदार में रखने में सफल हुआ उसी दिन उसे यह सूचना मिली कि शैबानी खाँ ने तुर्किस्तान से चलकर उसके पड़ाव के दूसरी ओर पड़ाव डाल दिया है और वह वहाँ से बैसन्गर मिर्ज़ा को उसके विरुद्ध हर प्रकार से सहायता करेगा।

शैबानी खां जो कि शाही बेग के नाम से भी प्रसिद्ध है, बुदाक़ सुल्तान का पुत्र तथा उजबेगों के सरदार अबुल ख़ैर का पौत्र था।[1] उसकी शैशवावस्था में ही, उसका पिता बुदाक़ खान व माता कुज़ी बेगम परलोक सिधार चुके थे। अबुल ख़ैर के स्वामिभक्त सेवक करादजा बेग ने ही उसका पालन-पोषण किया। शेख़ हैदर सुल्तान के परिवार से अबुल ख़ैर के परिवार के अन्य सदस्यों में आपसी वैमनस्य के कारण करादजा बेग ने शैबानी खाँ को जेक्सारटेज़ के निचले भागों में रहने के लिए भेज दिया। यहाँ रह कर शैबानी खाँ ने "बिखरी हुई चींटियों" अथवा अपने पितामह के परिवारों को एकत्र किया और धीरे-धीरे अपने वंश की खोई हुई प्रतिष्ठा को पुनः प्राप्त करने के प्रयास प्रारम्भ किये। उसका प्रमुख लक्ष्य बर्की सुलतान, जिसने कि उसके पितामह के परिवार को नष्ट कर दिया था, से प्रतिशोध लेना था। इस समय वह नदी के दूसरी ओर पड़ाव डाले हुए पड़ा था। जब तक शैबानी अपने को शक्तिहीन समझता रहा तब तक उसने उसके प्रति मैत्रीपूर्ण भाव प्रदर्शित किया। किन्तु आगे चलकर जब अवसर आया तो उसने उस पर आक्रमण किया और उसे युद्ध में मार डाला। इस प्रकार बर्की पर सफलता प्राप्त कर उसने उजबेगों की एक विशाल सेना एकत्र की और सैनिक जीवन प्रारम्भ किया। अपने सैनिकों को लेकर सर्वप्रथम उसने समरकन्द के उत्तरी-पश्चिमी प्रान्तों के गवर्नर मजिद तरख़ान की सेवा की। किन्तु शीघ्र ही मजिद तरख़ान को यह पता चल गया कि उजबेग उसके ऊपर हावी हो रहे हैं, अतएव उसने उनसे पीछा छुड़ाने की चेष्टा की। उसने उन्हें बुख़ारा के एक सरदार अब्दुल अली तरख़ान के पास भेज दिया। अब्दुल अली तरख़ान ने इन उजबेग सैनिकों का स्वागत किया और उत्तरी-पश्चिमी भागों में होने वाले मंगोल आक्रमणों को रोकने में तथा उत्तरी तुर्किस्तान में होने वाले विद्रोहों का दमन करने में भी उसने इन

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० ११६–१६६: "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड ३, पृ० २६६।

उज़बेगों की सहायता ली। कुछ दिनों पश्चात् उत्तरी तुर्किस्तान में रह कर वे अपने घर जैसे वातावरण का अनुभव करने लगे और यह समझने लगे कि अन्य स्थानों की अपेक्षा यहाँ वे अधिक सुरक्षित हैं। उन्हें अपनी बढ़ती हुई शक्ति का आभास भी हुआ, चूँकि वे यह कहने लगे कि जो भी कुछ उन्हें दिया जा रहा है वे उससे सन्तुष्ट नहीं हैं। उनकी सेवाओं को देखते हुए जो कुछ भी उन्हें दिया गया वह बहुत ही कम था। उनको सन्तुष्ट करने के लिए उन्हें ओतरार, सबरम और सिगानक के शहर भी प्रदान किए गए। इस विशाल प्रदेश के प्राप्त होते ही उन्होंने शैबानी के नेतृत्व में उज़बेगों ने एक विशाल साम्राज्य स्थापित करने का प्रयास किया। शैबानी को अन्य तैमूरी प्रतिद्वन्दियों से भी सहयोग प्राप्त हुआ, जिसके कारण इसके ठीक विपरीत उज़बेगों की शक्ति दिन प्रतिदिन बढ़ती गई। शैबानी खां यह जानता था कि तैमूरी राज्यों को नष्ट करने में ही उसका हित है। अतएव वह उनके आपसी झगड़ों में दिलचस्पी लेने लगा। अपनी बढ़ती हुई शक्ति एवं ख्याति पर भरोसा करते हुए उसने स्वतंत्र मार्ग अपनाया। सर्र के युद्ध में उसने अपने स्वामी सुलतान अहमद मिर्ज़ा को धोखा दिया और इस विश्वास-घात पर ज्येष्ठ खान सुल्तान महमूद ने उससे प्रसन्न होकर उसे तुर्किस्तान का प्रान्तपति बनाया। सुलतान अहमद की मृत्यु से पूर्व उसने अपनी स्वतंत्रता घोषित की, और मज़िद तरखान को विवश किया कि वह उसके साथ सन्धि कर ले।[1] इस समय से उसने ख्याति प्राप्त करना प्रारम्भ किया। मंगोलों और उज़बेगों की सहायता से न केवल उसने अपने कार्य-क्षेत्र को बढ़ाया वरन् नए प्रदेशों को विजित कर अपने प्रभुत्व की सीमाओं को बढ़ाकर अपनी स्थिति सुदृढ़ की। थोड़े ही समय में वह शक्तिशाली बन बैठा। शक्ति के चरमोत्कर्ष पर बढ़ते समय उसने किसी विधान, सामाजिक नियम, परम्परा, एवं नैतिकता की कभी भी परवाह नहीं की। उसकी निजी इच्छा ही उसे निरन्तर प्रेरणा प्रदान करती रही और तैमूरी राज्यों को समाप्त करने तथा मध्य एशिया के मानचित्र से उनको मिटा देने के लिए प्रोत्साहन देती रहीं। प्रो० रशब्रुक विलियम्स के शब्दों में, "साधारणतः तैमूरियों के शत्रु (किन्तु मुख्यतः बाबर के शत्रु) के रूप में उसने ख्याति प्राप्त की"।[2] इससे बाबर की उस भावना पर प्रकाश पड़ता है जो उसके हृदय में

१. वैम्बरी, "हिस्ट्री आफ़ बुखारा," भाग १, पृ० २५० ।
२. प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "एेन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० ४४।

पल्लवित हो रही थी। कुछ भी हो प्रारम्भ से ही वावर की दृष्टि में शैवानी खान एक ऐसा दानव था जो कि प्रत्येक तैमूरी राज्य पर दावा करते हुए उसे हड़प जाना चाहता था।

ऐसे ही व्यक्ति का सामना वावर को करना पड़ा। यद्यपि उसकी सेनाएँ विखरी हुई थीं फिर भी वावर ने वुद्धि से कार्य किया। उसने अपने सैनिकों को युद्ध के लिए सुसज्जित किया और फिर सेना को लेकर शत्रु का सामना करने के लिए वह चल पड़ा। शैवानी खान ने उस पर आकस्मिक आक्रमण करने का विचार किया था, किन्तु जव उसने उसे कहीं अधिक शक्तिशाली देखा तो उसने उसपर पर आक्रमण करना स्थगित कर दिया। इससे वैसन्गर मिर्ज़ा असंतुष्ट हुआ। उसे यह आशा थी कि शैवानी खान आते ही वावर पर आक्रमण कर उसे भगा देगा। परन्तु जव उसने उसे ऐसा करते न देखा तो उसे निराशा हुई, और उसके आने पर उसने उसका उचित ढंग से स्वागत भी न किया। बड़ी आशाएँ लेकर शैवानी खान उसकी सहायातार्थ आया था। उसके अशिष्ट व्यवहार एवं अपने अपमान को चुप-चाप वह सहन करता रहा। समरकन्द में ठहर कर शैवानी व उसके साथियों ने वैसन्गर के सैनिक सावनों, राज्य की आय तथा उसकी दशा आदि की जानकारी प्राप्त कर ली। उन्हें कठिनाई में देखकर और समरकन्द की आर्थिक समृद्धि के विषय में सुनकर उज़वेगों व उनके सरदार शैवानी खान के हृदय में समरकन्द के राज्य को तैमूरी शासक के हाथों से छीन लेने की वात आई। किन्तु इस अवसर को उपयुक्त न समझकर शैवानी खान ने यही उचित समझा कि वह अपने देश वापस लौट जाय और दूसरी वार अधिक से अधिक सेना लाकर समरकन्द को विजित कर ले। अतः वह वापस चला गया।[1]

शैवानी खान के तुर्किस्तान वापस लौटते ही वावर का मार्ग प्रशस्त हो गया। अव वह किसी भी समय समरकन्द पर आक्रमण कर सकता था। किन्तु शैवानी खान के आगे वढ़ने व पीछे हटने तथा मुवारुन्नहर में प्रवेश करने से

१. वावरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ७३–७४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मूल ग्रंथ), पृ० १९३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" (भाग २) पृ० ७; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर विल्डर आफ़ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ० ४४–४५।

यह अवश्य पता चल गया कि अपने पितामह अबुल ख़ैर की भाँति वह भी महत्वाकांक्षी है तथा किसी भी नए कार्य में, जिससे उसके प्रभुत्व की सीमाओं के विकसित होने की सम्भावना प्रतीत होती हो, हाथ लगा सकता है। बाबर यह कैसे भूल सकता था कि तैमूरी शासकों के आपसी झगड़ों में मध्यस्थता करने एवं भाग लेने से उसे लाभ पहुँच सकता है। कुछ भी हो शैबानी के लौटने के पश्चात् बाबर ने हर प्रकार से समरकन्द के दुर्ग को जीतने की चेष्टा की। सात महीनों तक वह दुर्ग की दीवारों के नीचे पड़ाव डाले पड़ा रहा। अनेक बार उसने दीवार को भेदने की चेष्टा की, किन्तु उसे इस कार्य में सफलता न प्राप्त हुई। फिर भी वह तनिक हताश न हुआ। इसके विपरीत उससे उसके संकल्प को शक्ति मिली और उसने संकल्प किया कि वह तब तक वापस न लौटेगा जब तक कि दुर्ग उसके हाथ में नहीं आ जाता। उसके इस दृढ़ संकल्प से शत्रु के पैर उखड़ने लगे। बैसन्गर मिर्ज़ा को कहीं से सहायता नहीं प्राप्त हो रही थी। अधिक समय तक बाबर का सामना न कर सकने के कारण एक रात्रि लगभग दो-तीन सौ व्यक्तियों के साथ वह समरकन्द को छोड़ कर कुन्दुज की ओर भाग खड़ा हुआ, जहाँ पहुँच कर उसने अपने वज़ीर खुसरो शाह की शरण ली।[1]

आमू के उस पार बल्ख़ व बदख़्शां के मध्य में कुन्दुज का प्रान्त इस समय ख़ुसरो शाह के हाथ में था। वैसे तो वह सुल्तान मसूद मिर्ज़ा के अधीन था, किन्तु जिस समय सुल्तान मसूद मिर्ज़ा हिसार से पीछे हट रहा था, उस समय ख़ुसरो शाह ने विद्रोह किया और अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। उस समय से लेकर ख़ुसरो शाह और सुल्तान मसूद के सम्बन्ध दिन प्रतिदिन बिगड़ने लगे। वे एक दूसरे के विनाश के लिए उद्यत् हो गये। जैसे ही सुल्तान मसूद को यह ज्ञात हुआ कि उसका भाई बैसन्गर उसके प्रतिद्वन्दी ख़ुसरो शाह की शरण लेने के लिए जा रहा है, उसने तुरन्त ही तिरमिज़ के प्रान्तपति सैय्यद हुसैन अकबर को उसे रोकने के लिए भेजा। यदि बैसन्गर मिर्ज़ा व ख़ुसरो एक-दूसरे से मिल जाते, तो यह गठबन्धन सुल्तान मसूद मिर्ज़ा के लिए अवश्य घातक सिद्ध होता। इससे पूर्व कि ऐसा कोई समझौता दोनों में हो सके सैय्यद हुसैन

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ७४; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ़ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ० ४४।

ने बड़ी सक्रियता से आमू नदी के किनारे, बैसन्गर पर आकस्मिक आक्रमण कर दिया। उसने उसका निजी सामान छीन लिया तथा उसे नदी को पार करने पर विवश किया। इसके पूर्व कि वह उसे पकड़ कर वन्दी बनाता, बैसन्गर भाग कर कुन्दुज़ पहुँचा, जहाँ कि खुसरो शाह ने उसका स्वागत किया। खुसरो शाह को अब एक ऐसा व्यक्ति मिल गया जिसकी सहायता से वह नए प्रदेशों को विजित कर सकता था तथा अपनी महत्त्वाकांक्षाओं को साकार कर सकता था।[१]

बाबर को जैसे ही बैसन्गर मिर्ज़ा के भागने की सूचना मिली वैसे ही उसकी सेना ख्वाज़ा-ए-दीदार से समरक़न्द की ओर बढ़ी। उसका स्वागत करने के लिए उमराव व सैनिक दोनों ही मार्ग में उससे मिले। रबी-उल-अव्वल ६०३ हि० के अन्तिम दस दिनों में से किसी एक दिन, सम्भवतः नवम्बर १४६७ ई० के अन्त में उसने समरकन्द में प्रवेश किया। वह स्वयं लिखता है कि इस प्रकार ईश्वर की कृपा से समरकन्द के शहर व देश पर मैंने अधिकार ज़मा लिया।[२] अनेक कठिनाइयों तथा सात महीनों के अवरोध के पश्चात् पन्द्रह वर्ष की आयु में बाबर को समरकन्द का शासक बनने में सफलता प्राप्त हुई। इस सफलता पर वह बहुत प्रसन्न हुआ। वर्षों पश्चात् जब फतेहपुर सीकरी के उद्यान में बीते हुए दिनों की घटनाओं को सँजोने के लिए बैठा, तो उसे उस अवसर की याद आई कि किस प्रकार वह इस शहर पर अपना अधिकार स्थापित करने का स्वप्न देखा करता था। बड़े ही गौरव के साथ वह इस शहर के इतिहास और उसकी महत्ता पर प्रकाश डालता है।[३]

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ७४।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, प० ७४; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १६३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राईज़ आफ दी मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ७; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत," (बाबर) पृ० ५१०; अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर-हुमायूँ", लन्दन, १८५४, भाग १, पृ० १०५; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० ४५; हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ३, पृ० २६८।
३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ७४–८६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत," (बाबर), पृ० ५१०–१३।

यद्यपि वह अन्दीजान व सर्र से लेकर आमू तक का शासक हो गया, जिसमें कि समरकन्द, बुखारा, केश व करशी के प्रदेश सम्मिलित थे, किन्तु समरकन्द का सिंहासन उसके लिए फूलों की शय्या न बन सका। उसके सामने अनेक कठिनाइयाँ एवं समस्याएँ थीं। सात महीने तक दुर्ग का अवरोध होने के कारण दुर्ग के अन्दर के लोग और घेरा बन्दी करने वाले, दोनों ही बुरी तरह पस्त हो चुके थे। जो लोग बाबर के साथ थे वे इस बात की आशा करते थे कि समरकन्द को विजित करने के पश्चात् बाबर उन्हें उपहारों से लाद देगा, समरकन्द की जनता को लूटने की पूरी-पूरी छूट दे देगा और उनकी प्रत्येक इच्छा की पूर्ति कर देगा। किन्तु समरकन्द में प्रवेश करने के उपरान्त बाबर ने समरकन्द की जनता के हितों को ध्यान में रखकर एवं उसकी रक्षा करने के हेतु अपने सैनिकों को आदेश दिया कि वे किसी भी प्रकार से न उन्हें सताएगें और न उनको लूटेंगे। उसके इस अव्यादेश से मंगोल अप्रसन्न हुए और उन्होंने इस आदेश की आलोचना की। किन्तु बाबर ने उसकी तनिक भी चिन्ता न की। उसने भरसक मंगोल सैनिकों को सन्तुष्ट करने की चेष्टा की किन्तु वे किसी भी प्रकार से सन्तुष्ट न हुए। स्वयं बाबर के पास इतना धन न था कि वह उनके मुँह मोतियों से भर देता और ऐसी स्थिति में जब कि जनता के पास न खाने को था और न पहनने को, बाबर कैसे उन पर करों का बोझ डालता। यह देख कर कि बाबर के पास उन्हे सन्तुष्ट करने के लिए किसी भी प्रकार से साधन नहीं हैं, उन्होंने उसका साथ छोड़ना प्रारम्भ किया और वे स्वदेश वापस लौटने लगे। मंगोल सैनिकों की देखादेखी, मंगोल सरदारों ने भी ऐसा ही किया। सबसे पहले बयान कुली के पुत्र खान कुली ने, उसके पश्चात् इब्राहीम बेगचिक तथा सुल्तान अहमद तम्बल जिसका मुग़ल उमराव वर्ग में सबसे उच्च स्थान था ने बाबर का साथ छोड़ा और वे अपने घरों की ओर चल पड़े।[1] यदि बात यहीं तक रहती तो भी ग़नीमत थी। लोगों को साथ छोड़ने से रोकने के लिए बाबर ने ऊजून हसन के पास ख्वाजा काज़ी को भेजा, ताकि वे दोनों मिल कर भागने वालों को रोकें और उन्हें दण्ड देकर पुनः समरकन्द वापस भेज दें, किन्तु ख्वाजा काज़ी के कहने के बावजूद ऊजून हसन भागने वालों से मिल गया और उसने बाबर

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५१४।

के लिए कठिनाइयाँ उत्पन्न करना प्रारम्भ किया। सुल्तान अहमद तम्बल के साथ मिल कर ऊजून हसन ने बाबर के विरोधियों को अन्दीजान में एकत्र किया और जहाँगीर मिर्ज़ा का पक्ष लिया तथा उसके लिए अख्सी व अन्दीजान की माँग की।[1] उनकी इस माँग के पीछे उनके अपने स्वार्थ निहित थे। अब तक वे बाबर के कठोर अनुशासन से भलीभाँति परिचित हो गए थे और वे यह भी समझने लगे थे कि उसके सामने उनकी दाल नहीं गल सकती। अतएव जहाँगीर मिर्ज़ा के नाम पर वे अपने हितों की सुरक्षा में लग गए।

इस समय ऊजून हसन तथा सुल्तान अहमद तम्बल की माँग को स्वीकार करना बाबर के लिए बहुत ही कठिन बात थी। लगभग इसी समय ताश्कन्द का शासक सुलतान महमूद ख़ाँ, जो कि उसका मामा था, ने भी अख़सी व अन्दीजान की माँग की। बाबर स्वयं ऐसी स्थिति में न था कि वह कुछ कर सकता। किन्तु यह माँगें ऐसी थी जिसको ठुकराना भी सरल न था। तैमूरी परम्परा के अनुसार उमर शेख मिर्ज़ा की मृत्यु के उपरान्त उसका राज्य उसके पुत्रों में विभाजित हो जाना चाहिए था। बाबर व जहाँगीर मिर्ज़ा दोनों की ही माताएँ मुग़ल थी किन्तु इन दो महिलाओं का सम्बन्ध दो भिन्न-भिन्न कबीलों से था। बाबर की माँ से सम्बन्धित मंगोल कबीले बाबर के पक्ष में थे और जहाँगीर मिर्ज़ा की माँ से सम्बन्धित मुग़ल कबीले जहाँगीर को स्वतंत्र शासक के रूप में देखना चाहते थे। कुछ समय तक बाबर ने उनकी किसी बात का उत्तर न दिया जिस पर ऊजून हसन व सुलतान हुसैन तम्बल ने अन्य लोगों के साथ खुल्लम-खुल्ला विद्रोह करना प्रारम्भ कर दिया। अपनी सेनाओं के साथ वे अख्सी से अन्दीजान की ओर चल पड़े।[2]

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८७; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग १२, पृ० ८; अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर-हुमायुँ" भाग, १, पृ० १०८; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिलडर आफ सिक्सटींथ सेन्चुरी", पृ० ४६।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८८; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१५; हबीब-उस-सियर, भाग, ३, खण्ड ३, पृ० २९१।

रमज़ान ६०२ हि० । मई, १४६७ ई० में समरकन्द की ओर प्रस्थान करने से पूर्व बाबर अन्दीजान की रक्षा के हेतु अली दोस्त तग़ाई को नियुक्त कर गया था। ऊजून हसन तथा सुल्तान अहमद तम्बल के अन्दीजान पहुँचने से पूर्व ख़्वाजा-ए-काज़ी अपने साथियों को लेकर अन्दीजान के दुर्ग में प्रवेश कर चुका था। उसने मंगोल सैनिकों के हृदय जीतने की हर प्रकार से चेष्टा की तथा अली दोस्त तग़ाई को दुर्ग की रक्षा करने में भी सहायता पहुँचाई ।[1] इसके बावजूद भी जब ऊजून हसन और सुल्तान अहमद तम्बल ने अन्दीजान पहुँच कर दुर्ग पर घेरा डाला तब उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। दुर्ग के अन्दर के लोग हताश होने लगे और शत्रु की शक्ति को देखकर साहस छोड़ बैठे। ख़्वाजा-ए-काज़ी ने उनकी दशा देखकर बाबर को सहायता भेजने के सम्बन्ध में पत्र लिखे। बाबर की दादी व माँ ने भी, जो कि इस समय अन्दीजान में ही मौजूद थीं, बाबर को इस आशय के पत्र भेजे कि, 'हम लोग इस प्रकार घिरे हैं, यदि आप आकर हमारी सहायता न करेंगे तो सब का कार्य बिगड़ जावेगा। समरकन्द, को अन्दीजान की शक्ति से लिया गया था। यदि अन्दीजान अधिकार में रहेगा तो ईश्वर की कृपा से समरकन्द पुनः मिल जावेगा।[2] बाबर के पास यह पत्र जिस समय पहुँचे उस समय बाबर बीमार पड़ा हुआ था।[3] यह समझ कर कि अब वह अधिक दिनों तक जीवित न रहेगा, उसके साथियों ने एक-एक कर उसका साथ छोड़ दिया। ऐसे गम्भीर समय में भूल से

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५१५।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८८: रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१५।

३. बाबर स्वयं लिखता है, "कि उन दिनों एक बार रुग्ण होकर मैं स्वस्थ हुआ था। अपनी रुग्णावस्था में मैं अपनी भलीभाँति देखभाल न कर सका। चिन्ता एवं परेशानी के कारण मैं इतनी बुरी तरह बीमार हो गया कि चार दिन तक मेरी जिह्वा बन्द रही। मेरे मुँह में रुई से पानी टपकाया जाता था। छोटे-बड़े बेग तथा जवान मेरे जीवन से निराश होकर अपने विषय में चिन्ता करने लगे।" बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१५–१६।

उसके वेगों ने ऊज़ून हसन के एक सेवक को, जो कि उसका दूत बन कर आया था तथा अपने साथ उसकी बड़ी कठोर शर्तें लाया था, उसे दिखला दिया। वावर की दशा को देखकर ऊज़ून हसन का वह सेवक तुरन्त अन्दीजान वापस लौट गया। अन्दीजान पहुँच कर उसने वावर की वीमारी के वारे में ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्वल को सव वातें वताई ,वावर की वीमारी की खवर चारों ओर फैली और अन्दीजान के लोगों ने दुर्ग विद्रोहियों के हाथों में सौंप दिया।[1]

साल दिनों वाद जव वावर समरकन्द से रवाना होकर अन्दीजान की ओर वढ़ ही रहा था कि खोजन्द में उसे इस वात की सूचना प्राप्त हुई कि अली दोस्त तग़ाई ने अन्दीजान के दुर्ग को विद्रोहियों के हाथों में समर्पित कर दिया है। उसी समय वावर को यह भी ज्ञात हुआ कि ख्वाजा-ए-काज़ी को विद्रोहियों ने अपमानित कर किले के द्वार पर फांसी दे दी।[2] दोनों ही ख़वरों को सुनकर वावर दुखित हुआ। किन्तु उसकी विपदाओं का अन्त इन दो घटनाओं से नहीं हुआ वरन् विपदाएँ यहीं से प्रारम्भ हुई हैं।

१. वावरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ८६ ।

२. वावर ने लिखा है कि ख्वाजा-ए-काज़ी, "ख्वाजा मौलाना काज़ी के नाम से प्रसिद्ध था किन्तु उसका नाम अव्दुल्लाह था। उसका वंश पिता की ओर से शेख़ वुरहानुद्दीन अली कीलीच तक और माता की ओर से सुल्तानुल ईलीक मिर्ज़ा तक पहुँचता था। फरग़ना की विलायत में इस वंश के लोग पीर, शेखुल इस्लाम तथा काज़ी होते आए हैं। वह हजरत उवैदुल्लाह अहरारी का मुरीद था और उसने उनसे शिक्षा-दीक्षा पाई थी। इस वात में मुझे कोई सन्देह नहीं है कि ख्वाजा मौलाना काज़ी वली थे... ख्वाजा मौलाना काज़ी वड़े विचित्र व्यक्ति थे और किसी वात से भय न करते थे। मैंने उनके समान कोई व्यक्ति पराक्रमी न देखा। यह भी वली होने का एक प्रमाण है। अन्य वीरों में थोड़ी वहुत चिन्ता व भय अवश्य होता है किन्तु ख्वाजा मौलाना काज़ी में किसी प्रकार की कोई चिन्ता न थी।"—देखिए—वावरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ९०; नफायसुल मासीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर) पृ० ३४४; वावरनामा, रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (वावर); पृ० ५१६; फिरिश्ता, "तारीखें-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३); हवीव-उस-सियर; भाग ३, खण्ड ३, पृ० २९१–२।

बाबर ने अपने को कठिनाइयों में घिरा हुआ पाया। अन्दीजान के दुर्ग की रक्षा करने के लिए वह समरकन्द से चला परन्तु समरकन्द में उसकी अनुपस्थिति में उसके विरोधियों ने बुखारा से उसके चचेरे भाई अली मिर्जा को बुला लिया और उसे समरकन्द सौंप दिया। इस प्रकार दोनों ही देश उसके हाथों से निकल गए।[1] अब उसी के राज्य पर सुल्तान अहमद तम्बल व ऊजून हसन, उसके छोटे भाई जहाँगीर मिर्ज़ा के नाम पर शासन करने लगे। यह देख कर कि अब उसके हाथों में कुछ भी नहीं शेष रहा, उसके साथियों ने बड़ी संख्या में उसका साथ छोड़ना प्रारम्भ कर दिया। लगभग ७०० या ४०० व्यक्ति उससे पृथक हो गए। अब उसके पास केवल २०० और ३०० के बीच, अच्छे व बुरे साथी रह गए।[2] भाग्य की इस विडम्बना पर वह पश्चाताप करते हुए लिखता है कि, "यह समय मेरे लिए बहुत ही दुखदायी एवं कष्ट मय था, क्योंकि जब से मैंने राज्य करना प्रारम्भ किया तब से मेरे सहायक एवं सेवक मुझसे कभी भी इस तरह पृथक न हुए और न ही मेरा देश मुझसे छूटा। इससे पूर्व मैंने अपने आपको कभी भी न कुछ समझा और न अपने जीवन पर मुझे खीझ आई या इस प्रकार के कष्ट ही देखने पड़े।"[3] "मैं बड़ी कठिनाई में था तथा बिना रोये अपने को रोक भी न सकता था।"[4] अपने ही देश में वह निर्वासित हो गया था। उसे चारों ओर

---

१. इस सन्दर्भ में बाबर ने स्वयं लिखा है कि, "अन्दीजान की चिन्ता में हमने अपने हाथों से समरकन्द खो दिया और अब मुझे मालूम हुआ कि बिना एक की रक्षा किए हुए मैंने दूसरे को खो दिया"—बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ९०; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राईज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ६।
२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ९०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१७।
३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, ९०।
४. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ९०; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१७; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ६।

अन्धकार दिखाई देने लगा और कुछ समय तक वह सोचने में असमर्थ रहा कि उसे क्या करना चाहिए तथा सहायता के लिए किसके सामने हाथ फैलाना चाहिए।

खोजन्द ही में बाबर कुछ समय तक ठहरा रहा यहाँ से उसने क़ासिम बेग़ कुचीन को अपने मामा सुल्तान महमूद खान के पास सहायता माँगने के प्रयोजन से ताशकन्द भेजा। क़ासिम बेग कुचीन को अपने कार्य में सफलता प्राप्त हुई। उसके अनुरोध पर सुल्तान महमूद ख़ान ने सेना एकत्र की और आहनगरान की घाटी को पार करता हुआ वह किंदिरलीक के दर्रे में पहुँचा। खोजन्द से चलकर बाबर उसके पास यहाँ आया और उसने अपने मामा से भेंट की। तदुपरान्त अपने मामा के साथ उसने दर्रे को पार किया और अख़्सी में पड़ाव डाला। लगभग इसी समय जब ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल को इस आक्रमण की सूचना प्राप्त हुई तो वे भी विशाल सेना लेकर अख़्सी के दुर्ग की रक्षा करने के लिए अन्दीजान से चल पड़े। दोनों ओर की सेनाएँ आमने-सामने कुछ समय तक पड़ी रहीं। युद्ध के लिए अपनी तैय्यारियाँ पूर्ण करने के लिए ऊज़ून हसन व तम्बल ने ख्वाजा अब्दुल मकाराम व बेग तिल्बा को सुल्तान महमूद ख़ान के पास भेजकर सन्धि की वार्ता प्रारम्भ की। इन लोगों ने ख़ान को घूस देकर और उससे चिकनी चुपड़ी बातें करके अपनी ओर मिला लिया। इस प्रकार सुल्तान महमूद ख़ान बिना बाबर की सहायता किए हुए लौट गया।[1] निराश होकर बाबर भी खोज़न्द वापस आ गया, जहाँ उसकी भेंट अपनी माँ व दादी से हुई।[2] अब अपने भाग्य को कोसने के सिवाय बाबर के सामने कुछ और न था।

रमज़ान (अप्रैल-मई) का महीना उसने खोजन्द में ही व्यतीत किया। तदुपरान्त बाबर ने एक आदमी सुल्तान महमूद के पास इस आशय से भेजा कि वह उससे समरकन्द पर आक्रमण हेतु सहायता देने का आग्रह करे। कुछ समय तक

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ९०–९१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५१७; फ़िरिश्ता, "तारीख़े-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० पृ० १९३।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ९१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५१७।

सुल्तान महमूद खान ने कोई भी उत्तर न दिया क्योंकि वह जहाँगीर मिर्ज़ा से सन्धि कर चुका था कि वह बाबर की कभी भी सहायता न करेगा। किन्तु बाबर के बार-बार अनुरोध करने पर उसने अपने पुत्र सुल्तान मुहम्मद खनिका एवं उसके संरक्षक अहमद बेग को ४०००-५०००८ यक्तियों के साथ उसकी सहायता के लिए भेजा। सुल्तान महमूद खान स्वयं औरतिपा तक आया, जहाँ उसने बाबर से भेंट की और उसके पश्चात् ताशकन्द वापस लौट गया। औरतिपा व यार ईलाक होते हुए बाबर बुरक़ा ईलाक के दुर्ग के निकट पहुँचा और वहाँ उसने पड़ाव डाला। दूसरी ओर से सुल्तान मुहम्मद व अहमद बेग ४००० से ५००० सैनिकों के साथ यार ईलाक पहुँचे। इससे पूर्व कि बाबर उनसे जाकर मिलता, सुल्तान मुहम्मद व उसके संरक्षक को शैबानी ख़ाँ के आक्रमण तथा शीराज़ व उसके आस-पास के प्रदेशों को विध्वंस करने के समाचार मिले जिससे वे हतोत्साहित होकर ताशकन्द वापस लौट गए। बाबर को भी विवश होकर खोज़न्द वापस लौटना पड़ा।[1] इस अवसर पर भी सुल्तान मुहम्मद व अहमद बेग की निष्क्रियता के कारण बाबर न तो समरकन्द ही विजित कर सका और न अन्दीजान पर ही आक्रमण कर सका।

समरकन्द को विजित करने की अभिलाषा उसके मन में सदैव बनी रही। उसने स्वयं लिखा है "क्योंकि मुझे राज्य पर अधिकार करने तथा बादशाह बनने की आकांक्षा थी, अतः मैं एक या दो बार की असफलता से निराश होकर न बैठ सकता था।"[2] उसकी इस अभिलाषा ने उसे पुनः इस बात पर विवश किया कि वह सुलतान महमूद खान के पास ताशकन्द जाए और पुनः सहायता देने का उससे अनुरोध करे। बाबर इस प्रकार ताशकन्द पहुँचा। कुछ दिनों उपरान्त, सुल्तान महमूद ख़ान ने सैय्यद मुहम्मद हुसैन दोघलत तथा अय्यूब बेगचिक आदि सरदारों को ७००० या ८००० सैनिकों के साथ उसकी सहायतार्थ नियुक्त किया। इस सेना को साथ लेकर बाबर शीघ्रतिशीघ्र बढ़ता हुआ नसूख पहुँचा और वहाँ के दुर्ग पर अधिकार कर लिया। किन्तु उस दुर्ग की रक्षा न कर सकने पर बाबर अपने साथियों के साथ पुनः खोजन्द वापस लौट आया।

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ९२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५१७–८।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ९२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५१८।

खोजन्द पहुंच कर बाबर को अनेक कष्टों का सामना करना पड़ा। खोजन्द एक छोटा सा स्थान था। बहुत ही कठिनाई से वहाँ केवल २०० या ३०० व्यक्तियों का जीवन निर्वाह हो सकता था। अतएव उसने उपयुक्त स्थान ढूंढ़ने का विचार किया। किन्तु यह कार्य भी इतना सरल न था क्योंकि इस समय खुसरो शाह एवं शैवानी खां की महत्वाकांक्षाएं तैमूरी राजकुमारों को शक्तिहीन बना रही थीं और इन दोनों महत्वाकांक्षी व्यक्तियों के सामने बाबर के लिए सिर उठाना कठिन था। फिर भी उसने मुहम्मद हुसैन गुरखान दोघलत के पास अपने आदमी औरतिपा भेजे कि वे उससे आग्रह करें कि शीत-ऋतु व्यतीत करने के लिए उन्हें वह पशाग़र नामक स्थान प्रदान कर दे। जैसे ही मुहम्मद गुरखान दोघलत की अनुमति बाबर को मिली, वैसे ही बाबर ख़ोजन्द से पशागर की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसने ख़ाते-ए-ख्वाजा नामक स्थान को जीतने का असफल प्रयास किया। किसी प्रकार पशाग़र पहुंचा। वहाँ से उसने इब्राहीम सारू, वएस लधारी, शेरीम तग़ाई को कुछ घरेलू सैनिकों के साथ समरकन्द के आधीनस्थ कुछ शहरों पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इब्राहीम सारू, वएस लखारी तथा शेरीम तग़ाई ने यार ईलाक के दुर्ग पर आक्रमण किया। किन्तु इस आक्रमण की सूचना मिलते ही समरकन्द के शासक सुल्तान अली मिर्जा ने सैय्यद यूसुफ बेग के छोटे भाई के पुत्र अहमद यूसुफ को दुर्ग की रक्षा करने के लिए भेजा। किन्तु बाबर के सैनिकों ने सैय्यद यूसुफ बेग के साथ सन्धि करके तथा युक्ति द्वारा किसी प्रकार यार ईलाक के दुर्ग पर अधिकार जमा लिया। जब सुल्तान अली मिर्ज़ा को अहमद यूसुफ तथा सैय्यद यूसुफ की असफलता की सूचना मिली तो उनसे रुष्ट होकर उसने उन्हें खुरासान की ओर भेज दिया[1]। इसकेपश्चात् वह स्वयं एक विशाल सेना को लेकर बाबर के विरुद्ध बढ़ा। ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ में सुल्तान अली मिर्ज़ा ने ख्वाजा यहिया को आगे एक सैनिक टुकड़ी के साथ भेजा, जिससे कि वह बाबर से सन्धि की वार्ता प्रारम्भ कर दे अथवा उसकी कार्यवाहियों को रोक दे। सुल्तान अली मिर्ज़ा ने स्वयं शिराज़ व कबूद के मध्य पड़ाव डाला। बाबर की सेना में इस समय २०० या ३०० से अधिक सैनिक न थे। अतएव सुल्तान अली मिर्ज़ा से युद्ध करना उचित न समझ कर उसने सन्धि कर ली और पशाग़र लौट गया। सन्धि की शर्तों के अनुसार उसे यार ईलाक के दुर्ग

१. बाबरनामा (अनु०) भाग, १, पृ० ९९; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५१९–२०।

को वापस करना पड़ा। इस प्रकार इस अवसर पर भी उसे समरकन्द को विजित करने में सफलता न मिली।[1] भाग्य ने उसका साथ न दिया। ख़ोजन्द के लोगों को वह अपना मुंह दिखाने योग्य भी न रहा। अतः व्यग्र एवं चिन्तित होकर कुछ समय तक वह इधर-उधर भटकता रहा।

एकाएक एक दिन औरतिपा की घाटी में उसकी भेंट युलचिक नामक व्यक्ति से हुई, जो कि अली दोस्त तग़ाई का सेवक था। युलचिक, अली दोस्त तग़ाई का एक सन्देश लेकर बाबर के पास आया था, "यद्यपि इससे पूर्व मैंने बड़े-बड़े अपराध किए हैं, किन्तु यदि कृपा पूर्वक आप मेरे पास आ जावेंगे तो मैं आपको मर्गिनान देकर एवं आपकी निष्ठापूर्वक सेवा करके अपने पापों का प्रायश्चित कर सकूंगा।"[2] अली दोस्त तग़ाई का यह प्रस्ताव बाबर के सन्मुख था। अब उसी के ऊपर यह बात निर्भर करती थी कि उसके इस प्रस्ताव को स्वीकृत करे या न करे। उस पर विश्वास करे या अविश्वास। अन्त में बाबर ने मर्गिनान की ओर चलने का निश्चय किया। शीघ्रातिशीघ्र बाबर ने मर्गिनान के मार्ग को तय कर लिया और जब वह मर्गिनान के निकट पहुंचा तो उसके साथियों ने उसे सुझाव दिया कि वह अली दोस्त तग़ाई पर तनिक भी विश्वास न करें। बाबर ने उनके सुझाव पर विचार किया, किन्तु यह सोचते हुए कि वापस लौटना भी इतना सरल नहीं है उसने सब कुछ ईश्वर की अनुकम्पा पर छोड़ दिया।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १ पृ०, ९९; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२०।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ९९; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५२०; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३-४; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० १०।

३. बाबर लिखता है कि यहाँ वैस बेग तथा कुछ अन्य लोगों ने चिन्ता प्रकट करते हुए निवेदन किया कि "अली दोस्त बड़ा दुष्ट है। हमारे व उसके दूत तो एक दूसरे के पास आए गए हैं और हमने एक दूसरे से कोई शर्त नहीं की है। ऐसी अवस्था में हम किस भरोसे उसके पास जा रहे हैं?" वास्तव में उनकी चिन्ता ठीक ही थी किन्तु इस बात को पहले कहना चाहिए था। इस समय हम यहाँ तीन रात और दो दिन की यात्रा के उपरान्त बिना कहीं ठहरे अथवा

मर्गिनान के द्वार पर अली दोस्त तग़ाई से शर्तें तय हुई और बाबर ने दुर्ग में प्रवेश किया।[1]

मर्गिनान के दुर्ग में पहुँच कर बाबर ने अपनी स्थिति सुदृढ़ करने का प्रयास किया। उसने अपने सैनिकों को चारों ओर भेज कर रसद लाने का आदेश दिया। थोड़े ही समय में युद्ध का सामान व रसद दोनों ही उसके पास पहुँचने लगे। उसके नम्र स्वभाव की चर्चा दूर-दूर तक होने लगी। इसके विपरीत ऊजून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल जो कि जहांगीर मिर्ज़ा के नाम पर फरग़ना में शासन कर रहे थे, अपने कठोर व्यवहार के कारण बदनाम हो रहे थे। लोग उनसे तंग आ चुके थे और यही चाहने लगे थे कि किसी न किसी प्रकार बाबर को बुला कर सत्ता लेने में उसकी सहायता करें। बाबर को जब ऊजून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल के विषय में पता चला तो उसने कासिम बेग के साथ अनेक व्यक्तियों को अन्दीजान की ओर भेजा कि वह आस-पास के व्यक्तियों को अपने पक्ष में कर ले। इसी प्रकार उसने वएस लघारी, इब्राहीम सारू तथा सैय्यदी-क़रा को भी इसी कार्य के लिए उस ओर भेजा। इस प्रकार बाबर ने अपने शत्रुओं पर दो ओर से आक्रमण करने की योजना बनाई। किन्तु इससे पूर्व कि वह अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता, ऊजून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल दोनों को उसके मर्गिनान पहुँचने की सूचना मिल गई और यह भी पता चल गया कि उसने अपने अमीरों को उनके विरुद्ध भेजा है। सुल्तान अहमद तम्बल तथा ऊजून हसन ने शीघ्र ही अपने मंगोल सैनिकों के साथ मर्गिनान की ओर कूच किया। मर्गिनान से दो मील पर स्थित सपन नामक गाँव में वे ठहरे और उन्होंने अपनी सेनाओं को युद्ध के लिए सुसज्जित

विश्राम किए हुए पहुँचे हैं। किसी मनुष्य अथवा घोड़े में अब कोई दम नहीं रह गया है। अब जिस स्थान पर हम पहुँच चुके हैं, तो फिर आगे प्रस्थान करना ही चाहिए। ईश्वर की इच्छा के बिना कुछ भी नहीं हो सकता।"—बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृष्ठ १००; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत' (बाबर) पृ० ५२१।

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १००, फिरिश्ता' "तारीख–ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्य) पृ० १९३; ब्रिग्स,, "दि हिस्ट्री आफ दि "राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया;" भाग २, पृ० १०।

किया। यद्यपि बाबर के पास कुछ ही सैनिक रह गए थे, फिर भी उसने तनिक भी धैर्य्य न खोया। अपने सैनिकों को लेकर वह मर्गिनान से निकल पड़ा और उसने शत्रु पर धावा बोल दिया। दो दिनों के युद्ध के पश्चात् भी ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल को मर्गिनान के दुर्ग तक पहुँचने में सफलता न मिल सकी।[1]

इसी बीच बाबर ने जिन व्यक्तियों को अन्दीजान के निकटवर्ती प्रदेशों पर छापा मारने के लिए भेजा था, उन्हें अपने अभियानों में पूर्ण सफलता प्राप्त हुई। क़ासिम बेग अन्दीजान की दक्षिण पहाड़ियों में पहुँचा और उसने आशंपरी, तुर्कशार तथा चींकरक को जीत लिया तथा पर्वतों एवं मैदानों में रहने वाले कबीलों को अपने पक्ष में कर लिया। इसी प्रकार इब्राहीम सारू तथा वएस लघारी ने भी इसी समय सर्र नदी को पार किया और अख्सी के निकट आ पहुँचे। इस समस्त प्रदेश की जनता ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल से पहले ही तंग थी, अतएव बाबर के अमीरों के आगे बढ़ने पर अख्सी शहर के लोगों ने हसनदिक़चा के नेतृत्व में अख्सी के दुर्ग में रहने वालों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया। शीघ्र ही हसन ने ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल के साथियों को दुर्ग में शरण लेने पर विवश कर दिया तथा इब्राहीम सारू और उसके साथियों को शहर में घुसा लिया।[2] कुछ समय उपरान्त हैदर कोकुलदाश का पुत्र बन्दा अली, हाजी गाज़ी मन्जीत तथा मिरीम आदि जिन्हें कि सुलतान महमूद ख़ान ने बाबर की सहायता करने के लिए भेजा था, वहाँ आ गए, जिससे कि बाबर की स्थिति और भी अधिक सुदृढ़ हो गई। बाबर की शक्ति अब तक इतनी अधिक बढ़ गई थी कि वह अब निश्चित होकर अपने शत्रु पर आक्रमण कर सकता था।

इसके पूर्व कि बाबर उन पर आक्रमण करता, ऊज़ून हसन व सुल्तान अहमद तम्बल ने कुछ आदमियों को नदी पार करने तथा अख्सी के दुर्ग-रक्षकों की सहायता करने के लिए भेजा। जब यह सैनिक टुकड़ी नदी पार

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १०१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५२१–२२।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, १००; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५२२।

कर ही रही थी, उसी समय बाबर के आदमियों ने उनका सामना किया और उन्हें परास्त कर तितर-बितर कर दिया। बड़ी कठिनाईयों के पश्चात् कारलूग़ाच बख्शी, खलील दीवान, काज़ी गुलाम, सैय्यद अली, हैदर-ए-कुली आदि जान बचा कर भाग निकले और ऊज़ून हसन के पास पहुँच कर उन्होंने इस दुर्घटना की खबर दी। अपने सैनिकों की असफलता का समाचार सुनकर ऊज़ून हसन व सुलतान अहमद तम्बल ने मर्गिनान के निकट ठहरना उचित न समझा। अतएव उन्होंने शिविर उखाड़ दिए और अन्दीजान की ओर वापस लौटना प्रारम्भ किया। अन्दीजान तक पहुँचते-पहुँचते दोनों ही नेताओं में मतभेद हो गया। दोनों ही एक दूसरे को सन्देह की दृष्टि से देखने लगे। जब वे अन्दीज़ान पहुँचे, तब उन्होंने दुर्ग के द्वार बन्द पाए। उनके अन्दीज़ान पहुँचने के पूर्व ही, ऊज़ून हसन के बहनोई नासिर बेग ने, जो कि दुर्ग का रक्षक था, बाबर के पक्ष में घोषणा कर दी थी। निराश होकर ऊज़ून हसन अपने परिवार को बचाने के लिए अख्सी की ओर चल पड़ा और सुल्तान अहमद तम्बल अपनी जागीर उश की ओर चला गया। इस प्रकार बाबर को अपने विरोधियों के विरुद्ध सफलता पाने की आशा हो गई। वह तुरन्त अन्दीज़ान की ओर रवाना हुआ। अन्दीज़ान पहुंचने पर उसका स्वागत नासिर बेग तथा उसके दो पुत्रों, दोस्त बेग और मिरिम बेग ने किया।[1] यद्यपि बाबर ने अन्दीज़ान व मर्गिनान पर अपना आधिपत्य पुनः स्थापित कर लिया, किन्तु फरग़ना के अन्य प्रदेश अब भी उसके हाथों के बाहर थे।

१. अन्दीज़ान में प्रवेश करने के पश्चात् बाबर को जो प्रसन्नता हुई उसकी अभिव्यक्ति वह इन शब्दों में करता है—"मैंने नासिर बेग तथा उसके दो पुत्रों दोस्त बेग एवं मिरिम बेग से भेंट की और उनके विषय में पूछताछ करके उन्हें कृपा एवं आश्रय का आश्वासन दिलाया। इस प्रकार ईश्वर की से मेरे पिता का राज्य जो दो वर्ष हुए, मेरे हाथ से निकल गया था। ज़ीक़ाद ९०४ हि० (जून १४९८ ई०) में मेरे अधिकार में आ गया"—बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १०१; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५२३; फिरिश्ता, "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९३–९४; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ० १०–११।

अन्दीजान को अधिकृत करने के पश्चात् बाबर ने इस राज्य के अन्य भागों को भी विजित करने की चेष्टा की। ऊजून हसन की शक्ति का दमन करने के लिए वह अख्सी की ओर बढ़ा। उसने अख्सी के दुर्ग पर घेरा डालकर ऊजून हसन को दुर्ग छोड़ने के लिए बाध्य किया तथा कासिम-ए-अजब को उमराव बनाकर उसके हाथों में दुर्ग सौंप दिया।[1] सम्भवतः इसी समय जब सुल्तान अहमद तम्बल उश पहुंचा तो वहाँ की जनता ने ईंटों व पत्थरों से उसका स्वागत किया और उसे वहाँ से भगा दिया। इस प्रकार जहाँगीर मिर्ज़ा के साथ सुल्तान अहमद तम्बल उश से भाग कर युकन्द की ओर गया और फिर उसने उजकिन्त में शरण ली[2]। अपने इन दो विरोधियों से जब बाबर को अवकाश मिला तो उसने अपना ध्यान प्रशासन की ओर दिया। उसने अख्सी व कसान के प्रान्तों का शासन-प्रबन्ध किया। साथ ही साथ मंगोल सैनिकों, जिन्हें कि उसके मामा सुल्तान महमूद खान ने उसकी सेवा के लिए भेजा था, उनकी आवश्यकता न समझते हुए, उसने उन्हें ताशकन्द वापस जाने की अनुमति दे दी[3]। अभी बाबर चैन से बैठ भी न पाया था कि उसे पुनः एक नवीन समस्या का सामना करना पड़ा।

जिस समस्या का बाबर को इस समय सामना करना पड़ा वह एक ऐसी समस्या थी जिसके लिए वह स्वयं उत्तरदायी था तथा जिसने उसकी सफलताओं पर एकाएक पानी फेर दिया। ऊजून हसन तो किरातिग़ीन के मार्ग से हिसार की ओर चला गया किन्तु अख्सी में अब भी अनेक मंगोल उपस्थित थे। ऊजून हसन के जाने के पश्चात् भी मध्य-एशिया के विभिन्न

---

१. इससे पूर्व कासिम-ए-अजब, घरेलू सैनिकों का अफ़सर था—बाबर नामा (अनु.) भाग १, पृ० १०२; फिरिश्ता, "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६४; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ० ११।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १ पृ० १०३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५२३।

३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० १०३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२३।

भागों से मंगोल बावर की सेवा में आते रहे। उसकी मां की सेवा में १००० से ले कर २००० मंगोल पहले से ही थे। कालान्तर में जब हमजा सुलतान, महदी सुलतान व मुहम्मद दोघलत हिसारी, अन्दीजान आए तो उनके साथ भी अनेक मंगोल आए। इस प्रकार मंगोलों की संख्या बावर के शिविर में बढ़ती चली गई। उसे पहले ही इन मंगोलों से घृणा थी और वह उनके अशिष्ट व्यवहार से खिन्न रहता था।[1] किन्तु वह बिना उनके रह भी नहीं सकता था क्योंकि उनमें से अधिकतर उसकी मां के परिवार से सम्बन्धित थे। इन्हीं मंगोलों पर नियंत्रण बनाए रखने के लिए बावर ने आदेश दिया कि वे भविष्य में लूट मार न करेंगे और जो वस्तुएं उन्होंने अब तक लूट में प्राप्त की हैं उन्हें वे, जिनका वह माल हो, उन्हें वापस कर दें। मंगोल सरदारों को यह आदेश अच्छा न लगा। अतएव इस आदेश का विरोध करने के लिए लगभग ३००० से ४००० मंगोलों ने उसका साथ छोड़ दिया और विद्रोह की पताका फहराते हुए वे सब उज़किन्त की ओर चल दिए। उन्होंने तम्बल व जहांगीर मिर्जा के पास एक आदमी को भेज कर यह कहलवाया कि वे सब उन्हीं का साथ देंगे[2]। सुलतान कुली चुनक से बावर को जब इस विद्रोह के विषय में ज्ञात हुआ तो उसने कासिम बेग को एक सेना के साथ उनके विद्रोह को दबाने

---

१. मंगोल सैनिकों के सम्बन्ध में बावर लिखता है कि, "यह वही लोग थे जिन्होंने पिछली परेशानियों में मेरे मुसलमान सहायकों तथा ख्वाजा काजी के आदमियों को लूटा मारा था। बहुत से बेगों के परामर्श से यह निश्चय हुआ कि इन्हीं लोगों ने हमारे हितैषी मुस्लमान सहायकों को लूटा मारा है। उन्होंने अपने मुग़ल बेगों के प्रति कौन सी निष्ठा प्रदर्शित की है जो वे हमारे हितैषी रहेंगे? यदि वे बन्दी बना लिए जायं तथा लूट लिए जायं तो कौन-सा अपराध होगा, और विशेष रूप से ऐसी दशा में जब कि वे हमारी आँखों के सामने हमारे ही वस्त्र धारण किए और हमारे ही घोड़ों पर सवार टहला करेंगे तथा हमारी ही भेड़ों का माँस खाया करेंगे? इसे कौन सह सकता है?" बावरनामा (अनु०), भाग १, पृ० १०५; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बावर) पृ० ५२४।

२. बावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १०५; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (बावर), पृ० ५२४।

के लिए भेजा। किन्तु कासिम बेग उनका सामना न कर सका और पराजित होकर इब्राहीम सारू, वएस लघारी तथा सैय्यद क़रा के साथ वह जान बचाकर अन्दीजान वापस लौट आया।[1] उसका पीछा करता हुआ सुल्तान अहमद तम्बल अन्दीजान तक आ पहुंचा। अन्दीजान पहुंच कर सुल्तान अहमद तम्बल ने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। जब वह अन्दीजान के दुर्ग को विजित करने में सफल न हुआ तो वह उश की ओर बढ़ा। उश पहुंच कर सुल्तान अहमद तम्बल ने दुर्ग पर घेरा डाल दिया इब्राहीम सारू के सैनिक उसका मुकाबला कर ही रहे थे, कि १८ मुहर्रम ६०५ हि०। २५ अगस्त, १४६६ हि० को बाबर अपनी सेनाओं के साथ उनकी सहायता के लिए पहुँच गया।[2] बाबर को आते देख कर सुल्तान अहमद तम्बल ने घेरा उठा लिया और वह उश से पीछे हट गया। बाबर की आँख बचाकर दूसरे मार्ग से वह अन्दीजान की ओर चल पड़ा। अन्दीजान पहुंच कर उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया।[3] अभी वह घेरा डाले हुए पड़ा ही हुआ था कि इसी बीच बाबर ने तम्बल के भाई खलील के हाथों से माडू का दुर्ग छीन लिया और उसके पश्चात् वह अन्दीजान की रक्षा के लिए चल पड़ा। कई दिनों तक बाबर व सुल्तान अहमद तम्बल की सेनाओं में युद्ध होता रहा। अन्त में बाबर ने उन्हें परास्त कर अन्दीजान से भगा दिया।[4] सुल्तान अहमद तम्बल और जहांगीर मिर्ज़ा उज़किन्त की ओर तुरन्त चले गए। शीत-ऋतु के प्रारम्भ होते ही बाबर ने उनका पीछा करना उचित न समझा और खुबान से वह अन्दीजान वापस आ गया।

इस युद्ध के उपरान्त भी सुल्तान अहमद तम्बल की शक्ति ज्यों की त्यों बनी रही। वह निरन्तर अन्दीजान के अधीनस्थ प्रदेशों पर छापा मारता रहा

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० १०६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२५।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १०७–८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५२६।

३. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १०८; रिज़वी, ".ग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२६।

४. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ११३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२७–८।

और बाबर को परेशान करता रहा। सुल्तान अहमद तम्बल के आक्रमणों को रोकने के लिए बाबर उज़किन्त की ओर बढ़ा भी किन्तु कम्बर अली के कारण उसे इस कार्य में सफलता न प्राप्त हुई और अन्दीजान लौटना पड़ा।[1] यह देख कर कि बाबर निश्चिन्त होकर शीतकाल अन्दीज़ान में रह कर व्यतीत कर रहा है, सुल्तान अहमद तम्बल ने एक व्यक्ति को सुल्तान महमूद खान के पास ताशकन्द सहायता माँगने के लिए भेजा। साथ ही साथ उसने अपने चाचा अहमद बेग, जो कि इस समय सुल्तान महमूद खान के पुत्र सुल्तान मुहम्मद खान का संरक्षक भी था, तथा अपने बड़े भाई बेग तिल्बा, जो कि इस समय ताशकन्द के द्वार का मालिक था, के पास भी सन्देश भेजे कि मिल कर सुल्तान महमूद खान से उसकी ओर से सहायता देने का अनुरोध करें। सुल्तान महमूद खान पर जब दबाव पड़ा तो उसने सुल्तान अहमद तम्बल की प्रार्थना स्वीकार कर ली और बेग तिल्बा के नेतृत्व में एक सेना उज़किन्त की ओर भेज दी। अब क्या था। सुल्तान अहमद तम्बल ने अन्दीजान पर आक्रमण करने के लिए कमर कस ली। वह अपनी सेना के साथ चल पड़ा। दूसरी ओर से अहमद बेग व सुलतान मुहम्मद खान के साथ ५,००० से ६,००० सैनिक कसान की ओर बढ़े और उन्होंने दुर्ग पर घेरा डाल दिया।[2]

बाबर को जैसे ही इस आक्रमण की सूचना मिली, वैसे ही कुछ सैनिकों के साथ वह शत्रु का सामना करने के लिए अन्दीज़ान से निकल पड़ा। अख्सी की ओर बढ़कर उसने दुर्ग की रक्षा के लिए प्रबन्ध किए और उसके पश्चात् वह कसान की ओर बढ़ा। बाबर के आगे बढ़ने की सूचना पाकर सुल्तान

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ११४; अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ" भाग १, पृ० १२४–५, फिरिश्ता, "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मूल ग्रन्थ) पृ० १९४; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० ११–१३।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, ११६; फिरिश्ता, "तारीखें-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९४, "ब्रिग्स, दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १३।

मुहम्मद खान तथा अहमद बेग दोनों ने कसान के दुर्ग पर से घेरा उठा लिया और स्वदेश लौट गए।

इसी बीच सुल्तान अहमद तम्बल को जब यह सूचना मिली कि बाबर अन्दीजान से कसान की ओर बढ़ रहा है, तो वह भी अपनी सेनाओं के साथ सुल्तान मुहम्मद खान व अहमद बेग की सहायता के लिए चल पड़ा। किन्तु जब वह नदी को पार कर चुका तो उसे यह सूचना प्राप्त हुई कि बिना उसकी प्रतीक्षा किए हुए सुल्तान मुहम्मद अपनी सेनाओं के साथ भाग खड़ा हुआ। सुल्तान अहमद अब परेशानी में पड़ गया। कसान से दो मील दूर उसने पड़ाव डाला और वहीं रुक गया। बाबर ने उचित अवसर देख कर उस पर आक्रमण करने का विचार किया, किन्तु बएस लघारी के सुझाव के कारण वह दूसरे दिन उस पर आक्रमण न कर सका। अवसर पाकर उसी रात्रि सुल्तान अहमद तम्बल ने वहां से भाग कर अरचियान के दुर्ग में शरण ली। दूसरे दिन बाबर ने जब शत्रु को मैदान में न पाया तो उसे बड़ी निराशा हुई। वह उसका पीछा करते हुए अरचियान पहुंचा। बाबर ने अरचियान के दुर्ग पर घेरा डाला और सुल्तान अहमद तम्बल को शक्तिहीन करना प्रारम्भ किया।

अभी घेरा बन्दी चल ही रही थी कि अन्दीजान के निकट के दो गाँवों मचान व अवीगुर के मुखिया सैय्यद् यूसुफ़ ने अनेक मुग़ल परिवारों के साथ विद्रोह कर दिया और वे सब तम्बल को सहायता देने के लिए चल पड़े। उन्होंने तम्बल को यह कहला भेजा कि वह दुर्ग से निकल आवे और उनसे आकर मिल जाए। तम्बल ने ऐसा ही किया और बेशखरान के दुर्ग में जाकर शरण ली। बाबर व सुल्तान अहमद तम्बल की सेनाओं में संघर्ष चल ही रहा था कि अली दोस्त तग़ाई और कम्बर अली, जो कि इस संघर्ष से तंग आ चुके थे, ने बिना बाबर से परामर्श लिए हुए, शत्रु से सन्धि की बात प्रारम्भ कर दी। बाबर उनके प्रभाव से परिचित था। अतः वह चुप रहा। अन्त में सन्धि की शर्तों के अनुसार यह तय हुआ कि सर नदी के उस पार के प्रदेश अख्सी व कसान आदि जहांगीर मिर्ज़ा के हाथों में रहेंगे, अन्दीजान की ओर के प्रदेश बाबर के हाथों में रहेंगे, सर नदी ही दोनों के राज्यों के बीच की सीमा होगी, तथा जब बाबर समरकन्द को पुनः वापस

ले लेगा तो उसका कोई भी अधिकार अख्सी व अन्दीजान पर न रहेगा।[1] सन्धि की यह शर्तें बाबर को यद्यपि तनिक भी पसन्द न थी, चूँकि वह पैत्रिक-साम्राज्य के विभाजन के पक्ष में न था, फिर भी उसे अली दोस्त तग़ाई व कम्बर अली की बात माननी पड़ी। वह उनकी इच्छा के विरुद्ध जा भी नहीं सकता था, क्योंकि उनकी सहायता की उसे इस समय बड़ी आवश्यकता थी। यह सन्धि फरवरी १५०० ई० में हुई। सुल्तान अहमद तम्बल और जहांगीर मिर्जा बाबर से मिलने के लिए आए। उसके पश्चात् जहांगीर मिर्ज़ा अख्सी की ओर और बाबर अन्दीज़ान की ओर चला गया।[2]

इस प्रकार बाबर के उमराव वर्ग के दो गुटों में संघर्ष का प्रथम चरण समाप्त हुआ। इस अवधि में मंगोल व समरकन्दी उमराव में बढ़ते हुए विरोध की झलक हमें मिलती है। दोनों ही गुटों ने बाबर और जहांगीर मिर्ज़ा का प्रयोग पांसे के रूप में किया। इस आन्तरिक वैमनस्य के कारण तैमूरी राजकुमारों की शक्ति दिन प्रति दिन क्षीण होती गई और ईरानियों व उज़बेगों की शक्ति बढ़ती गई और वे फ़रग़ना राज्य की कमज़ोरियों का लाभ उठाने लगे।

अभी दोनों गुटों के दाँव-पेंच से उसे तनिक भी अवकाश न मिला था कि उसे पुनः अपने ही शिविर में एक शत्रु का सामना करना पड़ा। दोनों भाइयों में सन्धि स्थापित कराने के कारण अली दोस्त तग़ाई अपने को बहुत महत्वपूर्ण व्यक्ति समझने लगा था। अन्दीज़ान के गवर्नर के रूप में भी उसने अपने को बहुत ही शक्तिशाली बना लिया था तथा लोगों से बुरी तरह व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया था। अब सुल्तान अहमद तम्बल की सहायता के बल पर उसने बाबर के परिवार पर अपना नियन्त्रण स्थापित

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, ११८–१९; फ़िरिश्ता, "तारीखें-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९४; ब्रिग्स" "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २,पृ० १३।

२. सन्धि हो जाने के पश्चात् बाबर ने खलील को छोड़ दिया। इसी प्रकार सुलतान अहमद तम्बल ने शीरीन तग़ाई, मुहम्मद दोस्त, मीर शाह कुचीन, सैय्यद क़रा बेग, जिन्हें कि उसने बन्दी बना लिया था मुक्त कर दिया—बाबर-नामा (अनु०) भाग १, पृ० ११९।

करने की चेष्टा की। उसने विना किसी कारण निज़ामुद्दीन खलीफ़ा को नौकरी से निकाल दिया, इब्राहीम सारू व वैस लघारी को पकड़ कर उनकी सम्पत्ति और उनकी जागीरें छीन ली तथा उन्हें भी नौकरी से निकाल दिया। क़ासिम बेग के प्रति भी उसने इसी प्रकार का व्यवहार किया। यह देखकर बावर को दुःख हुआ क्योंकि उपरोक्त सभी अधिकारियों ने बुरे समय में उसकी सहायता की थी। ये सभी व्यक्ति उसके विश्वास-पात्र थे। कुछ दिनों पश्चात् अली दोस्त तग़ाई के पुत्र मुहम्मद दोस्त ने अपने पिता का अनुकरण करते हुए अपने को शाह मानना प्रारम्भ किया, लोगों को खुले आम वह दरबार में बुलाने लगा तथा सुल्तानों की भाँति उसने कारखाने भी रखने प्रारम्भ कर दिए। इस प्रकार पिता और पुत्र दोनों ने, जो कि मुग़ल थे और जो कि उसकी दादी से सम्बन्धित थे, शासन करने लगे। यह सब देख कर भी बावर कुछ न कर सका और न ही उनके विरुद्ध किसी प्रकार की कार्यवाही ही कर सका। कारण यह कि उसके पास न इतने साधन थे और न इतने सैनिक ही कि उनकी सहायता से वह इन मुग़लों को ठिकाने लगा दे। न ही उसकी दादी उसकी इन कार्यवाहियों को पसन्द करती। सत्रह वर्ष की आयु में इस प्रकार अपने आत्म-सम्मान पर चोटें लगते देख कर भी वह शान्त रहा और ऐसे अवसर की खोज में रहा जिससे कि शीघ्र से शीघ्र अली दोस्त तग़ाई व मुहम्मद तग़ाई से बदला लेकर उन्हें ठिकाने लगा सके।[1]

मुग़लों के इस व्यवहार ने उसे निराश कर दिया। अपनी निराशाओं को दूर करने के लिए तथा दुःख को भूल जाने के विचार से मार्च, १५०० ई० में उसने सुल्तान अहमद मिर्ज़ा की पुत्री आयशा सुल्तान बेगम से विवाह किया। किन्तु इससे भी उसे सुख न मिला। उसकी मानसिक चिन्ताएं उसे निरन्तर सताती रहीं।[2] लगभग इसी समय उसे बाबुरी नामक एक तरुण से

१. बावरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ११९–२०; फिरिश्ता, "तारीखे–ए–ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९५; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १३।

२. बावर ने लिखा है कि, "यह मेरे वैवाहिक जीवन का प्रथम अवसर था। यद्यपि मुझे उसके प्रति (आयेशा सुल्तान बेगम) कम स्नेह न था किन्तु लज्जा व सुशीलता के कारण मैं उसके पास १०, १५ अथवा २० दिन में एक बार जाता

प्रेम हो गया और इस प्रेम के उन्माद में वह एक दीवाने की तरह कविताएं लिखने लगा।[1] इस सन्दर्भ में बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है कि, "इश्क एवं मुहब्बत के उत्साह एवं जवानी की मस्ती में नंगे सिर तथा नंगे पाँव, गलियों, छोटे-छोटे, बड़े-बड़े बाग़ों में मारा मारा फिरा करता था। न मैं मित्र की चिन्ता करता था और न शत्रु की न अपने की और न पराये की।"[2]

था। बाद में जब मेरा उसके प्रति स्नेह समाप्त हो गया तो मेरी लज्जा भी बढ़ गई, यहाँ तक कि मेरी माता ख़ानम मुझे जबरदस्ती डाँट-फटकार कर महीने अथवा ४० दिन में एक बार अपराधी के समान उसके पास भेजती थी।" बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५२८।

१. इस सम्बन्ध में बाबर ने लिखा है कि, "इन दिनों शिविर के बाज़ार में बाबुरी नाम एक तरुण रहता था। उसके और मेरे नाम में एक विचित्र अनुरूपता थी। इससे पूर्व मेरी तबियत किसी पर न आई थी और न किसी से प्रेम तथा इश्क की बातें सुनता था और न कहता था। इस अवसर पर मैंने फारसी के कुछ शेरों की रचना की।" बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२९।

"यदि कभी संयोग से बाबुरी मेरे सामने आ जाता तो मैं लज्जा एवं मर्यादा के कारण बाबुरी की ओर सीधी दृष्टि भी न डाल सकता था। उससे मेल-जोल तथा बातचीत तो बड़े दूर की बात रही। मैं उन्माद एवं क्षेप में उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता? मुझमें इतनी शक्ति भी तो न थी कि उसका उचित रूप से स्वागत ही कर लेता। एक दिन प्रेम के उन्माद में मैं मित्रों के साथ गली में जा रहा था। अचानक मेरा उसका सामना हो गया। क्षेप एवं घबराहट में मेरी यह दशा हो गई कि मैं उससे आँख भी न मिला सका और न एक शब्द कह सका।" बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १२०–२१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२९।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १२१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२९।

इन्हीं क्षणों में बाबर को पुनः राजनीति ने अपनी ओर घसीट लिया। तैमूरी राज्यों में राजनीति पिछले कुछ वर्षों से निरन्तर करवटें बदल रही थी और ऐसी स्थिति में किसी भी महत्वाकांक्षी, साहसी व्यक्ति, चाहे वह एक राजकुमार हो या उमराव शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करना कठिन था। बुखारा में जहाँ इस समय सुल्तान अली मिर्ज़ा का शासन था, उथल-पुथल मची हुई थी। वहाँ तरख़ानियों ने, जो कि सुल्तान से सम्बन्धित थे, न केवल राज्य की आय पर अपना अधिकार जमा लिया था, वरन् राज्य को भी अपने पुत्रों एवं सम्बन्धियों में बाँट दिया था। इस प्रकार सुल्तान अली मिर्ज़ा को उन्होंने दूध की मक्खी की तरह निकाल कर शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली। अपने कुछ घरेलू अमीरों की सहायता से सुल्तान अली मिर्ज़ा ने षड्यन्त्र रचकर अपनी खोई हुई शक्ति को वापस लेने का विचार भी किया। किन्तु षड्यन्त्र की बू तरख़ानियों के नेता, मुहम्मद मज़ीद तरख़ान, को लग गई।[1] तुरन्त ही उसने ख्वाजा हुसैन, क़रा बारलस तथा सालेह मुहम्मद आदि को अपने साथ लिया और बुखारा से समरकन्द की ओर कूच किया। मुहम्मद मज़ीद तरख़ान के चले जाने से सुल्तान अली मिर्ज़ा की परेशानी कुछ कम हुई। परन्तु थोड़े ही दिनों पश्चात् उसे दूसरी परेशानी का सामना करना पड़ा। लगभग इसी समय उत्तर की ओर से उसके छोटे भाई बएस मिर्ज़ा ने मुग़लों की एक सेना के साथ, जिसमें कि मुहम्मद हुसैन दोग़लत तथा अहमद बेग आदि व्यक्ति थे, समरकन्द में प्रवेश किया। सुल्तान अली मिर्ज़ा के अधिकारियों, हसन व हिन्दू बेग ने इस अवसर पर उसका साथ न दिया और शत्रु से जाकर वे मिल गए। इस प्रकार समरकन्द में बएस मिर्ज़ा की स्थिति सुदृढ़ हो गई। मुहम्मद मज़ीद तरख़ान ने बएस मिर्ज़ा को अपने पास बुलाया और उससे मिल कर सुल्तान अली पर आक्रमण करने की योजना पर विचार-विमर्श किया। किन्तु इस बात चीत से कोई भी लाभ न हुआ। मुग़लों ने मुहम्मद मज़ीद तरख़ान पर एकायक आक्रमण कर उसे बन्दी बनाने की चेष्टा की पर वह भाग निकला। सुल्तान अली मिर्ज़ा

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२१; फिरिश्ता ने तरख़ानों के नेता का नाम मुहम्मद मुराद तरख़ान दिया है, "तारीख़े-ए-फिरिश्ता,' (मू० ग्रन्थ) पृ० १६५।

को जैसे ही उसके भागने की सूचना मिली, उसने तुरन्त समरकन्द की ओर कूच किया और यार-ईलाक के निकट वएस मिर्ज़ा को परास्त कर उसकी सेना को तितर-बितर कर दिया। इसके पश्चात् वह समरकन्द वापस लौट गया।[1]

यह देखकर कि मुग़लों के ख़ान सुल्तान महमूद ख़ान से सुल्तान अली के विरुद्ध कोई भी सहायता उसे नहीं मिल सकती है और न सुल्तान अली मिर्ज़ा से ही उसका कोई समझौता हो सकता है, मुहम्मद मज़ीद तरख़ान ने अन्त में बाबर के पास मीर मुग़ल को भेजा और उसके द्वारा यह कहलवाया कि समरकन्द को विजय करने में वह उसकी पूरी-पूरी सहायता करेगा। बाबर तो ऐसे अवसर की ताक में था ही। उसने तुरन्त अपने भाई जहाँगीर मिर्ज़ा से सन्धि की और इस बात पर तनिक भी ध्यान न देते हुए कि तम्बल के भाई ख़लील ने उश के दुर्ग को अपने हाथों में ले लिया है बाबर समरकन्द की ओर चल पड़ा। मार्ग में मर्गिनान में उसे कुचबेग व उसके भाई मिले और उन्हें साथ ले कर वह अफसेरा की ओर बढ़ा। मार्ग में कासिम बेग व उसके साथी आकर उससे मिल गए। लगभग इसी समय बाबर को सूचना मिली कि सुल्तान अहमद तम्बल ने उसके पैत्रिक राज्य पर आक्रमण कर अन्दीजान व उसके आसपास के प्रदेशों में स्थित सभी दुर्गों व सूबों को जीत लिया है। इस सूचना ने उसे तनिक भी विचलित न होने दिया। समरकन्द की अपेक्षा उसकी दृष्टि में अन्दीजान के छोटे से राज्य का कोई महत्व न था। अतएव वह आगे बढ़ता ही गया। जब वह ख़ान-युर्ती पहुंचा तो उसकी भेंट वहाँ मुहम्मद मज़ीद तरख़ान व समरकन्दी के अमीरों से हुई। उन्होंने उसे बताया कि समरकन्द में यदि उसे ख्वाजा यहिया की सहायता मिल जाती है तो समरकन्द विजय करने का कार्य बहुत ही सरल हो जावेगा।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२१–२२।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२२; फिरिश्ता, "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९५।
३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १०५; फिरिश्ता, "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १४।

अतएव इस आशय से बाबर ने ख्वाजा यहिया के पास एक दूत भेजा। किन्तु ख्वाजा की ओर से उसे कोई आश्वासन न मिला। इस पर बाबर खान-युर्ती से बढ़ कर दर-ए-गाऊ आया जहाँ से उसने पुनः ख्वाजा के पास एक व्यक्ति भेजा। इस बार ख्वाजा ने उसकी सहायता करने का आश्वासन दिया। बाबर का हौसला बढ़ गया और वह तुरन्त आगे बढ़ा। किन्तु जब कि वह दर-ए-गाऊ नहर के पास पड़ाव डाले हुए पड़ा था, तभी उसका एक उमराव सुल्तान महमूद दुल्दी, उसके शिविर से भाग कर सुलतान अली मिर्जा की सेवा में जा पहुंचा और उसने उसे बाबर व ख्वाजा यहिया की साँठ-गाँठ के बारे में बता दिया। सुल्तान अली मिर्ज़ा ने तुरन्त दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध किया। वह सावधान हो कर शत्रु की प्रतीक्षा करने लगा। बाबर की आशाओं पर पानी फिर गया और वह तुरन्त पीछे हट कर दर-ए-गाऊ में ठहर गया।

अभी वह दर-ए-गाऊ में ठहरा ही हुआ था कि यहाँ उसके कुछ पुराने उमराव उससे आकर मिल गए। इन व्यक्तियों में से थे, इब्राहीम सारू और मुहम्मद युसुफ तथा अन्य व्यक्ति जिन्हें कि आपसी वैमनस्यता के कारण अली दोस्त तग़ाई ने अन्दीजान से भगा दिया था। कुछ ही दिनों पश्चात् अली दोस्त तगाई व उसका पुत्र भी अन्दीज़ान से भाग कर यहाँ आ पहुंचे। अपने शत्रुओं को बाबर के शिविर में देखकर उन्हें विस्मय हुआ और उन्होंने तुरन्त बाबर से अन्यत्र जाने की आज्ञा माँगी। यह सोच कर कि कहीं फिर अली दोस्त तग़ाई उसके शिविर में कोई समस्या न उत्पन्न कर दे, बाबर ने उसे अनुमति दे दी। इस प्रकार पिता व पुत्र दोनों ही आन्दोजन वापस लौट गए और तम्बल से मिल गए।[1]

लगभग इसी समय बाबर ने ग़ोरी बारलस को बुख़ारा भेजा[2]। वह यह जानना चाहता था कि वहाँ की राजनीतिक दशा कैसी है। ग़ोरी बारलस से ही उसे मालूम हुआ कि समरकन्द को विजित करने के लिए उसके मार्ग में एक और प्रतिद्वन्द्वी है। उसका नया प्रतिद्वन्दी था, उज़बेगों का नेता शैबानी

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२५।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२५: फिरिश्ता, "तारीख़े-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" (भाग २) पृ० १४।

ख़ान जो कि समरकन्द पर आक्रमण करने की योजना बना ही रहा था और तैमूरी वंश के सभी शासकों को मिट्टी में मिला देना चाहता था। इससे पूर्व कि बाबर समरकन्द पर आक्रमण कर सकता, शैबानी ख़ान अपनी सेना को लेकर उस ओर बढ़ा और उसने समरकन्द पर आक्रमण कर दिया। बहुत संघर्ष के पश्चात् उसने समरकन्द को अन्त में जीत ही लिया।[1] हुआ यह कि सुल्तान अली मिर्ज़ा को अधिक समय तक बाह्य आक्रमणकारियों का तथा तरख़ान अमीरों का सामना करना पड़ा। उसकी शक्ति क्षीण हो गई। शैबानी ख़ान के विरुद्ध सफलता की आशा न कर सकने पर उसकी माँ जुहुरी बेगी आग़ा ने शैबानी ख़ान के पास यह प्रस्ताव भेजा कि वह समरकन्द का दुर्ग इस शर्त पर समर्पित करने के लिए तैयार है कि वह उससे शादी कर लेगा तथा उसके पुत्र सुल्तान अली मिर्ज़ा को पैतृक साम्राज्य का कोई भाग शासन करने के लिए देगा।[2] शैबानी ख़ान ने यह शर्तें स्वीकार कर लीं और दुर्ग को अपने हाथों में लेने के लिए वह बुख़ारा से रवाना हुआ।

इसी बीच ख़्वाजा यहिया ने बाबर को शीघ्रातिशीघ्र समरकन्द आने के लिए लिखा पर बाबर ने आने में देरी की। बाबर को ख़्वाजा यहिया पर विश्वास

---

१. अहसान-उत-तवारीख़, (अनु०) पृ० २०; "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड ३ पृ०. २९९–३००, अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं," भाग १, पृ० १४०; फ़िरिश्ता, "तारीख़–ए–फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९५; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" (भाग २) पृ० १५।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२७; किन्तु हसन-ए-रुमलू ने अपनी पुस्तक अहसान-उत-तवारीख़ में लिखा है कि जिस समय शैबानी ख़ान समरकन्द के दुर्ग पर घेरा डाले हुए पड़ा था, उसे मालूम हुआ कि ख़्वाजा यहिया, जिसके हाथों में शहर हैं, अपने स्वामी सुलतान अली मिर्ज़ा को बुरी तरह सता रहा है। अतएव उसने एक पत्र सुल्तान अली मिर्ज़ा के पास भेजा और उससे कहा कि वह उसका साथ दे। इसी प्रकार उसने उसकी माँ के पास भी पत्र भेजा और उससे कहा कि वह उससे विवाह करने के लिए तैयार है। माँ और बेटे उसकी बात में आ गए और इस प्रकार सुल्तान अली ख़ान की मृत्यु हो गई। "अहसान-उत-तवारीख़" (अनु०) पृ० २१।

न था और वह यह चाहता था कि पहले वह उसके पक्ष में घोषणा कर दे तब वह आगे बढ़े। बाबर और समरकन्द के दुर्ग के अन्दर के लोगों के बीच यह वार्ता चल ही रही थी कि बाबर को शैबानी खान के बढ़ने की सूचना मिली। वह तुरन्त उस की ओर चला गया। समरकन्द पहुंच कर शैबानी खान एक उद्यान में ठहरा। बिना अपने मंत्रियों तथा अधिकारियों को बताए हुए, सुलतान अली मिर्ज़ा शैबानी खान से मिलने आया। शैबानी खान ने उसका स्वागत किया।[1] ज्यों ही सुलतान अली मिर्ज़ा व शैबानी खान की भेंट की खबर फैली, चारों ओर सनसनी फैल गई। ख्वाजा यहिया शैबानी खान से मिलने के लिए गया। शैबानी ने उसका भी स्वागत किया, परन्तु उसके व्यवहार से असन्तुष्ट होकर उसने उससे खुरासान जाने के लिए कहा। ख्वाजा यहिया इस प्रकार खुरासान की ओर चल पड़ा। किन्तु मार्ग में कुछ उज़बेगों ने उसे तथा उसके दो पुत्रों, ख्वाजा मुहम्मद ज़करिया तथा ख्वाजा बेगी को मार डाला।[2] सुल्तान अली मिर्ज़ा को भी अपने किए पर पश्चात्ताप हुआ। उसे गद्दी पर से उतार दिया गया और उज़बेगों ने उसे मार डाला।[3] इसी प्रकार ज़ुहरी बेगी आग़ा को भी वह सम्मान न मिल सका, जिसकी वह आशा कर रही थी।[4]

समरकन्द में जो कुछ उज़बेगों ने किया उसकी सूचना बाबर को केश

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२७; "हबीब-उस-सियर" रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १३०; अहसान-उत-तारीख तथा अन्य समकालीन ग्रन्थ इस घटना पर अधिक प्रकाश नहीं डालते हैं।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १२८; "हबीब-उस-सियर" भाग ३, खण्ड ३, पृ० ३०२–३; अरस्किन, 'हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर-एण्ड हुमायूँ" भाग १, पृ० १४१।
३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १२८; "हबीब–उस-सियर" भाग ३, खण्ड ३, पृ० ३०३।
४. बाबर ने लिखा है कि शैबानी खां ने उसकी तनिक भी चिन्ता न की, अपितु उसे कनीज़ तथा रखैल स्त्री की भी श्रेणी में न रखा" —बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५३०।

में मिली । शैबानी खान की सफलता से भयभीत होकर बाबर केश से हिसार की ओर रवाना हुआ ।[1] मार्ग में मुहम्मद मज़ीद तरखान, समरकन्दी उमराव तथा उनके परिवार उससे आकर मिल गए । जब बाबर चग़ानियान पहुंचा तो मुहम्मद मज़ीद तरखान ने उसका साथ छोड़ दिया और वह कुन्दूज़ व हिसार के शासक खुसरो शाह की सेवा में चला गया ।[2] बाबर के पास अब केवल दो या तीन सौ सैनिक रह गए थे । किसी कार्य में भी सफलता पाने की अब उसे आशा न रही । उसने अपने को समस्याओं और कठिनाईयों से घिरा हुआ पाया । न उसके पास राज्य था, न अपना देश और न साथी । उसे यह भी नहीं ज्ञात था कि उसे कहाँ ठहरना है अथवा कहाँ जाना है उसके समक्ष केवल खुसरो शाह के राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों में भटकने के अतिरिक्त और कोई मार्ग शेष न था । इन्हीं दिनों उसने अन्दीजान जाकर अपने भाग्य को अज़माने का विचार किया, अपने मामा सुल्तान अहमद के पास जाने की बात भी सोची और यह भी सोंचा कि क्यों न अपने खोये हुए पैतृक राज्य को उसकी सहायता से पुनः प्राप्त करने की चेष्टा की जाय । किन्तु सारे विचार व्यर्थ के थे । अन्दीजान में जहाँगीर मिर्ज़ा तथा सुल्तान तम्बल अब भी शक्तिशाली थे, अतएव उन्हें युद्ध में परास्त करना कोई सरल कार्य नहीं था और न ही उसके लिए सुल्तान अहमद खान के पास तक पहुंचना आसान था । कुछ भी हो अन्त में उसने अपने साधनों का प्रयोग कर खोए हुए राज्य को पुनः विजित करने का संकल्प किया । हिसार के उत्तर-पश्चिम में उसने पहाड़ियों को पार किया तथा अनेक कठिनाइयों को झेलता हुआ वह किसी तरह अपने शत्रुओं से बचता हुआ काम नामक स्थान पर पहुंचा । यहाँ रुक कर उसने उज़बेगों तथा समरकन्द की आन्तरिक दशा के सम्बन्ध में तरह-तरह की जानकारी प्राप्त की ।

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२८; फिरिश्ता के अनुसार वह केश से कोहज़र की ओर रवाना हुआ—तारीख-ए-फिरिश्ता', (मू० ग्रन्थ,) पृ० १६५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १५, ।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० १२८–६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता," (मू० ग्रन्थ) पृ० १६५ ।

उसे बताया गया कि समरकन्द की विजय के पश्चात् शैवानी खान के अधिकारी शहर छोड़कर अन्य स्थानों को चले गए हैं, इब्राहीम तरखान, शीराज़ के दुर्ग में जमकर बैठा हुआ है, ख्वाजा-ए-दीदार में कम्बर अली तथा अब्दुर कासिम कोहबुर उज़बेगों के साथ न रह सके अतएव वे यार-ईलाक की ओर चले गए हैं, जहाँ कि उन्होंने दुर्ग अपने हाथों में ले लिए हैं। ऐसी स्थिति में बाबर ने समरकन्द पर आकस्मिक आक्रमण करने का निश्चय किया। वह शीघ्रातिशीघ्र उस ओर बढ़ा।[1] बाबर को यह आशा थी कि काम के पहाड़ी इलाके के स्वामी उसके साथ उसी प्रकार की उदारता दिखाएगा जिस प्रकार उसने सुलतान मसऊद मिर्ज़ा, सुलतान हुसैन मिर्ज़ा तथा बैसन्गर मिर्ज़ा के प्रति दिखलाई थी। किन्तु उसने ऐसा न कर बाबर के पास केवल घटिया श्रेणी के घोड़े भेजे। इसी प्रकार खुसरो शाह ने भी उसके साथ ऐसा ही व्यवहार किया।[2] अपमान को सहन करता हुआ, कठिनाइयों का सामना करता हुआ, और यह देखते हुए कि उसके साथी धीरे-धीरे उसका हाथ छोड़ रहे हैं, बाबर समरकन्द की ओर बढ़ता ही गया। यह सोचकर कि केशतूद में उज़बेग जमे हुए हैं, उसने उसी ओर बढ़ना उचित समझा। केशतूद, जो कि समरकन्द के निकट है, को विजय कर वह उसका सैनिक-चौकी के रूप में प्रयोग करना चाहता था। किन्तु जब वह केशतूद पहुंचा तो यह देखकर वह विस्मित हुआ कि वहाँ उजबेग नहीं है और वह स्थान उजाड़ पड़ा हुआ है। केशतूद को पार करते हुए वह आगे बढ़ा और उसने कोहिक नदी पार की। तदुपरान्त उसने क़ासिम कुचीन को रबाते-ए-ख्वाजा पर आक्रमण करने के लिए भेजा और स्वयं यह यार-ईलाक की ओर रवाना हुआ। बाबर ने अपने अग्रिम

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १२६; हसन-ए-समुलू के अनुसार ख्वाजा अब्दुल मकारम, जो कि अबुल जलील मुग़लानी के परिवार का एक सदस्य था, ने बाबर के पास एक दूत भेजा और उसके द्वारा यह कहलवाया कि वह शीघ्रातिशीघ्र समरकन्द आ जाए और उसके पहुँचने पर वह उसे दुर्ग में प्रवेश करवा लेगा। इसीलिए बाबर अपने २४० साथियों के साथ उस ओर ओर चल पड़ा—अहसान-उत-तवारीख (अनु०) पृ० २१।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५३४।

दल को यार-ईलाक के दुर्ग को विजित करने के लिए भेजा, किन्तु उसके सैनिकों को दुर्ग लेने में सफलता न प्राप्त हुई और वे यार-ईलाक के निकट पुनः बाबर से आकर मिले। बाबर के पास इस समय केवल २४० से अधिक व्यक्ति न थे।[१]

इससे पूर्व कि हम बाबर व शैबानी खान के बीच होने वाले युद्ध का वृतान्त यहाँ दें, हमें दोनों प्रतिद्वंद्वियों की स्थिति के विषय में भी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। सुल्तान अहमद तम्बल, ऊजून हसन, तथा अली दोस्त तग़ाई के विद्रोह, पैतृक साम्राज्य के विभाजन तथा वहाँ से निकाल दिए जाने के कारण बाबर शक्तिहीन हो गया था। अब तक वह अपने राज्य को पुनः प्राप्त न कर सका था। इसके अतिरिक्त उसके मामा व चाचाओं ने भी उसे अधिक से अधिक कष्ट पहुंचाए। उसका राज्य इस समय शत्रुओं के हाथ में था, उसका कोई भी मित्र न था और न उसके पास कोई ऐसा स्थान था, जहाँ वह सिर छिपा सकता। न ही उसके पास सैनिक थे और न ही विश्वसनीय उमराव, जिनकी सहायता से वह स्वप्नों को साकार कर सकता। उसके २४० साथियों में किसी में न उत्साह था और न उनमें इतनी शक्ति ही थी कि अन्त तक वे उसका साथ दे सकते। यदि ऐसी परिस्थिति में अन्य कोई व्यक्ति होता तो वह भाग्य का पासा फेंक कर अपने जीवन के साथ जुआ कदापि न खेलता। किन्तु बाबर को अपने ऊपर विश्वास था। ईश्वर पर भरोसा रखकर वह निरन्तर समरकन्द की ओर बढ़ता गया। बिना एक बार युद्ध में हारे हुए वह दूसरा युद्ध कैसे जीत सकता था, यही सोचकर उसने आगे बढ़ना प्रारम्भ किया था। उसकी अपेक्षा उसका प्रतिद्वन्द्वी शैबानी खान मध्य एशिया का खूंखार व्यक्ति था। उसके पास ७००० से ८००० तक सैनिक थे। समरकन्द में उसके ५००-६०० सैनिक थे। प्रत्येक दृष्टि से बाबर से वह कहीं शक्तिशाली था। किन्तु जिस प्रकार उसने ख्वाजा यहिया, सुलतान अली मिर्जा, जुहूरी बेगी के साथ व्यवहार किया, उससे समरकन्द की जनता क्रुद्ध हो गई। समरकन्दियों में उसके विरुद्ध प्रतिशोध की भावना प्रज्ज्वलित हुई।

---

१. बाबरनामा (अ०) भाग १, पृ० १३०; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" पृ० (बाबर), पृ० ५३४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) १९३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राईज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" (भाग २) पृ० १५०।

शैबानी खान के लिए यह कठिन हो गया कि किस प्रकार वह समरकन्दियों को अपने पक्ष में करे और उनकी सहायता से बाबर का सामना करे।

अन्य शब्दों में बाबर के पक्ष में केवल एक ही बात थी। समरकन्द के निवासी उसे हर प्रकार की सहायता देने को तत्पर थे। जब उसे समरकन्दियों की उज़बेगों के प्रति घृणा के बारे में ज्ञात हुआ तो उसका साहस और भी बढ़ गया। उसने अपने उमराव से विचार-विमर्श किया।[1] तदुपरान्त यार-ईलाक से खान-ए-युर्ती की ओर वह बढ़ा किन्तु दुर्ग के अन्दर के लोगों को चौकन्ना देखकर वह पुनः यार-ईलाक वापस लौट आया। यार-ईलाक से वह अस्फ़ीदिक पहुंचा। एक दिन अस्फ़ीदिक के दुर्ग में जब वह दोस्त-ए-नासिर, नूयून कोकुल्दाश, खान क़ुली करीम दाद, शेख़ दरवेश, मीरीम-ए-नासिर के साथ बैठा हुआ था और सभी प्रकार की बातें हो रही थीं, उसने कहा, "बताओ ईश्वर की कृपा से हम समरकन्द पर अधिकार जमा सकेंगे ? किसी ने कहा, "हम गर्मियों में उस पर अधिकार कर लेंगे—इस समय शरद्-ऋतु का अन्त था।" कुछ लोगों ने कहा, "एक मास में, "४० दिन में" कुछ ने कहा, "२० दिन में"। नयून कोकूल्दाश ने कहा, "हम १४ दिनों में अधिकार जमा लेंगे।" ईश्वर ने उसकी बात सच कर दी। हमने समरकन्द पर ठीक १४ दिन में अधिकार जमा लिया।[2] इसी प्रकार बाबर लिखता है कि, "उन्हीं दिनों में मैंने एक

---

१. हमने अपने समस्त बेगों और अन्य अधिकारियों से विचार-विनिमय के उपरान्त यह निश्चय किया कि क्योंकि शैबानी खां ने समरकन्द पर हाल में अधिकार जमाया है, अतः समरकन्द के निवासियों का न तो उसके प्रति कोई स्नेह होगा और न उसका स्नेह वहां के निवासियों के प्रति हुआ होगा। यदि कुछ किया जा सकता है तो वह इसी समय। यदि समरकन्द के निवासी हमें कोई सहायता न भी देंगे तो वे उज़बेगों की ओर से हमसे युद्ध भी न करेंगे। यदि एक बार समरकन्द हमारे हाथ में आ जाय, तो फिर जो होना है वह होगा।" देखिए, बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३१, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५३४–५; अर्स्किन–"हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं', भाग १, पृ० १४५।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३२; "हबीब-उस-सियर", भाग ३; खण्ड ३, पृ० ३०२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत' (बाबर), पृ० ५३५;

आश्चर्यजनक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि मानों हज़रत ख्वाजा उबैदुल्लाह एहरार आ रहे हैं। मैं उनके स्वागतार्थ आगे बढ़ा। ख्वाजा मेरे पास आकर बैठ गए। लोगों ने उनके सामने दस्तरख्वान बिछाया। सम्भवतः सफ़ाई की ओर उचित ध्यान न दिया गया था, इससे हज़रत ख्वाजा कुछ खिन्न दृष्टिगत हुए। मुल्ला बाबा ने यह देखकर मेरी ओर संकेत किया। मैंने भी संकेत में उत्तर दिया कि दस्तरख्वान बिछाने वाले की भूल है। ख्वाजा समझ गए और उन्होंने मेरी बात मान ली। जब वे उठकर खड़े हुए तो मैं उन्हें पहुंचाने गया। उस घर के बड़े कमरे में मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि उन्होंने मेरा दायाँ अथवा बाँयाँ बाज़ू पकड़ कर उठाया, यहाँ तक कि मेरा एक पाँव धरती से उठ गया। उन्होंने मुझ से तुर्की में कहा, "शेख़ मसलहत ने मुझे समरकन्द प्रदान कर दिया है।"[1] इस स्वप्न को पुण्य शकुन समझकर दो-तीन दिन उपरान्त बाबर अस्फीदिक से वशमन्द के दुर्ग पर पहुंचा। उसी दिन आधी रात को वशमंद से चलकर वह ख्याबात के मग़ाक नामक पुल पर अपने सैनिकों के साथ पहुंचा। मगाक नामक पुल पर बाबर ने ७०-८० सैनिकों के एकदल को ग़ोरे आशिका के सामने किले की दीवार पर सीढ़ियाँ लगाकर किले के अन्दर प्रवेश कर द्वार पर अधिकार करने तथा उसके पास एक व्यक्ति द्वारा इस कार्य में सफलता पाने की सूचना देने के लिए भेजा। यह सैनिक सीढ़ियाँ लगा कर बिना किसी आपत्ति के दुर्ग में घुस गए और दुर्ग में प्रवेश करते ही उन्होंने दुर्ग रक्षक फाजिल तरख़ान पर आक्रमण कर उसे मार डाला और दुर्ग के द्वार खोल दिए। जैसे ही बाबर को अपने सैनिकों की इस सफलता की सूचना प्राप्त हुई वह अहमद क़ासिम तथा अबुल क़ासिम कोहबुर के ३०-४० परिजनों को लेकर दुर्ग की ओर बढ़ा। समरकन्द के निवासी अब भी सो रहे थे। कुछ

अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर-एण्ड हुमायूँ", भाग १, पृ० १४६; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिलडर आफ दि सिक्सटीन्थ, सेन्चुरी", पृ० ५५-५६।

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५३५; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९४-५; "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड ३, पृ० ३०४-५।

दूकानदारों ने अपनी दूकानों से बाबर व उसके साथियों को देखा और वे बहुत ही प्रसन्न हुए। कुछ ही समय में बाबर के आने की खबर चारों ओर फैल गई और नगर निवासियों ने उसके पक्ष में घोषणा कर उज़बेगों पर वार करना प्रारम्भ कर दिया। उन्होंने ४००-५०० उज़बेग मौत के घाट उतार दिए। जान वफ़ा जो समरकन्द का हाकिम था अपनी जान बचा कर भाग उठा और शैबानी ख़ान के पास पहुंचा। बाबर के सैनिकों व समरकन्द के निवासियों की मुठभेड़ दूसरे दिन प्रातःकाल तक होती रही। इसी बीच जान वफ़ा शैबानी खान के पास ख्वाजा दीदार के दुर्ग में पहुंचा, जहां कि शैबानी खां ७००० सैनिकों के साथ पड़ाव डाले पड़ा हुआ था। उसने बाबर के समरकन्द पर आक्रमण करने की सूचना शैबानी खान को दी। घुस पैठियों से निबटने के लिए शैबानी खान अपने १५० चुने हुए सैनिकों को लेकर समरकन्द के दुर्ग के लौह द्वार तक बढ़ा। किन्तु जब उसे यह ज्ञात हुआ कि समरकन्द की जनता ही बाबर के पक्ष में है और उज़बेगों को उसके विरुद्ध सफलता नहीं मिलेगी, तो दूसरे द्वार को पार करते हुए उसने बुखारा के लिए प्रस्थान किया।[1]

यद्यपि बाबर की आयु इस समय केवल १८ वर्ष की थी, किन्तु अपनी इस महान् एवं अद्वितीय सफलता को देखते हुए उसे बहुत ही प्रसन्नता हुई। समरकन्द को उसने एक युक्ति द्वारा विजित किया। उसे शैबानी खां से संघर्ष भी न करना पड़ा और उसका लक्ष्य भी पूर्ण हो गया। वह लिखता है कि "समरकन्द १४० वर्ष से हमारे वंश की राजधानी रह चुका था। उज़बेग सरीखे शत्रु ने इस पर अपना अधिकार जमा लिया था और वह हाथ से निकल गया था। यद्यपि वह लुट चुका था किन्तु ईश्वर की कृपा से

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३२–३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५३५–६; फ़िरिश्ता, "तारीख़–ए–फ़िरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० १९५–६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १६–१७; "हसन-ए-रुमलू, अहसान-उत्-तवारीख़", (अनु०) पृ० २१; अर्स्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं" भाग १, पृ० १४६।

हमारा राज्य हमें वापस मिल गया।"[1] वह अपनी इस महान् सामरिक सफलता की तुलना हिरात के शासक सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा वैक़रा से करता

---

१. बाबर अपनी इस विजय की तुलना सुलतान हुसैन मिर्ज़ा, जिसने कि हिरात विजय किया से करता है। वह लिखता है कि मेरी विजय तथा उसकी विजय में बड़ा अन्तर है। सुलतान हुसैन मिर्ज़ा के सम्बन्ध में वह लिखता है कि (१) वह कई वर्ष से राज्य कर रहा था और बड़ा अनुभवी था। (२) उसका विरोधी यादगार मुहम्मद नासिर मिर्ज़ा था, जो १७–१८ वर्ष की आयु का अनुभवहीन बालक था (३) यादगार मिर्ज़ा के एक विश्वास-पात्र मीर अली ने एक व्यक्ति को, जो पूर्ण स्थिति से परिचित था, सुलतान हुसैन मिर्ज़ा के पास आकस्मिक आक्रमण करने के लिए निमन्त्रित करने को भेजा था (४) उसके शत्रु उस समय जिस समय आक्रमण किया गया, दुर्ग में थे। वे बाग़ राग़ान में थे। जिस समय आक्रमण हुआ उस समय यादगार मुहम्मद नासिर मिर्ज़ा तथा उसके सहायक नशे में डूबे थे और जो व्यक्ति दुर्ग के द्वार पर तैनात थे वे भी नशे में बदमस्त थे (५) उसने एक बार ही में लोगों को असावधान पाकर हिरात के दुर्ग पर अधिकार जमा लिया। इसके विपरीत बाबर ने लिखा है कि जब मैंने समरकन्द पर अधिकार जमाया तो, (१) मेरी अवस्था १६ वर्ष की थी (२) मेरा शत्रु शैबाक खां बड़ा ही अनुभवी तथा कार्यकुशल और अधिक आयु का था जिसने कि स्वयं अनेक घटनाओं को देख रखा था (३) मेरे पास समरकन्द से कोई भी मुझे निमंत्रित करने के लिए नहीं आया, यद्यपि वहाँ के लोग मुझे इच्छा से चाहते थे। कोई भी शैबाक खान के भय से मेरे पास आने का स्वप्न भी न देख सकता था (४) मेरे शत्रु दुर्ग में थे। मैंने न केवल दुर्ग पर ही अधिकार जमाया वरन् उन्हें भगा भी दिया (५) इससे पूर्व एक बार और मैं दुर्ग में प्रवेश कर चुका था अतः मेरे शत्रु मेरे विषय में चौकन्ने हो गए थे। जब दूसरी बार हम वहाँ पहुँचे तो ईश्वर ने सब कुछ ठीक कर दिया। समरकन्द विजय हो गया—बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १३४–५; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५३७; बाबर की आत्मकथा में से यह पंक्तियाँ उद्धृत कर उनका अनुवाद कर, फिरिश्ता ने भी यही बातें अपने ग्रन्थ में ज्योंकी त्यों लिखी हैं। इसके उपरान्त उसने यह भी लिखा है कि पाठकों से यह बात भी कदापि छिपी न रहे कि

है और लिखता है कि मेरी विजय तथा उसकी विजय में बड़ा अन्तर है।[1] कुछ भी हो बाबर को कम से कम इतना सन्तोष तो हुआ कि वह समरकन्द का शासक पुनः हो गया है।

समरकन्द के दुर्ग को तो बाबर ने किसी न किसी प्रकार विजित कर लिया, किन्तु राज्य के अन्य भागों को अधिकृत करने का कार्य इतना सरल न था। समरकन्द का सिंहासन कभी भी किसी शासक के लिए फूलों की सेज न रहा। समरकन्द के राज्य की रक्षा के लिए एक ऐसे व्यक्ति की सिंहासन पर आवश्यकता थी जिसमें कि साहस हो, कार्य करने की क्षमता हो तथा उत्साह हो, साथ ही ऐसे गुण हों जो लोगों को सेवा करने पर विवश कर दें। इनमें से बाबर के पास केवल कुछ ही गुण थे। कठिनाइयाँ उसकी ओर उन्मुख थीं किन्तु बाबर ने तनिक भी धैर्य न खोया। धीरे-धीरे भाग्य ने उसका साथ देना प्रारम्भ किया। उज़बेगों के

बाबर की इस अभियान में सफलता अमीर तैमूर गुरगान के उस अभियान से मिलती जुलती है जिसमें कि उसने २४३ व्यक्तियों को साथ लेकर कर्शी के दुर्ग पर आक्रमण किया था। किन्तु सम्भवतः यह सोचकर कि कहीं लोग उसके कार्यों की तुलना उस महान् सेनापति से न करने लगें, बाबर ने उसका उल्लेख नहीं किया जिस समय कर्शी पर अमीर तैमूर गुरगान ने आक्रमण किया उस समय वहाँ कोई प्रान्तपति या हाकिम न था। दुर्ग में मीर मूसा का पुत्र मुहम्मद बेग, जो कि अभी एक बालक ही था, के अतिरिक्त और कोई न था। मीर हुसैन और मीर मूसा दोनों ही दुर्ग के बाहर पड़ाव डाले हुए पड़े थे। इसके विपरीत समरकन्द एक बादशाह की राजधानी थी, एक विशाल शहर था जो चारों ओर से सुरक्षित था, जिसके विषय में किसी को यह आशा न थी कि उस पर आक्रमण करके ही उसे अधिकृत किया जावेगा। यही कारण है कि सभी ऐतिहासिक ग्रन्थों में समरकन्द को "सुरक्षितस्थान" कहा गया है। इसके विपरीत कर्शी एक छोटा शहर था, जहां का प्रशासन एक दारोग़ा के हाथों में था। इस प्रकार दोनों विजेताओं की सफलता में ज़मीन-आसमान का अन्तर है।—"तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६६।

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३४; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५३६–७।

आतंक से तंग आकर आसपास के लोगों ने और कृषकों ने उसके पक्ष में घोषणा की। कुछ ही समय में शिवदार व सुगद तथा आस-पास के तुमान एवं किले उसके हाथ में आ गए।[1] बाबर के सैनिकों ने उजबेगों को भगाना प्रारम्भ कर दिया। इसी समय बाबर ने दुर्गों की सुरक्षा का प्रबंध किया। समरकन्द से लेकर बुखारा तक के प्रदेश बाबर के हाथों में आ गए। समरकन्द के दक्षिण में आमू के निकट कोहज़र व करशी के प्रान्तों को बाकी तरखान ने छीन लिया और इसी प्रकार कोराकुल के प्रान्तों को भी अबुल मुशीन मिर्ज़ा ने मूरा तथा केश से आगे बढ़ कर अपने अधिकार में ले लिया। इस प्रकार उज़बेगों को समरकन्द से निकाल दिया गया और उन्हें बुखारा में शरण लेने के लिए बाध्य किया गया।[2] शैबानी खान अपने सैनिकों की असफलता को देखता रहा। लगभग इसी समय उसके तथा उसके अमीरों के परिवार तुर्किस्तान से समरकन्द में रहने के लिए आए, किन्तु यह देखकर कि समरकन्द पर बाबर ने अधिकार जमा लिया है, उसे बड़ी परेशानी हुई। कुछ समय तक वह समरकन्द की सीमाओं पर मंडराता रहा और अन्त में यह देख कर कि समय उसके अनुकूल नहीं है वह भी बुखारा वापस लौट गया। बुखारा पहुंच कर उसकी आंखें निरन्तर बाबर पर लगी रहीं और वह उस अवसर की प्रतीक्षा में लगा रहा कि कब उस पर आक्रमण कर समरकन्द को वापस ले ले।

शैबानी खान के बुखारा वापस हो जाने के पश्चात् बाबर ने अपनी स्थिति को दृढ़ करने की हर प्रकार से चेष्टा की। शैबानी खान को समाप्त करने के लिए उसने साधन भी जुटाए। उसने औरतिपा से अपने परिवार के सदस्यों को समरकन्द बुलाया। यही नहीं, उसने अन्य तैमूरी राजकुमारों एवं शासकों से अनुरोध किया कि वे शैबानी खान के विरुद्ध उसकी सहायता करें, ताकि सदैव के लिए उसे समाप्त कर दिया जाय।[3] किन्तु जितनी सहायता

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १३५।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३५; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १९, ।

३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० १३८; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत",

की वह आशा करता था, उतनी सहायता उसे प्राप्त न हो सकी। जहाँगीर मिर्ज़ा ने केवल कुछ सौ सैनिक ही उसकी सेवा में भेजे। सुल्तान महमूद खान ने भी ४०० से ५०० तक सैनिक भेजे। किन्तु हिरात के शासक सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा, उसका पुत्र बदी उज़ ज़मान मिर्ज़ा जो कि इस समय बल्ख में था तथा कुन्दुज़ के शासक खुसरोशाह ने उसकी किसी प्रकार से भी सहायता न की। ऐसी स्थिति में उसे अपने ही सीमित साधनों पर निर्भर रहना पड़ा और शैबानी खान से आगे चलकर युद्ध करना पड़ा।

इस प्रकार १५०० ई० में बाबर के जीवन का प्रथम पर्व समाप्त होता है। इस काल में उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। उसे अनेक यातनाएं सहन करनी पड़ीं। बदलती हुई परिस्थितियों में कभी उसके भाग्य ने साथ दिया और कभी नहीं। मुसीबतों से घिरे रहने पर भी उसने साहस न खोया और सदैव धैर्य से काम लिया। उसने इस बात की भी चिन्ता न की कि उसके साथी उसको छोड़कर शत्रु से मिल रहे हैं या उसे आगे बढ़ना पड़ रहा है या पीछे हटना पड़ रहा है या उसे विजय प्राप्त हुई है या पराजय का मुंह देखना पड़ा है। विजय व पराजय, दुख व सुख, अपमान व सम्मान दोनों ही उसमें अदम्य साहस, शौर्य भरते रहे और उसका मार्ग प्रशस्त करते रहे ताकि वह निरन्तर अपने स्वप्नों को साकार करता रहे और अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ले। अब तक उसके उमराव को भी यह विश्वास हो गया था कि बाबर धातु का बना हुआ है। किन्तु हमें यह कभी नहीं सोचना चाहिए कि बाबर का ज्ञान अब तक परिपक्व हो गया था अथवा उसे युद्ध का पर्याप्त अनुभव प्राप्त हो गया था या वह इस समय ऐसी स्थिति में हो गया था कि शैबानी खान को हरा सकता या उसके पास इतने साधन ही हो गए थे कि भविष्य में सफलता की वह निरन्तर आशा कर सकता। जिस शत्रु से निबटने के लिए उसने सैनिक तैयारियाँ प्रारम्भ कीं उसने एक ही वार में उसे चित कर दिया और शैबानी खान के सम्मुख उसे सिर झुकाना पड़ा। वास्तव में शक्ति को आंकने का समय बहुत तेज़ी से आगे बढ़ रहा था और यह कहना उपयुक्त होगा कि शैबानी खां के सामने बाबर एक तिनके के समान था।

(बाबर), पृ० ५४०, फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६६; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १६।

तृतीय अध्याय

जीवन—संघर्ष

जीवन-संघर्ष[1]

यद्यपि उजबेगों को समरकन्द से भगा दिया गया, किन्तु अब भी उनके हाथ में बुखारा तथा उसके निकटवर्ती समृद्धिशाली प्रदेश मौजूद थे। बुखारा से ही वे रेगिस्तान की बर्बर जातियों को निमन्त्रण भेजकर अपनी सेना में उन्हें आमंत्रित कर सकते थे तथा उनकी सहायता से तैमूरियों को पराजित कर सकते थे। बाबर के साथ संघर्ष न कर इस समय शैबानी खान ने अपनी बुद्धिमत्ता एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया। आने वाली शिशिर ऋतु में उसने अपने सैनिकों को एकत्र किया और धीरे-धीरे खोई हुई सैनिक चौकियों को वापस लेना प्रारम्भ किया। उजबेगों ने कराकुल पर आक्रमण कर बाबर के सैनिकों को वहाँ से भगा दिया। तत्पश्चात् शैबानी खान स्वयं एक विशाल सेना के साथ मैदान में उतरा। उसने सोगड प्रान्त में स्थित दाबुसी[2] पर आक्रमण किया और इब्राहीम तरखान के भाई अहमद को परास्त कर दुर्ग के अन्दर के सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।

शत्रु की इस सफलता को बाबर ने देखा और यह देखकर कि समरकन्द के राज्य की सीमाओं पर उजबेगों ने पुनः इकट्ठा होना प्रारम्भ कर दिया है, उसने शैबानी खान का युद्ध-स्थल में सामना करने का निश्चय किया। अतएव शव्वाल ९०६ हि० : अप्रैल-मई १५०१ ई० में वह धीरे-धीरे बुखारा की ओर बढ़ा। सर-ए-पुल के उस पार पहुंच कर उसने पड़ाव डाला। शैबानी खान भी दूसरी ओर से आगे बढ़ा और उसने ख्वाजा कदिज़न नामक स्थान

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३७; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५४०; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० १९-२०, ।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३७, ।

पर पड़ाव डाला। बाबर ने अपने शिविर की रक्षा के लिए खाइयाँ खुदवाईं और पेड़ों की डालों से शिविर को ढका और उसके पश्चात शत्रु के आक्रमण की प्रतीक्षा करने लगा. उसके और शैबानी खान के शिविर में लगभग ४–५ मील का फासला था। दोनों ओर के अग्रिम दलों में लगभग प्रतिदिन छुट-पुट लड़ाइयाँ होती रहीं। शैबानी खान के सैनिकों ने आकस्मिक आक्रमण करने का प्रयास भी किया, किन्तु उन्हें कोई भी सफलता न मिली।[1]

बहुत पहले ही बाबर को यह आभास हो गया था कि इस बार उसकी और उज़बेगों की जमकर लड़ाई होगी। अतएव वह पूरी तरह से सावधान रहा और उसने युद्ध की तैयारियाँ भी कर लीं।युद्ध के लिए वह अधीर था। सम्भवतः युद्ध करने की उत्कट इच्छा अथवा ज्योतिष के प्रभाव के कारण, बिना सहायतार्थ सेनाओं की प्रतीक्षा किए, उसने आक्रमण करना उचित समझा। बाकी तरखान जिसे शैबानी ने शक्तिहीन कर दिया था, बाबर से शीघ्रातिशीघ्र आकर मिल जाना चाहता था। उसके साथ लगभग १००० से २००० सैनिक थे और बाबर के शिविर से वह केवल दो दिन के फासले पर था। इसी प्रकार कुछ ही घंटों में सैय्यद मुहम्मद मिर्ज़ा दोघलत भी उसके पास पहुँचने ही वाला था। उसके साथ भी १००० से २००० तक सैनिक थे। यदि इन दो सहायतार्थ सेनाओं की वह प्रतीक्षा करता तो युद्ध के परिणाम कुछ और ही होते। कुछ भी हो ज्योतिष के भुलावे में पड़कर एक दिन प्रातःकाल वह अपने शिविर से निकल आया और उसने अपने सैनिकों को युद्ध स्थल में तैनात किया। सेना को दाएँ, बायें, मध्य एवं अग्रभाग में विभाजित करके पंक्तियां ठीक कर दी गई। सेना का दायाँ भाग इब्राहीम सारु, इब्राहीम जानी, अब्दुल कासिम कोहबुर तथा अन्य बेगों के नेतृत्व में था, बायाँ भाग मुहम्मद मज़ीद तरखान, इब्राहीम तरखान, सुल्तान हुसैन अरगून, क़रा बारलास; पीर अहमद ख्वाजा के नेतृत्व में था, सेना के मध्य भाग का संरक्षण बाबर ने स्वयं कासिम बेग तथा अन्य उमरावों के साथ करना पसन्द किया, सेना का अग्रिम दल कम्बर अली, बन्दा अली, ख्वाजा

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३८–९; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४० ।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० १३९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४० ।

अली मीर शाह कुचीन, सैयद कासिम आदि के नेतृत्व में था। शैबानी खान की सेनाएं भी अपनी-अपनी पंक्तियां सुव्यवस्थित करके आगे बढ़ीं। उसकी सेना का दायाँ भाग महमूद, जानी तथा तैमूर सुल्तान और बायाँ भाग हमज़ा, महदी तथा अन्य कुछ सुल्तानों के अधीन था। जैसे ही बाबर की सेनाएं निकट पहुँचीं, शैबानी खान ने अपनी सेना के दायें भाग को चक्कर लगवा कर बाबर की सेना के पीछे पहुँचवा दिया। अपनी सेनाओं के दोनों भागों को बचाने के लिए बाबर को पीछे हटना पड़ा और सैनिक व्यवस्था में परिवर्तन करना पड़ा। जैसे ही बाबर ने यह कार्य किया, वैसे ही उसकी सेना का बायाँ भाग पीछे की ओर ढकेल दिया गया; और अग्रिम दल जिसे कि मध्य भाग के सामने रखा गया था, और जिसमें बहुत ही अच्छे योद्धा थे, उसे दाहिनी ओर ढकेल दिया गया तथा सैनिकों की पीठ अब कोहिक नदी की ओर हो गई। इसी प्रकार सेना के अन्य दो भागों को भी अपने स्थान छोड़ कर एक ही स्थान पर होना पड़ा ताकि सब मिल कर शत्रु का एक साथ सामना कर सकें। इसके बावजूद बाबर ने शैबानी खान का डटकर सामना किया और उसके अग्रिम दल ने सेना के मध्य भाग को और पीछे कर दिया। इस अवसर पर बाबर व उसके सैनिकों ने पूर्ण रूप से अपनी वीरता का परिचय दिया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि उज़बेग पराजित हो गए हैं। शैबानी खान के पुराने और वरिष्ठ अमीरों ने उसे सलाह भी दी कि वह युद्ध का मैदान छोड़कर भाग चले, परन्तु शैबानी खान वहीं डटा रहा। शीघ्र ही उसकी सेना के दाएं भाग ने बाबर की सेना के बाएं भाग पर आक्रमण कर उसे तितर-बितर कर दिया और उसके पश्चात् चक्कर लगाकर बाबर की सेना के मध्य भाग व पीछे वाले भाग पर आक्रमण कर तथा उन्हें पराजित कर उन्हें नदी की ओर भगा दिया। इस प्रकार बाबर की सेना के मध्य एवं बायें भाग में अनुशासन भंग हो गया। इसी समय जब कि भगदड़ मची हुई थी, अयूब बेग-चिक की मंगोल सेना, जो कि उसकी सहायता के लिए आई हुई थी, ने उसी के सैनिकों को घोड़ों पर से गिराना और लूट मार करना प्रारम्भ कर दिया।[1]

१. बाबर उनके इस व्यवहार की कटु आलोचना करते हुए यह लिखता है कि इन अभागे मुग़लों की यही प्रथा है। यदि वे जीतने लगते हैं तो वे तत्काल शत्रु को लूटने लगते हैं और यदि हारने लगते हैं तो अपनी ही ओर वालों को लूटना-मारना प्रारम्भ कर देते हैं—बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०१४०; रिज़वी,

यह देखकर कि युद्ध जीतना अब कठिन है, १० अथवा १५ आदमियों के साथ बाबर लड़ाई के मैदान से भाग खड़ा हुआ। नदी के पास पहुँच कर उसने उसे पार करने का निश्चय किया। भारी कवच धारण किए हुए उसने व उसके साथियों ने कोहिक नदी को पार किया और वे सभी समरकन्द की ओर चल पड़े।[1]

सर-ए-पुल के युद्ध के परिणाम बाबर के लिए बहुत ही विषम, लज्जाजनक और बुरे सिद्ध हुए। बाबर ने युद्ध में इब्राहीम तरखान, इब्राहीम सारू, इब्राहीम जानी, अबुल क़ासिम कोहबुर, खुदाए-बिर्दी तुगची, खलील तथा अन्य योद्धाओं को खो दिया। उसके अनेक सैनिक युद्ध में हताहत हो गए जिनकी सहायता पर वह अपने उज्वल भविष्य की आशा करता था। यह सोचकर कि अब उसके पास है ही क्या, उन्होंने भी अपना मुंह मोड़ना प्रारंम्भ कर दिया। शैबानी खान के भय से मुहम्मद मजीद तरखान कुन्दुज़ भाग गया और वहाँ से वह खसरो शाह के पास हिसार चला गया ।[2] उसी की ही भांति करीम दाद-ए-खुदाए बिर्दी तुर्कमान, जमाका कोकुलदाश, और मुल्ला बाबा पाशग़री आदि भी भाग कर औरतिपा चले गए।[3] शीरीम तगाई व उसके पुत्र, जो बाबर के साथ इस समय थे, वे ऊपरी हृदय से तो उसकी सेवा करते रहे किन्तु दुरंगी चालें चलते रहे। इस युद्ध ने तैमूरियों की शक्ति को ऐसी ठेस पहुँचाई कि वे फिर संभल कर न खड़े हो सके। धीरे धीरे ट्रान्स-आक्सियाना के राजनीतिक रंगमंच से उन्हें एक-एक कर उतरना पड़ा। उजबेगों की शक्ति बढ़ी और धीरे-धीरे उन्होंने तैमूरी राज्यों का विध्वंस कर उस पर अपने विशाल

"मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४१; अर्स्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायुं" भाग १ पृ० १५२।

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५४२; "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड ३, पृ० ३०६-७।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १४१, फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९६-७।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १४१।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १४१।

साम्राज्य को स्थापित करना प्रारम्भ किया। वास्तव में सर-ए-पुल का यह युद्ध तैमूरियों के लिए अन्तिम युद्ध था, जिसने तैमूरी शासकों एवं उनके राज्यों के भाग्य का निपटारा कर दिया, उन्हें शक्तिहीन बना दिया और उन्हें इस योग्य भी न रखा कि वे शत्रु के विरुद्ध एक संयुक्त मोर्चा भी उपस्थित कर सकते। यद्यपि तैमूर के नाम के साथ-साथ उसके वंश के वैभव, पराक्रम एवं महानता के विषय में अब भी लोग कभी-कभी याद कर लिया करते थे, किन्तु वे सब बातें अतीत की गोद में सो चुकी थीं। इस युद्ध के परिणाम यद्यपि तैमूरियों के लिए कितने ही भयंकर ही सिद्ध हुए हों, किन्तु इस युद्ध से बाबर ने एक पाठ ग्रहण किया। जीवन में प्रथम बार उसने युद्ध-प्रणाली के बारे में जानकारी प्राप्त की। उज़-बेगों की "तुलुग़मा" युद्ध-प्रणाली से वह बहुत ही प्रभावित हुआ। इस युद्ध में उज़बेगों के लड़ने का ढंग, सैन्य-संचालन, सेनाओं के विभिन्न भागों का किस प्रकार आगे बढ़ कर चक्कर लगा कर आक्रमण करना, यह सब उसके लिए नई बातें थीं, जिनका उसने अनुभव प्राप्त किया। इसी नई युद्ध प्रणाली का प्रयोग उसने अपने भारतीय युद्ध-अभियानों में सफलतापूर्वक किया। दूसरे, सर-ए-पुल के युद्ध के पश्चात् उसका विश्वास ज्योतिष-शास्त्र से उठ गया।

समरकन्द पहुँचने के पश्चात् बाबर ने शत्रु का, जो कि उसका पीछा करते हुए आगे बढ़ रहा था, सामना करने का निश्चय किया। उसने परामर्श लेने के लिए, ख्वाजा अबुल मकारिम, कासिम तथा अन्य बेगों को बुलाया, उनसे परामर्श लिया और यह निश्चय किया कि वे अपनी अन्तिम साँस तक दुर्ग की रक्षा करेंगे।[1] यहाँ यह बता देना उचित होगा कि बाबर की स्थिति इस समय बहुत ही डाँवाडोल थी। समरकन्द को छोड़कर अन्य सभी स्थानों पर उजबेगों का प्रभुत्व स्थापित हो चुका था। किन्तु अपने सीमित साधनों के बावजूद सदैव की भांति वह अपने साहस का परिचय देता रहा। उसने शहर के बीचों बीच औलुग बेग मिर्जा की पाठशाला की छत पर कासिम बेग के साथ मोर्चा स्थापित किया। अन्य बेगों को भी उसने जगह-जगह नियुक्त किया और उन्हें उचित आदेश भी दिए। तत्पश्चात् वह शैबानी खान के आने की प्रतीक्षा में लगा रहा। दो या तीन दिनों के उपरान्त शैबानी खान विशाल सेना के साथ समरकन्द आ पहुँचा।

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १४१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६८।

अनेक दिनों तक वह शहर पर घेरा डाले पड़ा रहा तथा समरकन्दियों के अदम्य उत्साह के कारण उसे कोई भी सफलता शहर को अविकृत करने में न मिल सकी। धीरे-धीरे शहर व दुर्ग के अन्दर रसद की कमी होने लगी और लोग भूखों मरने लगे। दुर्ग के लोगों की यह दशा देख कर बाबर ने निकटवर्ती तैमूरी शासकों को प्रार्थना-पत्र भेजे कि वे उसकी सहायता करें, परन्तु कहीं से भी किसी प्रकार की सहायता उसे न प्राप्त हुई। बजाय इसके कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा उसकी कोई सहायता करता, उसने कमाल उद्दीन हुसैन को शैबानी खान के पास भेजकर उसे आश्वासन दिया कि वह किसी भी प्रकार की सहायता बाबर को न देगा।[1] तैमूरियों के इस निकृष्ट व्यवहार पर बाबर रोष प्रकट करता किन्तु उसके पास इतने साधन भी न थे कि उन्हें वह सहायता देने पर विवश कर सकता। धीरे-धीरे उसके साथी उसका साथ छोड़ने लगे। लगभग इसी समय १० या १५ व्यक्तियों के साथ अजून हसन आ पहुँचा और उसने दुर्ग के अन्दर के लोगों को बाबर के विरुद्ध भड़काना प्रारम्भ किया। अब क्या था, समरकन्द के भूखे-प्यासे लोग, दीवारों से कूद-कूद कर भागने लगे। यह सोचकर कि अब किसी प्रकार से समरकन्द की रक्षा नहीं की जा सकती है, बाबर ने शैबानी खान के साथ सन्धि की और आधी रात में शहर छोड़ दिया।[2]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १४४-५; गुलबदन बेगम स्पष्ट रूप से लिखती है कि छः महीने तक बाबर को समरकन्द में शैबानी खान घेरे रहा किन्तु सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा ने, जो कि उसका चाचा तथा खुरासान का शासक था, और कशग़र के शासक सुल्तान महमूद खान ने, जो कि उसका मामा था, उसे किसी प्रकार की सहायता न भेजी और जब कहीं से भी कोई न आया तो वह निराश हो गया"—गुलबदन, "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ० ८४-५; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" पृ० १९-२०।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४७; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीनभारत" (बाबर), पृ० ३४४; अहसान-उत-तवारीख़ (अनु०) पृ० २१-२२; फिरिश्ता सन्धि के बारे में कुछ भी नहीं लिखता—"तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ

बाबर के अनुसार शैबानी खान ने ही सन्धि का प्रस्ताव भेजा था।[1] किन्तु बाबर के इस कथन पर विश्वास नहीं किया जा सकता है। चूंकि इस घटना का उल्लेख उसने इतने थोड़े शब्दों में किया है जिससे कि हम स्वयं शैबानी खान के प्रति उसकी घृणा का अनुमान लगा सकते हैं तथा उसकी स्थिति इस समय क्या रही होगी, इस विषय में हम जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। "तारीख--ए- रशीदी" के लेखक हैदर मिर्ज़ा दोघलत तथा "शैबानी नामा" के लेखक मुहम्मद सालेह तथा अन्य इतिहासकारों के अनुसार शैबानी खान ही ने बाबर को सन्धि करने पर विवश किया।[2] सन्धि की शर्तों के अनुसार उसे समरकन्द वह अपनी बहन खान ज़ादा बेगम, दोनों को ही विजेता के हाथों में सौंपना पड़ा। यदि वह ऐसा न करता तो उसके लिए वहाँ से भागना व अपने परिवार के अन्य सदस्यों को बचाना भी कठिन हो जाता।

इस प्रकार छः महीने तक अवरोध करने के पश्चात् शैबानी खान के हाथों में समरकन्द पुनः १५०१ ई० में आ गया। शहर में घुसने के पश्चात् उजबेगों ने घोर रक्तपात किया। समरकन्द के लोगों में इतना साहस न रह गया कि वे अब और शत्रु का विरोध करें। समरकन्द की विजय के उपरान्त शैबानी खान के मुंह में खुरासान के समृद्धिशाली प्रदेशों को देखकर पानी आ गया। इसके पूर्व

दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २१; "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड, ३, पृ० ३०७।

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४७; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४६; गुलबदन बेगम ने भी यही लिखा है कि इस आपत्तिजनक समय में शाही बेग ने यह कहलवाया कि यदि तुम अपनी बहन खानज़ादा बेगम का विवाह मुझसे कर दो तो हमारे-तुम्हारे बीच में सन्धि हो सकती है और मैत्री सम्बन्ध चिरकाल के लिए। आगे चल कर उसे ऐसा ही करना पड़ा। उसने खान के हाथों में बेगम को सौंप दिया और स्वयं समरकन्द से बाहर हो गया।' "हुमायूं नामा"(अनु०)पृ० ८५; वैम्बरी, "हिस्ट्री आफ बुखारा", पृ० २५५।

२. यह लिखकर कि "समरकन्द में प्रस्थान करते समय मेरी बड़ी बहिन खानज़ादा बेगम शैबाक खां के हाथों में पड़ गई', बाबर सत्य को छिपाने की चेष्टा करता है—बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५४६।

कि हम उसके सामरिक जीवन के विषय में कुछ और बातें जानें, हमें उसके द्वारा पराजित किए हुए प्रतिद्वन्दी के जीवन के विषय में भी कुछ जान लेना चाहिए।

रात्रि के अन्धकार में बाबर अपनी माँ कुतलुग़ निगार ख़ानम तथा दो अन्य औरतों, पेशकाए-ख़लीफ़ा व मिंगलिक कोकूल्दाश तथा कुछ अन्य साथियों के साथ समरकन्द छोड़ कर चल दिया। उसी रात सोगड़ नहर की छोटी-छोटी शाखाएं पार करते समय वह मार्ग से भटक गया। दूसरे दिन प्रातः उसने अपने को भय-मुक्त पाया। ख़्वाजा—ए—दीदार, करा बूब की पहाड़ियों तथा जुडुक की घाटी को पार करते हुए वह ईलान-औटी की ओर बढ़ा। दुःख एवं निराशा के इन क्षणों में भी उसके चेहरे पर कोई सिलवट न दिखाई देती थी। सदैव की भांति वह अब भी प्रसन्नचित्त था। यद्यपि उसकी महत्वाकांक्षाओं पर पानी फिर चुका था, उसके पास न कोई स्थान ठहरने के लिए और न ही उसके साथ इतनी बड़ी संख्या में सैनिक ही थे कि वह अपने खोए हुए राज्य को पुनः विजित कर सकता, फिर भी उदासी उससे दूर रही।[२] ईलान औटी होते हुए वह दीज़क पहुँचा, जहाँ कि हाकिम मुहम्मद दुल्दाई के पुत्र ताहिर ने बाबर व उसके साथियों का स्वागत किया।[३] दीज़क में तीन-चार दिन विश्राम करने के उपरान्त बाबर ने ओरातिपा की ओर प्रस्थान किया।[४] ओरातिपा पहुँच कर उसने मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा दोग़लत से भेंट की और उससे अनुरोध

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ११६, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५४६-७

२. "मार्ग में मैंने क़म्बर अली एवं क़ासिम बेग के साथ घोड़ा दौड़ाया। मेरा घोड़ा आगे निकल गया। मैंने यह देखने के लिए कि उनके घोड़े कितने पीछे रह गए हैं, पीछे घूम कर देखा। मेरे घोड़े का तंग ढीला हो गया था, ज़ीन ढीली हो गई थी। मैं सिर के बल भूमि पर गिर पड़ा। यद्यपि मैं तत्काल उठ कर सवार हो गया, किन्तु रात्रि तक मेरी बुद्धि ठिकाने न रही—बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४७।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४८।

४. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४८, ।

किया कि वह शरद ऋतु में उसे रहने के लिए कोई स्थान दे दे । मिर्ज़ा ने उसे दिखकत नामक स्थान दे दिया। यहाँ भारी सामान छोड़ कर, बाबर अपने मामा सुल्तान महमूद ख़ान व उसके परिवार के सदस्यों से मिलने ताशकन्द की ओर चल पड़ा । ताशकन्द पहुँच कर उसने सुलतान महमूद ख़ान तथा अपने अन्य मामाओं से भेंट की। सुल्तान ने उसे औरतिपा देने का वचन भी दिया, किन्तु जब बाबर औरतिपा वापस पहुँचा तो मुहम्मद हुसैन मिर्जा ने उसे वह शहर देने से इन्कार कर दिया।[१] बाबर को निराशा हुई, क्योंकि औरतिपा के महत्व को वह भलीभांति समझता था। औरतिपा के समृद्धिशाली प्रदेश, उसकी आय, भौगोगिक स्थिति, उपज एवं सामरिक महत्व, उस व्यक्ति के लिए बहुत ही महत्व रखते थे जो कि समरकन्द के दुर्ग को विजय करने की आकांक्षा, अपने हृदय में रखता हो। दूसरे औरतिपा समरकन्द से बहुत दूर न था। वहाँ से कभी भी आगे बढ़कर समरकन्द पर आक्रमण किया जा सकता था। सुल्तान महमूद व मुहम्मद हुसैन मिर्जा की यह नीति थी कि तैमूरियों को दूर रख कर मुगलों व उज़बेगों में सन्तुलन बनाए रखा जाय। अतएव वे नहीं चाहते थे कि औरतिपा को बाबर सैनिक चौकी बनाकर शैबानी खान पर वहाँ से आक्रमण करे। वे जानते थे कि यदि औरतिपा बाबर के हाथों में रहा तो अनावश्यक उन्हें शैबानी खान से वैमनस्यता मोल लेनी पड़ेगी। उन्हें यह भी भय था कि शैबानी खान से इस समय झगड़ा मोल लेना अपने ही अस्तित्व को समाप्त करना है।[२]

औरतिपा में कुछ दिनों मुहम्मद हुसैन मिर्जा के पास रहने के उपरान्त बाबर दिखकत लौट गया। दिखकत में रह कर उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। जिस प्रकार उसने अपना जीवन यहाँ व्यतीत किया, उससे उसका शरीर दिन प्रतिदिन बलिष्ठ होता गया।[3] शरद ऋतु प्रारम्भ हो चुकी थी। इस ऋतु में मध्य एशियाई जातियों को अनेक कठिनाइयों का

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १४६ ।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग१, पृ० १४६ ।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५०; रिजवी, 'मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५४८; अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं", भाग १, पृ० १६२।

सामना करना पड़ता था और अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए उन्हें लूट-मार के लिए निकलना पड़ता था। बाबर के कुछ साथियों ने भी उससे यह बहाना बनाकर कि वे अपने सगे-सम्बन्धियों को देखने के लिए अन्दीजान जाना चाहते हैं, अनुमति माँगी। इस अवसर पर क़ासिम बेग ने बाबर को सुझाव दिया कि वह इन व्यक्तियों के हाथ कुछ उपहार जहाँगीर मिर्जा के लिए और सुल्तान अहमद तम्बल के लिए भेजकर उन्हें अपनी ओर मिला ले। बाबर ने ऐसा ही किया किन्तु इसका कोई भी प्रभाव उन पर न पड़ा।[1] कुछ दिनों उपरान्त जब उसकी नानी ईसान दौलत बेगम समरकन्द से परिवार के अन्य सदस्यों को तथा भूखे एवं दुर्बल व्यक्तियों को लेकर दिखकत पहुँची तो बाबर की व्यक्तिगत कठिनाइयाँ और भी बढ़ गई। इन नव आगन्तुकों के खाने का प्रबन्ध करने के लिए उसे अन्य समृद्धिशाली प्रदेश की खोज करने के लिए निकलना पड़ा।

जिस समय बाबर दिखकत में रहकर शरद्-ऋतु व्यतीत कर रहा था लगभग उसी समय शैबानी खान ने समरकन्द को अपनी राजधानी बनाया, तथा तुर्किस्तान के शासन प्रबन्ध को देखने के लिए अपने दो चाचाओं, कुचीन यहिया खां तथा मंजूक सुल्तान को नियुक्त किया। अपने भाई महमूद सुल्तान को उसने बुख़ारा का गवर्नर बनाया। तत्पश्चात् उसने उज़बेग सैनिकों को हिसार, शादमान, बदख्शां, खुतलान, कुन्दुज और बगलान पर तथा खुरासान के उपजाऊ प्रदेशों में लूटमार करने के लिए भेजा।[2] चूंकि शैबानी खान, सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा की शक्ति से भली-भांति परिचित था, उसने खुरासान के राज्य

१. बाबर लिखता है कि "कासिम बेग ने आग्रह किया, क्योंकि यह लोग जा रहे हैं अतः जहाँगीर मिर्जा को आप अपने वस्त्रों में से विशेष रूप से कोई वस्तु भेज दें।" मैंने अपनी रोएँदार टोपी भेज दी। कासिम बेग ने पुनःआग्रह किया कि यदि आप कोई वस्तु तम्बल को भी भेज दें तो कोई आपत्ति न होगी।" यद्यपि मेरी इच्छा न थी, किन्तु उसके आग्रह पर, मैंने तम्बल को एक बड़ी तलवार, जिसे नुयान कोकुलदाश ने अपने लिए समरकन्द में बनवाया था, भेज दी। जैसा कि अगले वर्ष के वृत्तांत में उल्लेख किया जावेगा, यही तलवार मेरे सिर में लगी।"—बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५०, रिजवी "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४६।
२. अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० २२।

के उन्हीं मार्गों पर छापे मारना प्रारम्भ किया, जहाँ सुल्तान हुसैन की शक्ति कमजोर थी। उन स्थानों में से एक स्थान था बल्ख, जहाँ कि बदीउज़्ज़मान मिर्ज़ा ने विद्रोह कर रक्खा था। इसी प्रकार हिसार कुन्दुज व बदख्शां में भी खुसरो शाह ने अपने स्वामी के साथ विश्वासघात करते हुए अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया था। खुरासान पर आक्रमण करने से पूर्व शैबानी खान ने बाबर के ननिहाल के दो सम्बन्धियों, सुल्तान महमूद खान तथा अहमद खान, जिनके पास मंगोलों, और कलमकों की विशाल सेनाएं शाहरुखिया व ताशकंद में थीं, से अपना बचाव कर उन्हें परास्त करना चाहा। अब तक ज्येष्ठ खान सुल्तान महमूद खान ने शैबानी खान की हर अभियान में सहायता की थी। किन्तु अब उसके सम्बन्ध उससे खराब हो गये थे और दोनों एक-दूसरे को सन्देहात्मक दृष्टि से देखने लगे थे। जिस प्रकार सुल्तान महमूद खान ने बाबर को दिखकत देकर उसकी रक्षा की और सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के साथ सहृदयता दिखाई, उससे सुल्तान महमूद खांन को यह विश्वास हो गया कि दोनों ही व्यक्तियों को वह उज़बेगों के विरुद्ध प्रयोग करना चाहता है। वह सुल्तान महमूद खांन को अपने मार्ग का काँटा समझने लगा और यह सोचने लगा कि एक विशाल साम्राज्य की स्थापना में सुल्तान महमूद खान उसके लिए रुकावट सिद्ध होगा तथा अपने भांजे बाबर पर किए गए अत्याचार का प्रतिशोध अवश्य वह उससे लेगा और उसकी प्रत्येक योजना को विफल बनाने का प्रयास करेगा। इससे पूर्व कि सुल्तान महमूद खान सतर्क हो जाय, शैबानी खान ने उस पर आक्रमण करने के विचार से कड़कड़ाती हुई सर्दी के मौसम में अपने शरीर को फ़र में लपेट कर ताशकन्द की ओर बढ़ना प्रारंभ किया। उसके भाई सुल्तान महमूद व तैमूर सुल्तान भी ६००० सैनिकों के साथ उसके साथ बढ़े। शैबानी खान की सेनाओं ने खोजन्द नदी को पार कर शाहरुखिगा व विशकिन्त के सूबों को लूटा। बाबर को जैसे ही इस आक्रमण की सूचना प्राप्त हुई वह तुरन्त अपने मामा की सहायता के लिए निकल पड़ा। इससे पूर्व कि वह उज़बेगों पर टूट पड़े यह जानकर वह विस्मित हुआ कि उज़बेग समरकन्द वापस लौट गए। सर्दी के इस मौसम में कठिनाइयों का सामना करते हुए वह किसी प्रकार विशकिन्त से दिखकत वापस लौटा।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५१. रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४६।

शिशिर-ऋतु में शैबानी खान ने पुनः ओंरतिपा पर धावा बोला। उसके आक्रमण के भय से बाबर ने दिखकत को छोड़ दिया और निकटवर्ती पर्वतीय प्रदेश में शरण ली।[1] बाबर कुछ समय तक इसी प्रदेश में रहा। शैबानी खान जब लूटमार करके वापस चला गया तो बाबर को ऐसा लगा कि तूफ़ान निकल गया है और आकाश स्वच्छन्द हो गया है।[2] अपनी शोचनीय दशा पर पश्चात्ताप करते हुए तथा भाग्य को कोसते हुए बाबर ने यह सोचा कि बिना पर्याप्त साधन के राज्य की स्थापना नहीं हो सकती है और न खोए हुए राज्य को वापस ही लिया जा सकता है। वह लिखता है, "मैंने सोचा कि इस प्रकार किसी घरबार, देश अथवा निवास स्थान के बिना पर्वतों में मारे-मारे फिरने से कोई लाभ नहीं।[3] इसलिए उसने एक बार फिर सुल्तान महमूद खान के पास जाकर उससे सहायता माँगने का विचार किया। कासिम बेग ने उसके साथ ताशकन्द जाने से इंकार कर दिया और अपने भाइयों तथा साथियों के साथ हिसार की ओर चला गया। अतः कुछ ही लोगों के साथ बाबर ताशकन्द पहुँचा।[4]

जब सुल्तान अहमद तम्बल को यह मालूम हुआ कि बाबर ताशकन्द पहुँच गया है तो वह भी एक सेना के साथ उस ओर चल पड़ा। उसके उस ओर बढ़ने का प्रयोजन क्या था यह कहना कठिन है। जैसे ही वह आहनगरान की घाटी में पहुँचा, वैसे ही मुहम्मद हुसैन दोघलत के भाई मुहम्मद दोघलत ने सम्भवतः कम्बर अली व बाबर के कहने के अनुसार उसे मार डालने का प्रयास किया। किन्तु इस षड्यन्त्र की सूचना किसी प्रकार तम्बल को मिल गई और षड्यन्त्रकारी भाग खड़े हुए। कम्बर अली व मुहम्मद दोघलत भाग कर ताशकन्द पहुँचे।

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५१।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५१।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५१-२; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५१।

४. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५३; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग, २, पृ० २१।

सुल्तान अहमद तम्बल ने भी नदी को पार किया और अन्दीजान की राह ली और अन्दीजान से वह औरतिपा चला गया।[1]

तम्बल ने औरतिपा पर जब आक्रमण किया तब सुल्तान महमूद ख़ान बड़े सुख से जीवन व्यतीत कर रहा था। इस आक्रमण ने उसे सचेत कर दिया तथा शीघ्र ही अपने सैनिकों को लेकर वह ताशकन्द से शत्रु का मुकाबला करने के लिए चल पड़ा। बिशकिन्त व सामसीरक के बीच उसने अपनी सेनाओं का निरीक्षण किया, उसके पश्चात् मुगल प्रथाओं का पालन करते हुए एवं शिकार खेलते हुए, धीरे-धीरे वह शत्रु की ओर बढ़ा। इस प्रकार वे खोजन्द नदी के पास तक पहुँचे। उनकी इस निष्क्रियता के कारण बाबर व उसके साथियों को बड़ा क्षोभ हुआ और यह देखकर कि सुल्तान महमूद खान युद्ध करने का विचार नहीं रखता है, बाबर के कुछ साथियों, खान कुली, सुल्तान मुहम्मद बएस, अहमद-ए-कासिम कोहबुर ने उसका साथ छोड़ दिया, और शत्रु से जाकर मिल गए। इसके पश्चात् ही सुल्तान महमूद ख़ान भी बिना शत्रु को औरतिपा से निकाले हुए ही लौट गया। इस अभियान के सम्बन्ध में अपने विचारों को बाबर ने इन शब्दों में प्रकट किया है, "खान के इस अभियान से कोई लाभ न हुआ। न उसने किसी क़िले को विजय किया, न किसी शत्रु को पराजित किया, केवल वह गया और वापस चला आया।[2]"

अपने मामा को देख कर बाबर को बड़ी निराशा हुई। बाबर की महत्वाकांक्षाएं, उसकी युवा अवस्था, उसके विचार बार-बार उसे इस बात पर विवश कर रहे थे कि वह कहीं भी अपने लिए बैठने का स्थान बना ले। ताशकन्द से जब उसने अपनी दृष्टि चारों ओर दौड़ाई, तो पहली बार उसे ज्ञात हुआ कि चारों ओर से वह, शैबानी ख़ान, सुल्तान महमूद ख़ान, सुल्तान हुसैन, मिर्ज़ा बैक़रा तथा उनके जैसे महान् एवं शक्तिशाली तथा महत्वाकांक्षी व्यक्तियों एवं राजनीतिक शक्तियों से घिरा हुआ है। ऐसी स्थिति में मध्य एशिया में उसे पैर रखने के लिए भी कोई स्थान नहीं मिल सकता है। इनमें से किसी एक

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १५४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५१।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ५५४।

व्यक्ति से भी उसके लिए टक्कर लेना सम्भव न था। ऐसे वातावरण में पैतृक राज्य को वापस लेने, नए-नए प्रदेशों को विजय करने तथा साम्राज्य स्थापना करने का उत्साह ठण्डा होना स्वाभाविक ही था। निकटवर्ती राज्यों में जब तक राजनीतिक स्थिति परिवर्तित नहीं हो जाती तब तक उसके लिए चुप बैठने के अतिरिक्त और कुछ न था। अपनी मानसिक परेशानियों को दूर करने के लिए तथा अपने दुःख को भुला देने के लिए उसने कविताएँ लिखना प्रारंभ किया। उसकी भावनाओं की अभिव्यक्ति हमें कविताओं की पंक्तियों में मिलती है और उनसे यह पता चलता है कि उसके सगे-सम्बन्धियों तथा साथियों दोनों ही ने उससे मुंह मोड़ लिया था। समरकन्द व अन्दीजान के भूतपूर्व शासक को अब दूसरों की कृपा पर जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था। ताशकन्द में उसके जीवन की झलक हमें उसके इन शब्दों में मिलती है, "मुझे अपने ताशकिन्त-निवास के समय अत्यधिक दरिद्रता एवं अपमान का सामना करना पड़ा। मेरे अधीन न तो कोई राज्य था और न किसी राज्य के मिलने की कोई आशा थी। मेरे अधिकांश सेवक छिन्न-भिन्न हो गए। जो रह गए, वे भी मेरे साथ दरिद्रता के कारण कहीं न जा सकते थे। जब मैं अपने खान दादा के द्वार पर जाता तो कभी मेरे साथ एक आदमी और कभी दो आदमी होते थे। यह बड़ा अच्छा था कि वह कोई अपरिचित व्यक्ति न था अपितु मेरा सगा-सम्बन्धी था। खान दादा के प्रति अभिवादन करके मैं शाह बेगम की सेवा में उपस्थित होता था। अपने घर के समान वहाँ नंगे सिर तथा नंगे पैर चला जाता था।"[1] अपने इस जीवन से ऊब कर उसने चीन जाने का निश्चय किया।[2] उसने ख्वाजा

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५६-७; रिज़वी "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० ५५४।

२. उसने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है—"अन्त में इस प्रकार की दरिद्रता एवं इस प्रकार बिना घर-बार के रहने के कारण मैं परेशान हो गया। मैंने सोचा कि इस जीवन से तो यह कहीं अच्छा है कि जहां कहीं सींग समाएं में निकल जाऊं और लोगों के बीच इतने अपमान तथा दरिद्रता का जीवन न व्यतीत करूं। जहां तक मेरे पांव मुझे ले जा सकें मैं चला जाऊं। मैंने खिता (चीन) जाने का संकल्प किया। मुझे बाल्यावस्था से खिता की यात्रा की इच्छा थी किन्तु राज्य तथा अन्य सम्बन्धों के कारण यह सम्भव न

मकारिम के द्वारा शाह बेगम व सुलतान महमूद खान की सेवा में यह निवेदन करवाया कि क्योंकि छोटे खान (अहमद) से पिछले बीस या पचीस वर्षों से भेंट नहीं हुई है, अतएव वह उनके पास जाकर भेंट करना चाहता है और उन्हें ताशकन्द बुला कर लाना चाहता है ताकि शैबानी खान से डटकर मुकाबला हो सके।[1] किन्तु बाबर के इस प्रस्ताव को शाह बेगम व सुलतान महमूद खान ने यह समझकर कि उनके आतिथ्य में कोई कमी रह गई है, ठुकरा दिया और इस प्रकार उसेजाने की अनुमति न मिलसकी। लगभग इसी समय यह समाचार मिला कि सुल्तान अहमद ताशकन्द आ रहा है। इस समाचार के कारण बाबर की योजना बेकार हो गई। किन्तु इस समाचार ने बाबर की आशाओं को पुनः नया जन्म दे दिया। उसने सोचा कि अब छोटे मामा सुल्तान अहमद की सहायता से शैबानी खान से वह अपने अपमान का बदला अवश्य ले सकेगा।

सुल्तान अहमद के ताशकन्द पहुंचने पर उसका आदर-सत्कार हुआ।[2] तत्पश्चात् दोनों भाइयों ने मिलकर समस्त राजनीतिक स्थिति का मूल्यांकन करते हुए यह निश्चय किया कि वे बाबर को फ़रग़ना के सिंहासन पर पुनः बैठाएंगे, सुल्तान अहमद तम्बल पर आक्रमण करेंगे, और उसे युद्ध में परास्त कर वे शैबानी खान पर भी आक्रमण करेंगे और समरकन्द को उज़बेगों के हाथ से ले लेंगे। सबसे पहले इस योजना के प्रथम चरण को कार्यान्वित करने के लिए उचित प्रबन्ध किए गए। सुल्तान महमूद खान ने अपने पुत्र को एक विशाल सेना के साथ उसकी अनुपस्थिति में ताशकन्द की रक्षा करने के लिए नियुक्त किया। सुल्तान मुहम्मद मिर्ज़ा के पास शैबानी खान को उस ओर बढ़ने से रोकने के लिए औरतिपा एक सेना भेजी गई। तत्पश्चात् ३०,००० सैनिकों के साथ सुल्तान महमूद खान, सुल्तान

हो पाता था। अब राज्य हाथ से निकल चुका था। मेरी माता भी अपनी माता (सौतेली) तथा भाई के पास पहुंच चुकी थी। मेरी यात्राओं में जितनी बाधाएं हो सकती थीं उनका अन्त हो चुका था।" बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५७; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५४।

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५८; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५४--५५५।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १५८-६०; रिजवी, "मुगलकालीन भारत", (बाबर), पृ०, ५५५-५५६।

अहमद तथा बाबर १५ मुहर्रम ६०६ हि० : २१ जुलाई, १५०२ ई० को ताशकन्द से किन्दीरलीक के दर्रे से होते हुए अन्दीजान की ओर बढ़े।[1] जब वे लोग आहन गरान की घाटी में पहुंचे तो सुल्तान महमूद खान ने सुल्तान अहमद खान व बाबर को आगे बढ़ने का आदेश दिया। दर्रे को पार कर लेने के पश्चात् वे तीनों व्यक्ति करनान के अधीन ज़रकान में मिले। यहाँ उन्हें सूचना मिली कि सुल्तान अहमद तम्बल भी सैनिकों को एकत्र कर रहा है, अतः उस पर आकस्मिक आक्रमण करने तथा उसके लिए दो मोर्चे स्थापित करने के लिए उन्होंने बाबर के साथ एक विशाल सेना खोजन्द नदी को पार करने, उश व उज़किन्त की ओर बढ़ने और तम्बल पर पीछे से आक्रमण करने के लिए भेजी। सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद स्वयं मुख्य सेना के साथ करनान में ही ठहरे रहे।[2]

बाबर अपनी सेना के साथ आगे बढ़ा। उसने सरकान के निकट सरं नदी को पार किया और उश के दुर्ग पर आकस्मिक आक्रमण कर उसे जीत लिया।[3] जैसे ही उसने उश में प्रवेश किया, अन्दीजान के पूर्वी व दक्षिणी प्रदेशों में रहने वाले कबीलों ने आत्म-समर्पण कर दिया और वे उससे आकर मिल गए। इसी प्रकार कशग़र की सीमाओं पर स्थित उज़किन्त जो फ़रग़ाना राज्य की भूतपूर्व राजधानी थी, वहाँ के लोगों ने भी बाबर के पक्ष में घोषणा की। दो या तीन दिनों के पश्चात् मर्गिनान के निवासियों ने भी तम्बल के दरोग़ा को दुर्ग में से निकाल दिया और बाबर की अधीनता स्वीकार कर ली। इस प्रकार कुछ ही दिनों में सरं नदी के इस पार के दक्षिणी प्रदेश बाबर के हाथ में आ गए। किन्तु उत्तरी प्रदेशों पर तम्बल का प्रभुत्व अब भी पूरी तौर से बना हुआ था। अन्दीजान से निकल कर उसने अख़्सी में अपने सैनिकों को एकत्र किया और वहाँ से बाबर व सुल्तान महमूद व अहमद की गतिविधियों पर ध्यान रक्खा। बाबर की सेना के

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५७।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५५७।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६०; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता", (मू०) पृ०, १६७; ब्रिग्स, दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहम्मडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २१।

अग्रिम दल के सैनिक आगे बढ़कर उसकी सेना से निरन्तर टक्कर लेते रहे और आगे बढ़ने की चेष्टा करते रहे।[1]

इसी बीच बाबर को अन्दीजान के लोगों के अनेक सन्देश प्राप्त हुए। वे उसका साथ देने के लिए तैयार थे। अतएव एक रात आगे बढ़कर अन्दीजान के समीप चिहिल्दुख्तरान नामक स्थान पर वह आकर रुका। वहाँ से उसने कम्बर अली बेग़ के साथ कुछ अन्य व्यक्तियों को ख्वाजा के पास भेजकर यह ज्ञात करना चाहा कि किस प्रकार दुर्ग पर आकस्मिक आक्रमण कर दुर्ग को विजित किया जा सकता है। उन व्यक्तियों को भेजकर बाबर उनके लौटने की प्रतीक्षा करने लगा। रात्रि के तीसरे पहर में केवल एक छोटी-सी भूल के कारण अन्धेरे में उसके दोनों दलों ने एक-दूसरे को पहचान न सकने के कारण एक दूसरे पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार बाबर को उश वापस लौटना पड़ा। कुछ ही समय बाद बाबर को सूचना मिली कि तम्बल के अनुचर उसका धीरे-धीरे साथ छोड़ रहे हैं और उसकी शक्ति कम हो रही है। यह सुनकर बाबर पुनः अन्दीजान की ओर चल पड़ा। किन्तु ज्यों ही वह अन्दीज़ान के निकट पहुंचा उसका मार्ग सुल्तान अहमद तम्बल के भाई सुल्तान मुहम्मद गुलरुख ने रोक दिया। बाबर आगे बढ़कर शहर में प्रवेश करना ही चाहता था कि कम्बर अली और नासिर बेग, जैसे अनुभवी उमराव ने उससे कहा कि संध्या का समय हो गया है और इस समय दुर्ग पर आक़स्मिक आक्रमण करना उचित नहीं है, अतएव हम लोगों को पीछे हट जाना चाहिए और दूसरे दिन प्रातः पुनः दुर्ग लेने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार बाबर को पीछे हटना पड़ा। उसने रबाते-क़ौरक नामक गाँव में पड़ाव डाला और बिना किसी प्रकार की सावधानी बर्ते हुए आराम की नींद ली। सुल्तान अहमद तम्बल ने उसकी लापरवाही का पूरा-पूरा लाभ उठाया। प्रातः होने से पूर्व ही वह दुर्ग से निकल पड़ा और बाबर के सैनिकों पर उसने एकायक आक्रमण कर दिया। थोड़ी देर तक दोनों सेनाओं में युद्ध हुआ। उसके उपरान्त बाबर व उसके सैनिक

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६१-६४, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ५५७; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० १९७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २२।

उश की ओर भाग खड़े हुए।[1] अन्य युद्धों की भांति इस युद्ध में भी बाबर ने इस बात का परिचय दिया कि अब तक उसमें कुशल सेनापति के गुण न आ सके थे। केवल अदम्य उत्साह से ही एक सैनिक युद्ध नहीं जीता जाता। युद्धों को जीतने के लिए अनेक गुणों की आवश्यकता होती है। अब बाबर को उन्हीं गुणों की आवश्यकता थी।

इस युद्ध से तम्बल को भी अधिक लाभ न हुआ क्योंकि अब तक सुल्तान महमूद खां और सुल्तान अहमद दोनों ही मुख्य-सेना के साथ उसका पीछा करने के लिए अन्दीजान की ओर कूच कर चुके थे। दो दिन पश्चात् बाबर अपने मामाओं से मिला। उन्होंने उसका स्वागत किया और उसकी पराजय पर किसी प्रकार का क्षोभ प्रकट न किया। इसी भेंट में सुल्तान महमूद ने बाबर को बताया कि सर नदी के इस पार के समस्त दक्षिणी प्रदेशों को, जिन्हें कि उसने विजित कर लिया है, वे सब प्रदेश उसने अपने छोटे भाई सुल्तान अहमद को दे दिए हैं। अन्दीजान को विजित करने के पश्चात् वह भी उसे दे दिया जाएगा। बाबर से उसने प्रतिज्ञा की कि वह उसे अख्सी दे देगा। खान ने बाबर को यह भी बताया कि फ़रग़ना राज्य को उत्तम शासन-प्रबन्ध प्रदान करने के पश्चात् ही वे तीनों समरकन्द पर सामूहिक आक्रमण करेंगे और उसे जीत कर अख्सी तो सुल्तान अहमद को सौंप देंगे और समरकन्द उसे दे देंगे। फ़रग़ना का राज्य अपने हाथों में रखने के लिए तथा अपनी इस योजना को बल देने के लिए, सुल्तान महमूद खान ने यह भी कहा कि सुल्तान अहमद बहुत दूर से आया है, उसे सन्तुष्ट रखना आवश्यक है तथा उसे ऐसा स्थान देना आवश्यक है जहाँ से वह शैबानी खान की बढ़ती हुई शक्ति के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही कर सके। वास्तव में इस समय इन सब बातों की आवश्यकता नहीं थी। दूसरे यह योजना न तो न्यायसंगत थी और न तर्कसंगत ही। यह योजना केवल सुल्तान अहमद को सन्तुष्ट रखने की ही दृष्टि से बनाई गई थी। यदि बाबर को सर नदी के इस पार के दक्षिणी प्रदेश दे दिए जाते तो— (१) सुल्तान अहमद योजना के द्वितीय चरण को पूर्ण किए हुए ही स्वदेश

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १६४-६५; १६८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५६०-६१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० १६७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २२।

वापस लौट जाता (२) बाबर की स्थिति कमज़ोर रहती और कभी भी उज़बेग उस पर आक्रमण कर उसे फ़रग़ना के राज्य से बाहर निकाल देते। दोनों भाई इस बात से भलीभांति परिचित थे कि बाबर ने किस प्रकार अपने राज्य को खो दिया था और वे अब दुबारा उस घटना को दोहराना नहीं चाहते थे। कुछ भी हो, इन सब बातों को सुनकर बाबर व उसके बेगों के मस्तिष्क में सुल्तान अहमद व सुल्तान महमूद खान के प्रति आशंका पैदा हुई कि वे उन्हें धोखा देना चाहते हैं। इस सन्देह के कारण ही बाबर को कोई भी लाभ न पहुंच सका। यदि बाबर सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद में निरन्तर विश्वास रखता तो न केवल वे उसकी सहायता उसे अपने अविश्वासी स्वार्थी उमराव से छुटकारा पाने में करते वरन् उसके शत्रुओं को भी कुचल कर रख देते। किन्तु बाबर निरन्तर उन्हें सन्देहात्मक दृष्टि से देखता रहा और उनकी योजनाओं में उनकी ही महत्वाकांक्षाओं को निहारता रहा। उसने धैर्यपूर्वक सुल्तान महमूद खान की बातें सुनी और बड़े बे मन से उसकी बातें स्वीकार कर लीं। उसके सामने इसके अतिरिक्त चारा ही क्या था? इस भेंट के उपरान्त जैसे ही वह अपने शिविर वापस लौटा वैसे ही उसने अपने अमीरों की मूर्खता-भरी बातों को पुनः सुनना प्रारम्भ कर दिया।

इस घटना के पश्चात् जब वह अपने छोटे मामा सुल्तान अहमद खान से मिलने के लिए रवाना हुआ, उससे पूर्व अपने विजित प्रदेशों के विभाजन से सम्बन्धित योजना, जिसके बारे में ऊपर उल्लेख किया जा चुका है, के विषय में वह कम्बर अली से भी विचार-विनिमय कर चुका था। कम्बर अली ने उसे सुझाव दिया कि वह सुल्तान अहमद तम्बल से सन्धि कर लें तथा आपस में राज्य को विभाजित कर मुग़लों को वहाँ से निकाल दे। किन्तु बाबर ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार न किया और कहा, "क्या यह उचित होगा? खान लोग मेरे सगे-सम्बन्धी हैं। इन लोगों की सेवा करना मेरे लिए तम्बल की ओर से राज्य करने से कहीं अच्छा है।"[1] इस प्रकार बाबर ने कम्बर अली की बात न मानी। किन्तु उसे भी यह जानने में अधिक समय न लगा कि अपने मामाओं पर अधिक विश्वास करना उसके लिए मूर्खता के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं है। बाबर

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६८; रिजवी "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६२।

अपने छोटे मामा सुल्तान अहमद से मिला। सुल्तान अहमद ने उसका स्वागत किया और उसके प्रति सहृदयता दिखाई।[1]

तम्बल से युद्ध करते समय जो बाबर के घाव लगे थे, उनके भरने के पश्चात् ही बाबर ने पुनः तम्बल पर आक्रमण करने की योजना बनाई। कम्बर अली को यह बात पसन्द न आई। अतएव उसने उसका साथ छोड़ दिया और सुल्तान अहमद तम्बल के पास चला गया। किन्तु कम्बर अली के चले जाने से बाबर को कोई हानि न हुई। कुछ ही समय पश्चात् बाबर के पास अय्यूब बेगचिक, जान हसन बीरीन लगभग १००० या २००० सैनिकों के साथ आए। पूर्व-योजनानुसार सुल्तान महमूद खान ने बाबर को १००० या २००० सैनिकों के साथ नदी के उत्तरी भाग की ओर भेजा ताकि वह अख्सी व कसान, जो कि उसे प्रदान किए जा चुके थे, को विजित कर ले। अतएव बाबर अख्सी की ओर बढ़ा। बीश-खारान के निकट उसने नदी को पार किया और नू-किन्त के दुर्ग के सामने पड़ाव डाला। उसने दुर्ग के रक्षक, शाह बाज़ कारलूक को दुर्ग छोड़कर कसान जाने के लिए बाध्य किया। नू-किन्त के दुर्ग को अपने हाथों में लेने के पश्चात बाबर ने अख्सी व कसान के निकटवर्ती प्रदेशों को लूटा और पाप के दुर्ग को जीता।[2]

इसी बीच सुल्तान महमूद खान अन्दीजान के दुर्ग के निकट पहुंच गया। उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया और दुर्ग के अन्दर के लोगों को बहुत कष्ट दिया। दुर्ग की अधिक दिनों तक रक्षा करना सुल्तान अहमद तम्बल के लिए कठिन हो गया। उसने सोचा कि अब अपने को इन कठिनाइयों से वह दो में से एक दुर्ग से ही निकाल सकता है। उसने पहले बाबर को अपने पक्ष में करने तथा उसे उसके मामाओं से पृथक करने के लिए प्रयास किया। यदि उसकी यह युक्ति सफल हो जाती तो सुल्तान महमूद खान के लिए अन्दीजान के दुर्ग को जीतना कठिन हो जाता। अपनी इस युक्ति को सफल बनाने के लिए उसने अपने छोटे भाई शेख बायज़ीद, जो कि इस समय अख्सी का हाकिम था, से कहा कि वह बाबर के पास दुर्ग में आने के लिए निमन्त्रण भेजे और किसी प्रकार उसे अपने पक्ष में

---

१. इस भेंट के सम्बन्ध में विस्तृत विवरण के लिए देखिए—बाबर नामा; (अनु०) भाग १, पृ० १६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ५६२,

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग, १ पृ० १७०-७१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० ५६३-६४।

कर ले। शेख बायज़ीद ने ऐसा ही किया। किन्तु बाबर तम्बल की कूटनीति और चालबाज़ियों से भलीभांति परिचित था। अतएव उसने इस निमंत्रण की बात सुल्तान अहमद व सुल्तान महमूद खान को भी बता दी। उन्होंने बाबर से निमंत्रण स्वीकार कर अख्सी जाने को कहा भी किन्तु उनकी शर्त यह थी कि वह धोखे से शेख बायज़ीद को बन्दी बना कर मार डालेगा। बाबर जाने को तो तैयार हो गया, किन्तु शेख के साथ विश्वासघात करने से उसने साफ़ मना कर दिया। इस पर दोनों खानों ने सारी बात उसी पर छोड़ दी और कहा कि जैसा वह उचित समझे करे। बाबर दुर्ग में प्रवेश करने के लिए बहुत ही इच्छुक था क्योंकि वह शेख बायज़ीद को ही सुल्तान तम्बल के विरुद्ध प्रयोग करना चाहता था तथा अपने दल को शक्तिशाली बना कर खानों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ करना चाहता था। इस विचार से शेख बायज़ीद के साथ उसने सन्धि कर ली। शेख बायज़ीद नासिर मिर्ज़ा के साथ दुर्ग के बाहर आया और दोनों बाबर को दुर्ग में ले गए। अपने पिता के महल में ही बाबर ठहरा।[1]

बाबर के हाथों में अख्सी का दुर्ग आ जाने तथा सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद खान के अन्दीजान पर निरन्तर आक्रमणों ने फ़रग़ना के राज्य की दशा गम्भीर एवं चिन्ताजनक बना दी। दोनों खान अन्दीजान के दुर्ग को विजित करने के लिए दृढ़ संकल्प कर चुके थे क्योंकि वहीं से वे शैबानी खान के विरुद्ध सामरिक कार्यवाहियाँ करना चाहते थे। उनके इस दृढ़ संकल्प को देखकर सुल्तान अहमद तम्बल ने शैबानी खान से सहायता माँगने का निश्चय किया। उसने अपने बड़े भाई बेग तिल्बा को शैबानी खान के पास भेजा, उसे निमंत्रित किया और फ़रग़ना का राज्य सौंप देने का आश्वासन दिया। शैबानी खान के लिए यह स्वर्ण अवसर था कि जब अपने साम्राज्य का विस्तार वह कर सकता था और नए-नए प्रदेशों को अधिकृत कर सकता था। उसने तुरन्त उसके निमंत्रण को स्वीकार कर लिया और यह कहला भेजा कि वह शीघ्र ही अपनी सेनाओं को लेकर उधर आ रहा है। जैसे ही दोनों खानों को शैबानी खान के आने की

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १७२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० १९७, ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० २२।

सूचना मिली, उन्होंने दुर्ग पर से घेरा उठा लिया और कन्द-ए-बादाम और ख़ोजन्द को पार करते हुए वे मर्गिनान की ओर बढ़े। सुल्तान अहमद तम्बल ने उनका पीछा मर्गिनान तक किया। उसके पश्चात् वह बाबर से निपटने के लिए आगे बढ़ा। चारों ओर आतंक फैला हुआ था। दोनों ख़ानों के पीछे हटने का जैसे ही समाचार फैला; उश, मर्गिनान, तथा अन्य स्थानों के लोगों ने, जिन्होंने पहले बाबर के पक्ष में घोषणा की थी मुग़लों के व्यवहार से तंग आकर विद्रोह कर दिया, उन्हें दुर्गों के ही अन्दर पकड़ा, मारा, लूटा और भगा दिया।[1]

अख़्सी के दुर्ग में प्रवेश करने के पश्चात् बाबर उसकी रक्षा करने के लिए प्रयास करता रहा। किन्तु सुल्तान महमूद ख़ान व सुल्तान अहमद ख़ान को पीछे हटते देखकर उसे आश्चर्य हुआ और उसे विश्वास करना पड़ा कि वे स्वार्थी हैं और अपने हितों की ही रक्षा करना जानते हैं। उनका इस समय पीछे हटना बाबर के लिए घातक सिद्ध हुआ। लगभग इसी समय जहाँगीर मिर्ज़ा मर्गिनान से सुल्तान अहमद तम्बल के पास से भाग कर अख़्सी पहुँचा। उसके आने से बाबर प्रोत्साहित हुआ और उसने दुर्ग की रक्षा करने का संकल्प किया। कुछ समय पश्चात् जहाँगीर मिर्ज़ा ने बाबर को सुझाव दिया कि शेख़ बायज़ीद को वह बन्दी बनाकर दुर्ग अपने हाथों में ले ले किन्तु बाबर ने उसकी बात न मानी और ऐसा करने से इन्कार कर दिया।[2] फलस्वरूप शेख़ बायज़ीद अवसर पाकर दुर्ग के अन्दर वाले भाग में चला गया और उसने द्वार बन्द कर लिए तथा वह सुल्तान अहमद तम्बल की प्रतीक्षा करने लगा। इस प्रकार अपनी ही भूल के कारण बाबर अख़्सी के दुर्ग को भी न ले सका। अनुभवहीन होने के कारण उसकी भूल ने उसे मुसीबतों के झंझावात में ढकेल दिया, जहाँ केवल अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने और अपने भाग्य को कोसने के अतिरिक्त उसके पास कुछ न था। शेख़ बायज़ीद को देखकर वह इतना परेशान हो गया कि उसे अपने रक्षकों को उस पुल पर तैनात करने का ध्यान न रहा जो कि दुर्ग को नदी के उस

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १७२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६४।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १७३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६५।

किनारे से मिलाता था। दूसरे दिन प्रातः सुल्तान अहमद तम्बल ने पुल पार किया और दुर्ग में प्रवेश किया।

बाबर के पास इस समय केवल थोड़े ही लोग थे। अन्य सभी लोग या तो कर वसूल करने गए हुए थे या प्रान्तों पर अपना आधिपत्य स्थापित करने या दुर्ग की रक्षा करने के लिए गए हुए थे। केवल ५०० या ६०० सैनिकों के साथ उसने शहर की रक्षा करने का बीड़ा उठाया। किन्तु इब्राहीम चापुक व जहाँगीर मिर्ज़ा की दुरंगी चालों के कारण न वह सुल्तान अहमद तम्बल के साथ सन्धि कर सका, न शेख़ बायजीद को बन्दी बना कर अख़्सी शहर की रक्षा ही कर सका। उसे शीघ्र ही सुल्तान अहमद तम्बल से युद्ध करना पड़ा। बड़ी कठिनाइयों के बाद बाबर को वहाँ से निकलने में तथा अपनी जान बचाने में सफलता प्राप्त हुई।[1] किन्तु तम्बल के आदमी उसका पीछा निरन्तर करते रहे और अन्त में उन्होंने उसे भागते देख ही लिया। वे उसके पीछे हो लिए और पास आने पर उसे आश्वासन देते हुए किसी प्रकार बहका कर ग़ीवा नामक गाँव के मार्ग में ले आए। तत्पश्चात् बाबर को वे अपने साथ करनान लाए। करनान में बाबर को बन्दी बनाए जाने की चेष्टा की ही जा रही थी कि यह सोचकर कि मृत्यु बहुत ही नज़दीक है, बाबर ईश्वर से प्रार्थना करने के लिए एक निकटवर्ती उद्यान के कोने में चला गया।[2] यहाँ के बाद लगभग १६ महीनों तक का वर्णन किसी भी हस्तलिखित पोथी में नहीं मिलता। सम्राट जहाँगीर ने इस रिक्त स्थान को भरने के उद्देश्य से जो बातें लिखी हैं, उन पर विश्वास करना कठिन है।[3] ऐसा

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १७३-८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६५-७१।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १७८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५७०-७१।

३. तुज़ुक-ए-जहाँगीरी (अनु०) भाग १, पृ० १०६-११०; लेनपूल, "बाबर," पृ० ८४-८५; मिसेज़ बेव्रिज; "मेमाआर्स आफ बाबर', एपेन्डिक्स, डी, पृ० ६-१३; एच० बेव्रिज द्वारा लिखत निबन्ध "ए पैसेज इन तुर्की टेक्सट आफ बाबर नामा," जरनल आफ रायल एशिआटिक सोसाइटी, बंगाल अप्रैल, १६१० पृ० २२१; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया, अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ" भाग १, पृ० १८३; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिलडर आफ़ सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० ७४।

प्रतीत होता है कि जिस समय बाबर करनान में था, उस समय मुहम्मद बाकिर बेग उसके निकट ही था तथा जहाँगीर मिर्ज़ा भी कुछ सैनिकों के साथ करनान नदी के उत्तर में किसी स्थान पर था। यही नहीं, दोनों खान, जो कि अन्दीजान से निरन्तर पीछे हट रहे थे, और मर्गिनान तक जिनका पीछा सुल्तान अहमद तम्बल के सैनिकों ने किया था, वे भी करनान को जाने वाली सड़क पर थे या करनान के निकट ही थे। इनमें से किसी व्यक्ति ने, जिसे कि यह मालूम हो गया हो कि बाबर इस समय करनान में ही उपस्थित है, और तम्बल के द्वारा भेजे गए यूसुफ तथा उसके साथियों के बीच घिरा हुआ है उन पर आक्रमण कर उन्हें भगा दिया और बाबर को उनके हाथों से छुड़ा लिया।

करनान के निकट ही बाबर की भेंट अपने मामा से हुई और उन्होंने उसे १००० सैनिकों का सरदार बनाया। अब तक सुल्तान महमूद खान व उसके भाई सुल्तान अहमद खान ने राजनीतिक वातावरण का मूल्यांकन कर लिया और उसी के अनुसार भविष्य में की जाने वाली सैनिक कार्यवाहियों के विषय में भी विचार-विमर्श कर लिया। फ़रग़ना और समरकन्द के राज्यों को शत्रुओं के हाथों में देखकर उन्हें आत्मग्लानि तो अवश्य हुई होगी और उनके आत्म सम्मान को ठेस भी लगी। यही कारण है कि ताशकन्द पहुंच कर उन्होंने एक विशाल सेना एकत्र की और शैबानी खान के विरुद्ध शीघ्र से शीघ्र आगे बढ़ने का विचार किया। शैबानी खां भी अन्दीज़ान से समरकन्द अपनी सैनिक तैयारियों को पूर्ण करने के लिए वापस लौट गया। सुल्तान महमूद खान, सुल्तान अहमद और शैबानी खान अभी युद्ध की तैयारियों में लगे हुए ही थे कि बाबर के भाई जहाँगीर मिर्ज़ा ने दोनों को व्यस्त देखकर खोजन्द पर आक्रमण कर उसे अधिकृत कर लिया। खोजन्द को जीतकर, ऐसा प्रतीत होता है कि जहाँगीर मिर्ज़ा मंगोलों व उज़बेगों में सन्तुलन बनाए रखना चाहता था और होने वाले संघर्ष को रोकना चाहता था। किन्तु दोनों शक्तियों में से कोई भी अपनी-अपनी सीमाओं को निर्धारित करने के लिए तैयार न था।

अन्त में ९०८ हि० : १५०३ ई० में[1] जैसे ही सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद की सैनिक तैयारियाँ पूर्ण हो गई, उन्होंने सुल्तान मुहम्मद सुल्तान

---

१. वेम्बरी ने जो तिथि दी है वह ग़लत मालूम होती है—"हिस्ट्री आफ बुख़ारा," पृ० २५८ ।

को ताशकन्द की रक्षा का भार सौंप कर, फ़रग़ना की ओर कूच करना प्रारम्भ किया। इसी समय मुहम्मद हुसैन कुरकान दोघलत को एक सेना के साथ औरतिपा की ओर शैबानी खान को आगे बढ़ने से रोकने के लिए भेजा गया। दोनों खानों की सफलता, दोनों सेनाओं के साथ-साथ बढ़ने, एक दूसरे की गतिविधि से परिचित होने, और साथ ही शत्रु पर आक्रमण करने पर ही निर्भर करती थी। किन्तु जैसा कि हम आगे देखेंगे वैसा न हुआ। जैसे ही शैबानी खान को खानों के आगे बढ़ने की सूचना मिली उसने विजय सम्बन्धी सभी योजनाओं को कुछ समय तक के लिए स्थगित कर दिया। उसने सुल्तान महमूद व सुल्तान अहमद की ओर ध्यान दिया, क्योंकि उनका विचार गोबीं के रेगिस्तान से लेकर जैक्सारटेस (Yaxartes) तक के क्षेत्र में रहने वाली समस्त मंगोल व क़लमक जातियों तथा खुरासान के तैमूरी शासक की सहायता से उज़बेगों को सदैव के लिए समाप्त करना था। शैबानी खान समरकन्द से फरग़ना की ओर तेज़ी से बढ़ा। खोजन्द पहुंच कर उसने दुर्ग पर घेरा डाला और दुर्ग को जीतने के पश्चात् वह पुनः समरकन्द लौट गया। अपने सैनिकों को एक लम्बे संघर्ष के लिए तैयार करने के विचार से शैबानी खान समरकन्द में काफी समय तक रुका रहा। इसी बीच दोनों खान व बाबर ने अपनी सेनाओं के साथ फरगना में प्रवेश किया। लगभग इसी समय मुहम्मद कुरकान दोघलत ने औरतिपा की सुरक्षा का प्रबन्ध किया। शैबानी खान को शत्रु की गतिविधियों की पूरी सूचना प्राप्त होती रही। एकायक बिना अपने शत्रुओं को सावधान किए हुए, वह औरतिपा पहुंचा और उसने यह दिखावा किया कि दूसरे दिन वह दुर्ग की घेराबन्दी करेगा। किन्तु उसी रात वह बहुत तेजी से वहाँ से खान के ऊपर आकस्मिक आक्रमण करने के लिए चल पड़ा। दूसरे दिन प्रातः जब मुहम्मद हुसैन कुरकान दोघलत ने शत्रु को दुर्ग के निकट न पाया तो उसे आश्चर्य हुआ और उसने अपने सन्देशवाहकों को शीघ्रातिशीघ्र खानों के पास यह सूचना देने के लिए भेजा कि शैबानी खान ने यहाँ से अन्दीजान की ओर कूच कर दिया है।

मुहम्मद हुसैन कुरकान दोघलत द्वारा भेजे गए संदेश वाहक व शैबानी खान लगभग एक ही साथ सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद खान के पास पहुंचे। दोनों खानों के पास इतना समय न था कि वे अपने सैनिकों को युद्ध के मैदान में लाकर खड़ा कर दें। मुहम्मद हुसैन कुरकान दोघलत के पास भी इतना समय न था कि वह शीघ्रतिशीघ्र दोनों खानों के पास पहुंच कर शैबानी खान के विरुद्ध

संयुक्त मोर्चा स्थापित कर सकता। यद्यपि दोनों खानों के पास १५००० सैनिक थे फिर भी शत्रु का वहीं सामना करने के बजाय, उन्होंने पीछे हटना प्रारम्भ किया। जल्दी में उन्होंने खोजन्द नदी को पार किया, अख्सी में प्रवेश किया, जहाँ उनकी भेंट बाबर से हुई। अख्सी में रुककर दोनों खानों को ऐसा अनुभव हुआ कि वहाँ वे बहुत ही सुरक्षित हैं। यहीं उन्होंने अपने मंगोल सैनिकों को लड़ाई के मैदान में सजाया। तदुपरान्त वे शत्रु की प्रतीक्षा करने लगे। इसी बीच ३०,००० सैनिकों को लेकर शैबानी खान ने शाहरुखिया को जीता और उसके पश्चात् वह अख्सी की ओर बढ़ा, जहाँ दोनों खान उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। अर्चियान में जून १५०३ ई० को दोनों सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। यह युद्ध दो दिन तक चलता रहा। मंगोलों व तुर्कों में हुए युद्धों में यह सबसे घमासान एवं निर्णायक युद्ध था। इस युद्ध में मंगोल खान बहुत बुरी तरह पराजित हुए। उनकी सेनाएं तितर-बितर हो गई और सैनिक जान बचा कर इधर-उधर भाग गए। दोनों खान बन्दी बना लिए गए। शैबानी खान ने उन्हें मृत्यु दण्ड तो न दिया, किन्तु उन्हें बन्दीगृह में अवश्य रक्खा।[1]

ऐसा प्रतीत होता है कि इस युद्ध में बाबर ने कोई विशेष भाग न लिया। युद्ध के उपरान्त जब उसने मंगोल सेनाओं में हलचल देखी और यह देख लिया कि दोनों खान बुरी तरह परास्त हो गए हैं, तो वह चुपचाप धीरे से युद्ध-स्थल से खिसक आया और ताशकन्द की ओर चल दिया। किन्तु मार्ग को बन्द देखकर वह लौट पड़ा और एक कठिन रास्ते से वह सुख व हिसार पहुंचा, जहाँ बड़ी ही कठिनाइयों में उसने एक वर्ष किसी तरह व्यतीत किया। उसका भाई जहाँगीर मिर्जा उसका साथ छोड़कर पहले ही खुरासान भाग गया था और पहले की अपेक्षा उसके सैनिकों व अनुचरों की संख्या भी कम हो गई थी। ऐसी दयनीय दशा में बाबर ने सुल्तान हुसैन मिर्जा से अनुरोध किया कि वह तैमूरियों का प्रतिनिधित्व करे और शैबानी खान को परास्त कर तैमूरी शासकों की रक्षा करें और

१. अर्चियान के युद्ध के लिए देखिए—वैम्बरी, "हिस्ट्री आफ़ बुखारा," "पृ० १५८; अरस्किन "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायुं, भाग १. पृ० १८४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता (मू० ग्रन्थ) १६७; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० २२।

उनके राज्यों को विध्वंस होने से बचाए। बजाय इसके कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैंकरा बाबर के प्रस्ताव को स्वीकार करता, उसने उसे तीखे शब्दों से भरा हुआ सन्देश भेजा और कहा कि वह रक्षात्मक नीति का अनुसरण करेगा। सुल्तान हुसेन मिर्ज़ा बैंकरा ने ऐसा रुख अपना कर मध्य एशिया में तैमूरी वंश के शासकों के भाग्य का स्वयं निर्णय कर दिया। अब उनके बचने की कोई आशा शेष न रही।

अर्चियान के युद्ध के उपरान्त शैबानी खान ने क्या किया उसके विषय में भी हमें कुछ जान लेना चाहिए। युद्ध के समाप्त होते ही शेख बायज़ीद और सुल्तान अहमद तम्बल उसके पास आए और उन्होंने उसका स्वागत किया एवं सम्मान सूचक शब्दों से उसका अभिवादन किया। शैबानी खान उनके मैत्रीपूर्ण व्यवहार से प्रसन्न हुआ और उन पर विश्वास रखते हुए उसने उन्हें आदेश दिया कि वे निकटवर्ती प्रदेशों को जीत ले और अपने अधिकार में कर लें। तदुपरान्त समरकन्द या अन्दीजान की ओर न लौट कर वह सुलतान महमूद खान के राज्य पर आक्रमण करने के लिए बढ़ा। अरस्किन के अनुसार शैबानी खान को इस अभियान में किसी विरोधी का सामना न करना पड़ा। उसके आगे बढ़ने का समाचार सुन कर ही लोग भयभीत हो गए थे, और उनमें इतनी भी शक्ति न रह गई थी कि वे आगे आकर उसका सामना करते। सुल्तान महमूद खान व सुल्तान अहमद की पराजय की सूचना मिलते ही, सुल्तान मुहम्मद, जिसे कि ताशकन्द की रक्षा के लिए नियुक्त किया था, घबरा गया। वह अपने परिवार को लेकर मुग़लिस्तान के रेगिस्तान की ओर भाग गया। इसी बीच शैबानी खान शाहरुखिया पहुंचा। शाहरुखिया के दुर्ग की रक्षा का भार सुल्तान महमूद खान की माता पर था। उसने दुर्ग की रक्षा करने का प्रयास किया। दोनों खानों के परिवारों से वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने की इच्छा शैबानी खान के मन में बहुत दिनों से थी। किन्हीं कारणों से उसकी यह इच्छा पूर्ण न हो पाई थी। इस इच्छा की पूर्ति के लिए यह अवसर बहुत ही उपयुक्त था। उसने सुल्तान महमूद खान व अहमद खान की जान बख्श दी थी। वह जानता था कि उनकी माता उसके प्रति कृतज्ञ है। यह सोचकर उसने उसके सामने अपना प्रस्ताव रखा। सुल्तान महमूद खान की वृद्ध माँ ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर अपनी तीन पुत्रियों का विवाह शैबानी खान, उसके पुत्र तैमूर बेग और उसके भतीजे जानी बेग़ से कर दिया। इस वैवाहिक सम्बन्ध ने न केवल तैमूरी वंश के शासकों को

बरबाद करके रख दिया अपितु उजबेगों के हितों की सुरक्षा की और उज़बेगों के प्रभुत्व की स्थापना की। शाहरुखिया और ताशकन्द को विजित करने के उपरान्त शैबानी खान ने दोनों खानों को छोड़ दिया और उनके ३०,००० सैनिकों को अपनी सेना में भर्ती कर लिया। उसके पश्चात् उसने मुख्य-मुख्य शहरों में अपने सैनिक रखे और समरकन्द लौट गया।

शैबानी खान के समरकन्द लौटने के पश्चात् सुल्तान अहमद खां मुग़लिस्तान चला गया, जहाँ उसने अपने जीवन के शेष दिन व्यतीत किए। वह अर्चियान के युद्ध में अपनी पराजय को न भूल सका और जिसके फलस्वरूप दिनपर दिन उसका स्वास्थ्य गिरता गया। अपने इस अपमान को सहन न कर सकने के कारण वह रोग-ग्रस्त हो गया। तारीख़–ए–रशीदी के लेखक मिर्ज़ा हैदर दोघलत के अनुसार, एक दिन ख्वाजा ताजुद्दीन मुहम्मद, जिसका कि सुल्तान बहुत ही मान-सम्मान करता था, उसने सुनी हुई बातों के आधार पर सुल्तान से पूछा कि यह सुनने में आया है कि शैबानी खान ने उसके भोजन में कोई जहरीली जड़ी-बूटी मिला दी थी और यदि यह बात सच है तो वह खिता जाकर कोई ऐसी बूटी ले आवेगा जो कि उसके असर को समाप्त कर देगी।" यह सुनकर सुल्तान ने लम्बी साँस ली और कहा, "हाँ! शाही बेग खान ने वास्तव में मुझे विष दे दिया है। कैसे? यह मैं तुम्हें अभी बतलाता हूँ। कितने निम्न स्तर से वह उठा और इतनी जल्दी वह ऊपर उठा कि उसने हमलोगों को बन्दी बना लिया और अपमानित कर छोड़ दिया। इसी अपमान ने मेरी बीमारी को जन्म दिया है और जिसके कारण मेरा शरीर गल गया है। यदि इस रोग को ठीक करने का उपाय तुम्हें मालूम हो तो तुम बतलाओ, शायद उससे कुछ लाभ हो।"[1] कुछ ही महीनों पश्चात् उसकी मृत्यु हो गई। उसके पश्चात् उसका पुत्र मन्सूर खान मंगोलों का खान बना।

इसी प्रकार सुल्तान महमूद खां भी मुग़लिस्तान में रह कर अपनी पराजय पर पश्चात्ताप करता रहा। मुगलिस्तान के रेगिस्तान के पश्चिमी प्रदेशों में रहने वाली जातियों पर उसने अपना प्रभुत्व तो स्थापित कर लिया किन्तु पूर्व में चलीस

---

१. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०); फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २३; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिलडर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० ७५।

और तेफ़रान तक उसके भतीजे मन्सूर खान ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर उसे चुनौती दी। शीघ्र ही चाचा और भतीजे में गृह युद्ध हुआ। सुल्तान महमूद खान को वहाँ से भागकर शैबानी खान के पास शरण लेनी पड़ी। शैबानी खान ने खोजन्द में उसे पकड़ कर, उसे तथा उसके पाँचों पुत्रों को मौत के घाट उतरवा दिया। यह घटना ९१४ हि०। १५०८ ई० में घटित हुई।

शैबानी खान की महत्वाकांक्षाएं उसे खुरासान की ओर ले गयीं। खुरासान पर इस समय सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा का शासन था। खुरासान की दशा उस समय अच्छी न थी। उमराव की गटबन्दियों, सम्राट की बढ़ती हुई आयु, उसके पुत्रों में आपसी द्वेष के कारण राज-नीतिक वातावरण शिथिल होता जा रहा था। हिसार, खुतलान, बदख्शाँ पर सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा के वजीर खुसरो शाह ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया तथा वह स्वतंत्र होने का स्वप्न देखने लगा। उसकी तरह अन्य उमराव एवं सामन्त स्वतंत्र होने का स्वप्न देखने लगे। इससे पूर्व कि वे अपनी-अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करें। शैबानी खान की सफलताओं ने उन्हें भयभीत कर दिया और इस बात पर बाध्य किया कि वे अपनी-अपनी महत्वाकांक्षी योज-नाओं को कुछ समय के लिए स्थगित कर दें और उससे युद्ध करने के लिए तैयार हो जायं। खुसरो शाह ने मुहम्मद हुसैन दोघलत, जो कि अचियान से भाग कर उसके पास आया था, का स्वागत किया और शैबानी खान के सम्बन्ध में बातें मालूम कीं। भाग्य से इस वर्ष शैबानी खान ने उस पर कोई भी आक्रमण न किया अतएव वह उसकी ओर से निश्चिन्त हो गया। किन्तु अगले वर्ष ही शैबानी खान ने हिसार पर आक्रमण कर निकटवर्ती प्रदेशों को लूटा और वापस चला गया। तत्पश्चात् उसने बल्ख पर आक्रमण किया। और उसने बदी-उज जमान मिर्ज़ा को दुर्ग में शरण लेने पर बाध्य किया। आगे बढ़कर उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। यदि उसे सुल्तान अहमद तम्बल के विद्रोह की सूचना न मिली होती तो वह बल्ख को जीत कर ही वापस लौटता। उसने घेरा उठा लिया और समरकन्द वापस लौट गया। समरकन्द पहुँच कर शैबानी खान ने अपने सैनिकों को विश्राम करने दिया और उसके पश्चात् वह उन्हें लेकर अन्दीजान की ओर तम्बल के विद्रोह को दबाने के लिए चल पड़ा।

सुल्तान अहमद तम्बल जो कि इस समय जिगरकों[1] के देश में युद्ध कर रहा

१. फ़रग़ाना के दक्षिण-पश्चिम में स्थित प्रदेश।

था, को जब शैबानी खान के आने की सूचना मिली तो वह तुरन्त अन्दीज़ान वापस लौटा। उसके वहाँ पहुँचने से पूर्व ही शैबानी खान अन्दीज़ान पहुँच चुका था। उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। चालीस दिनों तक सुल्तान अहमद तम्बल ने उसका सामना किया। अन्त में यह देख कर कि सफलता उससे कोसों दूर भाग रही है, और शत्रु से संघर्ष करना व्यर्थ है, उसने दुर्ग से बाहर निकल आना उचित समझा। अतएव अपने सात भाइयों तथा बहनों के साथ वह दुर्ग के बाहर आया और शीघ्र ही उज़बेगों ने उन सभी को मौत के घाट उतार दिया। दुर्ग को अपने हाथों में लेने के पश्चात् शैबानी खान ने अन्दीज़ान को जानी बेग के हाथों में सौंप दिया। तदुपरान्त शैबानी खान समरकन्द वापस लौट गया। समरकन्द पहुँच कर वह आमू पर स्थित प्रदेशों पर, जिनका भ्रमण वह पिछले वर्ष कर चुका था, आक्रमण करने की तैयारियाँ करने लगा। कुछ भी हो अन्दी ज़ान की विजय के उपरान्त फ़रग़ना राज्य का अन्त हो गया और उसके अधीन प्रदेश उज़बेग साम्राज्य में मिला लिए गए। अन्य अवसरों की भांति इस अवसर पर भी शैबानी खान की सफलता बहुत ही प्रशंसनीय, अद्वितीय एवं चकाचौंध करने वाली थी। इस सफलता ने तैमूरी साम्राज्य के अस्तित्व को मिटा दिया।

शैबानी खान के सम्बन्ध में, ऊपर दिए गए वृतान्त तथा उसकी विजयों के वर्णन एवं किस प्रकार उसने मध्य एशिया की, सुल्तान महमूद खान, सुल्तान अहमद, खुसरो शाह, सुल्तान अहमद तम्बल और बदी-उज-ज़मान मिर्जा जैसी शक्तियों को परास्त किया, से यह बात भलीभांति स्पष्ट हो जाती है कि तत्कालीन परिस्थितियों में बाबर के लिए, जिसके पास न कोई सेना थी, न अनुचर, न कोई राज्य, और न उचित साधन, उस महान् योद्धा को जिसने कि अनेक युद्धों में सफलता पाई, परास्त करना लोहे के चने चबाने के समान था। यह सत्य है कि बाबर साहसी एवं निर्भीक व्यक्ति था, किन्तु उसमें इतनी क्षमता न थी कि वह तैमूरी राजकुमारों तथा मुग़लों का सहयोग प्राप्त कर शैबानी खान के विरुद्ध सामरिक कार्यवाही कर सकता। इस समय उसका जीवन एक घुमक्कड़ व्यक्ति के जीवन की भांति था। उसमें वे गुण अभी तक नहीं आ पाए थे, जिनकी कि एक कुशल प्रशासक एवं योद्धा को आवश्यकता होती है। इस काल में उसने दो युद्धों में भाग लिया किन्तु दोनों में वह अपनी सामरिक प्रतिभा का परिचय न दे सका। सर-ए-पुल के युद्ध में जिस प्रकार वह लड़ा, उससे साफ़ यही पता चलता है कि युद्ध-युक्ति से वह अनभिज्ञ था। अर्चियान के युद्ध में केवल वह एक साधारण

सैनिक की तरह लड़ा। इस काल में प्रत्येक पग पर चाहे वह अकेला हो या अपने मामा के साथ, उसे सदैव असफलता का मुंह ही देखना पड़ा। यही नहीं, उसके लिए राजनीतिक रंगमंच पर खड़े होना भी कठिन हो गया। फिर भी मुसीबतों, कष्टों, दुःखों को झेलकर उसने कुछ सीखा, राजनीति को समझने की चेष्टा की और अपने को तत्कालीन वातावरण में ढालने का प्रयास किया। क्या यह बात उसके लिए महत्वपूर्ण नहीं थी अथवा इसका उसके जीवन में कोई महत्व न था? प्रकृति ने अपने प्रकोप द्वारा उसे बलिष्ट बनाया, कष्टों ने उसके संकल्पों को दृढ़ता प्रदान की, और यद्यपि बार-बार उसे आगे बढ़कर पीछे हटना पड़ा, किन्तु जब तक वह अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल न हुआ, तब तक वह शान्ति से न बैठा। दुर्दिनों में भी, जबकि उसका दुर्भाग्य निरन्तर उसके सिर पर मंडराता रहा, बाबर ने कभी भी धैर्य न खोया और ऐसा करके उसने अपने व्यक्तित्व को प्रबल बनाया। उज़बेगों की बढ़ती हुई शक्ति के कारण उसे अपना राज्य छोड़ना पड़ा। बाबर ने ९१० हि० : १५०४ ई० की ग्रीष्म-ऋतु में अपने देश को नमस्कार किया और वह उन पहाड़ों को, जो कि अन्दीजान को किरिकत ग़ीन और हिसार से पृथक करते हैं, पार करने के लिए चल पड़ा।[1]

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १८८।

चतुर्थ अध्याय

काबुल की विजय एवं मध्य एशियाई राजनीति

कावुल की विजय एवं मध्य एशियाई राजनीति

पिछले अध्याय में हम बता चुके हैं कि बाबर को अपने जीवन में कितनी बार कठिनाइयों का सामना करना और किस प्रकार कष्ट उठाना पड़ा। किन्तु अपने पैतृक राज्य को छोड़ने के पश्चात् भी उसकी परेशानियाँ कम न हुईं। ख़ुरासान की ओर बढ़ते समय फ़रग़ना के दक्षिण में स्थित ऊँची-ऊँची पहाड़ियों को पार करते समय भी उसे अनेक कष्ट उठाने पड़े। किसी प्रकार वह हिसार तथा कुन्दुज़ के निकटवर्ती प्रदेश में पहुँचा, जहाँ वह कुछ दिनों तक ठहरा। यहाँ मुल्ला बाबा पाशग़र तथा अन्य व्यक्ति उससे आकर मिले और धीरे-धीरे उसके अनुचरों की संख्या बढ़ने लगी। अपने अनुचरों की बढ़ती हुई संख्या को देखकर उसकी आशाएँ पुनः उमंग लेने लगीं। उसने सोचा कि क्यों न उनकी सहायता से वह अपने खोए हुए राज्य को वापस ले ले अथवा हिसार तथा कुन्दुज़ पर जहाँ की राजनीतिक स्थिति, तुर्की एवं मुग़ल कबीलों की मानसिक एवं शारीरिक उथल-पुथल के कारण गड़बड़ा रही थी, अपना प्रभुत्व स्थापित कर दे। संक्षेप में, आमू के इस ओर जिस प्रकार का राजनीतिक वातावरण था, उससे बाबर प्रोत्साहित हुआ कि वह परिस्थिति का पूरा-पूरा लाभ उठाए। उसने अपना दूत ख़ुसरो शाह, जो कि हिसार तथा कुन्दुज़ का शासक था, के पास उसका सन्देह दूर करने के लिए कि वह उस पर आक्रमण नहीं करना चाहता है तथा यह जानने के लिए कि उसका दृष्टिकोण उसके प्रति कैसा है, भेजा। थोड़े समय के बाद उसके दूत ने आकर उसे बतलाया कि ख़ुसरो शाह उसके विरुद्ध है। अतएव, कबीली जातियों की सहायता पर निर्भर होकर, बाबर हिसार की ओर बढ़ा। उसने ख़्वाजा ईमद में जो हिसार के निकट है, पड़ाव डाला। इसी बीच ख़ुसरो-शाह ने अपने दूत मुहिब अली को बाबर की योजनाओं तथा उसकी गतिविधियों का पता लगाने के लिए भेजा। मुहिब अली बाबर से मिलकर लौट गया।[1] अपने राज्य की सीमाओं पर बाबर को देखकर ख़ुसरो शाह

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १८८; गुलबदन बेगम के अनुसार ख़ुसरो शाह बाबर से स्वयं मिलने आया और उसने उसका स्वागत किया—"हुमायूँ नामा" (अनु०) पृ० ८५।

को भय हुआ कि कहीं वह उसके राज्य पर विजय न प्राप्त कर ले। इससे पूर्व कि वह अपने राज्य की रक्षा करने का प्रवन्ध करे, वावर ने आगे वढ़ना प्रारम्भ कर दिया। वह उसके राज्य में घुस गया और उसने आमू पर स्थित तथा तिरमिज़ के कुछ नीचे कुबैंदां नामक स्थान पर पड़ाव डाला। यहाँ, ख़ुसरो शाह के छोटे भाई वाक़ी चग़ानियानी, जो कि इस समय चग़ानियान, शहर-ए-शफा, तिरमिज़ तथा अन्य सूवों का गवर्नर था,[1] का दूत उससे मिलने आया। चूंकि वाक़ी के सम्वन्ध अपने भाई से अच्छे न थे, उसने वावर के साथ मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध स्थापित करने तथा उसकी सहायता करने का प्रस्ताव भेजा।[2] वावर ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। ऊवाज़ नामक घाट के निकट जव वावर आमू नदी को पार कर चुका तो वाक़ी चिग़ानियानी वावर से स्वयं भेंट करने आया। वावर ने उसका स्वागत किया, उससे वातचीत की और उससे अपनी सेना के साथ तिरमिज़ में मिलने को कहा। तत्पश्चात् वाक़ी वापस लौट गया। उसने अपने सैनिकों तथा परिवार को एकत्र किया और वावर से वह तिरमिज़ में आकर मिला। उसके साथ-साथ कहमर्द तथा वामियान की ओर, जो इस समय, अहमदे-क़ासिम, जो कि ख़ुसरो शाह का भान्जा था और जिसके अधीन यह सव प्रदेश थे, वढ़ा।[3] तिरमिज़ में ही वावर ने यह निश्चय कर लिया था कि कहमर्द की घाटी में स्थित अजर नामक दुर्ग में वे लोग अपना भारी सामान एवं परिवार सुरक्षा की दृष्टि से छोड़ देंगे और उसके पश्चात् अन्य समृद्धिशाली प्रदेशों को विजय करने के लिए चल पड़ेंगे। ईवक में यार अली वलाल ख़ुसरो शाह के पास से आकर उससे मिला और उसके पश्चात् वावर को यह सूचना मिली कि जो मुग़ल ख़ुसरो शाह की सेवा में है, वे उससे आकर मिलना चाहते हैं। जव वावर जिन्दान की घाटी में पहुंचा तो कम्वर अली वेग,

---

१. वावर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १८८; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर) पृ० ४।
२. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १८६; रिजवी "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ४; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बावर एण्ड हुमायू," भाग १, पृ० २०२।
३. वावर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १८६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ४।

ख़ुसरोशाह के पास से भाग कर उससे आकर मिला। अज़र के दुर्ग में बाबर ने अपना सामान छोड़ा। जहाँगीर मिर्ज़ा का विवाह सुल्तान महमूद मिर्ज़ा की पुत्री अली बेगम से यहीं हुआ।[1] जितनी जल्दी बाबर हिसार को विजित करना चाहता था, उतनी जल्दी इस कार्य को सम्पन्न करना सरल न था। कारण यह कि वह कभी भी अपने उमराव वर्ग पर विश्वास न कर सकता था। उसका उमराव वर्ग, जाति व कबीले के आधार पर विभाजित था। उसमें तुर्क, मुग़ल, ईरानी, तूरानी सभी थे। इन सभी जातियों में किसी प्रकार की एकता न थी। यार अली बलाल के अधीन जो ईरानी सैनिक आए, और उनके साथ बाबर ने जिस प्रकार का व्यवहार किया उससे कम्बर अली के हृदय को ठेस पहुंची। यही दशा अय्यूब व बदलोल की भी थी। इस ईरानी तूरानी वैमनस्य को देखकर ही बाक़ी चग़ानियानी ने बाबर को यह सुझाव दिया कि वह जहांगीर मिर्ज़ा को खुरासान की ओर भेज दे, अन्यथा उसे सदैव परेशानी उठानी पड़ेगी। बाबर ने उसकी बात न मानी, जिसका फल यह हुआ कि वे सभी व्यक्ति बाबर के विरोधी हो गए। उन्होंने बाबर का साथ छोड़ दिया और खुल्लम खुल्ला जहाँगीर मिर्ज़ा से मिलकर विद्रोह करना प्रारम्भ किया। जब उन्हें कोई सफलता प्राप्त न हुई तो वे जहांगीर मिर्ज़ा के साथ खुरासान की ओर चले गए।[2]

इसी बीच शैबानी ख़ान ने अपनी सैनिक तैयारियाँ पूरी कर ली और एक विशाल सेना को लेकर व हिसार की ओर बढ़ा। हिसार के दुर्ग पर उसने घेरा डाला, किन्तु ख़ुसरो शाह के सेवक शेरान चेहरा ने जमकर दुर्ग की रक्षा की। अधिक दिनों तक दुर्ग की रक्षा न कर सकने पर शेरान ने दुर्ग को समर्पित कर दिया। इस प्रकार हिसार का दुर्ग उज़बेगों के हाथों में आ गया। जिस समय शैबानी खान ने हिसार के दुर्ग पर घेरा डाला, उसी समय उसने अपने भाई मुहम्मद सुल्तान को कुन्दुज़ पर आक्रमण करने के लिए भेजा। ख़ुसरो शाह ने जब हिसार पर आक्रमण होने तथा मुहम्मद सुल्तान का कुन्दुज़ की ओर बढ़ने का समाचार सुना तो वह अपनी जान

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १८६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५।

बचाकर निकटवर्ती पहाड़ियों में शरण लेने के लिए भागा। उसके भागने के पश्चात् उसके पुराने सेवक मुल्ला मुहम्मद तुर्किस्तानी ने दुर्ग अपने हाथों में ले लिया और शैबानी खान के पक्ष में घोषणा कर दी। दो दिन पश्चात् जब मुहम्मद सुल्तान वहां पहुंचा तो उसने दुर्ग उसे समर्पित कर दिया।[1] खुसरो शाह को उसके राज्य से निकाल कर शैबानी खां ने हिसार, हमजा सुल्तान, चग़नियान, महदी सुल्तान और कुन्दुज महमूद सुल्तान के हाथों में सौंप दिया। स्वयं वह समरकन्द की ओर चल पड़ा। मार्ग में उसे मुहम्मद सुल्तान की मृत्यु का समाचार मिला, किन्तु दुःखद से दुखद समाचार से न तो वह विचलित हुआ और न राज्यों को विजित करने की उसकी प्यास बुझी। समरकन्द पहुंच कर उसने, खुरासान के अधीन ख्वारिज़म पर आक्रमण करने की तैयारी की।[2]

ऐसा प्रतीत होता है कि अजर में ही बाबर को शैबानी खान की सैनिक कार्यवाहियों के बारे में मालूम हो गया था, इसी कारण वह कुन्दूज की ओर न बढ़ कर हिसार की ओर बढ़ा। हिसार तथा कुन्दूज़ को विजय करने के उपरान्त जब शैबानी खान ने ख्वारिज़म पर आक्रमण करने की योजना बनाई तब खुरासान के शासन सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा की आंखें खुलीं और उसे पहली बार मालूम हुआ कि उसका राज्य खतरे में है। उसने बाबर के पास पत्र भेज कर शैबानी के विरुद्ध उसकी सहायता मांगी। यदि सुल्तान हुसैन बैक़रा चाहता तो अब भी व ऐसी स्थिति में था कि शैबानी खां के विरुद्ध आगे बढ़ कर उस पर आक्रमण कर सकता था। किन्तु उसने ऐसा करना उचित न समझा। उजबेगों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर उसने मुर्गाब नदी तथा पैरापेनिशियन की पहाड़ियों में स्थितदुर्गों की रक्षा करने के लिए प्रबन्ध किए। उसने अपने पुत्र सुल्तान अहमद मिर्ज़ा तथा उलुग़ बेग मिर्ज़ा को मुर्गाब नदी के किनारों की रक्षा करने व उज़्बेगों को आगे न बढ़ने देने के लिए भेजा। उसने बदी-उज़्ज़मान मिर्ज़ा को आदेश दिया कि वह अपने आदमियों को बल्ख़, शिबरग़ान, अन्दीखुद आदि दुर्गों की रक्षा करने के लिए भेजे तथा स्वयं

---

१. अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ़ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं", भाग १, पृ० २०५-६।

२. अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ़ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूं", भाग १, पृ० २०६।

गिरज़वान, जंग घाटी तथा उस ओर के पर्वतीय प्रदेशों की रक्षा करे।[1] लगभग इसी समय सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा ने बावर तथा खुसरो शाह को भी निमंत्रण भेजे और उन्हें सुझाव दिया कि वे भी रक्षात्मक नीति का अनुसरण करें। एक अन्य पत्र में बावर को उसने लिखा, "आप कहमंद, अजर तथा उस ओर के पर्वतीय प्रदेश की रक्षा करें। खुसरो शाह अपने विश्वास पात्रों को हिसार तथा कुन्दूज़ में नियुक्त कर दें। उसका अनुज वली बदख्शाँ तथा खुतलान की पहाड़ियों की रक्षा करे। इस प्रकार उज़बेग लोग भाग जावेंगे और कुछ भी न कर सकेंगे।"[2] सुल्तान हुसैन बैकरा के इस पत्र से ऐसा प्रतीत होता है कि उसे यह आशा न थी कि हिसार व कुन्दुज़ को शैवानी खान विजित कर लेगा और खुसरो शाह को वहाँ से भगा देगा। किन्तु इस पत्र को जब बावर ने पढ़ा तो उसकी समस्त आशाओं पर, जो कि इस समय खोये हुए राज्य को पुनः वापस लेने पर ही केन्द्रित थी, पानी पड़ गया। क्योंकि सारे पत्र में केवल रक्षा करने की ही बात कही गई और शैवानी खान पर आक्रमण करने के सम्बन्ध में एक बात भी न कही गई थी। यही कारण है कि उसने उसके पत्र को पढ़कर विस्मय प्रकट करते हुए लिखा, "सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा के इन पत्रों ने हमें चिन्ता में डाल दिया। कारण यह कि उस समय तैमूर वेग के राज्य में सुल्तान हुसैन के समान कोई प्रतापी बादशाह न था। उसकी आयु, सेना की शक्ति तथा उसके राज्य को देखते हुए कोई भी उसका मुकाबला न कर सकता था। आशा की जाती थी कि उसके राजदूत निरन्तर आ-आकर यह सन्देश पहुंचाया करेंगे, "तिरमीज, किलिफ़ तथा कीरकी के घाटों पर इतनी नौकाओं का प्रवन्ध कर दो!!" "पुल बंधवाने की जितनी सामग्री हो सके एकत्र करो, "तुकूज़ ऊलूम के ऊपर के घाटों की भलीभांति रक्षा करो।" इन आदेशों का उद्देश्य उन लोगों को, जो वर्षों से उज़बेगों के कारण हतोत्साहित हो चुके हैं, पुनः प्रोत्साहित करना होगा, किन्तु सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा सरीखे बादशाह, जो कि तिमूर वेग के स्थान पर शासन कर

१. बावर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६०-१; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बावर), पृ० ५।

२. बावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १६६; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बावर), पृ० ६।

रहा था, शत्रु पर आक्रमण करने की बात त्याग कर प्रतिरक्षा की बातें करने पर फिर किसी कबीले अथवा जत्थे को क्या आशाएं रह सकती थी ?"[1] बाबर के इन शब्दों में दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं कि उसे शैबानी खान के असीमित साधनों का पर्याप्त ज्ञान न था और दूसरे कि वह ख़ुरासान राज्य की आन्तरिक दशा से बिल्कुल ही अनभिज्ञ था और न ही उसे मालूम था कि शैबानी खान के आगे बढ़ने पर ख़ुसरो शाह हिसार तथा कुन्दूज़ से भाग खड़ा होगा।

सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के अनुरोध ने बाबर को इस बात पर विवश कर दिया कि वह ख़ुरासान जाकर शैबानी खान के विरुद्ध उसकी सहायता करे। अपने सैनिकों को लेकर वह मुर्ग़ाब नदी के किनारों की रक्षा करने के लिए चल पड़ा।[2] मार्ग में उसे ख़ुसरो शाह की पराजय के बारे में सूचना मिली और यह मालूम हुआ कि मुग़ल उसकी सेवा में आना चाहते हैं तथा वे तालीखान में उससे मिलने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। ख़ुसरोशाह की पराजय के बारे में जब उसने सुना तो उसे आश्चर्य हुआ, किन्तु दूसरी ख़बर से उसे सन्तोष हुआ। जैसे ही बाबर किज़िल-सू पहुंचा, लगभग ३००० या ४००० मुगल-कुटुम्ब उसकी सेवा में आ गए। इसी समय बाक़ी चग़ानियानी के सुझाव पर उसने कम्बर अली को हटा दिया और बाक़ी को अपना मुख्य परामर्शदाता बनाया।[3]

जिस दिन से बाक़ी चग़ानियानी, बाबर का प्रमुख परामर्शदाता बना उसका भाग्योदय होने लगा। कुन्दुज़ से भाग कर जब ख़ुसरो शाह ने काबुल

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० १६१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर), पृ० ६।

२. "हमने अपने साथियों एवं सहायकों में से भूखे तथा कमज़ोर लोगों, घरेलू सैनिकों, माल-असबाब, बाक़ी बेग एवं उसके पुत्र मुहम्मद क़ासिम, उसके सैनिकों एवं कबीले वालों तथा उनके असबाब को अजर में छोड़ दिया और हम अपने सैनिकों को लेकर चल खड़े हुए"—बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १६१।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १६२; रिज़वी. "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७,

मार्ग पर बढ़ना प्रारम्भ किया तो जैसे ही उसने घाटियाँ पार की, वैसे ही उसे ज्ञात हुआ कि बाबर का शिविर पास ही में है। उसने अपने दामाद अय्यूब को बाबर की सेवा में भेजा और उसके द्वारा प्रार्थना की कि वह उससे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता है। अविश्वसनीय, महत्वाकांक्षी, धोखेबाज खुसरो शाह के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करते हुए बाबर प्रारम्भ में कुछ झिझका, किन्तु बाक़ी चग़ानियानी के कारण उससे एक समझौता कर लिया गया। इस समझौते की शर्तों के अनुसार यह तय हुआ कि खुसरो शाह की सम्पत्ति, उसके सामान व माल-असबाब को हाथ न लगाया जावेगा और उसे सेवा में ले लिया जावेगा।[1] अय्यूब को विदा कर देने के उपरान्त बाबर किज़िल-सू से चल कर उस स्थान पर पहुंचा जहां कि यह नदी अन्दराब से मिलती थी।[2] अन्दराब को पार कर वह दूशी के निकट पहुंचा, जहाँ उसने पड़ाव डाला। खुसरो शाह बड़ी संख्या में अपने अनुचरों के साथ आया और बाबर की सेवा में भर्ती हो गया।[3] लगभग इसी समय सुल्तान महमूद मिर्ज़ा का सबसे छोटा पुत्र मिर्ज़ा ख़ान (सुलतान वएस मिर्ज़ा) भी बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ और उसने अपने भाइयों की हत्या के विषय में खुसरो शाह से प्रतिशोध लेने की बात की। परन्तु बाबर ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया, क्योंकि खुसरो शाह के जीवन की रक्षा करने का उसने उसे आश्वासन दे दिया था। यह देख कर कि खुसरो शाह का जीवन खतरे में है, बाबर ने उससे अपने माल व असबाब के साथ खुरासान की ओर प्रस्थान करने को कहा। अतएव खुसरो शाह ने अपना धन, हीरे-जवाहरात, सोना-चाँदी, बहुमूल्य वस्तुएं ऊंटों पर लाद ली और खुरासान की ओर प्रस्थान कर दिया। बाबर ने शेरीम तग़ाई को आदेश दिया कि वह खुसरो शाह को गूरी तथा दहाना के मार्ग खुरासान की

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १९२; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ७।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १९३; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ७।

३. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० १९३; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ७।

ओर विदा करके कहमंद चला जाय और उसके परिवार वालों को ले आवे।[1] खुसरो शाह के जाने के पश्चात् वाबर ने दूशी में ही ठहरना उचित समझा क्योंकि वह शैवानी खान पर अकेले आक्रमण नहीं करना चाहता था, दूसरे उसे मंगोल सैनिकों पर भरोसा न था, तीसरे अब तक उज़बेग दूशी के आस-पास लूट मार करने के लिए बढ़ चुके थे। उसने दूशी में ही एक सैनिक टुकड़ी उज़बेगों के विरुद्ध भेजी और इस टुकड़ी ने उज़बेगों पर आक्रमण कर उन्हें तितर बितर कर दिया।[2] इन्हीं सैनिकों से उसे शैवानी खान की शक्ति के बारे में मालूम हो गया होगा, अतएव उसने आगे बढ़ना उचित न समझा।

उज़बेगों की बढ़ती हुई शक्ति को देखकर बाकी चग़नियानी ने वाबर को सुझाव दिया कि उसे व्यर्थ में अपना समय समरकन्द व फरग़ाना को पुनः वापस लेने में न खोना चाहिए और उसे चाहिए कि वह काबुल के राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित करे।[3] इस समय काबुल की राजनीतिक दशा बहुत ही खराब थी। विद्रोही प्रवृत्तियाँ चारों ओर उमड़ रही थीं। १५०१ ई० में वाबर के चाचा उलुग़ बेग़ मिर्ज़ा, जो कि काबुल का शासक था, का देहान्त हो गया। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका अल्पवयस्क पुत्र अब्दुर रज़्ज़ाक मिर्ज़ा गद्दी पर बैठा। अब्दुर रज़्ज़ाक मिर्ज़ा की कम आयु का लाभ काबुल के उमराव ने उठाना प्रारम्भ किया। उन्हीं अमीरों में से एक उमराव, जिसका नाम ज़िक्र बेग था, ने शासन की बागडोर अपने हाथों में ले ली और मनमानी शासन करने लगा। अन्य उमराव उससे असंतुष्ट हो गए और उन्होंने उसे मार डाला। इस प्रकार अमीरों के आपसी वैमनस्य के कारण काबुल का

---

१. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० १९३-९४; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ६; गुलबदन बेगम, "हुमायूँनामा" (अनु०), पृ० ८६; 'नफ़ायसुल माआसीर', रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४४।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १९४।

३. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० १९५; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २३,।

राज्य दिन प्रतिदिन शक्तिहीन होता गया । ऐसे ही समय निकटवर्ती राज्यों के महत्वाकाँक्षी शासकों का ध्यान उस ओर गया और उन्होंने उसे हड़पने का निश्चय किया । कन्धार के शासक जुलनून बेग अरगून का सबसे छोटा पुत्र मुहम्मद मुक़ीम, जो कि इस समय अपने पिता की ओर से गर्मसीर पर शासन कर रहा था, ने सबसे पहले काबुल के दरबार की राजनैतिक गुटबन्दी का लाभ उठाने का प्रयास किया । उसने हज़ारा अफ़ग़ानों की एक सेना लेकर काबुल पर आक्रमण किया तथा काबुल के शासक अब्दुर्रज्ज़ाक को अफ़ग़ानों के अधीन शरण लेने को बाध्य किया । मुहम्मद मुक़ीम ने इस प्रकार समस्त राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया। उसने अपने ही हाथों में शासन की बागडोर ली, उलुग़ बेग मिर्ज़ा की पुत्री से विवाह किया और शान्तिपूर्वक शासन करना शुरू किया।[1] लगभग दो वर्षों तक, मध्य एशियाई राजनीति से बहुत दूर रहकर तथा उस क्षेत्र में सार्वभौमिकता के लिए होने वाले संघर्ष से कोई मतलब न रख कर, वह चैन से शासन करता रहा ।

खुरासान के राज्य के अतिरिक्त काबुल का ही राज्य अब अमीर तैमूर के उस विशाल साम्राज्य के एक भाग के रूप में रह गया था, शेष सभी राज्यों पर उज़बेग अपना आधिपत्य स्थापित कर चुके थे । बाबर को जब यह ज्ञात हुआ कि उसके चाचा के राज्य पर अरगून सरदार ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया है तो वह उस पर तैमूरी वंश का प्रभुत्व पुनः स्थापित करने के लिए बढ़ा । बड़ी कठिनाई से हिन्दुकुश की सकरी पहाड़ियों को, तथा घाटियों को पार करता हुआ बाबर ग़ौरबन्द पहुंचा और उसने उश्तुर शहर में पड़ाव डाला । यहाँ उसे ज्ञात हुआ कि बरन नदी के किनारे मुक़ीम बेग अरगून का मुख्य उमराव एक विशाल सेना के साथ आक्रमणकारी को रोकने अथवा अब्दुर्रज्ज़ाक की सहायता करने के लिए आने वाली सहायतार्थ सेनाओं को रोकने के लिए, बैठा हुआ है । बाबर ने आगे बढ़कर उस पर आकस्मिक

---

१. गुलबदन बेगम, "हुमायुं नामा", (अनु०) पृ० ८६; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दी मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० २४; मिर्ज़ा मासूम, "तारीख-ए-सिन्ध", पृ० ६८; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० १६८ ।

आक्रमण कर दिया और उसे परास्त कर इस बात पर बाध्य कर दिया कि वह उसकी सेना में आ जाय।[1] इसके पश्चात् वह काबुल की ओर बढ़ा। मार्ग में अनेक जातियाँ व कबीले, जिन्हें कि खुसरो शाह पीछे छोड़ गया था, उसके साथ मिल गए।[2] इन मुग़ल सैनिकों के आने से बाबर की शक्ति और भी बढ़ गई। उश्तुर शहर से चलकर बाबर ने करा-बाग़ की अक सराय नामक चरागाह में प्रवेश किया।[3] इससे पूर्व की वह काबुल में प्रवेश करे, उसने मुग़लों की लूट मार करने वाली आदत पर नियंत्रण रखने तथा उन्हें अनुशासन में रखने की आवश्यकता समझी। वह यह नहीं चाहता था कि उसके सैनिक काबुल की जनता को लूटें और सताएं। अतएव उसने उन्हें इस संबंध में सचेत किया और आदेश भी दिए। इसके बावजूद भी खुसरो शाह के सैनिकों ने अनेक लोगों को लूटा और सताया। उन्हें वश में करने के लिए बाबर ने सईदीन अली, जो कि हज़ारा जाति का सरदार था, के साथियों में से एक को, जबरदस्ती तेल के घड़े को छीनने के अभियोग पर मौत के घाट उतार दिया। इसके इस कठोर व्यवहार को देख कर अन्य लोग सहम गए और उन्होंने लूट मार करना बन्द कर दिया।[4]

काबुल के निकट पहुँच कर बाबर ने आक्रमण करने की योजना बनाई। योजना बनाते समय उसने अपने अमीरों से परामर्श भी लिया। सैय्यद युसुफ तथा उसके कुछ साथियों ने उसे सुझाव दिया कि शरद् ऋतु लमग़ान में रहकर व्यतीत करले और समय आने पर वह वहीं से काबुल के ऊपर आक्रमण करे। किन्तु बाक़ी चाग़नियानी ने उनकी बात का खण्डन करते हुए बाबर को तुरन्त काबुल पर आक्रमण करने का सुझाव दिया। उसने दो बातें कहीं, एक यह कि यदि इसी समय काबुल पर आक्रमण कर दिया गया तो मुक़ीम बेग को इतना समय न मिल सकेगा कि वह दुर्ग की रक्षा की व्यवस्था कर सके। दूसरे, यदि आक्रमण करने में देर की गई तो सम्भव है कि कबीलों के विभिन्न सरदार अपने स्वार्थ को सीधा करने के लिए शिविर

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १९६।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १९६-७।
३. काबुल के पश्चिम में १२ या १५ मील दूर स्थित।
४. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १९६।

में गड़बड़ी न पैदा कर दें या कहीं विद्रोह न कर बैठें। बाबर ने बाक़ी चग-नियानी के सुझाव को मान लिया और वह आक सराय नामक चरागाह से चल कर आबा कुरुक में उतरा।[1]

आबा कुरुक में बाबर के पास उसकी माँ तथा सैनिकों के वे परिवार जिन्हें कि अज़र में पीछे छोड़ दिया गया था, शीरीम तग़ाई के साथ आ गए।[2] आबा कुरुक से बाबर आगे बढ़ा और उसने चालाक नामक चरागाह में पड़ाव डाला। यहाँ यह निश्चय किया गया कि काबुल का अवरोध किया जाय। अतएव दूसरे दिन आगे बढ़कर काबुल को घेर लिया गया और सेना को विभिन्न भागों में विभाजित कर अवरोध को सफल बनाने का प्रयास किया गया। सेना के मुख्य भाग को साथ लेकर बाबर ने कुले बायज़ीद के मकबरे और हैदर तक़ी के उद्यान के बीच में स्थान लिया, जहांगीर मिर्ज़ा ने सेना के दाहिने भाग का नेतृत्व करते हुए चारबाग़ में मोर्चा स्थापित किया, नासिर मिर्ज़ा ने सेना के बाएँ भाग का नेतृत्व सभाँला कुतुलुग़ कदम के मकबरे के पास चरागाह में मोर्चा स्थापित किया। अपनी सेनाओं को ठीक करके बाबर ने मुक़ीम बेग के पास दूत भेज कर यह कहलवाया कि वह दुर्ग को समर्पित कर दे। कुछ समय तक उसने कोई भी उत्तर न दिया और टाल मटोल करता रहा। उसे आशा थी कि उसका पिता उसके सहायतार्थ सैनिक को अवश्य भेजेगा। जब उसने देखा कि किसी ओर से सहायता नहीं आ पा रही है, तो उसने दुर्ग को समर्पित कर दिया। मुक़ीम बेग और उसके परिवार को सुरक्षित कन्धार पहुँचवा दिया गया। इस प्रकार रबीउल-आखिर ९१० हि० : अक्टूबर-नवम्बर १५०४ ई० के अन्तिम दस दिनों में बिना किसी युद्ध के काबुल, ग़जनी तथा उसके अधीनस्थ सभी स्थान बाबर के हाथों में आ गए।[3]

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १९७।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० १९७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ११।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, १९८-९९; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२८; अहसान-उत-त्तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ३६-३७; हबीब उस सियर, भाग, ३ खण्ड, ३, पृ० ३१०; "नफ़ायसुल-माआसीर", रिजवी,

काबुल का राज्य, उत्तर में हिन्दुकुश की पहाड़ियों से लेकर पश्चिम में खुरासान की सीमाओं तक, पूर्व में आब-ए-इस्तादह के मैदानों तक और दक्षिण में चग़नसराय तक फैला हुआ था। इसका क्षेत्रफल बहुत अधिक था तथा इसकी भौगोलिक दशा एक सी न थी। बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में काबुल की जलवायु, ऊपजाऊ प्रदेश, पहाड़ी क्षेत्र, घाटियों, वहाँ की उत्पादित वस्तुएं, पेड़, पौदों, व्यापार, आय के विभिन्न साधनों, लोगों के आचार-विचार, रहन-सहन के विषय में विस्तार से चर्चा की।[1] काबुल के महत्व को भली भांति बाबर जानता था। काबुल के शासक के रूप में वह पश्चिम में समरकन्द की ओर और पूर्व में हिन्दुस्तान की ओर सरलतापूर्वक बढ़ सकता था अथवा उजबेगों से अपनी रक्षा कर सकता था।

काबुल के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् उसने सर्वप्रथम अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने तथा शासन को संभालने का प्रयास किया। अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाने के लिए उसके लिए यह आवश्यक था कि वह अपने अमीरों व सैनिकों को सन्तुष्ट रखे, जिन्होंने काबुल को जीतने में उसकी सहायता की थी। उसने काबुल के राज्य को अपने भाइयों तथा अतिथि बेगों (मेहमान-ए-बेगलार) के मध्य बाँट दिया, ताकि प्रशासन अच्छी तरह से हो सके और उसका प्रभुत्व भी बना रहे। ग़जनी व उसके आधीनस्थ प्रदेश जहांगीर मिर्जा को दिए गए, नासिर मिर्जा को निन्गनहर, मन्द्रावार, नूरघाटी, कुनार-नूरगल और चिग़नसराय दिए गए। अपने बेगों को उसने गांव जागीर में दिए। काबुल तथा उसके आधीन जो प्रदेश थे, उन्हें बाबर ने अपने हाथों

"मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ३४४; गुलबदनबेगम, "हुमायूं नामा", (अनु०) पृ० ८६, हाजी-उद-दबीर के अनुसार काबुल पहुंच कर बाबर ने मुक़ीम से उसे शरण लेने के लिए कहा। मुक़ीम उसे शरण देने पर तैयार हो गया और उसने उससे एक समझौता किया। मुक़ीम तदुपरान्त कन्धार चला गया और बाबर ने दुर्ग में प्रवेश कर उसे अपने अधिकार में ले लिया।—'एन अरेबिक हिस्ट्री आफ गुजरात;" तारीखे-ए-सिन्ध, पृ० ६६; तारीख-ए-रशीदी-(अनु०), पृ० २०१; फिरिश्ता "तारीखे-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २४।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० १९९-२२७।

में ही रखा। काबुल राज्य को प्रशासनिक सुविधा के लिए बाँटते हुए तथा जागीरें प्रदान करते हुए और काबुल के सीमित साधनों को देखते हुए बाबर ने किसी सिद्धान्त का पालन न किया। न तो उसने सब को बराबर-बराबर बाँटने वाले सिद्धान्त को अपनाया और न ही उसने अमीरों की कार्यकुशलता, उनकी सेवाओं तथा एक लम्बी अवधि से उसकी सेवा में होने का ही ध्यान रखा। दोनों में से किसी एक सिद्धान्त को अपनाना इस समय कठिन था। यदि वह पहले सिद्धान्त को अपनाता तो केन्द्रीय शासन कमज़ोर हो जाता और राज्य के विभिन्न भागों में उसके उमराव स्वतंत्रता घोषित करने से पीछे नहीं हटते। दूसरे सिद्धान्त को इसलिए नहीं अपनाया जा सकता था क्योंकि ऐसे अमीरों की संख्या जिहोंने बाबर की सेवा बहुत दिनों से की, बहुत अधिक थी तथा उनमें से सभी अमीरों की स्वामी-भक्ति पर विश्वास भी न किया जा सकता था। तीसरे, काबुल के साधन सीमित थे और ऐसी स्थिति में प्रत्येक उमराव, चाहे वह मुग़ल हो अथवा तुर्क अथवा ईरानी या तूरानी, को सन्तुष्ट रखना दुष्कर कार्य था। हां, इस अवसर पर बाबर से एक भूल अवश्य हुई कि उसने अपने पुराने सेवकों तथा अन्दीज़ान के अमीरों का समृद्धशाली एवं उपजाऊ प्रदेश दिए और उनसे निम्न श्रेणी के बेगों को कम आय वाले या बंजर प्रदेश या छोटे छोटे गांव जागीर में दे दिए। प्रशासन के क्षेत्र में वह अब भी एक अनाड़ी था, और उसे तनिक भी प्रशासन के बारे में अनुभव न था, अतएव अन्दीजान उमराव वर्ग के साथ पक्षपात कर दूसरे वर्गों को उसने आलोचना करने का अवसर दिया।[1] हमें यह स्वीकार करना

---

१. बाबर ने स्वयं लिखा है, "केवल इसी अवसर पर मैंने अतिथि-बेगों तथा अपरिचित बेगों के प्रति प्राचीन सेवकों तथा अन्दीजान के निवासियों की अपेक्षा अधिक कृपा दृष्टि नहीं प्रदर्शित की, अपितु मैं सर्वदा से ही, जब परमेश्वर मेरे प्रति दया प्रदर्शित करता था, इसी प्रकार से व्यवहार करता आया हूं। यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस पर भी लोग निरन्तर मेरी इस प्रकार कटु आलोचना करते रहते हैं मानो मैं प्राचीन सेवक तथा अन्दीजान निवासियों के अतिरिक्त किसी के प्रति कोई कृपा-दृष्टि प्रदर्शित नहीं करता" —बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ३२-३३।

पड़ेगा कि जागीरों को बाँटते समय उसने तनिक भी सतर्कता से काम न लिया।

विभिन्न कबीलों एवं जातियों को सन्तुष्ट करने का कार्य भी कठिन था। अब तक न जाने कितने कबीले तथा जत्थे समरकन्द, हिसार तथा कुन्दूज से काबुल आ चुके थे। शैबानी खान की सामरिक कार्यवाहियों तथा उज़बेगों के क्रूर व्यवहार में तंग आकर वे अपने-अपने घरों से चलकर काबुल आए, जहाँ कि वे शान्तिपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करना चाहते थे। किन्तु इन कबीलों व जत्थों के आने से बाबर के सामने नई-नई समस्याएं उत्पन्न हो गई और उसकी स्थित डांवाडोल होने लगी। काबुल के सीमित साधनों, कबीलों और जत्थों की लूट मार करने की आदत, तथा स्थानीय जनता के स्वभाव को देखते हुए बाबर के लिए इन कबीलों या जत्थों को काबुल में स्थान देना कठिन हो गया। उसने उन्हें सन्तुष्ट रखने के लिए कई प्रयास किए, किन्तु फिर भी वह उन्हें सन्तुष्ट न रख सका। काबुल में न इस समय इतना धन था और न इतनी खाद्य सामग्री कि उन्हें बैठाकर खिलाया सके।[1] अतएव बाबर ने उनकी शक्ति का प्रयोग करने का विचार किया ताकि वे निरन्तर अभियानों में व्यस्त रहें, अपना जीविकोपार्जन करते रहें और विद्रोह करने की बात उनके मस्तिष्क से दूर रहे।

इन कबीलों तथा जत्थों के परिवार वालों के लिए खाद्य सामग्री प्राप्त करने के लिए बाबर ने आदेश दिया कि काबुल तथा ग़जनी के आधीनस्थ स्थानों से ३०,००० खरवार अनाज वसूल कर लिया जाय। मालगुज़ारी की यह दर उन प्रदेशों के उत्पादन को देखते हुए अत्यधिक थी, अतएव लोगों ने भुगतान करने से इन्कार कर दिया। लगभग इसी समय उसने सुल्तान मसऊदी हज़ारा से कर के रूप में भारी संख्या में घोड़ों तथा भेड़ों की माँग की। उन्हें वसूल करने के लिए आदमी भेजे गए। किन्तु सुल्तान मसऊदी हज़ारा ने कर देने से इंकार कर दिया तथा विद्रोह कर दिया। बाबर को जैसे ही उसके विद्रोह की सूचना मिली वह उसके विद्रोह को दबाने के लिए चल पड़ा। मैदान मार्ग की यात्रा करते हुए उसने निर्ख दर्रे को पार किया और दूसरे

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २७-२८; रिजवी, "मुगलकालीन भारत", (बाबर), पृ० ३३।

दिन प्रातः जलतू के समीप वह हज़ारा जाति पर टूट पड़ा। इस अभियान में बाबर को विशेष सफलता प्राप्त न हुई और वह काबुल की ओर वापस लौट पड़ा।[1] संगे जुरुख पहुंच कर उसने जहांगीर मिर्ज़ा को ग़ज़नी जाने की अनुमति दे दी। जब वह काबुल पहुंचा तो उसकी भेंट दरया खां के पुत्र यार हुसेन, जो कि भीरा से उसके पास आया था, से हुई। यार हुसेन ने उससे हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का निवेदन किया।[2]

हिन्दुस्तान की ओर बढ़ने से पूर्व बाबर ने उस देश के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी प्राप्त कर ली और अपनी सैनिक तैयारियाँ पूर्ण कर शाबान ९१० हि०। जनवरी, १५०५ ई० में उसने काबुल से हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान किया।[3] कुछ इतिहासकार इस अभियान को हिन्दुस्तान पर बाबर का प्रथम आक्रमण मानते हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि हिन्दुस्तान पर किए गए आक्रमणों की शृंखला में यह अभियान भी उनमें से एक था। बादाम चश्मा तथा जगदालिक के मार्ग से होते हुए बाबर अदीनापुर पहुँचा। हिन्दुस्तान में प्रवेश करते ही उसे एक दूसरा संसार दृष्टिगत हुआ।[4] इस देश की जलवायु, यहाँ के लोगों के रहन-सहन, वेष-भूषा, पेड़-पौदों, पशु-पक्षियों को देखकर बाबर को आश्चर्य हुआ। अदीनापुर में नासिर मिर्ज़ा उससे आकर मिला। कुछ समय तक बाबर अदीनापुर में ही रुका रहा। जो कबीले पीछे रह गए थे उनके आने पर ही वह आगे बढ़ा। जुए शाही को पार करते हुए उसने कुश-गुम्बज़ में पड़ाव डाला। इस स्थान तक नासिर मिर्ज़ा उसके साथ आया। उसने नासिर मिर्ज़ा के कहने पर उसे वहीं ठहरने की और कुछ दिनों उपरान्त उसके पास आने की प्रार्थना को स्वीकार कर लिया और स्वयं कुश-

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२८-२९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३३।
२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३३-३४।
३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४।
४. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४।

गुम्बज़ से चलकर गरम चश्म पर पहुँचा । यहाँ से गगियानी अफगनों के सरदार की सहायता से बाबर ने खैबर दर्रे को पार किया और जामरूद पहुँचा। जामरूद में उसने अपने अमीरों से आगे बढ़ने के विषय में राय ली कि सिन्ध नदी को पार करे अथवा फिर अन्य किसी स्थान की ओर प्रस्थान करे। बाक़ी चाग़नियानी ने कोहट की ओर बढ़ने तथा वहां के धनी कबीलों जातियों को लूटने का सुझाव दिया । इस प्रकार सिंध नदी को पार कर हिन्दुस्तान की ओर बढ़ने की ओर चल पड़ा । बारा नदी को पार करने के पश्चात् मुहम्मद नामक पर्वत को पार करते हुए उसने एक दर्रे के समीप पड़ाव डाला। उसने ग़गियानी अफ़ग़ान मार्ग दर्शकों की सहायता से दूसरे दिन कोहट पर धावा बोल दिया और अनेक मवेशी और भैंसें वहाँ के लोगों से छीन ली तथा अनेक अफ़गानों को बन्दी बना लिया ।[1] कोहट से बाबर ने अपने लोगों को सिंध नदी तक के प्रदेश की जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा। बाबर ने अपने उमराव से पुनः आगे बढ़ने अथवा किस ओर बढ़ना चाहिए के विषय में विचार-विमर्श किया । उनकी इच्छानुसार उसने बंगश तथा बन्नू के आस-पास के अफ़ग़ानों पर आक्रमण करने का निश्चय किया।[2] इसी समय दरिया खां का पुत्र यार हुसन पुनः उसकी सेवा में उपस्थित हुआ और उससे निवेदन किया कि दिलज़ाक, यूसुफ़ ज़ाई, तथा ग़गियानी कबीले वालों को फ़रमान लिख दिए जायँ, ताकि जब वह सिंध के उस पार आवे तो वे उसका विरोध न करें। बाबर ने इस आशय से उसे फरमान देकर कोहट से विदा किया ।[3]

कोहट से चलकर बाबर हंगू के मार्ग से ऊपर की ओर बंगश के लिए रवाना हुआ । कोहट तथा हंगू के मार्ग के बीच में एक घाटी है। उसके दोनों ओर पर्वत हैं। जब बाबर इस घाटी में घुसा तो आस-पास के अफ़ग़ानों

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २२९; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४-३५ ।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२९-३०; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३५ ।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० २३१; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ३५ ।

ने उस पर एकायक आक्रमण कर दिया। बावर ने उनका सामना किया और उन्हें चारों ओर से घेर कर अनेकों की संख्या में उसने अफ़ग़ानों को मौत के घाट उतार दिया, ताकि वे भयभीत हो जायें।[1] हंगू पहुँच कर भी बावर ने यही किया। हंगू से चलकर वंगश के नीचे तील नामक स्थान पर जब तक वह पहुंचा तब तक उसके साथी-सैनिक काफ़ी थक चुके थे और इस यात्रा में बहुत से जानवर, जो कि उन्होंने लूट में प्राप्त किए थे, मार्ग में छूट गए थे। बन्नू तथा ईसा खेल प्रदेश में प्रवेश करते ही बावर ने कूरम, कीवी, सूर, ईसा, खेल, तथा नियाज़ी अफ़ग़ानों पर आक्रमण भी किए और लूटमार की।[2] तदुपरान्त बावर ने कावुल वापस लौटने का निश्चय किया।

दश्त से दक्षिण की ओर प्रस्थान करते हुए और मेहतर सुलेमान पर्वत के आंचल में होते हुए बावर सिन्ध नदी पर स्थित बीलह नामक छोटे कस्बे में, जो कि मुलतान के आधीनस्थ था; पहुंचा। सिन्ध नदी को पार कर बावर पीर कानू की मजार के सामने पहुंचा और वहाँ से दूकी के चूतीयाली नामक गाँव में। इस गाँव में उसने बोझ वाला सामान छोड़ दिया। कारण यह कि वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो चुकी थी और वह कावुल शीघ्र से शीघ्र पहुंचना चाहता था। दूकी से चलकर अभी उसने कुछ ही रास्ता तय किया था कि जहांगीर मिर्ज़ा ने बावर के पास आकर यह बताया कि बाक़ी चग़नियानी राजनीति में सक्रिय भाग लेने का स्वप्न देख रहा है, और यह चाहता है कि जैसे ही सम्राट् सिंध नदी को पार कर ले, वैसे ही उसे कावुल के सिंहासन पर बिठला दे।[3] यह सुनकर बावर ने उसकी योजनाओं को विफल बनाने का दृढ़

---

१ बावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २३१; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत," पृ० ३५।

२. बावर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० २३१; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत", (बावर); पृ० ३७-३८।

३. "कुछ पड़ावों को पार कर लेने के उपरान्त जहाँगीर मिर्ज़ा ने मेरे कान में आकर कहा, "मैं एक बात एकान्त में कहना चाहता हूं।" उसने ऐकान्त में निवेदन किया कि बाकी चग़नियानी ने मुझसे आकर कहा है कि बादशाह को ७-८ व्यक्तियों के साथ सिंध नदी के उस पार चले जाने दो और स्वयं बादशाह बन जाओ।" मैंने उससे पूछा, "कौन-कौन और उससे परामर्श करते

संकल्प किया। आबे इस्तादह को पार करते हुए बड़ी कठिनाइयों से वह ग़ज़नी पहुंचा, जहां जहांगीर मिर्ज़ा ने उसका स्वागत तथा आतिथ्य-सत्कार किया। उसके बाद वहां से चलकर वह मई १५०५ ई० में काबुल पहुंचा।

बाबर के इस अभियान का क्षेत्र बहुत ही कम था। उसने चार महीने काबुल से लेकर कोहट तथा दुकी तक के प्रदेश में व्यतीत किए। प्रारम्भ में उसे अफ़ग़ानों को लूटने, उनकी भेड़ें व मवेशी छीनने तथा खाद्य सामग्री प्राप्त करने में सफलता अवश्य मिली, किन्तु जैसे ही वह सिंध से लेकर आबे इस्तादह तक फैले हुए प्रदेशों में घुसा, उसे सब कुछ खो देना पड़ा तथा अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अन्त में बाक़ी चग़ानियानी के विश्वासघात करने की सूचना पाकर उसे काबुल लौटना पड़ा। कुछ भी हो, इस अभियान से बाबर को यह लाभ हुआ कि चार महीनों तक वह उन कबायली जातियों को, जो कि मध्य-एशिया से काबुल आई थी, अभियानों में व्यस्त रख सका और उसने उन्हें विद्रोह करने का अवसर न दिया। दूसरे, हिन्दुस्तान के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों की भौगोलिक दशा का उसे ज्ञान प्राप्त हो गया और साथ ही साथ यह भी पता चल गया कि अफ़ग़ान जातियों में न तो किसी प्रकार की एकता ही है और न वे सब मिल कर संयुक्त मोर्चा ही प्रस्तुत कर सकती हैं।

काबुल पहुंचने पर बाबर को अपने छोटे भाई नासिर मिर्ज़ा के गतिविधियों एवं व्यवहार के बारे में सूचना मिली। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि कुश गुम्बज़ में उसने बाबर से पीछे ठहरने की तथा अपने सहायकों को एकत्र कर उससे मिलने की अनुमति ले ली थी। परन्तु अपने आदमियों

हुए सुने गये हैं?" उसने उत्तर दिया, "इस समय तो मुझसे बाकी बेग ने कहा है। अन्य लोगों के विषय में मुझे कोई ज्ञान नहीं।" मैंने कहा, "पता लगाओ कि अन्य कौन लोग इसमें सम्मिलित हैं?" सम्भवतः सैयद हुसेन अकबर या खुसरो शाह के बेग एवं जवान इसमें सम्मिलित हों।"—बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २३६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४१,

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २३६-४१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ४१-४२।

को एकत्र करने के पश्चात् वह बाबर से न मिला और उन्हीं आदमियों को लेकर वह हिन्दूकुश की पहाड़ियों की ओर चल दिया। उसने अपने सेनापति फ़ज़ली को नूर घाटी पर आक्रमण करने के लिए भेजा किन्तु उस घाटी के निवासियों ने उसे मार कर भगा दिया। नासिर मिर्ज़ा को जब इस अभियान में सफलता प्राप्त न हुई तो उसे पश्चाताप हुआ और वह घबराया भी कि कहीं बाबर उसे इसके लिए दण्ड न दे। अतएव उसने बाबर से दूर ही रहना पसन्द किया। इसी समय बदख्शां के लोगों ने उजबेगों के विरुद्ध विद्रोह कर दिया और नासिर मिर्ज़ा को वहाँ आने के लिए बुलाया। नासिर मिर्ज़ा वहां पहुचा तो उसने मैदान में खुसरो शाह को, जो कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा के दरबार से भाग कर आया था देखा। नासिर मिर्ज़ा ने उसके साथ समझौता कर लिया। उसने यह सोचा कि अपने लक्ष्य को प्राप्त कर बदख्शां के लोगों की सहायता से वह उसे ठिकाने लगा देगा। किन्तु जब बदख्शां के लोगों को इस समझौते के विषय में पता लगा तो उन्होंने खुसरो शाह का स्वागत करने से इन्कार कर दिया। अन्त में बदख्शां के लोगों के साथ मिलकर नासिर मिर्ज़ा ने एक चाल चली। नासिर मिर्ज़ा बदख्शां से लौट गया और उसने इश्किमिश में पड़ाव डाला तथा अपनी सेना को तैयार किया। खुसरो शाह भी वहाँ पीछे-पीछे पहुचा। नासिर मिर्ज़ा युद्ध करने के लिए तैयार हो गया। खुसरो शाह घबड़ा गया। उसने अपने अव्यवस्थित जनसमूह को अपने साथ लिया और कुन्दुज़ के दुर्ग को जीतने के लिए चल पड़ा। खुसरो शाह के आने की सूचना पाकर कुन्दुज़ के दुर्ग के सेनाध्यक्ष कम्बर-बी, ने हिसार के दुर्ग के सेनाध्यक्ष हमज़ा सुलतान से सहायता माँगी। दोनों ने आगे बढ़कर खुसरो शाह पर आक्रमण कर उसे बन्दी बना लिया और उसे शीघ्र ही मौत के घाट उतार दिया।[1] इसी बीच नासिर मिर्ज़ा बदख्शां पहुंचा, जहाँ कि मुहम्मद कोरशी तथा मुबारक शाह ने उसका स्वागत किया और उसे ९११ हि० : १५०५ ई० में गद्दी पर बिठा दिया। अगले वर्ष ही ग्रीष्म ऋतु में शैबानी खां ने बल्ख के ऊपर आक्रमण किया और ३०००-४००० सैनिकों को बदख्शां की ओर लूटमार करने के लिए भेजा। नासिर मिर्ज़ा उनका

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २४२; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४३-४४।

सामना करने के लिए आगे बढ़ा और किश्म के निकट उसने उज़बेगों को हरा कर भगा दिया। इस सफलता के बावजूद भी वह अपना प्रभुत्व बदख्शां पर न बनाए रख सका। बदख्शानी अमीरों ने उसके विरुद्ध विद्रोह कर दिया और वह भाग कर काबुल पहुंचा।[1]

जून १५०५ ई० में बाबर ने कन्धार पर आक्रमण करने की योजना बनाई। किन्तु अपनी माता कुतुलुग़ निगार ख़ानूम की मृत्यु, अपनी बीमारी के कारण तथा एकायक काबुल में भूकम्प आ जाने से, वह अपनी इस योजना को कार्यान्वित न कर सका। काबुल के दुर्ग की दीवारों की मरम्मत करने तथा लोगों के दुःख को दूर करने के पश्चात् बाबर ने अपने अमीरों से पुनः परामर्श लिया कि किस ओर बढ़ना चाहिए। जहांगीर मिर्ज़ा और बाक़ी चग़नियानी ने कलात की ओर बढ़ने पर बल दिया और इस प्रकार कन्धार पर आक्रमण करने का विचार पुनः बाबर ने त्याग दिया।[2] क़लात पहुँच कर बाबर ने दुर्ग पर आक्रमण किया। मुक़ीम बेग अरग़ून के अनुचरों, फ़र्रुख़ अरग़ून तथा क़रा बलूत ने कुछ समय तक तो कलात के दुर्ग की रक्षा की किन्तु अधिक समय तक आक्रमणकारियों का सामना न कर सकने पर उन्होंने दुर्ग को समर्पित कर बाबर की आधीनता स्वीकार कर ली।[3] बाबर ने दुर्ग को अपने हाथों में ले लिया। बाबर ने क़लात के दुर्ग को जहांगीर मिर्ज़ा के हाथों में सौंपना चाहा पर उसने लेने से इन्कार कर दिया। बाक़ी चग़नियानी ने भी ऐसा ही किया। अतएव क़लात की विजय बेकार सिद्ध हुई। तत्पश्चात् बाबर ने क़लात के दक्षिण में स्थित सवांसग तथा अलाताग़ में रहने वाले अफ़ग़ानों पर छापे मारे और उसके बाद काबुल लौट गया।[4]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४६, २४७; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १६८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २५।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ४६-४७।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २४६।

४. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २४६, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ४८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन

क़लात के दुर्ग को लेने से इन्कार कर बाक़ी चग़नियानी ने अशिष्टता दिखाई। इस घटना से बाबर दुखित हुआ, चूंकि अब तक वह बाक़ी चगिनियानी पर विश्वास करता आया था। बाबर यह स्वीकार करता है कि केवल उसी के कारण वह खुसरो शाह के सैनिकों को अपने पक्ष में कर सका, काबुल को जीत सका और उसी के कहने के अनुसार वह चलता रहा, किन्तु साथ ही साथ वह उसके चरित्र की आलोचना करते हुए लिखता है कि "इसके बावजूद उसने मेरी उचित सेवा न की और न मेरे प्रति उचित शिष्टता ही प्रदर्शित की। इसके विपरीत वह अशिष्ट एवं निंद्य कर्म करता रहा। वह कृपण, दुष्ट, अशिष्ट, ईर्ष्यालु एवं चिड़चिड़ा था।"[1] फिर भी वह बाबर का कृपापात्र बना रहा और बाबर उसी की सेवाओं पर निर्भर रहा। धीरे-धीरे बाक़ी चग़नियानी का प्रभाव बढ़ने लगा और यहाँ तक कि उसने अपने द्वार के सामने नक्कारा बजवाना प्रारम्भ किया। "वह न किसी का मित्र था और न किसी का सम्मान करता था। काबुल में जो कुछ भी कर प्राप्त होता है, वह तमग़ा द्वारा प्राप्त होता है। तमग़े की पूरी आय उसके अधिकार में थी। इसके साथ-साथ उसे काबुल, पंजहीर, गदाई हज़ारा तथा कुशकूल के दरोग़ा का पद तथा द्वार के नियंत्रण का अधिकार भी प्राप्त था। इतनी रियासतों के बावजूद भी वह सन्तुष्ट न था और नाना प्रकार की अनुचित योजनाएं बनाया करता था।" इस समय तक बाबर उससे तंग आ चुका था अतः जब उसने पुनः अपना त्याग-पत्र दिया तो बाबर ने उसे स्वीकार कर लिया और उसे परिवार सहित हिन्दुस्तान जाने की अनुमति दे दी।[2] मार्ग में हसन अब्दाल के निकट कचकोट में, बाकी चग़नियानी दरिया खान के पुत्र यार हुसैन के हाथों में पड़ गया। उसने बाकी का सारा सामान छीन

"बाबर इन इण्डिया," भाग २, पृ० २५; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २२८।

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५०; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ४६।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५०; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ४६।

लिया और उसे तथा उसकी पत्नी को मौत के घाट उतार दिया।[1]

बाबर तुर्कमान हज़ाराओं के विरुद्ध शाबान ९११ हि० । फ़रवरी १५०६ ई० में बढ़ा। इन तुर्कमान हज़ारा अफ़ग़ानों ने काबुल से लेकर पंजाब तक की सड़कों को लूट मार कर असुरक्षित बना दिया था। बाबर ने जंगलिक के निकट उन पर आक्रमण किया और उनसे अनेक मवेशी छीन लिए। काबुल लौटते समय उसने आई-तूग़दी, जो कि बारान के नीचे स्थित है, नामक स्थान से निज्र-अऊ के कर वसूल करने का विचार किया। वह उस ओर बढ़ा और उसने कर वसूल किया। इस अभियान में भी बाबर को पूर्ण सफलता प्राप्त हुई।[2] किन्तु अभियान से लौटते समय ७ फरवरी, १५०६ ई० को उसे नितम्ब-सम्बन्धी घोर पीड़ा हुई और चालीस दिनों तक वह बिस्तर पर पड़ा रहा। बड़ी कठिनाई से वह काबुल पहुँचा।[3]

अभी वह पूर्णतः स्वस्थ भी न हो पाया था कि जहाँगीर मिर्ज़ा ने अय्यूब के पुत्र युसुफ़ तथा बहलोल से मिल कर उसके विरुद्ध षड्यन्त्र करना प्रारम्भ कर दिया। जहाँगीर मिर्ज़ा ने विद्रोह क्यों किया यह कहना कठिन है। जो जागीरें उसे प्रदान की गई थीं उनसे वह असंन्तुष्ट था। सम्भवतः इसी कारण उसने विद्रोह किया। अपने साथियों के साथ वह काबुल से भाग खड़ा हुआ। नानी के दुर्ग पर उसने आक्रमण किया और उसे अधिकृत कर उसने आस-पास के प्रदेशों को लूटना प्रारम्भ कर दिया। इस समय तक जहाँगीर मिर्ज़ा पूर्णरूप से व्यभिचारी, शराबी और अपव्ययी व्यक्ति हो गया था। अपने अशिष्ट व्यवहार की तनिक भी चिन्ता न करते हुए उसने हज़ारा अफ़ग़ानों के देश को पार किया और बनियान की ओर मुग़ल कबीलों से मिलने चल दिया।[4] वह यह चाहता था कि मुग़ल उसकी सहायता करें। उसकी कार्य-

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५०, ५३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ४६-५२।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५२।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५४; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ५२।

४. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २५४-५५।

घाहियों को देखकर वावर चिन्तित हुआ क्योंकि वह भलीभांति जानता था कि मुग़ल उसका साथ देकर केवल अपने ही स्वार्थ को सिद्ध करने की ही चेष्टा करेंगे। अभी वह जहाँगीर मिर्ज़ा के विद्रोह को दवाने की वात सोच ही रहा था कि मध्य एशियाई राजनीति तथा खुरासान के राज्य में होने वाली कुछ राजनैतिक घटनाओं ने, जिसकी प्रतीक्षा वह वहुत दिनों से कर रहा था, उसका ध्यान आकृष्ट किया।

अनिश्चित एवं चिन्ता के उन क्षणों में खुरासान के शासक सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा वैक़रा का राजदूत सैय्यद अफज़ल, जो कि सैय्यद अली ख्वाव वीन का पुत्र था, वावर के पास उसका निमन्त्रण लेकर आया कि शैवानी खान के विरुद्ध आयोजित अभियान में वह भाग ले।[1] इस समय सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा वैक़रा ने अपने सभी पुत्रों को तथा तैमूर के वंशजों को शैवानी खान के विरुद्ध संयुक्त आक्रमण करने के लिए निमंत्रित किया था।[2] वास्तव में तैमूरियों व उज़वेगों के मध्य शक्ति के लिए यह अन्तिम संघर्ष था। शैवानी खां उनका दुश्मन था। उसने हिसार, कुन्दुज, तथा निकटवर्ती प्रान्तों को ही नहीं वरन्

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग १. पृ० २५५; अकवरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २२६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १६८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २५; नफायसुल-माआसीर के रचयिता के अनुसार सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा वैक़रा के पुत्रों ने हजरत शेखुल इस्लाम शहीद, काजी इख्तियार और अवू सईद वूरामी को वावर के पास उनकी ओर से अनुरोध करने के लिए भेजा कि वह शैवानी खान के विरुद्ध आयोजित अभियान में भाग ले। —नफ़ायसुल-माआसीर, रिजवी, "मुग़लकालीन भारत", (वावर), पृ० ३४५।

२. गुलवदन वेगम के अनुसार इस समय सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा के पास से ज़रूरी पत्र आए जिसमें लिखा था कि मैं उजवेगों के विरुद्ध युद्ध करने की योजना वना रहा हूँ। यह वहुत ही उत्तम होगा कि यदि तुम भी आ जाओ। मेरे पिता ने ईश्वर से आज्ञा ली। और कुछ समय उपरान्त वह मिर्ज़ा से मिलने के लिए चल पड़ा।" —"हुमायूं नामा" (अनु०), पृ० ८६-८७।

दिसम्बर १५०५ ई० में ख्वारिज़म को भी विजित कर लिया था। अब वह खुरासान पर आक्रमण करने की भी तैयारियाँ कर रहा था। उसका साम्राज्य आमू से लेकर सरं तक, कश्ग़र से लेकर अराल की झील तक फैला हुआ था, जिसमें कि बल्ख से लेकर बदख्शां तक के प्रदेश तथा ख्वारिज़म का राज्य भी सम्मिलित था।

अपनी सैनिक तैयारियों को पूर्ण करने के उपरान्त, शैबानी खान खुरासान के राज्य की ओर बढ़ा और उसने बल्खके दुर्ग पर घेरा डाला।[1] इसी आक्रमण ने सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा को इस बात पर विवश कर दिया था कि वह बाबर को तथा अन्य तैमूरी वंशजों को निमंत्रण भेजे। खुरासान के तैमूरी राज्य को हड़पने के लिए शैबानी खान ने अपना मुंह खोल दिया था। अतएव बाबर, जिसे कि अपने खोए हुए पैतृक राज्य को वापस लेने की धुन लगी हुई थी, और जो शैबानी खान के किसी भी शत्रु का साथ देने को तत्पर रहता था, ने सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा के निमंत्रण को स्वीकार कर लिया।[2] इसके अतिरिक्त बाबर के मन में एक बात और थी। खुरासान जाते समय वह जहाँगीर मिर्ज़ा के विद्रोह का दमन करना चाहता था अथवा उसे अपने पक्ष में किसी प्रकार से करके उसके विरुद्ध षड्यन्त्र बनाने से उसे रोकना चाहता था। उसने यह भी सोचा कि इस अवसर का क्यों न लाभ उठाते हुए वह अन्य तैमूरियों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर जहाँगीर मिर्ज़ा की विद्रोही प्रवृत्ति को उनकी सहायता से समाप्त कर दें।[3] इसी विचार से मुहर्रम ६११ हि०: जून, १५०६ ई० में गोरबन्द तथा शिबरतु होते हुए खुरासान की ओर प्रस्थान किया।[4]

---

१. अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २ (अनु०), पृ० ३४।

२. बाबर लिखता है, "जब सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा ने बहुत से आदमियों को तथा अपने पुत्रों को व बेगों को बुलवाया तो ऐसी अवस्था में "यदि कुछ लोग पांव से चल कर गए तो हमें अपने सिर के बल जाना चाहिए था।" —बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५५; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५३।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २६४; तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० १६६, फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २७;

४. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २६५; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३६।

बाबर के आगे बढ़ने की सूचना पाकर जहाँगीर मिर्ज़ा बमियान से भाग कर निकटवर्ती पहाड़ियों में चला गया। यह सोचकर कि कहीं वह पीछे से न आक्रमण कर दे, बाबर ने भारी सामान वली के संरक्षण में उस्तुर-शहर में छोड़ दिया। वहाँ से जोहक, सँगर तथा दन्दान-ए-शिकन दर्रे को पार करता हुआ वह कहमर्द पहुँचा। यहाँ रुककर उसने खाने-पीने का सामान एकत्र किया। सैय्यद अफजल और सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई को उसने सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा के पास उसे यह सूचना देने के लिए भेजा कि वह काबुल से उसकी सहायता के लिए चल दिया है। कहमर्द में रुकने के कारण, ऐमक जाति घबरा गई और उसने जहाँगीर मिर्ज़ा की सहायता न की। इसी समय बाबर को सूचना प्राप्त हुई कि उज़बेग बदख्शां की ओर बढ़ रहे हैं। शाहदान से मुबारक शाह तथा नासिर मिर्ज़ा बढ़े और उन्होंने उज़बेगों के एक दल को हरा दिया। ऐसा प्रतीत होने लगा कि बल्ख से भी वे पीछे हट जावेंगे, क्योंकि उस स्थान पर सुल्ताने कुले नचाक ने उनका जम कर सामना किया। अपने सैनिकों की इस सफलता से प्रोत्साहित होकर सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा हिरात से शैबानी खान को परास्त करने के लिए बढ़ा किन्तु इससे पूर्व कि वह शत्रु से युद्ध करता, बाबा इलाही नामक स्थान पर ५ मई, १५०६ ई० को उसकी मृत्यु हो गई।[1] बाबर को यह सूचनाएँ कहमर्द[2] में ही प्राप्त हुईं। उसके सैनिक अब भी रसद इकट्ठा करने में व्यस्त थे। जब वे गोरी और बानु नामक स्थानों से वापस लौट आए तो उसने खुरासान की ओर बढ़ने का विचार किया।[3]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २९५-९६; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ५४, नफ़ायसुल मआसीर, रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४४।

२. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० २९६; फ़िरिश्ता के अनुसार जब वह मर्व पहुँचा तो उसे सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैकरा की मृत्यु का समाचार मिला—तारीख़-ए-फ़िरिश्ता, (मू० ग्रन्थ), पृ० १९८; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २२९।

३. गुलबदन बेगम के अनुसार जब बाबर-मार्ग ही में था तो "ख़बर आई कि मिर्ज़ा की मृत्यु हो चुकी है। शहंशाह के अमीरों ने कहा कि बेहतर होगा कि हम लोग काबुल वापस लौट चलें, किन्तु उन्होंने कहा, "हम लोग

सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा की मृत्यु का समाचार पाने के बावजूद भी बाबर ने खुरासान जाने के लिए जो निर्णय किया उसके कई कारण थे। यदि इस समय वह काबुल वापस चला जाता तो, जहाँगीर मिर्ज़ा के विद्रोह का दमन न हो पाता और ऐसी स्थिति में वह नासिर मिर्ज़ा तथा अन्य लोगों के साथ मिल कर काबुल में गड़बड़ियाँ उत्पन्न करता। दूसरे खुरासान जाकर वह सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के पुत्रों को साँत्वना देना चाहता था, तथा मध्य एशियाई राजनीति का निकट से अध्ययन करना चाहता था और सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के उत्तराधिकारियों को शैबानी खान से युद्ध करने का परामर्श देना चाहता था। अतएव, अज़र घाटी से होता हुआ, तूप व मन्दगान की ओर बढ़कर और बल्ख नदी को पार कर वह साफ नामक स्थान पर पहुँचा। यहाँ उसे ज्ञात हुआ कि उज़बेग खान और चारयक नामक स्थानों को नष्ट-भ्रष्ट कर रहे हैं तथा खुरासान जाने वाले मार्गों को रोके हुए हैं। बाबर ने क़ासिम बेग के अधीन उनके विरुद्ध एक सेना भेजी। क़ासिम बेग ने उन्हें बुरी तरह पराजित किया और अनेक लोगों को मार कर वह मुख्य सेना से आकर मिल गया।[1] इसी स्थान पर अनेक ऐमक जातियाँ उसकी सेवा में आई तथा जहाँगीर मिर्ज़ा भी उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। बाबर ने सन्तोष की साँस ली और निश्चिन्त होकर वह आगे बढ़ा। गुरबज़ान, अलमार, कैसार, चीचीकतू तथा फखरुद्दीन के उलूम से होते हुए वह आगे बढ़ा। मार्ग में उसे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के पुत्र शैबानी खान के प्रति अपने पिता की नीति को अपनाना चाहते हैं और वे उससे युद्ध करने के लिए तैयार हैं।[2]

इतनी दूर आ ही गए हैं, क्यों न आगे बढ़ कर उन राजकुमारों को सान्त्वना दे दें। अन्त में हम खुरासान की ओर अग्रसर हुए" —"हुमायूं नामा", (अनु०), पृ० ८७; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मु० ग्रन्थ), पृ० १९८; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २५।

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २९६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" बाबर)), पृ० ५६।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २९६।

इस प्रकार समरकन्द को प्राप्त करने की आशा उसे दिखाई दी। जब बाबर बाम घाटी में पहुँचा तो उसे पता चला कि ज़ुलनून बेगके आदमियों ने, ख़ुरासानी सेना की सहायता से उजबेग आक्रमणकारियों को पंजदीह तथा मारुचाक से भगा दिया है[1] और जब वे दश्त-ए-ज़रदक पहुँचे तो ज़ुलनून ने उनका पीछा किया और अनेक को बन्दी बनाया और मार डाला। तदुपरान्त वह वापस लौट गया। कुछ समय पश्चात् शैबानी खान ने मौलाना कौलाह को हिरात भेज कर उसके द्वारा कहलवाया कि यदि शाही राजकुमार अपने पूर्वजों की भांति भी उसके पूर्वजों की तरह सामने आना चाहते हैं तो आवे।" यह सुनकर बन्दी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा आग बबूला हो गया। उसने सोचा कि मौलाना को जान-बूझ कर ख़ुरासान के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए भेजा गया है,अतएव उसने मौलाना को बन्दी बना लिया और अपने अन्य भाइयों को शीघ्र ही हिरात आने के लिए निमंत्रण भेजा।[2] इसके कुछ समय पश्चात् ही बल्ख के गवर्नर सुल्तान किपचक के दूत ने आकर बदी-उज़-ज़मान को सूचना दी कि दुर्ग के अन्दर के लोग भूख से तड़प रहे हैं और थोड़े ही समय में दुर्ग शैबानी खान के हाथों में आ जावेगा। बदी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा और मुजफ्फर हुसैन मिर्ज़ा, जिन्हें कि हिरात का संयुक्त बादशाह बना दिया गया था, मुहम्मद बरन्दूक बारलास, ज़ुलनून बेग अरगून और शाह बेग के साथ बल्ख की रक्षा के हेतु बढ़े। जब वे चैहिल दुख़्तरान नामक स्थान पर पहुँचे तो अब्दुल मुशीम मुहम्मद, जो मर्व से आया था, तथा इब्न हुसैन मुहम्मद, जो कि तून व क़ाईन से आया था, उनके साथ हो लिए। मिर्ज़ाओं ने बाबर के पास खबर भेजी कि वह भी शीघ्र से शीघ्र आकर उनका साथ दे। बाबर को लाने के लिए उन्होंने मुहम्मद बरन्दूक बारलास को भेजा।[3] बाबर मुहम्मद बरन्दूक बारलास के साथ आगे बढ़ा और ५००–६००

---

१. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० २९७।

२. अहसान-उत्त-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ३९-४०।

३. फिरिश्ता के अनुसार यह भेंट जमादी-उल-खैर ९१२ हि० ।२४ सितम्बर, १५०६ ई० को हुई—"तारीख -ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २६।

मील की यात्रा के उपरान्त मुर्ग़ाब नदी के तट पर सोमवार ८ जमादी-उस-सानी, ९११ हि० : २८ अक्टूबर, १५०६ ई०[1] को बाबर ने मिर्ज़ाओं से भेंट की।[2]

मिर्ज़ाओं ने बाबर का स्वागत किया। किन्तु कुछ दिन उनके साथ में रहकर जब उसने उनकी निष्क्रियता को देखा तो उसे क्षोभ हुआ। मुर्ग़ाब के आगे दोनों मिर्ज़ा न बढ़े क्योंकि दोनों को यह भय था कि कहीं उनकी अनुपस्थिति में कुपुक मिर्ज़ा हिरात पर न आक्रमण कर दे।[3] अपने पिता की भांति उन्होंने भी रक्षात्मक नीति अपनाई। कारण यह कि सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा की मृत्यु के पश्चात् खुरासान की राजनीतिक दशा बिगड़ गई। समस्त दरबार विभिन्न गुटों में विभाजित हो गया। राजनीति में अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए अमीर लालायित हो उठे और वे बदी उज्ज़-ज़मान मिर्ज़ा, मुज़फ्फ़र हुसैन तथा कुपुक की छत्र छाया में पनपने लगे। बाह्य आक्रमणकारी का सामना करने के सम्बन्ध में भी राजकुमारों व उनके अमीरों में मतभेद थे। जिस गुट का अमीर ज़ुल्नून नेतृत्व कर रहा था, उसका कहना था कि शैबानी खान पर तुरन्त आक्रमण किया जाय नहीं तो बाद में तैमूरियों को एक पताका के नीचे एकत्र करना कठिन हो जाएगा। किन्तु अमीर मुहम्मद बरन्दूक को यह डर था कि कहीं उनकी अनुपस्थिति में कुपुक मिर्ज़ा हिरात के अमीरों की सहायता से उस पर अपना अधिकार न स्थापित कर दे। अतएव उसने सुझाव दिया कि सबसे पहले हमें हिरात वापस लौट जाना चाहिए, फिर आन्तरिक शत्रुओं को समाप्त करना चाहिए, उसके पश्चात् उज़बेगों के

---

१. फिरिश्ता के अनुसार बदी-उज-ज़मान मिर्ज़ा ने मुजफ्फर हुसेन मिर्ज़ा तथा अबुल हुसैन मिर्ज़ा को बाबर को लाने के लिए भेजा—"तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २६, ।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० २९७; रिज़वी, 'मुग़ल कालीन भारत' (बाबर), पृ० ५७-५८; "तारीख़-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० १९९; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २२९ ।

३. अहसान-उत-तवारीख़, (अनु०) भाग २, पृ० ४० ।

विरुद्ध बढ़ना चाहिए।[1] ऐसी परिस्थिति में एक गुट दूसरे की ओर सन्देह की दृष्टि से देखने लगा। और कोई भी व्यक्ति शैबानी खान से युद्ध करने के लिए तैयार न था। उन्हें डर था कि यदि वे कहीं हार गए तो वे अपने राज्य से हाथ धो बैठेंगे। दोनों गुटों के नेताओं में अभी वादविवाद हो ही रहा था कि कुलै नचाक ने बल्ख के दुर्ग को शैबानी खान के हाथों में दे दिया। इस प्रकार मिर्ज़ा खान-पान में लगे रहे, और बल्ख उनके हाथों से निकल गया। बल्ख को विजित करने के उपरान्त शैबानी खान समरकन्द वापस लौट गया।[2] तूफान निकल गया और खुरासान का राज्य कुछ समय तक के लिए बच गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि रक्षात्मक नीति अपना कर मिर्ज़ाओं ने अपने राज्य को सुरक्षित रखा। यदि बाबर के कहने के अनुसार वे कहीं शैबानी खान पर आक्रमण कर देते तो उस युद्ध के परिणाम बहुत ही भयानक होते।

शैबानी खान के वापस लौटने की सूचना पाते ही, बदी-उज-ज़मान मिर्ज़ा तथा मुज़फ्फर हुसैन मिर्ज़ा भी हिरात वापस लौट गए। वे अपने साथ बाबर को भी ले आए।[3] बाबर लगभग २० दिनों तक हिरात में रहा, जहाँ उसने अपना समय सैर-सपाटे, खाने-पीने, और देश का भ्रमण करने में व्यतीत किया। तत्पश्चात् बहाना बना कर शाबान ७, ९११ हि० : २४ दिसम्बर, १५०६ ई० को वह काबुल

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३००; फिरिश्ता के अनुसार बदीउज्ज़मान मिर्ज़ा ने न केवल बाबर का स्वागत करने के लिए मुज़फ्फर हुसैन और अबुल हुसैन मिर्ज़ा को भेजा वरन् उसके आगमन पर उसे बधाई देने के लिए भी तथा उसे शाही शिविर में लाने के लिए भी। जब बाबर उनके पास पहुँचा तो उसने देखा कि वे उज़बेगों से युद्ध करने के पक्ष में नहीं हैं और उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि चूंकि गर्मी अधिक पड़ रही है अतएव उन्हें शीत स्थान में रहकर अपना कुछ समय वहां व्यतीत करना चाहिए—"तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९।

२. अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ४०,

३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३००; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २२९; गुलबदन बेगम, "हुमांयु नामा", (अनुवाद), पृ० ८८; हसन-ए-रुमुल के अनुसार बाबर हिरात नहीं गया—"अहसान-उत-तवारीख", (अनु०), भाग २, पृ० ४०।

की ओर चल पड़ा।[1] शरद-ऋतु के कारण, उसे मार्ग में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। लौटते समय उसने तुर्कमान हज़ारा जाति पर पुनः आक्रमण किया और काफी लूट मार की। इसी बीच उसे काबुल में होने वाली घटनाओं की सूचना मिली और तुरन्त उसने उस ओर कूच करना प्रारम्भ किया।

तुर्कमान हज़ारा जाति से युद्ध करते समय, जब बाबर को मालूम हुआ कि मुग़लों ने उसकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर विद्रोह कर दिया है, और मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा से मिल कर मिर्ज़ा ख़ान (वएस) को बादशाह घोषित कर दिया है,[2] तब उसे तनिक भी आश्चर्य न हुआ। वह मुग़लों के स्वभाव से भलीभांति परिचित था। पहले भी अनेक बार उन्होंने ऐसा किया था। इस बार भी उसे विश्वास था कि मुल्ला बाबा, ख़लीफा मुहिब अली कूची, अहमद यूसुफ, तथा अहमद क़ासिम विद्रोहियों से दुर्ग की रक्षा करते रहेंगे। और जब मुग़लों ने दुर्ग का अवरोध करना प्रारम्भ किया तो, उन लोगों ने ऐसा ही किया। वे बाबर के आने की प्रतीक्षा करते रहे। तैमूर बेग के लंगर पर पहुँचकर बाबर ने क़ासिम बेग के एक सेवक मुहम्मद अन्दीजानी द्वारा काबुल के बेगों के पास अपने आगमन की और किस प्रकार विद्रोहियों पर आक्रमण किया जाएगा, उस सम्बन्ध में कुछ मुख्य-मुख्य बातों की सूचना भिजवाई।[3] इसी योजना के अनुसार बाबर ने विद्रोहियों पर आक्रमण किया और उनमें से कुछ को बन्दी बना लिया, शेष व्यक्तियों को

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३०७-३१३; "तारीख़-ए-रशीदी" (अनु०) पृ० २००, फिरिश्ता; "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ० २६; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३० ।

२. बाबर नामा, भाग १, पृ० ३१३; गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ० ८८-८९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६९; "तारीख़ ए-रशीदी", पृ० २००; "अकबर नामा', (अनु०) भाग १, पृ० २३० ।

३. इस योजना के सम्बन्ध में देखिए, —बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३१४-१५; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ७०; गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ० ८९; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३०-३१ ।

तितर-बितर कर दिया।[१] उसके पश्चात् वह इस षड्यंत्र के जन्मदाता शाह बेगम से मिलने गया। कावुल के दुर्ग में प्रवेश करने के पश्चात् उसने मुहम्मद हुसैन मिर्ज़ा दोघलत को क्षमा कर दिया और उसे ख़ुरासान जाने की अनुमति दे दी, जहाँ १५०८ ई० में शैवानी खान के आदेशानुसार उसे मौत के घाट उतरवा दिया गया।[२] इसी प्रकार मिर्ज़ा खान को भी उसने कावुल में न रहने दिया तथा कन्धार की ओर भेज दिया।[३]

मिर्ज़ा खान (वएस) के विद्रोह को दवाने के पश्चात् तथा कावुल में शान्ति स्थापित करने के पश्चात् वावर ने वारान, चाशतूपा तथा गुलवाहार नामक स्थानों की सैर की और वहाँ की विद्रोही अफ़ग़ान जातियों को दवाया।[४] लगभग इसी समय जहाँगीर मिर्ज़ा की मृत्यु हुई और नासिर मिर्ज़ा वदख़्शाँ से भाग कर उसके पास आया। वावर ने उसे गज़नी का प्रशासन सौंपा।[५]

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३१६-१७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ७०-७२; "तारीख-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० २००-२०१।

२. अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डियाअण्डर वावर एण्ड हुमायुँ," भाग १, पृ० २५७।

३. वावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३१६-२०, ३२१; तारीख-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २००-२०१; वावर नामा में मिर्ज़ा खान को ख़ुरासान की ओर भेजना लिखा है—देखिए, भाग १, पृ० ३२०; अवुल फ़जल के अनुसार खान मिर्ज़ा कन्धार चला गया; "अकवर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३; गुलवदन के अनुसार वावर ने मिर्ज़ा खान को क्षमा कर दिया। वह उसी प्रकार से अपनी मौसी से मिलने जाता रहा, ताकि उनके हृदय में कोई शिकायत न रहे। वावर ने उन्हें जागीरें दीं—आदि —"हुमायुँ नामा", (अनु०), पृ० ८६; "नफ़ायसुल-मआसीर", रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ३४५।

४. वावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३२१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १६६।

५. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २०२; "नफ़ायसुल-मअसीर," रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (वावर), पृ० ३४६; वावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३२०-२१, ३२२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २७।

इसी बीच खुरासान की राजनैतिक स्थिति में परिवर्तन हुआ। बदी-उज़-ज़मान मिर्जा और मुज़फ्फर मिर्ज़ा के संयुक्त शासन ने गुट बन्दी, आपसी द्वेष, वैमनस्यता को जन्म दिया और दोनों गुटों में शक्ति के लिए खुल्लम-खुल्ला संघर्ष प्रारम्भ हुआ। खुरासान की आन्तरिक दशा को देख कर शैबानी खान के मुंह में पानी भर आया। शिशिर ऋतु के प्रारम्भ में (६१३ हि० : १५०७ ई० में) १५००० सैनिकों के साथ शैबानी खान ने आमू को पार किया। उसने अन्दीखुद को विजित किया और बाबा खाकी की ओर बढ़ा, जहाँ दोनों मिर्ज़ा अपनी सेनाओं को लेकर पड़ाव डाले पड़े हुए थे। आपसी द्वेष एवं वैमनस्य के कारण दोनों मिर्ज़ाओं के लिए शत्रु के विरुद्ध संयुक्त मोर्चा स्थापित करना सम्भव न था। बरन्दूक बारलास व ज़ुलनून बेग की आपसी वैमनस्यता ने उन्हें और भी शक्ति-हीन बना कर रख दिया। मुहम्मद बरन्दूक बारलास जो कि एक बहुत ही कुशल, बुद्धिमान एवं दूरदर्शी व्यक्ति था, ने प्रस्ताव रखा कि उसके स्वामी मुज़फ्फर मिर्ज़ा को हिरात की रक्षा तथा वहीं शत्रु का सामना करने की अनुमति दी जाय और बदी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा तथा ज़ुलनून हिरात की निकटवर्ती पाहाड़ियों में ठहर कर अपनी सहायता के लिए सीस्तान तथा ज़मींदार से सुल्तान अली अरगून, कन्धार से शाह बेग और मुकीम को अपनी सेना तथा निकदारी और हज़ारा सैनिकों को बुला लें। उसने यह कहा कि यदि इतनी बड़ी संख्या में सेना एकत्र हो जाती है तो वे बड़ी सरलतापूर्वक उज़बेगों को घेर कर परेशान कर सकते हैं, उन्हें हिरात को विजय करने से रोक सकते हैं तथा उन्हें पीछे हटने पर बाध्य कर सकते हैं। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि उसकी यह योजना बहुत ही उपयुक्त थी और यदि खुरासानी इसका पालन करते तो उज़बेगों को हार कर पीछे भागना पड़ता। लेकिन ज़ुलनून अरगून जिसे कि बाबर तुच्छ, लालची, निकृष्ट, किसी काम का नहीं, बहुत ही शुष्क तथा एक मूर्ख व्यक्ति कहता है, बरन्दूक से इस बात पर ईर्ष्या रखता था कि हिरात का शासन उसके हाथों में था। बरन्दूक बारलास द्वारा बनाई गयी योजना, जिसके विषय में ऊपर उल्लेख हो चुका है, में ज़ुलनून अरगून उसकी चाल समझता था और वह यह भी समझता था कि बरन्दूक बारलास अपनी स्थिति को सुदृढ़ बनाकर हिरातमें सबसे शक्तिशाली बनना चाहता है। इसके अतिरिक्त ज़ुलनून अरगून इसी भ्रम में पड़ा रहा तथा बरन्-

१. "अहसान-उत्-तवारीख" (अनु०), भाग २, पृ० ४३।

न्दूक वारलास के विरुद्ध कार्य करता रहा तथा निरन्तर चापलूसी करने वालों और अपना स्वार्थ सिद्ध करने वाले ज्योतिषियों के कहने पर चलता रहा। इस प्रकार न तो उसने दुर्ग की रक्षा करने में, न सैनिकों को पंक्तियों में सजाने में, न उन्हें मैदान में उतारने में सहायता की। वह निरन्तर वाबा खाकी में किंकर्त्तव्य मूढ़ होकर बैठा रहा। फलस्वरूप, खुरासानी सेना में गड़बड़ियाँ फैलने लगी और सैनिक तितर-बितर होकर अनुशासन की ओर से मुंह फेरने लगे। जून, १५०७ ई० में शैवानी खान ने मुर्गाब नदी की पार और सर-ए-हैं तक बढ़ा। जब मिर्ज़ाओं को उसके आगे बढ़ने की सूचना मिली, तो वे घबराए। घबराहट में न तो वे अपने सैनिकों को एकत्र कर सके, न जो उनके पास थे, उन्हें युद्धस्थल में खड़ा कर सके और न युद्ध का कोई प्रबन्ध ही कर सके। स्वप्न देखने की उन्हें आदत थी और स्वप्न में ही वे पैरते रहे।[1] थोड़े ही समय में सेना में भगदड़ मच गई और सैनिक भाग खड़े हुए। शैवानी खान ४०,००० से ५०,००० सैनिकों को लेकर बढ़ ही रहा था। वह उन पर आकस्मिक आक्रमण करना चाहता था। यह जानते हुए कि युद्ध का परिणाम क्या होगा, जुलनून अरगून १०० से लेकर ५०० सैनिकों के साथ शैवानी खान का सामना करने के लिए आगे बढ़ा। किन्तु जैसे ही उसके सैनिकों ने शैवानी खान की सेना को देखा वे भाग खड़े हुए। शत्रु ने जुलनून अरगून को बन्दी बना लिया और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिए। बदी-उज़्ज़मान मिर्जा तथा मुजफ्फर मिर्ज़ा ने अपने शिविर उखाड़ लिए और वे हिरात की ओर कायरों की भांति भाग खड़े हुए। भागते समय इख्तियारउद्दीन के दुर्ग में वे अपनी स्त्री व बच्चों व सामान को उज़बेगों की दया पर छोड़ गए। तीन दिनों पश्चात् शैवानी खान इख्तियारउद्दीन के दुर्ग के समीप पहुँचा। उसने दुर्ग को जीत लिया और मिर्ज़ाओं के परिवार को बन्दी बना लिया। तत्पश्चात् वह आगे बढ़ा और उसने हिरात को भी विजय कर लिया। उज़बेगों ने हिरात के लोगों को लूटा। शैवानी खान के बख्शी शाह मन्सूर के हाथों में खादीजा बेगम आ पड़ी; अब्दुल वाहब मुग़ल ने शेखपूरन के परिवार के सदस्यों तथा अनेक लोगों को लूटा, इसी प्रकार अन्य लोगों ने यही कार्य किया। शैवानी खान ने मुजफ्फर मिर्ज़ा की पत्नी खानज़ादा खानम से विवाह किया यद्यपि यह विवाह इस्लामी कानून की दृष्टि से अवैध था। कुछ भी हो, खुरासान राज्य को उसने विजित कर लिया।

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३२७।

अब तक वह काबुल के राज्य के तैमूरी शासक को छोड़कर सभी तैमूरी राज्यों को जीत कर उज़बेग साम्राज्य में मिला चुका था।[1] वास्तव में तैमूरी राज्यों के वैभव के उस युग का अन्त शैबानी खान के हाथों ही हुआ। अब तो केवल अमीर तैमूर गुरखान की महानता, तैमूरी-साम्राज्य की भव्यता, उसका गौरव, उसकी सांस्कृतिक एवं राजनैतिक महानता, जिसके विषय में बाबर को बहुत घमण्ड था, वह सब बात की बात रह गई थी और शेष सब समाप्त हो चुका था।

हिरात को विजय करने के पश्चात् शैबानी खान पुल-ए-सालार आया। वहां से उसने अपनी सेनाएं तैमूर सुल्तान तथा उबैद सुल्तान के अधीन अबुल मुहीन मिर्ज़ा तथा कुपुक मिर्ज़ा के विरुद्ध भेजीं, जो कि बड़े सुख से अपना जीवन मश्हद में व्यतीत कर रहे थे। उज़बेगों ने उन्हें पकड़ा; मौत के घाट उतारा और उनके सिर शैबानी खान के पास भेज दिए। अगले दो-तीन वर्षों तक उज़बेग खुरासान के विभिन्न भागों को रौंदते हुए तथा लूटते रहे।

शैबानी खान की सफलता से निकटवर्ती राज्यों के शासक भी भयभीत हुए। तारतारी रेगिस्तान से लेकर हिन्दुकुश और पैरापनेशियन की पहाड़ियों तक से लेकर खुरासान तक के विशाल साम्राज्य के शासक के रूप में शैबानी खान ज़मींदार तथा कन्धार के प्रान्तों तथा उनके अधीनस्थ प्रदेशों तथा

---

१. बाबर ने शैबानी खान के चरित्र की कटु आलोचना करते हुए लिखा है—"इसका ध्यान न रखते हुए कि वह स्वयं शिक्षित नहीं है, उसने काज़ी इख्तियार तथा मुहम्मद मीर यूसुफ को, जो कि हेरी (हिरात) के दो सुप्रसिद्ध विद्वान थे, उन्हें कुरान की व्याख्यों के बारे में पढ़ाना शुरु किया। उसने अपने हाथ में कलम लेकर मश्हद के मशहूर मुल्ला सुल्तान अली की लेखनी में सुधार किया तथा बिहज़ाद की चित्रकला में ब्रुश लगाया। और जब कुछ दिनों उपरान्त उसने एक कविता लिखी तो उसने प्रार्थना करने वाले चबूतरे पर से खड़े होकर उसे पढ़ा। तत्पश्चात् उसी कविता को चार-सु द्वार पर लटकवा दिया और उसके लिए शहर के लोगों से उपहार प्राप्त किए।" —'बाबर नामा' (अनु०) भाग १, पृ० ३२९-३०; हसन-ए-रुमुल ने भी उसके चरित्र की आलोचना की है—देखिए, "अहसान-उत-तवारीख" (अनु०), भाग २, पृ० ४३-४४।

काबुल पर आक्रमण करने की धमकी देने लगा। ऐसी स्थिति में बाबर के लिए फ़रग़ना के राज्य को पुनः वापस लेने का प्रश्न ही न उठता था। इसके विपरीत उसे अपने राज्य की सीमाओं पर एक नया ख़तरा पैदा होते हुए दिखाई पड़ा और उसे लगा कि कहीं उसे अपने इस राज्य से भी न हाथ धोना पड़े। स्वयं वह इतना शक्तिशाली न था कि शैबानी ख़ान का सामना कर सकता। अतएव उसने कन्धार के अरग़ून शासक के साथ मिलकर काबुल राज्य की रक्षा करने का निश्चय किया।

लगभग इसी समय शाह बेग अरघून तथा मुहम्मद मुक़ीम, जो कि कन्धार के शासक जुलनून बेग के उत्तराधिकारी थे, ने शैबानी ख़ान के आक्रमण के भय से बाबर के पास अनेक पत्र भेजे और उससे अनुरोध किया कि वह उनके साथ मिल कर शैबानी ख़ान पर संयुक्त आक्रमण करे।[1] बाबर ने अपने अमीरों से राय ली और सेना के साथ वह कन्धार की ओर चल पड़ा।[2] जब

---

१. बाबर ने लिखा है कि, "इन दिनों में शाह बेग तथा उसके छोटे भाई मुहम्मद मुक़ीम ने शैबाक खां के भय से मेरे पास निरन्तर प्रार्थना पत्र भेजे जिनमें निष्ठा एवं शुभ चिन्ता की चर्चा थी। मुक़ीम ने मुझे स्पष्ट शब्दों में आमंत्रित किया। हमें यह देखते हुए अच्छा न लगता था कि उजबेग लोग पूरे मुल्क पर छापे मार रहे हैं। क्योंकि शाह बेग तथा मुक़ीम ने पत्रों एवं दूतों द्वारा मुझे आमंत्रित किया था अतः इसमें सन्देह नहीं रह गया कि वे मेरी सेवा में उपस्थित होंगे।" —बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३३१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७८; इस प्रकार से बाबर ने कहीं स्पष्ट रूप से नहीं लिखा कि शाह बेग तथा मुहम्मद मुक़ीम ने उसे कन्धार का दुर्ग सौंपने के लिए आमंत्रित किया। इसके विपरीत फिरिश्ता ने स्पष्ट रूप से यह कहा है कि जब उजबेगों ने अरग़ूनों को बुरी तरह सताना प्रारम्भ किया तो उन्होंने बाबर को इस आशय से आमंत्रित किया कि वे दुर्ग उसको सौंप देंगे— "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १६६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २७;

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३३१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७८; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३।

वह ग़ज़नी पहुंचा तो उसकी भेंट हबीब सुल्तान बेगम, खुसरो कोकुल्दाश, सुल्तान क़ुली चूनाक तथा गदाई बलाल, से जो कि खुरासान से शैबानी खान के आक्रमण के कारण भाग कर आए थे से हुई। कलात पहुंचने पर बाबर से मिर्ज़ा खान (वएस) तथा अब्दुर्रज्जाक मिले। दोनों ही व्यक्ति उज़्बेग आक्रमण के भय से कन्धार से भाग खड़े हुए थे।[1] बाबर ने इन शरणार्थियों का स्वागत किया, उसके लिए ऐसा करना खतरे से खाली न था। किन्तु वह उनकी उपेक्षा करने की स्थिति में भी न था क्योंकि किसी न किसी रूप में वे उसके वंश से ही सम्बन्धित थे। कन्धार के निकट पहुंचने पर बाबर ने शाह बेग तथा मुक़ीम के पास अपने आदमी व पत्र भेजकर यह कहलवाया कि वह शीघ्र ही वहाँ पहुंचने वाला है और अब उन्हें चाहिए कि शैबानी खान के विरुद्ध आक्रमण करने के सम्बन्ध में उपयुक्त योजना वे बना लें। किन्तु जब वह कन्धार पहुंचा तो उनके व्हार को देखकर उसे आश्चर्य हुआ।[2] उन्होंने बाबर के पत्रों का उत्तर कठोर शब्दों में दिया तथा उनकी उपेक्षा की और उन्हीं पत्रों की पीठ पर मुहर लगा कर अशिष्टता दिखाई।

उनके इस व्यवहार में परिवर्तन के लिए कौन उत्तरदायी था ? बाबर या शैबानी खान ? शैबानी खान के आक्रमण के भय से शाह बेग तथा उसके छोटे भाई मुहम्मद मुक़ीम ने शैबानी खान तथा बाबर दोनों से पत्र-व्यवहार करना प्रारम्भ किया। दोनों ही भाइयों को इस बात की कदापि आशा न थी कि बाबर इतनी शीघ्र-गति से कन्धार की ओर कूच करेगा। जब उन्हें ज्ञात हुआ कि बाबर काबुल से चल पड़ा है, तो उन्हें उसकी नियत पर सन्देह हुआ कि कहीं वह कन्धार के राज्य को विजित करने के उद्देश्य से तो नहीं आ रहा है। उनके भाग्य से इसी समय शैबानी खान भी कन्धार पर अधिकार जमाने के लिए निकल पड़ा, क्योंकि कन्धार खुरासान राज्य के अधीन था जो कि

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३३१; रिज़वी "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७८।

२. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३३१; रिज़वी "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७९।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३३१; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ७९।

उसने अभी-अभी विजित किया था। अपने इस अधिकार की पुष्टि करने के लिए फ़राह से गर्मसीर तक वह आगे बढ़ा। गर्मसीर में उसे शाह बेग़ के राजदूत मिले, जिन्होंने अपने शासक द्वारा उसकी आधीनता स्वीकार करने, खुतबा में उसका नाम पढ़ने तथा उसके नाम के सिक्के निकलवाने का प्रस्ताव रक्खा। शैवानी खान ने यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया तथा गर्मसीर से वह वापस लौट गया। बाबर को यह न पता चल सका कि शाह बेग ने शैवानी खान की आधीनता स्वीकार कर ली है। यही कारण था कि उन राजदूतों के वापस आने तक, शाह बेग अरगून तथा मुक़ीम बेग बाबर के साथ इस प्रकार का व्यवहार करते रहे। बाबर उनके व्यवहार से क्रुद्ध हुआ और उसने उन पर आक्रमण करने का दृढ़ संकल्प किया।[1]

यद्यपि इस समय बाबर के पास बहुत ही कम संख्या में सैनिक थे, फिर भी वह शीघ्रातिशीघ्र आगे बढ़ते हुए किसी प्रकार से कन्धार की पहाड़ी के निकट पहुंचा। उसने अपने सैनिकों को विश्राम करने का आदेश दिया तथा उनमें से कुछ को रसद लेने के लिए भेजा। अभी वे सैनिक जिन्हें कि उसने रसद लाने के लिए भेजा था, लौट भी न पाए थे कि शेर अली ने उसे सूचना दी कि शत्रु ६००० या ७००० सैनिकों को लेकर आगे बढ़ रहा है।

---

१ तारीख़-ए-रशीदी के रचयिता, मिर्ज़ा हैदर दोघलत के अनुसार काबुल में अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से बाबर ने कन्धार पर आक्रमण करने का विचार किया। उसने पहले तो कन्धार के शासक शाह बेग के पास अपने दूत भेजे और यह कहलवाया, 'चूंकि मिर्ज़ा सुलतान हुसैन के पुत्रों की पराजय हो चुकी है, तुम्हारे लिए यह उचित होगा कि तुम आज्ञा पालन एवं सेवा के द्वार खोल दो। इस समय हमारी सार्वभौमिकता के महल में अन्य कोई भी व्यक्ति नहीं है जो कि तुम्हारे अतिरिक्त उच्च पद के लिए काबिल हो।" प्रत्येक भांति से बाबर ने उसे आश्वासन दिया, किन्तु उसने सार्वभौमिकता मानने से इन्कार कर दिया। जिसके फलस्वरूप दोनों में सम्बन्ध बिगड़ गए और बाबर ने कन्धार पर आक्रमण कर दिया—तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २०२; फ़िरिश्ता, "तारीख फ़िरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २८।

बाबर के पास इस समय केवल १००० आदमी थे। उसने तुरन्त उन्हें एकत्र किया और १० तथा ५० की टोलियों में बाँट दिया। प्रत्येक टोली को उसने उसने एक सरदार के अधीन रखा। टोली के सरदार को सेना के दाएं, मध्य तथा बाएँ भाग का पूरा-पूरा ज्ञान था और प्रत्येक अपने-अपने कार्यसे परिचित था। बाबर ने अपनी सेना को दायें, बाएं तथा मध्य दलों में विभाजित किया[1] और शत्रु के आगे बढ़ते ही उसने आक्रमण कर दिया। बाबर की सेना के दायें तथा मध्य भाग ने शत्रु को खदेड़ दिया और तत्पश्चात् वे बाबर की उस सैनिक टुकड़ी की रक्षा करने के लिए बढ़े जिस पर शत्रु बुरी तरह से टूट पड़ा था। बाबर ने शत्रु के दो दलों पर आक्रमण कर उन्हें युद्ध स्थल से भगा दिया और विजय के नक्कारे बजा दिए। शाह बेग तथा मुहम्मद मुकीम को खदेड़ देने के पश्चात्[2] बाबर ने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। अहमद अली तरखान दुर्ग की रक्षा अधिक समय तक न कर सका और बाबर ने दुर्ग पर अपना अधिकार स्था-

---

१. सेना के दाएं भाग में मिर्ज़ा (बएस) खान, शेरीम तग़ाई, यारक तग़ाई, तथा उसके छोटे व बड़े भाई, चिलमा मुग़ल, अय्यूब बेग, मुहम्मद बेग, इब्राहीम बेग, अली सैय्यद मुगल आदि-आदि थे। बायें भाग में अब्दुर रज्जाक मिर्ज़ा, कासिम बेग, तीगरी बिर्दी, कम्बर अली, गूरी बारलास, सैय्यद हुसैन अकबर तथा मीर शाह कुचीन थे। अग्र भाग में नासिर मिर्ज़ा, सैय्यद कासिम ईशक आग़ा, मुहिब अली कूरची, पापा ऊगली, अल्लाह बैरान तुर्कमान, शेर कुली मुग़ल करावल आदि थे। मध्यभाग में बाबर के अधीन दाहिनी ओर कासिम कूकल्दाश, खुसरो कूकल्दाश, सुल्तान मुहम्मद दूल्दाई, शाह महमूद परवानची, कुले बायजीद बकावल, कमाल शरबतची थे। उसकी बांई ओर ख्वाजा मु० अली, बाबा शेरज़ाद, खान कुली, वली खाजिन, कुतुलुक कदम, तथा बाबा शेख आदि थे। भीतरी घेरे में शेर बेग, हातिम कूरची बेगी, कुपुक, कुली बाबा, अबुल हसन कुरची आदि थे—बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३३८-३९।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३३७; "तारीख-ए-फिरिश्ता' (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २८।

पित कर लिया। बाबर के हाथों में अतुल धनराशि आ गई।[1] इससे पूर्व इतना धन बाबर ने कभी देखा भी न था। खजाने व दुर्ग की व्यवस्था करने के उपरान्त बाबर ने कन्धार का दुर्ग नासिर मिर्ज़ा को प्रदान कर दिया और स्वयं काबुल लौट गया।[2]

जैसे ही बाबर काबुल पहुंचा वैसे ही उसे सूचना मिली कि शाह बेग तथा मुकीम, जिन्होंने कन्धार के युद्ध में पराजित होने के बाद ज़मीनदावार तथा शाल मशतुंग में शरण ले ली थी, के अनुरोध पर शैवानी खान पुनः कन्धार की ओर बढ़ रहा है, और वह उसी पर आक्रमण करना चाहता है। जब शैवानी खान कन्धार पहुंचा तो उसे मालूम हुआ कि बाबर वहाँ से पहले ही भाग चुका है। फिर भी उसने दुर्ग पर घेरा डाला। कुछ समय तक नासिर मिर्ज़ा ने उज़बेगों का डट कर मुकाबला किया। उज़बेगों ने कन्धार के दुर्ग की दीवारों को खोदकर बारूद भरना प्रारम्भ किया। घेराबन्दी अभी चल ही रही थी कि नासिर मिर्ज़ा दुर्ग को छोड़कर गज़नी की ओर भाग खड़ा हुआ। शैवनी खान ने दुर्ग पर कई हमले किए किन्तु वह केवल दुर्ग के बाहरी भाग को ही लेने में सफल हो सका। दुर्ग के अन्दर के लोग उज़बेगों की सफलता से भयभीत हुए और बाबर के कुछ उमराव जो कि दुर्ग की रक्षा

---

१. बाबर लिखता है कि, "इतने चांदी के सिक्के इससे पूर्व उसने कभी भी न देखे थे और न किसी के विषय में उसने सुना था—" बाबर नामा (अनुवाद), भाग १, पृ० ३३८; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८३-८४; अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २, पृ० ४५; नफाय-सुल-मुआसीर, रिजवी, मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४६, फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २८;

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३३९; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८३-८४; नफ़ायसुल-मआसीर, रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४६; तारीख-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० २०२; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' पृ० १९९, भाग २, पृ० २८; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३।

के लिए तैनात किए गए थे, दुर्ग की दीवारों पर से कूद कर भाग खड़े हुए। शैबानी खान के हाथों में दुर्ग आने वाला ही था कि उसने किन्हीं कारणों से दुर्ग रक्षकों से सन्धि कर ली और हिरात वापस लौट गया।[1] यह पहला अवसर था जब कि बिना अपने उद्देश्य को प्राप्त किए हुए शैबानी खान वापस लौट गया। उसके तुरन्त वापस लौटने के कई कारण थे। जब उसने दुर्ग का अवरोध किया तो उसे मालूम हो गया कि दुर्ग में धन नहीं है जिसके विषय में शाह बेग ने उसे सूचना दी थी, दूसरे कन्धार के दुर्ग का उसके लिए कोई उपयोग न था। कन्धार से आगे पूर्व की ओर बढ़ने की उसकी योजना न थी। तीसरे कन्धार के दुर्ग का जब वह घेरा डाले हुए पड़ा था, तब उसे सूचना मिली कि नरिह-तू में उसके अमीरों ने विद्रोह कर दिया है और दुर्ग को अधिकृत कर उसके अन्तःपुर को बन्दी बना लिया है। इसी सूचना ने उसे दुर्ग पर से घेरा उठाने के लिए तथा वापस लौटने के लिए विवश कर दिया।[2] उसके वापस लौटने से काबुल का राज्य उसके आक्रमणों से बच गया।

कन्धार पर शैबानी खान के आक्रमण से बाबर इतना भयभीत हुआ कि उसने बदख़शां अथवा हिन्दुस्तान की ओर जाकर शरण लेने का विचार किया ताकि वह उज़बेगों की छाया से दूर रह सके। इस आशय से उसने

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४३; हसन-ए-रूमुलू के अनुसार शैबानी खान ने दुर्ग को विजित कर लिया था और अमीर ज़ुलनून के पुत्रों को दुर्ग सौंप कर वह हिरात वापस लौट गया—अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २, पृ० ४५; "तारीख-ए-रशीदी" (अनु०) पृ० २०६; फ़िरिश्ता के अनुसार कन्धार के शहर को विजित करने के उपरान्त शैबानी खान ने अपने अमीर अब्दुल्ला सुल्तान को यह आदेश दिया कि वह घेराबन्दी तब तक जारी रक्खे जब तक कि कन्धार का दुर्ग भी उज़बेगों के हाथों में नहीं आ जाता और उज़बेग कन्धार के दुर्ग को अमीर ज़ुलनून के परिवार के सदस्यों के हाथों में नहीं सौंप देते। तत्पश्चात् वह अपनी सेना के साथ ख़ुरासान की ओर चल पड़ा—"तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० १९९; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० २९।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४३।

अपने अमीरों को परामर्श देने के लिए बुलवाया।[1] क़ासिम बेग तथा शेरिम तग़ाई ने उसे सुझाव दिया कि वह बदख़शां की ओर बढ़े; किन्तु अन्य अमीरों ने उसे हिन्दुस्तान जाने की राय दी। अतएव जमादी-उल-अव्वल ९१३ हि० : सितम्बर, १५०७ ई० में उसने हिन्दुस्तान ही जाने का निश्चय किया। हिन्दुस्तान की ओर प्रस्थान करने से पूर्व उसने काबुल की देखरेख करने के लिए अब्दुर रज़्ज़ाक को नियुक्त किया। इसी समय शाह बेगम की राय पर उसने मिर्ज़ा ख़ान को बदख्शां जाने की अनुमति दे दी।[2] तत्पश्चात् वह हिन्दुस्तान की ओर बढ़ा।

---

१. बाबर की परेशानी उसके इन शब्दों से पता चलती है, "शैबाक खां तथा उजबेग सरीखे प्राचीन शत्रु उन समस्त प्रदेशों के ऊपर अधिकार जमाए हुए हैं, जो कि कभी तीमूर बेग की सन्तान के अधीन थे। जो तुर्क तथा चाग़ताई कोनों एवं सीमान्त के भूभाग में पड़े हुए हैं, वे स्वेच्छा या इच्छा के विरुद्ध उसके सहायक बन गए हैं। केवल मैं ही बच गया हूँ। मैं स्वयं काबुल में हूं। शत्रु अत्यन्त शक्तिशाली है और मैं बड़ा शक्तिहीन। न तो मेरे पास ऐसे साधन हैं जिनके द्वारा मैं सन्धि कर लूं और न इतनी शक्ति कि उनका विरोध कर सकूं। ऐसे प्रभावशाली व्यक्ति की उपस्थित में हमें किसी न किसी सुरक्षित स्थान की खोज करनी चाहिए जहाँ हम कठिनाई एव परेशानी के समय जाकर शरण ले सकें।" बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४०; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८५;

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४०; मिर्ज़ा हैदर के अनुसार कन्धार के दुर्ग को अधिकृत करने के उपरान्त बाबर को समाचार प्राप्त हुए कि बदख़शां पर उज़बेगों ने आक्रमण कर दिया है, अतएव वहां के लोगों ने उनका डट कर सामना करना प्रारम्भ किया है। इसी समय शाह बेगम ने बदख्शां के राज्य पर दावा करते हुए कहा कि तीन हज़ार वर्षों से यह हमारे पूर्वजों का राज्य रहा है। चूंकि मैं एक स्त्री हूँ, मैं वहां की शासक स्वयं नहीं बन सकती हूँ, किन्तु मेरा पौत्र तो वहाँ का शासक बन सकता है। वे पुरुष जो कि मेरे वंशज हैं और मेरे ही बच्चे हैं

काबुल तथा नीनगनहार के बीच रहने वाली खिज्र खेल, शीमू खेल, खिरिल्ची, तथा खुगियानी तथा अन्य अफ़ग़ान जातियों को जैसे ही वावर के आगे वढ़ने की सूचना मिली, उन्होंने तुरन्त सभी दर्रों के मार्ग उसके लिए वन्द कर दिए। किसी प्रकार वावर ने उन्हें घेर लिया और उन पर आक्रमण कर उन्हें तितर-वितर कर दिया। उसके वाद अफ़ग़ान प्रदेश को पार कर वह नीनगनहार तुमान के अदीनापुर के दुर्ग के सामने आकर रुक गया। यहाँ उसने अपने सैनिकों को चार भागों में वांटा और प्रत्येक टुकड़ी को अफ़ग़ानों के देश को नष्ट करने, उनसे खाद्य सामग्री छीनने तथा उसकी आधीनता स्वीकार करने के लिए भेजा।[1] धीरे-धीरे चलकर वह मन्दरवार के समीप पहुंचा। यहाँ कासिम कोकुल्दाश का विवाह मुक़ीम की पुत्री मेह-चुचुक से हुआ।[2] इस प्रकार वावर ने किसी प्रकार अपना समय व्यतीत किया। इस प्रदेश में रहकर वावर शैवानी खान के विषय में सूचना प्राप्त करने के लिए प्रतीक्षा करता रहा।

कुछ समय उपरान्त उसने पाशग़र के मुल्ला वावा को काबुल भेजकर समाचार लाने के लिए कहा। इस वीच उसने चग़ान सराय नदी के इस ओर के शहर, जैसे अलर, शीदा, कुमार, नूरगल आदि का भ्रमण किया तथा वहाँ के लोगों को लूटा। शरद् ऋतु के मध्य तक उसे सूचना मिल गई कि शैवानी खान हिरात लौट गया है और आकाश से वादल छट गए हैं। अतएव वह भी काबुल की ओर चल पड़ा।[3]

उन्हें तो कोई अस्वीकृत न करेगा।" वावर ने उसकी वात मान ली और मिर्ज़ा खान एवं शाह वेगम को वदख़्शां जाने की स्वीकृति प्रदान कर दी। तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २०३; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ३४६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २००; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३०; "अकवर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३।

१. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४१-४२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ८६।

२. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४२।

३. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४३।

काबुल पहुंच कर बाबर ने अपना ध्यान प्रशासन की ओर दिया। शैबानी खान के आक्रमण के भय के कारण जब से उसने काबुल राज्य को जीता तब से लेकर अब तक वह इस ओर ध्यान न दे पाया था। नासिर मिर्ज़ा को ग़ज़नी प्रदान कर उसने उसे यहाँ भेजा। अब्दुर रज्ज़ाक का भी काबुल में अधिक दिनों रहना उसने उचित न समझा, अतएव उसे निनगनहार तुमान, मन्दरवार, नूरघाटी, कुनार तथा नूर-गुल प्रदान किए गए। केन्द्रीय शासन को सुदृढ़ता प्रदान करने के लिए उसने स्वयं पादशाह की उपाधि ग्रहण की।[1] इस समय बाबर ने जो उपाधि धारण की उसके इतिहासकारों ने अनेक अर्थ लगाए हैं। वास्तव में तैमूरियों में इस समय वही एक महत्वपूर्ण व्यक्ति जीवित था, जिससे कि यह आशा की जा सकती थी कि वह तैमूर का स्थान ग्रहण करेगा। इसके अतिरिक्त इस समय तक वह मिर्ज़ा खान के विद्रोह को दबा चुका था, अरगूनों को पराजित कर चुका था, तैमूरी परिवार के अनेक सदस्यों को संरक्षण प्रदान कर चुका था, तथा वह यह चाहता था कि किसी प्रकार चाग़ताई, मुग़ल, तुर्क, अफ़ग़ान, उमराव वर्ग एव अन्य कबायली जातियों के ऊपर अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करे। इसके अभाव में इन विभिन्न कबीलों पर नियंत्रण रखना कठिन कार्य था।

ऐसा प्रतीत होता है कि महमन्द अफ़ग़ानों को बाबर का इस प्रकार अपने को सर्वश्रेष्ठ समझना अच्छा न लगा। अतः काबुल राज्य के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों में उन्होंने विद्रोह कर दिया। बाबर उनके विरुद्ध बढ़ा और शीघ्र ही उसने विद्रोहियों को पराजित कर तितर-बितर कर दिया। इस अभियान से लौटते समय कुछ मुगलों ने जो उससे अप्रसन्न थे, उसका साथ देने से इन्कार कर दिया तथा उसे छोड़ कर भाग जाने का निश्चय किया। बाबर को इसके बारे में सूचना मिल गई। उन सभी व्यक्तियों को बाबर ने बन्दी बना लिया। यदि कासिम बेग उनका पक्ष न लेता तो सब के सब मौत के घाट उतार दिए गए होते।[2] बाबर ने उन सभी मुग़लों को बन्दीगृह ही में रखा। इसी प्रकार उसकी अनुपस्थिति में खुसरो शाह के सेवकों ने, जो कि हिसार और कुन्दुज से काबुल आए थे, मुग़लों के सर-

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३४४; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८८; गुलबदन बेगम, "हुमायुं नामा" (अनु०) पृ० ९०।
२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३४५; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८९।

दार, चिलमा, अली सैय्यद, सकमा, शेर कुली, ऐकुलम सलाम ने, खुसरो शाह के विशेष चागताई मुग़ल सेवकों ने, मिलकर सुल्तान अली चुहरा तथा खुदा बख्श के नेतृत्व में, २००० से ३००० तुर्कमान सैनिकों के साथ, जिसका प्रतिनिधित्व सियन्दूक तथा शाह नज़ार ने किया, न केवल बाबर की आधीनता को मानने से इन्कार कर दिया अपितु उन्होंने अब्दुर्रज्ज़ाक मिर्ज़ा को काबुल के सिंहासन पर बैठाने तथा कुन्दुज़, खुतलान तथा वे प्रदेश जो कि पहले खुसरो शाह के अधीन थे, सौंपने का दृढ़ संकल्प किया।[1] पादशाह की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् बाबर को इस तीसरे विद्रोह का सामना करना पड़ा। उसकी यह पदवी उपरोक्त कबीली राजनैतिक सिद्धान्तों के प्रतिकूल थी और उनकी मनोवृत्तियों से मेल न खाती थी। अतएव उनके लिए विरोध एवं विद्रोह करना स्वाभाविक ही था। इस बार चागताई, मुग़ल, तुर्कमान, कबीले, सब एक हो गए और उन्होंने बाबर के शासन को उलटने का प्रयास किया। बहुत पहले मुहिब अली ने बाबर के मुख्य उमराव खलीफा को इस विषय में आगाह किया था। उसके पश्चात् भी बार-बार मुल्ला बाबा तथा खलीफा इन तीनों कबीलों की विद्रोही प्रवृत्तियों की ओर बाबर का ध्यान आकृष्ट करते रहे। बाबर ने उनकी बात पर विशेष ध्यान न दिया, किन्तु एक रात जब कि चार बाग़ में वह अपने दरबार में बैठा हुआ था, मूसा ख्वाजा ने आकर उसे बताया कि मुग़लों ने विद्रोह कर दिया है। बाबर तुरन्त अपने अन्तःपुर की रक्षा करने निकल पड़ा। उसने चारों ओर लोगों को घबराए हुए, इधर-उधर दौड़ते हुए, भागते हुए, आतंक फैलाते हुए, काबुल की ओर अपने परिवारों को बचाने के लिए जाते हुए देखा।[2] इसके पश्चात् क्या हुआ? इस सम्बन्ध में बाबर की आत्मकथा, जिसमें विवरण का क्रम लगभग एकाएक ११ वर्ष तक के लिए टूट गया है, से हमें कुछ भी नहीं ज्ञात होता। अतएव इसके लिए हमें ख़फी खां की मुन्तख़-बउल-लुबाब तथा फिरिश्ता की तारीख़-ए-फिरिश्ता तथा तारीख़-ए-रशीदी में दिए गए विवरण पर ही निर्भर रहना पड़ता है। तीनों ही इतिहासकारों ने लिखा है कि बिना इसकी चिन्ता किए हुए कि उसके साथ

---

१. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३४५-४६; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ८६।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३४६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८६।

कम सैनिक हैं, या लोग उसका साथ छोड़ रहे हैं, बाबर, विद्रोहियों की ओर बढ़ा और उसने उन्हें हराकर छिन्न-भिन्न कर दिया।[1] अब्दुर्रज्ज़ाक को बन्दी बना लिया गया, किन्तु उसे क्षमा कर दिया गया। थोड़े दिनों पश्चात् उसने फिर एक षड्यन्त्र में भाग लिया, जिसके लिए उसे अपने जीवन से भी हाथ धोना पड़ा। इस प्रकार बाबर के विरोधियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में तनिक भी सफलता न मिल सकी। अपने विरोधियों से छुटकारा पाकर वह कुछ समय तक शान्ति से बैठा रहा। इसके अतिरिक्त वह करता भी क्या?

नवम्बर, १५०८ ई० में सुल्तान सईद खान[2] तथा मिर्ज़ा हैदर दोघलत बाबर के दरबार में किसी प्रकार से शैबानी खान से जान बचाचकर आए। इन्हीं दोनों

१. फिरिश्ता के अनुसार बाबर ने विद्रोहियों पर आक्रमण किया और अब्दुल रज्ज़ाक मिर्ज़ा को बन्दी बनाया और युद्ध में उसने स्वयं अली शबगुर, अली सीस्तानी, नज़र बहादुर उज़बेग, याकूत शेर चंग और उज़बेग बहादुर को मौत के घाट उतार दिया—फिरिश्ता, 'तारीख-ए-फ़िरिश्ता (मू० ग्रन्थ), पृ० १९९-२००; ब्रिग्स 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ० २९-३०, खाफ़ी खान के अनुसार बाबर ने विद्रोहियों पर आक्रमण किया और अली बेग शबगुर, मुहम्मद अली शैबानी, नज़र बहादुर उज़बेग, याकूब बेग, शेरजंग तथा अब्दुल्ला शैफ शिकन से मुकाबला किया और उन्हें हरा कर मार डाला—मुन्तख़-उल-लुबाव' भाग १, पृ० ३८-३९; नफ़ायसुल माआसीर, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत', (बाबर), पृ० ३४७; मिर्ज़ा हैदर के अनुसार खुसरोशाह की सेना में जो ३००० सैनिक थे, उन्होंने अब्दूर्रज्जाक मिर्ज़ा को सम्राट् घोषित कर दिया। बाबर के पास इस समय केवल ५०० सैनिक ही थे। लेकिन फिर भी बाबर ने विद्रोहियों का सामना तगाई के मैदान में ही किया। बाबर ने जो भी युद्ध लड़े उनमें से यह युद्ध बहुत ही बड़ा था। घमासान युद्ध के उपरान्त बाबर विजयी हुआ और उसने अली सैय्यद गुर, अली सिनार अला, तीन अन्य व्यक्तियों को परास्त कर भगा दिया। अब्दूर्रज्जाक बन्दी बना लिया गया और बाद में उसे क्षमा कर दिया गया' तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २०३-४।

२. सुल्तान सईद खान, सुल्तान अहमद खान का पुत्र था। अलमातु में अपने भाई मन्सूर से हार जाने पर सुल्तान सईद खान अन्दीजान भाग कर पहुंचा

व्यक्तियों से बाबर को शैबानी खां की महत्वाकाँक्षी योजनाओं के विषय में पता लगा और यह भी ज्ञात हुआ कि शैबानी खान का विरोधी भी पैदा हो गया है। कन्धार से लौटने के पश्चात् शैबानी खान ने अपने उमराव के विद्रोह का दमन किया और उसके पश्चात् सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा के परिवार के अन्य सदस्यों को समाप्त करने के लिए वह चल पड़ा। अन्य उज़बेग़ सुल्तानों के साथ उसने मश्हद, निशापुर, अस्तराबाद, तुरशीज़ आदि अनेक शहरों को लूटा और जीता। केवल बदी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा को छोड़कर सभी मिर्ज़ाओं को उसने मौत के घाट उतार दिया। १५०६ ई० तक शैबानी खान को निरन्तर सफलता मिलती रही। किन्तु १५१० ई० की ग्रीष्म ऋतु के प्रारम्भ होते ही उसे अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कज्ज़ाकों तथा हज़ारा जाति ने विद्रोह किया। उनके विद्रोहों को दबाने में वह असफल रहा। इसी बीच फारस के सुल्तान शाह इस्माइल सफ़वी से उसके सम्बन्ध दिन प्रतिदिन खराब होते गए। दोनों की महत्वाकाँक्षाएं तथा विस्तारवादी नीतियाँ एक दूसरे से टकराने लगी।[१] अन्त में मर्व के मैदान में २, दिसम्बर, १५१० ई० को शाह इस्माईल सफ़वी ने उसे बुरी तरह परास्त किया।

और कुछ दिनों तक वह जानी बेग़ सुल्तान के पास रहा। शैबानी खान ने जानी बेग़ को आदेश दिया कि वह सुल्तान सईद खान को मार डाले। इस पर सुल्तान सईद वहाँ से भाग खड़ा हुआ। उसके बाद उसने बदख्शां में शरण ली और वहाँ से काबुल आया—तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २२६; बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३४६।

१. शाह इस्माईल सफ़वी तथा शैबानी खान के आपसी सम्बन्धों के लिए देखिए—तारीख-ए-रशीदी, (अनु०)पृ० २३२-४; आलम आराए अब्बासी पृ० ३६-३८; अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ५१-५२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत (बाबर), प० ६१६-१७; हबीब-उस-सियर, पृ० ५४-६०; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० ६६-१००; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर- एण्डहुमायूं" भाग १, पृ० २६६-३००; वैम्बरी, "हिस्ट्री आफ़ बुख़ारा", पृ० २७०- ७१।

युद्ध में लड़ते-लड़ते शैबानी खान की मृत्यु हुई।[1] सर-ए-पुल के युद्ध में जब वह विजयी हुआ तो वह समस्त ट्रांसआक्सियाना का स्वामी बन गया, किन्तु मर्व के युद्ध ने उसके जीवन का अन्त कर दिया। उसकी मृत्यु के साथ उज़बेगों के प्रभुत्व का अन्त और ईरानियों की शक्ति का उत्कर्ष होता है।

शैबानी खान की पराजय एवं मृत्यु में बाबर को अपनी विजय दिखाई देने लगी। मर्व के युद्ध के परिणाम, तथा शैबानी खान की पराजय की सूचना बाबर को उसके सम्बन्धी मिर्ज़ा खान ने दी। दिसम्बर, १५१० ई० के अन्त में उसे यह सूचना प्राप्त हुई। किन्तु यह सूचना उसके लिए अधूरी थी, क्योंकि मिर्ज़ा खान ने उसके पास यह नहीं कहलवाया कि शैबानी खान की युद्ध में मृत्यु हो चुकी है।[2] अतएव बाबर कुछ समय चिन्तित रहा तथा शैबानी खान के बारे में जानने के लिए उत्सुक रहा। हाँ, मिर्ज़ा खान के उस प्रस्ताव का उसने हृदय से स्वागत किया, जिसमें कि उसने उसे आने के लिए निमंत्रण दिया था और अनुरोध किया था कि वह उसके साथ मिल कर अपने पैतृक राज्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़े।[3] इससे अच्छी बाबर के लिए और कौन सी बात हो सकती थी?

---

१. हसन-ए-रुमलू के अनुसार, युद्ध के उपरान्त शाह इस्माईल ने आदेश दिया कि शैबानी खान का सिर काट कर उसके शरीर में भूसा भर दिया जाय और उसे टर्की के सुल्तान बायजीद के पास भेज दिया जाय; तथा सिर की हड्डी को एक टोपी की तरह सोने में मढ़ दिया जाय। इस प्रकार उन्होंने उसमें शराब भरी और शाही दरबार में घुमाया—"अहसान-उत-तवारीख़" (अनु०) भाग २, पृ० ५४-५५; अबुल फ़ज़ल ने केवल शैबानी खान की मृत्यु, का ही उल्लेख किया है, "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३; हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४ पृ० ६०।

२. "तारीख-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० २३७; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४७।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३५०; "तारीख-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० २३७; नफ़ायसुल-माआसिर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४७; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अन्डर बाबर एन्ड हुमायूँ, भाग १, पृ० ३०६; रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी," पृ० १००-१०१।

अपने खोए हुए पैतृक राज्य को प्राप्त करने की आशा में उसने रमज़ान ९१६ हि० : १५१० ई० में काबुल नासिर मिर्ज़ा के हाथों में सौंपा और स्वयं वह समरकन्द की ओर चल पड़ा। शरद-ऋतु में आबदारा दर्रे को पार करते हुए वह बमियान पहुँचा और शव्वाल ९१६ हि० : जनवरी, १५११ ई० में कुन्दुज़ पहुँचा।[1] तारीख़-ए-रशीदी के रचयिता हैदर मिर्ज़ा दोघलत के अनुसार इसी स्थान पर शेरीम तग़ाई और अय्यूब बेग़चिक ने अन्य मुग़लों के साथ मिलकर बाबर को मार डालने तथा सुल्तान सईद ख़ान को मुगलों का शासक बनाने का षड़यन्त्र रचा। इस सम्बन्ध में उन्होंने सुल्तान सईद ख़ान से बात की, किन्तु उसने उनका साथ देने से इन्कार कर दिया। इस प्रकार शेरीम तग़ाई को निराश होकर चुप बैठना पड़ा। भाग्य से इसी समय अन्दीज़ान से बाबर को एक पत्र प्राप्त हुआ कि मिर्ज़ा हैदर का चाचा इस समय उज़बेगों का वहाँ से खदेड़ने में व्यस्त है, अतएव सहायतार्थ सेनाएँ उनकी सहायता के लिए भेज दी जाय। बाबर ने तुरन्त सुल्तान सईद खान को शेरीम तग़ाई तथा अय्यूब बेग़चिक को अन्दीज़ान भेज दिया जहाँ १४ सफर, ९१७ हि० : १३ मई, १५११ ई० को अन्दीज़ान के लोगों ने सुल्तान सईद को ख़ान मान लिया[2]। इस प्रकार सुल्तान सईद ख़ान को भेजकर बाबर ने अपनी दूरदर्शिता का परिचय दिया।

मिर्ज़ा ख़ान के साथ मिलकर बाबर ने एक बार हिसार शादमन के दुर्ग को हमज़ा सुल्तान के हाथों से लेने का प्रयास भी किया किन्तु सफलता न मिलने पर वह वापस कुन्दुज लौट आया।[3] बाबर अभी कुन्दुज ही में ठहरा हुआ था कि शाह इस्माईल सफ़वी के राजदूत उसके पास उसकी विधवा बहिन ख़ानज़ादा

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २३७; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़ल, कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४७।

२. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २४१; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४७।

३. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २३८; हसन-ए-रुमलू ने यह ग़लत लिखा है कि बाबर ने हमज़ा व महदी पर आक्रमण किया और युद्ध में उन्हें मार डाला—अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग १, पृ० ५८।

बेगम को लेकर आए।[1] मर्व के युद्ध के पश्चात् जब खानज़ादा बेगम ईरानी सैनिकों के हाथों में पड़ी तो उन्होंने उसे पहचान लिया और उसका आदर-सत्कार किया। शाह इस्माईल ने उसकी सारी सम्पत्ति उसे सौंप कर उसे अपने भाई के पास मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने की आशा में पहुँचवा दिया। शाह इस्माईल ने जो सहृदयता इस अवसर पर दिखाई उसके पीछे उसका एक लक्ष्य एवं उद्देश्य था। वह बाबर के साथ मिलकर उज़बेगों को कुचल कर रख देना चाहता था। बाबर तो ऐसे अवसर की ताक में न जाने कब से बैठा हुआ था और शाह के पास राजदूत भेजना भी चाहता था। बाबर ने शाह द्वारा भेजे गए राजदूतों का स्वागत किया। उसने मिर्ज़ा खान के उपयुक्त उपहारों के साथ शाह के पास भेज कर उसे धन्यवाद दिया कि उसने उसकी बहन के साथ अच्छा व्यवहार किया तथा उसे अपने शत्रु पर विजय पाने के लिए बधाई दी। साथ ही साथ बाबर ने शाह इस्माईल सफ़वी से अनुरोध किया कि वह उसकी सैनिक सहायता करे ताकि वह अपने पैतृक राज्य को उज़बेगों के हाथ से वापस ले लें।[2]

१. खानज़ादा बेगम को मर्व के युद्ध के पश्चात् ईरानियों ने पकड़ लिया था। उसके दोनों पति, शैबानी खान तथा सैय्यद हादी की मृत्यु अब तक हो चुकी थी—नफ़ायसुल मअसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ३४८; तारीख-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २३८-३९; हबीब-उस-सियर, पृ० ६५, फ़िरिश्ता, 'तारीख-ए-फ़िरिश्ता' (मू० ग्रन्थ) पृ० २०० पृ० ५३३; किन्तु हसन-ए-रूमलू के अनुसार जब बाबर बदख़्शां में ठहरा हुआ था उस समय उसने शाह इस्माईल के पास दूत भेज कर यह कहलवाया कि यदि शहंशाह कुछ सहायता भेजें तो समरकन्द और बुख़ारा विजित कर उनके नाम का ख़ुतुबा पढ़वा दिया जाय तथा सिक्के निकलवा दिए जायं। इसलिए शाह ने अहमद बेग ऊग़ाली और शाह बेग अफ़सार को ग़ाज़ियों की एक सेना के साथ बाबर की सहायता के लिए भेजा। उसके पश्चात् बाबर उज़बेगों के विरुद्ध बढ़ा—अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ५८।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३५२; तारीख-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २३९; नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ३४८; हबीब-उस-सियर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर); पृ० ५९९; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० २००, ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ३२।

मिर्ज़ा खान को शाह के पास भेजने से लेकर, उसके वापस आने तक बाबर ने उज़बेगों के विरुद्ध अभियान की योजना बना ली। वह उज़बेगों को अब भी शक्तिशाली समझता था। यद्यपि शैबानी खान की मृत्यु के उपरान्त, उज़बेगों में न किसी प्रकार की एकता थी और न भ्रातृत्व। आपसी द्वेष एव वैमस्यता के कारण उनके कबीले एक दूसरे से पृथक हो चुके थे। उज़बेगी परम्परा के अनुसार शैबानी खान के पुत्र तीमूर को खान निर्वाचित न कर उन्होंने अबुल खैर खान के पुत्र कुचून सुल्तान को खान का महान् पद प्रदान किया। विशाल उज़बेगी साम्राज्य को बचाने के लिए उज़बेग अमीरों ने उसे शैबानी खान के सगे-सम्बन्धियों के मध्य विभाजित कर दिया। तीमूर सुल्तान को समरकन्द, महमूद सुल्तान के पुत्र उबैदुल्लाह खान को बुखारा, शैबानी खान के चाचा के पुत्र जानी बेग सुल्तान को अन्दीजान, कुचून को तुर्किस्तान, कुचून के पुत्र सन्जूक को ताशकन्द, हमज़ा सुल्तान को हिसार तथा महदी सुल्तान को चग़िनियान प्रदान किया गया। एक शक्तिशाली साम्राज्य के स्थान पर अब छोटी-छोटी शक्तियाँ थीं, जिन्होंने अपनी-अपनी सेनाओं को सुदृढ़ कर अपने शत्रुओं से बचाव करने के लिए युद्ध किए। वास्तव में शैबानी खान की मृत्यु के पश्चात् युद्ध का स्वरूप ही बदल गया। देखने में तो ऐसा प्रतीत होता था कि वे आपस में बटे हुए हैं, किन्तु वे पहले से अधिक शक्तिशाली हो गए। शिशिर-ऋतु के प्रारम्भ में १५११ ई० में शाह इस्माईल सफ़वी मवाराउन्नहर पर आक्रमण करने के लिए बढ़ा। पैरापनेशियन पहाड़ियों को पार करता हुआ वह करारोबत्त तक बढ़ा। करारोबत में उसके पास तीमूर सुल्तान तथा अन्य उज़बेग सरदारों के राजदूत उपहार लेकर पहुँचे और उन्होंने उससे अनुरोध किया कि वह उनके साथ सन्धि कर ले। शाह इस्माईल इस समय शीघ्र से शीघ्र ईरान लौट जाना चाहता था, क्योंकि टर्की की सीमा पर तथा अज़रबैजान में अनेक समस्याएँ उसे आमंत्रित कर रही थी तथा उसके आने की प्रतीक्षा कर रही थीं। अतएव शाह इस्माईल सफ़वी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया और उनसे इन शर्तों पर सन्धि कर ली—(१) कि आमू उज़बेगों तथा ईरानी साम्राज्य के मध्य की सीमा होगी और (२) आमू नदी के दक्षिण में स्थित प्रदेश शाह के अन्तर्गत होंगे। इस प्रकार सन्धि की शर्तों के अनुसार बिना अपने तुरकुप से तीर निकाले हुए शाह इस्माइल सफवी ख्वारिजम राज्य का भी शासक हो गया। इस सन्धि के पश्चात् शाह इस्माईल सफवी हिरात वापस लौट गया।

इस सन्धि के बारे में जब बाबर को मालूम हुआ तो वह बहुत ही निराश हुआ। अब तक वह शाह इस्माईल सफ़वी से आशा कर रहा था कि वह उज़बेगों के विरुद्ध उसकी सहायता अवश्य करेगा। फिर भी, जब उसने सुना कि सैयद मुहम्मद मिर्ज़ा ने उज़बेगों को फ़रग़ना से निकाल दिया है तो उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह तुरन्त कुन्दुज से हिसार की ओर चल दिया। वह ९१७ हि० : १५११–१२ ई० में वह हिसार पहुँचा। उसने पुल-ए-सँगीन[1] के इस ओर स्थित चोखश में पड़ाव डाला और शाह इस्माईल के पास से मिर्ज़ा ख़ान के आने की प्रतीक्षा की। कुछ समय पश्चात् मिर्ज़ा ख़ान कुछ ईरानी सैनिकों के साथ उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। मिर्ज़ा ख़ान ही से उसे शाह इस्माईल तथा उज़बेगों के आपसी मतभेद के विषय में पता चला। क्योंकि सन्धि के बाद भी उज़बेग ईरानी साम्राज्य की सीमाओं को लूटते रहे, जिससे शाह इस्माईल ने बाबर को उनके विरुद्ध सहायता देना स्वीकार किया। मिर्ज़ा ख़ान ने बाबर को यह भी बताया कि मवारुन्नहर में जो भी प्रदेश वह विजित करेगा वह उसका होगा। इन सब बातों से बाबर प्रसन्न हुआ। उसके संकल्प को बल भी मिला, किन्तु मिर्ज़ा ख़ान अपने साथ इतने कम ईरानी सैनिक लाया था कि उज़बेगों का सामना करना उसके लिए कठिन हो गया। उसने उज़बेगों से युद्ध करना उचित न समझा और थोड़े समय तक इस प्रतीक्षा में में लगा रहा कि सम्भव है कि शाह उसकी सहायता के लिए और अधिक संख्या में सैनिक भेज दें।

जब उज़बेगों को यह मालूम हुआ कि शाह इस्माईल ने बाबर के साथ सन्धि कर ली है तो उन्होंने बाबर के ऊपर आक्रमण करने का निश्चय किया। एक महीने के बाद उन्होंने सुर्ख़ाब नदी को पार किया और वे बाबर की ओर बढ़े। उनके आगे बढ़ने की सूचना बाबर को यथा समय मिल गई। उसने शीघ्र ही अपनी सेना को पीछे हटा लिया और आब-दारा की पहाड़ियों की सकरी घाटियों में जाकर वह रुक गया। वहाँ से चलकर वह एक खुली जगह पहुँचा, जहाँ कि उसने अपने सैनिकों को एकत्र कर युद्ध के लिए खड़ा कर दिया। तत्पश्चात् अपने गुप्तचरों को भेजकर उसने उज़बेगों के बारे में सूचना प्राप्त की। उसे मालूम हुआ कि वे अत्यधिक संख्या में आगे बढ़ रहे हैं। दूसरे दिन प्रातः उसने अपने सैनिकों को पुनः तैयार किया, आसपास की पहाड़ियों तथा खुले मैदान का उसने निरीक्षण किया और जगह-

---

१. सुरख़ाब नदी पर स्थित।

जगह सैनिकों को रखा। सकरे दर्रों से शत्रु को आगे बढ़ने और उन्हें पहाड़ियों पर न चढ़ने दिया गया। इस समय उज़बेग सैनिकों की एक टुकड़ी जिसकी संख्या १०,००० के लगभग थी, तीमूर सुल्तान तथा अनेक उज़बेग अमीर इसी टुकड़ी के साथ आगे बढ़ रहे थे और बहुत पीछे दूसरी टुकड़ी को, जो हमज़ा और महदी सुल्तान के नेतृत्व में थी, छोड़ आए थे। तीमूर सुल्तान ने पहाड़ी पर चढ़ने का प्रयास किया, किन्तु मिर्ज़ा खान तथा मिर्ज़ा हैदर दोघलत तथा उसके ३००० मुग़ल अनुचरों ने न केवल तीमूर सुल्तान वरन् दूसरी टुकड़ी को भी बुरी तरह युद्ध में परास्त कर दिया और उज़बेगों को तितर-बितर कर दिया। बाबर की सेना ने हमज़ा सुल्तान के पुत्र मामक को बन्दी बना लिया। वे सब बाबर के सामने लाए गए। हैदर मिर्ज़ा दोघलत के अनुसार जिस प्रकार उन्होंने मुग़ल खानों तथा चग़ताई सुल्तानों के साथ व्यवहार किया था, वैसा ही बाबर ने उनके साथ किया तथा खून का बदला खून से लिया गया।[1] युद्ध के पश्चात् बाबर ने हिसार-शादमन, खुतलान, कुन्दुज़ तथा बग़लान, जो कि उज़बेगों के हाथ में थे, उन्हें विजित कर लिया। अपनी इस सफलता की सूचना उसने शाह इस्माईल को दी और उससे अनुरोध किया कि वह अब समरकन्द को विजय करने के लिए उसे सैनिक सहायता प्रदान करे।[2]

---

१. तारीख-ए-रशीदी (अनु०) पृ० २४५; हबीबउससियर, भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ५६६; फ़िरिश्ता "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २००-२०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३३; आलम आरा-ए-अब्बासी (इस्फ़हान) भाग १, पृ० ३६।

२. तारीख-ए-रशीदी, (अनु०) पृ० २४४-४५; बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० ३५३; अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ५८; नफ़ायसुल-मआसिर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४८-४६; हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड, ४, पृ० ६६; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६६; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ, भाग २, पृ० ३१४; किन्तु फ़िरिश्ता के अनुसार ईरानियों की सहायता से बाबर ने कुन्दूज़, कोहज़र और बग़लान विजित किए—"तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१।

शाह इस्माईल सफ़वी ने बाबर के राजदूतों का स्वागत किया और कुछ शर्तों पर उसे सहायता देने को तैयार हुआ। सहायता देने की शर्तें इस प्रकार से थीं—कि समरकन्द को विजित करने के उपरान्त बाबर अपने अधिकृत प्रदेशों में शाह का नाम खुतबा में पढ़वाएगा, शाह के नाम के सिक्के निकलवाएगा तथा शिया धर्म का प्रसार करेगा।[1] शाह ने जो मूल्य इस सहायता के लिए बाबर से मांगा वह बहुत ही अधिक था। प्रो० रशब्रुक विलियम्स महोदय ने उचित ही कहा है, "शिक्षा धर्म के प्रसार के सम्बन्ध में वे शर्तें उस चट्टान की तरह सिद्ध हुईं, जिससे टकरा कर बाबर का भाग्यरूपी जहाज़ टूट कर चूर-चूर हो गया।"[2] इन शर्तों को मानने के अतिरिक्त बाबर के समक्ष और कोई मार्ग भी तो न था, जिसका अनुसरण कर वह अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूरा कर सकता।

कुछ इतिहासकारों का यह कहना है कि बिना बाबर से परामर्श लिए हुए मिर्ज़ा खान (वएस) ने उसकी ओर से यह शर्तें स्वीकार कर लीं। किन्तु ख्वादमीर स्पष्ट शब्दों में लिखता है कि, "बाबर ने गौरव के अधिनियमों वाले पादशाह को लिख कर भेजा और यह निवेदन किया कि यदि किसी प्रतिष्ठित अमीर को ग़ाज़ियों की सेवा सहित इस हितैषी के पास भेज दिया जाय तो आशा है कि शीघ्रातिशीघ्र मवारुन्नहर के समस्त प्रदेश विजय हो जावेंगे और इस राज्य का खुतबा एवं सिक्का भाग्यशाली नवाब के नाम से सुशोभित हो जायेगा और उज़बेग बादशाहों को समूलोच्छेदन हो

१. ख्वान्द मीर द्वारा दिए गए विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर ने स्वयं खुतबा पढ़ना, शाह के नाम का सिक्का निकलवाना इस शर्त पर स्वीकर किया कि वह उसकी सहायता उज़बेगों को हराने तथा मवारुन्नहर को जीतने में करेगा देखिए—हबीब-उस-सियर भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६००; तारीख़-ए-कुतुबी में खुतबा के बारे में कुछ भी नहीं लिखा है—पृ० ५५४।

२. प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० १०२।

जायेगा।[1] इतिहासकारों ने जो विवरण इस सम्बन्ध में दिए हैं, उनसे तो ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर को इस समय शाह की सहायता की परम् आवश्यकता थी, अतएव बिना सोचे हुए कि इन शर्तों को मानने पर आगे चलकर उनका क्या परिणाम होगा, उनसे यह शर्तें स्वीकार कर ली। यह कहना अनुचित होगा कि इन शर्तों को स्वीकार करने के लिए शाह ने उस पर कोई दबाव डाला। बाबर के पत्र को पढ़ने के पश्चात् शाह इस्माईल ने अहमद बेग सूफ़ी उग़ली, शाहरुख बेग अफशार, अली खान इस्तलजू आदि व्यक्तियों के नेतृत्व में उसकी सहायता के लिए सेना भेजी।[2]

ईरानियों की सेना बाबर की सहायता के लिए हिसार, जहां कि बाबर इस समय ठहरा हुआ था, पहुँची। उन्हीं के साथ बाबर ने समरकन्द की ओर प्रस्थान किया। उसकी सेना में इस समय ६०,००० व्यक्ति थे।[3] बाबर के आगे बढ़ने का समाचार पाकर मुहम्मद तीमूर सुल्तान भयभीत हुआ। उज़बेग अमीरों के साथ उसने समरकन्द में शरण ली और यहाँ आकर इस आक्रमण का सामना करने के लिए प्रबन्ध करना प्रारम्भ किया। इसी बीच बुखारा के

१. हबीब-उस-सियर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ५६६-६००; श्रीमती बेव्रिज का कहना है कि यह शर्तें, ऐसा प्रतीत होता है कि किसी मांग के प्रत्युत्तर में थीं, ऐसी शर्तें रक्खी नहीं जा सकती हैं, इन शर्तों को मानने के लिए जबरदस्ती की गई होगी।

२. ख्वान्द मीर ने केवल अहमद बेग उग़ली तथा शाहरुख बेग का ही नाम दिया है—हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४ पृ०, ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६००; फिरिश्ता के अनुसार शाह इस्माईल सफ़वी ने जो अमीर बाबर की सहायता के लिए भेजे उनके नाम इस प्रकार से हैं—अहमद सुल्तान, सूफ़ी अली, अली कुली खान इस्तलजू, तथा शाह रुख अफ़शार—तारीख-ए-फिरिश्ता, (मू० ग्रन्थ) पृ० २००-१; इस्कन्दर बेग तुर्कमान के अनुसार शाह ने बाबर की सहायता के लिए जिन अफसरों को भेजा उनके नाम इस प्रकार से हैं—शाह अहमद सुल्तान सूफी उग़ली, शाहरुख सुल्तान मुहरदार अफसार, आदि—'तारीख-ए-आलम आरा अब्बासी" (इस्फहान) भाग १. पृ० ३६-४०।

३. फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१।

उज़बेग शासक उबैदुल्लाह ख़ान ने करशी के दुर्ग में मोर्चा स्थापित किया।[1] बाबर ने करशी की ओर बढ़ने का निश्चय किया किन्तु उसके अधिकारियों ने उसे सुझाव दिया कि बुख़ारा को विजय करते ही करशी का दुर्ग आप आपने ही उस के हाथ में आ जावेगा। अतः उधर जाने की आवश्यकता नहीं। उनका यह सुझाव ठीक ही था, क्योंकि जैसे ही बाबर की सेना करशी के पास से निकली, उबैदुल्लाह ख़ान दुर्ग छोड़कर बुख़ारा भाग गया।[2] बाबर उसका पीछा करते हुए बुख़ारा पहुंचा। अन्त में उबैदुल्लाह ख़ान तुर्किस्तान की ओर भाग गया। बुख़ारा में प्रवेश करते हुए बाबर को अजीब अनुभव हुआ। यहाँ के लोगों ने उसका हार्दिक स्वागत किया।[3] बुख़ारा से वह समरकन्द की ओर बढ़ा। उसकी सफलता को देख कर उज़बेगों के छक्के छूट गए। उनमें इतनी शक्ति न थी कि वे उसका व उसके साथ की ईरानी सेना का सामना कर सकते। अतएव, उसके समरकन्द पहुंचने से पूर्व ही वे वहाँ से भी भाग खड़े हुए और उन्होंने तुर्किस्तान में शरण ली।[4] काबुल छोड़ने के लगभग दस महीने पश्चात् रजब माह के मध्य में ९१७ हि० : अक्टूबर, १५११ ई० में बाबर ने पुनः दूसरी बार समरकन्द में नौ वर्षों पश्चात् प्रवेश किया।[5] पुरानी स्मृतियाँ उसके मानस-पटल पर पुनः उभर आईं। किसी न किसी तरह से उसने अपनी मनोकामना पूर्ण कर ही ली। इस अवसर के बारे में लिखते हुए मिर्ज़ा हैदर दोग़लत ने लिखा है—

---

१. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २४५; ख्वान्दमीर के अनुसार जैसे ही बाबर के आने की सूचना मुहम्मद तीमूर सुल्तान तथा उबैदुल्लाह ख़ान को मिली, वे तुर्किस्तान की ओर भाग गए—"हबीब-उस-सियर," भाग ३; खण्ड ४, पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०० ।

२. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २४५, ।

३. वहीं ।

४. अहसान-उत-तवारीख़, (अनु०), भाग २, पृ० ५८; "हबीब-उस-सियर", भाग ३, खण्ड ४. पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०० ।

५. गुलबदन बेगम, "हुमायुँ नामा" (अनु०), पृ० ९१; फिरिश्ता," तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ३३; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३ ।

"मवराउन्नहर के नगरों के सभी छोटे-बड़े निवासियों, सम्मानित एवं दरिद्रों, प्रतिष्ठित लोगों एवं कारीगीरों, शहज़ादों तथा कृपकों ने समान रूप से पादशाह के आगमन पर हर्ष एवं प्रसन्नता प्रदर्शित की। प्रतिष्ठित लोगों ने उनका स्वागत किया तथा अन्य लोग नगर के सजाने में व्यस्त रहे। गलियाँ तथा बाजार कपड़ों एवं जरदोज़ी से सजाए गए। पादशाह रजब ९१७ हि० के मध्य में (अक्टूबर, १५११ ई०) ऐसे ऐश्वर्य एवं वैभव से नगर में प्रविष्ट हुए जिसके समान ऐश्वर्य किसी ने न देखा था। फिरिश्तों ने नारा लगाया कि आप सलामती से प्रविष्ट हों। मवराउन्नहर के लोग विशेष रूप से समरकन्द के निवासी वर्षों से उनके आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे, ताकि उनकी रक्षा की छाया उन लोगों के सिरों पर पड़े।"[1]

समरकन्द में प्रवेश करने के उपरान्त बाबर ने "किज़ीलबाशों के वस्त्र धारण कर लिए"[2] शाह के नाम का खुतबा पढ़ा और सिक्कों पर १२ ईमामों के नाम खुदवाए।[3] तत्पश्चात् उसने ईरानी सरदारों को उपहार भेंट में दिए और उन्हें वापस जाने की अनुमति प्रदान की।[4] बाबर के व्यवहार से सन्तुष्ट हो कर तथा समरकन्द को विजय करने में उसे सहायता प्रदान कर ईरानी अमीर एवं सैनिक वापस लौट गए। उनके जाने के पश्चात् ही बाबर को

---

१. तारीख-ए-रशीदी (अनु०) पृ० २४६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६२४।

२. तारीख-ए-रशीदी, (अनु०) पृ० २४६; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६२४।

३. अहसान-उत-तवारीख, (अनु०) भाग २, पृ० ५८; इस्कन्दर बेग के अनुसार बाबर ने शाह का नाम खुत्बा में पढ़ा—"तारीखे आलम आरा-ए-अब्बासी," भाग १, पृ० ४०; नफायसुल मआसीर के रचयिता ने बाबर द्वारा शाह का नाम खुत्बा में पढ़े जाने का उल्लेख नहीं किया है—रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४९।

४. हैदर मिर्ज़ा के अनुसार समरकन्द में प्रवेश करने से पूर्व ही बाबर ने ईरानी सेनापतियों को वापस कर दिया—तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २४६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६२४; इस्कन्दर बेग तुर्कमान, "तारीख-ए-आलम आरा-ए-अब्बासी", भाग १, पृ० ४०।

गहन स्थिति का सामना करना पड़ा । अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, शाह इस्माईल के साथ उसने ऐसा समझौता किया था, जिसका परिणाम उसे अब भुगतना पड़ा । यदि वह समझौते की शर्तों को कार्यान्वित न करता तो शाह ईस्माईल के प्रकोप का भाजन वह बन जाता । यह सोचकर उसने अपना वचन निभाया । वचन का पालन करते समय उसने यह ध्यान न दिया कि इसका प्रभाव समरकन्द की सुन्नी जनता पर क्या पड़ेगा ? क्या समरकन्द के लोग शिया-धर्म के प्रसार करने वाले व्यक्ति को वहां रहने देंगे ? अथवा उसका साथ देंगे? मिर्ज़ा हैदर दोघलत ने उसकी स्थिति का निरुपण करते समय ठीक ही लिखा है कि यद्यपि आवश्यकता के समय पादशाह ने किज़लीबाशों के वस्त्र धारण कर लिए थे, जो नितान्त कुफ़ अपितुपूर्णरूप से अधीन था[1] किन्तु ईरानी सरदारों के चले जाने के पश्चात् जब उसे मालूम हुआ कि उसकी शाह की शर्तों का पालन करना लोगों को अच्छा न लगा तो उन्होंने मुहम्मद साहब के सुन्नत का मुकुट धारण किया ।[2] परन्तु इससे भी वहाँ के लोग सन्तुष्ट न हुए, क्योंकि वे जानते थे कि बाबर शाह इस्माईल की सहायता की उपेक्षा नहीं कर सकेगा और न ही वह इतना शक्तिशाली है कि उज़बेगों से अकेले युद्ध कर सके । जब समरकन्द की जनता ने यह देखा कि बाबर अपना ध्यान न किज़िलबाशों की दुष्टता की ओर दे रहा है और न अपनी शक्ति को सुदृढ़ करने की चेष्टा ही कर रहा है, तो उन्हें निराशा हुई । उनमें उसके प्रति जो स्नेह था वह धीरे-धीरे समाप्त हो गया । जब उन्होंने देखा कि बाबर तुर्कमानों की चापलूसी करने लगा है और उन लोगों से मेल बढ़ाने लगा है तो वे उससे और भी नाराज़ हो गए । वास्तव में अपने लक्ष्य की प्राप्ति करने का उद्देश्य, ईरानियों से सहायता लेने की नीति तथा उस सहायता की आवश्यकता ने ही बाबर को इस बात पर बाध्य कर दिया था कि वह सन्धि की शर्तों को बड़े बे मन से

---

१. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २४६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६२४ ।

२. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २४६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत," (बाबर), पृ० ६२४ ।

३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० २४६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ६२४ ।

पूर्ण करे। इसका परिणाम यह हुआ कि न तो वह अपने मित्र शाह इस्माईल के हृदय को जीत सका और न समरकन्द की जनता को ही पूर्णरूप से विश्वास दिला सका कि वे लोग उस समय तक शान्त रहें जब तक कि वह अपनी नीति बदल कर शाह की अधीनता से मुक्त न हो जावे। कुछ मास इसी तरह बीत गए और बाबर दोनों का विश्वास प्राप्त करने में असफल रहा।

कूटनीति के दायरे में अब बाबर तथा शाह इस्माईल सफ़वी दोनों एक दूसरे के आमने-सामने थे। बाबर पर अपना प्रभुत्व जमाने तथा दिखाने के लिए कि वह उसके आधीन है, शाह इस्माईल ने अपने राजभवन के प्रबन्ध-कर्ता जान ईशाक आक़ा को बाबर के पास उपहार, जो उसके स्तर को देखते हुए उपयुक्त थे, भेजे तथा उसे बुखारा तथा समरकन्द प्रदान किया। मिर्ज़ा खान को हिसार शादमन, खतलान तथा बदख्शां प्रदान किए गए।[1] शाह के राज-भवन का प्रबन्धकर्ता जान ईशाक आक़ा ने समरकन्द पहुंच कर बाबर को शाह का सन्देश दिया। बाबर को जब शाह का सन्देश मिला तो उसे अपनी स्थिति का ज्ञान हुआ कि वह शाह इस्माईल के आधीन एक अमीर के रूप में है। अब उसके सामने दो में से एक ही रास्ता था। समरकन्द को ईरानियों के हाथ में समर्पित कर काबुल वापस लौट जाय अथवा अपने आत्म-सम्मान को शाह के चरणों में समर्पित कर दे। बाबर कुछ समय तक शान्त रहा। उसने अहमद बेग सूफ़ी उग़ली तथा शाह रुख बेग के हाथों शाह इस्माईल के लिए उपहार भेजे और उन्हें हिरात वापस जाने की अनुमति प्रदान की।[2] किन्तु जान बूझकर उसने मुहम्मद जान ईशाक को रोक लिया। जब बाबर ने देखा कि दैनिक कार्यवाहियों में ईरानी हस्तक्षेप करने लगे हैं और लोगों पर अत्याचार कर रहे हैं तो उसने जान ईशाक से स्पष्ट शब्दों में कहा कि शाह

---

१. ख्वान्द मीर जान ईशाक आक़ा को बाबर के पास आने के बारे में तो अवश्य लिखता है परन्तु यह नहीं लिखता है कि शाह ने समरकन्द तथा बुखारा बाबर को प्रदान किए तथा मिर्ज़ा खान को शादमन, खुतलान, तथा बदख्शां दिए—हबीबउस्सियर, भाग ३, खण्ड ४. पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीनभारत" (बाबर), पृ० ६०० ।

२. हबीबउस्सियर, भाग ३ खण्ड ४ पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०० ।

इस्माईल ने जो सम्मान उसे प्रदान किया है उससे वह सन्तुष्ट नहीं है।' मुहम्मद जान ईशाक ने तुरन्त शाह को गुप्त रूप से सूचित किया कि उसे पूर्ण विश्वास है कि बाबर के मन में विद्रोह की भावना उपज रही है और वह स्वतंत्र होना चाहता है। बाबर के स्वतंत्र विचारों को देखकर तथा जिस प्रकार उसने व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया था, दोनों से इस बात की पुष्टि हो जाती थी कि वह शाह के आधीन नहीं रहना चाहता था। मुहम्मद जान इशाक आका ने शाह के पास पुनः इस सम्बन्ध में अपने विचार लिख कर भेजे। मुहम्मद जान की दोनों रिपोर्टों के आधार पर शाह ने अपने सेनाध्यक्ष नज्म-उस-सानी को आदेश दिया कि वह बाबर को उसकी आधीनता स्वीकार करने पर बाध्य करे।[1]

इससे पूर्व कि नज्म-उस-सानी, ज़ैनल आबदीन, बेग सफी, पीरी बेग कज्जर, तथा बन्दिज़ान रूमूलू आदि व्यक्तियों के नेतृत्व में ११,००० सैनिक आगे बढ़ कर बाबर पर आक्रमण करते, इसी बीच समरकन्द में कुछ गहन राजनैतिक परिवर्तन हुए, जिसके कारण उनका आगे बढ़ना व्यर्थ हो गया। उबैदुल्लाह खान उज़बेग को बाबर तथा शाह इस्माईल में बढ़ते हुए तनाव के बारे में सूचना मिली और यह भी मालूम हुआ कि ईरानी सेनाएं अब समरकन्द में नहीं है। अतएव उसने खोए हुए प्रदेशों को वापस लेने का दृढ़ संकल्प किया। अपने सैनिकों को लेकर वह तुर्किस्तान से ताशकन्द व बुखारा की ओर बढ़ा।[2] उजबेगों ने ताशकन्द तथा बुखारा पर आक्रमण किया और

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३५५; हबीब-उस-सियर, भाग ३ खण्ड ४, पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ६००; प्रो० रशब्रुक विलियम्स का यह मत है कि यदि बाबर सन्धि की शर्तों को स्वीकार न [illegible] तो ठीक था, उसे किसी प्रकार की कठिनाई का सामना न करना पड़ता। किन्तु हम देखते हैं कि अपने ईरानी सहायकों को विदा करने के पश्चात् तथा सन्धि की शर्तों की अवहेलना करने के पश्चात् भी बाबर स्थिति पर काबू न पा सका। अतएव प्रो० रशब्रुक विलियम्स का मत इस दृष्टि से उचित नहीं प्रतीत होता है, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी," पृ० १०५-१०६।

२. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २५६।

निकटवर्ती प्रदेशों पर छापा मारना प्रारम्भ किया। इस प्रकार बाबर को अब दो शत्रुओं का सामना करना पड़ा। उसके साथ कुछ ही विश्वस्त सैनिक थे।[1] फिर भी उसने आक्रमणकारियों का सामना करने का निश्चय किया। उसने एक सेना ताशकन्द की रक्षा करने के लिए भेजी और दूसरी सेना स्वयं लेकर बुखारा की ओर सुल्तान तीमूर को आगे बढ़ने से रोकने के लिए आगे बढ़ा। मुहम्मद फ़रीद तरखान[2] ने बाबर से थोड़ी देर प्रतीक्षा करने के लिए कहा और उसे राय दी कि पहले वह सैनिक एकत्र कर ले तब बुख़ारा की ओर बढ़े पर बाबर ने एक बात न मानी। बाबर का आगे बढ़ना ठीक ही था। उज़बेगों की संख्या बहुत कम थी, अतएव उसके आगे बढ़ने की सूचना पाकर उबैदुल्लाह ख़ान ने पीछे हटना प्रारम्भ किया। बाबर ने उसका पीछा किया। उबैदुल्लाह ख़ान का पीछा करता-करता वह कुल-ए-मलिक पहुंचा, जहां उसे मालूम हुआ कि मुहम्मद तीमूर सुल्तान तथा जान बेग के नेतृत्व में उसकी सहायता के लिए उज़बेग सेनाएं पहुंच गई हैं।

बाबर ने युद्ध करना ही उचित समझा। उसने शीघ्र ही अपने सैनिक एकत्र किए और शत्रु पर आक्रमण कर दिया तथा अनेक उज़बेगों को मौत के घाट उतार दिया। अरुस बेग, कुपुक बी, अमीर ख्वाजा किकरात[3] तथा अन्य उज़बेग सरदार बन्दी बना लिए गए और बाबर के सामने लाए गए। बाबर ने उन्हें मृत्यु-दण्ड दिया। यह सोच कर कि विजय उसके हाथ लगी है, वह निश्चिन्त हो गया। किन्तु कुछ उज़बेग, जो कि युद्ध स्थल में अब भी उपस्थित थे तथा लूटमार कर रहे थे, पुनः एकत्रित हुए और उन्होंने बाबर पर आक्रमण कर उसे बुरी तरह परास्त कर दिया। उबैदुल्लाह ख़ान ने उसका

---

१. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २५६।

२. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २५६; ख्वान्द मीर ने उसका नाम माज़िद तरखान दिया है—"हबीब-उस-सियर", भाग ३ खण्ड ४ पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर), पृ० ६०१।

३. हसन-ए-रुमुलू ने उसका नाम ख्वाजा अहमद कुनकुरात दिया है—अहसान-उत-तवारीख़ (अनु०) भाग २, पृ० ६०; हबीब-उस-सियर, भाग २, खण्ड ४, पृ० ६६।

पीछा किया और बुख़ारा की ओर खदेड़ दिया। कुल-ए-मलिक का युद्ध सफर ९१८ हि० : अप्रैल-मई, १५१२ में हुआ।[1]

बाबर की आयु अभी तीस वर्ष भी न हुई थी, कि विजय के उपरान्त पराजय का मुंह उसे देखना पड़ा। उज़बेग उसका पीछा कर रहे थे अतः वह

---

१. किसी भी इतिहास में कुल-ए-मलिक के युद्ध का पर्याप्त विवरण नहीं मिलता। मिर्ज़ा हैदर दोघलत के अनुसार "पादशाह ने उबैदुल्लाह ख़ान का पीछा किया और कोल मलिक के समीप उसके पास पहुंच गए और उसके पीछे हटने पर विवश किया। उबैदुल्लाह ख़ान के साथ ३००० आदमी थे और पादशाह के साथ ४,०००० । उबैदुल्लाह खां ने यह आयत पढ़ कर कि, "और कितनी बार एक छोटी सेना ने बड़ी सेना को ईश्वर के आदेश से पराजित कर दिया।" पादशाह का मुकाबला किया और घोर युद्ध होने लगा। परमेश्वर ने पृथ्वी पर बसने वालों, विशेषरूप से बादशाहों एवं शासकों पर यह बात स्पष्ट कर दी है कि सेना की अधिकता एवं अस्त्र-शस्त्र पर कोई भरोसा न करना चाहिए कारण कि वह अपनी शक्ति से जिसे चाहता है उसे विजय प्रदान करता है।

इस प्रकार उबैदुल्लाह ख़ान ३००० टूटे-फूटे आदमियों को लेकर जो ८ मास पूर्व इसी सेना के मुकाबले में भाग चुके थे, इस समय ४०,००० की एक पूर्ण रूप में एवं उत्तम घोड़ों पर सवार सेना को पराजित कर दिया। यह घटना सफर, ९१८ हि०। अप्रैल-मई, १५१२ ई० को घटी"—"तारीख़-ए-रशीदी" (अनु०), पृ० २६०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६२४-२५; गुल बदन बेगम ने भी इस युद्ध का कुछ ही शब्दों में विवरण दिया है—देखिए, 'हुमायुं नामा' (अनु०), पृ० ९१; "नफ़ायसुल मआसीर", रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४९; अहसान-उत-तवारीख़ (अनु०), भाग २, पृ० ६०; हबीब-उस-सियर, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०१; बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३५७; अरस्किन, भाग १, पृ० ३२२; रशब्रुक विलियम्स, पृ० १०७; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता," (मूल ग्रन्थ), पृ० २०१; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २३३; इस्कन्दर बेग तुर्कमान, "तारीख़-ए-आलम आरा-ए-अब्बासी", भाग १, पृ० ४०-४१।

अधिक दिनों तक बुखारा में न ठहर सका।[1] उसके पश्चात् वह समरकन्द पहुंचा, जहाँ उसने वातावरण अपने अनुकूल न पाया। अतः अपना सामान बटोर कर वह हिसार शादमन की ओर चल दिया।[2] उसके वहाँ से रवाना होने के कुछ ही समय उपरान्त उज़बगों ने समरकन्द तथा बुखारा दोनों ही शहरों को अधिकृत कर लिया। तदुपरान्त कुछ ही सप्ताह के बाद उज़बेग बाबर को हिसार से भगाने (जमादी अव्वल, ९१८ हि० : जुलाई-अगस्त १५१२ ई०) के लिए रवाना हुए।[3]

हिसार पहुंच कर बाबर ने दुर्ग को सुरक्षित किया। उसने शाह इस्माईल सफ़वी के पास भी एक राजदूत भेजा और अपने पराजय की सूचना उसे दी तथा उससे अनुरोध किया कि वह पुनः उसे सहायता भेजे। इस बीच शाह को इन सभी बातों की सूचना मिल चुकी थी, अतएव नज्म-उस-सानी, जो कि उसके आदेशों की प्रतीक्षा कर ही रहा था, को उसने आदेश दिया कि वह बाबर की सहायता के लिए आगे बढ़े।[4] बाबर ने इसी बीच, मिर्ज़ा ख़ान (वएस) की सहायता से हिसार शहर की रक्षा के हेतु चारों ओर खाई भी खुदवा

---

१. अहसान-उत-तवारीख, (अनु०), भाग २, पृ० ६०।

२. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० २६०; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर एण्ड बाबर हुमायुं", भाग १, पृ० ३२२; गुलबदन बेगम," हुमायुं नामा," (अनु०), पृ० ९१; फिरिश्ता ने कोहज़र-शादमन नामक स्थानों का नाम ही दिया है—'तारीख़-ए-फिरिश्ता' (मू० ग्रन्थ), पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३४; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३३।

३. हबीब-उस-सियर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०१; तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०) पृ० २६०; अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २, पृ० ६०; बाबर नामा, भाग १, पृ० ३५९; रशब्रुक विलियम्स, पृ० १०७; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायुं, भाग १, पृ० ३२२; नफायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४९।

४. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६०; हबीब-उस-सियर में बाबर का शाह से दूसरी बार सहायता मांगने के सम्बन्ध में कोई उल्लेख नहीं है—देखिए, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०२।

दी, गलियों तथा कूचों को मिट्टी की दीवारों से बन्द करवा दिया और बल्ख के वली बैरम बेग करामलू से भी सहायता माँगी।[1] बैरम बेग ने उसकी सहायता के लिए अमीर मुहम्मद शीराज़ी के नेतृत्व में ३०० सैनिक भेजे। उज़बेगों की ओर से छापा मारने वाले दलों ने जब बाबर को देखा कि वह मुकाबला करने के लिए तैयार है तो वे समरकन्द (मवाउन्नहर) वापस लौट आए[2]।

कुल-मलिक के युद्ध के पूर्व ही नज्म-उस-सानी खुरासान की सीमाओं पर पहुँच गया था। बाबर की पराजय की सूचना पाकर वह शाह के आदेशों की प्रतीक्षा करता रहा। बल्ख में वह २० दिनों तक रहा। यहाँ उससे हिरात का गवर्नर हुसैन बेग लाला अपनी सेना के साथ आकर मिला। बैरम बेग ने भी उसका स्वागत किया। बल्ख में ठहर कर उसने अपनी सैनिक तैयारियाँ पूरी की। यहीं उसे शाह इस्माईल सफ़वी का आदेश प्राप्त हुआ कि वह तुरन्त हिसार जाकर बाबर की सहायता करे। नज्म उस-सानी ने अमीर ग्यासुद्दीन मुहम्मद को बाबर के पास भेजा कि वह शाह की ओर से उसमें विश्वास पैदा कर दे तथा उससे कहे कि वह तिरमीज़ में अपनी सेनाओं के साथ उससे मिले।[3] तदुपरान्त नज्म-उस-सानी ने भी कूच किया। उसने आक्सस को पार किया और तिरमीज़ की घाटी में प्रवेश कर नदी को पार किया (रजब, ९१८:हि० सितम्बर-अक्टूबर, १५१२ ई०)। अभी वह तिरमीज़ पहुँच भी न पाया था कि ग्यासुद्दीन मुहम्मद ने उसे वापस आकर सूचना दी कि बाबर हिसार से चल दिया है और अब उसके पास शीघ्र ही पहुँचने वाला है। यह सुनकर नज्म-उस-सानी कुछ विशिष्ट एवं गणमान्य अमीरों को लेकर बाबर का स्वागत करने के लिए आगे बढ़ा। दोनों बन्दी आर्हीन के निकट एक दूसरे से मिले और उन्होंने एक दूसरे का अभिवादन किया। तत्पश्चात् वे कोहज़र की ओर बढ़े। दुर्ग के सेनाध्यक्ष ऊक फ़ौलाद सुल्तान ने विरोध करना उचित न समझ कर दुर्ग के द्वार खोल दिए। दुर्ग में प्रवेश करने के उपरान्त नज्म-उस-सानी ने उसे धोखे

---

१. हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६६-६७ रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०२; हसन-ए-रुमलू ने उसका नाम बैरम खान करामानी लिखा है—अहसान-उत-तवारीख (अनु०) भाग २, पृ० ६० ।

२. अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २, पृ० ६०; हबीब-उस-सियर, रिज़वी, मुग़लकालीन भारत (बाबर), पृ० ६०२ ।

३. हबीब-उस-सियर, रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०२,

से बन्दी बनाकर कुतुज़-युज़बेगी तथा उसके अन्य अनुचरों के साथ उसे मौत के घाट उतार दिया।[1] कोहज़र से संयुक्तसेनाएं करशी की ओर बढ़ी और उन्होंने करशी के दुर्ग को जीत लिया। नज्म-उस-सानी ने दुर्ग को विजित करने के उपरान्त वहाँ के गवर्नर शैख़ीम मिर्ज़ा उज़बेग को १५००० उजबेगों के साथ मौत के घाट उतार दिया।[2] उसकी यह कार्यवाहियाँ बाबर चुप चाप देखता रहा। करशी से संयुक्त सेनाएं बुख़ारा की ओर बढ़ी, जहाँ उबैदुल्लाह ख़ान उज़बेग डट कर बैठा हुआ था। उन्होंने पहले गज़दवान के दुर्ग को विजय करने का विचार किया। अतएव वे उस ओर रवाना हुए।[3] चार मास तक मुहम्मद तीमूर सुल्तान ने उनका सामना किया। यह देख कर कि यदि बाबर ने इस दुर्ग को जीत लिया तो पुनः उन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ेगा, उबैदुल्लाह ख़ान तथा जानी बेग सुल्तान ने उजबेगों को एकत्र किया और वे मुहम्मद तीमूर सुलतान को सहायता देने के लिए चल पड़े। इसी बीच तीमूर सुल्तान चुपके से शत्रु की आँख बचाकर दुर्ग से भाग कर उबैदुल्लाह ख़ान से जाकर मिल गया। इस घटना से कुछ समय पूर्व नज्म के कुशल सेनाध्यक्ष कमालुद्दीन ने उसे सुझाव दिया था कि वह दुर्ग पर से घेरा उठा ले, क्योंकि रसद की कमी हो जाने से कहीं ऐसा न हो कि उज़बेग उन्हें चारों ओर से घेर कर उन पर आक्रमण कर दें।[4] बाबर ने भी उसे इसी प्रकार के सुझाव दिए, परन्तु वह अपनी मनमानी करता रहा। जब स्वयं नज्म को यह आभास हुआ कि दुर्ग को विजित करने में उसे सफलता न मिलेगी तो उसने पीछे हटने का निश्चय किया। इससे पूर्व कि वह अपनी सेनाओं को पीछे हटा सकता

---

१. अहसान-उत-तवारीख़ (अनु०) भाग २, पृ० ६०-६१।

२. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०) २६०; अहसान-उत-तवारीख़ (अनु०) भाग २, पृ० ६१; हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६७-८; रिज़वी, "मुग़ल-कालीन भारत", (बाबर), पृ० ६०३, फ़िरिश्ता "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता, (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१, ब्रिग्स, भाग २, पृ० ३४।

३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६१; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० ३४।

४. हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड, ४, पृ० ६८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०२-६०५।

उजबेगों ने ईरानियों व मुग़लों को घेर लिया और उन पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार ३ रमज़ान, ९१८ हि० : २२ अक्टूबर, १५१४ ई० को उजबेगों तथा बाबर व नज्म की सेनाओं में घोर युद्ध हुआ।[1] इस युद्ध में उजबेगों ने संयुक्त सेनाओं को पराजित कर नज्म को बन्दी बना कर मार डाला। अनेक ईरानी सरदार भाग खड़े हुए। बाबर भी जान बचाकर हिसार की ओर भाग गया[2]।

गज़दवान के युद्ध में पराजय का कारण केवल नज्म-उस-सानी ही था।[3] उसी के घमण्डी स्वभाव के कारण ही संयुक्त सेनाओं की पराजय हुई। यह सोचना

---

१. लुबत-उत-तवारीख में ७ रमज़ान, ९१८ हि० है। बाबर नामा में ३ रमज़ान, ९१८ हि० तो है परन्तु श्रीमती बेव्रिज ने अंग्रेजी तारीख १२ नवम्बर, १५१४ ई० दी है, बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३६१; मिर्ज़ा इस्कन्दर के अनुसार गज़दवान का युद्ध ३ रमज़ान, ९१८ हि० को हुआ, उस दिन उसके अनुसार रविवार था, परन्तु ३ रमज़ान को शुक्रवार पड़ता है। अतः मिर्ज़ा इस्कन्दर ने दिन ग़लत बताया है, अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर-एण्ड हुमायूँ" भाग १, पृ० ३२५ (नोट); इसी प्रकार हाजी-उद-दबीर, ख्वान्द मीर तथा हसन-ए-रुमलू ने ३ रमज़ान, ९१८ ई० ही युद्ध की तिथि दी है।

२. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६१; हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६८-६९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६०४-६०५; आलम-आरा-ए-अब्बासी, पृ० १९; अहसान-उत-तवारीख (अनु०), भाग २, पृ० ६२; फिरिश्ता के अनुसार इस युद्ध के उपरान्त बाबर पुनः कोहफर की ओर भाग खड़ा हुआ—"तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहम्मडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३४; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १, पृ० २३४।

३. आलम-आरा-ए-अब्बासी के रचयिता ने बाबर को ही इस युद्ध में संयुक्त सेनाओं की हार का कारण बताया है। उसने लिखा है कि बाबर को पार्श्व दल का नेतृत्व प्रदान किया गया था। जब उसने देखा कि युद्ध में बैरम बेग बुरी तरह से घायल हो गया है तथा ईरानी सेना बुरी तरह पराजित हो चुकी है, तो वह हिसार की ओर भाग खड़ा हुआ—भाग, पृ० ३९, ४०; ख्वान्द मीर, हसन-ए-रुमलू तथा अन्य इतिहासकारों के अनुसार नज्म-उस-सानी ही

कि बाबर के कारण गजदवान में संयुक्त सेनाओं की हार हुई या उसके चरित्र पर किसी प्रकार से सन्देह करना उचित न होगा। जिन परिस्थितियों में तथा जिस प्रकार युद्ध लडा गया, दोनों को देख कर हम कह सकते हैं कि युद्ध के परिणाम पूर्व निश्चित थे। संयुक्त सेनाओं की हार के कारण बाबर को जीवन में पुनः समरकन्द के सिंहासन पर बैठने का अवसर न मिल सका और न पुनः ईरानियों से किसी भी भी अभियान में सहायता ही प्राप्त हो सकी। इस पराजय ने बाबर का मुंह पश्चिम से पूर्व की ओर अवश्य फेर दिया।

गज़दवान से लौटते समय उसने अपने मुगल सैनिकों को उसके व्यवहार के लिए बुरी तरह फटकारा। जिसके फलस्वरूप जब नवम्बर, १५१४ ई० में वह हिसार पहुँचा तो यादगार मिर्जा, नासिर मिर्ज़ा, मीर अय्यूब तथा मुहम्मद अमीर ने मुगलों के साथ मिलकर बाबर के ऊपर एकाएक आक्रमण कर दिया और उसके अनेक सेवकों को मार डाला [1]। उन्होंने लूटमार की, तत्पश्चात् वे करातिग़ीन की ओर चले गए [2]। यह आक्रमण इतना भयानक था कि बाबर को भाग कर हिसार के दुर्ग में शरण लेनी पड़ी। विद्रोहियों के चले जाने पर बाबर को उज़बेगों के बढ़ते हुए चरणों की सूचना मिली। उसने हिसार का दुर्ग कुछ आदमियों के हाथ में सौप दिया और स्वयं कुन्दज़ में मिर्ज़ा खान से मिलने के लिए चल चल पड़ा। [3] कुछ समय पश्चात् उबैदुल्लाह खान ने हिसार के दुर्ग पर विजय प्राप्त कर

युद्ध में पराजय के लिए उत्तरदायी था। उसमें तथा अन्य ईरानी अफसरों में मतभेद प्रारम्भ में ही था, जिसके कारण हार हुई।

१. फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता, (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३४।

२. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६१; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" (१९६६) भाग २, पृ० ३४।

३. नफायसुल मआसिर के रचयिता के अनुसार बाबर इन विद्रोहियों को पराजित करने में असफल रहा और इसी कारण वह हिसार के दुर्ग को छोड़कर कुन्दुज चला गया। कुछ समय उपरान्त हिसार का दुर्ग उजबेगों ने अधिकृत कर लिया—नफायसुल मआसिर—रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४९-५०।

ली [1]। कुछ समय तक बावर कुन्दुज़ में मिर्जा ख़ान के पास रहा। यहाँ रह कर उसे अपने दिन बहुत ही कठिनाई से व्यतीत करने पड़े। जब उसने देखा कि तत्कालीन परिस्थितियों में वह न हिसार ही विजित कर सकता है और न समरकन्द ही, तो अपने कुछ साथियों के साथ हिन्दुकुश की पहाड़ियों को पार कर वह काबुल लौट गया [2]।

बावर द्वारा समरकन्द को विजित करने के लिए किए गए अन्तिम प्रयास का इस प्रकार अन्त हुआ। इस समय से लेकर, केवल जीवन के अन्तिम कुछ समय को छोड़ कर, ऐसा प्रतीत होता है कि बावर को पैतृक राज्य को पुनः प्राप्त करने में सफलता की कोई आशा न रही। भविष्य में अन्य अभियानों में वह इतना व्यस्त रहा कि पश्चिम की ओर मुंह मोड़ने की अभिलाषा होते हुए भी उधर की ओर वह मुंह न मोड़ सका। समरकन्द को भुला देना उसके लिए कठिन था और वह कैसे भुला भी सकता ? पिछले चार वर्षों में बावर को अनेक बार पराजय का मुंह देखना पड़ा तथा गहन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा किन्तु उनसे वह तनिक भी विचलित न हुआ। मनुष्य तथा प्रकृति दोनों उससे आँख-मिचौली का खेल खेलते रहे। उसे अपने मित्र शाह ईस्माईल सफ़वी तथा उसके सेनाध्यक्ष नज्म-उस-सानी के कारण पराजय का मुंह देखना पड़ा, तथा अपनी महत्वाकाँक्षाओं को तिलाँजलि देनी पड़ी। उसकी आँखों ने करशी में नज्म के कारण होने वाले घोर

---

१. तारीख-ए-रशीदी, (अनु०) पृ० २६१; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बावर एण्ड हुमायूँ", भाग १, पृ० ३२८-२६, बावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६१-६२, हबीब-उस-सियर, भाग ३, खण्ड ४, पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बावर), पृ० ६०५, नफ़ायसुल मआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बावर), पृ० ३५०।

२. बावर काबुल (९२१ हि०। १५१५ ई०) के प्रारम्भ में ही लौटा होगा— देखिए, अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बावर एण्ड हुमायूँ", भाग १, पृ० ३२८-९, नफ़ायसुल मआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बावर), पृ० ३५०; "अकबर नामा", (अनु०) भाग १, पृ० ९१; रिज़वी "मुगल कालीन भारत" (बावर) पृ० ३८१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३४; तारीख-ए-रशीदी (अनु०) पृ० २६३।

रक्तपात को देखा, गजदवान में पराजय का मुंह देखा और मध्य-एशिया में उज़बेगोंके बढ़ते हुए प्रभाव को। इन विभिन्न घटनाओं से उसका उत्साह किसी प्रकार से कम न हुआ और न उसके चेहरे पर शिकन ही आई। यह सोच-कर कि मध्य-एशियाई राजनीति में उसके लिए न कोई स्थान है, और न ही उसके पास ईरान के शाह या उज़बेगोंकी भांति इतने साधन ही हैं कि वह उनसे टक्कर लेता हुआ अपने लक्ष्य को पुनः एक बार प्राप्त कर जीवन पर्यन्त उस पैतृक राज्य को जिसका नाम अमीर तीमूरसे संलग्न हैं को बचाकर रख ही सकता है, उसने पूर्व की ओर ध्यान देना शुरू किया। पश्चिम का नैपोलियन तो वह न बन सका, किन्तु भाग्य ने उसे पूर्व का नैपोलियन अवश्य बना दिया।

पांचवा अध्याय

पूर्व की ओर

पूर्व की ओर

उज़बेगों ने जब बाबर को मवारुन्नहर से भगा दिया तो उसे काबुल लौटना पड़ा, जहाँ उसके भाई नासिर मिर्ज़ा, जिसे कि वह अपनी अनुपस्थिति में काबुल की देख-भाल करने के लिए छोड़ गया था, ने उसका स्वागत किया[1]। नासिर मिर्ज़ा ने शासन की बागडोर अपने भाई के हाथों में सौंप दी। उसकी स्वामिभक्ति से प्रसन्न होकर बाबर ने उसे गज़नी का प्रान्तपति बना रहने दिया। कुछ समय काबुल में रहने के पश्चात् नासिर मिर्ज़ा गजनी की ओर चल पड़ा। उपहारों एवं बाबर की कृपा से लदकर वह गजनी पहुँचा, जहाँ उसने अपना जीवन मदिरा-पान तथा नाच रंग में व्यतीत करना प्रारम्भ किया। अत्यधिक मदिरापान के कारण उसका स्वास्थ्य गिरने लगा और अगले वर्ष वह बीमार पड़ा और उसकी मृत्यु हो गई (९२१ हि० : १५१५ ई०)[2] उसकी मृत्यु के पश्चात् मुग़ल तथा चग़ताई अमीरों

---

१. मिर्ज़ा हैदर ने लिखा है कि जब सुल्तान नासिर मिर्ज़ा को बाबर के आने की सूचना मिली तो वह उसका, स्वागत करने के लिए काबुल के बाहर निकल पड़ा। अपनी स्वामिभक्ति एवं उसके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए, सुल्तान नासिर मिर्ज़ा ने कहा कि, "जब आपने काबुल के गौरवमयी राज्य से प्रस्थान किया तो आपने यहाँ के प्रशासन का भार मुझे देकर सम्मानित किया और मैंने शाही कोषागार की रक्षा तब तक की जबकि आपका भाग्य और ग्रह दोनों ही आपको पुनः सिंहासन पर बैठने के लिए नहीं ले आया। अब मैं आपसे यह आज्ञा चाहूँगा कि आप मुझे गजनी, जहाँ का प्रशासन इससे पूर्व मेरे हाथों में था, लौट जाने दें। मैं आपके प्रति कृतघ्न होऊंगा यदि आप कुछ अमीरों को जिनकी कि मुझे आवश्यकता है, मेरी सेवा में नियुक्त कर दें"—तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६४; नफायसुल मआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३५०; "अकबर नामा" (अनु०) भाग १ पृ० २३४।

२. तारीख-ए-रशीदी (अनु०), पृ० २६४,३५६ नफ़ायसुल-मआसीर, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ३५०, बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३६३।

ने एक दूसरे का साथ दिया और वावर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया[1]। उनके विद्रोह का मुख्य कारण क्या था, यह कहना कठिन है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वे गज़नी तथा उसके आधीनस्थ प्रदेशों पर वे अपना प्रभुत्व बनाए रखना चाहते थे; वे स्वतंत्र रूप से जीवन व्यतीत करना चाहते थे तथा बाबर की प्रतिष्ठा को एक ठेस और पहुँचाना चाहते थे, ताकि वह निःसहाय होजाय और उनके हाथों की कठपुतली बन जाय। साथ ही साथ वे यह भी चाहते थे कि ग़ज़नी में नासिर मिर्ज़ा के उत्तराधिकारी का प्रश्न भी तय कर दिया जाय[2]। बाबर की माँ का चाचा, शेरीम तग़ाई, जिसे अपने प्रभाव एवं शक्ति पर अत्यधिक विश्वास था, ने मीर मजीद ऊक़ा, उसके भाई ज़क़ा कुल कज़र, मौलाना पाशाग़री, मीर अहमद कोहबर और उसके भाई किता बेग के साथ मिलकर बाबर के विरुद्ध ग़ज़नी में विद्रोह कर दिया[3]। इस विद्रोह की सूचना पाते ही बाबर ने दोस्त बेग को ३०० अथवा ४०० आदमियों को विद्रोह दमन करने के लिए भेजा। सीर-कान के निकट दोनों दलों में संघर्ष हुआ, अन्त में विद्रोहियों की पराजय हुई। उनमें से अधिकाँश तो बन्दी बना लिए गए तथा मौत के घाट उतार दिए गए[4]। शेरीम तग़ाई और मीर मजीद भाग निकले[5]।

मुग़लों के विद्रोह को दबाने के पश्चात् बाबर ने अगले कुछ वर्ष शान्तिपूर्वक

---

१. मुग़ल उमराव में से यह थे—मीर शेरीम, उसका भाई मीर मजीद, ज़क़ा कुल नज़र, आदि। चग़ताई तथा ताजिक अमीरों में से थे, मौलाना बाबागूरी, उसका भाई बाबा शेख़, मीर अहमद, उसका भाई क़िता बेग, ताशकन्द का गवर्नर, मक़सूद क़रक, सुल्तान क़ुली आदि आदि—तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० ३५६-५७।

२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६४; अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ" भाग १, पृ० ३३४।

३. तारीख़-ए-रशीदी (अनु०) पृ० ३५६-५७।

४. अरस्किन, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया बाबर एण्ड हुमायूँ, भाग १, पृ० ३३५।

५. शेरीम तग़ाई भाग कर कशग़र पहुँचा। उसने सुल्तान सईद ख़ान के पास शरण ली। कुछ समय उपरान्त वह बाबर के पास आया और बाबर ने उसे क्षमा कर दिया। मीर मजीद तिब्बत की ओर भाग गया जहाँ उसकी मृत्यु हो गई—तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० ३५७।

व्यतीत किए। १५१६ ई० के पश्चात् धीरे धीरे भाग्य उसका साथ देने लगा। इसी वर्ष गुलरुख बेग़चिक के गर्भ से उसके तीसरे पुत्र अस्करी का जन्म हुआ[1]। लगभग इसी समय उसकी सेवा में एक आटोमन तुर्क, जिसका नाम उस्ताद अली था, आया। बाबर ने उसे तोपखाने विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया। कुछ महीनों पूर्व ही उसने अपनी सैनिक शक्ति को बढ़ाने तथा तोपों का प्रयोग करने का निश्चय किया था अतएव, इसी समय बाबर ने अपनी सेना में तुर्की तोपचियों को नियुक्त करना प्रारम्भ किया और उन्हें नई प्रणाली में प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया। जो सैनिक सुधार बाबर ने १५१५-१६ ई० में लागू किए उन्हीं के कारण उसके भाग्य का पलड़ा उसकी ओर झुकने लगा और युद्धों में उसकी विजय होती रही। यही नहीं तोपों तथा अश्वारोहियों के संयुक्त प्रयोग के सफल प्रयास के कारण उसे ख्याति मिली और वह संसार का एक महान् विजेता समझा जाने लगा।

लगभग एक वर्ष तक वह अपनी सेना को सुधारने के कार्य में लगा रहा। १५१७ई० में उसने कन्धार की ओर पुनः बढ़कर उस पर अधिकार स्थापित करने का निश्चय किया[2]। बाबर के आक्रमण की सूचना पाकर शाह बेग ने शाह इस्माईल सफ़वी से सहायता माँगी। शाह इस्माईल इस समय टर्की के सुल्तान के विरुद्ध अभियान में इतना व्यस्त था कि वह शाह बेग को किसी प्रकार की सहायता न दे सका। हाँ, उसने एक पत्र बाबर को इस आशय का अवश्य लिखा कि वह शाह बेग के साथ नम्र व्यवहार करे। बाबर ने भी पत्र का उत्तर नम्र शब्दों में ही दिया कि शाह बेग की आधीनता केवल दिखावा है। अतः वह उसकी सेवा में जाने के लिए उसे बाध्य कर देगा। बाबर कन्धार की ओर अग्रसर

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६४।

२. सैयद मुहम्मद मासूम द्वारा लिखित तारीखे सिन्ध में इससे पूर्व कन्धार पर बाबर द्वारा किए गए कई आक्रमणों का उल्लेख मिलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि १५१५ ई० के मध्य में मुग़लों के विद्रोहों को दबाने के पश्चात् बाबर ने कन्धार पर आक्रमण किया किन्तु बीमार पड़ जाने के कारण वह दुर्ग को विजित न कर सका। उसके लौटने से पूर्व शाही बेग ने उपहार भेज कर उससे सन्धि कर ली (पृ० ११०) जनवरी, १५१६ में बाबर ने पुनः दुर्ग पर घेरा डाला, किन्तु पुनः बीमार पड़ जाने के कारण उसे वापस लौटना पड़ा (पृ० १११)।

तो हुआ, किन्तु दुर्ग पर घेरा डालने के पश्चात् ही पुनः बीमार हो गया। अवरोध से तंग आकर शाह बेग ने अपनी ओर से हज़रत शेख़ आबू सईद पूरानी को सन्धि का प्रस्ताव लेकर बाबर के पास भेजा। बाबर ने सन्धि कर ली और वापस लौट गया[1]। इस सन्धि के पश्चात् बाबर तथा शाह बेग दोनों ही ने अपना ध्यान हिन्दुस्तान की ओर दिया।

बाबर ने १५१८ ई० में काबुल के उत्तर-पूर्व में स्थित चगन सराय को विजित किया तथा अफ़ग़ानों के पारस्परिक झगड़ों में भाग लेना प्रारम्भ किया। इसी समय शाह बेग ने भी सिन्ध के स्वतंत्र राज्य के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ किया। वहाँ जाम नन्दा की मृत्यु के पश्चात् उसका अल्प वयस्क पुत्र जाम फ़ीरोज़ गद्दी पर बैठा था तथा सिन्ध के उमरावों में परस्पर एक दूसरे को नीचा दिखाने की होड़ लगी हुई थी। उपयुक्त अवसर देखकर १८ ज़िलक़द, ९२४ हि० : २१ नवम्बर, १५१८ ई० को शाह बेग ने अपने १००० सैनिकों को सिन्ध की ओर रवाना किया। शाह बेग के इन सैनिकों ने कहान तथा बाग़बान पर पुनः छापे मारे, वहाँ के लोगों को लूटा और आगे बढ़ने के लिए मार्ग प्रशस्त किया[2]। अगले महीने में बाबर ने अफ़ग़ानों पर प्रभुत्व स्थापित करने तथा सियालकोट तक आगे बढ़ने की चेष्टा की[3]। अगले वर्ष पुनः वह चन्दावल तक बढ़ा और जब उसे ज्ञात हुआ कि अरग़ूनों ने काबुल पर आक्रमण कर दिया है तो वह वापस लौट गया[4]। ४ जनवरी, १५१९ ई० को वह बजौर के दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए बढ़ा। उसने

---

१. तारीखे-सिन्ध, पृ० १११; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६५४-५५।

२. तारीखे सिन्ध में इस घटना का उल्लेख किया गया है, किन्तु यह कहा गया है कि १७ ज़िलक़ाद, ९२१ हि० : २३ दिसम्बर, १५१५ ई० को शाह बेग ने अपने सैनिकों को सिन्ध की ओर भेजा, पृ० ११०।

३. ब्रिग्स, "हिस्ट्री आफ दी राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३५; ख्वाफी ख़ान, "मुन्तखब-उल लुबाब" भाग १, पृ० २५।

४. अरग़ूनों का इस समय काबुल पर आक्रमण करना या बाबर का सियालकोट तक बढ़ना तथा वहाँ से वापस होना तथा ४ जनवरी, १५१९ ई० को पुनः हिन्दुस्तान की ओर बढ़ कर बाजौर पर आक्रमण करना सम्भव नहीं मालूम होता है। बाबर इस समय चन्दावल तक ही बढ़ा होगा।

एक विश्वासपात्र दिलज़क अफ़ग़ान को वाजौर के दुर्ग के सेनाध्यक्ष हैदर कुली या उसके भतीजे के पास परामर्श देने के लिए कि वह दुर्ग को समर्पित कर दें, भेजा।[1] किन्तु उन लोगों ने दुर्ग समर्पित करने से इंकार कर दिया। वावर ने दुर्ग को घेर लिया और ७ जनवरी, १५१९ ई० को दुर्ग पर चारों ओर से आक्रमण कर दिया। उसने यह दुर्ग उस्ताद कुली की तोपों की सहायता से विजित किया। क़िले को अधिकृत करने के पश्चात् वावर ने वाजौर को ख्वाजा कलाँ को प्रदान कर दिया तथा उसकी सहायता के लिए अनेक सैनिक वहाँ रख दिए[2]।

वाजौर के दुर्ग को विजित करना वावर के लिए एक महत्वपूर्ण कार्य था। इस दुर्ग को विजित करने के उपरान्त ही उसकी सैनिक योजनाओं को एक नई दिशा मिली। वाजौर से वह हिन्दुस्तान कीओर वढ़ सकता था, अफ़गान जाति के विद्रोहों को दवा सकता था तथा साम्राज्य निर्माण की दिशा में पग उठा सकता था। उसकी "आत्मकथा" पढ़ने से यह वात स्पष्ट हो जाती है कि वावर ने अव तक पूर्व की ओर वढ़ने के सम्बन्ध में योजना वना ली थी और इसी योजना के अनुसार वह कार्य कर रहा था[3]। यदि ऐसा न होता तो अगले नौ महीनों तक वार-वार वह वाजौर के आसपास के प्रदेशों पर क्यों आक्रमण करता ?

वाजौर का प्रशासनिक प्रवन्ध करने के वाद वावर ८ जनवरी, १५१९ ई० को आगे वढ़कर वावा क़रा नामक गाँव में पहुँचा यहाँ पर शाह मन्सूर यूसुफ़ ज़ई, यूसुफ़ ज़ई कवीले का दूत आकर उससे मिला। वावर ने उसे एक कोट (तून) उपहार में दिया, तथा उसके द्वारा अन्य यूसुफ़ ज़ई के नेताओं के लिए धमकी भरे पत्र

---

१. वावर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६७।

२. वावर नामा, (अनु०) भाग १, पृ० ३६८-७०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० ६०-६२; गुलवदन वेगम, 'हुमायूँ नामा' (अनु०), पृ० ६१; अकवर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३६; फ़िरिश्ता, "तारीखे-फ़िरिश्ता', (मू० ग्रन्थ), पृ० २०१, ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० ३५।

३. प्रो० विलियम्स का विचार है कि १५१८ ई० में वाजौर पर वावर का आक्रमण करना केवल छापा मारने के उद्देश्य से ही था तथा उसका आगे वढ़ना किसी योजना का परिचायक नहीं है। "ऐन इम्पायर विल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० १११।

भेजे कि वे उसकी आधीनता स्वीकार कर लें[1]। ११ जनवरी से लेकर २० जनवरी तक वह उन कबीलों के नेताओं के उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। उसने अपना समय मदिरापान करने, आखेट तथा घुड़सवारी करने एवं आगे बढ़ने के लिए प्रबन्ध करने में व्यतीत किया। तत्पश्चात् २१ जनवरी, १५१८ ई० को वह सवाद के यूसुफ़ ज़ई अफ़ग़ानों के ऊपर आक्रमण करने के लिए बढ़ा उसने पंजकोरा बाजौर तथा चन्दावल नदियों के संगम पर पड़ाव डाला। यहीं उसके पास मन्सूर युसूफ़ ज़ई आया, जिसने आकर उसे बताया कि यूसुफ़ ज़ई अफ़ग़ान उसकी सत्ता स्वीकार करने से इन्कार कर रहे हैं। यह सुन कर बाबर आगे बढ़ा और उसने कहराज के निकट कहराज तथा पेश ग्राम की घाटी के मुहाने पर पड़ाव डाला तथा सवाद देश में प्रवेश किया। सवाद का सुल्तान अलाउद्दीन १८ जनवरी को उसकी सेवा में पहले ही उपस्थित हो चुका था। और अब उसको देखकर सुल्तान वएस सवादी ने भी आकर बाबर की सत्ता स्वीकार की तथा उसके साथ हो लिया। इन दोनों अफ़ग़ानों के साथ बाबर पंजकोरा की ओर बढ़ा। पंजकोरा के निकट पहुँच कर सम्भवतः सुल्तान वएस सवादी के सुझाव पर अपनी सेना के लिए ४००० खरवार चावल कर के रूप में कहराज वालों से वसूल करने के लिए आदेश दिया। उसने सुल्तान वएस को कर एकत्र करने के लिए भेजा[2]। कर का बोझ भारी था, अतः कृषक उसे देने में असमर्थ रहे। फलस्वरूप बाबर के सैनिकों ने उन्हें सताना प्रारम्भ किया। खाद्य सामग्री जब पर्याप्त मात्रा में प्राप्त न हो सकी तो बाबर ने हिन्दू बेग को पंजकोरा पर आक्रमण करने के लिए भेजा। हिन्दू बेग के बढ़ते ही लोग भाग खड़े हुए। वे अपने शत्रु के लिए भेड़, भैंसे, खाने-पीने का सामान छोड़ गए[3]। इसी प्रकार २६ जनवरी और २७ जनवरी को बाबर ने कुच बेग के अधीन सेनाएं निकटवर्ती प्रदेशों से खाने का सामान लाने के लिए भेजीं। तत्पश्चात् बाबर ने मन्दीश नामक गाँव में पड़ाव डाला। अभी वह इस स्थान पर पड़ाव डाले

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३७१-७३; गुलबदन बेगम, "हुमायूँ नामा" (अनु०) पृ० ८१; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३६।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३७३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ८४।

३. बाबर नामा (अनु०, भाग १, पृ० ३७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८५; गुलबदन बेगम, "हुमायूँ नामा" (अनु०) पृ० ८१।

हुए पड़ा ही था कि मलिक सुलेमान शाह का पुत्र मलिक शाह मन्सूर, जो कि यूसुफ़ ज़ई कबीले का नेता था, उसकी सेवा में पुनः उपस्थित हुआ। मलिक शाह मन्सूर यह चाहता था कि बाबर उसके देश को न लूटे और न बर्बाद करे। अतः उसने बाबर से मैत्री-सम्बन्ध स्थापित करने की चेष्टा की। अन्य कबायली नेताओं की चिन्ता न करते हुए उसने अपनी पुत्री का विवाह बाबर से करना स्वीकार किया। इस सम्बन्ध में बाबर ने उसके सामने पहले ही प्रस्ताव रखा था। बाबर के पास पहुँच कर उसने यह सूचना दी कि उसकी पुत्री यूसुफ़ ज़ईयों के उपहार के साथ आ रही है। इस प्रकार ३० जनवरी को मलिक शाह मन्सूर का भाई तौस खान यूसुफज़ई अपनी भतीजी को लेकर बाबर के पास पहुँचा। उसी दिन रात्रि में बाबर ने बीबी मुबारिका से विवाह किया और अपने हरम में उसका स्वागत किया[1]।

यूसुफ़ ज़ई अफ़गानों के साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित करने के उपरान्त कुछ दिनों तक बाबर पंजकोरा नदी तथा बाजौर के बीच घूमता रहा। इस अवधि में उसने अधिक से अधिक खाद्य-सामग्री एकत्रकर ली और सवाद देश पर आक्रमण करने की पूरी तैयारी कर ली। उस ओर बढ़ने से पूर्व ८ फरवरी, १५१९ ई० को उसने अपने बेगों तथा दिलज़ाक अफ़ग़ानों को बुलाकर उनसे परामर्श लिया। यह तय हुआ कि शरद्-ऋतु की फसल का समय समाप्त हो गया है, अतएव यदि सेना उस ओर बढ़ेगी तो उसे अनेक कष्ट उठाने पड़ेंगे, इसलिए यह उचित होगा कि अम्बहर तथा पानी-मानी मार्ग से होते हुए हशनगर के ऊपर सवाद नदी को पार करें तथा महूरा के सन्गूर और मैदान में जो यूसुफ़ ज़ई अफ़ग़ान तथा मुहम्मदी अफगान निवास कर रहे हैं उन पर आकस्मिक आक्रमण कर दें। इस अवसर पर यह भी निश्चय किया गया कि अगली शरद् ऋतु तक उसकी सेना यहीं प्रतीक्षा करेगी और इस बीच उसके सैनिक इन जातियों को कर देने पर बाध्य करेंगे। इसके पश्चात् बीबी मुबारिका को वह बाजौर के दुर्ग में छोड़ कर ख्वाजा खिज्र की ओर चल दिया।[2]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३७५; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३६-३७।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ३७६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६६।

ख्वाजा खिज्र पहुँचकर उसने ख्वाजा कलाँ को भारी सामान के साथ लमग़ान जाने की अनुमति दे दी। छापा मारने के उद्देश्य से बाबर ने अपने पास भारी सामान रखना उचित न समझा। अम्बाहर दर्रे को पार करता हुआ वह पानीमानी आया। इस स्थान से उसने औग़ून बिरदी को अफ़ग़ान जातियों के विषय में मालूम करने के लिए भेजा। बिना उपयुक्त सूचना प्राप्त किए हुए औग़ून बिरदी वापस लौट आया। अधिक समय तक यहाँ रुकना उचित न समझ कर बाबर पुनः चल पड़ा और शीघ्र ही उसने सवाद नदी पार की। उसने रुस्तम तुर्कमान को अफ़ग़ानों के बारे में पता लगाने के लिए भेजा। जैसे ही उसे सूचना मिली कि अफ़ग़ानों को उसके बढ़ने की सूचना मिल गई है वह तुरन्त उन पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा। उसने दिलज़ाक अफ़ग़ानों पर आक्रमण किया और उनमें से अनेक को मार डाला। दिलज़ाक अफ़ग़ानों पर उसे थोड़ी सफलता ही मिली। अतएव पीछे हट कर उसने कतलंग पर पड़ाव डाला और अपने गुप्तचरों को ख्वाजा मीर मीरान का पता लगाने के लिए भेजा। कतलंग से वह मक़ाम नामक स्थान पर पहुँचा, जहाँ ख्वाजा मीर मीरान से उसकी भेंट हुई [1]।

दिलज़ाक तथा यूसुफ़ ज़ई अफ़ग़ानों से कर वसूल करने तथा उन्हें दबाने के पश्चात् बाबर भीरा की ओर बढ़ा [2]। भीरा की ओर बढ़ते समय उसके सामने कई लक्ष्य थे। प्रथम, खाद्य-सामग्री प्राप्त करना, कबायली जातियों को आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य करना तथा सिन्ध नदी के उस पार के प्रदेशों की भौगोलिक दशा की जानकारी प्राप्त करना। यद्यपि उसके साथी यह नहीं चाहते थे कि वह इस ओर बढ़े, किन्तु बाबर ने उनकी तनिक भी परवाह न की और १५ फरवरी, १५१९ ई० को वह उस ओर चल पड़ा [3]। उसने मीर मुहम्मद तथा उसके बड़े और छोटे भाई को कुछ सैनिकों के साथ सिन्ध नदी के ऊपर तथा नीचे के

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ३७७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ९६-९७।

२. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३७७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ९७।

३. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३७७; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ९७।

घाटों के निरीक्षण करने के लिए भेजा [1]। तत्पश्चात् उसने अपनी सेना को नदी पार करने के लिए रवाना किया और स्वयं सवाती की ओर गैंडों का शिकार खेलने के लिए चल पड़ा। संध्या समय जब वह पुनः शिविर में वापस लौटा तब तक घाटों के बारे में पूर्ण सूचना आ चुकी थी [2]। अतः १७ फरवरी, १५१९ ई० को नदी को को पार कर वह नीलाब पहुँचा, जहाँ कि नीलाब के निवासी उसके अभिवादन हेतु पहुँचे और उन्होंने उसे ३०० शाहरुखियाँ भेंट में दीं [3]। दूसरे दिन जब मध्यान्ह तक पूरी सेना नदी पार कर चुकी तो उसने पुनः यात्रा प्रारम्भ की और कचाकोट पहुँचा। नदी को पार कर तथा संगदकी दर्रा पार करके वह आगे बढ़ा और सूहान [4] नदी पार की तथा उसी के किनारे पड़ाव डाला। लगातार कूच करने के कारण उसके सैनिक थक चुके थे और घोड़े भी पस्त हो चुके थे अतः बहुत बड़ी संख्या में दोनों को ही उसे पीछे छोड़ देना पड़ा। भीरा की ओर बढ़ते समय बाबर को कहीं भी किसी विरोध का सामना न करना पड़ा था। जब भीरा १४ मील उसके पड़ाव के स्थान से शेष रह गया तो उसने लंगर खान को मलिक हसन, जो कि नीलाब तथा भीरा के बीच में रहने वाली जनजूहा जाति का सरदार था, के पास सन्धि का प्रस्ताव लेकर भेजा। मलिक हसन लंगर खान का मामा था, अतएव लंगर खान ने बड़ी ही सरलता से उसे काबल के शासक की आधीनता स्वीकार करने के लिए मना लिया। लंगर खान के साथ ही मलिक हसन बाबर की सेना में उपस्थित हुआ और उसने बाबर को भेंट में एक जीन सहित घोड़ा प्रदान किया [5]।

---

१. बाबर नामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३७८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ० ९७।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३७८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ० ९८।
३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३७८–७९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर), पृ० ९८; गुलबदन बेगम के अनुसार चार लाख शाहरुखियाँ— "हुमायूं नामा", (अनु०) पृ० ९२; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २३०–३१;
४. सिन्ध तथा झेलम के मध्य में झेलम नदी की एक सहायक नदी।
५. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ९९; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४ पृ० २३१।

यूसुफ़ज़ई कबीले के नेता मलिक शाह मन्सूर तथा जनजूहा कबीले के नेता मलिक हस्त ने जब बाबर की आधीनता स्वीकार कर ली तो उसका साहस और बढ़ गया और उसने हिन्दुस्तान की भूमि तथा वहां के लोगों पर अधिकार जमानेका दावा किया। ऐसा प्रतीत होता है कि मलिक हस्त से उसे हिन्दुस्तान की आन्तरिक दशा के विषय में पूरी-पूरी जानकारी मिल गई। यही कारण है कि बहुत ही आत्म-विश्वास के साथ वह लिखता है, "क्योंकि मेरी हार्दिक इच्छा सर्वदा हिन्दुस्तान पर अधिकार जमाने की रही है, और यह विभिन्न प्रदेश भीरा, खुशाब, चिनाब, तथा चीनी-उत किसी समय तुर्कों के आधीन रह चुके हैं, अतः मैं उन्हें अपना ही समझता था और उन्हें चाहे शान्तिपूर्वक और चाहे युद्ध करके, जिस प्रकार सम्भव होता, अपने अधिकार में करना निश्चय कर लिया था। इन कारणों से इन पहाड़ियों के प्रति सद्व्यवहार परमावश्यक था, अतः यह आदेश दिया गया कि, "इन लोगों के गल्ले तथा मवेशियों को किसी प्रकार की कोई हानि न पहुंचाई जाय, यहाँ तक कि इनके सूत के टुकड़े तथा टूटी हुई सुई की भी न हानि होने पाये।"[1]

बड़े आत्मविश्वास के साथ वह भीरा शहर की ओर बढ़ा। कल्दा-कहार तथा हमतातु दर्रे को पार करते हुए बाबर शहर के निकट पहुंचा। मार्ग में ही लोगों ने उसका स्वागत किया, उसकी आधीनता स्वीकार की तथा उसे पेशकश भेंट में दी। तत्पश्चात् उसने अब्दुल रहीम शग़ावल को भीरा के निवासियों को यह बताने के लिए भेजा कि वे भय न करें क्योंकि उसके सैनिक किसी प्रकार की लूट मार न करेंगे[2]। बाबर ने चीर्ख के कुरबन तथा स्वास्त के अब्दुल मलूक को समाचार लाने के लिए भेजा। भीरा के विषय में पूर्ण रूप से जानकारी प्राप्त

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८८; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २३२।

२. बाबर ने उनके पास यह सन्देश भेजा कि, "यह प्रदेश तुर्कों के आधीन होने के कारण हमारी सम्पत्ति में प्राचीनकाल से है। तुम लोग भय या चिन्ता के कारण कोई ऐसा कार्य न कर बैठना जिससे यहाँ के निवासियों को हानि हो। हम यहाँ के लोगों की रक्षा कर रहे हैं, और यहाँ किसी प्रकार की कोई लूट मार न होगी।"—बाबरनामा, (अनु०), भाग १, पृ० ३८१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत," (बाबर), प० १००।

करने के पश्चात् बाबर ने अपनी सेना को दायें, बाएं और केन्द्रीय भागों में विभाजित कर सुव्यवस्थित किया, ताकि आवश्यकता पड़ने पर वह युद्ध भी कर सके। तत्पश्चात् वह भीरा की ओर बढ़ा। भीरा के समीप पहुंचते ही, दौलत खां यूसुफ़ खेल का पुत्र अली खां, के सेवकों में से सीकतु का पुत्र दीवा हिन्दू तथा भीरा के गणमान्य व्यक्ति बाबर के पास आए और उन्होंने उसका अभिवादन कर उसकी आधीनता स्वीकार की तथा उपहार दिए[1]। बेहत नदी के तट पर पहुंच कर उसने पड़ाव डाला और रात वहां व्यतीत की। दूसरे दिन उसने अपनी सैनिक टुकड़ियों को चारों ओर भेजा ताकि वे गल्ला, वसूल करके लाएं। उसी दिन बाबर ने भीरा में प्रवेश किया। सागर खान जनजूहा ने आगे बढ़कर बाबर का स्वागत किया तथा उसकी आधीनता स्वीकार की। दो दिन पश्चात् २३ फरवरी, १५१९ को भीरा के चौधरियों को बाबर ने बुलाया। उन्होंने चार लाख शाहरुखी माले-अमन (शान्ति प्रदान करने के कर के रूप में) देना निश्चित् किया[2]। तत्पश्चात् बाबर ने कर वसूल करने वालों को नियुक्त, कर, कर वसूल करने के लिए उन्हें भेजा। बाबर ने हैदर अलम दार को भीरा तथा खुशआब के मध्य रहने वाली बिलोची जाति को भी आधीनता स्वीकार करने पर बाध्य करने के लिए भेजा। इसी समय खुशआब के निवासियों ने भी बाबर की आधीनता स्वीकार कर ली। बाबर ने शाह शुजा के पुत्र शाह हसन अरग़ून को खुशआब का प्रान्त अपने हाथों में लेने के लिए रवाना किया[3]।

पिछले तीन या चार दिनों में स्थानीय सरदार बाबर के पास निरन्तर आते रहे तथा उसकी आधीनता स्वीकार करते रहे। प्रश्न यह उठता है कि उन्होंने बाबर का सामना क्यों नहीं किया? इसका केवल एक कारण था, वह यह कि बाजौर में प्रयोग की गई तोपें तथा जिस प्रकार उसने दुर्ग को विजित करने के पश्चात् नर-संहार किया, दोनों बातें अब भी लोगों के कानों में गूंज रही थीं; और वे इतने भयभीत हो चुके थे कि उनमें इतनी शक्ति न थी कि वे उसका

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३८२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १००।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८३; अकबरनामा (अनु०) भाग १ पृ०, २३७–३८।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८३।

सामना कर सकें। स्थानीय सरदारों के समर्पण के पश्चात् ही बाबर को ऐसा लगने लगा कि हिन्दुस्तान विजय का कार्य अब उसके लिए बिल्कुल सरल हो गया है। वह जानता था कि शासक की शक्ति स्थानीय जनता एवं स्थानीय ज़मीदारों के ऊपर निर्भर करती है, और जब दोनों ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली तो हिन्दुस्तान विजय का वह स्वप्न, जो उसने बहुत पूर्व देखा था, साकार होता दिखाई दिया। उसके महत्वाकांक्षी बेगों ने उसे सुझाव दिया कि वह उन देशों के शासकों के पास अपने राजदूतों को भेजे, जिन प्रदेशों पर कभी अमीर तीमूर का अधिकार था। तद्नुसार बाबर ने मुल्ला मुर्शीद को इब्राहीम लोदी तथा दौलत खां लोदी के लिए पत्र देकर भेजा और उनसे वे सब प्रदेश माँगे। सुल्तान इब्राहीम लोदी, जो कि १५१६ ई० में बहुत ही शक्तिशाली था, ने जब इस पत्र को देखा होगा तो उसे कैसा लगा होगा, इसका अनुभव हम स्वतः कर सकते हैं। बाबर ने भी उसका अनुभव करते हुए लिखा, "हिन्दुस्तान वाले बुद्धि, विवेक से शून्य तथा निर्णय एवं सत् परामर्श स्वीकार करने के अयोग्य ही होंगे और सबसे अधिक अफ़ग़ान, कारण कि न तो वे शत्रुओं के सामने अग्रसर होकर उनका मुकाबला कर सकते थे, और न मैत्रीय के नियम ही जानते थे।" दौलत खाँ लोदी जो इस समय पंजाब का गवर्नर था, ने मुल्ला मुर्शीद को पांच महीनों तक रोके रखा और कोई भी उत्तर न दिया[1]।

मुल्ला मुर्शीद के वापस लौटने की प्रतीक्षा बाबर भीरा में ही करता रहा। भीरा के प्रशासन के लिए उसने उसे चार प्रान्तों में विभाजित कर दिया, और खलीफ़ा, कुच बेग, नासिर दोस्त, सैय्यद कासिम तथा मुहिब अली को आदेश दिया कि बकाया कर वे वसूल लें[2]। २४ मार्च, १५१६ ई० को उसे हिन्दाल के पैदा होने की सूचना प्राप्त हुई और अगले कुछ दिन उसने मदिरा गोष्ठियों तथा सैर-सपाटे में व्यतीत किए, जिनकी चर्चा उसने अपनी "आत्म कथा" में बहुत ही

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३८५; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ० ३५।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८५; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १०३; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २३८।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८४।

उत्तम ढंग से की हैं [1]। मदिरा गोष्ठियों में व्यस्त रह कर भी, अपनी स्थिति को विजित प्रदेश में सुदृढ़ करने के लिए तथाभविष्य में अपनी सामरिक कार्यवाहियों के लिए मार्ग प्रशस्त करने के लिए, उसने विजित प्रदेश हिन्दू बेग को सौंप दिए ताकि वह यह कार्य पूर्ण करता रहे। हिन्दू बेग की सहायता के लिए उसने शाह मुहम्मद मुहरदार, उसके छोटे भाई दोस्त बेग, आदि अनुभवी सैनिकों को नियुक्त किया।[2] इसी अवसर पर बाबर ने प्रत्येक उमराव तथा सैनिक का, जिन्हे कि हिन्दुस्तान में विजित किए गए प्रदेशों में रहना था, उनके ओहदे के अनुसार उनका भत्ता या वृत्ति (Stipend) निश्चित् किया [3]। स्थानीय अफ़सरों, ज़मीदारों तथा अमीरों से पूर्ण रूप से सहायता प्राप्त करने के विचार से तथा उन्हें अपने पक्ष में बनाए रखने के लिए, बाबर ने लंगर खान, मिनूचहर खान, उसके सम्बन्धी नज़र अली तुर्क, संगर खान जनजूहा, तथा मलिक हस्त जनजूहा का सम्मान किया तथा उनके वृत्ति एवं वेतन में वृद्धि की। चूंकि लंगर खान ने बाबर की इस अभियान में बहुत ही सहायता की थी, उसके साथ विशेष प्रकार का व्यवहार किया गया। उसे एक पताका दी गई तथा खुशआब प्रदान किया गया और उसे आदेश दिया गया कि वह हिन्दू बेग की प्रशासन में सहायता करे [4] इस प्रकार हिन्दुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं में अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण प्रशासनिक प्रबन्ध करने के उपरान्त रविवार, ११ रबी उल अव्वल ९२५ हि०: १४ मार्च, १५१९ ई० को बाबर ने भीरा से काबुल की ओर प्रस्थान किया [5]।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८४–८८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १०३–१०६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३८।

२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३८८।

३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३८८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १०६।

४. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८८–८९।

५. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३८९; बख़शीश सिंह निज्जर, "पंजाब अन्डर दि सुल्तान्स आफ़ देहली," पृ० ९३, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १०६।

लौटते समय मार्ग में बाबर कलदह कहार में, गक्खर कबीले को आधीनता स्वीकार कराने के लिए रुका। बाबर के जनजूहा हितैषियों ने उससे अनुरोध किया कि गक्खरों का नेता, हाथी "बड़ा ही दुष्ट है" और वह तथा उसके साथी, सड़कों पर लूट-मार किया करते हैं, और लोगों को नष्ट-भ्रष्ट करते रहते हैं। या तो उसे इस प्रदेश से निकाल दिया जाय और या उसे कठोर दण्ड दिया जाय।"[1] हिन्दुस्तान में विजित प्रदेशों की सुरक्षा के लिए तथा भविष्य में पंजाब में प्रवेश करने के लिए गक्खर जाति को दबाना तथा उसे अपने पक्ष में करना अत्यन्त आवश्यक था। इससे पूर्व भी, जब तक बाह्य आक्रमणकारी उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में रहने वाली जातियों को अपने पक्ष में न कर सके अथवा उन पर अपना प्रभुत्व न स्थापित कर सके, तब तक उन्हें पंजाब में प्रवेश करने में तनिक भी सफलता प्राप्त न हुई। बाबर की भी सफलता इसी बात पर निर्भर करती थी। अतएव उसने जनजूहाओं की बात मान ली और गक्खरों पर आक्रमण करने का निश्चय किया। ख्वाजा मीर मीरान को तथा नासिर मिरीम को कलदह कहार में छोड़कर वह हाथी गक्खर पर आक्रमण करने के लिए चल पड़ा। कुछ दिनों पूर्व ही हाथी ने तातार को मार कर परहाला के प्रदेश पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया था। उसकी शक्ति पर तनिक भी ध्यान न देते हुए बाबर आगे बढ़ता गया। उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया तथा उन सैनिक टुकड़ियों को कुच बेग तथा दोस्त बेग के अधीन रख कर उन्हें आगे परहाला पर आक्रमण करने के लिए भेजा। बाबर के सैनिकों को इस प्रकार आगे बढ़ते हुए देखकर हाथी पीछे हट गया। बाबर ने निरन्तर उसका पीछा किया। अमीन-ए-मुहम्मद तातार अरग़ून तथा करचा खान के साथ आगे बढ़ते हुए बाबर ने सुहान नदी के किनारे स्थित अन्दराबेह में बृहस्पतिवार १५, रबी-उल-अव्वल, ९२५ हि० : १७ मार्च, १५१९ ई० को पड़ाव डाला। उसी रात कलदह कहार से भी उसके सैनिक आ गए। बाबर की बढ़ती हुई सैन्य संख्या को देखकर

---

१. हाथी गक्खर ने मलिक हस्त के पिता को मार डाला था और उसके दुर्ग जो कि अन्दरबेह में था, को तोड़ कर निकटवर्ती प्रदेशों को अपने हाथों में ले लिया था—बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ३८९; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० १०६; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २३५।

हाथी गक्खर भयभीत हुआ। उसने अपने परिवार के एक सम्बन्धी, पर्वत को एक सशस्त्र घोड़ा, तथा उपयुक्त उपहार देकर वावर के पास सन्धि की वातचीत करने के लिए भेजा। वावर ने पर्वत का स्वागत किया और उसे 'खिलअत' प्रदान की। तत्पश्चात् उसने गक्खर जाति के मुखिया हाथी के लिए मुहम्मद अली जंग जंग द्वारा पत्र भेजे। इस प्रकार वावर ने गक्खर जाति के मुखिया को आधीनता स्वीकार करने के लिए वाध्य किया[1]।

हाथी गक्खर को अपने पक्ष में कर लेने के पश्चात् वावर ने कावुल की यात्रा पुनः प्रारम्भ की। मार्ग में उसने करलुक़ी हजाराओं के मुखिया सन्गूर करलुक़ का स्वागत किया। सन्गूर करलुक अपने साथ उसी प्रदेश के लगभग ३० अथवा ४० अन्य सरदारों को लेकर आया था। उन सभी ने वावर की सेवा में उपस्थित होना स्वीकार कर लिया था। लगभग इसी समय दिलज़ाक अफ़गानों की एक सेना उससे आकर मिलीं ताकि वह उसे सुरक्षित रूप से कावुल तक पहुंचा दें। वावर ने २१ मार्च, १५१६ ई० को नीलाव नदी पार की और अगले तीन दिनों तक वह निरन्तर विना कहीं पड़ाव डाले हुए चलता ही गया। नीलाव नदी के तट को छोड़ने से पूर्व वावर ने मुहम्मद अली जंग जंग तथा पर्वत को, जो कि अभी गक्खर जाति के नेता हाथी के पास से लौट कर आए थे, स्वागत किया तथा नीलाव के लोगों से उसने पेशकश प्राप्त किए[2]।

यह सोचकर कि हिन्दू वेग अकेले कैसे हिन्दुस्तान में किए गए विजित प्रदेशों के प्रशासन को संभालेगा, वावर ने मुहम्मद अली जंगजंग को भीरा तथा सिन्ध नदी के वीच के प्रदेश उदाहरणार्थ करलूक़ हजारा, हाती, गयासवाल, तथा कीव के प्रदेश प्रदान किए[3]। मुहम्मद अली जंग जंग को उसने काले मख़मल का वना

---

१. वावरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ३६१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर), पृ० १०६–१०८; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० ३३५–३७; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३६।

२. वावरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर); पृ० १०८।

३. वावरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३६३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर) पृ० १०६।

हुआ एक विशेष सरोपा, एक विशेष क़ीलमक क़बा तथा एक पता का प्रदान की [1]।
२४ मार्च, १५१९ ई० को बाबर ने अपनी यात्रा पुनः प्रारम्भ की और ३० मार्च, १५१९ ई० को बेग्राम, गढ़ कदाही, अली मस्जिद, ज्यू शाही, बागे वफ़ा, स्याह आब, सुर्ख आब, केरक, करनू को पार करता हुआ वह काबुल पहुंचा [2]।

उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में रहने वाली अफ़ग़ान जातियों के विरुद्ध भली-भाँति आयोजित १५१९ ई० का अभियान बाबर के लिए बहुत ही महत्व-पूर्ण था। इस अभियान से बाबर को उस प्रदेश की भौगोलिक दशा को जानने में सफलता प्राप्त हुई। उसे युसुफ़ ज़ई, गक्खर, दिलज़ाक अफ़ग़ान जातियों को अपने पक्ष में करने अपने अमीरों तथा विद्रोही प्रवृत्ति वाले मुग़लों को निरन्तर व्यस्त रखने तथा उन आर्थिक समस्याओं एवं कठिनाइयों का, जो कि काबुल में उसे परेशान कर रही थी, को सुलझाने में भी सफलता प्राप्त हुई। स्थानीय मुखियों, ज़मीदारों तथा लोगों से वस्तु के रूप में जो कर उसने प्राप्त किया तथा अगले कुछ वर्षों में वह इस प्रदेश के लोगों से प्राप्त करता रहा उससे आर्थिक संकट टल गया।

जैसा कि हम पहले बता चुके हैं कि हिन्दुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों के छोड़ने से पूर्व बाबर ने मुग़लों द्वारा अधिकृत प्रदेशों को प्रशासनिक सुविधा के लिए मुहम्मद अली जंगजंग तथा हिन्दू बेग के अधीन रख दिया था तथा उनकी सहायता के लिए उसने अनेक अन्य अधिकारी तथा सैनिक भी उन्हीं प्रदेशों में तैनात कर दिए थे। इसके बावजूद भी उसके जाने के २५ दिन पश्चात् ही इन्हीं प्रदेशों में मुग़लों को गम्भीर स्थिति का सामना करना पड़ा। ऐसा प्रतीत होता है कि जैसे ही उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व की परिछांई उन प्रदेशों से दूर हो गई स्थानीय मुखियों, ज़मीदारों तथा अफ़ग़ान अफ़सरों ने मिल कर हिन्दू बेग का भीरा में विरोध करना प्रारम्भ किया। उनके बढ़ते हुए विरोध के

१. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ३९३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० १०९।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३९३–९५; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २३९; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता," (मू० ग्रन्थ), पृ० २०१, ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहम्मडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३६।

कारण हिन्दू बेग के लिए वहाँ ठहरना कठिन हो गया। भीरा से वह ख़ुशआब चला गया और वहाँ से दीन-कोट होते हुए, नीलाब को पार करते हुए काबुल पहुंचा। भीरा का इस प्रकार हाथ से निकल जाना बाबर के लिए ख़राब बात थी, क्योंकि इसी स्थान से अफ़ग़ान जातियों पर नियंत्रण बनाए रखा जा सकता था और उनसे कर वसूल किया जा सकता था तथा आवश्यकता पड़ने पर आगे बढ़ कर पंजाब पर भी आक्रमण किया जा सकता था। कुछ भी हो, इस समय अपनी बीमारी के कारण वह खोए हुए प्रदेश को वापस लेने में सफल न हो सका [1]।

किन परिस्थितियों में हिन्दू बेग, भीरा से भाग कर काबुल आया, सम्भवतः इसी बात को बताने के लिए मलिक मन्सूर यूसुफ़ जई, सोमवार २३, जुमदा, ९२५ हि०। २३ मई, १५१९ ई० को छः या सात अन्य अफ़ग़ान सरदारों के साथ, सवाद से बाबर की सेवा में काबुल पहुंचा। बाबर ने अपनी आत्म-कथा में मलिक यूसुफ़ जई के आने का उल्लेख किया है, और इसी से पता चलता है कि जब हिन्दुओं तथा अन्य अफ़ग़ान जातियों ने, हिन्दू बेग पर आक्रमण किया तो न तो उसने मुहम्मद अली जंग जंग से ही कोई सहायता ली और न यूसुफ़ ज़ईयों से। दूसरे, बाबर के जाने के बाद यूसुफ़ज़ई अफ़ग़ानों ने बाबर का विरोध न किया। उनके व्यवहार से प्रसन्न होकर ही बाबर ने ३१ मई, १५१९ ई० को सभी यूसुफ़ ज़ई सरदारों को उपहार देकर सम्मानित किया [2]। उसने मलिक शाह मन्सूर को एक लम्बा रेशमी चुग़ा तथा एक जीबा तुकमे सहित प्रदान किया, तथा ६ अन्य अफ़ग़ान सरदारों को रेशमी चुग़े प्रदान किए [3]। इस प्रकार बाबर द्वारा सम्मान किए जाने पर अफ़ग़ान सरदारों ने उसके साथ यह समझौता किया कि बाजौर तथा सवाद के अफ़ग़ान कृषक ६ हज़ार खच्चरों के बोझ के बराबर चावल उसे कर में देते रहेंगे तथा आबूहा के ऊपर सवाद प्रदेश में वे न तो प्रवेश करेंगे और न ही वहाँ के करों को अपना समझेंगे [4]।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ३९९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ११४।

२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ४००; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ११४।

३. वहीं।

४. वही।

मई-जून, १५१६ ई० में अैमक़ तथा तुर्क जातियां हजारों की संख्या में काबुल आईं और वहां आकर बस गई। उनके आने से बाबर को पुनः गम्भीर स्थिति का सामना करना पड़ा। बाबर ने कासिम बेग से उन्हें कुन्दुज़ तथा बगलान की ओर भगा देने को कहा, किन्तु इसके बावजूद भी यह जातियां काबुल में आती रहीं। बढ़ती हुई जनसंख्या के बोझ से अपने को बचाने के लिए तथा इससे पूर्व कि किसी संकट का उसे सामना करना पड़े बाबर ने हिन्दुस्तान के सीमावर्ती प्रदेशों की ओर बढ़ने का पुनः विचार किया[1]। १५ जुलाई, १५१६ ई० को उसने ख्वाजा मुहम्मद अली तथा तिगंरी बीरदी को ख्वास्त तथा अन्दराब की ओर सूचना लाने के लिए भेजा। बृहस्पतिवार, २१ जुलाई, १५१६ ई० को जब मुहम्मद अली जंग जंग उसकी सेवा में उपस्थित हुआ तो उसे मालूम हुआ कि हिन्दुस्तान के सीमावर्ती प्रदेशों से मुग़लों को स्थानीय अफ़ग़ानों ने भगा दिया है, तथा कर देने से इन्कार कर दिया है[2]। अतएव २६ रजब, ६२५ हि० : बुधवार, २७ जुलाई, १५१६ ई० को बाबर पुनः हिन्दुस्तान के सीमावर्ती प्रदेशों की ओर रवाना हुआ[3]। गिरदीज़ के निकट पहुंच कर उसने अपनी सेना को दो भागों में विभाजित किया। एक सेना मिर्ज़ा कुली तथा सैय्यद अली के संयुक्त नेतृत्व में गिरदीज़ के दक्षिण-पूर्व की ओर अब्दुर रहमान अफ़ग़ानों पर, जो कि न कर दे रहे थे और न ही आने-जाने वाले लोगों को आने-जाने ही देते थे, पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इसी सेना के पीछे-पीछे बाबर की सेना थी। इस अभियान में बाबर को विशेष सफलता न मिली। अतः २६ जुलाई, १५१६ ई० को वह काबुल की ओर चल पड़ा और २ अगस्त को वह वहां पहुँचा।

अगले मास के प्रारम्भ में बाबर ने कोह दमन, बरान, तथा ख्वाजा-सिह यारान की सैर की। इस सैर का उद्देश्य केवल निकटवर्ती प्रदेशों में रहने वाली

---

१. बाबरनामा भाग १, पृ० ४००–४०८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ११६।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४०५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ० ११६।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४०५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ११७।

जनता को काबू में रखना था[1]। किन्तु उसकी इस सैर का अफ़ग़ान जातियों पर कोई प्रभाव न पड़ा। अतएव, बृहस्पतिवार, १३ रमज़ान, ९२५ हि० : ८ सितम्बर, १५१९ ई० को बाध्य होकर युसुफ़ ज़ईयों के विरुद्ध उसे बढ़ना पड़ा। अब तक तो युसुफ़ ज़ई उसके पक्ष में थे, किन्तु अब उन्होंने उसका विरोध करना प्रारम्भ कर दिया। बाबर के प्रति उनके दृष्टिकोण के बदलने के दो कारण हो सकते हैं, कि बाबर ने जो कर की मांग बाजौर तथा सवाद के अफ़गान कृषकों से की, वह उनकी आर्थिक स्थिति को देखते हुए बहुत ही अधिक थी, जिसका भुगतान करने में वे असमर्थ थे। दूसरे, बाबर की वह शर्त कि वे आबूहर के ऊपर के सवाद प्रदेश में न तो प्रवेश करेंगे और न ही वहां की आय को अपना समझेंगे, ने अफ़गान जमीदारों को असन्तुष्ट कर दिया। अतएव जैसे ही वे काबुल से वापस लौटे, उन्होंने उत्पात मचाना प्रारम्भ कर दिया। देह-याकूब, बुत-खाक, तथा बादाम चश्मा को पार करते हुए, बाबर सुल्तानपुर पहुंचा, जहाँ दिलज़ाक अफ़ग़ानों के दो सरदारों, बूखान तथा मूसा ने उसे बताया कि अनेक संख्या में अफ़ग़ान कबीले खाद्य-सामग्री के साथ हश्तनगर में एकत्र हो गए हैं, और उन पर आक्रमण करने तथा उनसे खाद्य-सामग्री छीनने का सबसे उपयुक्त अवसर है। उन्होंने बाबर को सुझाव भी दिया कि इसके उपरान्त वह सवाद में युसुफ़ ज़ई अफ़गानों पर आक्रमण करने के लिए बढ़ भी सकता है[2]। बाबर ने उनके सुझाव को स्वीकार कर लिया और वहां से आगे बढ़ कर जुये शाही पहुंचा। यहां उसकी भेंट तिगँरी बिरदी, सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई तथा हमज़ा से हुई[3]। इसके पश्चात् किरीक आरिक, गरम चश्मा को पार करते हुए बाबर ख़ैबर दर्रे पर उतरा। यहां सुल्तान बायज़ीद ने आकर उसे सूचित किया कि अफ़रीदी अफ़ग़ान लोग अपने परिवारों के साथ बारा में पड़ाव डाले हुए हैं,

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४०५; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० १२१।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ४०५–४०८; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२१।

३. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ४०५; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२२।

तथा उनके पास बहुत अनाज है[1]। क्योंकि बाबर का मुख्य उद्देश्य यूसुफ़ज़ई अफ़ग़ानों पर आक्रमण करना था, अतएव उसने सुलतान बायज़ीद के सुझाव पर कोई ध्यान न दिया। लगभग इसी समय बाबर ने ख्वाज़ा कंला को एक पत्र, सुलतान तीरह के हाथ, बाज़ौर भेजा। इस पत्र में बाबर ने आक्रमण सम्बन्धी बनाई गई योजना का उल्लेख किया और अपने आगे बढ़ने के विषय में उसे सूचना दी।

खैबर दर्रे को पार कर बाबर ने अपना भारी सामान अली मस्जिद में रखा और काबुल नदी को पार कर जैसे ही वह हशत नगर की ओर बढ़ा, उसे ज्ञात हुआ कि उसके आने की सूचना पाकर अफ़ग़ान भाग खड़े हुए हैं। जब वह सवाद पहुंचा तो उसके हाथ में खाद्य-सामग्री का १।४ भाग भी न लगा। निराश होकर उसने हशत नगर को सामरिक कार्यवाहियों के लिए स्थान बनाने की योजना त्याग दी और काबुल को वापस लौट पड़ा। काबुल नदी को पार करने के बाद बाबर ने परशावर के दुर्ग को सुव्यवस्थित करने तथा वहां अनाज रखने का निश्चय किया। किन्तु इससे पूर्व, वह इस कार्य को पूरा करता, उसे अली तग़ाई के सेवक, सुल्तान अली अब्दुल हाशिम ने जूय-शाही से आकर बताया कि सुल्तान सईद खान ने बदख़शां पर आक्रमण कर दिया है अतएव बाबर ने तुरन्त काबुल लौटने का विचार किया[2]।

अली मस्जिद से काबुल की ओर प्रस्थान करने से पूर्व, बाबर ने मुहम्मद अली जंगजंग को पुनः मीरा जाने का आदेश दिया[3]। तत्पश्चात् स्वयं वह खिज्र खैल अफ़ग़ानों को दण्ड देने के लिए रवाना हुआ। उसने मुहम्मद कूर्ची को तुरन्त काबुल भेजा कि जो भी खिज्र खैल वहाँ हों, उन्हें बन्दी बना कर रखा जाय तथा जो भी समाचार बदख़शां के सम्बन्ध में काबुल पहुंचे, उन्हें उसके पास

---

१. बाबरनामा भाग १, पृ० ४१२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२३।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१२।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२३।

शीघ्र ही भेज दिया जाय [१]। वहार, मीच ग्राम तथा करासू के निकट पहुंचकर उसने अपनी सेना से उन पर आक्रमण करने के लिए कहा। बाबर के सैनिकों ने ख़िज्र ख़ैल अफ़ग़ानों का बहुत सा सामान तथा उनके बच्चों को छीन लिया और शेष अफ़ग़ान उनके वहां पहुंचते ही भाग खड़े हुए। इसके उपरान्त बाबर ने किलाग़ू नामक स्थान पर पड़ाव डाला। यहां उसके पास वज़ीरी अफ़ग़ान, दिलज़ाक अफ़ग़ान, शामू ख़ैल तथा खिरीलची अफ़ग़ान जातियों के नेता आए। उन्होंने बाबर से ख़िज्र ख़ैल अफ़ग़ानों को क्षमा कर देने का आग्रह किया। बाबर ने उन्हें मुक्त कर दिया और ४००० भेड़ें कर के रूप में निर्धारित थीं। उनके सरदारों को बाबर ने चुग़े प्रदान किए और वसूल करने वालों को नियुक्त किया [२]।

ख़िज्र ख़ैल अफ़ग़ानों को दण्ड देने के पश्चात् बाबर ने अपनी यात्रा पुन: प्रारम्भ की। वहार, मीच ग्राम, बाग़ वफ़ा, गन्डमक, आदि को पार करता हुआ तथा आनन्द मनाता हुआ वह काबुल मार्ग पर धीरे-धीरे बढ़ा। उसने मुल्ला अब्दुल मलिक दीवाना को काबुल भेजा ताकि वह अधिकारियों को उसके आने की सूचना दे दे [३]। मुल्ला अब्दुल, मलिक दीवाना को १६ अक्टूबर, १५१६ ई० को रवाना करके बाबर ने बड़े सुख से अपनी यात्रा समाप्त की और १७ नवम्बर, १५१६ ई० को काबुल के चार बाग़ में पहुंचा तथा दूसरे दिन उसने दुर्ग में प्रवेश किया।

अगले एक माह की घटनाओं का उल्लेख, जैसा कि उसने अपनी आत्म-कथा में किया है, उससे यह ज्ञात होता है कि इस अवधि में चिन्ताओं से वह बिल्कुल ही मुक्त था। १ ज़िलहिज्जा, ६२५ हि० : २४ नवम्बर, १५१६ ई० को ताजुद्दीन महमूद, कन्धार से आया और उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। इससे यह ज्ञात होता है कि अरग़ूनों से उसके अब भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध थे [४]। इसी प्रकार

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२४।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१३; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १२४।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१५; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत", (बाबर) पृ० १२५।

४. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१५! रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १२८।

सोमवार, १६ ज़िलहिज्जा, ६२५ हि० : १५ दिसम्बर, १५१८ ई० को मुहम्मद अली जंगजंग नीलाब से आया तथा मंगलवार, १३ दिसम्बर, १५१८ ई० को संगर ख़ान जनजूहा, भीरा से आया। दोनों ही व्यक्ति बाबर के सामने उपस्थित हुए। उनके आने से बाबर को यह सन्तोष हो गया कि हिन्दुस्तान के सीमावर्ती प्रदेशों में जो स्थान मुग़लों के अधीन हैं, वे सब स्थान उनके अन्तर्गत सुरक्षित हैं और अफ़गानों के साथ भी उनके सम्बन्ध अच्छे हैं। वह निश्चिन्त होकर वह बैठ गया। उसने अपना कुछ समय लिखने-पढ़ने तथा मदिरा-गोष्ठियों में तथा सैर-सपाटे में व्यतीत करना आरम्भ किया[1]।

काबुल में ठहर कर उसने मध्य-एशियाई राजनीति पर एक बार फिर दृष्टि डाली। ईरानियों और उज़बेगों को आपस में उलझे हुए देखकर उसने घोड़े की रिकाब अपने हाथों में ली और २३ दिसम्बर, १५१८ ई० से २४ जनवरी, १५२० ई० तक कोह दमन, कोहिस्तान, लमग़ान की सैर की। वह बाजौर पहुंचा, जहां उसने शाह मीर हुसैन को बाजौर देना निश्चित् किया। उसे बुला कर उसने बाजौर का प्रशासन उसके हाथ में सौंपा[2]। तत्पश्चात् सैर करते हुए वह भीरा पहुंचा, जहां उसने अनेक अफ़गानों पर आक्रमण किया। उसने इस अवसर पर अनेक अफगानों को मौत के घाट उतारा और अनेक को बन्दी बनाया। इसके पश्चात् वह सियालकोट तक आगे बढ़ता गया। सियालकोट की जनता ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। उसके बाद वह सैयदपुर की ओर बढ़ा। यहां के लोगों ने उसका जमकर मुकाबला किया। अन्त में बाबर ने दुर्ग को जीत कर दुर्ग के अन्दर की जनता को मौत के घाट उतार दिया[3]। यह कहना कठिन है कि अवसर पर बाबर पंजाब में कहां तक बढ़ना चाहता था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि वह लाहौर को भी विजित करने की इच्छा से आगे बढ़ा था। इससे पूर्व कि वह लाहौर की ओर बढ़ता, उसे सूचना मिली कि शाह बेग अरग़ून ने काबुल के राज्य

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१५–१६; रिज़वी, "मुग़ल्कालीन भारत" (बाबर) पृ० १२८ ।
२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ४१६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १३१ ।
३. अरस्किन और लिडिन, 'मेमाअर्स आफ बाबर', पृ० २८६ ।

पर आक्रमण कर दिया है, अतः उसे अपनी योजना को पूर्णरूप से कार्यान्वित न कर सका तथा अपने राज्य को बचाने के लिए उसे काबुल लौटना पड़ा [1]।

बाबर को तनिक भी विश्वास न था कि उसकी अनुपस्थिति में शाह बेग अरग़ून काबुल पर आक्रमण करेगा। किन्तु उसके व्यवहार को देखकर वह चिन्तित हुआ। उसे विश्वास हो गया कि जब तक कन्धार का दुर्ग शाह बेग के हाथों में रहेगा तब तक न काबुल का राज्य न हिन्दुस्तान में अधिकृत देश ही सुरक्षित रहेंगे। अतः उसने दुर्ग को विजय करने का निश्चय किया। उसने शाह बेग को पीछे हटने के लिए तथा कन्धार के दुर्ग में शरण लेने के लिए बाध्य किया। उसका पीछा करते हुए वह कन्धार पहुंचा और उसने दुर्ग का अवरोध करना प्रारम्भ किया। यह देखकर कि दुर्ग को विजित करना इतना सरल नहीं है, बाबर ने उसको जीतने का दूसरा मार्ग अपनाया। उसने दुर्ग पर प्रतिवर्ष आक्रमण करने की आस-पास के प्रदेशों पर छापा मार कर दुर्ग के अन्दर रहने वाले लोगों को भूखा मारने तथा दुर्ग समर्पित करने पर बाध्य करने की योजना बनाई। दो महीने तक दुर्ग का अवरोध करने के पश्चात् वह काबुल वापस लौट गया, क्योंकि वहां एक महत्वपूर्ण प्रश्न उसकी प्रतीक्षा कर रहा था।

इसी वर्ष बदख़्शां के शासक मिर्ज़ा ख़ान की मृत्यु हुई [2]। उसका पुत्र सुलेमान अल्प-वयस्क था, अतएव उससे तनिक भी यह आशा न की जाती थी कि वह वहां के शासन की देख-रेख कर सकेगा। बदख़शां के उमराव आपस ही में लड़ रहे थे तथा उज़बेगों के आक्रमण का भी भय वहां के लोगों को था। ऐसी ही परिस्थिति में अपने पुत्र को बचाने के लिए, सुल्तान निगार ख़ानम, सुलेमान को लेकर काबुल आई और उन्होंने बाबर के पास शरण ली। इसी समय बदख़्शां के लोगों ने बाबर से अनुरोध किया कि जब तक सुलेमान वयस्क नहीं हो जाता है, तब तक के लिए वह वहां के शासन-प्रबन्ध के लिए कोई प्रबन्ध कर दें। उनके इस आग्रह को ध्यान में रखकर बाबर ने अपने जेष्ठ पुत्र हुमायूं को बदख़्शां का शासन-प्रबन्ध अन्य अमीरों की सहायता से संभालने के लिए नियुक्त किया [3]।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४१६; अरस्किन और लिडिन "मेमाअर्स" आफ बाबर," पृ० २८६।

२. गुलबदन बेगम, "हुमायूंनामा", (अनु०) पृ० ६२।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४३१–३२; गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा"

हुमायूं तथा उसकी मां माहम को वदख्शां भेज कर, वावर ने पुन: कन्धार पर आक्रमण किया। दुर्ग के सैनिकों ने मुकावला किया। दुर्ग के अन्दर तथा वाहर एकायक वीमारी फैल जाने के कारण, दोनों पक्षोंको मुसीवतों का सामना करना पड़ा। हार कर, जून १५२० ई० में वावर ने दुर्ग पर से घेरा उठा लिया और कावुल लौट गया।

१५२० ई० के अन्त में वदख्शां से वापस आकर[1] वावर ने १५२१ ई० के प्रारम्भ में, कन्धार पर पुन: आक्रमण किया। आगे वढ़ते समय उसने लूट-मार की और कन्धार पहुंच कर दुर्ग पर घेरा डाल दिया[2]। परेशान होकर शाह वेग़ अरग़ून ने फ़ारस के शाह इस्माईल सफ़वी से सहायता मांगी और अनुरोध किया कि उसकी ओर से वह पक्ष ले तथा वावर से सेनाएं हटा लेने के लिए कहे। वावर और शाह इस्माईल के पारस्परिक सम्वन्ध मैत्रीपूर्ण न थे। कावुल के शासक के रूप में वावर ईरान के शाह के मार्ग का कांटा था क्योंकि उसके रहते हुए शाह कभी भी सिंध नदी तक अपने साम्राज्य का विस्तार नहीं कर सकता था। अन्य शब्दों में शाह इस वात को कभी भी न सहन कर सकता था कि वावर कन्धार पर अपना प्रभुत्व स्थापित करे। अत: शाह वेग़ अरग़ून की रक्षा करने के लिए वावर को उसने लिखा कि वह अपनी सेना हटा ले। परन्तु वावर ने उसके पत्र पर विशेष ध्यान न दिया और केवल यही उत्तर दिया कि वह तो केवल उसे अधीनता स्वीकार करने के लिए वाध्य करना चाहता है और वह स्वयं उस दुष्ट को उसकी सेवा में भेज देगा। वावर के इस पत्र पर हिरात के उमराव खिन्न हुए, और उन्होंने शाह को सेना भेजने के लिए मानने की चेष्टा भी की, किन्तु उन्हें कोई भी सफलता न मिली। वावर ने अधिक दिनों कन्धार

(अनु०), पृ० ९२; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०१; व्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग भाग २, पृ० ३७।

१. वावरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ४२६; गुलवदन वेगम, "हुमायूं नामा", (अनु०) पृ० ९२–९३।

२. फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० २०२, व्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३७।

में रहना उचित न समझा और वह बिना दुर्ग को अधिकृत किए हुए वापस लौट गया [1]।

कन्धार के दुर्ग को विजित करने के उद्देश्य से १५२२ ई० के अन्त में बाबर पुनः उस ओर रवाना हुआ। कुछ दिनों पूर्व उसे युवराज तहमास्प, जो कि शाह इस्माईल सफ़वी का पुत्र था, के एक अधिकारी दुरमेश खान का पत्र प्राप्त हुआ कि युवराज ने दुर्ग को विजित करने का विचार तो किया, किन्तु यह सोचकर कि वही इस कार्य को पूर्ण करेगा, उसने अपनी सेनाओं को पीछे हटा लिया है। किन्तु बाबर ने इस पत्र पर ध्यान न दिया। कुछ दूर तक वह आगे बढ़ा, किन्तु न जाने क्यों वह पुनः काबुल वापस लौट पड़ा।

जब शाह बेग अरग़ून को इस आक्रमण की सूचना मिली तो उसने समझ लिया कि दुर्ग की रक्षा करना अब व्यर्थ है, अतएव मौलाना अब्दुल बाक़ी के हाथों में दुर्ग सौंपकर वह सिन्ध की ओर चला गया। सिन्ध पहुंचकर २२ शाबान, ६२८ हि० : २६ जुलाई, १५२२ ई० को शाह बेग की मृत्यु हो गई। उसकी मृत्यु का समाचार पाते ही, मौलाना अब्दुल बाक़ी ने बाबर के पास यह सूचना भेजी कि वह उसे दुर्ग समर्पित करने के लिए तैयार है। बाबर तुरन्त कन्धार की ओर चल पड़ा। कन्धार पहुँच कर, उसने दुर्ग की चाभियाँ अपने हाथों में ले लीं और दुर्ग अपने दूसरे पुत्र मिर्ज़ा कामरान, जो कि कुछ ही महीनों हुमाँयू से छोटा था, को सौंप दिया [2]। (१३ शव्वाल ६२८ हि०। ६ सितम्बर, १५२२ ई०)। कुछ समय पश्चात् बाबर ने अपने राजदूत को ईरान के शाह के पास यह सूचना देने के लिए भेजा कि उसने दुर्ग को विजित कर लिया है। ईरान का शाह, जो कि सदैव कन्धार के दुर्ग पर अपना

---

१. बाबर इस अवसर पर क्यों बिना दुर्ग को विजित किए हुए ही वापस लौट गया? इस सम्बन्ध में समकालीन एवं परवर्ती इतिहासकार दोनों मौन हैं। उन्होंने उसके लौटने का कोई कारण नहीं बताया, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि अपनी अस्वस्थता के कारण ही बाबर कन्धार से वापस लौट आया।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४३६; गुलबदन बेगम, "हुमायूँनामा" (अनु०), पृ० ६३; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० २०२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३७।

क़ानूनी तौर पर दावा किया करता था, के सामने अब केवल इसके कि वह बाबर द्वारा भेजे गए राजदूत का स्वागत करे तथा कन्धार के मामले पर चुप रहे, कोई अन्य मार्ग शेष न था। यह देखकर कि ईरानियों का ध्यान इस समय कन्धार पर नहीं है, बाबर कन्धार से आगे बढ़ा और उसने हिलमन्द नदी पर स्थित गर्मसीर के दुर्ग को विजित कर लिया। इस प्रकार कुछ समय के लिए उसने शाह की विस्तारवादी नीति पर रोक लगा दी, और उसे कन्धार की ओर न बढ़ने दिया। कन्धार तथा गर्मसीर के दुर्गों को विजय करने के बाद बाबर का ध्यान प्रत्यक्ष रूप से अब हिन्दुस्तान की ओर गया जहाँ राजनैतिक गतिविधियाँ बड़ी तेजी से करवटें ले रही थीं।

इन सात वर्षों में बाबर कभी भी शान्तिपूर्ण न बैठा सका। वह हिन्दुस्तान के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में स्थित प्राकृतिक द्वारों को निरन्तर खोलने में व्यस्त रहा तथा बार-बार इस प्रदेश में रहने वाली अफ़ग़ान जातियों को अपने पक्ष में करने की चेष्टा में लगा रहा ताकि भविष्य में जब वह दिल्ली के शासक के विरुद्ध बढ़े तो यह जातियाँ ही उसके मार्ग को प्रशस्त करें तथा उसे हर प्रकार की सहायता प्रदान कर हिन्दुस्तान पर उसके आक्रमण सफल बनाएँ।

छठा अध्याय

साम्राज्य संस्थापन

साम्राज्य संस्थापन

विगत कुछ वर्षों में उत्तरी भारत की राजनैतिक दशा एक उबलते हुए आँवे की तरह थी। समस्त उत्तरी-भारत विभिन्न इकाइयों में विभाजित हो गया था। केन्द्रीय सत्ता एवं स्थानीय प्रशासनिक इकाइयों में जो बन्धन थे वे सब ढीले पड़ गए थे। यह सब केवल अफ़ग़ान सरदारों की आपसी फूट, वैमनस्यता एवं द्वेष के कारण ही न था, वरन् उन विरोधी प्रवृत्तियों के आपसी संघर्ष का प्रभाव था, जो कि साम्राज्य को जन्म देती हैं, साम्राज्य विस्तार के साथ पल्लवित होती हैं तथा अन्त में उसको ढाह देती हैं। इस प्रवृत्ति को हम साम्राज्यवादी या विस्तारवादी या केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति की संज्ञा देते हैं। इसके विपरीत एक और भी प्रवृत्ति है जो कि विभिन्न प्रान्तों या प्रदेशों में समय के साथ-साथ उपजती है, बढ़ती है, साम्राज्यवादियों से निरन्तर टक्कर लेती रहती है और अन्त में साम्राज्य की जड़ों को खोखला कर उसे गिरा देती है। पूर्व-मध्यकालीन भारत का इतिहास इन दोनों प्रवृत्तियों के उत्थान एवं संघर्ष की कहानी है। प्रादेशिक राज्यों पर किसी प्रकार तुर्की साम्राज्य की स्थापना हुई और जब तुर्की साम्राज्य अपनी चरम शिखा पर पहुंचा तो साम्राज्य विरोधी एवं क्षेत्रीय शक्तियों ने अथवा प्रादेशिक शक्तियों ने उसे गिरा कर रख दिया और पुनः उस विशाल साम्राज्य की छाती पर स्वतंत्र राज्य स्थापित हो गए। संघर्ष का यह क्रम चलता रहा, जिसके फलस्वरूप प्रथम अफ़ग़ान साम्राज्य जिसकी आधारशिला सुल्तान बहलोल लोदी ने रखी। लोदी साम्राज्य भी अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए प्रान्तीय शक्तियों से टक्कर लेनी पड़ी। ज्यों-ज्यों संघर्ष की गतिविधि तीव्र होती गई, त्यों-त्यों केन्द्रीय शासन शिथिल पड़ता गाया। समय के साथ-साथ अफ़ग़ान सरदारों में झगड़े होने लगे, वे स्वतंत्र जागीरों का स्वप्न देखने लगे तथा धीरे-धीरे केन्द्रीय शासन से दूर होने का प्रयास करने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि अफ़ग़ान साम्राज्य के विभिन्न भागों में अशान्ति फैलती गई और सामान्य जनता

अफ़ग़ानों से तंग आ गई। केन्द्रीय शासन के अधीन प्रदेशों में रहने वाली जनता उतनी सुखी न थी, जितनी कि प्रान्तीय राज्यों के अधीन रहने वाली जनता, क्योंकि स्वतंत्र प्रान्तीय राज्यों में इन विरोधी शक्तियों के पारस्परिक संघर्ष का कोई प्रश्न ही न था।

वहलोल लोदी ने जिस वंश की स्थापना की, वह वंश केवल अफ़ग़ान कबीलों के सरदारों की सहायता पर मुख्य रूप से निर्भर था। इन विभिन्न अफ़ग़ान कबीलों को अपने पक्ष में करने तथा उनसे सहायता प्राप्त करने के लिए सहृदयता की नीति अपनाई गई और उनके बल पर शासक ने अपनी शक्ति सुदृढ़ की तथा साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया। किन्तु तुर्कों के प्रशासन की तरह अफ़ग़ानों का प्रशासन न तो प्रगतिवादी था और न ही वह जनता में अपने प्रति विश्वास पैदा कर सका। फिर भी अपने प्रभुत्व एवं प्रभु-सत्ता को बनाए रखने के लिए तथा अफ़ग़ान और अन्य जातियों को अपने अधीन लाने के लिए सुल्तान वहलोल के उत्तराधिकारी सुल्तान सिकन्दर लोदी ने बलबन तथा अलाउद्दीन खिल्जी की नीति अपनायी। सुल्तान सिकन्दर लोदी को अफ़ग़ानों की बढ़ती हुई शक्ति को कुचलने में कुछ सफलता तो अवश्य मिली और उसने सुल्तान एवं सल्तनत की प्रतिष्ठा तो पुनः स्थापित कर दी परन्तु वह भी अफ़ग़ानों की कबायली मनोवृत्तियों, स्वतंत्र रहने की भावना तथा धन और शक्ति के लिए उनकी लोलुपता को न समाप्त कर सका। जिन क्षेत्रों में उन्हें जागीरें प्रदान की गई थीं, वहाँ की स्थानीय जनता के सहयोग से उन्होंने स्वतंत्र होने की, दिल्ली के सुल्तान की शक्ति को कुठाराघात करने की तथा सल्तनत से अपने सम्बन्ध विच्छेद करने की चेष्टा की। अन्य शब्दों में धीरे-धीरे प्रादेशिक शक्तियों ने पुनः बल पकड़ना प्रारम्भ किया। सुल्तान सिकन्दर लोदी के शासन काल के अन्तिम दिनों में यह संघर्ष प्रारम्भ हुआ। इस प्रकार केन्द्रीय शासन तथा प्रादेशिक शक्तियों में खींचा-तानी प्रारम्भ हुई और दिल्ली के सुल्तान ने भी अपने को इस संघर्ष के मध्य पाया। इस संघर्ष को सफलतापूर्वक समाप्त करने अथवा न कर सकने पर ही अफ़-ग़ान साम्राज्य का भाग्य निर्भर करता था।

अब हमें सुल्तान के प्रथम शत्रु जो कि उसे सदैव धमकियाँ देता रहा तथा उसके लिए एक समस्या बना रहा, की ओर ध्यान देना चाहिए। अपनी मृत्यु से पूर्व सुल्तान सिकन्दर लोदी ने अपने उमराव को ग्वालियर पर आक्रमण

करने के सम्बन्ध में योजना बनाने के लिए बुलाया । इसके पूर्व कि वह अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं को कार्यान्वित कर सकता उसकी मृत्यु हो गई । जिस समय उसकी मृत्यु हुई सभी वरिष्ठ उमराव तथा सुल्तान के पुत्र इब्राहीम खान, जलाल खान, इस्माईल खान, महमूद खान, आज़म हुमायूं, सभी राजधानी में उपस्थित थे । इब्राहीम और जलाल जो एक ही मां से पैदा हुए थे, अन्य राजकुमारों की अपेक्षा बहुत ही कुशल थे ।[1] किन्तु इब्राहीम सबमें सर्वश्रेष्ठ था । वह वीर, साहसी, एवं बुद्धिमान था । अपने पिता की अनुपस्थिति में, उसके सहायक के रूप में शासन का भार उठा चुका था तथा अपनी क्षमता, कार्यकुशलता, और एक शासक में होने वाले गुणों का परिचय दे चुका था । उसके गुणों को देख कर अफ़गानों के एक दल ने उसे शासक बनाना स्वीकार किया । किन्तु उनकी यह इच्छा निर्विरोध न थी । अफ़गान उमराव के दूसरे दल ने शीघ्र ही जलाल खान का पक्ष लिया और उसके अधिकारों का दावा किया । ऐसी स्थिति में गृहयुद्ध की सम्भावना को समाप्त करने तथा दोनों गुटों में समन्वय स्थापित करने के विचार से अफ़ग़ान उमराव ने परस्पर तय किया कि साम्राज्य को दोनों ही राजकुमारों के मध्य बाँट दिया जाय । इब्राहीम दिल्ली के सिंहासन पर बैठकर जौनपुर राज्य की सीमाओं तक के प्रदेश पर शासन करे[2] और उसका भाई जलाल खान जिसके हाथों में कालपी तथा चन्देरी था, कालपी और चन्देरी से लेकर जौनपुर तक के प्रदेश पर राज्य करे तथा जौनपुर उसकी राजधानी हो ।[3] अफ़ग़ान साम्राज्य के विभाजन के सम्बन्ध में सुझाव देते हुए अफ़ग़ान उमराव ने अपने स्वार्थ-सिद्ध करने तथा सुल्तान के स्थान पर अपने को शक्तिशाली बनाने की चेष्टा की । वे उस केन्द्रीयकरण की नीति तथा विस्तारवादी नीति का अनुसरण किए जाने पर रोक लगा देना चाहते थे, जिसका अनुसरण सुल्तान सिकन्दर लोदी ने किया था । कारण यह कि इन नीतियों के अनुसरण से उनके हितों को आघात पहुंचता था, और शक्तिशाली सुल्तान के सामने वे शक्तिहीन हो जाते थे । सुल्तान

---

१. अब्दुल्लाह, "तारीख-ए-दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८५ ।

२. अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८५; नियामत उल्लाह, "मखजनी अफ़ग़ाना" (अनु०) , पृ० ७०, ।

३. अब्दुल्लाह "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० ८५ ।

सिकन्दर लोदी के शासन काल के अन्तिम चरण में, अफ़गान उमराव ने अपनी खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने का निश्चय कर लिया था और यह संकल्प कर लिया था कि वे इस बात पर बल देंगे कि किन्हीं भी परिस्थितियों में कबीले के सिद्धान्तों की अवहेलना न की जाय और न ही उन सिद्धान्तों को उपेक्षा की दृष्टि से देखा जाय। कुछ भी हो, यद्यपि इब्राहीम को साम्राज्य विभाजन की योजना तनिक भी पसन्द न आई फिर भी इस योजना को स्वीकार करने के अतिरिक्त उसके सामने कोई और मार्ग भी तो न था। यदि वह इस योजना का विरोध करता तो उसके हाथ कुछ भी न लगता। जब कि योजना को स्वीकार कर लेने पर उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। साम्राज्य के विभाजन के कारण, उसके शासन का क्षेत्र कम हो गया, आय कम हो गई, उमराव वर्ग विभाजित हो गया, उसके अधिकार कम हो गए तथा अमीरों को यह अवसर मिल गया कि वे सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से अपनी शक्ति को बढ़ा लें।

साम्राज्य विभाजन की योजना के स्वीकृत होते ही जलाल खान अपने उमराव के साथ जौनपुर की ओर चल दिया। उसके जाने के पश्चात् ही इब्राहीम ने अपना राज्याभिषेक ८ ज़िलकद, २५ हि० । २२ नवम्बर, १५१७ ई० को करवाया। जैसे ही रापरी के गवर्नर खान जहान को साम्राज्य विभाजन की सूचना मिली, वह तुरन्त आगरा आया और उसने खुले दरबार में उन सभी अमीरों को फटकारा जिन्होंने विभाजन का सुझाव दिया था।[1] उसने उनसे कहा कि अब भी समय है कि वे इस विभाजन योजना को रद्द कर दें, सुल्तान इब्राहीम लोदी की सहायता करें और उन्हें पूरा-पूरा सहयोग दें। उसकी बातों में आकर आगरे में जो उमराव उपस्थित थे, उन्होंने ऐसा ही किया। सुल्तान इब्राहीम लोदी ने उनका साथ देते हुए हैबत खान गुर्ग अन्दाज के द्वारा जलाल खान के पास एक फ़रमान भिजवाया कि वह शीघ्र ही आगरा आ जाय क्योंकि विभाजन की योजना पर सब लोग मिल कर पुनः विचार करेंगे।[2] वास्तव में इस अवसर पर सुल्तान इब्राहीम ने अपने उमराव का

१. अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी"; (अलीगढ़), पृ० ८५; नियामत उल्लाह, "मखज़नी अफ़ग़ाना", (अनु०), पृ० ७०; बदायूनी, भाग १, पृ० ४३०।
२. अब्दुल्लाह, "तारीखे-दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८५-८६; नियामत-उल्लाह "मखज़नी अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७०।

खेल खेलते हुए, एक गुट को दूसरे गुट से लड़वाने तथा उनको शक्तिहीन करने की चेष्टा की। निःसन्देह उसे इस कार्य में सफलता प्राप्त हुई, किन्तु अन्त में उसे इस कार्य के कारण भुगतना पड़ा। बार-बार फ़रमान आने पर तथा हैबत ख़ान के मर्मस्पर्शी शब्दों ने जलाल खान के मस्तिष्क में सन्देह उत्पन्न कर दिया कि उसको बन्दी बनाने की चेष्टा की जा रही है। उसने आगरा जाने से इंकार कर दिया।[1] इस पर सुल्तान इब्राहीम लोदी ने उसे अपने अधीन लाने के लिए एक चाल और चली। उसने बिहार के गवर्नर दरिया ख़ान नूहानी, गाज़ीपुर के गवर्नर नासिर ख़ान नूहानी तथा अवध और लखनऊ के गवर्नर शैख़ज़ादा मुहम्मद खान फ़ारमूली को, जिनके पास ३०, ००० से ले कर ४०,००० सैनिक थे, फ़रमान भेजे तथा उनके लिए घोड़े, खिलअत, जड़ाऊ करौली तथा अन्य उपहार भेजे और उन्हें सूचित किया कि उसने उनके पदों को स्थायित्व प्रदान कर दिया है और अब उनकी पदोन्नति करना उनके द्वारा शाही फ़रमान की तामील करने पर निर्भर करेगा।[2] सुल्तान इब्राहीम लोदी को इस कार्य में सफलता प्राप्त हुई। पूर्वी प्रदेशों के अफ़ग़ान उमराव ने दिल्ली के सुल्तान की अधीनता स्वीकार कर ली और वे जलाल विरुद्ध हो गए। अपने हितों की सुरक्षा करने के लिए सुल्तान इब्राहीम लोदी ने अपने भाईयों, इस्माईल ख़ान, हुसैन ख़ान तथा महमूद खान को बन्दी-गृह में डलवा दिया। धीरे-धीरे कालपी को छोड़कर सुल्तान सिकन्दर लोदी के साम्राज्य के सभी प्रदेश उसके हाथों में आ गए। इसके पश्चात् अपने उमराव तथा देश की जनता को यह दिखाने के लिए कि वही उनका एकमात्र शासक है, उसने अपना दूसरा राज्याभिषेक १५ ज़िलहिज्जा, ९२३ हि०। ३० दिसम्बर, १५१७ ई० को करवाया और अपने अधिकारियों और अमीरों को उसने

---

१. अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी," (अलीगढ़), पृ० ८६; अहमद यादगार, "तारीखे-ए-सलातीन अफ़ग़ना" पृ० ६६–६७।

२. अब्दुल्लाह. "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८६; नियामत उल्लाह, "मखज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७१; बदायूनी, मुन्तखब-उल-तवारीख़ (अनु०) भाग १, पृ० ४३०; अहमद यादगार "तारीख-ए-सलातीन अफ-अफ़ग़ाना," पृ० ६८;

३. अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८६।

नवीन उपाधियाँ, उपहार, जागीरें उनके पद एवं स्तर के अनुसार प्रदान किए।[1]

दूसरी ओर जलाल खान ने अपने अधिकारों का दावा करने के लिए अपने को सुल्तान घोषित किया, जलालुद्दीन की पदवी धारण की तथा काल्पी में अपने नाम का खुतबा पढ़वाया। उसने फ़तह खान शेरवानी को अपना वज़ीर नियुक्त किया।[2] अपनी स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए जलालुद्दीन पूर्वी प्रदेशों की ओर भी गया किन्तु वहाँ अमीरों को अपना शत्रु पाकर वह पुनः काल्पी लौट आया। काल्पी पहुँचने पर उसे सुल्तान इब्राहीम के दृढ़-संकल्प की सूचना मिली। उसके सम्मुख अब केवल दो में से एक ही मार्ग था या तो वह इब्राहीम लोदी के पास जाकर आत्म-समर्पण कर दे या उसका विरोध करे। आत्म-समर्पण कर सुल्तान इब्राहीम की अधीनता को स्वीकार कर लेना ही उसके हित में था। किन्तु अपने हितों की रक्षा करने के विचार से उसके अमीरों ने उसे ऐसा करने से मना कर दिया। जलालुद्दीन ने उनके कहने में आकर सैन्य संगठन किया तथा निकटवर्ती प्रदेशों के ज़मींदारों तथा राजाओं को अपने पक्ष में करने में सफलता प्राप्त की।[3]

किन्तु सुल्तान जलालुद्दीन शाही सेनाओं के सामने अधिक दिनों तक न टिक सका और अन्त में उसे मालवा में शरण लेनी पड़ी। सुल्तान इब्राहीम लोदी को न केवल अपने भाई के विद्रोह को ही दबाने में सफलता प्राप्त हुई अपितु लोदी साम्राज्य की सीमाओं के विस्तार में भी सफलता मिली। ग्वालियर के दुर्ग को विजित कर उसने अपने साम्राज्य की दक्षिणी पश्चिमी सीमाओं को सुरक्षित कर लिया। किन्तु इसके पूर्व कि इस विशाल साम्राज्य के प्रशासन की ओर वह ध्यान दे सकता और अपने साम्राज्य को सुदृढ़ बना सकता, उसे एक ओर तो अपने अमीरों के बढ़ते हुए आक्रोश का सामना करना पड़ा और दूसरी ओर प्रादेशिक शक्तियों का। साम्राज्य की सीमाओं के विस्तार के साथ-साथ जब उसने केन्द्रीय सत्ता को सुदृढ़ करना आरम्भ

---

१. अब्दुल्लाह, "तारीखे-दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८६।

२. अब्दुल्लाह "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० ८६; इनायत उल्लाह, "मख़-ज़ने अफ़गना" (अनु०) पृ० ७१; अहमद यादगार; "तारीख-ए-सलातीन-ए-अफ़ग़ना", पृ० ६८।

३. नियामत उल्लाह, "मखजने अफ़ग़ना" (अनु०), पृ० ७१।

किया तो उससे उमराव वर्ग असन्तुष्ट हो गया तथा उस पर सन्देह करने लगा। तुर्की सम्राटों के राजत्व-सिद्धान्त को अपना कर और उनकी ही तरह दरबार में अमीरों के साथ व्यवहार कर सुल्तान इब्राहीम लोदी ने अफ़ग़ानों के दिल को ठेस पहुंचाई। उसके व्यवहार से वे खीझ उठे और उसकी नीति को देख कर उन्हें यह लगा कि सुल्तान उन्हें दबा कर रखना चाहता है। उनका ऐसा सोचना ठीक ही था। क्योंकि मियाँ बुहा को, यह सोचकर कि उसकी साठ-गाँठ पंजाब के गवर्नर दौलत खान लोदी से है, उसने बन्दीगृह में डलवा दिया। इसके पश्चात् सुल्तान ने फ़तह खान तथा आजम हुमायूं सरवानी को धोखे से बुलाकर उन्हें भी बन्दीगृह में डलवा दिया। सुल्तान उमराव पर सन्देह करने लगा और उमराव उस पर। इस प्रकार दोनों में संघर्ष प्रारम्भ हुआ। दोनों ही अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए उत्सुक हो उठे।

इससे पूर्व कि दिल्ली का सुल्तान इन साम्राज्य विरोधी तत्वों का दमन कर सकता, प्रादेशिक शक्तियों ने सिर उठाना प्रारम्भ किया। १५१८ ई० में राणा संग्राम सिंह ने सुल्तान इब्राहीम लोदी को खटौली के युद्ध में परास्त किया। अगले वर्ष मालवा राज्य को विजित करने के चक्कर में शाही फौजें उस ओर बढ़ीं। किन्तु मियाँ माखन, हुसाम खान, मियाँ मारूँफ और हुसैन खान फारमूली को राजपूतों ने बुरी तरह युद्ध में पराजित किया। इस प्रकार राणा संग्राम सिंह की प्रतिष्ठा दिन प्रतिदिन राजस्थान में बढ़ती गई। इसके विपरीत सुल्तान इब्राहीम की प्रतिष्ठा कम होती गई। राणा संग्राम सिंह से संघर्ष के कुछ समय पश्चात् कड़ा के गवर्नर इस्लाम खाँ ने विद्रोह किया और शाही सेना के अध्यक्ष अहमद खाँ को बुरी तरह परास्त कर अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा की। थोड़े समय पश्चात् आजम हुमायूँ लोदी तथा सईद खान लोदी भी भाग कर उसके साथ मिल गए। इस प्रकार कड़ा से लेकर कन्नौज तक का समस्त प्रदेश इस्लाम खान के हाथों में आ गया। दरिया खान नुहानी को भेजकर सुल्तान इब्राहीम लोदी ने यह विद्रोह दबा[1] तो दिया किन्तु उसी दरिया खान ने खान जहान लोदी के साथ मिलकर बिहार में विद्रोह किया। दरिया खान की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र बिहार या बहादुर खान ने सुल्तान मुहम्मद की

१. अब्दुल्लाह "तारीखे-दाऊदी", (अलीगढ़) पृ० ६१; नियामत उल्लाह, "मखजने, अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७५–७६; बदायूनी (अनु०) भाग १, पृ० ४३४।

उपाधि ग्रहण की, खुतबा पढ़वाया तथा सिक्के निकलवाये। इस प्रकार बिहार में स्वतंत्र राज्य की स्थापना हो गई।[1] कुछ ही दिनों में अनेक उमराव जो कि सुल्तान इब्राहीम के अधीन थे, वे उसका साथ छोड़ कर सुल्तान मुहम्मद से जाकर मिल गए। सुल्तान मुहम्मद की सेना में १००,००० सैनिक हो गए और इस सेना की सहायता से उसने बिहार से लेकर सम्भल तक के विशाल प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया। सुल्तान इब्राहीम लोदी ने उसके विरुद्ध अनेक सेनाएं भेजीं, किन्तु किसी भी आक्रमण में शाही सैनिकों को सफलता न प्राप्त हुई।[2] इस प्रकार बिहार तथा दक्षिण-पश्चिम में दो प्रादेशिक शक्तियों का उत्कर्ष हुआ जिसने कि सुल्तान इब्राहीम लोदी की साम्राज्यवादी विचारधारा को ठिकाने लगा दिया और उसके साम्राज्य को हिला कर रख दिया।

पूर्वी तथा दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्रों के अतिरिक्त उत्तर पश्चिम में भी एक ऐसी प्रादेशिक शक्ति का उत्कर्ष हुआ, जिसने आगे चल कर सुल्तान इब्राहीम लोदी के भाग्य का निर्णय कर दिया। दौलत खान लोदी पंजाब में बहुत दिनों से गवर्नर था। स्थानीय जनता पर उसका बहुत ही प्रभाव था। जब उसे सुल्तान इब्राहीम लोदी की नीतियों तथा उसके क्रूर स्वभाव के विषय से सुल्तान पहले ही चिन्तित था। अतएव सुल्तान ने उसे शक्तिहीन बनाने के लिए दरबार में बुलाया। दौलत खान लोदी को पहले ही मालूम था कि सुल्तान का अन्य अमीरों के प्रति कैसा व्यवहार रहा है, अतः उसने स्वयं दरबार में उपस्थित होना उचित न समझा। उसने अपने पुत्र को सुल्तान के पास भेजा। दिलावर खाँ ज्यों ही सुल्तान के सामने उपस्थित हुआ, सुल्तान ने धमकी दी कि यदि उसके पिता ने विश्वासघात किया तो उसका परिणाम बहुत ही बुरा होगा।

---

१. अब्दुल्लाह के अनुसार "सुल्तान इब्राहीम बरगश्तह करीब यक लख सवार जमीयत नमूदह अज़ उ बिहार ता विलायत बंगालह खुद आवरद खुद रा सुल्तान मुहम्मद खिताब दादह सिक्कह बनाम खुद करद" "तारीखे-दाऊदी" (अली-गढ़), पृ० ६६; नियामत उल्लाह "मखज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०), पृ० ७६-७७; बदायूनी (अनु०) भाग १, पृ० ४३५; अहमद यादगार "तारीखे-सलातीने अफ़ग़ाना," पृ० ८७।

२. नियामत उल्लाह "मखज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७७।

दिलावर ख़ाँ भयभीत होकर आगरे से भाग खड़ा हुआ। लाहौर पहुंच कर उसने सुल्तान के क्रूर व्यवहार के बारे में सब कुछ अपने पिता को बताया। दौलत खान समझ गया कि अन्य पुराने अमीरों की तरह, सुल्तान इब्राहीम लोदी उसे कुचल कर रख देना चाहता है। पंजाब में अपने हितों की सुरक्षा करने के लिए उसने काबुल से बाबर को बुलाकर अपने शत्रु को सदैव के लिए समाप्त करने का इरादा किया।[1]

जिस समय दौलत खान लोदी ने बाबर को हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का निमंत्रण भेजा उस समय सुल्तान इब्राहीम लोदी चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था। उसके पास न उचित साधन ही रह गए थे और न ही ऐसा उमराव वर्ग जो कि कष्ट के समय उसका साथ देता। सरवानी, नूहानी तथा फ़ारमूली अफ़गान जातियों के नेताओं ने पहले ही अपने सम्बन्ध उससे तोड़ दिए थे। उसके पास अब केवल कुछ स्वार्थी युवक अफ़गान ही थे, जिनकी सहायता से वह न खोए हुए प्रदेश को जीत सकता था और न ही वह प्रादेशिक शक्तियों का दमन ही कर सकता था। दक्षिणी-पश्चिमी क्षेत्रों में राणा संग्राम सिंह की बढ़ती हुई शक्ति, पूर्वी क्षेत्रों में नूहानियों के बढ़ते हुए प्रभाव और उत्तर-पश्चिम में दौलत खान लोदी की कार्यवाहियों ने सुल्तान इब्राहीम लोदी के लिए उस साम्राज्य को बचाना कठिन कर दिया जिसकी जड़ें इस देश की मिट्टी में भी न पहुंच पाई थीं। न ही सुल्तान ऐसी स्थिति में था कि वह मालवा या गुजरात, बंगाल या दक्षिण के स्वतंत्र राज्यों से ही बाह्य आक्रमणकारी का सामना करने में सहायता प्राप्त कर सकता। उसकी बाह्य नीति उतनी ही दोषपूर्ण थी जितनी कि उसकी आन्तरिक नीति।

दौलत खान के पुत्र दिलावर खान ने काबुल पहुंचकर बाबर से १५२१ ई० के अन्त में भेंट की। लगभग इसी समय बाबर के पास आलम ख़ाँ लोदी

---

१. नियामत उल्लाह "मखज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७७; अब्दुल्लाह "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० ९९; बदायूनी, (अनु०) भाग १, पृ० ४३५; अहमद यादगार, "तारीखे, सलातीने अफ़ग़ाना', पृ० ८७–८८; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४४८–४४९; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०२; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३७।

भी पहुंचा।[1] इन दो व्यक्तियों ने बाबर से अनुरोध किया कि वह सुल्तान इब्राहीम लोदी पर आक्रमण करे।[2] कुछ समय पश्चात् मेवाड़ के शासक राणा संग्राम सिंह का राजदूत भी बाबर की सेना में यह प्रस्ताव लेकर पहुँचा कि उत्तर-पश्चिम तथा पश्चिम से वे सुल्तान इब्राहीम पर आक्रमण कर लोदी साम्राज्य को समाप्त कर देंगे और उसके पश्चात् उस साम्राज्य को वे आपस में बाँट लेंगे। इस योजना के सफल होने का अर्थ यह था कि आगरे के पूर्व तक के प्रदेशों पर राणा का अधिकार होगा तथा आगरा उसके साम्राज्य की पश्चिमी सीमा होगी, तथा बाबर का अधिकार दिल्ली तक होगा। बाबर को इससे पूर्व कभी ऐसा प्रस्ताव हिन्दुस्तान के किसी शासक की ओर से नहीं प्राप्त हुआ था। उसे यह आशा हो गई कि हिन्दुस्तान के एक शक्तिशाली शासक की उसे सहायता उपलब्ध होगी तथा वह उसके पक्ष में स्थानीय जनता का भी सहयोग प्राप्त करने में उसे सहायता पहुँचाएगा। यही नहीं, यदि योजना पूर्णरूप से कार्यान्वित हो गई तो उसके प्रभाव का क्षेत्र भी बढ़ जावेगा। उसके अधीन पंजाब के उपजाऊ प्रदेश भी आ जाएंगे। उसकी आर्थिक समस्याएं एवं कठिनाइयाँ दूर हो जायगी और उसे अपने अधिकारियों तथा उमराव की शक्ति को दूसरी ओर लगाने का अवसर भी मिल जाएगा। उसने यह भी सोच

---

१. कुछ अफ़ग़ान सरदारों ने सुल्तान बहलोल लोदी के पुत्र आलम खाँ को गुजरात से बुलाकर उसे सुल्तान अलाउद्दीन के नाम से सुल्तान घोषित किया। किन्तु सुल्तान इब्राहीम को शक्तिशाली देखकर वह हिन्दुस्तान से भाग कर बाबर की शरण में जा पहुँचा।

२. अब्दुल्लाह, "तारीख–दाऊदी" (अलीगढ़) पृ० १००; नियामत उल्लाह ने इसका उल्लेख नहीं किया है। फिरिश्ता के अनुसार दौलत खान लोदी ने जो राजदूत बाबर के पास भेजे उनके द्वारा यह भी कहलवाया कि वह बाबर को लाहौर भी समर्पित करने के लिए तत्पर है–"तारीख-ए-फिरिश्ता", (मूल ग्रन्थ) पृ० २०२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३७; निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार दौलत खान और गाज़ी खान ने तथा सुल्तान इब्राहीम लोदी के अन्य वरिष्ठ अमीरों ने आलम खाँ के हाथों में बाबर के पास हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने के लिए पत्र भेजे–"तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) पृ० १।

होगा कि बिना पूर्वी क्षेत्र में अफ़गानों से संघर्ष किए हुए वह समस्त हिन्दुस्तान का शासक भी बन जावेगा। प्रत्येक दृष्टि से राणा का यह प्रस्ताव बाबर की महत्वाकांक्षाओं के अनुकूल था।

इस समय तक अनेक बार बाबर हिन्दुस्तान के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों पर आक्रमण कर चुका था तथा सियालकोट तक आगे बढ़ चुका था। अन्य शब्दों में वह हिन्दुस्तान की आन्तरिक दशा से भली-भाँति परिचित था, किन्तु इसके पूर्व कि वह हिन्दुस्तान की ओर बढ़े, अगले दो वर्षों में लोदी साम्राज्य की दशा और दयनीय हो गई। जब सुल्तान इब्राहीम लोदी को दौलत खान लोदी और बाबर के बीच होने वाली बातों के बारे में पता चला तो उसने पुनः अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा को वापस लेने तथा अपने अमीरों की शक्ति को कुचलने का बीड़ा उठाया। उसने मियाँ मुस्तफ़ा, मियाँ बायजीद तथा फिरोज खान को एक बड़ी सेना के साथ सुल्तान मुहम्मद के विद्रोह को दबाने के लिए पूर्वी क्षेत्रों की ओर भेजा, और उन्हें आदेश दिया कि वे विद्रोह को दबाने के पश्चात् शीघ्र ही राजधानी वापस लौट आएं और फिर दौलत खान लोदी के विरुद्ध प्रस्थान करें। शाही सेना को पूर्व में कुछ सफलता तो मिली, किन्तु इससे पूर्व कि शाही सत्ता उस प्रदेश में पूर्ण रूप से स्थापित हो पाती, सुल्तान इब्राहीम लोदी को सूचना प्राप्त हुई कि बाबर काबुल से हिन्दुस्तान की ओर चल पड़ा है। ऐसी स्थिति में उसने पूर्वी क्षेत्रों से अपनी सेनाएँ वापस बुला लीं और बिहार खान, मुबारक खान लोदी, बिरम खान नोहानी को एक विशाल सेना के साथ पंजाब की ओर दौलत खाँ को अपने पक्ष में करने तथा यदि आक्रमणकारी आगे बढ़ें तो उसे पीछे हटा देने के लिए भेजा। शाही सेनाओं ने लाहौर पर आक्रमण किया और दौलत खान लोदी को वहाँ से भगा कर दुर्ग पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया। इसके पश्चात् उन्होंने पंजाब के विद्रोहियों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कीं। अभी वे इस कार्य में व्यस्त ही थे कि बाबर ने सिन्ध नदी को पार किया। बिहार खान तथा मुबारक खान को इतना समय न मिल सका कि वे लाहौर के दुर्ग की रक्षा का प्रबन्ध कर सकते। बाबर के लाहौर पहुँचने पर वे दुर्ग के बाहर निकले और उन्होंने मुग़लों से युद्ध किया, किन्तु शत्रु के हाथों वे बुरी तरह पराजित हुए और उन्हें भागना पड़ा।[1] बाबर ने लाहौर के शहर को जला डाला। चार दिन लाहौर

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४४१; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २३६।

के निकट ठहरने के पश्चात् वह दीपालपुर की ओर रवाना हुआ। उसने दीपालपुर के दुर्ग पर आक्रमण किया और दुर्ग के लोगों को मौत के घाट उतार दिया (रबी उल-अव्वल ९३० हि०। २२ जनवरी, १५२४)।[१]

दीपालपुर में दौलत खाँ लोदी बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। अभी तक दौलत ख़ाँ लोदी बाबर के विषय में कुछ और ही सोच रहा था कि इब्राहीम लोदी को परास्त करने के बाद बाबर वापस लौट जाएगा तथा पंजाब का समस्त प्रान्त उसके हाथों में सौंप देगा ताकि वह वहाँ स्वतंत्र रूप से अपना जीवन व्यतीत करता रहे। किन्तु बाबर से भेंट करने के पश्चात् उसे बाबर की योजना के बारे में पता चला कि पंजाब को वह अपने हाथों में रखना चाहता है। बाबर ने उसे सुल्तानपुर तथा जालन्धर प्रदान कर दिए किन्तु लाहौर अपने ही हाथों में रक्खा।[२] दौलत खाँ उससे असन्तुष्ट हो गया और उसने बाबर पर आकस्मिक आक्रमण करने की योजना बनाई। दौलत खाँ ने बाबर से अनुरोध किया कि वह अपनी सेना का एक भाग डेरा इस्माईल खाँ भेजे जहाँ कि अनेक अफ़ग़ानसरदारों ने एक सेना एकत्र कर मुग़लों पर आक्रमण करने की योजना बनाई है। परन्तु दिलावर खाँ ने बाबर को इस षड्यंत्र की सूचना दे दी और उसे आगाह कर दिया कि उसका पिता और भाई दोनों उसको उसकी सेना से पृथक कर उस पर आक्रमण करना चाहते हैं। बाबर ने दौलत खाँ तथा उसके पुत्र ग़ाज़ी खाँ को तुरन्त बन्दी बना लिया और नज़रबन्द रखा।[3] सतलज नदी को पार करते हुए जब बाबर नौशेरा की ओर

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४४१; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मूलग्रन्थ), पृ० २०२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३८।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४४१; जहाँगीर ने 'तुज़ुक जहाँगीरी' में यह ग़लत लिखा है कि पंजाब का प्रशासन दौलत खां को सौंप कर बाबर काबुल वापस लौट गया— (अनु०) भाग १, पृ० ८८; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता, (मू० ग्रन्थ) पृ० २०२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३८; बख्शीशसिंह निज्जर, "पंजाब अण्डर दि मुग़ल्स", पृ० १४।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग१, पृ० ४४२; जहाँगीर ने तुज़ुके जहाँगीरी में यह ग़लत लिखा है कि जब बाबर ने भारत पर द्वितीय बार आक्रमण किया तो

बढ़ा तो उसने दौलत ख़ाँ लोदी तथा गाज़ी ख़ाँ को मुक्त कर दिया और सुल्तान-पुर की आय उनके खर्च के लिए निश्चित कर दी। जैसे ही बाबर उनके साथ सुल्तानपुर पहुँचा, तो उन्होंने अपने परिवारों को एकत्र किया और वे पहाड़ियों की ओर भाग खड़े हुए। बाबर ने जब यह सुना कि दौलत ख़ाँ भाग खड़ा हुआ है, तो वह चिन्तित हुआ और उसे यह समझने में देर न लगी कि उसका पंजाब में अधिक समय तक ठहरना ख़तरे से मुक्त नहीं है। अतएव उसने शीघ्र ही काबुल लौटने का फैसला किया। उसने दिलावर खान को खानखाना की पदवी देकर सम्मानित किया तथा उसे उसकी पैत्रिक सम्पत्ति सौंप दी। तत्पश्चात् वह लाहौर वापस लौट गया। लाहौर पहुँच कर बाबर ने पंजाब में मुग़लों द्वारा अधिकृत किए गए प्रदेशों की प्रशासनिक व्यवस्था को बनाए रखने के लिए प्रबन्ध किया। उसने मीर अब्दुल अज़ीज को लाहौर का प्रान्तपति, ख़ुसरो कोकलताश को सियालकोट का प्रान्तपति, बाबा कश्का को दीपालपुर का प्रान्तपति और मुहम्मद अली ताजिक को कलानौर का प्रान्तपति नियुक्त किया। उसने अपने अधिकारियों को आदेश दिया कि वे आलम खान के साधनों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए पंजाब में मुग़लों की स्थिति को सुदढ़ करने का प्रयास करें, ताकि भविष्य में पंजाब से आगे भी प्रभाव क्षेत्र बढ़ाया जा सके।

बाबर के पीठ मोड़ते ही, पंजाब में मुगल अधिकारियों को विकट परिस्थिति का सामना करना पड़ा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि लाहौर में अब्दुल अज़ीज, दीपालपुर में बाबा कश्का मुग़ल तथा आलम खान लोदी, सियालकोट में ख़ुसरो कोकुलताश तथा कलानौर में मुहम्मद अली ताजिक के अधीन वह अनेक सैनिकों को उनकी सहायता के लिए छोड़ गया था फिर भी इस प्रदेश में मग़लों की स्थिति दुर्बल बनी रही। यह देखकर कि बाबर काबुल वापस लौट गया है, दौलत खान लोदी, जिसने कि निकटवर्ती पहाड़ियों में शरण ले ली थी, पुनः सामने आया और उसने मुग़लों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कीं। उसने बाबर पर अब तनिक भी विश्वास न किया कि वह उसको किसी प्रकार की सहायता प्रदान करेगा। दौलत खान लोदी के विचारों में परिवर्तन देख कर सुल्तान इब्राहीम लोदी ने उसे अपने पक्ष में करने का एक बार प्रयास किया। जब इस कार्य में सुल्तान इब्राहीम

दौलत खां उसकी सेवा में आया और उसके पश्चात् मर गया (अनु०) भाग २, पृ० ८८।

लोदी को कोई भी सफलता न मिली तो उसने अपने सैनिकों को पंजाब से मुग़ल अफ़सरों को भगा देने, उनके हाथ से दुर्ग छीन लेने तथा विद्रोही दौलत ख़ान लोदी को ठिकाने लगाने के लिए रवाना किया। शाही सेना का मुक़ाबला करने के लिए दौलत ख़ान लोदी तैयार हो गया। उसने शाही सेना के कुछ अधिकारियों को अपनी ओर मिला लिया और अपने सैनिकों की सहायता से शाही सेना को युद्ध में बुरी तरह पराजित कर भगा दिया। तत्पश्चात् उसने अपने पुत्र दिलावर ख़ान को परास्त किया, उसे बन्दी बनाया और उसके हाथों से सुल्तानपुर का दुर्ग छीन लिया। उसके बाद वह दीपालपुर की ओर आलम ख़ान के विरुद्ध बढ़ा और उसने उसे पराजित कर दीपालपुर का दुर्ग भी छीन लिया। आलम ख़ान जान बचा कर भाग खड़ा हुआ और उसने बाबर के पास जाकर शरण ली। इसी प्रकार बाबा कश्का भी दीपालपुर छोड़कर लाहौर पहुँचा। दौलत ख़ान लोदी ने सियालकोट के दुर्ग पर आक्रमण करने के हेतु ५००० अफ़ग़ान सैनिकों को भेजा किन्तु दुर्ग को विजित करने में उन्हें सफलता न प्राप्त हुई।[१] चूंकि जब लाहौर के प्रान्तपति मीर अब्दुल अज़ीज को इस आक्रमण की सूचना प्राप्त हुई तो वह अपनी सेनाओं को लेकर ख़ुसरो कोकुलताश की सहायता करने के लिए सियालकोट की ओर चल पड़ा। सियालकोट पहुँच कर उसने अफ़ग़ान आक्रमणकारियों के साथ युद्ध किया और उन्हें पराजित कर वह लाहौर वापस लौट गया।

पंजाब में दौलत ख़ान व उसके पुत्र की मुग़लों के विरुद्ध सफलता देखकर और यह देख कर कि वहाँ उनका प्रभाव बढ़ता ही जा रहा है, दिल्ली का सुल्तान इब्राहीम लोदी उनकी बढ़ती हुई शक्ति को समाप्त करने के लिए दिल्ली से रवाना हुआ। उसने बजवाड़ा में पड़ाव डाला और युद्ध के लिए तैयारियाँ पूर्ण की। इससे पूर्व कि दौलत ख़ान और इब्राहीम लोदी में युद्ध हो, दौलत ख़ान ने अपने प्रभावशाली व्यक्तित्व की सहायता से शत्रु के अनेक अफ़सरों तथा सैनिकों को अपनी

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० ४४२–३; नियामत उल्लाह "मख़ज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७७; बख़्शीश सिंह निज्जर, "पंजाब अण्डर दि मुग़ल्स" पृ० १४।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ४४२; फ़िरिश्ता, 'तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०२; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ३९–४०।

ओर कर लिया और शत्रु के शिविर में फूट के बीज बो दिए। अपनी स्थिति दुर्बल होते हुए देखकर इब्राहीम लोदी ने बिना युद्ध किए हुए ही दिल्ली वापस लौटना उचित समझा।

इस बीच आलम ख़ान ने काबुल पहुँच कर बाबर को दौलतख़ान की कार्यवाहियों की सूचना दी और उसे बताया कि मुग़ल अफ़सरों को पंजाब में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है।[1] बाबर इस बार स्वयं तो रवाना हुआ नहीं, उसने आलम ख़ान के द्वारा मुग़ल अधिकारियों के लिए एक फ़रमान अवश्य भेजा, जिसमें उसने उन्हें आदेश दिया कि वे दिल्ली पर आक्रमण करने तथा उसे विजित करने में उसकी सहायता करें। आलम ख़ान लाहौर पहुँचा, और उसने मुग़ल अफ़सरों से भेंट की, किन्तु मुग़ल अफ़सरों ने उसको सहायता देने से इन्कार कर दिया, क्योंकि उन्हें उस पर तनिक भी विश्वास न था। मुग़ल अफ़सरों की ओर से निराश होकर, आलम ख़ान ने ग़ाज़ी ख़ान के पुत्र शेर ख़ान के द्वारा दौलत ख़ान लोदी के पास, मुग़लों के विरुद्ध एक आक्रमणात्मक एवं रक्षात्मक सन्धि का प्रस्ताव भेजा।[2] जब दौलत ख़ान लोदी को यह मालूम हुआ कि आलम ख़ान लाहौर में ठहरा हुआ है, तो वह चिन्तित हुआ। उसे प्रारम्भ में ऐसा लगा कि कहीं ऐसा न हो कि आलम ख़ान मुग़लों से मिलकर उस पर आक्रमण कर, खोए हुए दुर्गों को पुनः अपने अधिकार में न ले ले। जब आलम ख़ान का यह प्रस्ताव उसे मिला तो उसकी जान में जान आई। फिरिश्ता के अनुसार दौलत ख़ान तथा ग़ाजी ख़ान को जब बाबर के हिन्दुस्तान पर पुनः आक्रमण करने के दृढ़ संकल्पके बारे में सूचना मिली तो उन्होंने मुग़ल अधिकारियों को पत्र लिखे कि वे अलाउद्दीन (आलम ख़ान) का पक्ष लेने के लिए तथा उसे दिल्ली के सिंहासन पर बिठलाने के लिए सहायता देने को तैयार हैं। मुग़ल अधिकारियों ने उनसे सरहिन्द से लेकर लाहौर तक के प्रदेश बाबर को सौंप देने का आश्वासन लेकर अलाउद्दीन को दौलत ख़ान के पास

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५५; बदायूनी "मुन्तख़ब-उल-तवारीख़" (अनु०) भाग १, पृ० ४३६।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५५; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग १, पृ० १; इलियट-एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४१।

जाने तथा उसकी सहायता से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की अनुमति प्रदान कर दी।[1]

आलम खान लाहौर से चल कर दौलत खाँ के पास पहुँचा। इस प्रकार दौलत खान, गाज़ी खान, आलम खान, दिलावर खान, महमूद खान, इस्माईल जिलवानी, सुलेमान शैख ज़ादा तथा गाज़ी खान का पुत्र शेर खान, ३०,००० से ४०,००० सैनिकों को लेकर पंजाब से दिल्ली की ओर आगे बढ़े।[2] दिल्ली पहुँच कर उन्होंने दुर्ग पर घेरा डाला, किन्तु वे उसे जीतने में असफल रहे। सुल्तान इब्राहीम लोदी ने शीघ्र ही अपने सैनिकों को एकत्र किया और वह शत्रुओं के विरुद्ध चल पड़ा। उसने उन पर आक्रमण किया तथा युद्ध में बुरी तरह परास्त कर तितर-बितर कर

---

१. फिरिश्ता के अनुसार—ईन हाल कि सुल्तान अलाउद्दीन लोदी व काबुल रफतह बूदब लाहौर आमदह फरमान व उमराए मुग़ल आवुरदह कि इमदाद सुल्तान अलाउद्दीन लोदी व देहली कुनद, व तसख़ीर करदह बाऊ सिपारन्द। दौलत खान व ग़ाजी ख़ान आँ मजमून रा व खातिर आवुरदह कसी निज़्द उमराए फिरदौस मकानी फिरिस्तादह गुफतन्द कि सुल्तान अलाउद्दीन लोदी पादशाह जादह मा अस्त हमेशा ग़रज़ आँ अस्त ऊ पादशाह अफ़ग़ानान बाशद पस ऊ रा निज़्द मायान व फिरस्तेद ता बर सरे सरीर देहली नश्मनीदह ई मुमलिकत ता सरहिन्द ताल्लुक ता लाहौर इत्तिफाक गरदह। सुल्तान अलाउद्दीन लोदी रा निज़्द"..."तारीख-फिरिश्ता," (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४०।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५६; गुलबदन बेगम, "हुमायूँ नामा" (अनु०) पृ० ९३; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४०; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४२; डा० किशोरी शरण लाल, "दि टवालाईट आफ दि देहली सल्तनेत,' (एशिया) पृ० २२१; डा० अवध बिहारी पाण्डेय, "दि फर्स्ट अफ़ग़ान इम्पायर" (इलाहाबाद) पृ० २०६; बख्शीश सिंह निज्जर, "पंजाब अण्डर दि मुग्लस", पृ० १५,।

दिया।[1] आलम खान भाग कर दोआब पहुँचा और गंगा नदी को पार कर वह पानीपत की ओर बढ़ा। मार्ग में मियाँ सुलेमान नामक एक अमीर व्यापारी से उसने चार लाख रुपये प्राप्त किए। अन्य अफ़ग़ान भी उसी की तरह भाग खड़े हुए। इस्माईल जिलवानी, बिबन, जलाल ख़ान तथा अन्य अफ़ग़ानों ने दोआब में शरण ली। सैफुद्दीन, दरिया खान, महमूद खान, खान जहान, शेख जमाल फ़ारमूली; जिन्होंने कि युद्ध के पूर्व ही आलम खान का साथ छोड़ दिया था, इब्राहीम लोदी से जाकर मिल गए। विद्रोहियों के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के उपरान्त सुल्तान इब्राहीम लोदी दिल्ली वापस लौट गया।[2]

कुछ समय पश्चात् गाज़ी खान भी किसी तरह भाग कर पंजाब पहुँचा। उसने कलानौर पर आक्रमण किया तथा उसे जीत लिया। तत्पश्चात् उसने पसरूर में पड़ाव डाला। कुछ समय पश्चात् जब उसे यह ज्ञात हुआ कि बाबर हिन्दुस्तान पर पुनः आक्रमण करने के लिए बढ़ रहा है तो पसरूर से हटकर उसने मिलवत में शरण ली और उसके बाद पहाड़ों को पार करता हुआ वह दिल्ली पहुँचा, जहाँ वह सुल्तान इब्राहीम लोदी से मिल गया। इस समय से अपनी मृत्यु तक गाज़ी खान सुल्तान इब्राहीम लोदी के साथ ही रहा। सुल्तान इब्राहीम लोदी ने पुनः आगे बढ़ कर मुग़लों पर आक्रमण किए और उन्हें सियालकोट तथा सरहिन्द से भगा दिया। इस प्रकार दौलत खान को उसने शक्तिहीन बना दिया तथा पंजाब में जिन स्थानों पर बाबर ने अपनी सैनिक चौकियाँ स्थापित की थीं वे स्थान अपने अधिकार में ले लिए और मुग़लों को वहाँ से भगा दिया। जब आलम खान लोदी तथा दौलत खान तथा अन्य विद्रोही अफ़ग़ानों के हाथ में कुछ भी न रहा तो उन्होंने बाबर को समय समय पर पत्र भेज कर हिन्दुस्तान आने का निमंत्रण दिया।

पंजाब पर अपना प्रभुत्व पुनः स्थापित करने तथा अपने शत्रु सुल्तान इब्राहीम

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५६; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया।" भाग २, पृ० ४१।

२. इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४२–४३।

३. फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४१।

लोदी से प्रतिशोध लेने के लिए बावर १ सफ़र, ९३२ हि० : शुक्रवार, १७ नवम्बर, १५२५ ई० को काबुल से हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ।[1] काबुल से चलने के पूर्व बावर ने अपने पुत्र हुमायूं को आदेश दिया कि वह शीघ्र ही बदख्शाँ से प्रस्थान कर अपनी सेनाओं के साथ उसकी सेवा में उपस्थित हो। कुछ समय तक उसने हुमायूं की प्रतीक्षा की और अपनी सैनिक तैयारियाँ भी पूरी कीं। जब उसने देखा कि हुमायूं के आने में देर है, तो वह धीरे-धीरे हिन्दुस्तान की ओर बढ़ा। देह याकूत नामक स्थान पर हुमायूं अपनी सेनाओं के साथ बावर के पास पहुँचा।[2] उसी दिन ख्वाजा कलाँ भी ग़ज़नी से उसकी सेवा में उपस्थित हुआ। देह याकूत से चल कर बावर ने सिन्ध नदी को, बिना किसी रुकावट के, सुल्तानपुर, कुश गुम्बज, बीगराम, अली मस्जिद को पार करते हुए सिन्ध नदी को पार करने की तैयारी की। बीग्राम में ही बावर को सूचना मिली कि दौलत खान ने तथा गाज़ी खान ने २०,००० से ३०,००० सैनिकों को एकत्र कर लिया है तथा कलानौर पर अधिकार जमा लिया है और वे अब लाहौर की ओर बढ़ने वाले हैं। बावर ने मोमीन अली तवाची को तुरन्त पंजाब की ओर रवाना किया कि वह मुग़ल अफ़सरों को उसके आने की सूचना दे और उनसे कहे कि वे तब तक अफ़ग़ानों से युद्ध न करें, जब तक कि वह उनके पास पहुँच न जाय। १६ दिसम्बर, १५२५ ई० को उसने सिंध नदी तथा कचाकोट नदी[3] को पार किया तथा उसी के किनारे पड़ाव डाला। उसने अपने अमीरों, बख्शियों तथा दीवान को आदेश दिया कि वे गणना करके

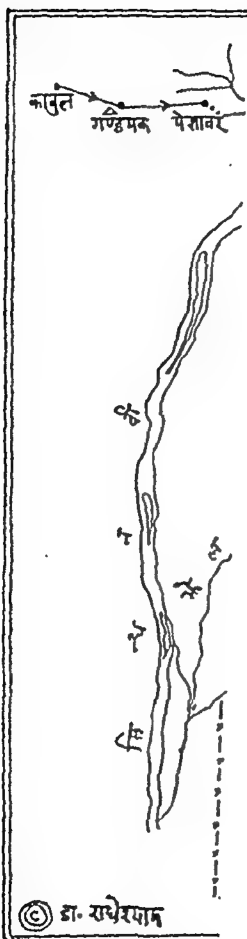
---

१. बाबरनामा, भाग २, पृ० ४५६; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी", भाग २, पृ० ४–६; नियामत उल्लाह, "मख़ज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७७; मुल्ला अहमद आदि, 'तारीख़-ए-अलफी', रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३२; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४२–४३; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४१।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ४५६; निज़ामुद्दीन अहमद "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ०, ।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ० ४५०–४५२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत," (बाबर) पृ० १३४–३७, ।

४. हारू नदी; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४०।



(पृष्ठ २६० के सामने)

उसे बताएं कि सैनिकों की संख्या कितनी है। उसे बताया गया कि कुल मिला कर छोटे व बड़े, अच्छे या बुरे लोग जो सेना के साथ हैं, सबकी संख्या १२,००० हैं[1] इसके पश्चात् बाबर सियालकोट की ओर बढ़ा। उसने अपने अग्रिम दल को शीघ्रातिशीघ्र लाहौर की ओर बढ़ने का आदेश दिया। उसकी सेना हरू नदी के किनारे स्थित बालानाथ जोगी पहुँची और दूसरे दिन उसने बिहत नदी को झेलम के एक घाट से पार किया।[2] इसी स्थान पर वली क़िज़ील, जो कि सियालकोट की रक्षा करने वाली सेना में एक अधिकारी था तथा जिसके अधीन बीमरूकी तथा अकरीयादा के परगने थे, बाबर से मिला और उसने उसे बताया कि गाज़ी ख़ान के आने पर ख़ुसरो कोकुलदाश ने सियालकोट का दुर्ग उसके हाथों में समर्पित कर दिया है तथा ख़ुसरो कोकुलदाश अपने परगनों की ओर चला गया है। यह सुनकर बाबर ने उसे बहुत डाँटा-फटकारा किन्तु उसे क्षमा कर दिया।[3] जैसे ही बाबर आगे बढ़ा उसे पुनः यह सूचना मिली कि दौलत ख़ान तथा गाज़ी ख़ान ४०,००० सैनिकों के साथ उसके आक्रमण का सामना करने तथा मार्ग रोकने के लिए रावी नदी के तट पर लाहौर के निकट तैयार हैं। बाबर ने तुरन्त सैय्यद तूफ़ान तथा सैय्यद लाचीन को लाहौर की ओर भेजा कि वे मुग़ल अमीरों को यह सूचना दें कि वे अफ़ग़ानों से युद्ध न करें और शाही सेना से सियालकोट या पसरूर

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५२; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १३८; निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार बाबर की सेना में इस समय मात्र १०,००० सैनिक थे। 'तबकाते अकबरी' भाग २, पृ० ३; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २३९; तारीखे अलफी में सैनिकों की संख्या १०,००० दी गई है। रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३३; फिरिश्ता ने भी सैनिकों की यही संख्या दी है, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन इन इण्डिया", भाग २, पृ० ४१; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २४०।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५२; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० ३; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४०; बख्शीश सिंह निज्जर, "पंजाब अण्डर दि मुग़ल्स", पृ० १५।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५३।

में आकर मिले। इसके पश्चात् बाबर ने चिनाव नदी के तट पर पड़ाव डाला। मार्ग से हट कर उसने बहलोलपुर का भ्रमण किया और अगले दो या तीन दिनों तक वह समाचार एकत्र करने तथा आनन्द मनाने में व्यस्त रहा। बहलोलपुर से २७ दिसम्बर, १५२५ ई० को प्रस्थान करके २६ दिसम्बर को वह सियालकोट पहुँचा। उसने सियालकोट का दुर्ग जीत लिया और नूर बेग के भाई शाहम को आदेश दिया कि वह लाहौर जाकर ग़ाज़ी खान के विषय में सूचना प्राप्त करे तथा वहाँ से लौट कर यह बताए कि किस स्थान पर शत्रु के साथ मुकाबला हो सकता है।[1] सियालकोट से चलकर बाबर १५ रबी-उल-अव्वल, ६३२ हि०। ३० दिसम्बर, १५२५ ई० को पसरूर पहुँचा। यहाँ उसकी सेवा में मुहम्मद अली जंग जंग, ख्वाजा हुसैन मुशिरफे दीवान आदि व्यक्ति उपस्थित हुए। बाबर ने मीर बूजका को लाहौर की ओर भेजकर शत्रु के बारे में मालूम करने की चेष्टा की। बूजका ने बाबर को लौट कर बताया कि मुग़लों के आने की सूचना पाते ही शत्रु भाग खड़ा हुआ है।[2] अतएव बाबर ने भारी सामान शाह मीर हुसैन तथा जान बेग की देख-रेख में पसरूर में छोड़ दिया और स्वयं कलानौर की ओर चल दिया। कलानौर में उसके समक्ष मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा तथा आदिल सुल्तान कुछ बेगों के साथ उपस्थित हुए। १ जनवरी, १५२६ ई० को बाबर ने कलानौर से प्रस्थान किया। मार्ग में उसे ग़ाज़ी खान के विषय में सूचना प्राप्त हुई कि मुग़लों के आगे बढ़ने की सूचना पाते ही दौलत खाँ ने मिलवट के दुर्ग में शरण ले ली है और गाज़ी खान निकटवर्ती पहाड़ियों में शरण लेने के लिए भाग खड़ा हुआ है। अतः उसने शीघ्र ही मुहम्मदी, अहमदी, कुतुलुक कदम, कोषाध्यक्ष वली तथा अन्य बेगों को आदेश दिया कि वे ग़ाज़ी खान का पीछा करें तथा मिलवट के आसपास के प्रदेशों की रक्षा

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५३; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० १३६; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० ३।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १४०–४१; तबकात-ए-अकबरी (अनु०) भाग २, पृ० ५।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५८; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० १४४।

करते रहें, ताकि मिलवट के दुर्ग के लोग वहाँ से भाग न सकें।[1] बाबर का मुख्य उद्देश्य इस समय ग़ाज़ी ख़ान को पकड़ना था, अतः दूसरे दिन वियाह नदी को कनवाहीन[2] के निकट पारकर मिलवट के दुर्ग पर घेरा डालने का उसने तुरन्त आदेश दिया और स्वयं किले के निकट ही उसने पड़ाव डाला।[3]

जैसे ही बाबर के सैनिकों ने मिलवट के दुर्ग पर घेरा डालना प्रारम्भ किया दौलत ख़ान का पुत्र अली ख़ान दुर्ग में से निकल कर बाहर आया और उसने बाबर से भेंट की। बाबर ने उसे आश्वासन दिया कि यदि वह दुर्ग समर्पित कर दे तो उसे किसी प्रकार की हानि न पहुँचाई जाएगी। साथ ही साथ उसने अली ख़ान को धमकी भी दी और उसे वापस दुर्ग में भेज दिया। तत्पश्चात् अवरोध की गति तीव्र कर दी गई। दुर्ग के अन्दर दौलत ख़ान को बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। हार कर उसने बाबर के पास सूचना भेजी कि ग़ाज़ी ख़ान दुर्ग में नहीं है, वह पहाड़ियों की ओर भाग गया है, और यदि उसके अपराध क्षमा कर दिए जाएं तो वह दुर्ग को समर्पित कर देगा।[4] बाबर ने उसके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और ख़्वाजा मीर मीरान को दुर्ग में भेजकर उसकी शंकाएं दूर कर, उसे अपने साथ उसके सामने लाने के लिए कहा। ख़्वाजा मीरमीरान दौलत ख़ान तथा उसके पुत्र अली ख़ान को लेकर बाबर के सामने पहुँचा।[5] तत्पश्चात् बाबर ने अपने

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५८; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० १४४।
२. अमृतसर के उत्तर-पूर्व में २४ मील पर स्थित है।
३. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ४५८-९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० १४४।
४. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ० ४५९, ४६१; तारीख़-ए-अलफ़ी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३४; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग भाग ४, पृ० २४६।
५. दौलत ख़ान को जब बाबर के सामने लाया गया तो बाबर ने आदेश दिया कि, "उन्हीं दोनों तलवारों को जिन्हें उसने मुझसे युद्ध करने के लिए अपनी कमर में बाँधा था, उसकी ग्रीवा में लटका दिया जाय। कहीं कोई ऐसा भी दुष्ट गँवार होगा ? इस दशा को प्राप्त हो जाने पर भी वह डींगें मारता था।" जब उसे मेरे कुछ समीप लाया गया तो मैंने आदेश दिया कि, "तलवारें

सैनिकों को आदेश दिया कि दुर्ग में जाकर वे दौलत खान के परिवार तथा अन्त:पुर की स्त्रियों को कुशलतापूर्वक बाहर निकाल लाए, किसी को भागने न दें तथा मुहम्मदी, अहमदी, सुल्तान जुनैद, अब्दुल अज़ीज़, मुहम्मद अली जंग जंग को उसने आदेश दिया कि दुर्ग में प्रवेश कर वे सब सामान अपने कब्जे में ले ले।[1] दौलत ख़ान को ख्वाजा मीर मीरान के संरक्षण में रखा गया। तत्पश्चात् बाबर ने दुर्ग का निरीक्षण किया। वहाँ ग़ाज़ी खान के पुस्तकालय में उसे बहुमूल्य ग्रन्थ और पाण्डुलिपियाँ मिलीं। उनमें से कुछ उसने हुमायूं को तथा कुछ कामरान कोभेंटमें भेजी [2]।

उसकी गर्दन से पृथक कर दी जायें।" मेरे समक्ष उपस्थित होकर उसने घुटने टेकने में संकोच किया। मैंने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे उसके पाँव खींच कर उसे घुटने के बल झुका दें। मैंने उसे अपने सामने बैठाकर एक व्यक्ति को, जिसे कि हिन्दुस्तानी भाषा का भली-भाँति ज्ञान था, अपनी एक-एक बात को उसे समझाने का आदेश दिया। मैंने कहा कि इससे कहो, "मैंने तुमको अपना पिता माना।मैंने तेरी अभिलाषा से कहीं अधिक तेरे प्रति आदर सम्मान प्रदर्शित किया। तुझे एवं तेरे पुत्रों को बिलोचियों के दर-दर की ठोकरें खाने से बचाया। तेरे परिवार तथा अन्तःपुर को इब्राहीम के बन्दीगृह से मुक्त कराया। तातार खां की विलायत में से ३ करोड़ तुझे प्रदान किए। मैंने तेरे साथ कौन सी बुराई की थी कि तूने इस प्रकार अपने दोनों ओर तलवारें लटका कर मेरे राज्य पर आक्रमण कर दिया और वहां उपद्रव मचाकर शान्ति भंग कर दी ?" वह दुष्ट अवाक् हो गया।"—रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १४५-४६; बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५६-६१; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० ६; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्रीआफ दि राइज आफ दि मुहमडनपावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४२; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४०।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६०; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०३; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४२।

२. निज़ामुद्दीन अहमद "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० १३;

मिलवट के दुर्ग का प्रबन्ध करने के बाद बाबर ने अपने सैनिकों को उन पहाड़ियों की ओर भेजा जहाँ कि ग़ाज़ी ख़ान ने शरण ली थी ताकि वह पकड़ कर लाया जा सके। इसी समय बाबर ने कित्ताबेग कोआदेशदिया कि वह दौलत ख़ान,अली ख़ान, इस्माईल ख़ान तथा अन्य अफ़ग़ान सरदारों को मिलवट के अधीनस्थ मीरा के दुर्ग में ले जाकर बन्द कर दे। कित्ता बेग इन अफ़सरों को लेकर जब सुल्तानपुर पहुँचा तो वहाँ दौलत ख़ाँ की मृत्यु हो गई।[1] मुहम्मद अली जंग जंग के हाथों में मिलवट का दुर्ग सौंप कर तथा वहाँ २०० या २५० अफ़ग़ान सैनिकों को उसकी सहायता के लिए छोड़ कर बाबर आगे बढ़ा।

ग़ाज़ी ख़ान को बन्दी बनाने की चिन्ता में बाबर ने जसवान या दून की घाटी में प्रवेश किया। चूंकि ग़ाज़ी ख़ान के बारे में ठीक तरह से पता नहीं चल पा रहा था, उसने तरदीका को बैरम देव मलिनहास के साथ उसका पता लगाने तथा उसे बन्दी बनाकर लाने का आदेश दिया।[2] अभी बाबर दून की घाटी ही में था कि उसे आराइश ख़ान, मुल्ला मुहम्मद मजहब तथा दुरमेश ख़ान, जो कि सुल्तान इब्राहीम लोदी के अमीरों में से थे, के पत्र प्राप्त हुए कि वह आगे बढ़ता रहे और वे उससे मिलने की चेष्टा कर रहे हैं।[3] तदुपरान्त बाबर दून की घाटी से चल पड़ा। अब तक बाबर के सैनिकों ने हुरूर तथा कलहूर के आसपास के पर्वतीय दुर्गों को विजित कर लिया था। कुछ समय पश्चात् आलम ख़ान भी उसकी

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६०-६१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १४७; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० ८; (अनु०) भाग २, पृ० १३; बदायुनी "मुन्तख़ब-उत-तारीख़" (अनु०) भाग १, पृ० ४३८; तुज़ुके जहांगीरी, (अनु०) भाग २, पृ० ८८।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १४७; "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० १३।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५०; निज़ामुद्दीन अहमद "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० १० (अनु०) भाग २, पृ० १३; बदायुनी, "मुन्तख़ब-उत-तवारीख़" (अनु०) भाग १, पृ० ४३८; तारीख़ अलफ़ी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३४।

सेवा में आ पहुँचा तथा उसे इस्माईल जिलवानी और बिबन के भी पत्र प्राप्त हुए जिनमें उन्होंने अधीनता स्वीकार करने की प्रतिज्ञा की।

बाबर को आगे बढ़ते समय तनिक भी विरोध का सामना नहीं करना पड़ा। इब्राहीम लोदी के शत्रु उसे लगातार आगे बढ़ने को प्रोत्साहन देते रहे। दून की घाटी से निकल कर वह रूपर होता हुआ सरहिन्द पहुँचा। बनूर तथा सनूर नदियों को उसने पार किया और उन्हीं के किनारे पड़ाव डाला। यहाँ उसके गुप्तचर उसे सूचित किया कि सुल्तान इब्राहीम लोदी ने अपनी सेनाओं के साथ दिल्ली से कूच कर दिया है और वह इस आक्रमण का सामना करने के लिए आगे बढ़ रहा है तथा वह उस स्थान पर पहुँच गया है जहाँ उसने आलम ख़ान व उसके अफ़ग़ान साथियों को युद्ध में परास्त किया था।[1] बाबर को यह भी सूचना मिली कि हिसार फ़िरोज़ा का शिक़दार हामिद खान खासा खैल, हिसार फ़िरोज़ा तथा उसके आस-पास की सेनाओं को लेकर हिसार फिरोज़ा से चल दिया है। बाबर ने तुरन्त कित्ता बेग को इब्राहीम लोदी के बारे में तथा मोमीन अतका को हामिद खान के बारे में पता लगाने भेजा। जब दोनों सेनाओं के पड़ावों तथा उनकी गतिविधियों के सम्बन्ध में बाबर को पूरी सूचना मिल गई तो वह आगे बढ़ता हुआ अम्बाला पहुँचा।[2]

जब कभी भी एक शत्रु दूसरे शत्रु पर आक्रमण करता है, तो वह आक्रमण करने से पूर्व योजना बनाता है, तथा एक युद्ध-प्रणाली अपनाता है कि किस प्रकार शीघ्र से शीघ्र उसे आगे बढ़कर शत्रु की भूमि पर अपनी सेनाओं को सजाना है और शत्रु पर किस समय तथा कब आक्रमणकरना है। इस योजना के अनुसार

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६४; "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० १३-१४।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६५; रिजवी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५०; निजामुद्दीन अहमद, "तबकाते अकबरी" भाग २, पृ० ११; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २४६; अहमद यादगार "तारीखे सलातीने अफगना" पृ० ६१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०४; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४३; तारीख-ए-अलफी, रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३४।

ही वह शत्रु पर विजय प्राप्त करने की चेष्टा करता है। काबुल से हिन्दुस्तान की ओर बढ़ने से पूर्व बाबर ने भी यही कार्य किया और ज्यों-ज्यों वह शत्रु की भूमि पर आगे बढ़ता गया त्यों त्यों बादाम चश्मा, अली मस्जिद, पेशावर, सियालकोट, पसरूर, कलानौर, मिलवट, बहलोलपुर, रूपर, अम्बाला में सैनिक चौकियाँ स्थापित करता गया ताकि काबुल से उसका सम्पर्क बना रहे तथा अधिकृत स्थानों से उसे रसद प्राप्त होती रहे और स्थानीय जनता का सहयोग मिलता रहे। जिस समय वह अम्बाला पहुँचा, उस समय तक उसकी सारी सैनिक तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थीं। अतएव निश्चिन्त होकर उसने हुमायूं को हामिद ख़ाँ के विरुद्ध भेजा। हुमायूं के साथ सेना का दाँया भाग था, जिसमें कि ख़्वाजा कलाँ, मुल्तान मुहम्मद दुल्दाई, वली, ख़ुसरो, हिन्दू बेग, अब्दुल अज़ीज़, मुहम्मद अली जंग जंग, घरेलू सैनिक, शाह मन्सूर बरलास, किता बेग और मुहिब अली आदि थे।[1] बाबर ने हुमायूं को आदेश दिया कि इससे पूर्व कि हामिद खान सुल्तान इब्राहीम लोदी से जाकर मिले, उसे उस पर आक्रमण कर देना चाहिए और उसे परास्त कर शीघ्र मुख्य सेना से आकर मिल जाना चाहिए। अपने पिता के आदेशानुसार, हुमायूं २६ फरवरी, १५२६ ई० को अम्बाला से हामिद खान पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। उसने हामिद खान पर आक्रमण किया, और उसे भगा दिया।[2] तत्पश्चात् हुमायूं ने हिसार फ़िरोज़ा तथा उसके अधीनस्थ सभी स्थानों पर अपना

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५०; "अकबरनामा" (अनु०) भाग १, पृ० २४०; बदायूनी (अनु०) भाग १, पृ० ४३६; तारीख़ अलफ़ी, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०४; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि अमुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४३।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६५; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५०-५१; अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० १०२; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०४; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४३; अहमद यादगार "तारीख-ए-सलातीन अफगना" पृ० ९४; निज़ामुद्दीन अहमद "तबकात- ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० १५।

अधिकार जमा दिया, और ५ मार्च, १५२६ ई० को १०० वन्दियों तथा ७–८ हाथियों को लेकर वह वावर की सेवा में उपस्थित हुआ। आस पास के प्रदेशों की जनता को भयभीत करने के विचार से वावर ने इन सौ अफ़ग़ान वन्दियों को मौत के घाट उतरवा दिया।[1] दो दिन उपरान्त मलिक विव्वन अफ़ग़ान जो कि सुल्तान इब्राहीम लोदी का एक अफसर था, ने अपने स्वामी का साथ छोड़ दिया और वह ३,००० अफ़गान सैनिकों के साथ आकर वावर की सेवा में उपस्थित हुआ।[2] हिसार फ़िरोज़ा तथा उसके अधीनस्थ स्थानों का मुग़लों के हाथों में आ जाने से वावर का कार्य और भी सरल हो गया। हिसार फ़िरोज़ा में उसने सैनिक चौकी स्थापित की और इस प्रकार समस्त पंजाव पर वावर का प्रभुत्व स्थापित हो गया। यही नहीं हुमायूं के लौटने के पश्चात् ही उसने अपने गुप्तचरों को भेज कर शत्रु के वारे में जानकारी प्राप्त की। अम्वाला से चलकर वह शाहावाद पहुंचा।[3]

शाहावाद में उसे सुल्तान इब्राहीम लोदी के आगे वढ़ने के समाचार निरन्तर प्राप्त होते रहे। शाहावाद से चलकर वावर जमुना नदी के तट पर पहुंचा।[4] जमुना नदी को पार कर उसने सरसावा में पड़ाव डाला और ख्वाज़ा कलाँ तथा हैदर कुली को समाचार लाने के लिए भेजा। हैदर कुली ने उसे सूचित किया कि इब्राहीम लोदी ने दाऊद खान लोदी तथा हातिम खाँ लोदी के साथ ५,००० या ६,००० सवारों के साथ जमुना के उस ओर भेज दिया है और वे इस समय सुल्तान इब्राहीम के शिविर से ३ या ४ कोस आगे पड़ाव डाले हुए पड़े हैं।[5] वावर ने

---

१. निजामुद्दीन अहमद, "तवकात-ए-अकवरी" (अनु०) भाग २, पृ० १६;
२. फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०४; व्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया, भाग २ पृ० ४३।
३. शाहावाद, अम्वाला के दक्षिण में १३ मील पर स्थित है; तारीख-ए-अलफी, रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर) पृ० ६३४।
४. फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०४; व्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ३४, निज़ामुद्दीन अहमद, "तवकात-ए-अकवरी" (अनु०) भाग २, पृ० १७।
५. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६७; फिरिश्ता के अनुसार इस समय हातिम खां और दाऊद खान के अन्तर्गत २७,००० सैनिक थे—"तारीख

तुरन्त १ अप्रैल, १५२६ ई० को चीन तीमूर सुल्तान,[1] महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान तथा बाएं भाग के सभी सैनिकों उदाहरणार्थ, सुल्तान जुनैद बरलास, शाह मीर हुसैन, कुतुलुग़ कदम, को शीघ्रातिशीघ्र आगे बढ़ने का आदेश दिया।[2] इस सैनिक टुकड़ी ने दाऊद खां और हातिम खां पर दूसरे दिन आक्रमण किया और उन्हें पराजित कर हतिमखाँ को मौत के घाट उतार दिया और दाऊद खाँ को भागने पर विवश किया। इस विजय के बाद यह सैनिक टुकड़ी बाबर की मुख्य सेना से आकर मिल गई। हातिम खान की पराजय से सुल्तान इब्राहीम लोदी के सैनिक भयभीत हो गए तथा वे लड़ने का साहस छोड़ बैठे। बाबर सरसावा से आगे बढ़ा। उसने सैनिकों की गणना की, अपने सैनिकों को पंक्तियों में सजाया, तथा सैनिकों को आदेश दिया कि वे निकटवर्ती प्रदेशों से गाडियां एकत्र करें और उन्हें लेकर आवें। इस प्रकार लगभग ७०० गाड़ियाँ लाई गई। बाबर ने तदुपरान्त उस्ताद अली क़ुली को आदेश दिया कि रूमियों की प्रथानुसार इन गाड़ियों को एक दूसरे से जोड़ दिया जाय और प्रत्येक दो गाड़ियों के बीच में ५-६ तोरे लगा दिए जायं, ताकि उनके पीछे खड़े होकर ही बन्दूकची बन्दूक चलाएं। इस प्रकार की सैनिक व्यवस्था करने के उपरान्त वह आगे बढ़ा

-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०४; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग ३, पृ० ४३; तारीख़-ए-अलफी, रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३४; निजामुद्दीन अहमद "तबकात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० १७।

१. तारीख़-ए-अलफी में उसका नाम चीन तैमूर खां दिया हुआ है—तारीख़-ए-अलफी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३४।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ० ४६७-६६; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत", (बाबर) पृ० १५०-५२; अब्दुल्लाह, "तारीख़-दाऊदी", पृ० १०२; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २५१; तारीखे अलफ़ी, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३४; इनायत उल्लाह, "मख़ज़नी अफ़ग़ना", (अनु०) पृ० ७८; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०४; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४३-४४।

और २९ जमादी-उल-आखिर, ९३२ हि०। १२ अप्रैल, १५२६ ई० को पानीपत के मैदान में पहुंचा।[1]

पानीपत के मैदान में उतरने से पूर्व बाबर ने समस्त बेगों एवं जवानों को, जिन्हें कि युद्ध का अनुभव था, परामर्श के लिए बुलाया तथा एक परामर्श-गोष्ठी आयोजित की गई, ताकि युद्ध के बारे में सभी बातें तय की जा सके। इसी गोष्ठी में, बाबर ने अन्य लोगों से परामर्श लेने के पश्चात् सैनिक व्यवस्था, किस स्थान पर युद्ध होगा और कैसे युद्ध होगा, आदि बातें तय की। बाबर ने स्वयं पानीपत के मैदान का निरीक्षण किया और यह तय कर दिया कि किस-किस स्थान पर उसकी सेना के विभिन्न भाग अपना-अपना स्थान ग्रहण करेंगे। साथ ही साथ उसने अपनी प्रतिरक्षा की ओर भी ध्यान दिया। प्रतिरक्षित होने के लिए उसने पानीपत के शहर तथा उसके मुहल्लों का, जो कि उसकी सेना के दांयी ओर थे, प्रयोग किया। बांई ओर उसने खाईयाँ खुदवाई तथा पेड़ों की शाखाओं द्वारा उन्हें ढकवा दिया। सेना का मध्य भाग का बचाव ७०० गाड़ियों द्वारा किया गया था तथा २ अथवा ३ गाड़ियों के मध्य में ५ अथवा ६ गोली-सह पर्दे रखे गए थे, ताकि सैनिकों की रक्षा हो सके। गाड़ियों की ही पंक्ति में बीच-बीच में पर्याप्त स्थान छोड़ दिया गया था, ताकि १०० से लेकर २०० सैनिक आगे बढ़ कर शत्रु पर आक्रमण कर सकें। गाड़ियों तथा गोलीसह पर्दों के पीछे बन्दूकची तथा पैदल सैनिक रखे गए थे। अश्वारोहियों को घिराव करने वाले दलों के रूप में कार्य करना था। ऐसी सैन्य व्यवस्था करते समय तथा सैनिक पंक्तियों को सजाते हुए बाबर ने सदैव इस बात का ध्यान रखा कि उसकी सेना के दांये तथा बाँए दल पूर्ण रूप से सुरक्षित रहें और उनकी रक्षा का प्रबन्ध पक्का हो। सामने की पंक्तियों में रहने वाले सैनिक भी आवश्यकता पड़ने पर गोली-सह पर्दों के पीछे शरण ले सकें अथवा गाड़ियों के पीछे से शत्रु पर बाणों की बौछार कर सकें। उसने साथ ही साथ यह भी सावधानी बर्ती, कि किसी प्रकार से शत्रु की ओर से उसकी सेना के किसी भाग को हानि न पहुंचे। उसकी योजना के अनुसार ही पूर्व निश्चित् समय पर सेना के अग्रिम दल को

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४६९; फिरिश्ता "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० २०४-५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४४; तारीख-ए-अलफी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३५।

आगे बढ़ कर शत्रु पर आक्रमण करने की व्यवस्था की गई थी। बन्दूकचियों को जिन्हें कि आगे की पंक्ति अथवा खाइयों में रखा गया था; को इस व्यवस्था के अनुसार शत्रु को आगे बढ़ने से रोकना था तथा उसके आगे बढ़ने के प्रयास को विफल बनाना था। यदि हम बाबर की समस्त सैन्य व्यवस्था, जो कि उसने इस अवसर के लिए बनाई थी, पर दृष्टि डालें तो हम कह सकते हैं कि उसकी युद्ध-पद्धति रक्षात्मक थी, किन्तु किसी भी समय आवश्यकता पड़ने पर उसे आगे बढ़ कर आक्रमण करने के लिए प्रयोग किया जा सकता था। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि बाबर ने इस योजना को बनाते समय अपने सभी हितों का ध्यान रक्खा। उसकी प्रतिरक्षात्मक सैनिक पंक्ति इतनी लचीली थी कि सुल्तान इब्राहीम लोदी की सेना के आगे बढ़ते ही उसे आगे बढ़ाया जा सकता था, और उसके द्वारा शत्रु की समस्त सेना को चारों ओर से घेरा भी जा सकता था। बाबर की इस युद्ध-प्रणाली की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उसकी सेना के मध्य भाग ने युद्ध के मैदान में कम से कम स्थान घेर रखा था और सेना के इसी भाग की सहायता बन्दूकचियों तथा तोप चलाने वालों को करना था। डा० के० एस० लाल ने ठीक ही कहा है कि पानीपत में बाबर द्वारा की गई व्यवस्था बचाव करने की बहुत अच्छी तरकीब थी, साथ ही साथ यदि सुल्तान इब्राहीम उस व्यवस्था के बीच में होकर आगे बढ़ने की कोशिश करता तो वही उसको फाँसने के लिए जाल बन सकता था।[1] ऐसी युद्ध प्रणाली बाबर के मस्तिष्क की उपज थी। बाबर ने बहुत ही सूक्ष्म रूप से मध्य-एशिया में होने वाली कुछ लड़ाईयों को देखा, कुछ अन्य ऐसे युद्धों के विषय में सुना तथा कुछ में उसने स्वयं भाग लिया तथा उसने अपने परिवार के सदस्यों से भी यह जानकारी प्राप्त की कि किस प्रकार उसके पूर्वज युद्ध किया करते थे। इन्हीं सब बातों के आधार पर उसने हिन्दुस्तान में एक नई युद्ध-प्रणाली का प्रचलन किया।[2] बाबर ने जिस युद्ध-पद्धति का प्रचलन किया, उसे "तुलुग़मा"

---

१. डा० के० एस० लाल, "टवाईलाइट आफ़ दि देहली सल्तनत" (एशिया), पृ० २२२।

२. ऐसा कहा जाता है कि बाबर ने इस प्रणाली का ज्ञान अमीर तैमूर की रक्षात्मक व्यवस्था से प्राप्त किया। थानेश्वर के युद्ध में जिस समय उसके सैनिक मल्लू इक़बाल ख़ान की सेना को देखकर भयभीत हो गए, उस समय तैमूर ने अपने अनुचरों एवं सैनिकों में विश्वास पैदा करने

युद्ध-प्रणाली कहते हैं तथा यह पद्धति रूमियों, मंगोलों, ईरानियों, बौहिमिन्यस के अनुभवों को ध्यान में रख कर बनाई गई थी। इस प्रणाली को सफल बनाने के लिए इस बात की चेष्टा की गई कि अश्वारोही तथा तोपखाना दोनों एक दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करें तथा सेना का प्रत्येक भाग दूसरे भाग की गतिविधि पर ध्यान रखें। इस बात की भी व्यवस्था विशेष रूप से की गई थी कि जब शत्रु की सेना चारों ओर से घिर जावे तो उस्ताद अली तथा मुस्तफ़ा, जो कि तोपखाने के अध्यक्ष थे, अपनी तोपों से शत्रु पर गोला-बारी प्रारम्भ कर दें। संक्षेप में बाबर की योजना का मुख्य उद्देश्य, सेना के सभी भागों को सुरक्षित रखना, सेना के सभी भागों का साथ-साथ मिल कर शत्रु के विरुद्ध बढ़ना, उस पर आक्रमण करना, एक दूसरे की सहायता करना तथा आगे बढ़ कर युद्ध करना या आवश्यकतानुसार रक्षात्मक ढंग के युद्ध करना था। इस दृष्टि से बाबर की युद्ध-प्रणाली बहुत ही अच्छी थी तथा हम उसकी तुलना उस समय प्रयोग में लाई जाने वाली अन्य युद्ध प्रणालियों से नहीं कर सकते।

दूसरी ओर जब सुल्तान इब्राहीम लोदी को ज्ञात हुआ कि बाबर ने पानीपत में पड़ाव डाल दिया है तो वह भी शीघ्रातिशीघ्र उस ओर बढ़ा। पानीपत के शहर से दो मील दूर उसने पड़ाव डाला। राजपूत शासकों की भाँति सुल्तान इब्राहीम लोदी ने परम्परागत युद्ध-प्रणाली को अपनाते हुए, अपनी सेना को मैदान में उतारा। उसने एक भव्य दरबार आयोजित किया तथा हीरे व जवाहरात, जो कुछ भी वह अपने साथ लाया था, उसने अपने उमराव में बाँटा और उनसे युद्ध में तब तक लड़ते रहने को कहा जब तक कि वे वीर गति को न प्राप्त हों। युद्ध में सफलता पाने पर, उसने उन्हें विश्वास दिलाया कि वह उन्हें बहुमूल्य पुरस्कार देगा।[1] यही नहीं सुल्तान इब्राहीम लोदी ने ज्योतिषियों को बुला कर

के लिए आदेश दिया कि पेड़ों की शाखों या मिट्टी के ढेरों से बड़े-बड़े ऊंचे-ऊंचे टीले उसकी सेना के सामने वाली पंक्ति के सामने बना दिए जायं। और इन टीलों के सामने खाइयां भी खोद दी जायं और उनके सामने हाथियों की पंक्ति बना दी जाय तथा उन हाथियों की गर्दनों तथा पैरों के चमड़े की रस्सी से बांध दिया जाय जिससे कि उसकी सेना की रक्षा में लिए इस प्रकार एक दीवार खड़ी हो जावे।

१. अहमद यादगार के अनुसार सुल्तान इब्राहीम ने अपने अमीरों से कहा,

युद्ध के परिणाम के बारे में भी पूछा। उन्होंने बड़े गूढ़ शब्दों में उसकी सफलता की भविष्यवाणी की और कहा :- "कि हमारे समस्त हाथी व घोड़े मुग़लों की सेना में प्रविष्ट हो गए हैं"[1] सुल्तान इब्राहीम लोदी ने इन शब्दों का अर्थ अपने ही पक्ष में लगाया और यह कहा जाता है कि एक लाख सैनिकों १,००० हाथियों को लेकर वह पानीपत के मैदान की ओर बढ़ा।[2] वास्तव में १२ अप्रैल, १५२६ को जब सुल्तान इब्राहीम लोदी पानीपत के मैदान में पहुँचा तो उस समय उसके पास ५०,००० सैनिक तथा १००० हाथी थे।[3] युद्ध-स्थल के निकट पड़ाव डालने के पश्चात् भी सुल्तान इब्राहीम लोदी

"हे मित्रों, कल के दिन हम लोग मुग़ल सेना से घोर युद्ध करेंगे, यदि हमको विजय प्राप्त हुई तो हम तुम्हें उचित रूप से प्रसन्न करेंगे, अन्यथा तुम लोग हमसे सन्तुष्ट रहना।" –"तारीख़ सलातीने अफ़ग़ाना," रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ४५२।

१. "कि तमाम फ़ीलान व आस्पान मादरे लश्कर मुग़ल दर आमदह् अन्द"— अब्दुल्लाह, "तारीख़े दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० १०२; अहमद यादगार "तारीख़े सलातीने अफ़ग़ाना," रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४५१।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ० ४७०; अब्दुल्लाह, "तारीख़े दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० १०४; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता (मू० ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहम्मडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४४-४५।

३. नियामत उल्लाह के अनुसार ५००० सैनिक थे "मख़ज़ने अफ़ग़ाना" (अनु०) पृ० ७८; गुलबदन बेगम ने १८०,००० घोड़े तथा १५०० हाथी लिखा है। 'हुमायुं नामा' (अनु०) पृ० ६३-६४; अहमद यादगार ने ५००० घोड़े तथा २००० हाथी लिखा है, देखिए, "तारीख़े सलातीने अफ़ग़ाना", पृ० ६५ रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ४५२; मिर्ज़ा हैदर दोघलत ने १०,०००० की संख्या दी है—"तारीख़-ए-रशीदी", पृ० ३५८; "नफ़ाय-सुल मआसीर" में १०,००० सैनिक लिखा है, देखिए, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ३५०; अब्दुल्लाह ने ५,००० सैनिक बताए हैं, देखिए, 'तारीख़े-दाऊदी' (अलीगढ़), पृ० १०२; फ़िरिश्ता के अनुसार

ने न शत्रु पर आक्रमण किया, न उसकी सैन्य-संख्या सैन्य-व्यवस्था को जानने का प्रयास किया और न ही उसने शत्रु के पास रसद पहुँचने वाली व्यवस्था पर कुठाराघात ही किया और न उसने राणा संग्राम सिंह अथवा पूर्वी प्रदेशों के अफ़गानों से ही किसी प्रकार की सहायता लेने का प्रयास किया। न ही उसने अपने सैनिकों को पंक्ति-बद्ध किया और न कोई नई युद्ध-प्रणाली ही अपनायी। ऐसा प्रतीत होता है कि पहले से बाबर की तोपों ने उसके तथा उसके सैनिकों को भयभीत कर दिया था। इसी कारण अगले आठ दिनों तक उसने बाबर के विरुद्ध किसी प्रकार की सैनिक कार्यवाही न की और चुपचाप बैठा रहा।

इन्हीं आठ दिनों में बाबर ने अपने सैनिकों में चेतना उत्पन्न की, उन्हें प्रोत्साहित किया और अन्त में जब उसने देखा कि अब वे किसी प्रकार से चैन से नहीं बैठना चाहते हैं, और लड़ने के लिए आतुर हो रहे हैं तो उसने, बिना अपनी व्यवस्था में किसी प्रकार का परिवर्तन किए हुए शत्रु को युद्ध करने पर बाध्य करने का विचार किया। उसने मेंहदी ख़वाज़ा, मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, आदि व्यक्तियों को ४,०००–५,००० सनिकों के साथ, १९अप्रैल, १५२६ ई० को शत्रु के शिविर पर छापा मारने के लिए भेजा। यद्यपि यह सैनिक टुकड़ी शत्रु पर आकस्मिक आक्रमण तो न कर सकी, किन्तु उसने सुल्तान इब्राहीम लोदी को युद्ध आरम्भ करने के लिए अवश्य विवश कर दिया।[1]

सुल्तान इब्राहीम लोदी की सेना में १००,००० अश्वारोही, १०० हाथी थे—"तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४४; बदायूनी ने १०,००० सैनिक तथा १००० हाथी लिखा है, "मुन्तख़ब-उत-तवारीख़" भाग २, पृ० ४४०; तारीखे अल्फ़ी में १००,००० सैनिक तथा १०० हाथी बताया गया है, देखिए रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३५; बाबर ने १००,००० सैनिक तथा १००० हाथी लिखा है, बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० १५४; अबुल फ़ज़ल ने में सैनिकों तथा हाथियों की संख्या इतनी दी हीलिखी है—अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४१।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७१; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० १५६; तारीख़-ए-अलफी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत"

दूसरे दिन प्रातःकाल इब्राहीम लोदी अपनी सेनाके दाएँ, बाएं, मध्य भाग के साथ आगे बढ़ा। बाबर तो इस अवसर के लिए कब से तैयार बैठा हुआ था। उसकी सेना के दाएं भाग में हुमायूं, ख्वाजाकलाँ, सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई, हिन्दू बेग, वली ख़ज़ीन तथा पीर कुली सीस्तानी थे, बाएं भाग में महम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, महदी ख्वाजा, आदिल सुल्तान, शाह मीर हुसैन, सुल्तानजुनैद बरलास, कुतुलग़ कदम, जानबेग, मुहम्मद बख्शी आदि थे, सेना के मध्य भाग के दायें बाज़ू में चीन तैमूर सुल्तान, सुलेमान मिर्ज़ा, मुहम्मद कोकुल्दाश, शाह मन्सूर बरलास, युनूस अली, दरवेश मुहम्मद दरबान तथा अब्दुल्लाह किताब दार थे, मध्य भाग के बाएं बाज़ू में ख़लीफ़ा, ख्वाजा मीर-मीरान, अहमदी दरबानची, कूच बेग का भाई तारदी बेग, आदि थे। सेना के अग्र भाग में ख़ुसरो कोकुल्दाश तथा मुहम्मद अली जंग जंग थे। सुरक्षित सेना अब्दुल अज़ीज मीर आख़ूर को सौंपी गई थी। तुलुग़मा के लिए दाएं भाग के सिरे पर वली किज़ील तथा मलिक क़ासिम बाबा कश्का का भाई एवं उसके सहायक मुग़ल और बाएं भाग को सेना के सिरे पर क़रा कूज़ी, अब्दुल मुहम्मद नेज़ाबाज़, शैख़ जमाल बारीन आदि-पंक्तियों को रखा गया। इन दोनों दलों का काम चक्कर लगा कर शत्रु की सेना को दाईं तथा बांईं ओर से घेर लेना था। शुक्रवार, २० अप्रैल, १५२६ को जैसे ही सुल्तान इब्राहीम लोदी की सेनाने अपने स्थानको छोड़ कर आगे बढ़ना प्रारम्भ किया, बाबर ने उसकी भूल का पूरा-पूरा लाभ उठा लिया। तुलुग़मा बनानेवालों ने इब्राहीम लोदी की सेना को घेर लिया तथा उस पर बाणों की बौछार प्रारम्भ कर दी। उसके पश्चात् महदी ख्वाजा ने, जो कि बाबर की सेना के बाएं भाग का नेतृत्व कर रहा था, युद्ध प्रारम्भ किया। इब्राहीम लोदी के सैनिकों ने उसे पीछे हटने पर विवश कर दिया। बाबर ने तुरन्त अहमदी परवानची, कुच बेग के भाई तारदी बेग, ख़लीफ़ा के पुत्र मुहिब अली को, महदी ख्वाजा की सहायता के लिए भेजा। लगभग इसी समय दायीं ओर भी कुछ युद्ध हुआ। इसके पश्चात् बाबर ने मुहम्मदी कोकुलदाश, शाह मन्सूर बरलास, यूनस अली, जो कि मध्य भाग पर आक्रमण कर रहे थे, उनको आदेश दिया कि वे युद्ध करें। इस प्रकार चारों ओर से बाबर के सैनिक इब्राहीम लोदी पर टूट पड़े और उस्ताद अली क़ुली तथा मुस्तफा की तोपों

(बाबर), पृ० ६३५; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४१; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० २१।

ने शत्रु का काम तमाम कर दिया। इब्राहीम लोदी कीसैन्य-व्यवस्था बिगड़ गई। अब उसकी सेना का कोई भाग न आगे बढ़ सकता था और न पीछे हट सकता था। और न ही अफ़ग़ान सैनिक भाग कर निकल सकते थे। दोपहर तक घोर युद्ध होता रहा। अन्त में युद्ध करते-करते सुल्तान इब्राहीम लोदी मैदान में मारा गया। जब युद्ध समाप्त हुआ तो मैदान हज़ारों की संख्या में लाशों से पटा हुआ था।[1]

पानीपत के युद्ध में एक ओर हज़ारों की संख्या में सैनिक थे, और दूसरी ओर सैनिक और तोपें दोनों। अतः इब्राहीम लोदी तथा बाबर के बीच जो संघर्ष हुआ वह बराबरी का न था। कुछ भी हो, इस युद्ध ने यह सिद्ध कर दिया कि बाबर एक कुशल सेनाध्यक्ष था, और उसने यह युद्ध अपनी नई युद्धप्रणाली, तोपखाने, अश्वारोहियों, अच्छी गुप्तचर व्यवस्था, तथा अपने सैनिकों के अदम्य उत्साह के कारण जीता। निःसन्देह पानीपत का युद्ध उन निर्णायक युद्धों में से एक था, जो कि

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७३-७४; अब्दुल्लाह, "तारीख दाऊदी" (अलीगढ़), पृ० १०३-१०४; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४४-६; तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०), पृ० ३५७-५८; गुलबदन बेगम, "हुमायुँ नामा" (अनु०), पृ० ६४; नियामत उल्लाह "मखज़ने अफ़ग़ाना", (अनु०) पृ० ७८-७९; तारीखे अल्फ़ी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ६३६; निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार लगभग ५००० से ६००० तक सैनिक सुल्तान इब्राहीम के निकट मरे हुए पड़े थे—तबकात-ए-अकबरी (अनु०) .भाग २, पृ० २३; फिरिश्ता के अनुसार ५००० सैनिक तो सुल्तान इब्राहीम लोदी के निकट मरे हुए पड़े थे। और विश्वस्त सूत्रों अनुसार इस युद्ध में १६,००० अफ़ग़ान खेत रहे। कुछ इतिहासकारों ने मृतकों की संख्या ५०,००० तक दी है—तारीख़-ए-फ़िरिश्ता (मू० ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४५-४६; बांकी दास ने लिखा है कि, "पाँच हजार बरकंदार, बारै हज़ार सवार उजबक मुगलारा साथ ले काबुल सुं पाणीपत आयो, उठै ही सुल्तान इब्राहीम आयो, सात हज़ार पठाणांसुं खेत पड़ियो सुलतान इब्राहीम फतै बाबररी हुई; "बांकीदास की ख्यात" (जयपुर) पृ० १८६; अलाउद्दीन बिन यहिया कज़वीनी ने पानीपत के युद्ध में बाबर के विजय की तिथि "फ़तह दौलत" के शब्दों में दी है—नफ़ायसुल मआसीर, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ३५९।

हिन्दुस्तान की भूमि पर लड़े गए तथा अन्य युद्धों की भाँति इसके परिणाम बहुत ही महत्वपूर्ण थे।

पानीपत के युद्ध के साथ ही प्रथम अफ़ग़ान साम्राज्य का अन्त हो गया, मुग़ल साम्राज्य की स्थापना हुई और मध्य युग के इतिहास का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ। जिस मुग़ल साम्राज्य की स्थापना हुई उसकी प्रकृति, वैभव, सांस्कृतिक योगदान, उसके राजनैतिक सिद्धान्तों, उसकी सीमाओं की तुलना हम उस युग के किसी भी साम्राज्य से कर सकते हैं। इससे पूर्व और इसके पश्चात् कभी भी हिन्दुस्तान में ऐसे साम्राज्य की स्थापना न हुई। प्रत्येक दृष्टि से यह अद्वितीय था। इस देश में नई युद्ध-पद्धति तथा युद्ध-प्रणाली और तोपों का प्रयोग करके मुग़लों ने धीरे-धीरे सारी राजनैतिक एवं सामाजिक व्यवस्था को बदल कर रख दिया। यही नहीं, प्रादेशिक शक्तियाँ, जिन्होंने कि १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में पुनः ज़ोर पकड़ना प्रारंभ किया था, कुछ समय के लिए बाबर की तोपों के सामने ठण्डी पड़ गईं। यदि दुर्भाग्यवश इन प्रादेशिक शक्तियों को १६ वीं तथा १७ वीं शताब्दी में तोपें न प्राप्त होतीं तो सम्भवतः बाबर के उत्तराधिकारियों को हिन्दुस्तान को राजनैतिक एकता के सूत्र में बाँधने का श्रेय अवश्य प्राप्त होता।

इस अवसर पर किसी व्यक्ति ने लिखा :—

नौ सौ ऊपर हुता बत्तीसा, पानीपत में भारत दीसा,
सातवीं रजब आयत डारा, बाबर जीता इब्राहीम हारा॥

देखिए, "तारीखे बाऊदी", (अलीगढ़), पृ० १०३; अहमद यादगार ने, यह पद्य इस प्रकार दिया है—

नौ से ऊपर बहुता बत्तीसा,
पानी पथ में भारत दीसा।
चौथी रजब, शुक्कर बारा,
बाबर जिता बराहीम हारा॥

देखिए, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ना" पृ० ६८-६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४५३।

बदायूनी ने लिखा है कि जब १५८८ ई० में वह पानीपत के मैदान से एक बार गुज़र रहा था तो बड़ी भयानक आवाज़ें उसके कानों में आईं, और जो लोग उसके साथ थे उन्होंने यह समझा कि किसी शत्रु ने उन पर आक्रमण कर दिया है—"मुन्तख़ब-उत-तवारीख़" (अनु०) भाग १, पृ० ४८२।

युद्ध में विजयी होने के पश्चात् बाबर ने जब यह देखा कि राणा संग्राम सिंह अपनी बात से पीछे हट गया है तो उसने हुमायूं को आदेश दिया कि वह ख्वाजा कलाँ, मुहम्मदी, शाह मन्सूर बरलास, युनुस अली, वली खज़ीन के साथ थोड़ी सेना लेकर आगरा जाय और उस स्थान को अपने अधिकार में लेकर, खज़ाने की रक्षा हेतु अपने आदमियों को नियुक्त कर दें।[1] इसी समय उसने महदी ख्वाजा को आदेश दिया कि वह अपने साथ मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल सुल्तान, सुल्तान जुनैद बरलास, तथा कुतुलुग़ कदम को लेकर तुरन्त दिल्ली की ओर प्रस्थान करे और वहाँ पहुँच कर खज़ाने की रक्षा का उचित प्रबन्ध करें।[2] इन दो सैनिक टुकड़ियों को रवाना कर, बाबर ने स्वयं २१ अप्रैल को पानीपत से दिल्ली की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। तीन दिन उपरान्त (२४ अप्रैल, १५२६ ई०) को वह दिल्ली पहुँचा।[3] उसने शैख़ निज़ामुद्दीन औलिया के मज़ार पर सिर झुकाया और उसके पश्चात् ख्वाजा कुतुबउद्दीन बख़्तियार काकी के मज़ार पर सिर झुकाया और दिल्ली के महलों, मकबरों, उद्यानों की सैर की। और उसने २६ अप्रैल १५२६ ई० को तुग़लकाबाद में पड़ाव डाला। उसने वली क़िज़ील को देहली का शिक़दार नियुक्त किया तथा दोस्त बेग को दीवान बनाया। दिल्ली में जो खजाना उसे मिला

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५८; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २५६; तारीखे-अलफी, रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ); पृ० २०५; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४६; निज़ामुद्दीन अहमद "तबकात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० २४।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १५८; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४७; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४६।

३. फिरिश्ता के अनुसार बाबर, "सेह सम्बद द्वाज़दहम शहर रजब व देहली तशरीफ आवरद" अर्थात् मंगलवार १२ रजब को दिल्ली पहुंचा "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग १, पृ० ४६।

उस पर मुहर लगा कर उसने दीवान को सौंप दिया।[1] शुक्रवार १५ रजब ६३२ हि०। २७ अप्रैल, १५२६ ई० को मौलाना महमूद, शैख़ जैन तथा कुछ अन्य लोगों ने उसके नाम का ख़ुतबा पढ़ा।[2] २८ अप्रैल, १५२६ ई० को बाबर ने दिल्ली से आगरा की ओर प्रस्थान किया।

हुमायूं बहुत पहले आगरा पहुँच गया था। उसे यहाँ अफगानों के विरोध का सामना करना पड़ा। उसके आने पर मलिक दाद कर्रानी, मिल्ली सुरदूक, और फ़िरोज़ खान मेवाती ने उसका सामना किया। हुमायूं ने दुर्ग पर घेरा डाल दिया। अभी घेरा चल ही रहा था कि हुमायूं को शहर के ऊपर अपना अधिकार जमाने तथा ख़ज़ाने को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त हो गई। उसने तुरन्त अपने सैनिकों को मार्गों की रक्षा करने के लिए आदेश दिया। दो दिन पश्चात् उसने ग्वालियर के शासक राजा विक्रमादित्य के परिवार के सदस्यों को जो कि उस समय दुर्ग में से निकल कर मुग़लों का सामना करने आए थे, को बुरी तरह युद्ध में परास्त किया। तत्पश्चात् उसने घेरे को शिथिल कर दिया और दुर्ग के सैनिकों को दुर्ग समर्पित करने पर वाध्य कर दिया।[3] इस प्रकार हुमायूं ने दुर्ग को विजित कर बाबर के नाम का ख़ुतबा पढ़ा। उसकी सफलता की सूचना बाबर को दिल्ली ही में मिल गई थी। अतः ४ मई को बाबर आगरा के निकट पहुँचा और सुलेमान फारमूली की मंजिल में पड़ाव डाला। अगले छः दिनों तक वह इसी स्थान

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १६०; तारीख़-ए-अलफ़ी, 'रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३६।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १६०, फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४६, अबुल फ़ज़्ल के अनुसार बाबर १२ रजब २५ अप्रैल १५२६ ई० को दिल्ली पहुँचा--अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४७।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७६; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४६-४७।

पर रुका रहा। इस अवधि में हुमायूं उसकी सेवा में उपस्थित हुआ और उसने उसका अभिवादन किया। तत्पश्चात् बाबर ने मलिक दाद कर्रानी, मिल्ली सुरदुक तथा फिरोज़ खान मेवाती को मृत्यु दण्ड दिया क्योंकि उन्होंने हुमायूं का विरोध किया था। किन्तु कई दिनों तक लोगों ने मलिक दाद को क्षमा करने के लिए उससे आग्रह किया। अन्त में बाबर ने तीनों व्यक्तियों को क्षमा कर दिया तथा उनकी सम्पत्ति उन्हें वापस कर दी। बाबर ने उन्हें परगने भी प्रदान किए और इब्राहीम लोदी की माता के प्रति भी उदारता दिखाते हुए उसने उसे ७ लाख दाम के मूल्य का एक परगना प्रदान किया।[1] इन सब मामलों को निबटा कर बाबर ने १० मई, १५२६ ई०[2] को आगरे में प्रवेश किया तथा सुल्तान इब्राहीम लोदी के महल को अपना निवास स्थान बनाया। दिल्ली तथा आगरा को विजित करने के साथ ही, बाबर द्वारा हिन्दुस्तान को विजित करने का प्रथम चरण समाप्त होता है।

हिन्दुस्तान की राजधानी आगरे में प्रवेश करने के पश्चात् बाबर ने किसी दरबार का आयोजन किया अथवा नहीं, इसके बारे में ठीक-ठीक कहना कठिन है किन्तु अपने पूर्वजों की परिपाटी का अनुसरण करते हुए उसने अपने उमराव, अमीरों तथा जिन्होंने इस अभियान में उसकी सहायता की थी, उन्हें सम्मानित तथा पुरस्कृत अवश्य किया। हुमायूं ने जो कोहनूर हीरा उसे भेंट किया था, उसे उसने वापस कर दिया।[3] इसके अतिरिक्त बाबर ने उसे हिसार फ़िरोज़ा की जागीर के अतिरिक्त सम्भल जागीर में प्रदान किया तथा ७० लाख दाम उपहार में दिए[4] इसी प्रकार बाबर ने अन्य अधिकारियों को उपहार दिए और उनकी धन की प्यास

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७७; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० १६१-६५; तारीख-ए-अलफी, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४७।
२. अबुल फ़ज़ल के अनुसार बाबर ने शुक्रवार २१ रजब। ४ मार्च १५२६ ई० को आगरे में प्रवेश किया—अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २४७।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७७; अकबर नामा (अनु०) भाग १ पृ० २४७।
४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ४७७; तारीख़े अलफी, रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३७।

बुझाई। इससे पूर्व कभी भी इतना धन उसके हाथ में न आया था, जिसके कारण कभी भी वह अपने उमराव को सन्तुष्ट न रख सका। प्रत्येक अमीर तथा सैनिक को धन या जागीरें प्रदान कर सम्मानित करने के पश्चात् बाबर ने समरकन्द, खुरासान, कशग़र, तथा ईराक़ में अपने सम्बन्धियों के लिए तथा समरकन्द, खुरासान मक्का तथा मदीना के धार्मिक व्यक्तियों के लिए धन भेजा। उसकी उदारता का अन्त यहाँ नहीं होता। उसने काबुल तथा बदख़शाँ में बरसाक की घाटी में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह आदमी हो या औरत, दास हो या स्वतंत्र व्यक्ति, बूढ़ा हो या बच्चा, हर एक के लिए एक-एक शाह रुखी भेजी।[1] वह अपनी दयालुता, उदारता एवं दानशीलता के लिए इतना प्रसिद्ध हो गया कि लोग उसे 'कलन्दर' कहने लगे। बाबर ने इस उपाधि को सहर्ष स्वीकार किया।अयोध्या में एक मस्जिद की दीवार पर एक शिलालेख है, जिनमें कि यह खुदा हुआ है कि "फ़साना दर जहाँ बाबर कलन्दर, कि शुद दर दौरे गेती कामरानी।"[2]

युद्ध को जीतना सरल है, किन्तु युद्ध से प्राप्त उपलब्धियों की सुरक्षा करना कठिन कार्य होता है। जिस समय बाबर अपनी विजय पर खुशियाँ मनाने में व्यस्त था, वे समस्याएं, जो कि अभी तक उसकी तोपों की आग की राख में दबी हुई थीं, वे सब एक-एक कर ऊपर आने लगीं। हिन्दुस्तान में उसकी स्थिति बहुत अधिक सुरक्षित न थी। कारण यह कि चारों ओर उसके आने से अनिश्चित वातावरण उत्पन्न हो गया था। जो लोग पानीपत के मैदान से भाग कर अपने घर पहुँचे, उन्होंने बाबर की वीरता तथा उसकी तोपों की कार्यवाही के बारे में अन्य लोगों को बताया। जिसने यह बातें सुनी उसे काठ मार गया। पंजाब व दोआब की जनता

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२२-२३; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २४८-९; "नफ़ायसुल मआसिर", रिजवी, "मुगलकालीन भारत", (बाबर) पृ० ३५०, गुलबदन बेगम, "हुमाँयु नामा" (अनु०), पृ० ९४; बदायूनी, भाग १, (अनु०), पृ० ४४३; अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना", 'रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४५४; तारीखे अलफी, रिजवी, "मुगल कलीन भारत" (बाबर), पृ० ६३७; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ० ४९।

२. रिजवी, "मुगल कालीन भारत", (बाबर) पृ० ६६०।

भय से इधर-उधर भागने लगी। गाँव के गाँव उजड़ गए, जिसके कारण उत्तरी भारत की समस्त आर्थिक व्यवस्था गडबड़ हो गई।[1] इसके अतिरिक्त बाबर के अपने सैनिक भी इस गर्म देश में नहीं रहना चाहते थे। वे अपने घरों को वापस जाने के इच्छुक थे। न ही उसकी विजय हिन्दुस्तान पर पूर्ण थी। अब भी ऐसे अनेक भाग थे जहाँ कि उसका कोई भी प्रभाव या प्रभुत्व उन पर न था। बाबर ने स्वयं लिखा है, देहली तथा आगरा के अतिरिक्त सभी स्थानों के क़िले के स्वामियों ने अपने-अपने क़िले दृढ़ कर लिए थे और किसी ने भी अधीनता स्वीकार न की थी। उत्तरी भारत में अफ़ग़ानों में अब भी विद्रोही प्रवृत्ति भरी हुई थी, और उन्होंने सुल्तान इब्राहीम लोदी की पराजय को अपनी पराजय मानने से इन्कार कर दिया था, क्योंकि परोक्ष रूप से केन्द्रीय सत्तासे उनका कोई भी सम्बन्ध न रह गया था। पानीपत के युद्ध का परिणाम मालूम होते ही क़ासिम खान सम्भली ने सम्भल में, निज़ाम खांन ने बयाना में, हसन खान मेवाती ने मेवात में, महमूद ज़ैतून ने धौलपुर में, तातार खान सारंगखानी ने ग्वालियर

---

१. बाबर ने स्वयं लिखा है कि, "जब हम आगरा पहुंचे तो ग्रीष्म-ऋतु थी। वहां के समस्त निवासी भय के कारण भाग खड़े हुए थे। न तो हमारे लिए और न हमारे घोड़ों के लिए चारा उपलब्ध था। गांव वालों ने हमसे शत्रुता एवं घृणा के कारण चोरी तथा डकैती प्रारम्भ कर दी थी। मार्गो पर यात्रा न होती थी . . . इसके अतिरिक्त उस वर्ष अत्यधिक गर्मी पड़ रही थी। विषैली हवा ने लोगों को गिरा कर ढेर कर दिया था और बड़ी संख्या में वे मरने लगे।" —बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २०३।

"लतैफ-ए-कुद्दसी" के रचयिता शैख रूकुनुद्दीन ने लिखा है कि जब मुहम्मद बाबर पादशाह का युद्ध सुल्तान इब्राहीम से पानीपत में हुआ, सारी विलायत के लोगों ने भागना शुरू कर दिया और वह उजड़ गई। किसी जगह शरण के लिए कोई स्थान न रहा . . ."देखिए ,डा० नूरूल हसन का शोध-निबंध, "लतैफ-ए-कुद्दसी" (ए कन्टेम्प्रेरी अफ़ग़ान सोर्स, मेडिवल इण्डिया क्वार्टरली) (अलीगढ़), जुलाई, १९५०, भाग १, पृ० ५२-५३।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२४; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० २०३।

में, हसन खान लोहानी ने रापरी में, कुतुब खाँ ने इटावा में, आलम खान ने कन्नौज में, तथा नासिर खान लोहानी और मारुफ़ फ़ारमूली ने बिहार में और उन्हीं की भाँति अन्य अनेक अफ़ग़ान तथा स्थानीय सरदारों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा कर दी थी।[1] पानीपत के युद्ध के पूर्व जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है इन अफ़ग़ान सरदारों ने मिलकर दरिया खां लोदी के पुत्र बहादुर खांको अपना नेता चुना और उसे सुल्तान मुहम्मद की पदवी देकर शासक घोषित कर दिया था। इब्राहीम लोदी की पराजय तथा मृत्यु का समाचार मिलते ही वे सब कन्नौज से आगरा की ओर बढ़ने लगे। अफगान सरदारों को एकत्रित होते हुए आगरा की ओर बढ़ते हुए देखकर, बिब्बनखान जिलवानी, जो पहले बाबरसे जाकर मिल गया था ने बाबर का साथ छोड़ दिया और अपने साथियों तथा अनुचरों को लेकर वह आगरा से भाग खड़ा हुआ। अन्य शब्दों में अफ़ग़ान सरदार बाबर के लिए परेशानी का कारण बन गए। उनके बढ़ते हुए विरोध के सामने वह न तो साम्राज्य का विस्तार कर सकता था और न शान्ति एवं सुरक्षा ही स्थापित कर सकता था। अफ़ग़ानों से भी बड़ी एक समस्या थी, जो कि उसका मुंह निहार रही थी। पश्चिमी क्षेत्रों में मेवाड़ के शासक राणा संग्राम सिंह ने राजपूत शासकों एवं सामन्तों का एक संघ बनाकर बाबर के सामने लोहे का पंजा फेंका और उसको चुनौती दी कि वह उसे उठा ले। पिछले कुछ वर्षों से राणासंग्राम सिंह की महत्वाकांक्षाएँ उसे अपने राज्य की सीमाओं को आगे तक बढ़ाने के लिए और उसे राजपूतों की खोई हुई शक्ति को पुनः प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रही थीं। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उसने निकटवर्ती शासकों से लगभग १८ युद्ध किए और प्रत्येक युद्ध में सफलता मिलने पर उसके गौरव में चार-चाँद लग गए, उसकी ख्याति बढ़ी और युद्ध करने के साधन। पानीपत के युद्ध से पूर्व वह यह सोचता था कि अमीर तैमूर की भाँति बाबर भी सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त करने के

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २०३; बदायुँनी, (अनु०), भाग १, पृ० ४४३; तारीखे अलफ़ी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत (बाबर), पृ० ६३७-३८; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६३; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मूल ग्रन्थ), पृ० २०५; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ४६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५१।

पश्चात् काबुल वापस लौट जावेगा किन्तु धीरे-धीरे बाबर के प्रति उसकी धारणाएँ बदलने लगी। उसे यह समझने में देर न लगी कि उसकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाएँ धीरे-धीरे बाबर की राजनैतिक महत्वाकांक्षाओं से टकरा रही हैं। दोनों के सामने उत्तरी-भारत पर अपनी-अपनी सार्वभौमिकता स्थापित करने का प्रश्न था। दोनों ही इस समय साम्राज्यवादी एवं विस्तारवादी नीतियों का अनुसरण कर रहे थे। दोनों में अन्तर केवल इतना था कि एक को प्रादेशिक शक्तियों की सहायता प्राप्त थी, जबकि दूसरे को नहीं। किन्तु फिर भी दूसरे को अपने पर विश्वास था कि तोपों की सहायता से पुरानी से पुरानी प्रादेशिक शक्ति, जब तक कि उसके पास वैसे ही साधन न हों, समाप्त किया जा सकता है। कुछ भी हो, राणा ने अफ़गानों तथा राजपूतों का सहयोग प्राप्त कर मुग़ल साम्राट बाबर को इस देश से बाहर निकालने का दृढ़ संकल्प किया।

इस प्रकार बाबर को पानीपत के युद्ध के पश्चात् अनेक आन्तरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। देश की जनता में अपने प्रति विश्वास पैदा करने, हिन्दुस्तान में स्थापित मुग़ल साम्राज्य की सुरक्षा, अपने विरोधियों को समाप्त करने तथा अन्य प्रशासनिक समस्याओं ने उसे अगले कुछ वर्षों तक व्यस्त रखा। इन सभी समस्याओं का हल करते समय उसने बड़ी सावधानी से कार्य लिया। सर्वप्रथम उसने अपने अमीरों तथा सरदारों से अनुरोध किया कि वे उसे ऐसे समय जबकि चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ है, अपना पूरा-पूरा सहयोग प्रदान करें। उसे जैसे ही यह मालूम हुआ कि अहमदी परवानची, वली खज़ीन, ख्वाजा कलाँ की भाँति अनेक अमीर व सैनिक स्वदेश वापस लौटने के लिए सिर उठा रहे हैं तो उसने तुरन्त एक परामर्श-गोष्ठी बुलाई और अपने अमीरों से पुनः अनुरोध किया कि वे स्वदेश लौटने का विचार त्याग दें।[1] इस अनुरोध का जब ख्वाजा कलाँ पर

---

१. बाबर ने अमीरों से कहा, "राज्य एवं दिग्विजय बिना साधन तथा अस्त्र-शस्त्र के सम्भव नहीं। बादशाही तथा शासन बिना सेवकों तथा अधीनस्थ राज्य के प्राप्त नहीं हो सकते। कई वर्षों के संघर्ष, कठिनाईयों, लम्बी यात्रा, अपने आप तथा अपनी सेना को रण क्षेत्र में झोंककर एवं घोर युद्ध के उपरान्त हमने ईश्वर की कृपा से शत्रुओं की इतनी बड़ी संख्या को इस आशय से पराजित किया कि ऐसे विस्तृत प्रदेशों तथा राज्यों को अधिकार में कर लें। अब आज क्या हो गया है और कौन सी ऐसी विपत्ति

कोई प्रभाव न पड़ा तो बाबर ने उसे गज़नी, गिरदीज़ तथा सुल्तान मसूदी हज़ारा का प्रशासन उसको सौंप दिया तथा उसे कुहराम का परगना जिसका राजस्व ३–४ लाख दाम था, प्रदान किया। इसी प्रकार ख्वाजा मीर मीरान को भी काबुल लौट जाने की अनुमति दे दी गई।[1]

अफ़गान सरदारों को अपने अधीन लाने के लिए बाबर ने सहृदयता एवं शक्ति के प्रयोग की नीति अपनाई। उसने उन्हें आश्वासन दिया कि यदि वे उसकी अधीनता स्वीकार कर लें तो वह उनकी रक्षा करेगा, उन्हें जागीरें प्रदान करेगा और उन्हें उपहारों से सम्मानित करेगा। उसके मैत्रीपूर्ण व्यवहार को देख कर तथा यह सोचकर कि युद्ध करने से तो अधीनता स्वीकार करना न्याय-संगत है, अनेक अफ़गान सरदारों ने उसके प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार कर लिया। कोल (अलीगढ़) के अफ़गान सरदार शैख़ घूरन ३००० व्यक्तियों के साथ बाबर के

आ गई है कि उस देश को जिसे कि प्राणों की बाज़ी लगाकर विजित किया है अकारण छोड़ कर चले जायं ? क्या हमारे भाग्य में यही लिखा है कि हम सर्वदा काबुल में दरिद्रता के कष्ट भोगते रहें। अब आज मेरे जैसे किसी हितैषी को ऐसी बात न करनी चाहिए किन्तु जिस किसी में शक्ति नहीं है और उसने जाना निश्चित कर लिया है तो फिर उसे रोकना भी नहीं चाहिए।" —बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२५; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २०४; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६४; फिरिश्ता के अनुसार जब ख्वाजा कलां तथा अन्य सरदारों ने बाबर से काबुल वापस लौटने का अनुरोध बार-बार किया तो बाबर ने उत्तर दिया कि जिस राज्य को विजित करने के लिए उसे इतना कष्ट उठाना पड़ा है वह राज्य मृत्यु के अतिरिक्त अन्य उससे नहीं ले सकता। —"तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५०।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२५; रिजवी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० २०५; गुलबदन बेगम, "हुमायुं नामा" (अनु०), पृ० ९४; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६४; तारीख़े अल्फ़ी, रिज़वी, "मुगल "कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३८; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५१।

पास आया और उसने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली।[1] इसी प्रकार अली खान मेवाती, फ़िरोज़ खान, शैख़ बायज़ीद, महमूद खान नूहानी, काज़ी ज़िया और अन्य अफ़ग़ानों ने भी ऐसा ही किया।[1] किन्तु कुछ ऐसे ही अफ़ग़ान थे जो कि बाबर

---

१. शेख घूरन कोल (अलीगढ़) का रहने वाला था। वह वहाँ के महान् सन्त हज़रत शाह जमाल शम्सुल अरफ़ीन का वंशज था। दिल्ली तथा आगरे को जीतने के पश्चात् बाबर ने मुल्ला अपाक को एक फ़रमान देकर कोल के स्थानीय सरदारों के पास भेजा कि वे अपने दुर्गों को समर्पित कर मुगलों की अधीनता स्वीकार कर लें। इस फ़रमान को देखकर ही शैख़ घूरन बाबर के पास आया और उसकी अधीनता स्वीकार कर मुग़लों की सेवा में भर्ती हो गया—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२८-२९; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५३; शैख़ घूरन ने अलीगढ़ के निकट पीलखाना नामक स्थान पर एक मस्जिद बनवाई जिसमें कि एक शिलालेख में यह खुदा हुआ है कि यह मस्जिद घूरन ने, ९३५ हि० में ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर के राज्यकाल में बनवाई—देखिए प्रो० हारून खान शेरवानी द्वारा लिखित शोध निबन्ध "बाबरस इन्सक्रिपशनस नियर अलीगढ़" जनरल आफ इण्डियन हिस्ट्री' १९३२, पृ० १९१-२; कय्यूम अली द्वारा लिखित शोध निबन्ध "शेख़ घूरन, सेकेन्ड मुग़ल जनरल," "प्रोसीडिंग्स आफ दि इण्डियन कांग्रेस", १९४३, पृ० ४०६-४०७; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ); ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५०; बदायूंनी, (अनु०) भाग १, पृ० ४४४; 'तारीख़े अल्फ़ी', रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३८।

२. बाबर ने लिखा है कि जब शेख बायजीद, फ़िरोज खान, महमूद खान नोहानी तथा काज़ी ज़िया के साथ उसकी सेवा में उपस्थित हुए तो, "मैंने उनके प्रति उनकी प्रार्थना से अधिक कृपा एवं दया प्रदर्शित की। फीरोज खान को जौनपुर से १ करोड़, ४६ लाख तथा ५००० टंके, शेख बायज़ीद को १ करोड़, ४८ लाख, तथा ५०००० टंके, अवध से तथा महमूद खान को ९० लाख, ३५००० टंके गाजीपुर से और काज़ी ज़िया को २० लाख टन्के प्रदान किए।" बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२७; रिज़वी,

की अधीनता स्वीकार करने के पक्ष में न थे। तत्कालीन राजनैतिक अस्थिरता का वे पूर्ण रूप से लाभ उठाकर स्वतंत्र बने रहना चाहते थे। ऐसे अफ़ग़ानों के विरुद्ध बाबर को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। अपने स्वतंत्र अस्तित्व को बचाने के प्रयास में अफ़ग़ानों की मुग़लों से मुठभेड़ होना एक स्वाभाविक बात थी।

११ जुलाई, १५२६ ई० को बाबर ने एक भव्य दरबार का आयोजन किया। उसने इस अवसर पर हुमायूं, चीन तैमूर सुल्तान, महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा को उपहार दिए। इसके पश्चात् उसे सूचना मिली कि अफ़ग़ानों ने सिर उठाया है और वे दिन-प्रतिदिन शक्तिशाली होते जा रहे हैं। अतएव मुहम्मदी कोकुलदाश को सम्भल की ओर, हिन्दू बेग को, बाबा कश्का के भाई मलिक क़ासिम, मुल्ला अपाक, शैख़ बूरन के साथ दोआब के मध्य भागों की ओर भेजा गया।[1] इस प्रकार बाबर ने दो ओर से अफ़ग़ानों को घेर कर सम्भल पर अधिकार करने की चेष्टा की। अभी उसकी सैनिक टुकड़ियाँ सम्भल की ओर बढ़ रही थीं कि उसे सूचना मिली कि बिबन ने सम्भल पर घेरा डाल दिया है, और वह क़ासिम खान सम्भली को दुर्ग समर्पित करने के लिए बाध्य कर रहा है।[2] बाबर के पास क़ासिम खान सम्भली के संदेश वाहक भी आए और उन्होंने उसकी ओर से सहायता प्रदान करने के लिए प्रार्थना भी की। बाबर ने मुग़ल सैनिकों

"मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २०६; बदायूनी (अनु०) भाग १, पृ० ४४४; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), ब्रिग्स 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया"; भाग २, पृ० ५०; अबुल फ़ज़ल के अनुसार बाबर ने जौनपुर की जागीर में से फिरोज़ खान को एक करोड़ टंकों की आय की जागीर प्रदान की; शैख़ बायज़ीद को अवध में एक करोड़ की आय की जागीर दी; महमूद खान को गाज़ीपुर में ९० लाख टंके की आय की जागीर दी और काज़ी ज़िया को जौनपुर में २० लाख टंके की आय की जागीर प्रदान की—अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५३।

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२८–७९; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० २०७; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २५४।

२. फिरिश्ता, 'तारीख-ए-फिरिश्ता' (मू० ग्रन्थ), पृ० २०६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५१।

को उस ओर भेजा। जैसे ही मुग़ल सैनिक सम्भल पहुँचे, उन्होंने बिबन से युद्ध कर करना प्रारम्भ किया और उसे भगा दिया। मलिक क़ासिम ने इस अवसर पर बिबन के अनेक साथियों को मौत के घाट उतारा और उनकी सम्पत्ति छीन ली। इसके पश्चात् शैख़ घूरन कासिम खां को बहाना बना कर बाहर ले आया और उसे पकड़ कर आगरे भिजवा दिया। इस प्रकार मुग़लों ने सम्भल के दुर्ग को अधिकृत कर लिया।[1]

बाबर ने कलन्दर नामक प्यादे को फ़रमान देकर निज़ामख़ान के पास ब्याना भेजा कि वह उसकी अधीनता स्वीकार कर ले। किन्तु उसने उसका कोई उत्तर न दिया।[2] इसी प्रकार बाबर ने बाबा क़ुली को धौलपुर में मुहम्मद ज़ैतून के पास भेज कर उससे अधीनता स्वीकार करने को कहा, परन्तु उसने भी अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दिया।[3] इटावा के कुतुब खां ने तथा कन्नौज के अफ़ग़ान सरदारों ने भी बाबर के प्रति कठोर रुख़ अपनाया।[4] अतः बाध्य होकर बाबर को उनके विरुद्ध सेनाएं भेजनी पड़ीं। उसने महदी ख्वाजा को, घरेलू सैनिकों तथा मुहम्मद सुलतान मिर्ज़ा, सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई, मुहम्मद अली जंग जंग तथा अब्दुल अज़ीज़ मीर आख़ूर को इटावा को जीतने के लिए भेजा। इसी प्रकार बाबर ने धौलपुर पर अपना प्रभुत्व जमाने के लिए आदिल सुल्तान, मुहम्मदी कोकुल्दाश, शाह मन्सूर बरलास, कुतुलुग़ कदम, वली ख़ाज़ीन, जानी बेग आदि व्यक्तियों को भेजा और उन्हें आदेश दिया कि धौलपुर को विजित करने के उपरान्त वे दुर्ग को सुल्तान जुनैद बरलास के हाथों में समर्पित कर दें।[५]

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २०८; कय्यूम अली ख़ान का शोध-निबन्ध, "शैख़ घूरन सेकेण्ड मुग़ल जनरल", प्रोसीडिंग्स आफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, १९४३, पृ० ४६७; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ० २०६, ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५१।
२. बाबरनामा (अनु०.) भाग २, पृ० ५२९।
३. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५२९–३०।
४. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५३०; इन व्यक्तियों के साथ फ़ीरोज़ खां, महमूद खां, शैख़ बायज़ीद तथा काज़ी जिया भी भेजे गए।
५. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५३०।

यह देखकर कि बाबर ने अपनी सेना को कई भागों में विभाजित कर दिया है, अफ़ग़ानों तथा राजपूतों ने मिल कर उसके विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियां प्रारम्भ की। पानीपत के युद्ध के पूर्व ही बिहार अफ़ग़ान विद्रोहियों का प्रमुख केन्द्र बन चुका था। इन अफ़ग़ान विद्रोहियों का मुख्य उद्देश्य केन्द्रीय सत्ता को शक्तिहीन बना देना था। उनके नेता सुल्तान मुहम्मद नोहानी ने शीघ्र ही ५०,००० सैनिक एकत्र किए और जौनपुर पर आक्रमण कर उसे विजित कर लिया। तत्पश्चात् उसने नासिर खान नोहानी व मारूफ़ फ़ारमूली के नेतृत्व में ४०,००० से ५०,००० सैनिक भेजकर कन्नौज पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस प्रकार जौनपुर से लेकर कन्नौज तक का सम्पूर्ण प्रदेश अफ़ग़ानों के नेता सुल्तान मुहम्मद नोहानी के हाथों में आ गया। अब वह मुग़लों का डटकर सामना करने स्थिति में हो गया।

अफ़ग़ानों की बढ़ती हुई शक्ति तथा राजपूतों के बढ़ते हुए चरणों को देखकर बाबर चिन्तित हुआ। उसने तुर्की तथा हिन्दुस्तानी अमीरों को बुला कर उनसे परामर्श लिया कि ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए। पहले अफ़ग़ानों के विरुद्ध बढ़ना चाहिए या राजपूतों के। सभी लोगों ने सर्वसम्मति से उससे निवेदन किया कि पहले अफ़ग़ानों से निपट लेना आवश्यक है। इसी अवसर पर हुमायूं ने स्वयं पूर्व और बढ़ कर अफ़ग़ानों पर आक्रमण करने की इच्छा प्रकट की। बाबर तथा उसके अमीरों ने उसकी बात मान ली और उसे इस अभियान पर नियुक्त किया।[1] इसी समय बाबर ने अहमद क़ासिम को, जिसे कि धौलपुर के दुर्ग को विजित करने के लिए भेजा गया था, सूचना दी कि वह शीघ्र ही हुमायूं से चन्दावर में मिले।[2] इसी प्रकार महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा को भी जिन्हें कि इटावा

---

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग १, पृ० ५३०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० २१०; अहमद यादगार के अनुसार मिर्ज़ा कामरान को अमीर अमीर क़ुली बेग के साथ अफ़ग़ान विद्रोहियों को दबाने के लिए भेजा गया—"तारीखे सलातीने अफ़ग़ना," रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० ४५५; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०६; ब्रिग्स "राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५१; 'अकबर नामा', (अनु०) भाग १, पृ० २५५–७६।

२. आगरा तथा इटावा के मध्य जमुना नदी पर स्थित।

को विजित करने के लिए भेजा गया था, आदेश दिया गया कि वे हुमायूं से जाकर मिल जायं और अफ़ग़ानों के विरुद्ध उसकी सहायता करें।[1]

आगरा से हुमायूं ने बृहस्पतिवार, १३ जीकाद, ६३४ हि० : २१ अगस्त, १५२६ ई० को प्रस्थान किया और जलेसर में पड़ाव डाला।[2] मार्ग में महदी ख्वाजा तथा मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा उससे आकर मिले। तत्पश्चात् मुग़ल सेनाएं नासिर खान नोहानी तथा मारूफ़ फ़ारमूली, जो कि सुल्तान मुहम्मद नोहानी की ओर से आगे बढ़ रहे थे के विरुद्ध बढ़ीं। इस समय अफ़ग़ान जाजमऊ[3] के निकट पड़ाव डाले हुए पड़े हुए थे। जाजमऊ के निकट पहुंच कर हुमायूं ने मोमीन अतका को शत्रु के बारे में समाचार लाने के लिए भेजा। उसके पीछे-पीछे हुमायूं ने कुस्मनाई, बाबा चुहरा तथा बूजका को उसी कार्य के लिए भेजा। इन व्यक्तियों ने वापस आकर हुमायूं को बतलाया कि शत्रु मुग़लों के आगे बढ़ने का समाचार पाकर पहले ही भाग खड़ा हुआ। हुमायूं आगे बढ़ा और उसने ज़ाजमऊ को अपने अधिकार में कर लिया। तत्पश्चात् वह शत्रु का पीछा करने के लिए आगे बढ़ा। उसे मालूम हुआ कि अफ़ग़ान विद्रोही मानिकपुर से जौनपुर की ओर चले गए हैं। अतएव वह उसी ओर बढ़ा। जौनपुर पहुंच कर उसने सुल्तान मुहम्मद नोहानी को तथा उसके अफ़ग़ान सहयोगियों को बुरी तरह परास्त कर उन्हें भगा दिया और जौनपुर अपने हाथों में ले लिया। जौनपुर को अधिकृत करने के उपरान्त हुमायूं गाज़ीपुर की ओर बढ़ा, जहाँ कि नासिर खान नोहानी ने पुनः सैनिकों को एकत्र कर मुग़लों का सामना करने का निश्चय किया था। हुमायूं के बढ़ने की सूचना पाते ही, गाज़ीपुर के गवर्नर ने अन्य अफ़गन अमीरों के साथ सरजू नदी को पार किया और बलिया तथा सरन में शरण ली। मुग़ल सेनाओं ने उनका पीछा बलिया में स्थित खारिद नामक स्थान तक किया। खारिद पहुंच कर मुग़लों ने

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ० ५३१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० २११।

२. बाबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० ५३१; रिज़वी, 'मुग़ल कालीन भारत (बाबर) पृ० २११; 'अकबर नामा' (अनु०) भाग १, पृ० २५६; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबक़ात-ए अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० ३०-३१।

३. कानपुर के निकट स्थित।

अनेक अफ़गानों को बन्दी बनाया तथा समस्त बलिया को लूटा, वहाँ के लोगों को मौत के घाट उतारा और उसके पश्चात् वे जौनपुर वापस लौट आए।[1]

अभी हुमायूं जौनपुर ही में था कि उसे अपने पिता के आदेश प्राप्त हुए कि वह शीघ्र से शीघ्र आगरा लौट आए।[2] जब से हुमायूं पूर्वी क्षेत्रों में अफ़ग़ान विद्रोहियों को दबाने के लिए बढ़ा तब से लेकर अब तक पश्चिमी प्रदेशों में अनेक महत्वपूर्ण घटनाएं घटित हुई जिनका प्रभाव बाबर की आन्तरिक एवं बाह्य नीति पर विशेपरूप से पड़ा। राणा संग्राम सिंह ने अनेक अफ़ग़ानों को अपनी सेना में भर्ती किया, राजपूत शासकों के साथ मिलकर एक संघ का निर्माण किया तथा सुल्तान सिकन्दर लोदी के पुत्र सुल्तान महमूद लोदी से भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर उसके हितों का एवं अधिकारों की सुरक्षा करने का बीड़ा उठाया। राजपूतों के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर ही बाबर को पूर्वी क्षेत्रों से हुमायूं को बुलाना पड़ा। ऐसी स्थिति में हुमायूं को अफ़ग़ान विद्रोहियों के विरुद्ध की जाने वाली सामरिक कार्यवाहियों को स्थगित करना पड़ा। आगरा वापस होने से पूर्व हुमायूं ने पूर्वी क्षेत्रों में मुग़लों के अधीन प्रदेशों को सुरक्षित रखने का प्रबन्ध अपने पिता के आदेशानुसार किया। उसने शाह मीर हुसैन तथा जुनैद बरलास को जौनपुर का संयुक्त गवर्नर नियुक्त किया तथा फीरोज खान सारंग खानी, महमूद खान, काजी अब्दुल जब्बार आदि व्यक्तियों को आदेश दिया कि वे मुगलों के अधीन प्रदेशों को अफ़गानों के हाथों से बचावें। इस प्रकार पूर्वी क्षेत्रों की सुरक्षा

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५४४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २३३-३४; "अकबरनामा" (अनु०) भाग १, पृ० २५६; रिज़ाकुल्लाह मुश्ताकी, 'वाकयाते मुश्ताकी', पृ० ८५, डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर, यूनाइटेड प्राविन्सेज़, भाग ३०, पृ० ४४; तारीखे अलफ़ी, रिज़वी, "मुग़ल-कालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३८, फ़िरिश्ता", तारीख-ए- फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ० ५१।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५४४; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २५७।

का उचित प्रबन्ध करने के उपरान्त कड़ा-मानिकपुर तथा कालपी के मार्ग से होता हुआ वह आगरा की ओर बढ़ा।[1]

इससे पूर्व कि हम पश्चिमी प्रदेशों में होने वाली घटनाओं पर अपना ध्यान दें, हमारे लिए यह उचित होगा कि हम पूर्वी क्षेत्रों में जो सैनिक कार्यवाहियां मुग़लों ने की, उनका परिणाम भी जान लें। यद्यपि हुमायूं को अफ़ग़ान विद्रोहियों के विरुद्ध निरन्तर सफलता प्राप्त होती रही, जिसके फलस्वरूप मुग़लों की प्रतिष्ठा भी दिन प्रति दिन बढ़ती रही और आलम ख़ान[2] तथा फ़तह ख़ान सरवानी ने मुग़लों की अधीनता भी स्वीकार कर ली, किन्तु इस अभियान का जो मुख्य लक्ष्य था वह कदापि पूर्ण न हुआ। न तो मुग़ल अफ़ग़ान समस्या को सुलझा ही पाए, न पूर्ण रूप से अफ़ग़ानों की विद्रोही प्रवृत्ति को कुचल ही पाए और न पूर्वी क्षेत्रों में मुगलों की स्थिति ही दृढ़ कर सके और न ही अफ़ग़ानों को पूर्ण रूप से अपने पक्ष में कर सके। फ़तह खां सरवानी, महदी ख्वाजा के साथ आगरे अवश्य आया और बाबर ने उसे ख़ान ख़ाना की पदवी दी, किन्तु वह इस सत्कार से तनिक भी सन्तुष्ट न हुआ और आगरा छोड़कर बिहार चला गया, जहाँ कि वह महमूद लोदी के साथ मिल गया। इसी प्रकार बिबन, बायज़ीद तथा शेर ख़ान ने भी मुग़लों का साथ छोड़ दिया और वे बिहार वापस लौट आए। यही नहीं, हुमायूं द्वारा ख़ारिद तथा सरन में, जो कि इस समय बंगाल के शासक नुसरत शाह के अधीन थे, बड़े पैमाने पर की गई सैनिक कार्यवाहियों ने बंगाल के शासक को सचेत कर दिया कि वह अपने राज्य की सीमाओं की रक्षा का प्रबन्ध करें। सम्भवतः अपने पारस्परिक हितों की रक्षा करने के हेतु बंगाल तथा बिहार के शासकों ने मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर लिए। बिहार का शासक सुल्तान मुहम्मद नोहानी

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५४; अकबरनामा, (मू०) भाग १, पृ० १०५; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २२४; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६६; निज़ामुद्दीन अहमद "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ ३४–३५।

२. उस समय जलाल ख़ान जिगहट का पुत्र आलम ख़ान कालपी में राज्य कर रहा था। जब हुमायूं जौनपुर से वापस आते समय कालपी रुका तो उसने कुछ लोगों को कालपी भेजकर उसे बुलाया तथा अपने साथ वह उसे लेकर आगरा आया।

नुसरत शाह को पहले ही खारिद तथा सरन के सूबे प्रदान कर चुका था। अब मुग़लों के आक्रमण के भय से उसने बिहार को मुग़लों का विरोध करने का मुख्य केन्द्र बना दिया। इससे न केवल सुल्तान मुहम्मद नोहानी को ही लाभ हुआ बरन् उसके मित्र नुसरत शाह को भी। नोहानियों की कमज़ोरियों का लाभ उठाकर, सुल्तान नुसरत शाह ने दीनवर वंश के त्रिहुत के शासक राजा कंस नारायण पर आक्रमण कर दिया तथा त्रिहुत के राज्य को विजित कर तथा वहाँ के शासक को मौत के घाट उतार कर उसने अपने दो सम्बन्धियों, अलाउद्दीन तथा मखदूम आलम को उत्तरी तथा दक्षिणी त्रिहुत का गवर्नर नियुक्त किया तथा दरभंगा और हाजीपुर में उनके प्रशासनिक केन्द्र, स्थापित किए। जिस समय मुग़ल इस प्रदेश में सैनिक कार्यवाहियाँ कर रहे थे, उसी समय अनेक संख्या में अफ़ग़ान, जिसमें महमूद लोदी भी सम्मिलित था, ने भाग कर बंगाल में शरणली। बंगाल के शासक सुल्तान नुसरत शाह ने सुल्तान इब्राहीम लोदी की पुत्री से विवाह कर इन अफ़ग़ानों के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए। यह एक महत्वपूर्ण बात थी जिसकी ओर न बाबर का न हुमायूँ का ही ध्यान गया। जैसे ही हुमायूँ ने पूर्वी प्रदेशों की ओर से पीठ फेरी, नुसरत शाह ने खुलम्म-खुल्ला अफ़ग़ानों का पक्ष लेना प्रारम्भ किया। अपनी इस नीति को उचित ठहराने के लिए उसके पास एक बहाना था कि मुग़लों ने अनावश्यक ही उसके राज्य में घुसने की चेष्टा की है। कुछ भी हो अपने राज्य की रक्षा के लिए नुसरत शाह ने अपने सेनाध्यक्ष कुतुब शाह को बहराइच तक आगे भेजा। हुमायूँ की अनुपस्थिति में कुतुब शाह ने मुग़लों से अनेक अनिर्णयात्मक युद्ध किए। इस प्रकार जौनपुर की छावनी में मुगलों को बहुत कठिनाई के साथ अपना समय व्यतीत करना पड़ा। सुल्तान महमूद, जिसके हाथों में गंगा नदी के दाहिनी ओर के प्रदेश, जिसमें शाहाबाद, पटना और गया सम्मिलित थे, तथा सुल्तान नुसरत शाह, जिसके हाथों में भागलपुर और मुंगेर के प्रदेश थे, दोनों ने मिल कर इस प्रकार मुग़लों को तंग करना प्रारम्भ किया और दोनों ही मुग़लों को हिन्दुस्तान के पूर्वी प्रदेशों में से निकालने की योजना बनाने लगे। संक्षेप में, हुमायूँ के आगरा वापस लौटने के पश्चात् पूर्वी शक्तियों ने बिहार में मुग़लों के विरुद्ध एक शक्तिशाली मोर्चा स्थापित कर दिया।[१]

---

१. प्रो० हसन असकरी का शोध-निबन्ध, "बिहार अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ", "करेन्ट स्टडीज़," पटना कालेज मैगज़ीन, १९५७।

पूर्वी क्षेत्रों में मुग़लों की स्थिति अभी सुदृढ़ भी न हो पाई थी कि पश्चिमी प्रदेशों में होने वाली घटनाओं की ओर बाबर को ध्यान देना पड़ा। युद्ध के मैदान में पुनः उतरने से पूर्व उसने अपनी सैन्य-तैयारियाँ प्रारम्भ कीं। उसने उस्ताद कुली को बड़ी तोप ढालने का आदेश दिया।[1] उसने हुमायूं को आदेश दिया कि वह शीघ्र ही वापस लौट आए।[2] इसी बीच राणासंग्राम सिंह ने उन क्षेत्रों पर अपने अधिकार स्थापित करने की चेष्टा की, जिन पर कभी दिल्ली के सुल्तान का प्रभुत्व था। उसने कन्दार के दुर्ग, जो कि रणथम्भौर से १० मील की दूरी पर स्थित है, पर आक्रमण किया। मकन के पुत्र हसन, जिसके हाथों में यह दुर्ग था, ने बाबर से सहायता माँगी, किन्तु बाबर जो कि इस समय अपनी सेनाओं को अन्य दुर्गों को विजय करने के लिए भेज चुका था, उसे सहायता न दे सका। दो तीन मास के उपरान्त विवश होकर हसन ने राणा से सन्धि कर ली और दुर्ग राणा को समर्पित कर दिया।[3] इसके पश्चात् राणा ने लगभग दो सौ अन्य निकटवर्ती स्थानों पर अपना अधिकार स्थापित किया। यही नहीं, पानीपत के मैदान से भागे हुए अफ़ग़ानों को उसने शरण दी, सुल्तान महमूद से प्रतिज्ञा की कि वह उसे बाबर के विरुद्ध सहायता प्रदान करेगा और मुग़लों के बढ़ते हुए प्रभाव को समाप्त करेगा। अफ़ग़ानों तथा राजपूतों की बढ़ती हुई मित्रता से बाबर को भय उत्पन्न हुआ। इससे पूर्व वे आगे बढ़ कर आगरा पर आक्रमण करें, बाबर ने ब्याना पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा की। ब्याना के दुर्ग का सामरिक महत्व था तथा इस दुर्ग को अपने हाथों में लेकर वह राणा की बढ़ती हुई महत्वाकांक्षाओं पर रोक लगा सकता था। इस बात को दृष्टि में रख कर ही उसने निज़ाम खान से यह दुर्ग शान्तिपूर्वक लेना चाहा। किन्तु निज़ाम खान निरन्तर टाल-मटोल करता रहा। जब उसने देखा

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५३६; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर) पृ० २१६।
२. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५३८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० २१७; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २५७।
३. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५३६; रिज़वी, "मुगल कालीन" (बाबर), पृ० २०६, बदायूनी मुन्तखब-उत-तवारीख (अनु०) भाग १, पृ० ४४४; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६५; निज़ामुद्दीन अहमद "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० २६।

कि दो महान् शक्तियाँ उस पर दबाव डाल रही हैं, तो दोनों से उसने दुर्ग को समर्पित करने की बात चलाई। बाबर ने जब यह देखा कि उसे सरलता से वश में नहीं किया जा सकता है तो उसने तारदी बेग, शेर अफ़गन, मुहम्मद खलील, अकता बेगी, अखता चीलर, रूस्तम तुर्कमान, दाउद सरवानी आदि को ब्याना के दुर्ग के निकटवर्ती प्रदेशों पर छापा मारने तथा ब्याना के दुर्ग के अन्दर के लोगों को दुर्ग समर्पित करने के लिए भेजा।[1] बाबर ब्याना के दुर्ग को किसी प्रकार लेने की चेष्टा में लगा ही हुआ था कि हसन खान मेवाती, जो कि मेवात का एक शक्तिशाली सरदार था, राणा व महमूद लोदी से जाकर मिल गया। राणा ने हसन खान का स्वागत किया और इस प्रकार राजपूत-अफ़ग़ान संघ का निर्माण हुआ। बाबर को जब इसकी सूचना मिली तो वह बहुत ही चिन्तित हुआ।

दोनों ओर की राजनैतिक गतिविधियों को देखकर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि शीघ्र ही बाबर की महत्वाकाँक्षाओं की टक्कर राणासाँगा की महत्वाकाँक्षाओं से होगी। दोनों ही अभी तक यह निश्चित् नहीं कर पाए थे कि उनके साम्राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी तथा उत्तरी सीमाएं क्या होंगी। इस प्रश्न का निश्चय करना वास्तव में निज़ाम ख़ान के हाथों में था। किन्तु निज़ाम खान अपने हितों की रक्षा के लिए उद्यत था। जो बात शान्तिपूर्ण ढंग से तय हो सकती थी, उसने वह सम्भावना समाप्त कर दी। उसने बाबर तथा राणा संग्राम सिंह के मन में एक दूसरे के प्रति अविश्वास की सीमा बढ़ा दी। बाबर तो पहले ही राणा संग्राम सिंह से असन्तुष्ट था, क्योंकि उसने वायदा करके भी पानीपत के युद्ध में उसकी सहायता इब्राहीम लोदी के विरुद्ध न की थी।[2] दूसरे अब वह उसी के शत्रुओं का पक्ष ले

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ४५३; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० २१७–१८; अबुल फज़ल के अनुसार रफीउद्दीन सफवी की मध्यस्थता की सहायता से निज़ाम खान ने बाबर की आधीनता स्वीकार की—"अकबरनामा" (अनु०) भाग १, पृ० २५७।

२. बाबर ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है, "जब हम लोग काबुल ही में थे, तो राणा साँगा के दूत ने उपस्थित होकर उसकी ओर से निष्ठा प्रदर्शित की थी और यह निश्चय किया था कि सम्मानित पादशाह उस ओर से देहली के समीप पहुँच जायं तो मैं इस ओर से आगरा पर आक्रमण कर दूँगा। मैंने इब्राहीम को पराजित भी कर दिया, देहली तथा आगरा पर अधिकार भी जमा दिया

रहा था, उन्हें चित्तौड़ में शरण दे रहा था तथा उन्हीं के कहने के अनुसार धीरे धीरे आगरा की ओर पग बढ़ा रहा था। प्रश्न यह उठता है कि राणा ने एकाएक बाबर के प्रति अपने विचार क्यों परिवर्तित किए। राणा संग्राम सिंह यह समझता था कि अमीर तैमूर की भांति बाबर भी दिल्ली को लूट कर तथा लोदी सत्ता

किन्तु इस काफ़िर के किसी ओर हिलने के चिन्ह दृष्टिगत न हुए।"—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ५२६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० २०६; डा० जी० एन० शर्मा, बाबर के इस कथन पर सन्देह प्रकट करते हैं और उनका विचार है कि राणा ने अपना कोई भी दूत बाबर के पास नहीं भेजा। अपने कथन की पुष्टि करने के लिए उन्होंने निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत किए हैं—

(१) बाबर के अतिरिक्त किसी भी समकालीन इतिहासकार ने राणा के दूत का बाबर के आने के बारे में नहीं लिखा है।

(२) दिल्ली के शासक के विरुद्ध बढ़ते समय बाबर जिसके साधन इब्राहीम लोदी से कम थे, को हिन्दूस्तान के एक शक्तिशाली एवं महान शासक की आवश्यकता प्रतीत हुई, अतः उससे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के लिए उसने राणा के पास अपना दूत भेजा न कि राणा ने उसके पास।

(३) राणा को हिन्दूस्तान को में अपनी प्रतिष्ठा स्थापित करने या अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक बाह्य शक्ति की सहायता की कदापि आवश्यकता न थी।

(४) यह मत कि राणा ने अपना दूत काबुल भेजा, राजपूत प्रथा के विरुद्ध है।

(५) बाबर ने आलम खान लोदी तथा दौलत खान लोदी से की गई संधियों का विस्तृत व्योरा दिया है, किन्तु राणा के साथ गई की सन्धि का कोई व्योरा नहीं दिया।

(६) कहीं-कहीं बाबर द्वारा दिया गया विवरण अविश्वसनीय है।

(७) डा० शर्मा ने मेवाड़ के संक्षिप्त इतिहास की कुछ पंक्तियां अपने कथन की पुष्टि के लिए उद्धृत की हैं।

डा० शर्मा ने जो तर्क प्रस्तुत किए हैं, वे ठीक नहीं प्रतीत होते हैं क्योंकि:—

१. बाबरनामा ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसमें कि हमें उस समय की राजनैतिक घट-

को शक्तिहीन बनाकर काबुल वापस लौट जावेगा। किन्तु जब बाबर ने अपना अधिकार पंजाब पर स्थापित कर अपने अफसरों को वहाँ नियुक्त करना प्रारम्भ किया तो उसे उसकी महत्वाकाँक्षाओं का ज्ञान हुआ और वह उसे अपना शत्रु समझने लगा। यही नहीं, पानीपत के युद्ध के पश्चात् जो अफग़ान उसके दरबार में पहुँचे उन्होंने भी उसे बाबर से युद्ध करने के लिए प्रेरणा दी। कुछ भी हो व्यक्तिगत एवं राजनैतिक कारणों से राणा संग्राम सिंह तथा बाबर में संघर्ष अनिवार्य था। कुछ समय से दोनों ही युद्ध के लिए तैयारियाँ कर रहे थे।

राणा संग्रामसिंह को आगे बढ़ने से रोकने के लिए बाबर ने दक्षिणी-पश्चिमी सीमाओं पर स्थित ब्याना, धौलपुर, जहानपुर, ग्वालियर को विजित

नाओं का विस्तृत उल्लेख मिलता है। अन्य सभी समकालीन ग्रन्थों में घटनाओं का विवरण या तो बहुत ही संक्षिप्त है या उन घटनाओं का उल्लेख है ही नहीं। फिर परवर्ती ग्रन्थों की भी तो रचना बाबरनामा के आधार पर ही हुई। अतएव बाबरनामा में दी हुई घटनाओं पर अविश्वास करना न्याय संगत नहीं है।

२. यदि बाबर के साधन सीमित होते तो बाबर पानीपत का युद्ध कैसे जीत सकता था।

३. बाबर ने सन्धि के प्रस्ताव के बारे में जो विवरण दिया है उसमें स्पष्ट रूप से कहा गया था कि शत्रु का दमन करने के पश्चात् दिल्ली तक बाबर के साम्राज्य की सीमाएं होंगी और आगरा के पश्चिम तक राणा के राज्य की सीमाएं। क्या इतना पर्याप्त नहीं हैं?

४. यदि बाबर के पास राणा का दूत न आया होता तो वह कदापि इस बात का का उल्लेख न करता।

५. बाबर तथा राणा के बीच में जो बात हुई वह गोपनीय रखी गई, अतः अन्य किसी व्यक्ति को वह बात न मालूम हो सकी।

६. डा० शर्मा ने जो उद्धरण मेवाड़ के संक्षिप्त इतिहास से लिया है, वह उनके कथन की पुष्टि तो अवश्य करता है किन्तु वे स्वयं इस बात को स्वीकार करते हैं कि यह ग्रन्थ बहुत बाद का लिखा हुआ है। क्या यह सम्भव नहीं है कि अमुक लेखक ने यह दिखाने के लिए, राणा संग्राम सिंह देशद्रोही न था, इसलिए लिख दिया कि बाबर का दूत राणा के पास आया। क्या यह संभव नहीं हो सकता कि दोनों ने एक दूसरे के पास दूत भेजे हों?

करना उचित समझा। वह पहले ही ब्याना तथा धौलपुर की ओर अपने सैनिकों को भेज चुका था। ब्याना के दुर्ग को समर्पित करने में निज़ाम ख़ान ने आनाकानी की। परन्तु बाबर के सैनिक ब्याना के निकटवर्ती प्रदेशों पर निरन्तर छापा मारते रहे। जब निज़ाम ख़ान को राणा संग्राम सिंह के आगे बढ़ने की योजना के बारे में मालूम हुआ तो उसने सैय्यद रफ़ी को बुलाया और उसे मध्यस्थ बना कर मुग़लों को दुर्ग समर्पित कर दिया।[1] तत्पश्चात् वह रफ़ी के साथ बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। बाबर ने निज़ाम ख़ान को अपनी सेवा में ले लिया तथा उसे बीस लाख दाम की मालगुज़ारी का एक परगना दोआब में दे दिया।[2] तदुपरान्त बाबर ने दोस्त ईश्क आका को और उसके पश्चात् महदी ख़्वाजा को ब्याना की ओर भेजा। जब महदी ख़्वाजा ब्याना पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५४५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २१६; तारीख़-ए-अलफी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३६; फिरिश्ता के अनुसार यद्यपि ब्याना के प्रांतपति निज़ाम ख़ान पर राणा साँगा निरन्तर दबाव डाल कर उस प्रान्त को हस्तगत करने का का प्रयास करता रहा फिर भी उसने बाबर की आधीनता न स्वीकार की। बाबर ने बाबा सुल्तान क़ुली को एक सेना के साथ ब्याना के दुर्ग को विजित करने के लिए भेजा, किन्तु इस सेना को अपने मुँह की खानी पड़ी। तत्पश्चात् राणा साँगा ने पुनः निज़ाम ख़ान पर दबाव डाला कि वह दुर्ग को राजपूतों के हाथों समर्पित कर दे। इस पर निज़ाम ख़ान ने बाबर के पास अपने आदमी भेज कर यह कहलावाया कि वह उसकी आधीनता स्वीकार करने के लिए के लिए तत्पर है। बाबर ने राणा साँगा को ब्याना के दुर्ग से पीछे हटाने के लिए एक सेना भेजी और निज़ाम ख़ान को ब्याना तथा उसके अन्तर्गत जो प्रदेश थे, इस शर्त पर सौंप दिए कि वह प्रति वर्ष बाबर को २० लाख रुपया उपहार स्वरूप भेजता रहेगा—"तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इन्डिया" भाग २, पृ० ५१।

२. अकबरनामा (अनु०), भाग १, पृ० २५७; निज़ामुद्दीन अहमद, "तबक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० ३१–३२।

राणा संग्राम सिंह की सेना का अग्रिम दल ब्याना के निकट पड़ाव डाले हुए पड़ा है और दुर्ग पर घेरा डालने की चेष्टा कर रहा है। महदी ख्वाजा ने तुरन्त बाबर से सहायतार्थ सेना भेजने का अनुरोध किया तथा वहाँ की परिस्थिति से उसे अवगत कराया।

लगभग इसी समय ग्वालियर के तातार खां सारंग खानी ने बाबर के पास सूचना भेजी कि राणा ग्वालियर पर आक्रमण करना चाहता है।[1] कुछ वर्षों से ग्वालियर का दुर्ग तातार खान सरंगखानी के हाथों में था, तथा पानीपत के युद्ध के बाद ही से उसने बाबर के पास निरन्तर अपने सन्देश वाहकों को भेजकर बाबर को आश्वासन दिलाने का प्रयास किया कि वह उसकी अधीनता स्वीकार करने को तत्पर है। कुछ कारणों से बाबर उस ओर अपने आदमियों को न भेज सका कि वे उसका आधिपत्य दुर्ग पर स्थापित कर सकें। इसी बीच जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, राणा के सैनिकों ने कन्दार के दुर्ग को जीत लिया। तत्पश्चात् ग्वालियर के राजाओं के परिवार के एक सदस्य धर्मान्कत ने खान-ए-जहाँ तथा अन्य हिन्दुओं के साथ मिल कर, राणा की ओर से ग्वालियर के निकटवर्ती प्रदेशों में उपद्रव मचाना प्रारम्भ किया और दुर्ग को अधिकृत करने का प्रयास किया।[2] तातार खां सारंग खानी बड़ी कठिनाई में पड़ गया। उसने बाबर के पास अपने सन्देश-वाहकों को पुनः सहायता देने के लिए अनुरोध करने के लिए भेजा। बाबर ने शीघ्र ही रहीम दाद के अधीन भीरा के आदमियों को, मुल्ला अपाक तथा शैख घूरन के साथ ग्वालियर भेजा और उन्हें आदेश दिया कि दुर्ग को अपने हाथों में लेकर वे दुर्ग को रहीम दाद को सौंप कर तुरन्त वापस आ जायं। जैसे ही मुग़ल सेना ग्वालियर के निकट पहुँची, तातार खान ने दुर्ग को समर्पण करने से इन्कार कर दिया। कुछ समय बाद शैख मुहम्मद ग़ौस ने रहीम दाद को सूचित किया कि अब तातार खान तथा उसके साथियों में फूट पड़ गई है, अतएव दुर्ग पर आक्रमण कर वह दुर्ग को ले ले। रहीम दाद ने ऐसा ही किया। तातार खान ने दुर्ग सम-

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५३६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २१६।

२. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५३६; तारीख-ए-अलफी, रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ६३६।

र्पित कर दिया तथा बाबर की सेवा में चला गया। बाबर ने उसके व्यय के हेतु २० लाख दाम का बियाँवा[1] परगना प्रदान किया।[2]

लगभग इसी समय मुहम्मद ज़ैतून ने भी धौलपुर का दुर्ग मुग़लों को समर्पित कर दिया और वह बाबर की सेवा में उपस्थित हो गया।[3] इस प्रकार ग्वालियर तथा धौलपुर के दुर्ग हाथ में आ जाने से बाबर की स्थिति सुदृढ़ हो गई। परन्तु कुछ समय तक और उसे आगरा में ठहरना पड़ा, कारण यह कि अभी तक उसकी सैनिक तैयारियाँ पूरी न हुई थी और न हुमायूं ही पूर्वी प्रदेशों से वापस आया था, और न ही महदी ख्वाजा को व्याना के दुर्ग में प्रवेश करने में सफलता प्राप्त हुई थी। नवम्बर, १५२७ ई० में हिसार फ़िरोज़ा के आस पास हामिद खान सारंगखानी ने अफगान साथियों के साथ मिल कर उपद्रव मचाना प्रारम्भ किया। बाबर ने तुरन्त ही २१ नवम्बर, १५२७ को चीन तैमूर सुल्तान, अहमद परवानची, अबुल फतह तुर्कमान, मलिक दाद कर्रानी तथा मुलतान के मुजाहिद खां को हामिद खां के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। मुग़ल सैनिकों ने विद्रोहियों पर आक्रमण किया

---

१. आगरे के सूबे में स्थित, "आईन-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २ पृ० ९६।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५४०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" भारत" (बाबर), पृ० २२०; "तवक़ात-ए-अकबरी" (अनु०) भाग २, पृ० ३३; तारीखे अलफी, रिजवी, "मुगलकालीन भारत", (बाबर), पृ० ६३९; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २६६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५२-५३।

३. धौलपुर को खालसा में सम्मिलित कर लिया गया और अबुल फ़तह को उसका शिक़दार नियुक्त कर दिया गया। मुहम्मद जैतून को कई लाख दाम की आय का परगना प्रदान किया। बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५४०; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० २२०; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०७, ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५३; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २५७; निज़ामुद्दीन अहमद, "तवकात-ए-अकबरी (अनु०) भाग २, पृ० ३४।

तथा अफ़ग़ानों को बुरी तरह पराजित कर उन्हें तितर-बितर कर दिया।[1]

ग्वालियर, धौलपुर, ब्याना में मुग़लों की सैनिक कार्यवाही को देखकर राणा संग्राम भयभीत हुआ। अतएव उसने अपने सामन्तों को बुलाया और उनसे अपनी सेनाओं के साथ शीघ्र आने को कहा। थोड़े ही समय में जालौर से राव रामदास सोंगरा, धूंधर से पृथ्वीराज, चन्देरी से मेदिनी राय, मेरता से राजा राय मल, सिरोही से राव अखय राज देवड़ा, डूंगरपुर से राव उदयसिंह, सालूम्बर से राव रतन सिंह, आम्बेर से राव जगमल, अमेटा से राव जोगा, देवगढ़ से रावत सुंगा चुन्दा, देवलिया से रावत बाघ सिंह, लावा से दोदिया करन सिंह, सादरी से अज्जा झाला, गोगुन्दा से सज्जा झाला राव नरसिंह देव, राव, ब्रह्मदेव, राव दिलीप तथा अन्य राजपूत सरदार अपने-अपने घरों से राणा की सहायता के लिए निकल पड़े।[2] राणा की सहायता करने के लिए मारवाड़ के शासक राव गंगा ने ३००० सैनिकों को अपने पुत्र मालदेव के अन्तर्गत भेजा।[3] राजपूत शासकों एवं

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५४०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० २२०; फिरिश्ता, "तारीख–ए–फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ० २०७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५३; तारीख़-ए-अलफ़ी, रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० ६३६।

२. डा० जी० एन० शर्मा–'मेवाड़ एण्ड मुग़ल इम्परर्स' पृ० २३; (नोट ४३)

३. डा० वी० एस० भार्गव, 'मारवाड़ एण्ड दि मुगल इम्परर्स', पृ० १५; बांकीदास ने लिखा है कि "सीकरी राणा सांगा री हार हुई जब सारांही कही–राव गांगो सामल हो तो तो राणारी फतै होती"... बांकीदास की ख्यात (जयपुर) पृ० ११, आगे चलकर बांकीदास ने लिखा है कि, "बीकानेर, सिरोही, मेड़तो, गागुरण, बूंदी, भीलवाड़े, आंबेर, मेवाड़, मालवो, रायसेण, चंदेरियारा, ठिकाणारा मालक, अजमेररा, जमीदार, मेवाड़रो लोक, ...सुं सांगै सीकरी बाबरसुं जंग किये, जोधपुररो धणी साथ नहीं हुतो जिणंसू फतै हुई नहीं सांगा राणारी, सुलतान इब्राहीम रो साहजादो, डूंगरपुररो, रावल अै पिण सांगा राणा कनै हुता" (बांकीदास री ख्यात, जयपुर) पृ० १८६।

सरदारों की संयुक्त सेनाएं सुल्तान महमूद लोदी के साथ रणथम्भौर व ब्याना के मार्ग से आगरा की ओर रवाना की गईं।[1] अपनी सेना को एकत्र करने के पश्चात् राणा संग्राम सिंह जनवरी, १५२७ ई० के अन्त में चित्तौड़ से बाबर पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। चन्दवार का राव मलिक चन्द्र चौहान, जिसने कि आलम ख़ान के पुत्र कमाल ख़ान साहूखैल को परास्त कर शाही छत्र एवं बाबर के सैनिकों के शिविर छीन लिए थे, रणथम्भौर ही में उससे आकर मिला। राव मलिक चन्द्र चौहान ने राणा को शाही छत्र तथा शिविर भेंट किए तथा उसके साथ मुग़ल सम्राट बाबर से युद्ध करने के लिए चल पड़ा। तत्पश्चात् राणा ने ब्याना के दुर्ग की ओर कूच किया। कुछ ही समय पहले ब्याना के दुर्ग को मुग़लों ने अपने हाथों में लिया था। ब्याना पहुँच कर उसने दुर्ग पर घेरा डाला और अपनी सेनाओं को विभिन्न भागों से विभाजित किया। सेना का दाँया भाग राव अखैराज देवड़ा, मेड़ता के राय मल राठौड़ तथा हसन ख़ान मेवाती के अन्तर्गत रक्खा गया। सेना का बायाँ भाग, बूंदी के नारायण दास हादा, जोधपुर के मालदेव, राजा दिलीप, राजा नरसिंह देव और मेदनी राव के कमान में रक्खा गया। सेना के अग्रिम भाग का नेतृत्व सालुम्बर के रावत रतन सिंह, अमेटा के रावत जग्गा, रावत साँगा चुन्दावत, सादरी के राजा अज्जा झाला और बिजौलिया के के गोकुलदास परमार को सौंपा गया। स्वयं राणा संग्राम सिंह सेना के पार्श्व ही में रहा, ताकि वह कोकरिया के राव चन्द्र भान, करम चन्द्र परमार तथा उसके पुत्र राव जगमल, राजा सज्जा झाला, दोदिया करण सिंह, देवलिया के रावत बाँघ सिंह, डूंगरपुर के रावत उदय सिंह और राजा मुकुन्द बघेला की सहायता से समस्त सैनिक व्यवस्था की देखभाल कर सकें। ब्याना में ठहरकर राणा संग्राम सिंह ने दुर्ग के घेरे को तंग किया और जो भी सैनिक आगरे से दुर्ग के अन्दर प्रवेश करने तथा दुर्ग के अन्दर के लोगों को सहायता पहुँचाने के लिए भेजे गए, उन्हें परास्त कर भगा दिया। यही नहीं शीघ्र ही उसने ब्याना के दुर्ग के निकट मुगल सैनिकों युद्ध कर इन्हें परास्त कर दुर्ग अधिकृत कर लिया।[2]

---

१. डा० वी० एस० भार्गव, "मारवाड़ एण्ड दि मुग़ल इम्परर्स", पृ० १५।
२. डा० जी० एन० शर्मा, "मेवाड़ एण्ड दि मुग़ल इम्परर्स", पृ० २६; डा० वी० एस० भार्गव, "मारवाड़ एण्ड दि मुग़ल इम्परर्स", पृ० १६।

बाबर को राणा संग्राम सिंह के आगे बढ़ने की सूचना जैसे ही प्राप्त हुई, तो उसे लगा कि संकट एवं संघर्ष का पर्व निकट आ गया है। सौभाग्य से हुमायूं जिसकी वह प्रतीक्षा कर रहा था, ६ जनवरी, १५२७ को आगरा पहुँचा। पूर्वी क्षेत्रों में जो सैनिक उसने हुमायूं के साथ भेजे थे, वे भी आ गए। अतः उसने मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, यूनुस अली, शाह मन्सूर बरलास, कित्ता बेग, किस्मती तथा बुजका के अधीन एक सेना महदी ख्वाजा की सहायता के लिए ब्याना की ओर भेजी।[1] बाबर ने अपने सेना-ध्यक्षों को आदेश दिया कि ब्याना पहुँच कर वे दुर्ग में प्रवेश करें तथा शत्रु को आगे बढ़ने से रोक दें। इस सेना को ब्याना की ओर भेजने के पश्चात् बाबर ने कई व्यक्तियों को शत्रु के बारे में सूचना लाने के लिए भेजा।

९ फरवरी, १५२७ ई० को किस्मती ब्याना से लौटकर आया। उसने बाबर को बताया कि राणा की दो सैनिक टुकड़ियों को मुग़लों ने पराजित कर दिया है तथा हसन ख़ां मेवाती राणा के साथ आगे बढ़ रहा है।[2] अगले दिन बाबर ने उस्ताद अली द्वारा बनाई गई बड़ी तोप की परीक्षा की और उसके कार्य से सन्तुष्ट होकर सोमवार, ९ जमादी-उल-अव्वल, ९३३ हि० : ११ फरवरी, १५२७ ई० को आगरे से शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़ा।[3] आगरा के उपान्त में वह अगले कई दिनों तक पड़ाव डाले पड़ा रहा। इस बीच उसने अपने सैनिकों को एकत्र किया तथा आलमख़ां को रहीमदाद की सहायता के लिए ग्वालियर, जाने तथा मकन, क़ासिम बेग सम्भली, हमीद, मुहम्मद जैतून को सम्भल पहुँचने का आदेश दिया। १५ फरवरी, १५२७ ई० को बाबर को सूचना प्राप्त हुई कि राणा संग्राम सिंह की सेना ब्याना के निकट पहुँच गई है तथा राणा के अग्रिम दल पर मुग़लों ने आक्रमण तो किया किन्तु उन्हें सफलता प्राप्त न हुई जिसके कारण वे दुर्ग में प्रवेश करने में असमर्थ रहे। बाबर के पास किस्मती, शाह मन्सूर बरलास तथा अन्य सैनिक आए और उन सभी ने राणा की सेना की वीरता एवं प्रचण्डता की

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ० ५४४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २२४।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ० ५४७।

३. अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २५९।

प्रशंसा की। इन समाचारों से बाबर तनिक भी विचलित न हुआ और १६ फ़रवरी, १५२७ ई० को आगरे के उपान्त से चलकर वह ब्याना की ओर राणा संग्राम सिंह के आक्रमण का सामना करने के लिए आगे बढ़ा।[1]

मार्ग में उसने अपने सैनिकों का जिन्हें कि राणा के आदमियों नेहरा दिया था, स्वागत किया और उनके साथ वह मधुकर (मन्धाकर) नामक स्थान जो कि आगरा तथा फतेहपुर सीकरी के मध्य में स्थित है, पहुँचा।[2] यहाँ उसने अपनी सेना का निरीक्षण किया तथा उसे दाईं, बाँईं, मध्य पंक्तियों में सुव्यवस्थित कर आगे बढ़ा। उसने किस्मती तथा दरवेश मुहम्मद सारबान को सीकरी की झील के तट पर शिविर लगाने के लिए उपयुक्त स्थान की खोज करने के लिए भेजा। इसी समय उसने कुछ लोगों को महदी ख्वाजा के पास ब्याना भेजा कि वे उसे अपनी सेना सहित आने को कहें। बाबर ने हुमायूं के सेवक बेग मीरक मुगल को कुछ वीरों के साथ राणा संग्राम सिंह के विषय में समाचार लाने के लिए भेजा। उन्होंने लौट कर बाबर को सूचना दी कि शत्रु बसावर से एक कोस आगे बढ़कर पड़ाव डाले हुए हैं। जिस दिन बाबर को यह सूचना मिली उसी दिन महदी ख्वाजा, मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा आदि ब्याना से उसकी सेवा में आए।[3]

अब तक बाबर की सैन्य संख्या में पर्याप्त वृद्धि हो चुकी थी। अतः शत्रु का सामना करने के लिए वह उद्विग्न हो उठा। उसने अब्दुल अज़ीज तथा मुल्ला अपाक का १०००–१५०० सैनिकों के साथ शत्रु के विषयमें सूचना लाने को भेजा। वे लोग खनवा तक बढ़ते चले गए। राणा ने अवसर देखकर अपने अग्रिम दल को ४०००–५००० सैनिकों के साथ आगे भेज कर उन पर आक्रमण करा दिया। मुग़ल सैनिको ने युद्ध किया, किन्तु राणा की सेना के सामने

१. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ५४८; रिजवी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ० २२७,।

२. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ५४८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २२७; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ० २५६।

३. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ० ५०८, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २२८; "तबक़ात-ए-अकबरी". (अनु०) भाग २, पृ० ३५–३६ ।

मुग़ल सैनिकों ने युद्ध किया, किन्तु राणा की सेना के सामने वे ठहर न सके और भाग खड़े हुए। अपनी सेना के अग्रिम दल की पराजय का हाल सुनकर बावर ने उसकी सहायता के लिए कुछ सैनिक भेजे। किन्तु उन्हें भी हार कर पीछे हटना पड़ा।[1]

खनवा पहुंचकर बावर ने स्वयं मैदान का निरीक्षण किया और उसके आधार पर शत्रु का सामना करने के लिए उसने अपनी योजना बनाई। इस योजना के अनुसार ही उसने सामने वाली पंक्ति में गाड़ियां रखीं। इन गाड़ियों को जंजीरों से जकड़ दिया गया ताकि उनके पीछे से बन्दूक चलाने वाले तथा तोपची अपना बचाव कर सकें। दो-दो गाड़ियों के बीच में ७-८गज़ की दूरी रखी गई। जिन स्थानों पर गाड़ी रखने की कोई जगह न थी, वहां खुरासानी तथा हिन्दुस्तानी बेलदारों से खाईयां खुदवाई गईं, ताकि सैनिक उन खांइयों में बैठ कर शत्रु पर आक्रमण करें। तोपखाना मुस्तफ़ा तथा उस्ताद अली क़ुली के अधीन रखा गया। सेना के मध्य भाग का नेतृत्व बावर ने, दांया भाग हुमायूं, बांया भाग महदी ख्वाजा, दाहिने भाग का दाहिना बाज़ू तुलुग़मा के लिए मलिक क़ासिम, तथा बाएं भाग का बांया बाज़ू तुलुग़मा के लिए मुनीम अत्का तथा रुस्तम तुर्कमान के नेतत्व में था। इसी प्रकार चीन तैमूर सुल्तान तथा तारदी बेग को सेना के रक्षात्मक दल का कार्य करना था। बावर ने अपने मुख्य बख्शी सुल्तान मुहम्मद बख्शी से कहा कि वह सभी सेनाध्यक्षों तथा अफसरों को आदेश दे कि वे अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लें। सम्राट के आदेशों का पालन कराने के लिए सुल्तान मुहम्मद बख्शी सदैव उन्हीं के आस-पास रहा। क्योंकि बावर के सैनिकों की संख्या कम थी, अतएव उसने प्रत्येक स्थान पर रक्षात्मक प्रबन्ध किया तथा इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि शत्रु उसकी सेना के निकट आ जाय तब उसकी तोपें तथा गोले काम में लाये जायं। पानीपत के युद्ध की भांति बावर ने एक सावधानी और दिखाई, वह यह कि सेना के प्रत्येक भाग के सेनाध्यक्ष को वह अन्य दलों की गतिविधियों की निरन्तर सूचना देता रहा तथा युद्ध प्रणाली के परिवर्तन के बारे में बताता रहा।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५४६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० २२८; "अकबरनामा" (अनु०) भाग १, पृ०, २६०।

जैसे ही महदी ख्वाजा ब्याना का दुर्ग छोड़कर बाबर के पास पहुंचा,[1] राजपूत सैनिकों ने उस दुर्ग को अधिकृत कर लिया और दुर्ग में जो मुग़ल रह गए थे, उन्हें वहां से भगा दिया। ब्याना के दुर्ग को आधार बनाकर राणा ने उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। बसावर में उसने पड़ाव डाला। उस समय बाबर खनवा की ओर बढ़ रहा था। यदि राणा संग्राम सिंह इसी समय उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ कर बाबर पर आक्रमण कर देता तो उसे अपने शत्रु को परास्त करने में पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती। बसावर में पड़ाव डालने के कारण लगभग एक माह तक युद्ध न हो सका और बाबर को अपनी सैनिक तैयारियां पूर्ण करने तथा युद्ध-स्थल में अपनी सेनाओं को सजाने का समय मिल गया। जब राणा को पता चला कि बाबर ने खनवा के मैदान में अपने सैनिकों को सुसज्जित कर दिया है, तो १६ मार्च, १५२७ ई० को बसावर से वह खनवा की ओर बढ़ा।[2] खनवा पहुँच कर उसने अपनी सेना को दायें-बायें, मध्य भाग में विभाजित किया। सेना के दाहिने भाग का नेतृत्व राव अरुप राज, जालौर के राज देवड़ा, मेरता के राजमल तथा हसन मेवाती, बांए भाग का नेतृत्व बूंदी के नारायण दास हाडा, जोधपुर के राव मालदेव, रायसेन के राजा सिल्हदी, महमूद लोदी तथा अन्य लोगों ने किया। सेना के अग्रिम दल का नेतृत्व सालूम्बर के रावत रतन सिंह, अमेटी के रावट जग्गा, चन्दावत के रावत सुंग, सांव के राजा अज्जा, तथा बिजोलिया के गोकुलदास परमार ने किया। राणा संग्राम सिंह स्वयं सेना के पार्श्व भाग में अन्य सभी दलों की देखभाल करने के लिए रहा। बड़े आश्चर्य की बात है कि राणा ने अपनी सेना की सुरक्षा का कोई प्रबन्ध न किया और न शत्रु को चारों ओर से घेरने का ही उसने कोई प्रबन्ध किया। युद्ध पद्धति का उसे तनिक भी ज्ञान न था, और यही कारण है कि वह अपने सैनिकों का, जिनकी संख्या बाबर के सैनिकों की संख्या से कहीं अधिक थी, पूरा-पूरा प्रयोग न कर सका। यदि किसी योजना के अन्तर्गत वह कार्य करता तो सम्भवतः कोई ऐसा कारण नहीं था कि उसे अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफलता न प्राप्त होती।

राणा संग्राम सिंह के पक्ष में केवल दो बातें थीं। एक तो उसके सैनिकों की संख्या बहुत थी, दूसरे, ब्याना के दुर्ग को विजित करने के पश्चात् उसके सैनिकों

१. अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६०।
२. अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६०।

का उत्साह चौगुना हो गया था। जब कि दूसरी ओर बाबर की सैन्य-संख्या बहुत कम थी। उसके सैनिकों में दिन-प्रतिदिन लड़ने का उत्साह कम हो रहा था। कारण यह कि जब उन्होंने राजपूतों की वीरता के बारे में सुना तो उनके दिल दहल उठे। शाह मन्सूर तथा अब्दुल अज़ीज़ का ब्याना से पराजित होकर लौटना उनके लिए और कष्टमयी सिद्ध हुआ। शत्रु के बढ़ते हुए चरणों की सूचना उन्हें लगातार भयभीत कर रही थी। इसी समय क़ासिम हुसैन सुल्तान, अहमद यूसुफ़ कवाम उर्दू शाह तथा ५०० अन्य व्यक्ति बाबर की सेवा में काबुल से आए। उनके आने के पश्चात् ही बाबा दोस्त सूची ग़जनी की मदिरा लेकर आ पहुंचा।[1] उसके साथ-साथ मुहम्मद शरीफ ज्योतिषी भी आया। गजनी की मदिरा ने उसके सैनिकों को बुत बना दिया तथा मुहम्मद शरीफ की इस भविष्य-वाणी ने कि, "इन दिनों मंगल ग्रह पश्चिम में है, जो कोई इस ओर से युद्ध करने जाएगा पराजित होगा" ने उन्हें पूरी तरह से गुमराह कर दिया।[2] अपने प्रारम्भिक जीवन में ज्योतिषियों की वाणी पर विश्वास कर बाबर बहुत भुगत चुका था अतएव अब वह पुनः उनके चक्कर में नहीं पड़ना चाहता था। उसने स्वयं मुहम्मद शरीफ़ की बातों पर तनिक भी ध्यान न दिया और उसने कुछ सैनिकों को उत्साहित करने के विचार से उन्हें आदेश दिया कि वे दोआब व देहली से अन्य सैनिकों को एकत्र कर मेवात के ग्रामों को लूट लें। परन्तु इसका प्रभाव न उसके सैनिकों पर पड़ा और न ही शत्रु पर। अपने सैनिकों में अपने प्रति निष्ठा जागृत करने के लिए उसने मदिरा-पान का परित्याग कर दिया। जो भी मदिरा उसके पास थी, वह सब फेंक दी गई। मदिरा-पान करने वाले बर्तनों को तुड़वा कर फ़कीरों में बंटवा दिया गया। उसको देख कर उसके अमीरों तथा सैनिकों

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५५०–५१; गुलबदन बेगम, "हुमायूंनामा" (अनु०) पृ० ६८–६६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २६६।
२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५५१; गुलबदन बेगम, "हुमायूंनामा" (अनु०), पृ०, ६८; तारीखे अलफी, रिजवी "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ०, ४४१; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, २०७; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ०, ५४।

ने भी ऐसा ही किया।[1] इसी अवसर पर उसने तमग़ा नामक चुंगी को भी मुसलमानों से न वसूल करने का आदेश दिया।[2] बाबर ने अपने सैनिकों को उत्साहित करने के लिए उन्हें बुलाया और उनसे कहा:—

"बेगों तथा वीरों। महान् ईश्वर ने हमें इतना बड़ा सौभाग्य प्रदान किया है और इतने बड़े यश को हमारे निकट कर दिया है कि हम लोग या तो शहीद होंगे या ग़ाज़ी, अतः सबको क़ुरान शरीफ की शपथ लेनी चाहिए कि कोई भी इस शत्रु के सामने से मुंह मोड़ने के विषय में न सोचेगा और जब तक शरीर में प्राण है उस समय तक इस रण-क्षेत्र एवं युद्ध से पृथक न होगा।"[3] बाबर के इस भाषण का प्रभाव सभी पर पड़ा। सभी ने अपने हाथों में क़ुरान लेकर अपने बच्चों तथा पत्नियों की सौगन्ध खाई कि जब तक उनके शरीर में प्राण हैं वे युद्ध के मैदान में डटे रहेंगे।[4] उनको और भी अधिक प्रोत्साहित करने के लिए बाबर ने 'जिहाद' का नारा भी लगाया।

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५५३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २३०–३१।
२. बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५५३; रिज़वी, "मुगलकालीन भारत" (बाबर), पृ० २३१; गुलबदन बेगम, "हुमायुं नामा" (अनु०) पृ० ६६–१००।
३. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५५७; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २३५; गुलबदन बेगम, 'हुमायुंनामा' (अनु०) पृ०, ६६।
४. गुलबदन बेगम ने लिखा है कि बादशाह ने कहा, "तुम्हें पता भी है कि हमारी जन्म-भूमि एवं नगर के मध्य में कितने मास की दूरी है? ईश्वर हमें उस दिन से बचाए और पराजय का मुंह न दिखाए। ईश्वर न करे कि ऐसा हो..... इस समय हमारा पाला अजनबी एवं अपरिचित लोगों से पड़ा है, अतः यही उचित होगा कि हम इन दो बातों का संकल्प कर लें कि यदि हम शत्रु की हत्या कर लेंगे तो गाज़ी हो जाएंगे और यदि मारे गए तो शहीद होंगे.... सभी लोगों ने एक दिल होकर इसे स्वीकार किया और अपनी पत्नियों के तलाक देने एवं क़ुरान शरीफ की शपथ ली और फातेहा पढ़कर कहा, हे "बादशाह। यदि ईश्वर ने चाहा तो हम अपनी अन्तिम सांस तक प्राण न्योछावर करने एवं आत्म-बलिदान करने में कोई भी कसर न उठा रक्खेंगे।"... "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ० ६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३६६।

इससे पूर्व कि वह अपने सैनिकों से युद्ध करने के लिए कहे, उनको हतोत्साहित करने वाली कुछ और खबरें उनमें फैली। इसी समय बाबर को सूचना मिली कि हुसैन खान नोहनी ने रापरी तथा कुतुब खान ने चन्दवार पर अपना अधिकार जमा दिया है और अफ़ग़ानों ने सम्भल तथा कन्नौज से भी मुग़लों को बाहर निकाल दिया है तथा ग्वालियर में भी अफ़ग़ान दुर्ग को लेने की चेष्टा कर रहे हैं।[1] इन खबरों के फैलते ही, बाबर की सेना से सैनिकों ने भागना प्रारम्भ किया।[2] ज्यों ही बाबर को इस बात की सूचना प्राप्त हुई उसने १७ मार्च, १५२७ ई०[3] को शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आदेश दे दिया।

राणा संग्राम सिंह ने खनवा के मैदान से १६ मार्च, १५२७ ई० को पड़ाव डाला। बाबर व उसके शिविर में चार मील की दूरी थी। बाबर की सेना में सम्भल, इटावा, धौलपुर, ग्वालियर, जौनपुर तथा कालपी की सैनिक टुकड़ियों को मिलाकर लगभग २०,००० सैनिक थे, जब कि राणा के सैनिको की संख्या कहीं अधिक थी। राणा खनवा के निकट पहुंच तो गया, किन्तु उसे इतना समय

---

१. हैबत खाँन गुर्ग अन्दाज ने मुग़लों का साथ छोड़ दिया तथा सम्भल चला गया। बारी के हसन खान ने भी ऐसा ही किया तथा राणा के पास चला गया। बाबर नामा (अनु०) भाग, २, पृ०, ५५७; गुलबदन बेगम के अनुसार, "अमीरों", राजाओं एवं राणाओं में से जो लोग हज़रत बादशाह की सेना में सम्मिलित हो गए थे, वे सब के सब विद्रोही बन गए और राणा से मिल गए। कोल, जलाली, सम्भल, रापरी, तथा सभी परगनों के राय, राजा एवं अफ़ग़ान विद्रोही बन गए।"— 'हुमायूं नामा' (अनु०), पृ०, ६८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३६६; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ० २७०।

२. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५६३।

३. अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६०; डा० जी० एन० शर्मा ने अबुल फजल द्वारा दी गई तिथि को ठीक नहीं माना है। उनका कहना है कि राणा १७ मार्च, १५२७ ई० को खनवा पहुँचा और उसी दिन ६–३० बजे युद्ध प्रारम्भ हो गया। यह विश्वासनीय नहीं प्रतीत होता। राणा ने एक दिन पूर्व अपनी सेना के साथ खनवा के मैदान पर पड़ाव डाला होगा। डा० जी० एन० शर्मा के मत के लिए; "मेवाड़ एण्ड दि मुग़ल इम्परर्स", पृ०, ३०–३१।

न मिल सका कि वह मैदान में अपनी सैनिक टुकड़ियों को पंक्तियों में सजा सके। दाहिनी ओर से मुग़लों की सेना को घेरने के विचार से राजपूत सेना के दाहिने भाग ने, जिसका नेतृत्व मेदिनी राय, मालदेव तथा अन्य सरदार कर रहे थे, मुग़ल सेना के तुलग़मा बनाने वाले सैनिकों पर जो कि मलिक क़ासिम के नेतृत्व में थे और मुगल सेना के दाहिने भाग के दाहिने बाज़ू वाली सेना, जो कि खुसरो कोकुलदाश के नेतृत्व में थी, पर धावा बोल दिया।[1] राजपूतों का यह आक्रमण इतना प्रचण्ड था कि मुग़लों की सेना के दांए तथा बाएं भाग अस्त-व्यस्त हो गए तथा दाएं भाग के लिए तो मैदान में खड़ा होना भी कठिन हो गया। बाबर के लिए इस अवसर पर बहुत ही आवश्यक हो गया कि वह अपनी सेना के दांयें भाग को सहायता पहुंचाएं क्योंकि शत्रु निरन्तर उन पर प्रहार कर रहा था। प्रो० रशब्रुक विलियम्स का कहना है कि यह कुछ क्षण बहुत ही खतरनाक थे, क्योंकि एक तुलग़मा आक्रमण करने में अभ्यस्त होता है बचाव करने में नहीं और इस समय वह अपनी कमज़ोरी के चिन्ह प्रकट करने लगा। यदि दाहिने भाग के दाहिने बाज़ू की सेना पूर्णरूप से परास्त हो गई होती तो शत्रु पूरी की पूरी पंक्ति को समेट लेता और इस प्रकार पराजय तुरन्त हो जाती और फिर विजय पाना कठिन था।"[2] इस परिस्थिति से अपने को बचाने के लिए बाबर ने शीघ्र ही चीन तैमूर सुल्तान के अधीन सहायतार्थ सेनाएं भेजीं। चीन तैमूर सुल्तान ने आगे बढ़ कर शत्रु की सेना के दाहिने भाग पर आक्रमण किया, उसे छिन्न-भिन्न कर दिया तथा उनके प्रभाव को कम कर दिया। यही नहीं चीन तैमूर सुल्तान ने सेना के दाहिने भाग को इस योग्य बना दिया कि वह पूरी शक्ति के साथ शत्रु पर आक्रमण कर सके। इस प्रकार जब मुग़ल सेना के दाहिने भाग ने राजपूतों पर आक्रमण किया तो उन्हें पराजय का मुंह देख कर पीछे हटना पड़ा, जिसके कारण उन्हीं की सेना के मध्य तथा बाएं भाग के बीच काफ़ी फ़ासला हो गया।[3] मुगलों

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५६६–५७२।

२. प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० १५३।

३. अकबरनामा (अनु०) भाग १, ५८–७३; प्रो० रशब्रुक विलियम्स "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी", पृ० १५३; डा० जी० एन० शर्मा, "मेवाड़ एण्ड दि मुग़ल इम्परर्स", पृ०, ३२।

के लिए यह बहुत ही उत्तम अवसर था जब कि वे इस अवसर का लाभ उठाएं। बिना एक भी क्षण व्यर्थ में बिताते हुए मुस्तफ़ा, जो कि तोपखाने का अध्यक्ष था, ने अपनी लकड़ी की तिपाइयों को, जिन पर तोपें रखी हुई थीं, मैदान में आगे ढकेल दिया और तोपों को दाग़ना प्रारम्भ कर दिया। इस समय छोटी तथा बड़ी तोपों तथा हथगोलों का भी प्रयोग किया गया। अग्नि उगलती हुई तथा आवाज़ करती हुई तोपों ने राजपूत सेना को आतंकित कर दिया।[1] तोपों के दाग़े जाने के साथ ही मुग़ल सैनिकों में चेतना आई और अब कोई भी शक्ति उन्हें युद्ध में सक्रिय भाग लेने से नहीं रोक सकती थी। सेना के दाहिने भाग की सहायता के लिए और सैनिक भेजे गए। जैसे ही, क़ासिम हुसैन सुल्तान, कवान बेग उर्दू शाह, हिन्दू बेग, मुहम्मद कोकुल्दाश, तथा ख्वाजगी आसद उस स्थान पर पहुंचे जहां सेना का दाहिना भाग युद्ध करने में व्यस्त था, घोर युद्ध प्रारम्भ हुआ। इसी समय राजपूतों की सहायतार्थ सेनाएं भी आ पहुंचीं और उन्होंने मुग़ल सेना के दाहिने भाग पर पुनः दबाव डालना प्रारम्भ किया। बाबर ने पुनः अपनी सेना के मध्य भाग से सैनिक टुकड़ियां सेना के दाहिने भाग की सहायता के लिए भेजी। यूनुस अली, शाह मन्सूर बरलास और अब्दुल्ला किताबदार तथा दोस्त ईश्क आक़ा, शत्रु पर एक-एक करके टूट पड़े और उन्होंने शत्रु की सेना के विभिन्न भागों को परास्त कर छिन्न-भिन्न करने की भरसक चेष्टा की। मुस्तफ़ा ने उनकी सहायता अपनी तोपों से की। शीघ्र ही मुग़ल सेना के दाहिने भाग ने न केवल राजपूतों के आक्रमण को विफल कर दिया, वरन् उनको इस बुरी तरह परास्त किया कि उन्हें अधिक क्षति उठानी पड़ी।

अब राणा संग्राम सिंह ने अपना ध्यान मुगल सेना के दाहिने भाग से हटा कर दूसरी ओर लगाया। उसने शत्रु की सेना के मध्य भाग से दूर ही रहना पसन्द किया, क्योंकि वहां उस्ताद अली की तोपें निरन्तर आग उगल कर उसके सैनिकों को भयभीत कर रही थीं तथा उन्हें पीछे हटने पर विवश कर रही थीं। अतएव वह मुग़ल सेना के बाएं भाग की ओर मुड़ा। इस प्रकार राजपूत सेना का बायां भाग, मुग़ल सेना के बाएं भाग से टकराया। अखय राज, राय मल राठौर, तथा हसन खान मेवाती, जो राजपूत सेना का बांया भाग संभाले हुए थे, ने मुग़ल सेना के बाएं भाग पर, जिसका नेतृत्व मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, आदिल

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५६६।

सुल्तान, महम्मद अली जंग जंग तथा अन्य योद्धा कर रहे थे, पर आक्रमण किया। मुग़लों ने राजपूतों के प्रत्येक आक्रमण का डटकर सामना किया और वे मैदान में जमे रहे। कुछ ही देर में रुस्तम खान तुर्कमान तथा मुनीम अक्ता के अधीन जो तुलग़मा था, उसने चक्कर काटते हुए शत्रु की सेना के पार्श्व भाग पर आक्रमण कर दिया। उसी समय मुल्ला मुहम्मद अली अत्का तथा मीर ख़लीफ़ा ने आगे बढ़कर उन सभी मुग़लों की सहायता की जो कि उस स्थान पर युद्ध कर रहे थे। राजपूत, इस प्रकार मुगल सेना के बांयें भाग पर निरन्तर दबाव डालते रहे। बाबर को एक बार फिर ख्वाजा हसन को अपने घरेलू सैनिकों के साथ, अपनी सेना के बांयें भाग की सहायता करने को भेजना पड़ा। सेना के मध्य भाग से जैसे ही सहायतार्थ सेनाएं आगे बढ़ीं, मुग़ल सेना के बांए भाग की स्थिति सुधर गई और राजपूतों के लिए उसे छिन्न-भिन्न करना या उस पंक्ति को तोड़ना कठिन हो गया। फिर भी राजपूत सैनिक मैदान में अपना पराक्रम दिखाते रहे।

युद्ध का अब तृतीय एवं अन्तिम दौर प्रारम्भ हुआ। अब तक दोनों ओर की सेना के सभी भागों में युद्ध प्रारम्भ हो चुका था। धीरे-धीरे मुग़ल तोपों ने राजपूत सैनिकों की संख्या को कम करना प्रारंम्भ किया। यद्यपि युद्ध में अनेक राजपूत खेत रहे, फिर भी कुछ समय तक युद्ध चलता रहा और यह निश्चय न हो सका कि विजय किसकी होगी। अन्त में बाबर ने अपने घरेलू सनिकों को आदेश दिया कि वे तोपखाने के दायें और बाएं ओर से तथा बीच में उस्ताद अली की बड़ी तोपों तथा गोलों के लिए, पर्याप्त स्थान छोड़ते हुए, शत्रु पर आक्रमण कर दें। इसी समय बाबर ने अपने तोड़ेदार बन्दूकचियों को जो कि उसकी सेना के दाहिने भाग के साथ तैनात थे और जो कि बहुत ही अधिक शक्तिशाली थे, आदेश दिया कि वे आगे बढ़ कर शत्रु पर आक्रमण करें। तोड़ेदार बन्दूकचियों की इस टुकड़ी ने उस्ताद अली के कार्य में सहायता पहुंचाई इस युद्ध-पद्धति का परिणाम यह हुआ कि घरेलू सैनिकों ने राजपूत सेना के मध्य भाग की पंक्तियों को छिन्न-भिन्न कर दिया और मुग़ल तोपों ने अनेक की संख्या में राजपूत सैनिकों का ढ़ेर मैदान में लगा दिया। जैसे ही राजपूतों ने मैदान के बीच का स्थान खाली कर दिया, मुग़ल सेना के पैदल सैनिकों ने उसी स्थान पर अपने पैर जमा दिए। तत्पश्चात् तोड़ेदार बन्दूकची तोपों के पीछे से सामने आए और अपनी तिपाइयों को आगे बढ़ाते हुए उन्हीं तिपाइयों के पीछे से शत्रु पर निरन्तर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। बाबर ने अब अपनी सेना से शत्रु को सेना के मध्य भाग की

ओर बढ़ने के लिए कहा। उस्ताद अली ने अपनी तोपों को आगे बढ़ा दिया। यह देखकर मुग़ल सेना के दाहिने तथा बांयें भाग ने भी आगे वाली पंक्ति को बनाए रखने तथा उसे शक्ति देने का भरसक प्रयास किया। इस प्रकार शत्रु पर आक्रमण कर मुग़लों ने राजपूत सेना के दाहिने भाग को तितर-बितर कर दिया तथा पीछे हटा दिया और उनके बाएं भाग को अस्त-व्यस्त कर दिया । तत्पश्चात् वे राजपूत सेना के मध्य भाग की ओर बढ़े। अब तक भी युद्ध के भाग्य का निर्णय न हो पाया था। राजपूत बुरी तरह से परास्त हो चुके थे, किन्तु फिर भी वे मैदान में डटे रहे। उनकी वीरता को देख कर मुग़लों के छक्के छूट गए। अन्त में राणा के सैनिकों ने शत्रु पर विजय पाने की भरसक चेष्टा की। उन्होंने मुग़ल सेना के दाहिने तथा बायें भाग पर, जो कि इस समय तुलुग़मा बनाने में व्यस्त था, पर आक्रमण किया। परिणामस्वरूप मुग़ल सेना के दायें व बाएं भागों को मध्य की ओर, जहाँ कि बाबर खड़ा हुआ था, पीछे हटना पड़ा। मुग़ल सेना के बांये भाग पर राजपूतों का अधिक दबाव था। घमासान युद्ध अभी चल ही रहा था कि बाबर के अश्वारोहियों तथा तोपचियों ने शत्रु की सेना के मध्य, दांये, तथा बांये भाग पर एक साथ आक्रमण कर दिया और प्रत्येक भाग को अस्त-व्यस्त कर दिया। युद्ध करते-करते चन्द्र भान चौहान; भूपत राय, मलिक चन्द्र, दलपत, हसन खान,[1] मुग़ल तोपखाने को छीनने के लिए आगे बढ़े किन्तु वीर गति को प्राप्त हुए। इसी समय मुग़ल सैनिकों ने राणा संग्राम सिंह के उस हाथी को पकड़

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७४; अहमद यादगार के अनुसार जैसे ही युद्ध प्रारम्भ हुआ हसन खान मेवाती मैदान से भाग खड़ा हुआ। उसके पीछे-पीछे उसका दास, लाद खां, जो कि उसका शत्रु था और जो उसके भाइयों से मिला हुआ था, चल पड़ा। जब हसन खां ने पीछे मुड़कर देखा तो आसपास सिवाय लादखां के कोई भी उसके साथियों में दिखाई न पड़ा। उसने लाद खां से खाना मांगा। लाद खां ने उसे कुछ रोटियां व कबाब दिए। हसन खान खाना खा ही रहा था कि बाबर के कुछ अमीर वहां पहुँचे। उसने खाना खाना छोड़ दिया और वहां से भागने की कोशिश की, किन्तु लाद खां ने उसे तुरन्त पकड़कर मार डाला और कुएँ में फेंक दियाऔर स्वयं घोड़ेपर सवार होकर भाग निकला, "तारीखे सलातीने अफग़ना", पृ०, ११८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ४५६।

लिया जिस पर कि उसकी पताका फहरा रही थी । अपनी इस सफलता से प्रोत्साहित होकर उन्होंने शत्रु पर भीषण आक्रमण किया। इस आक्रमण का राजपूतों ने सामना तो किया, किन्तु इस मुठभेड़ में अनेक राजपूत सरदार, सज्जा चन्दावत, रावत जग्गा, सारंग देवोत, रावत बाघ सज्जा अज्जा, तथा करन सिंह, अपनी जान गंवा बैठे। राणा संग्राम सिंह भी बहुत बुरी तरह घायल हो गया। आम्बेर के पृथ्वीराज, जोधपुर के राव मालदेव, सिरोही के राव अखय राज, राणा संग्राम सिंह को मैदान से दूर ले गए ताकि उसके प्राण बच जायं। इस घटना के पश्चात् राजपूतों की परम्परा के विरुद्ध राजपूत सरदारों ने युद्ध जारी रखने का निश्चय किया। उन्होंने हलवद के चुन्द शासक राजा राणा अज्जा के ऊपर क्षत्र रखा तथा अन्तिम दम तक लड़ने का दृढ़ संकल्प किया। इस प्रकार कुछ समय तक विरोधी दलों में घमासान युद्ध होता रहा। किन्तु अधिक समय तक राणा के भागने की बात छुपी न रह सकी और जैसे ही यह खबर चारों ओर फैली, राजपूत सेनाएं मैदान से भागने लगीं। मुग़लों ने पुनः उन पर धावा बोला। सेना के मध्य भाग को लेकर बाबर अन्य भागों की सहायता करने के लिए रवाना हुआ। इसी समय सिलहदी ने राजपूतों को भागते हुए देखकर उनका साथ छोड़ दिया। वह बाबर के पास आया और उसने बाबर को सूचना दी कि राणा संग्राम सिंह तो बहुत पहले ही मैदान छोड़ कर भाग गया है। इस समय तक खेल समाप्त हो चुका था। मुग़लों ने युद्ध जीत लिया था तथा राजपूत पूर्णरूप से पराजित हो चुके थे। बाबर ने अपने सैनिकों की विजय की खबर का स्वागत किया, क्योंकि यह उसके जीवन का सबसे शुभ दिन था। तत्पश्चात् उसने मुहम्मद कोकुल्दाश को एक सैनिक टुकड़ी के साथ राणा संग्राम सिंह का पता लगाने के लिए भेजा किन्तु उसका कोई पता न लग सका। दोपहर तक युद्ध समाप्त हो गया तथा राजपूत अपने सिर के बल लड़ाई के मैदान से भाग खड़े हुए ।[1]

दूसरे दिन बाबर ने स्वयं लड़ाई के मैदान का निरीक्षण किया। जो मुग़ल

---

१. खनवा के युद्ध के विस्तृत विवरण के लिए देखिए, बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५४७–५७४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर) पृ०, २३४–४८; अकबरनामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६१–६६; फ़िरिश्ता, "तारीख-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ०, २०७–६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ५५–५८ ।

सैनिक मैदान में खेत रहे, उनकी सूची तैयार की गई तथा राजपूतों के मुण्ड एकत्र कर एक ढेर लगाया गया और खुशियों के मध्य बाबर ने गाज़ी की उपाधि ग्रहण की।[1] एक बार फिर केवल अपनी सैन्य कुशलता, अनुभव, युद्ध प्रणाली, धैर्य, तथा कुशल तोपखाने, सुन्दर योजना एवं सैन्य-संचालन के कारण बाबर ने युद्ध जीता। पानीपत के युद्ध की भांति खनवा के युद्ध ने यह सिद्ध कर दिया कि युद्ध में सफलता अनेक बातों पर निर्भर करती है। केवल सैनिकों की संख्या के बल पर ही युद्ध नहीं जीता जा सकता है।

जिस समय राणा संग्राम सिंह चित्तौड़ से अपनी सेना को लेकर बाबर पर आक्रमण करने के लिए चला तब से लेकर युद्ध के प्रारम्भ तक वह इसी ख्याल में रहा कि शीघ्र ही अपनी सेनाओं की सहायता से वह शत्रु पर विजय प्राप्त कर लेगा। उसने शत्रु से अपना बचाव करने की कोई भी सावधानी न दिखाई। सैन्य-संख्या अधिक होने के कारण चित्तौड़ से खनवा तक उसकी सेना की गतिशीलता बहुत ही कम रही। अतः हम कह सकते हैं कि राणा स्वयं ही अपनी पराजय का मुख्य कारण था। खनवा के निर्णयात्मक युद्ध ने राजपूत संघ को शक्तिहीन ही न कर दिया वरन् राजपूत राज्यों को भी मुगलों के समक्ष शक्तिहीन कर दिया। राणा संग्राम सिंह की पराजय के उपरान्त अगले २०० वर्षों तक राजपूत शासक राजपूत संघ का निर्माण न कर सके। खनवा के युद्ध के पश्चात् बाबर के लिए, मैदान में कोई शक्तिशाली शत्रु न रह गया जो कि उसे उसकी उपलब्धियों से वंचित कर सकता। हिन्दुस्तान में वह अब पूर्णरूप से सुरक्षित था। अब उसके सामने पहले की तरह वे समस्याएं न थीं, जो कि उसे इधर-उधर भटकते रहने के लिए निरन्तर बाध्य करती। हिन्दुस्तान ही अब उसके राजनीतिक जीवन का मुख्य केन्द्र बन गया। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि काबुल की स्मृतियां उसके

---

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७४; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ० २४६; मीर गेसू नामक एक व्यक्ति जो कि काबुल से आया था ने तथा शेखज़ैन ने खनवा के युद्ध की विजय की तारीख "फ़तहे बादशाह इस्लाम" से निकाली— बाबरनामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" पृ० २५०; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६६।

मानस पटल से हट गई। उसके स्वप्नों में काबुल बसा रहा और काबुल के प्रति उसका आकर्षण बना रहा। यद्यपि अपने शेष जीवन में हिन्दुस्तान में वह युद्ध करता रहा, तब तक प्रशासन करता रहा जब तक कि मृत्यु ने उसे अपने पास न बुला लिया। किन्तु फिर भी काबुल की जलवायु, वहाँ के फल, रमणीय वातावरण, सभी कुछ के बारे में वह यहां रह कर सोचता रहा। कुछ भी हो, दो युद्धों का विजेता हिन्दुस्तान का शासक बन गया। जिस वंश की स्थापना उसने यहां की उसका प्रभुत्व केवल हुमायूं के राज्यकाल के उन १० वर्षों को छोड़कर, जब कि उसे हिन्दुस्तान से बाहर रहना पड़ा, लगभग २०० वर्षों से अधिक तक बना रहा। जो वंश उसने स्थापित किया उसे स्वदेशी एवं विदेशी जातियों के रक्त से सदैव सींचा गया तथा उसे सभी वर्गों का सहयोग प्राप्त हुआ। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि पानीपत के युद्ध का कार्य खनवा के युद्ध ने पूर्ण किया।

खनवा के युद्ध के पश्चात् राजनीतिक क्षेत्र में बाबर का कोई शक्तिशाली विरोधी न बचा। पश्चिमी प्रदेशों में चन्देरी के मेदनी राय को छोड़कर, किसी भी राजपूत शासक में अब इतनी शक्ति न थी कि अन्य राजपूत राजाओं को एकत्र कर वे पुनः मुग़ल सम्राट बाबर को चुनौती दे या उसे भगाने का प्रयास कर सकें। राणा संग्राम सिंह की पराजय के पश्चात् मेवाड़ राज्य की दशा दिन-प्रति-दिन बिगडती गई। यद्यपि बहादुर शाह के अधीन गुजरात इस समय पश्चिमी प्रदेशों के राज्यों में सबसे शक्तिशाली था, किन्तु पानीपत तथा खनवा के मैदान में जिस प्रकार मुग़लों की तोपों ने काम किया उसके बारे में सुनकर तथा इब्राहीम लोदी तथा राणा संग्राम सिंह जैसे महान् योद्धाओं की पराजय को देखकर उसकी हिम्मत न हुई कि वह पासा फेंक कर अपने भाग्य से जुंआ खेले। फिर उसकी बाह्य नीति का संघर्ष बाबर की बाह्य नीति में किसी भी जगह न होता था और न ही उसके राज्य की सीमाएं मुग़ल साम्राज्य की सीमाओं को छूती थी। पश्चिमी-प्रदेशों की प्रादेशिक शक्तियों को शक्तिहीन एवं निर्बल देखकर बाबर ने अपने साम्राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी सीमाओं को निर्धारित करने का विचार किया। उसे भय था कि यदि इस क्षेत्र में सीमाओं का निर्धारण न हुआ तो जब कभी प्रादेशिक शक्तियां बल पकड़ेंगी तो मुग़ल साम्राज्य को एक नए ख़तरे का सामना करना पड़ेगा।

अतएव इस उद्देश्य को प्राप्त करने के विचार से २० मार्च, १५२७ ई० को उसने व्याना की ओर कूच किया।[1] वह २३ मार्च, १५२७ ई० को व्याना पहुंचा। उसके आने की सूचना पाते ही, वहाँ के लोग भाग खड़े हुए। बाबर ने दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया। उसने अपनी सेना को भागने वालों का पीछा करने के लिए भेजा। मुग़लों ने उनका पीछा व्याना से लेकर मेंवात तथा अलवर तक किया और उनमें से अनेक को पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया। इस प्रकार व्याना से लेकर अलवर तक की सड़क पर लाशों के ढेर लग गए।[2] इसके पश्चात् बाबर ने राणा संग्राम सिंह के राज्य पर आक्रमण करने के सम्वन्ध में अपने अमीरों से परामर्श किया।[3] उन्होंने सुझाव दिया कि मार्ग में जल तथा गर्मी के कारण उस ओर बढ़ना ठीक नहीं है अतएव मेवाड़ राज्य पर आक्रमण करने का विचार त्याग दिया गया।[4]

व्याना से वापस लौटते समय बाबर ने मेवात पर आक्रमण करने का निश्चय किया। मेवात का प्रदेश दिल्ली के निकट स्थित है और बाबर के अनुसार इस प्रदेश की मालगुजारी ३–४ करोड़ दाम तक थी।[5] सैकड़ों वर्ष से मेवात हसन खान मेवाती के पूर्वजों के हाथ में था। वे नाम मात्र को दिल्ली के सुल्तान के अधीन थे। बल्वन को छोड़कर किसी भी सुल्तान ने न उस प्रदेश को जीतने अथवा

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७७; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० २५१।
२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५७७-७८; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २५१; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २७२।
३. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५७८; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २५१।
४. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५७७-७८; अहमद यादगार ने लिखा है कि बाबर ने राणा के राज्य पर आक्रमण कर उसे विजित कर लिया तथा वहाँ आमिल नियुक्त किए। तत्पश्चात् हुमायूँ के हाथों में मेवाड़ सौंप कर वह आगरा वापस लौट गया। "तारीख सलातीने अफ़ग़ाना", रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५६।
५. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७७।

उसे दिल्ली सल्तनत में मिलाने की चेष्टा की और न ही किसी ने उसके प्रशासन का प्रबन्ध ही किया। पानीपत के युद्ध के पश्चात् बाबर ने हसन खान मेवाती से संतुष्ट होकर उसे उसका प्रदेश प्रदान कर दिया। यद्यपि हसन खान मेवाती ने उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी किन्तु कुछ समय पश्चात् अफ़ग़ान विद्रोहियों को देखकर उसने भी विद्रोह किया तथा मेवात में भी लूट मार करना प्रारम्भ किया। अतएव बाबर के लिए मेवात पर आक्रमण करना अनिवार्य हो गया। अपनी सेनाओं को लेकर शीघ्रातिशीघ्र कूच करता हुआ वह मानसनी नदी, जो कि अलवर से १२ मील पर है, के तट पर पड़ाव डाला। मुग़ल सेना को आगे बढ़ते देखकर हसन खान मेवाती ने अपने पुत्र नाहर खान को सन्धि की वार्ता के लिए बाबर के पास भेजा। बाबर ने नाहर के साथ अब्दुर रहीम शग़ावल को अलवर की ओर अन्य स्थानीय सरदारों को अधीनता स्वीकृत करने के लिए भेजा। अब्दुर रहीम शग़ावल को इस कार्य में सफलता प्राप्त हुई। कुछ ही समय में मुग़लों ने मेवात पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया। बाबर ने नाहर खान की सेनाओं से प्रसन्न होकर उसे कई लाख के परगने वजह में प्रदान किए।[1] मेवात का शासन प्रबन्ध करने के लिएबाबर ने खुसरो को नियुक्त किया और उसे अलवर प्रदान किया तथा ५० लाख दाम अपने निजी व्यय के लिए प्रदान किए। किन्तु खुसरो ने वहां रहने से इन्कार कर दिया।[2] बाद में बाबर ने चीन तैमूर सुल्तान को ५० लाख दाम दिएऔर मेवात की राजधानी तिजारा प्रदान की।[3] इसी अवसर पर बाबर ने ५० लाख दाम तथा अलवर तारदिका को प्रदान किए। इस प्रकार बाबर ने मेवात को दो प्रशासनिक इकाइयों में बांट दिया। खुसरो तथा तारदिका को प्रशासन के लिए नियुक्ति किया गया। इस कार्य को पूर्ण करने के पश्चात् बुधवार, २ रजब, ९३४ हि०। ३ अप्रैल, १५२७ ई०

१. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७७-७८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २५१-५२।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५७८।

३. बाबरनामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७८-७९; फ़िरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, २०९; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ५९।

को वावर ने अलवर की सैर की ओर दूसरे दिन वह अपने शिविर को वापस लौट गया ।[1]

अगले कुछ दिनों तक मानस-नी नदी के तट पर ठहर कर वावर ने कुछ महत्वपूर्ण प्रशासनिक कार्यों को निपटाया । उसने हुमायूं को वदख्शां वापस लौटने तथा वहां के प्रशासन को सम्भालने का आदेश दिया। जो लोग खनवा के युद्ध से पूर्व स्वदेश वापस लौटने के इच्छुक थे, उन्हें भी वावर ने अनुमति प्रदान कर दी। महदी ख्वाजा, जिसे कि इटावा में नियुक्त किया गया था, को भी काबुल जाने की अनुमति दे दी गई। उसके स्थान पर, कुतुब को नियुक्त किया गया और उसके पश्चात् वावर ने महदी ख्वाजा के पुत्र जाफर ख्वाजा को इटावा भेज दिया। व्याना में ईशाक आक़ा को शिक़दार नियुक्त किया गया।[2] इसके पश्चात् वावर ने आगरा की ओर प्रस्थान किया। हुमायूं तथा अन्य अमीरों को विदा देने के पश्चात् फीरोज़पुर झिकी (गुड़गांव के पास तथा दिल्ली के दक्षिण में ७४ मील पर स्थित), कोटला, व्याना और सीकरी को होते हुए वावर २३ रजव, ६३४ हि०। २५ अप्रैल, १५२७ ई० को आगरा पहुंचा।[3]

आगरा पहुंच कर वावर की दृष्टि कुछ समय तक सिंध नदी के उस पार की घटनाओं तथा इस देश में होने वाली घटनाओं की ओर लगी रहीं। उसकी अनुपस्थिति से कावुल से कुछ ऐसी घटनाएं घटित हुई जिसके वारे में सुनकर वह चिन्तित हुआ। यद्यपि इस देश में उसकी स्थिति सुरक्षित थी, लेकिन न जाने क्यों उसके मन में वार-वार यह वात आती थी कि यदि कहीं भी भाग्य ने उसका साथ न दिया तो उसे इस देश को छोड़ना पड़ेगा । ऐसी स्थित में उसे कावुल ही में शरण लेना पड़ेगा। उसने कावुल पर अपना प्रभुत्व वनाए रखने की चेष्टा की ताकि जव भी उसका भाग्य पलटा खाए तो वह कावुल से ही अपने शत्रुओं पर पुनः आक्रमण कर सके। कुछ भी हो, कावुल का राज्य उसके लिए उतना ही महत्व-

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५७६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, २५३; अकवर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६६ ।
२. वावर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५७६ ।
३. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८१-८२; "तारीखे अलफ़ी", रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ६४२ ।

पूर्ण था जितना कि हिन्दुस्तान। एक का दूसरे पर अस्तित्व निर्भर करता था। दोनों ही उसकी अमूल्य उपलब्धियां थीं, अतः उसकी यह हार्दिक इच्छा थी कि वह दोनों पर ही प्रभुत्व बनाए रखे।

हिन्दुस्तान में ही उसके लिए अभी बहुत सा कार्य शेष था। खनवा के युद्ध के पूर्व उसे सूचना प्राप्त हुई थी कि अनेक स्थानों से स्थानीय अफसरों ने मुग़लों को भगा दिया है और उन स्थानों को अपने अधिकार में ले लिया है। उन स्थानों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने तथा स्थानीय अधिकारियों की विद्रोही प्रवृत्ति को कुचलने के लिए बाबर ने शैख घूरन, मुहम्मद अली जंग जंग, तरदी बेग, अब्दुल मलिक करची, हसन खान तथा अन्य व्यक्तियों को कोल (अलीगढ़), चन्दवार, तथा रापरी की ओर भेजा। शाहीसेना ने कोल पर आक्रमण किया तथा इलयास खान को पराजित कर उसे बन्दी बनाकर बाबर के पास भेज दिया।[1] अफ़ग़ानों के हाथ से कोल वापस लेकर मुग़ल सेनाएं चन्दवार तथा रापरी की ओर बढ़ीं। जैसे ही मुग़ल सेनाएं चन्दवार तथा रापरी की ओर बढ़ीं, कुतुब खान के साथी वहां से भाग खड़े हुए। चन्दवार को विजित कर मुग़ल सैनिक रापरी की ओर बढ़े। यहां हुसैन खान नोहानी ने मुग़लों का रास्ता रोक कर युद्ध करने का विचार किया, किन्तु उनका सामना न कर सकने पर भाग खड़े हुए। हुसैन खान नोहानी ने अपने प्राणों की रक्षा करने के लिए जमुना नदी पार करने की चेष्टा की किन्तु वह उसी से डूब कर मर गया।[2] लगभग इसी समय मुग़ल सेनाओं के आगे बढ़ने की सूचना पाकर, कुतुब खां इटावा से भाग खड़ा हुआ।

बाबर को जैसे ही सूचना मिली कि बदायूं से बिबन अन्य अफ़ग़ानों के साथ

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८६; ऐसा प्रतीत होता है कि कोल को अफ़ग़ानों के हाथ से वापस लेने के पश्चात् बाबर ने उसे शेख घूरन को पुनः प्रदान कर दिया। फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ०, २०६।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८२-८३; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २५७; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ सिक्सटीन्थ सेन्चुरी," पृ०, १५८; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ़ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ० ५६।

उपस्थित है[1] उसने तुरन्त क़ासिम हुसैन सुल्तान के साथ मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा, मलिक क़ासिम, अब्दुल मुहम्मद, अली खान फ़ारमूली, मलिक दाद करानी, शैख़ भिखारी, तातार खान तथा अन्य व्यक्तियों को बिबन के विरुद्ध भेजा। मुग़ल सेना के आगे बढ़ते ही बिबन भाग खड़ा हुआ और मुगलों ने उसका पीछा ख़ैराबाद तक किया। कुछ दिनों खैराबाद में रूक कर मुग़ल सैनिक वापस लौट आए। इस प्रकार जो प्रदेश बिबन के हाथों में था उस प्रदेश पर मुगलों का अधिकार हो गया[2] ।

लगभग इसी समय बाबर को सूचना मिली कि सुल्तान मुहम्मद ने बिहार में विद्रोही कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी हैं। उसने हिन्दाल पर आक्रमण कर उसे जौनपुर से भगा दिया और कुछ दूरी तक उसका पीछा भी किया तथा उसके अनेक सैनिकों को मार डाला। किसी प्रकार हिन्दाल आगरा पहुँचा और उसने बाबर को परिस्थिति से अवगत कराया। बाबर ने जुनैद बरलास तथा जहाँगीर कुली बेग को अफ़ग़ानों के विद्रोह को दबाने के लिए भेजा। मुग़लों ने अफ़ग़ानों पर आक्रमण किया तथा उन्हें बुरी तरह परास्त कर खदेड़ दिया। सुल्तान जुनैद बरलास ने जौनपुर जीत लिया और अपनी सफलता की सूचना बाबर को दे दी। बाबर ने कुछ समय पश्चात् सुल्तान जुनैद बरलास को आदेश दिया कि वह वहीं रूक जायं और हिन्दाल को राजधानी वापस भेज दे। जब तक सुल्तान जुनैद वहाँ रहा, अफ़ग़ानों की इतनी हिम्मत न हुई कि वे पुनः जौनपुर पर आक्रमण करते[3] ।

बदायूं, कोल, रापरी, चन्दवार, जौनपुर, लखनूर से लेकर खैराबाद तक के प्रदेश में तो मुग़लों को अफ़गानों के विरुद्ध पूर्ण सफलता प्राप्त हुई, किन्तु कन्नौज में सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई अफ़ग़ानों पर विजय न प्राप्त कर सका। वह कन्नौज छोड़ कर आगरा चला आया। उसके स्थान पर बाबर ने मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा

---

१. जिन दिनों बाबर राणा संग्राम सिंह से युद्ध करने में व्यस्त था, बिबन ने लखनूर से लेकर ख़ैराबाद तक के प्रदेश अपने अधिकार में कर लिए थे।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, २८२-८३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २५६।
३. अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ना", पृ०, ११६-२०, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५७।

को कन्नौज भेजा और उसे ३० लाख दाम वजह में प्रदान किए[1]। इस प्रकार बाबर को दोआब में अफ़ग़ानों पर भी सफलता प्राप्त हुई। वर्षा ऋतु प्रारम्भ हो जाने के कारण उसने सैनिक कार्यवाहियाँ बन्द कर दीं और अपने अफ़सरों को आदेश दिया कि वे अपनी-अपनी जागीरों को वापस लौट जायं और अगले कुछ महीनों में युद्ध का सामान जुटा कर तथा सैनिकों को लेकर उसके पास वर्षा-ऋतु के समाप्त होने पर आगरा में उपस्थित हों[2]।

इन कुछ अभियानों में सफलता प्राप्त कर लेने से ही साम्राज्य-निर्माण करने की क्रिया समाप्त नहीं हो गयी। वास्तव में साम्राज्य निर्माण करने का कार्य, जिसका प्रारम्भ १५०४ ई० में हुआ, का अभी तक पहला और दूसरा चरण ही पूरा हुआ था। अभी तक प्रशासनिक कार्य थोड़ा ही हुआ अन्य सभी कार्य शेष थे। उन कार्यों के लिए शान्तिपूर्ण वातावरण की आवश्यकता थी, चूँकि निर्माण का कार्य आँधी और तूफान के मध्य नहीं किया जा सकता था। सौभाग्य से वातावरण बाबर के पक्ष में ही धीरे-धीरे हो रहा था।

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५८२-८३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २५६; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, २०६; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ५६।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ५८३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २५७।

सातवां अध्याय

अन्तिम कुछ वर्ष

अन्तिम कुछ वर्ष

वर्षा ऋतु के पश्चात् ही जब बाबर के अन्य सैनिक अफ़ग़ान विद्रोहियों को दबाने में व्यस्त थे, सूचना मिली कि बंगाल के शासक नुसरतशाह ने बिहार के अफ़ग़ानों के साथ मुग़लों के विरुद्ध समझौता कर लिया है। पिछले अध्याय में हम बता चुके हैं कि दोआब में इल्यास खान, चन्दवार में कुतुब खान, रापरी में हुसैन खान नोहानी, अवध में बिबन तथा बायज़ीद को मुग़लों ने परास्त कर इस विशाल क्षेत्र पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया था, किन्तु अब भी अफ़ग़ानों की कार्यवाहियाँ उनके लिए चिन्ता का विषय बनी रहीं। अफ़ग़ानों को दबाने का कार्य अपने अमीरों के हाथ में छोड़ कर बाबर ने धौलपुर तथा कोल से लेकर सम्भल तक की सैर पूर्व तथा पश्चिम की स्थिति का मूल्यांकन करने के लिए की[1]। अन्त में उसने चन्देरी पर आक्रमण करने का निश्चय किया[2]।

भौगोलिक स्थिति के ही कारण चन्देरी की राजनैतिक, व्यापारिक तथा सामरिक महत्ता थी। चन्देरी, मालवा तथा बुन्देलखण्ड की सीमाओं पर स्थित है और मालवा से उत्तरी भारत को जाने वाले सभी मार्ग चन्देरी से होकर ही जाते हैं। व्यापारिक केन्द्र होने के कारण चन्देरी एक समृद्धिशाली शहर था। इस

---

१. बाबर ने जुलाई, अगस्त तथा सितम्बर इस प्रकार व्यतीत किए। रमज़ान के रोज़े रखने के पश्चात् अगस्त में वह बीमार हो गया (३ अगस्त से २० अगस्त तक)। २२ अगस्त से २७ अगस्त तक उसने धौलपुर, बारी आदि स्थानों की सैर की। ३० अगस्त को वह पुनः बीमार हो गया। ६ सितम्बर को बीमारी से मुक्त हुआ और २६ सितम्बर तक आगरे में रहा। २७ सितम्बर को कोल, सम्भल, आदि स्थानों की सैर की। १२ अक्तूबर को पुनः बीमार पड़ गया और कुछ दिनों तक बीमार रहा। ९ दिसम्बर को उसने चन्देरी पर आक्रमण करने का निश्चय किया।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८९; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ५९।

शहर के अन्दर उस समय १२००० मस्जिदें, '३८४ बाजार, और १४,००० अच्छे बने हुए मकान थे। चन्देरी का दुर्ग २३० फीट की ऊँचाई पर एक पहाड़ी पर बना हुआ है। वहाँ के शासक मेदिनी राय ने जो कि मालवा राज्य में शासकों को बनाता था, राणा संग्राम सिंह की अधीनता स्वीकार कर ली थी। खनवा के युद्ध के पश्चात् बाबर ने उससे चन्देरी के दुर्ग को समर्पित करने के लिए कहा। किन्तु मेदिनी राय ने ऐसा करने से मना कर दिया। उसके व्यवहार से असन्तुष्ट होकर बाबर ने एक सेना अरग़ून खान के अधीन चन्देरी की ओर भेजी, किन्तु मेदिनी राय ने उसे हरा दिया और भगा दिया। तत्पश्चात् मेदिनी राय ने मुग़लों के विरुद्ध मोर्चा बनाने की चेष्टा की। इसी बीच अरगून खान ने मीर खलीफ़ा को अपनी पराजय की सूचना दी। मीर खलीफ़ा ने इस बार अरग़ून खान के भाई को मीरा की एक सेना के साथ चन्देरी पर आक्रमण करने के लिए भेजा। मुग़लों के आने पर, मेदिनी राय चन्देरी से बाहर निकला और चन्देरी के निकट पाथरा नामक गाँव में, शाही सेना के साथ युद्ध किया और उसे हरा कर भगा दिया। तत्पश्चात् उसने मुग़ल सैनिकों का सामान लूटा और पुनः चन्देरी वापस लौट गया[1]। जब बाबर को मुग़ल सैनिकों की पराजय के बारे में ज्ञात हुआ तो उसने आदेश दिए कि युद्ध का सामान एकत्र किया जाय और चन्देरी पर आक्रमण किया जाय।

अब तक बाबर चन्देरी के महत्व को अच्छी तरह से समझ चुका था। बिना चन्देरी के दुर्ग को विजय किए हुए उसके साम्राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी सीमा की रक्षा पंक्ति पूरी नहीं हो सकती थी। चन्देरी के दुर्ग को विजय कर वह वहाँ से दोआब तथा राजस्थान दोनों पर ही अपनी दृष्टि रखना चाहता था। दूसरे उसे भय था कि कहीं मेदिनी राय मालवा तथा गुजरात के शासकों से मिलकर मुगलों पर न आक्रमण कर दे। इससे पूर्व कि मेदिनी राय मुग़ल साम्राज्य के लिए घातक सिद्ध हो, वह उसे शक्तिहीन बना देना चाहता था।

इन्हीं उद्देश्यों को ध्यान में रखकर १४ रबी-उल अव्वल, ९३४ हि०। ९ दिसम्बर, १५२७ ई० को वह आगरा से चन्देरी की ओर रवाना हुआ। जलेसर,

---

१. अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना' पृ०, २२१; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५७-५८; बाबर ने केवल एक ही बार मुग़लों की पराजय के बारे में लिखा है—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८९।

अनवर, कोमर, तथा कालपी को पार करते हुए वह दातिया से २७ मील पूर्व भाण्डेर नामक स्थान पर ११ जनवरी, १५२८ ई० को पहुँचा। यहाँ से उसने रविवार, १६ रबी-उल अव्वल, ६३४ हि०। १२ जनवरी, १५२८ ई० को चीन तीमूर सुल्तान के अधीन ६,०००–७,००० सवारों को चन्देरी की ओर भेजा। चीन तीमूर सुल्तान के साथ बाक़ी मिंग बाशी, तारदी बेग, मुल्ला अपाक, मुहीन दुल्दाई और शेख़ गूरन भी थे[1]। इस अग्रिम दल के पीछे-पीछे बाबर भी चल पड़ा और २४ रबी-उस सानी, ६३४ हि०। १७ जनवरी, १५२८ ई०, को वह कचवा नामक स्थान पर पहुँचा[2]। उसने अपने आदमियों को आदेश दिया कि वे जंगलों को काट कर सड़क बनाएं ताकि बड़ी-बड़ी तोपें चन्देरी तक लाई जा सकें। कचवा से वह २६ रबी-उस सानी, ६३४ हि०। १८ जनवरी, १५२८ को आगे बढ़ा। बेतवा नदी की एक छोटी सी शाखा बुरहानपुर नदी को पार कर वह चन्देरी से ३ कोस की दूरी पर ठहरा। अहमद यादगार के अनुसार, जो सेना बाबर ने अग्रिम दल के रूप में आगे भेजी थी, उसे मेदिनी राय के सैनिकों ने बुरी तरह पराजित कर पीछे हटने पर विवश किया। इसी युद्ध में मेदिनी राय के एक भतीजे की मृत्यु हो गई, जिसके कारण मेदिनी राय को बहुत दुःख हुआ[3]। दूसरे दिन बाबर अपनी सेना के साथ आगे बढ़ा और दुर्ग के निकट पहुँच कर उसने दुर्ग पर घेरा डाल दिया (२८ रबी-उस-सानी, ६३४ हि०। २१ जनवरी, १५२८ ई०)[4]। अगले दिन बाबर ने स्वयं दुर्ग के चारों ओर दीवारों का निरीक्षण किया और अपनी

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८६; तारीख़े अलफ़ी, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ६४३; अहमद यादगार ने हिन्दू बेग के अधीन इस सेना का भेजा जाना लिखा है तथा यह भी लिखा है कि अल्लाहवर्दी ख़ान शामलू को भी फ़रमान भेजा गया कि वह हिन्दू बेग की सहायता करे। 'तारीख़े सलातीने अफ़ग़ना', पृ०, १२१, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५८।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५६०; ईलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २७४।

३. अहमद यादगार, "तारीख़े सलातीने अफ़ग़ना", पृ० १२२, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५८।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५६२।

सेना को दाहिने, बाँये तथा मध्य भाग में विभाजित कर, उन्हें आदेश दिया कि वे पूर्व-निर्दिष्ट स्थानों पर जाकर डट जावे। इसके पश्चात् उस्ताद अली ने एक ऐसा उपयुक्त स्थान चुना, जहाँ पर तोपें रखी जा सकें। मुहासिवों को आदेश दिए गए कि वे मिट्टी का एक टीला तैयार करें, ताकि उन पर तोपें रखी जा सकें। इसी प्रकार दुर्ग की दीवार पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ भी तैयार की गई। अपनी सैनिक तैयारियों को पूर्ण करने के पश्चात् बाबर ने आराइश खान को शैख़ ग़ुरन के साथ मेदिनी राय के पास भेजा कि वे उसे सन्धि करने के लिए राय दे और उसकी ओर से आश्वासन दें कि उसे शाही सेवा में ले लिया जाएगा। किन्तु मेदिनी राय नें सन्धि का प्रस्ताव अस्वीकृत कर दिया। बाबर ने एक बार फिर उसे चेतावनी दी कि वह दुर्ग को समर्पित कर दे नहीं तो उसे उसका फल भोगना पड़ेगा। परन्तु मेदिनी राय ने उसकी कोई भी बात न मानी और उसका सामना करने के लिए तैयार हो गया। वजाहत खान के तालाब से २८ जनवरी, १५२८ ई० को बाबर दुर्ग पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ और हौज़ मियानी के निकट उसने पड़ाव डाला। उसी दिन प्रातःकाल जबकि दुर्ग पर धावा बोलने की तैय्यारी पूरी हो गई थी, मीर खलीफा ने बाबर को सूचना दी कि जो सेनाएं पूर्व की ओर अफ़ग़ान विद्रोही सरदारों के विरुद्ध भेजी गईथीं, उन्हें अफ़ग़ानों ने हरा दिया है और लकनूर छोड़ने के लिए बाध्य कर दिया है तथा कन्नौज तक पीछे भगा दिया है[1]। इस समाचार से बाबर तनिक भी न घबड़ाया और उसी दिन शाम को वह शहर के अन्दर घुसा और उसने लोगों को दुर्ग के अन्दर भगा दिया। इसके पश्चात् बुधवार, ७ जमादी-उल-अव्वल, ९३४ हि०। २९ जनवरी, १५२८ ई० को उसने अपने सैनिकों से पूर्व-निर्दिष्ट स्थानों पर जाने का आदेश दिया और दुर्ग पर धावा बोल दिया गया। मुग़ल सैनिकों ने दुर्ग की दीवारों पर सीढ़ियाँ लगाई और वे चढ़ कर अन्दर पहुँच गए। दोनों ही दलों में घमासान युद्ध प्रारम्भ हुआ। मुग़लों को शक्तिशाली देख कर राजपूत स्त्रियों ने जौहर की प्रथा निभाई। तत्पश्चात् राजपूत सरदारों ने आगे बढ़ कर मुग़लों से युद्ध करना प्रारम्भ किया। एक घण्टे तक यह क्रम चलता रहा। अन्त में मुग़ल विजयी हुए। चन्देरी के उत्तर पश्चिम में राजपूतों के सिरों के एक स्तम्भ का निर्माण विजय चिन्ह के रूप में

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५९४।

करवाया गया[1]। दुर्ग को विजित करने तथा राजपूतों को मौत के घाट उतारने के पश्चात् बाबर ने मालवा के शासकों के वंशज अहमद शाह[2] के हाथों में दुर्ग सौंप दिया। चन्देरी में से ५० लाख खालसा में सम्मिलित कर लिए गए। मुल्ला अपाक को वहाँ का शिक़दार नियुक्त किया गया तथा अहमद शाह और मुल्ला अपाक की सहायता के लिए २-३ हज़ार तुर्कों और हिन्दुस्तानी सैनिक वहाँ रखे गए[3]। मेदिनी राय की दो पुत्रियाँ, जिनको कि मुग़ल सैनिकों ने बन्दी बना लिया था, हुमायूं व कामरान को प्रदान की गईं।

चन्देरी के दुर्ग को विजय करने के बाद बाबर ने ८ जमादी-उल-अव्वल, ९३४ हि० ।३० जनवरी, १५२८ ई० को वहाँ से प्रस्थान कर मल्लू ख़ान के तालाब पर पड़ाव डाला। चन्देरी की ओर बढ़ने का उसका उद्देश्य न केवल मेदिनी राय को पराजित करना ही था, वरन् रायसेन, भीलसा, तथा सारंगपुर को भी विजित करना था। यह सब स्थान इस समय सलाहुद्दीन के हाथों में थे। इन सभी स्थानों को विजय करने के बाद वह आगे बढ़ कर राणा संग्राम सिंह की राजधानी चित्तौड़ पर भी आक्रमण करना चाहता था, किन्तु पूर्वी प्रदेशों से चिन्ताजनक समाचार प्राप्त होने के कारण वह ऐसा न कर सका। उसने अपने बेगों को बुलाकर उनसे परामर्श लिया। यह तय हुआ कि अब पूर्व की ओर बढ़ कर विद्रोहियों पर आक्रमण किया जाय। अतएव, ११ जमादी-उल-अव्वल, ९३४ हि०। २ फरवरी, १५२८ को वह मल्लू ख़ान के तालाब से रवाना होकर, बुरहानपुर नदी के तट पर पहुँचा[4]।

बुरहानपुर नदी के तट पर उसने पड़ाव डाला और ९ फरवरी को मक्का ख्वाजा तथा जाफर ख्वाजा को माण्डेर से कालपी की ओर नावें लाने के लिए रवाना किया और उन्हें आदेश दिया कि वे कनार नामक घाट पर पहुँच जायें। बाबर २४ फरवरी

---

१. चन्देरी विजय की तारीख़, 'फतेह दारुल हरब' में से निकलती है। बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५९४-९५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २६७।

२. अहमद शाह, मालवा के शासक सुल्तान नासिरुद्दीन का पौत्र था।

३. फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ०, २१०; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ६०; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६८।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५९५।

को कनार घाट के किनारे पहुँचा और उसी दिन,उसने नौका द्वारा घाट पार किया। शाही सेना को घाट पार करने में चार दिन लगे, और इसी बीच बाबर को लगातार समाचार मिलते रहे कि अफ़गान सैनिकों ने मुग़लों को तितर-बितर कर दिया है, कन्नौज पर अधिकार जमा लिया तथा शम्साबाद भी अबूल मुहम्मद नेजाबाज से छीन लिया है और वे अधिक संख्या में वहाँ हैं। इन समाचारों के अनुसार बाबर ने कन्नौज की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। उसने कुछ सैनिकों को शत्रु के समाचार लाने के लिए भेजा। जब बाबर कन्नौज के निकट पहुँचा तो उसे मालूम हुआ कि समाचार लाने वालों की संख्या की अधिकता को देखकर मारूफ़ फ़ारमूली का पुत्र वहाँ से भाग खड़ा हुआ है। मुग़ल सेनाओं के आगे बढ़ने का समाचार पाकर बिबन, बायज़ीद तथा मारूफ़ ने गंगा के पूर्वी घाट पर कन्नौज के पास उनको रोकने के लिए मोर्चा स्थापित किया है। बाबर ने बृहस्पतिवार, जमादी-उस-सानी, ९३४ हि० । २७ फरवरी, १५२८ को गंगा नदी पार की और उसके पश्चिमी तट पर पड़ाव डाला। उसके कुछ सैनिक किसी तरह ३०–४० छोटी-बड़ी नौकाएं ले आए और मीर मुहम्मद को बाबर ने आदेश दिया कि वह पुल बनाने के लिए आवश्यक वस्तुओं को एकत्र करे। जिस स्थान पर शिविर था उससे २ मील के फ़ासले पर पुल बनाने के लिए स्थान चुना गया। पुल अभी तैयार भी न हो पाया था कि शत्रु को आतंकित करने के लिए उस्ताद क़ुली ने तोपों से पत्थर दाग़ने प्रारम्भ कर दिए। तोपों की गड़गड़ाहट के बीच मुग़ल सैनिकों ने नदी को पार करना प्रारंम्भ कर दिया। उनके आगे बढ़ते ही शत्रु ने पीछेहटना प्रारम्भ कर दिया। बाबर ने शीघ्र ही मलिक क़ासिम, बाबा सुल्तान और दरवेश सुल्तान को अग्रिम दल के साथ आगे भेजा कि वे शत्रु के शिविर पर आकस्मिक आक्रमण कर दे। इस मुठभेड़ में मलिक क़ासिम की मृत्यु हुई। १२ मार्च, १५२८ ई० को जब पुल बन कर तैयार हो गया तो कुछ पदाती तथा अश्वारोहियों ने पुल पार कर शत्रु पर आक्रमण किया, किन्तु युद्ध में निर्णय न हो सका कि किस पक्ष की जीत हुई है। अगले दिन बाबर अपनी सेना के मध्य, दाहिने,बायेंभागको लेकर नदी के उस पार पहुँचा और अफ़ग़ानों के विरुद्ध बढ़ा। अफ़ग़ान भी हाथियों पर सवार होकर मुग़लों की ओर बढ़े। युद्ध प्रारम्भ हुआ। अफ़ग़ानों ने मुग़ल सेना के दायें भाग को तितर-बितर कर दिया, किन्तु मुग़ल सेना का मध्य तथा बाँया भाग मैदान में डटा रहा। अन्त में इन्हीं दो भागोंने अफ़गानों को परास्त किया और भगा दिया। अनेक अफ़ग़ान बन्दी बना लिएगएऔर अन्य को मौत के घाटउतार दिया

गया। संध्या हो चुकी थी अतः बाबर ने शत्रु का पीछा न किया और वह अपने शिविर में वापस लौट आया[1]।

दूसरे दिन २३ जमादी-उस-सानी, ९३४ हि०। १५ मार्च, १५२८ को नदी के उस पार से गाड़ियाँ तथा अन्य सैनिक लाए गए और कुछ युद्ध की तैयारियाँ की गईं[2]। इससे पूर्व कि नगाड़े बजाकर युद्ध प्रारम्भ होने की घोषणा की जाय, बाबर को समाचार मिला कि शत्रु भाग खड़े हुए हैं। बाबर ने तुरन्त चीन तीमूर सुल्तान को आदेश दिया कि वह शत्रु का पीछा करे। चीन तीमूर के साथ मुहम्मदअली जंग जंग, हुसामुद्दीन अली बिन खलीफ़ा, मुहिब अली बिन खलीफ़ा, कूकी बिन बाबा कश्का, दोस्त मुहम्मद आदि भी भेजे गए। चीन तीमूर सुल्तान तथा उसके साथ भेजे गए अन्य अधिकारी इतने धीरे धीरे आगे बढ़े कि वे शत्रु को न पा सके। बाबर को यह भय हुआ कि कहीं ऐसा न हो कि अफ़ग़ान पुनः एकत्र होकर उस पर आकस्मिक आक्रमण कर दें। अतएव, चीन तीमूर सुल्तान के लिए उसने तुरन्त सहायतार्थ सेनाएं भेजीं। चीन तीमूर ने शत्रु का पीछा किया, उनका सामान छीन लिया और अनेक अफ़ग़ान परिवारों को बन्दी बना लिया[3]।

जिस समय चीन तीमूर सुल्तान अफ़ग़ानों का पीछा कर रहा था उसी समय बाबर भी पूर्वी क्षेत्रों की ओर निरन्तर बढ़ता ही रहा। शनिवार, २९ जमादी उस-सानी, ९३४ हि०। २१ मार्च, १५२८ को उसने लखनऊ की सैर की और गोमती नदी को पार कर उस पार पड़ाव डाला[4]। लखनऊ से चलकर वह उस स्थान पर पहुँचा, जहाँ कि घाघरा तथा सरजू (सारदा) नदियाँ मिलती हैं। उसने वहाँ पड़ाव डाला। बाबर ने नदी पार करने की व्यवस्था की। इसके पश्चात् क्या हुआ यह कहना कठिन है क्योंकि उसकी "आत्मकथा" में २ अप्रैल, १५२८ ई० से १७ सितम्बर, १५२८ ई० तक की किसी घटना का उल्लेख नहीं मिलता

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५९९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ०, २७०-७१।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६०१।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६०१-२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २७१-२।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६०२।

है। अरस्किन के अनुसार—वर्षा-ऋतु के प्रारम्भ में बाबर आगरा लौट गया[1]। किन्तु श्रीमती बेव्रिज का कहना है कि ६३५ हि० में बाबर ने जिन घटनाओं का उल्लेख किया है, उन्हीं विवरण का उन घटनाओं पर प्रकाश पड़ता है, जो कि पिछले ५½ महीनों में घटित हुईं[2]। वास्तव में यदि हम उन सभी घटनाओं पर दृष्टि डालें, जिनका उसने उल्लेख किया है तो ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर ने अफ़ग़ानों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ ज़ारी रखीं और पूरब तथा दक्षिण बिहार में वह उनका पीछा करता रहा। ५½ मास उसने जौनपुर, चौसा, बक्सर तथा अन्य स्थानों में व्यतीत किये और अफ़ग़ानों को पराजित किया और उन्हें बाध्य कर दिया कि वे दक्षिणी बिहार तथा बंगाल में शरण लें। लगभग इसीसमय मुहम्मद मारुफ़ने उसकीअधीनता स्वीकारकर ली और वह उसकी सेवा में आया। बाबर ने उसका स्वागत किया, सम्मानित किया तथा उसे सारन जागीर में प्रदान किया। पूर्वी प्रदेशों का प्रबन्ध करने के पश्चात् बाबर आगरा लौट गया[3]।

१८ सितम्बर, १५२८ ई० को मिर्ज़ा अस्करी मुल्तान से आया और बाबर के सामने उपस्थित हुआ। दूसरे दिन हबीब-उस-सियर का रचयिता एवं प्रसिद्ध इतिहासकार ख्वान्द मीर, मौलाना शिहाब मुअम्माई, मीर इब्राहीम क़ानूनी

---

१. अरस्किन, "हिस्ट्री आफ इण्डिया, अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ"।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६०३।

३. देखिए प्रो० हसन अस्करी का शोध-निबंध 'बिहार इन दि टाइम आफ़ बाबर एण्ड हुमायूँ', करेन्ट स्टेडीस, पटना कालेज मैगज़ीन, १९५७, पृ०, ५; प्रो० रशब्रुक विलियम्स तथा डा० राम प्रसाद त्रिपाठी का विचार है कि बाबर बक्सर तक गया और यह सोचकर कि अफ़ग़ानों की ओर से अब कोई खतरा नहीं है, वह वर्षा ऋतु के प्रारम्भ में आगरा लौट आया। उसने अगले कुछ महीने आगरा में भवन-निर्माण कराने, अपनी आत्मकथा को लिखने तथा चार बाग़ उद्यान को लगाने में व्यतीत किए—देखिए, प्रो० रशब्रुक विलियम्स "एन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १६५; डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "राइज़ एण्ड फाल आफ मुग़ल इम्पायर" पृ०, ४७; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फ़िरिश्ता" (मू० ग्रन्थ) पृ०, २१०; ब्रिग्स "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ६०-६१।

भी उसकी सेवा में उपस्थित हुए[1]। २० सितम्बर को वह धौलपुर तथा ग्वालियर की सैर करने के लिए आगरा से रवाना हुआ। दो दिन (२२–२३ सितम्बर) धौलपुर में ठहरने के पश्चात् वह ग्वालियर की ओर चल पड़ा। ग्वालियर पहुँच कर उसने राजा मान सिंह तथा विक्रमादित्य के महलों को देखा तथा उनकी सराहना एवं आलोचना की[2]। अभी वह ग्वालियर में ही ठहरा हुआ था कि वह राजस्थान की राजनैतिक गतिविधियों के सम्पर्क में आया। राणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद उसके तीन पुत्रों, रतन, विक्रम, और उदय सिंह ने मेवाड़ की गद्दी पर बैठने का दावा किया। राणा का तृतीय पुत्र रतन, जिसकी माँ जोधपुर के राजघराने की थी, तथा जो शक्तिशाली एवं वीर था, को मेवाड़ के उमराव ने गद्दी पर बैठा दिया। रतन सिंह के गद्दी पर बैठने की सूचना जब विक्रम तथा उदय को, जिनकी माँ रानी कर्मवती, बूंदी के राजघराने की थी और जो उसके साथ इस समय रणथम्भौर में थे, को मिली तो उन्होंने उसे गद्दीपर से हटाने का दृढ़ संकल्प किया। अपने भाइयों के इस व्यवहार को देख कर राणा रतन सिंह ने उनसे रणथम्भौर की जागीर छीन लेने का तथा उन्हें शक्तिहीन बनाने का निश्चय किया। उसने उनसे राणा संग्राम सिंह की वह पेटी, जो कि उनके पास थी, माँगी। राणा रतन सिंह की इस चाल से विक्रम घबड़ा गया और उसने यह सोचा कि यदि वह उसे राणा की पेटी वापस नहीं करेगा तो भी उससे उसकी जागीर छीन ली जाएगी। अतएव अपना बचाव करने के लिए तथा अपने प्रतिद्वन्दी को यह दिखाने के लिए कि वह बाबर की सहायता से अपने हितों की रक्षा करेगा, विक्रम ने अपने दूत अशोक मल को बाबर के पास भेजा। उसने अशोक मल के द्वारा बाबर के पास यह कहलवाया कि यदि वह ७० लाख दाम प्रति वर्ष उसे निजी खर्च के लिए देने को तैयार हो जाए तो वह रणथम्भौर का दुर्ग उसे समर्पित कर देगा। बाबर ने

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६०५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २७३; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "ऐन इम्पायर बिल्डर आव दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १६५।

२. विस्तृत विवरण के लिए देखिए—बाबर नामा, भाग २, पृ०, ६०८-६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २७५-७६; प्रो० रशब्रुक विलियम्स "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १६६।

विक्रम के इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और उससे दुर्गसौंप देने को कहा। एकाएक विक्रम ने अपना विचार वदल दिया और दुर्ग समर्पित करने से इन्कार कर दिया। उसने अशोक मल को पुनः वावर के पास भेजा और उससे कहलवाया कि रणथम्भौर के दुर्ग के वदले में और जो कुछ वह चाहेगा वह उसे देने के लिए तैयार होगा। इस प्रकार अशोक मल वावर से पुनः ग्वालियर में मिला और उसने वावर से कहा कि विक्रम रणथम्भौर के स्थान पर व्याना का दुर्ग उसे देने को तैयार है। वावर यह सुनकर दंग रह गया होगा, क्योंकि खनवा के युद्ध के पश्चात् ही उसने व्याना दुर्ग को जीत लिया था और मुग़लों के अधिकार में वह स्थान था। अतएव ऐसी दशा में व्याना के दुर्ग को समर्पित करने का कोई प्रश्न ही न उठता था। फिर भी, वावर ने अशोक मल से कहा कि वह रणथम्भौर के वदले उसे शम्सा-वाद देने के लिए तैयार है। वावर और अशोक मल में यह तय हुआ कि ६ दिनों के वाद, अशोक मल विक्रम के उत्तर के साथ व्याना में उससे भेंट करेगा। इसके पश्चात् वावर ने अशोकमल को ६ मुहर्रम, ६३५ हि०।२६ सितम्वर १५२८ ई०, को ख़िलअत देकर सम्मानित किया और उसे वापस जाने की अनुमति दे दी। इसके पश्चात् क्या हुआ, यह स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि विक्रम ने वावर के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं किया और न ही कोई निश्चित उत्तर दिया। अतएव वावर ने अपनी ओर से यह मामला तय करने की कोई आवश्यकता भी न समझी फिर भी वह ग्वालियर में रूक कर विक्रम के उत्तर की प्रतीक्षा करता रहा। अन्त में निराश होकर १४ अक्तूवर, १५२८ को वह आगरा वापस लौटने के लिए चल पड़ा। अगले दिन वृहस्पतिवार, ३० मुहर्रम, ६३५ हि०। १५ अक्टूवर, १५२८ को वह आगरा पहुँचा। अगले तीन दिनों में जव विक्रम की ओर से कोई भी समाचार वावर को न मिला तो उसने ५सफ़र, ६३५हि०। १६-अक्टूवर, १५२८ ई०, को मीरा के अमीर दावा के पुत्र हमूसी को विक्रम के आदमियों के साथ रणथम्भौर इस आशय से भेजा कि रणथम्भौर के दुर्ग को समर्पित करने की वात तय हो जाय। वावर ने हमूसी को विशेप रूप से यह आदेश दिया कि हिन्दू परम्परा के अनुसार वह विक्रमसे मिल कर तथा उसे समझा-वूझा कर इस मामले को तय कर दे। वास्तव में, वावर रणथम्भौर के दुर्ग को लेने के लिए इतना इच्छुक न था, जितना कि वहविक्रम कीभविष्य की योजनाओं के वारे में जानकारी प्राप्त करने का। फिर भी, हमूसी से उसने कहा कि यदि विक्रम दुर्ग को समर्पित करने के लिए तथा शम्सावाद लेने के लिए तैयार हो जाय तो वह उसे पूरा-पूरा आश्वा-

सन दे दे कि वह मेवाड़ की गद्दी पर उसे बैठाने के लिए उसकी पूरी-पूरी सहायता करेगा[1]।

वास्तव में बाबर और विक्रम में जो वार्ता हुई, उसका महत्व एक दूसरे के लिए कितना था यह कह सकना कठिन है। राणा रतन सिंह के विरुद्ध विक्रम की सहायता बाबर इस समय कर सकने में समर्थ भी था या नहीं, इसमें सन्देह है। बाबर के साथ बातचीत प्रारम्भ कर विक्रम अपने भाई रतन सिंह को यह बता देना चाहता था कि यदि वह उसे किसी प्रकार से सताने की चेष्टा करेगा, तो वह रणथम्भौर का दुर्ग बाबर को समर्पित कर देगा तथा मुग़ल सेनाओं की सहायता से चितौड़ पर भी आक्रमण कर सकता है। राणा रतन सिंह ने इस अवसर पर बड़े धैर्य से काम लिया। उसने विक्रम को शान्तिपूर्वक रणथम्भौर में रहने दिया। विक्रम भी उसके व्यवहार से सन्तुष्ट हो गया और उसने बाबर के साथ किसी प्रकार का समझौता करने की आवश्यकता न समझी। हाँ, बाबर तथा विक्रम की बातों से यह अवश्य पता चलता है कि बाबर अपने साम्राज्य की दक्षिणी-पश्चिमी रक्षा-पंक्ति की सुरक्षा तथा पश्चिमी प्रदेशों के राज परिवारों में सन्तुलन बनाए रखने के लिए राजपूत सरदारों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना चाहता था।

जब बाबर आगरा पहुँचा तो उसे साम्राज्य के पूर्वी एवं पश्चिमी प्रदेशों[2] में होने वाली राजनीतिक घटनाओं के बारे में पता चला। उसे सूचना प्राप्त हुई कि पूर्वी प्रदेशों में अफ़ग़ानों ने पुनः सिर उठाया है और मुग़लों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ प्रारम्भ कर दी हैं। बाबर ने १६ रबी-उल-अव्वल, ९३५ हि०। २ दिसम्बर, १५२८ ई० को मिर्ज़ाओं, सुल्तानों, तुर्की तथा हिन्दुस्तानी अमीरों को परामर्श लेने के हेतु बुलाया। समस्त राजनीतिक प्रश्नों पर विचार-विमर्श हुआ और अन्त में यह तय हुआ कि मिर्ज़ा अस्करी को पूर्व की ओर भेजा जाय और पूर्वी समस्या को हल किया जाय। इसी गोष्ठी में यह भी निश्चय किया गया कि गंगा नदी के उस पार के अमीर तथा सुल्तानों को भी आदेश दिया जाय कि वे

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६१२-१३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २७७-७९; २८१-८२।

१. अगले अध्याय में हुमायूँ की बदख्शाँ में तथा उज़बेगों के विरुद्ध की गई सैनिक कार्यवाहियों का उल्लेख किया गया है।

अस्करी के साथ अपनी सेनाओं को लेकर विद्रोही अफ़ग़ानों के विरुद्ध बढ़ें। इस प्रकार २२ रबी-उल-अव्वल, ९३५ हि०। ४ दिसम्बर, १५२८ को ग्यासुद्दीन कूरचीके द्वारा सुल्तान जुनैद बरलास तथा पूर्व के अन्यअमीरों के पास पत्र भेजे गए कि १६ दिनों में वे अस्करी के पास पहुँच जायँ तथा उनके पास मौखिक सन्देश भी भेजे गए कि अस्करी को बिना अस्त्र-शस्त्रों के भेजा जा रहा है, क्योंकि अफ़ग़ानों से युद्ध करने के लिए अभी तोपें आदि तैयार नहीं हुई हैं। बाबर ने अपने अफ़सरों से यह भी मालूम करने की चेष्टा की कि सुल्तान नुसरत शाह का उसके प्रति कैसा रुख है। उसने उन्हें आदेश दिया कि इस सम्बन्ध में वे उसे तुरन्त सूचित करें, ताकि वह शीघ्र से शीघ्र उस ओर चल दें[1]।

शनिवार, २९ रबी-उल-अव्वल, ९३५ हि०। १२ दिसम्बर, १५२८ ई० को बाबर ने अस्करी को उपहारों से सम्मानित किया और उसे पूर्व की ओर कूच करने की अनुमति दी[2]। कुछ कारणों से बाबर ने स्वयं आगरा में ठहरना उचित समझा। वह हुमायूँ के पास से जो कि उज़बेगों के विरुद्ध अभियान में व्यस्त था, समाचार पाने के लिए उद्विग्न था। दूसरे, वह बिलोचियों के विरुद्ध भी, जिन्होंने कि साम्राज्य पर धावे बोलना तथा आगरा और काबुल के मध्य के सम्पर्क का अवरोध करना प्रारम्भ कर दिया, सैनिक कार्यवाहियाँ करना चाहता था। तीसरे वह मुल्ला मुहम्मद मज़हब, जिसे कि उसने बंगाल के शासक नुसरत

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३७-३८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २६०-६१।

२. इस अवसर पर बाबर ने उसे एक जड़ाऊ कटार पेटी सहित, खिलअत दी, तथा उसे अलम, तोग़, नक्क़ारा, ६ से ८ तक तीपूचाक घोड़े, १० हाथी, ऊंटों, खच्चरों की एक-एक कितार, शाही असबाब प्रदान किया। इसी अवसर पर उसने अस्करी को आदेश दिया कि वह दीवान के मुख्य अधिकारी का स्थान ग्रहण करे। बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६२८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २६१।

अस्करी ने वास्तव में २० दिसम्बर को आगरा से पूर्व की ओर प्रस्थान किया—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २६६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २६६।

शाह के पास यह जानने के लिए कि मुग़लों के प्रति उसके क्या विचार हैं, के आने की प्रतीक्षा भी करना चाहता था। चौथे, किसी भी अभियान के लिए अभी सैनिक तैयारियाँ पूर्ण न थीं। इस बीच, बाबर ने २१ दिसम्बर से १४ जनवरी, १५२६ तक धौलपुर में निवास किया। धौलपुर में रहकर बाबर उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में बिलोचियों पर नियन्त्रण रखना चाहता था तथा पूर्व में होने वाली घटनाओं से भी परिचित होना चाहता था। बृहस्पतिवार, १८ रबी-उस-सानी, ६३५ हि०। ३० दिसम्बर, १५२८ ई० को ग्यासुद्दीन कूरची बंगाल से वापस आया और दूसरे दिन वह बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। इसी समय मुल्ला मुहम्मद मज़हब ने बाबर को बताया कि नुसरत शाह ने अपना राजदूत भेजकर मुग़लों के प्रति अपनी निष्ठा तथा मित्रता प्रदर्शित की है। इस बात का निश्चय करने के लिए कि ऐसी परिस्थिति में पूर्व की ओर बढ़ना उचित होगा अथवा नहीं, बाबर ने अपने अमीरों को बुलाया और उनकी राय ली। तुर्की तथा हिन्दुस्तानी अमीरों ने उसे सुझाव दिया कि पहले उसे उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ कर बिलोचियों को ठिकाने लगाना चाहिए, क्योंकि पूर्वी प्रदेश आगरा से बहुत दूर हैं, दूसरे वहाँ सेना पर व्यय करने के लिए धन भी नहीं मिल सकता और न अभियान के लिए सैनिक। अन्त में निश्चय किया गया कि धौलपुर में रुक कर पूर्वी प्रदेशों में होने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में और जानकारी प्राप्त कर ली जाय, तब निश्चिन्त होकर उत्तर-पश्चिम की ओर बढ़ा जाए। तत्पश्चात् बाबर ने ग्यासुद्दीन कूरची को पूर्वी प्रदेशों की ओर भेजा और उसके द्वारा समस्त ख़ान, अमीर, सुल्तान, जो भी गंगा नदी के उस पार थे, को सन्देश भिजवाए कि वे शीघ्र ही अस्करी से मिलकर शत्रु पर आक्रमण कर दे। ग्यासुद्दीन कूरची को बाबर ने आदेश दिया कि यह सूचना देकर वह तुरन्त वहाँ के बारे में पता लगा कर २० दिन के अन्दर-अन्दर आगरा पहुँच जावें।[1]

बाबर अभी ग्यासुद्दीन कूरची के लौटने की प्रतीक्षा ही कर रहा था कि उसे मुहम्मदी कोकल्दाश के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए कि बिलोचियों ने पुनः कुछ स्थानों पर आक्रमण कर दिया है। बाबर ने तुरन्त चीन तैमूर सुल्तान को आदेश दिया कि वह सरहिन्द व समाना के अमीरों को एकत्र कर, उनकी

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २६८।

सहायता से विलोचियों के विद्रोह को कुचल दे। चीन तैमूर सुल्तान ने आगे बढ़ कर विलोचियों पर आक्रमण कर उन्हें बुरी तरह पराजित किया।[1] १३ जनवरी, १५२९ ई० को काज़ी ज़िया तथा वीर सिंह देव, जिन्हें कि मीर खलीफ़ा ने आगरे से भेजा था, बाबर की सेवा में उपस्थित हुए। उन्होंने बाबर को बताया कि महमूद लोदी ने अपना प्रभुत्व सम्पूर्ण बिहार पर स्थापित कर दिया है, तथा वह बहुत ही शक्तिशाली हो गया है। यह सूचना पाकर बाबर ने पश्चिमी प्रदेशों की ओर बढ़ने की योजना भंग कर दी और पूर्व की ओर बढ़ने का निश्चय किया। शुक्रवार, ४ जमादी-उल-अव्वल, ९३५ हि०। १४ जनवरी, १५२९ ई० को उसने धौलपुर से प्रस्थान किया और उसी दिन सायंकाल आगरा पहुँचा। अगले दिन उसने अपने अमीरों को बुलाया, उनकी राय ली और यह निर्णय किया कि बृहस्पतिवार, १० जमादी-उल-अव्वल, ९३५ हि०। २१ जनवरी, १५२९ को वे लोग पूर्व की ओर प्रस्थान करेंगे। इसी दिन बाबर को सूचना मिली कि हुमायूँ ने अपनी सेनाएँ समरकन्द की ओर रवाना कर दी हैं।[2] इस समाचार ने उसकी चिन्ता दूर की।

हम पहले ही बता चुके हैं कि अफ़ग़ानों को बंगाल की सीमाओं तक भगा देने के पश्चात् बाबर पूर्वी क्षेत्रों से सितम्बर, १५२८ ई० में आगरा के लिए रवाना हुआ। अफ़ग़ानों के विरुद्ध इस अभियान में शेर खान ने बाबर की बहुत ही सहायता की। अतएव बाबर ने उसे सम्मानित किया और बिहार में अनेक परगने प्रदान किए। अन्य शब्दों में बाबर ने उसे उन परगनों में शक्तिशाली बना दिया। ज्यों ही बाबर वापस लौटा, शेर खान ने चून्धा के अफ़ग़ान सरदारों पर आक्रमण किया और उन्हें परास्त कर अपनी पैतृक जागीरें उनसे छीन लीं। इस समय तक सुल्तान महमूद खान नोहानी की मृत्यु हो चुकी थी, अतः वह इस स्थिति में था कि वह अपना प्रभुत्व बिहार के एक विशाल क्षेत्र में स्थापित कर और भी शक्तिशाली बन जाय। उसने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए बिहार के अल्पवयस्क सुल्तान, जलाल खान या सुल्तान जलालुद्दीन की अल्पवयस्कता का पूरा-पूरा लाभ उठाया। जलाल खान की माँ बीबी दूदू, जो कि उसकी संरक्षक

---

१. बाबरनामा, (अनु०), भाग २, पृ०, ६३८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २९९।

२. अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७०।

थी, ने शेर खान को अपने पुत्र का संरक्षक बनाकर राज्य उसके हाथों से सौंप दिया। इस प्रकार अगले कुछ महीनों में शेर खान और भी शक्तिशाली बन बैठा। उसके बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर जिलवानी तथा नोहानी सरदार तथा प्रान्तीय गवर्नर उससे जलने लगे और उन्होंने उसे शक्तिहीन बनाने का निश्चय किया। यह सभी लोग शेर खान के मुग़लों में मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों तथा मुग़लों के बिहार में बढ़ते हुए चरण को सहन न कर सके। फलस्वरूप उन्होंने मिलकर सुल्तान महमूद लोदी को, बुन्देलखण्ड में स्थित पन्ना नामक स्थान से बिहार आने का निमंत्रण दिया।[1] सुल्तान महमूद लोदी जो कि इस समय अपना समय प्रवास में व्यतीत कर रहा था, ने बिहार पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने तथा उस पर शासन करने का यह अवसर उचित समझा। यह देख कर कि नोहानियों में अब कोई शक्ति नहीं रह गई है तथा शेर खान भी बहुत शक्तिशाली नहीं है, और बंगाल का शासक नुसरत शाह बिहार के अफ़ग़ानों का हितैषी है, सुल्तान महमूद लोदी ने बिबन, बायज़ीद तथा अपने श्वसुर आज़म खान का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। अन्य अफ़ग़ान सरदारों की सहायता से उसने बिहार में प्रवेश किया तथा बिना किसी आपत्ति के शीघ्र ही बिहार पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। उसने जलाल खान तथा उसकी माँ को तथा उनके सहायकों को वहाँ से भगा कर हाजीपुर में शरण लेने के लिए बाध्य किया। अफ़ग़ानों का इस प्रकार सुल्तान महमूद लोदी का साथ देना तथा मुग़लों को हिन्दुस्तान से बाहर निकाल देने के बारे में सोचना कोई नई बात नहीं थी। उनके बढ़ते हुए प्रभाव से बाबर चिन्तित अवश्य हुआ।

---

१. लतैफ-ए-कुद्दसी के रचयिता शेख रूकनुद्दीन ने लिखा है कि जब सुल्तान महमूद लोदी बिहार में आया, एक सन्यासी जिसका नाम अनन्त कौर (गुरू) था ईसा खान के शिविर में आया और उसने उसे बताया कि तीलह के जोगी बालानाथ ने बाबर की सहायता की थी और इस समय वह अफ़ग़ानों की सहायता करना चाहता है। ईसा खान उस जोगी को सुल्तान महमूद के पास ले गया किन्तु किसी ने उसकी बात पर ध्यान न दिया.......कुछ समय बाद वह जोगी मुग़लों के हाथ में पड़ गया, जिन्होंने उसे मार डाला—डा० नूरूल हसन का शोध-निबन्ध, 'लतैफ-ए-कुद्दसी' (ए कन्टेम्प्रेरी अफगान सोर्स) मेडिवल इण्डिया क्वाटरली (अलीगढ़) जुलाई १९५०, पृ०, ५३।

वृहस्पतिवार, १० जमादि-उल-अव्वल, ९३५ हि०। २० जनवरी, १५२९ ई० को बाबर आगरे से पूर्व को रवाना हुआ।[1] उसके आगे बढ़ने की गति बहुत मन्द रही, क्योंकि मार्ग में वह राजदूतों का स्वागत करता हुआ, काबुल में अपने अफ़सरों से पत्र-व्यवहार करता हुआ, तथा राज्य के अधिकधिक मामलों को निपटाते हुए आगे बढ़ा।[2] जेलसर, अनवर, आबापुर, रापरी, कालपी, आदमपुर आदि[3] स्थानों को पार करता हुआ बाबर करीह के दुगदुगी नामक परगने में शनिवार, १७ जमादी-उस-सानी, ९३५ हि०। २६ फरवरी, १५२९ को पहुँचा।[4] दूसरे दिन मुहम्मद सुल्तान मुहम्मद, नीख़ूब सुल्तान तथा तारदिका उसकी सेवा में उपस्थित हुए। अगले दिन सोमवार, १९ जमादी-उस-सानी, ९३५ हि०। २८ फरवरी, १५२९ ई० को अस्करी भी उसकी सेवा में उपस्थित हुआ।[5] बाबर ने उसे आदेश दिया कि वह अपनी सेनाओं के साथ नदी के दूसरे तट से उसकी सेना के सामने यात्रा करे और जिस स्थान पर वह शिविर लगाए उसी के सामने दूसरे तट पर वह अपने शिविर लगा दे। इसी स्थान पर बाबर को सूचना प्राप्त हुई कि सुल्तान महमूद लोदी ने १०,००० अफ़ग़ान एकत्र कर लिए हैं, और उसने मुग़ल सेनाओं पर तीन ओर से आक्रमण करने का प्रबन्ध कर लिया है।[6] उसने शैख़ बायज़ीद तथा बिब्बन को एक विशाल सेना के साथ

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६४०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३०० ।

२. प्रो० रशब्रुक विलियम्स "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १६८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (ब़ाबर), पृ०, ३००-३०४; बाबर नामा, (अनु०), भाग २, पृ०, ६५१ ।

३. जलेसर, अनवर, चन्दवार, फतेहपुर, रापरी, इटावा, जुमनन्दना, कालपी, आदमपुर, होता हुआ बाबर करीह के दूगदुगी नामक परगने में पहुँचा।

४. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६४०-५१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३०९ ।

५. बाबर नामा, (अनु०), भाग २, पृ०, ६५१; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७१ ।

६. बाबर नामा, (अनु०), भाग २, पृ०, ६५१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३०९ ।

सरवर (गोरखपुर) की ओर भेज दिया है और स्वयं वह फ़तह खान सरवानी के साथ गंगा के किनारे-किनारे चुनार की ओर बढ़ रहा है।[1] शेर खान, जो कि मुगलों के साथ था, उनका साथ छोड़ कर अफ़ग़ानों से मिल गया है और उसने गंगा नदी को पार कर लिया है तथा वह बनारस की ओर अब बढ़ रहा है।[2] कुछ ही समय पश्चात् बाबर को सूचना मिली कि शेर खाँ ने सुल्तान जलालुद्दीन शर्की तथा उसके अफ़सरों को बनारस से भगा दिया है और बनारस को अपने हाथों में ले लिया है तथा वह स्वयं सुल्तान महमूद से युद्ध करने के लिए नदी के किनारे-किनारे जा रहा है।[3] शत्रु की गतिविधियों पर ध्यान देते हुए तथा उनकी योजना को देखकर बाबर ने सतर्कतापूर्वक आगे बढ़ने का निश्चय किया। बाबर तथा अस्करी की सेनाएँ नदी के दोनों तटों पर साथ-साथ बढ़ रही थीं। मंगलवार, २० जमादी-उस-सानी, ६३५ हि०। १ मार्च, १५२६ ई० को दुगदुगी से चलकर वह कड़ा पहुँचा, जहाँ कि अगले तीन-चार दिनों तक सुल्तान जलालुद्दीन शर्की ने उसका आतिथ्य सत्कार किया। कड़ा में रुक कर बाबर ने शत्रु के बारे में जानकारी प्राप्त की। शनिवार, २४ जमादी-उस-सानी, ६३५ हि०। ५ मार्च, १५२६ ई०; को सुल्तान मुहम्मद बख्शी ने उसे सूचित किया कि सुल्तान महमूद लोदी की सेनाओं ने पहले चुनार पर आक्रमण किया, किन्तु दुर्ग को जीतने में उन्हें तनिक भी सफलता नहीं मिली और उसकी सेना तितर-बितर हो गई है।[4] सुल्तान मुहम्मद बख्शी ने बाबर को यह भी बताया कि जिस समय अफगान बनारस के निकट गंगा नदी को पार कर रहे थे, उनकी अनेक नौकाएँ डूब गई और बहुत से आदमी भी डूब गए।[5]

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६५२।
२. वही।
३. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ० ६५२।
४. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६५३; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३११, इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८२।
५. बाबरनामा (अनु०), भाग२, पृ०६५२, रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३११; इस अभियान के बारे में वर्णन देते हुए, लतफ़-ए-कुद्दसी के रचयिता शैख़ रूकनुद्दीन ने लिखा है कि मुगलों के आने की खबर पाकर अफ़ग़ान पस्त हो गए और जहाँ चाहते थे, भागने लगे। सरवानी अफ़ग़ान बाबर से मिल

कड़ा से चलकर बाबर प्रयाग पहुँचा[1] और वहाँ से चुनार।[2] जब वह बनारस के निकट पहुँचा तो उसे ज्ञात हुआ कि सुल्तान महमूद लोदी सोन नदी के किनारे पर है। अतएव बाबर ने उस ओर शीघ्रातिशीघ्र बढ़ना प्रारम्भ किया। बुधवार, २० रजब, ९३५ हि०। ३० मार्च, १५२९ ई० को वह गाज़ीपुर पहुँचा और दूसरे दिन महमूद ख़ान नूहानी उसकी सेना में उपस्थित हुआ तथा उसने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली। उसी दिन बाबर को जलाल ख़ान नूहानी, फ़रीद ख़ान, आलम ख़ान सूर और शेर ख़ान के प्रार्थना-पत्र प्राप्त हुए।[3] किन्तु अनेक अन्य अफ़ग़ान सरदारों ने जो कि गंगा तथा घाघरा नदी के मध्य बलिया में खरिद नामक स्थान पर थे, अपने-अपने स्थानों पर मुगलों के विरुद्ध डटा रहना उचित समझा। इन प्रार्थना-पत्रों का बाबर के मस्तिष्क पर क्या प्रभाव

गए। कुछ समय पश्चात् सुल्तान महमूद लोदी सामने आया और उसके आने से अफ़ग़ान प्रोत्साहित हुए। वे उसकी पताका के नीचे एकत्र हुए और उन्होंने बाबर के विरुद्ध युद्ध करने का निश्चय किया। बिहार से वे बनारस की ओर बढ़े। दोनों सेनाओं के बीच में गंगा नदी बहती थी। अफ़ग़ान युद्ध के परिणाम के बारे में बहुत अधिक चिन्तित थे। उसी दिन रात में शेख़ रूकुनुद्दीन ने शैख अब्दुल कुद्दूस को स्वप्न में देखा। उन्होंने शैख़ रूकुनुद्दीन को बताया कि यद्यपि अफ़ग़ान बहुत ही बड़ी संख्या में युद्ध के लिए एकत्र हुए हैं, फिर भी उनमें स्वार्थपन भरा हुआ है, जिसको कि वे नहीं जानते हैं। बाबर बादशाह की विजय होगी। दूसरे दिन शैख़ रूकुनुद्दीन ने इस स्वप्न के बारे में ईसा ख़ान को बताया। तत्पश्चात् अफ़ग़ान बिहार की ओर भाग खड़े हुए और तितर-बितर हो गए। सुल्तान महमूद लोदी भी बिहार भाग गया। अनेक सरवानी तथा अन्य अफ़ग़ान भाग कर बालापथ पहुँचे जहाँ बीर सिंह देव ने उन्हें अनेक गाँव जागीर में प्रदान किए। देखिए, डा० नूरूल हसन का शोध निबन्ध "लतैफ-ए-कुद्दूसी" (ए कन्टेम्प्रेरी अफ़ग़ान सोर्स,) मेडिविल इण्डिया क्वाटरली, अलीगढ़, १९५०, पृ०, ५३।

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६५४।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६५४-५७।

३. बाबर नामा, (अनु०), भाग २, पृ०, ६५७; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३१५।

पड़ा यह कहना कठिन है, किन्तु इन पत्रों की तनिक भी चिन्ता न करते हुए तथा बिना किसी भी अफ़ग़ान सरदार को उसके पत्र का उत्तर देते हुए, बाबर आगे बढ़ता चला गया। उसके आगे बढ़ने का समाचार पाते ही, अफ़ग़ान सरदारों ने बंगाल की ओर भागना प्रारम्भ किया और बंगाल की सीमाओं पर पहुँच कर उन्होंने सुल्तान नुसरत शाह से मुग़लों के विरुद्ध सहायता भेजने की बातचीत प्रारम्भ की। इससे पूर्व कि बंगाल का शासक नुसरत शाह इन अफ़ग़ानों को किसी प्रकार से सहायता देता, बाबर तब तक आगे बढ़ा जब तक कि वह उस स्थान पर नहीं पहुँच गया, जहाँ गंगा नदी कर्मनासा से मिलती है। २२ रजब, ९३७ हि०। १ अप्रैल, १५२९ ई० को मुग़ल सेना ने चौसा से आगे पड़ाव डाला और तीन दिन पश्चात् बाबर बक्सर पहुँचा (४ अप्रैल, १५२९ ई०)। अगले दिन बाबर ने क़ासिम बिर्दी, हैदरअली रिक़ाबदार के पुत्र मुहम्मद अली, और बाबा शैख़ को २०० आदमियों के साथ शत्रु के बारे में समाचार लाने के लिए भेजा।[2]

इसी बीच बाबर बंगाल के शासक नुसरत शाह के सम्पर्क में भी रहा। उसने नुसरत शाह के राजदूत से जो कि इस समय उसीके साथ था, वे बातें मालूम कर लीं, जिनकी उसे अत्यन्त आवश्यकता थी। उस राजदूत के द्वारा बाबर ने सुल्तान नुसरत शाह के सामने सन्धि की कुछ शर्तें रखीं। यदि उसकी आत्मकथा का वह पृष्ठ जिस पर कि इन शर्तों का बाबर ने संभवतः उल्लेख किया, नष्ट न हो गया होता, तो हमें उन शर्तों के बारे में भी पूरी जानकारी प्राप्त हो जाती। कुछ भी हो हम घटनाओं के आधार पर जो बाद में घटित हुईं, कम से कम इतना निष्कर्ष तो निकाल ही सकते हैं कि बाबर नुसरत शाह के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बनाए रखना चाहता था और वह यह जानना चाहता था कि उसका मुग़लों तथा अफ़ग़ानों के प्रति कैसा दृष्टिकोण है। कुछ समय तक बाबर न तो सुल्तान की योजनाओं के विषय में ही भलीभाँति जानकारी प्राप्त कर सका और न ही उसकी ओर से कोई उत्तर ही मिला कि वह सन्धि की शर्तों को स्वीकार करेगा अथवा नहीं कुछ दिन ही बीते होंगे कि उसे बिहार के शैख़ ज़ादों से पता चला कि अफ़ग़ान अपनी सैनिक चौकियों से भाग खड़े हुए हैं, और इधर-उधर चले गए हैं। यह सुनकर बाबर ने मुहम्मद अली जंगजंग के पुत्र तारदी मुहम्मद के साथ २००० सैनिकों को बिहार की ओर

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३१७; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८३।

भेजा तथा बिहार की जनता के लिए पत्र भी भेजे कि वे लोग मुग़लों का साथ दें (बृहस्पतिवार, २८ रजब, ६३५ हि० । ७ अप्रैल, १५२६ ई०)।[1] इसी समय बाबर ने ख्वाजा मुर्शीद इराक़ी को बिहार का दीवान नियुक्त किया और उसे भी तार्दी मुहम्मद के साथ भेजा कि वह उसकी सहायता से मुग़लों का प्रभुत्व बिहार पर स्थापित कर दे। बाबर को यह विश्वास हो गया था कि अब अफ़ग़ान आगे बढ़ कर उसका मुकाबला न करेंगे और शान्तिपूर्वक उसका प्रभुत्व बिहार पर स्थापित हो जाएगा। किन्तु उसे यह सुन कर आश्चर्य हुआ कि हाजीपुर के गवर्नर मखदूमे आलम के नेतृत्व में बंगाल की सेनाएँ मुग़लों के विरुद्ध बढ़ रही हैं। सुल्तान नुसरत शाह तथा बिहार के अफ़ग़ान सरदारों के विरोध के कारण अब बाबर को नई चाल चलनी पड़ी। उसने मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को एक शाही सरोपा, एक तलवार तथा पेटी, एक तीपूचाक घोड़ा तथा छत्र प्रदान किया और उसे बिहार का गवर्नर नियुक्त किया तथा बिहार की मालगुज़ारी में से १ करोड़ २५ लाख दाम शाही खज़ाने के लिए सुरक्षित कर दिए गए।[2] वह अपने शत्रुओं को यह दिखा देना चाहता था कि पूर्वी समस्या को सुलझाने के लिए वह कुछ भी कर सकता है। तत्पश्चात् उसने बृहस्पतिवार, ६ शाबान, ६३५ हि० । १४ अप्रैल, १५२६ ई० को बक्सर से आगे बढ़ने के लिए प्रबन्ध करना प्रारम्भ किया।

अभी बाबर नौकाओं को एकत्र करने में ही व्यस्त था कि १५ अप्रैल, १५२६ ई० को बंगाल की सेना में से दो गुप्तचरों ने उसके पास आकर उसे बताया कि मख्दूमे आलम के अधीन बंगाली सैनिकों को गंडक नदी के किनारे २४ स्थानों पर नियुक्त कर दिया गया है और वे बंगाल राज्य की प्रतिरक्षा का प्रबन्ध कर रहे हैं। अनेक अफ़ग़ान सरदार, जो कि अपने परिवारों के साथ नदी को पार करने के ध्येय से उस ओर बढ़े थे, वे सब बंगाल के सैनिकों से मिल गए हैं। इस सूचना ने बाबर को चौकन्ना कर दिया, और उसे यह सन्देह हुआ कि हाजीपुर का गवर्नर मख्दूमे आलम मुग़लों से युद्ध करने की तैयारी कर रहा है अतएव उसने मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को बिहार जाने से रोक लिया और शाह सिकंदर को ३००–४००

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३१७।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६१-६३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३१८।

आदमियों के साथ विहार की ओर भेजा।[1] अव तक वावर को यह आशा थी कि पूर्वी प्रदेश के शासकों से उसका समझौता शान्तिपूर्ण ढंग से हो जाएगा। इसीलिए न उसने अफ़ग़ानों को और न हाजीपुर के गवर्नर मख्दूमे आलम को युद्ध प्रारम्भ करने के लिए उकसाया।

शनिवार, ८ शावान, ९३५ हि० । १६ अप्रैल, १५२९ ई० को दूदू तथा उसके पुत्र जलाल खाँ का एक आदमी वावर के पास आया और उसने वावर को वताया कि सुल्तान नुसरत शाह उनके विरुद्ध हो गया है तथा उसके सैनिकों से किसी प्रकार से युद्ध करके वे उसके चंगुल से निकल आये हैं, और अव वे उसकी अधीनता स्वीकार करने को तैयार हैं।[2] यह सुनकर वावर प्रोत्साहित हुआ और उसने उसी दिन सुल्तान नुसरत शाह के राजदूत इस्माइल मीता पर प्रभाव डाला कि वह अपने स्वामी को लिखे कि वह शीघ्र ही उन तीन शर्तों को स्वीकार कर ले और पिछले पत्रों का उत्तर शीघ्र भेजे तथा अपनी सेनाओं को पीछे हटा ले। वावर ने अपनी ओर से उसे आश्वासन भी दिया कि वंगालियों को किसी प्रकार की हानि न पहुँचाई जाएगी।[3] वावर ने एक वार फिर अपनी कूटनीति का आश्रय लेकर संघर्ष को रोकना चाहा। १८ अप्रैल को उसने फिर इस्माइल मीता से स्पष्ट शब्दों में कहा कि यद्यपि मेरी सेनाएँ अफ़ग़ान सरदारों को दवाने के लिए इधर-उधर कूच करती रहेंगी किन्तु किसी भी प्रकार से वंगालियों को कोई भी हानि नहीं पहुँचाएगा। उसने उससे यह भी कहा कि मेरी तीन शर्तों में से एक यह थी कि जव मुग़ल सेनाएँ अफ़ग़ानों का पीछा करने के लिए आगे वढ़ेंगी तो वंगाली सैनिक खारिद से पीछे हट जावेंगे और मुग़ल सैनिकों की यात्रा के लिए मार्ग साफ छोड़ देंगे। वावर ने इस्माइल मीता द्वारा सुल्तान के पास यह सन्देश भेजा कि यदि इस शर्त का पालन शीघ्र न किया गया तो यदि वंगाली सैनिकों को कोई हानि पहुँचेगी, तो वह उसके लिए तनिक भी उत्तरदायी न होगा। तत्पश्चात् वावर ने इस्माइल मीता

---

१. वावर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६४; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ३१९।

२. वावर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६४; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर) पृ०, ३१९; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८३।

३. वावर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६५; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८४।

को उपहार में एक खिलअत प्रदान की और उसे इनाम देकर विदा किया। बाबर ने उससे शीघ्र ही वापस आने के लिए कहा। इस बीच २५ अप्रैल को बाबर ने मीर खलीफा तथा अन्य अमीरों को यह पता लगाने के लिए भेजा कि गंगा नदी कहाँ पार की जा सकती है। अगले कुछ दिनों तक वह इस्माइल मीता के लौटने की प्रतीक्षा करता रहा और जब वह न आया तो उसे विश्वास हो गया कि सुल्तान नुसरत शाह अफ़ग़ानों को सहायता दे रहा है। अतएव उसने गंगा नदी को पार कर आगे बढ़ने का निश्चय किया।

बाबर ने बुधवार, १६ शाबान, ६३५ हि० : २७ अप्रैल, १५२६ ई० को मीर खलीफ़ा को पुन: गंगा तथा घाघरा नदी के मध्य पड़ाव डालने के स्थान को देखने के लिए भेजा। उसी दिन वह स्वयं दक्षिण की ओर बढ़ा और उसने आरा में, उस प्रदेश की भौगोलिक दशा की जानकारी प्राप्त करने के विचार से, प्रवेश किया। वह मनेर तक आगे बढ़ा। मनेर से लेकर सोन, तक के फासले, जो कि करीब १ १ मील है, को नाप कर, वह अपने शिविर को वापस लौट गया।[1] दूसरे दिन जुनैद बरलास अपने साथ २०,००० आदमियों को लेकर जौनपुर से बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। अब बाबर को किसी प्रकार की चिन्ता न रही। वह स्वतंत्र रूप से किसी भी शक्ति से टक्कर ले सकता था। अतएव उसने अपने अमीरों को बुलाकर गंगा पार करने के सम्बन्ध में उनकी राय ली। यह निश्चय हुआ कि वे मुग़ल तोपखाने के संरक्षण में गंगा को पार करेंगे।

बाबर शत्रु पर आक्रमण करने के लिए एक योजना के अन्तर्गत बढ़ रहा था। इस योजना को बनाते समय उसने समय तथा अपने सीमित साधनों दोनों का ही ध्यान रखा। किन्तु दूसरी ओर अफ़ग़ानों के पास युद्ध करने के लिए न तो साधन थे और न ही उनकी कोई योजना। यहाँ तक कि हाजीपुर के गवर्नर मख्दूमे आलम ने भी अफ़ग़ानों की कोई सहायता न की। वह लगातार गंगा तथा गन्डक नदी के संगम पर पडाव डाले पडा रहा, क्योंकि उसकी नीति रक्षात्मक थी। बंगाल राज्य की सीमाओं की सुरक्षा के लिए उसने गंगा नदी के किनारे-किनारे सैनिक चौकियाँ बिठा दीं, ताकि मुग़ल सैनिक बंगाल राज्य में प्रवेश न कर सकें और न ही अफग़ान। प्रतिरक्षा के हेतु उसने एक सेना खारिद में तैनात की। इस सेना की सहायता के

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६६८; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२२; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८३।

लिए गंगा नदी में बड़ी-बड़ी नौकाएँ रखी गई थीं। खारिद के हाथ से निकल जाने के पश्चात् भी तथा सुल्तान महमूद लोदी के सोन नदी से पीछे हटने पर भी, अथवा बाबर की सेनाओं के आगे बढ़ने से, उसके प्रबन्ध पर कोई प्रभाव न पड़ता था। कुछ भी हो, मख्दूमे आलम की आँखें निरन्तर बाबर की सैनिक गतिविधियों पर लगी रहीं सम्भवतः इस आशा में कि बंगाल की सेना की पूरी-पूरी सहायता उन्हें मिलेगी, बिबन और बायज़ीद ने घाघरा नदी के उत्तरी तट पर अपना मोर्चा जमाया। यह कहना कठिन है कि इन दो अफ़ग़ान नेताओं ने मख्दूमे आलम से परामर्श लेकर ही घाघरा नदी के उत्तरी तट पर अपना मोर्चा स्थापित किया था, अथवा अपने आप ही ऐसा किया था।

अपनी योजना के अनुसार बाबर ने अफ़ग़ान तथा बंगाल की संयुक्त सेनाओं पर एक साथ आक्रमण करने का प्रबन्ध किया। उसकी सेना के छः चमुओं को गंगा नदी के दक्षिणी ओर से शाहाबाद तथा उत्तर में घाघरा नदी को सारन से पार करना था। मुख्य सेना के चार चमू जिसमें कि जौनपुर के २०,००० सैनिक भी सम्मिलित थे, इस समय गंगा नदी के उत्तरी तट पर पड़ाव डाले हुए पड़े थे। तीन चमू, सुल्तान जलालुद्दीन शर्क़ी, क़ासिम हुसैन सुल्तान, बी खूब सुल्तान, तुंग अलमिश तथा अन्य व्यक्तियों के अधीन, तथा मूसा सुल्तान और सुल्तान जुनैद बरलास तथा अस्करी के अधीन थे। चारों चमुओं का नेतृत्व अस्करी को नाममात्र के लिए दिया गया। मुख्य सेना के इन चारों चमुओं को आदेश दिया गया कि बलिया में स्थित हल्दी नामक घाट की ओर बढ़ें।[१] बाबर के आदेशानुसार उस्ताद अली क़ुली को गंगा तथा सरयू नदी के मध्य के ऊँचे स्थान पर तोपें तथा बन्दूक चलाने वालों को ले जाने तथा उस स्थान से शत्रु को युद्ध करने के लिए उकसाने का आदेश दिया गया। इसी प्रकार मुस्तफ़ा को आदेश दिया गया कि वह भी अपने साथ बहुत से बन्दूक चलाने वालों को तथा तोपों को लेकर उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ कि दोनों नदियाँ मिलती हैं, और उस स्थान पर शत्रु से युद्ध करने के लिए तैयार रहे। इस प्रणाली का मुख्य लक्ष्य बंगालियों को युद्ध प्रारम्भ करने के लिए उकसाना तथा उस समय तक युद्ध में उन्हें व्यस्त रखना था, जब तक गंगा नदी के उस पार से तथा उस स्थान के नीचे से जहाँ कि दोनों नदियाँ मिलती

---

१. बाबरनामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६६६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२३।

हैं, न आ जायें। मुग़ल सेना के पाँचवें चमू का नेतृत्व बाबर स्वयं कर रहा था। उसे उस्ताद अली की तोपों की गड़गड़ाहट के बीच शत्रु का सामना करते हुए गंगा नदी को पार करना था। इसी प्रकार छठे चमू को जिसका नेतृत्व मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा कर रहा था, मुस्तफ़ा की सहायता से उसे बिहार की ओर से बढ़ना था तथा गंगा पार कर मुग़ल सेना के अन्य चमुओं की सहायता करना था।

मुग़ल सेना ने रविवार, २२ शाबान, ६३५ हि०। १ मई, १५२८ ई० को प्रातःकाल से गंगा नदी को पार करना प्रारम्भ किया। अगले कुछ दिनों तक वे नदी को पार करने में लगे रहे। ३ मई को बाबर के सैनिकों ने शत्रु की कुछ नौकाएँ तोप से उड़ा दी और अगले दिन गंगा तथा सरयू नदी को पार कर वे शत्रु पर आक्रमण करने के लिए आगे बढ़े। मुस्तफ़ा तथा उस्ताद अली क़ुली अपनी तोपें को चलाने में व्यस्त रहे। इस प्रकार मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा भी आगे बढ़ा। जब बंगालियों ने कुछ नौकाओं में बैठकर नदी को पार करने की चेष्टा की तो मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा ने उन पर आक्रमण कर उन्हें तितर-बितर कर दिया। अगले दिन ५ मई को बिना किसी योजना के अन्तर्गत बंगाली सैनिक मुग़लों से युद्ध करते रहे। मुग़लों ने उनकी बहुत सी नौकाएँ छीन लीं, कुछ नौकाओं को डुबा दिया और उन्हें पराजित कर भगा दिया। अभी जगह-जगह दोनों दलों में चुटपुट युद्ध चल ही रहे थे कि बाबर तथा अस्करी और मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा ने पूर्व निर्देशित स्थानों पर नदी पार कर ली और शत्रु से युद्ध करना प्रारम्भ किया। अन्त में घमासान युद्ध करने के पश्चात् पराजित होकर बंगाली सैनिक भाग खड़े हुए।[1] बाबर ने यह तीसरा युद्ध हिन्दुस्तान में लड़ा जिसमें वह विजयी हुआ किन्तु यह युद्ध अन्य दो युद्धों से भिन्न था। मध्य युग के इतिहास में यह प्रथम युद्ध था जो कि जल और थल दोनों पर ही लड़ा गया। विपक्षी दलों ने अश्वारोहियों तथा नौकाओं दोनों का प्रयोग किया किन्तु मुग़ल तोपों के सामने अफ़ग़ान सरदार तथा बंगाली सैनिक दोनों ही न ठहर सके। बाबर के सामने से वह भय जो कि सदैव उसे चिन्तित किए हुए था, समाप्त हो गया और उसे ऐसे शत्रु से छुटकारा मिला जो कि बंगाल के शासक नुसरत शाह के बल पर लड़ रहा था और मुग़लों को आतंकित किए हुए था।

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६७०-६७६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३२४-२७; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८४-८६।

युद्ध समाप्त होने के पश्चात् बाबर ने कून्दबह[1] नामक स्थान पर पड़ाव डाला। रविवार, २९ शाबान, ९३५ हि० । ८ मई, १५२९ को उसने कूकी को कुछ लोगों के साथ समाचार लाने के लिए हाजीपुर भेजा। कून्दबह में ठहर कर बाबर ने कुछ महत्वपूर्ण कार्य किए क्योंकि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य पूरा हो चुका था। जैसे ही यह सूचना मिली कि बिबन, बायज़ीद तथा सुल्तान महमूद लोदी पश्चिम की ओर भाग खड़े हुए हैं, तथा घाघरा नदी को पार कर लकनूर के दुर्ग का अवरोध कर रहे हैं, बाबर ने तुरन्त हिन्दुस्तानी और तुर्की अमीरों को जैसे, जलालुद्दीन शर्क़ी, अली खान फारमूली, तारदिका, ब्याना का निज़ाम खान, तुलमिश औजबेग, चिर्क का कुरबान तथा दरिया खान को उनके विरूद्ध रवाना किया।[2] बंगाल के शासक नुसरत शाह ने यह सोचकर कि छिप कर मुग़ल सम्राट का विरोध करना उचित नहीं है और उसका विरोध करना व्यर्थ है, उससे सन्धि करना उचित समझा। किन्तु इससे पूर्व कि वह ऐसा करे, वह यह देखना चाहता था कि अफ़-ग़ान सरदारों का क्या रुख है और वे क्या कर रहे हैं। मारुफ़ का पुत्र शाह मुहम्मद पहला अफग़ान सरदार था, जो कि मुग़ल सम्राट बाबर की आधीनता स्वीकार करने के लिए युद्ध के तुरन्त बाद ही, उपस्थित हुआ।[3] उसके पश्चात् सोमवार, ८ रमज़ान, ९३५ हि० । १६ मई, १५२९ ई० को दरिया खान का पौत्र जलाल खान अपने विश्वस्त अमीरों के साथ बाबर की सेवा में उपस्थित हुआ। इसी समय यहिया खान नोहानी ने अपने भाई को भेज कर आज्ञाकारिता प्रदर्शित की। बाबर ने उसकी सेवाएं स्वीकार कीं। तत्पश्चात् ७,०००–८,००० नोहानी अफ़ग़ानों ने बाबर की आधीनता स्वीकार की।[4] नोहानी अफगानों के इस व्यवहार से सन्तुष्ट

---

१. सम्भवतः खारिद तथा घाघरा के तट पर स्थित।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३३०।

३. पिछले वर्ष बाबर ने उसके प्रति कृपा दृष्टि प्रदर्शित की थी और उसे सारन की विलायत प्रदान की थी। इस युद्ध में भी उसने अपने पिता के विरुद्ध बाबर का साथ दिया—बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६७५; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३२७-२८।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२९।

होकर उसने विहार नोहानी सरदारों को वापस कर दिया। वह लिखता है कि; "क्योंकि नोहानी अफ़ग़ान आशा लेकर आए थे अतः उन्हें निराश न करने की दृष्टि से विहार को एक करोड़ का खालसा बनाकर मैंने ५० लाख महमूद खान नोहानी को प्रदान कर दिया।" विहार की शेष मालगुज़ारी उपरोक्त जलाल खान को प्रदान कर दी गई। उसने एक करोड़ राजकर के रूप में देना स्वीकार किया।[1] इस प्रकार विहार की व्यवस्था करने के पश्चात् बाबर ने मुल्ला ग़ुलाम यसावल को वहाँ से राजकर वसूल करने के लिए भेजा।[2] इसी समय बाबर ने जौनपुर के शासन का प्रबन्ध भी किया। उसने सुल्तान जुनैद बरलास के स्थान पर मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को जौनपुर की विलायत प्रदान की। उपरोक्त विवरण से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि विहार के नोहानी राज्य को बिना अपने साम्राज्य से मिलाए हुए उस पर अपनी प्रभुसत्ता स्थापित कर दी।[3]

विहार की शासन व्यवस्था उसने १६ मई, १५२६ ई० को पूर्ण की और तीन दिन पश्चात् (बृहस्पतिवार, ११ रमजान, ९३५ हि०। १९ मई, १५२९ ई०) को ग़ुलाम अली नामक मीर खलीफ़ा का एक सेवक मुंगेर के शाहज़ादा अबुल फतह के साथ, शाहज़ादा तथा उसके वज़ीर हुसैन खान लसकर के पत्र खलीफ़ा के नाम लेकर आया। उन पत्रों में उन तीन शर्तों को स्वीकार करते हुए बंगाल के शासक नुसरत शाह की ओर से पूर्ण रूप में आश्वासन दिलाते हुए सन्धि की प्रार्थना की गई थी। अपने राज्य की पूर्वी सीमाओं को सुरक्षित रखने के लिए बंगाल के शासक के साथ उसके लिए बहुत ही आवश्यक था। बाबर इसी अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था, क्योंकि उसके राज्य के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों में बिलोचियों ने सिर उठा लिया था, बिबन तथा बायज़ीद, अपनी विद्रोही कार्य-वाहियों में लगे थे, और वर्षा ऋतु भी निकट आ रही थी। बंगाल के शासक नुसरत

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२९।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६।
३. डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "मुग़ल साम्राज्य का उत्थान और पतन", पृ०, ५१।
४. बाबर ने स्वयं इस सम्बन्ध में लिखा, "क्योंकि इस अभियान का उद्देश्य विद्रोही अफ़ग़ानों का दमन करना था जिनमें से कुछ तो नष्ट हो गए थे, कुछ ने अधीनता स्वीकार कर ली थी, और शेष थोड़े से बंगाली पर अवलम्बित हो

शाह से सन्धि करने का परिणाम यह हुआ कि दो दिन पश्चात् अनेक अफ़ग़ान सरदार, जैसे इस्माइल जिलवानी, अबुल खान नोहानी, औलिया खान इश्राकी आदि बाबर की सेवा में उपस्थित हुए। पूर्वी प्रदेशों में दो प्रादेशिक शक्तियों में सन्तुलन स्थापित करने के पश्चात् तथा अफ़ग़ानों के विद्रोह को दबाने के पश्चात् बाबर ने बिबन तथा बायज़ीद के विद्रोह को कुचलने का विचार किया।[1]

बिहार से वापस लौटने से पूर्व बाबर ने मारूफ़ फारमूली के पुत्र शाह मुहम्मद को एक खिलअत तथा तीपूचक घोड़ा प्रदान किया और उसे अपनी वजह में जाने की अनुमति प्रदान की। तुर्की तीरन्दाजों को रखने के लिए बाबर ने उसे सारन तथा कुन्दला की मालगुज़ारी भत्ते के रूप में प्रदान की। उसी दिन बाबर ने इस्माइल जिलवानी को सरवर की मालगुज़ारी में से ७२लाख दाम तथा एक तीपूचक घोड़ा प्रदान किया और उसे भी अपने वजह में जाने की अनुमति प्रदान की।[2] इसके पश्चात् बाबर ने अपनी वापसी यात्रा प्रारम्भ की। २३ मई, १५२९ ई० को वह कुन्दह से रवाना हुआ और छपरा चतुरमुखी घाट से सरयू नदी के किनारे-किनारे होते हुए बाबर ने आज़मगढ़ ज़िले में नाथपुर नामक गाँव के निकट किलरिह नामक स्थान पर पड़ाव डाला।[3]

नाथपुर में बाबर के सामने मीरखलीफ़ा ने शाह मुहम्मद दीवान के पुत्र को जो कि बाक़ी के पास से आया था उपस्थित किया। आगन्तुक ने बताया कि शनिवार, १३ रमज़ान, ९३५ हि०। २१ मई, १५२९ई० को मीर बाक़ी के अधीन मुग़ल सेनाओं ने बिबन तथा बायजीद से, जिन्होंने इस बीच लकनूर का दुर्ग हस्तगत कर लिया

चुके थे, जिनका उत्तरदायित्व उसने ले लिया था, और वर्षा भी निकट आ चुकी थी, अतः हमने उपर्युक्त शर्तों पर सन्धि करना स्वीकार करके उसे लिख कर भिजवा दिया"—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२९;

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६७९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२९-३० ।

२. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६७९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३३१ ।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७९-८०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३३२ ।

था, युद्ध किया और उन्हें भगा दिया, और अब जब उन्हें सम्राट का पूर्वी प्रदेशों से वापसी का समाचार मिला तो वे दालमऊ की ओर भाग गए।[1] यह सुनकर बाबर ने तुरन्त अपनी यात्रा प्रारम्भ की। बीस मील की यात्रा तय करने के उपरान्त वह सरजू नदी के तट पर स्थित चकसर नामक एक ग्राम, जो कि सगरी परगने तथा आज़मगढ़ जिले में स्थित है, पहुँचा। बाबर ने यहाँ पहुँच कर यह सुना कि बिबन तथा बायज़ीद ने दालमऊ के निकट गंगा नदी को पार कर लिया है और वे अब चुनार की ओर पीछे हट रहे हैं। अतः बाबर ने अपने अमीरों को बुलाकर उनकी राय ली। यह निश्चय किया गया कि मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा, सुल्तान जुनैद बरलास, महमूद ख़ान नोहानी, क़ाज़ी ज़िया और ताज ख़ान सारंगख़ानी अपनी सेनाओं के साथ चुनार की ओर बढ़ें और शत्रु को उधर बढ़ने से रोक दें। इस सेना को चुनार की ओर भेज देने के पश्चात् बाबर ने इसान तैमूर सुल्तान, बी खूब सुल्तान, मुज़फ्फर हुसैन, सुल्तान क़ासिम ख्वाजा, ज़ाफर ख्वाजा, काल्पी के आलम ख़ान, मलिक दाद कर्रानी तथा राव सरवानी को आदेश दिया कि वे दालमऊ की ओर शीघ्रातिशीघ्र बढ़ें और उन दो अफ़ग़ान विद्रोहियों का पीछा करें। इस प्रकार दो मुगल सेनाओं ने बिबन तथा बायज़ीद का पीछा किया। एक तीसरी मुग़ल सेना के अधीन उनका पहले ही से पीछा कर रही थी। मीर बाक़ी ने बिबन तथा बायज़ीद की सेना के अग्रिम दल को पराजित कर दिया तथा उनके सहायकों में से मुबारक ख़ान जिलवानी आदि को पकड़ कर उनकी हत्या कर दी। बिबन और बायज़ीद अधिक समय तक मुग़लों के सामने न टिक सके। अन्त में उन्होंने भाग कर महोबा सरकार कालिंजर में शरण ली।[2] बाबर धीरे-धीरे आगरा की ओर बढ़ा। चकसर[3], परसूरु, टौंस नदी, गोमती नदी, काल्पी को पार करते हुए बाबर, शुक्रवार, १८ शव्वाल, ९३५ हि०। २४ जून, १५२९ ई० को आगरा पहुँचा।[4]

---

१. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६७९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३३२।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६८१-८५।
३. ज़िला आज़मगढ़ में स्थित।
४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६८६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२-३७; इलियट एण्ड डाउसन, भाग ४, पृ०, २८७; ब्रिग्स

इससे पूर्व कि हम बाबर के जीवन की अन्य घटनाओं पर दृष्टि डालें, हमें पूर्वी प्रदेशों में उसके द्वारा किए गए कार्यों पर भी अब विचार कर लेना चाहिए। पूर्वी प्रदेशों में उसने अपना समय आखेट में, प्राकृतिक दृश्यों को देखने में, मनेर में, सूफ़ी सन्तों की दरगाहों पर तवाफ करने में, नदियों को तैर कर पार करने तथा माजूम और अफीम खाने और कुश्तियों को देखने में व्यतीत किया। किन्तु आनन्द मनाते समय वह अपने लक्ष्य को कभी भी न भूला। उसने अफ़ग़ान विद्रोहियों को पराजित कर उनकी बढ़ती हुई शक्ति को रोका, बंगाल के शासक सुल्तान नुसरत शाह के साथ संधि की तथा बिहार पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। यह सत्य है कि उसके वापस लौटने के पश्चात् बिहार पर शासन ठीक तरह से न हो सका, और ऐसा क्यों नहीं हुआ उन कारणों से भी हम भली-भाँति परिचित हैं। मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा, जिसके कन्धों पर शासन का भार डाला गया, उसे उस प्रदेश में अधिक समय तक न रहने दिया गया। बाबर ने उसे शीघ्र ही वहाँ से बुला लिया और अन्य सेनाध्यक्षों के साथ बिबन और बायज़ीद का पीछा करने के लिए भेज दिया। और जब बिबन तथा बायज़ीद को मुगलों ने महोबा की ओर भगा दिया तो मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को बाबर ने बिहार न भेजकर जौनपुर भेज दिया। बिहार का प्रशासन तो मुहम्मद सुल्तान मिर्ज़ा के हाथोंनहो सका, किन्तु बाबर ने कुछ ऐसे ठोस पग उठाए कि बिबन तथा बायज़ीद पुनः प्रवेश न कर सके। जलवानी तथा नोहानी अफ़ग़ान सरदारों जिन्होंने कि उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी, से वह आशा करता था कि वे बिबन तथा बायज़ीद तथा अन्य अफ़ग़ान विद्रोहियों का मुकाबला करेंगे और उन्हें कुचल देंगे। उसने न केवल जलालखान नोहानी को उसका राज्य वापस दे दिया अपितु उसे अपना मातहती भी इस शर्त पर बना लिया कि प्रतिवर्ष बिहार की मालगुज़ारी से में वह १ करोड़ दाम मुग़ल राजकोष में जमा करेगा। लेकिन फिर भी बिहार पर मुग़लों का पूर्ण रूप से आधिपत्य बाबर न स्थापित कर सका और न ही अफ़ग़ानों की विद्रोही प्रवृत्ति को वह दबा सका। फिर भी यदि हम उन

"दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया" भाग २, पृ०, ६२-६३; फिरिश्ता, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ०, २१०-११; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७१।

समस्याओं पर दृष्टि डालें, जो कि इस समय उसके सामने थीं, और जिस वातावरण में वह साम्राज्य-निर्माण के कार्य को कर रहा था,तो हम उसकी असफलताओं पर पर्दा डाल सकते हैं। उसके सामने दो जटिल प्रश्न थे। क्या उस वातावरण में बिहार को विजित कर मुग़ल साम्राज्य में अन्तिम रूप से मिलाना सम्भव था? क्या बिना बंगाल को विजय किए हुए बिहार के अफ़ग़ानों पर प्रभुत्व बनाए रखा जा सकता था? दोनों ही बातें बाबर के लिए असम्भव थीं। यदि बिहार को वह विजित कर मुग़ल साम्राज्य में मिला भी लेतातो भी बिहार मुग़ल सम्राट के लिए सदैव एक समस्या बना रहता। ऐसी स्थिति में मुग़ल साम्राज्य तथा सम्राट दोनों के हित मेंयह था कि बंगालके शासक सुल्तान नुसरत शाह के साथमैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए जायँ, बिहार के अफ़ग़ान कबीलों को आधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया जाय और अफ़ग़ान विद्रोहियों को वहाँ से निकाल दिया जाय। बाबर ने भी यही किया। इस समय बाबर यही चाहता था कि बिहार पर मुगलों का नाममात्र का प्रभुत्व हो और जौनपुर ही साम्राज्य की पूर्वी सीमाएँ हों।

पूर्वी प्रदेश में लौटने के पश्चात् बाबर ने जिन घटनाओं का उल्लेख अपनी "आत्मकथा" में किया है उनका विवरणअपूर्ण एवं अव्यवस्थित है। आत्मकथा में दिया गया विवरण बाबर के जीवन के अन्तिम काल पर अधिक प्रकाश नहीं डालता है। अतएव उसके जीवन के इस पर्व के विवरण के लिए हमें अहमद यादगार, निज़ामुद्दीन अहमद, अबुल फज़ल, गुलबदन बेगम तथाअन्य इतिहासकारों के ग्रन्थों पर निर्भर रहना पड़ता है। ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार से लौटते समय बाबरको मालूम हो गया कि हुमायूं समरकन्द तथा फरग़ाना के राज्य को उजबेगों के हाथों से छीनने में असफल रहा और कुबैदियान को विजय करने के उपरान्त उसने उस दिशा में कोई पग भी न उठाया। अतःबाबर ने हुमायूं के स्थान पर बदख़शाँ हिन्दाल को दे दिया, और हुमायूं को वापस आगरा बुला लिया[1]। रमज़ान,९३५ हि०। ६ जून, १५२९ ई० को हुमायूं ने मिर्जा हिन्दाल के शिक्षक को अपना उत्तरदायित्व सौंपा और काबुल होते हुए आगरा की ओर चल दिया। वह १

---

१. डा० रमाशंकर अवस्थी, "दि मुग़ल इम्परर हुमायूं, पृ०, ३५, एपेन्डिक्स, "ए"।

शव्वाल, ९३५ हि० । ७ जून, १५२९ ई० को काबुल पहुँचा और उसने ईद का त्योहार अपने दो भाइयों कामरान तथा हिन्दाल के साथ मनाया। यहाँ तीनों भाइयों ने प्रशासनिक समस्याओं पर पारस्परिक बातचीत की और उन्होंने जो कुछ निश्चय किया उसी के अनुसार काबुल और कन्धार कामरान के हाथों में रहे और हिन्दाल के पास बदख्शाँ की गवर्नरी रहने दी गई। तत्पश्चात् हुमायूँ आगरे के लिए रवाना हुआ। वह शव्वाल मास के अन्तिम दिनों में (जून-जुलाई १५२९) में आगरा पहुँचा और अपने पिता की सेवा में उपस्थित हुआ। बाबर ने उसके प्रति स्नेह प्रदर्शित किया तथा उसका स्वागत किया[1]।

हुमायूँ के पीठ फेरते ही बदख्शाँ में कुछ राजनीतिक परिवर्तन हुए। ६ जून, १५२९ ई० से अगस्त-सितम्बर १५२९ ई० तक के बीच, जब तक कि हिन्दाल वहाँ पहुँच नहीं गया, तब तक मीर फख्र अली ने बदख्शाँ के अमीरों को, जो कि इस नई प्रशासनिक व्यवस्था में कई कारणों से असन्तुष्ट थे, अपनी ओर मिलाने की कोई चेष्टा न की। बदख्शाँ के अमीर यह नहीं चाहते थे कि उन पर मुगल गवर्नर शासन करें और इन गवर्नरों को काबुल से आदेश प्राप्तहो और विशेष रूप से इस समय जबकि बदख्शाँ की गद्दी का वैध अधिकारी मुग़ल दरबार में हो तथा उसे जानबूझ कर इतनी दूर रखा जाय। तारीखे रशीदी के रचयिता ने स्पष्ट रूप से लिखा है कि इस समय मिर्ज़ा सुलेमान वयस्क हो गया था, अतः बदख्शाँ के अमीर उसे सिंहासन पर देखने के लिए लालायित थे। यही नहीं वहाँ के अमीरों को यह आशा थी कि हुमायूँ के जाने पर जब जगह होगी तो बदख्शाँ के किसी अमीर को शासन करने का अवसर प्राप्त होगा। किन्तु मीर फ़ख्र अली को देखकर बदख्शाँ के अमीरों के नेता सुल्तान अवैस की महत्वाकांक्षाओं पर पानी फिर गया और अमीरों ने सोचना प्रारम्भ किया कि मीर फ़ख्र अली को जबरदस्ती उन पर थोपा गया है। मीर फ़ख्र अली की तुलना में सुल्तान अवैस और उसका भाई शाह क़ुली बहुत ही अच्छे एवं अनुभवी व्यक्ति थे। दोनों ही व्यक्तियों ने उज़बेगों से अनेक युद्ध किए थे और मुगल साम्राज्य की सीमाओं को आक्सस के आगे बढ़ाने में सफलता पाई थी। सुल्तान अवैस की वीरता साहस एवं मुग़लों के प्रति उसकी निष्ठा तथा आज्ञाकारिता को देखते हुए, हम कह सकते हैं कि वह बदख्शाँ का गवर्नर होने योग्य था और यदि वह स्वयं अपने को इस योग्य समझता था तो उसके लिए

---

१. अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७२ ।

ऐसा सोचना कोई ग़लत बात न थी। जब उसने देखा कि हिन्दाल को बदख्शाँ का गवर्नर नियुक्त कर दिया गया है तो उसे दुख हुआ। उसे अपना भविष्य अन्धकारमय दिखाई देने लगा। वह बाबर तथा हुमायूँ की मध्य-एशियाई नीति के विरुद्ध पहले ही से था और वह यह भी नहीं चाहता था कि बदख्शाँ के मामले में मुग़ल सम्राट सदैव हस्तक्षेप करता रहे और यह देख कर कि मुग़ल उसे राजनीति में सक्रिय भाग कभी न लेने देंगे, सुल्तान अवैस ने अन्य अमीरों को अपने पक्ष में कर लिया। कुछ अमीरों से मिलकर उसने बदख्शाँ की गद्दी के एक और अधिकारी सुल्तान सईद के पास सन्देशवाहक भेजकर यह कहलवाया कि हुमायूँ हिन्दुस्तान चला गया है, मीर फ़ख्र अली जिसे कि वह छोड़ गया है उसमें इतनी क्षमता नहीं है कि वह उजबेग आक्रमणों का सामना कर सके अथवा बदख्शाँ में शान्ति बनाए रख सके। उन्होंने उसे आश्वासन दिया कि उसके आने पर वे बदख्शाँ को उसके हाथों में सौंप देंगे। सुल्तान सईद ने बदख्शाँ के अमीरों का निमंत्रण स्वीकार कर लिया। मुहर्रम, ६३५ हि०। सितम्बर, १५२६ ई० में वह कशग़र में बदख्शाँ की ओर रवाना हुआ। उसे आशा थी कि वह शीघ्र ही बदख्शाँ के राज्य पर अपना अधिकार जमा लेगा, किन्तु जब वह उस राज्य की सीमाओं पर पहुँचा तो उसे पता चला कि १२ दिन पहले ही हिन्दाल वहाँ पहुँच चुका है और किसी भी आक्रमण का सामना करने को वह तैयार बैठा हुआ है। इसके बावजूद भी बिना हतोत्साहित हुए सुल्तान सईद आगे बढ़ा और उसने क़िला ज़फर पर घेरा डाल दिया। तीन महीने तक वह घेरा डाले हुए पड़ा रहा। अन्त में शीत ऋतु के आगमन पर वह अपने देश वापस लौट गया।[1]

सिन्ध नदी के उस पार बदख्शाँ में जो कुछ हो रहा था, उसके विषय में तो बाबर को इस समय कुछ भी न मालूम हुआ, किन्तु हिन्दुस्तान में लाहौर में शेख़

---

१. तारीख़े-ए-रशीदी, (अनु०), पृ०, ३८८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ६३१; फिरिश्ता, "तारीख़-ए-फिरिश्ता" (मू० ग्रन्थ), पृ०, २११; ब्रिग्स, 'दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया' भाग २, पृ०, ६३-६४; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७३-७४।

शरफ़[1] ने तथा ग्वालियर में रहीम दाद[2] ने उसके विरुद्ध षड्यन्त्र रचकर उसकी सत्ता को हिलाने की चेष्टा अवश्य की और इन षड्यंत्रों का समाचार पाकर बाबर विचलित हुआ।[3] किन्तु उसमें अब इतनी शक्ति न रह गई थी कि वह स्वयं लाहौर अथवा ग्वालियर की ओर बढ़ता। अतएव ११ ज़ीक़ाद, ९३५ हि०। १७ जुलाई, १५२९ ई० को उसने कम्बरअली अरगून को शैख़ शरफ़, लाहौर के इमामों तथा उनके सहायकों को बन्दी बनाकर लाने के लिए भेजा और रहीम दाद के पास मीर खलीफ़ा के सेवक मुहम्मद मुहरदार को भेजा कि वह ठीक रास्ते पर आ जाय।

सितम्बर मास में किसी समय बाबर को सुल्तान सईद द्वारा बदख्शाँ पर आक्रमण करने की सूचना मिली। बाबर ने उस देश की रक्षा के लिए सहायतार्थ सेनाएँ भेजने का निश्चय किया। उसने मीरखलीफ़ा को बुलाया और उससे बदख्शाँ जाने के लिए कहा। किन्तु अपनी वृद्धावस्था के कारण और सम्भवतः यह सोचकर कि बदख्शाँ में उसे सफलता नहीं मिल सकती है, मीर खलीफ़ा ने वहाँ जाने से इन्कार कर दिया। वह अपनी ख्याति को मिट्टी में नहीं मिलाना चाहता था। उसके इन्कार करने पर बाबर ने हुमायूँ को वहाँ भेजने का विचार किया। उसने हुमायूँ से जाने के लिए कहा किन्तु उसने भी वहाँ जाने से इन्कार कर दिया। बाबर को बुरा लगा। अतः उसने हुमायूँ को आदेश दिया कि वह अपनी जागीर सम्भल चला जाय (मुहर्रम, ९३६ हि०। सितम्बर—अक्टूबर, १५२९ ई०)। हुमायूँ को सम्भल भेजने के पश्चात् बाबर ने पश्चिमी प्रदेश की ओर जाकर सुलेमान मिर्ज़ा को बदख्शाँ की गद्दी पर बैठाने के लिए प्रबन्ध करने तथा लाहौर के इमामों के विद्रोह को दबाने का निश्चय किया।[3]

१. लाहौर में शेख़ शरफ़ ने बाबर द्वारा अत्याचारों के विषय में एक महज़र तैयार किया और इमामों के हस्ताक्षर करा कर अनेक नगरों में उसकी प्रतिलिपियाँ बँटवा दी ताकि मुसलमान मुग़लों के विरुद्ध विद्रोह कर दें—बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६८७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ३३८।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६८७–८८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३३८–३३९।

३. बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ६८७–८८।

बाबर ने अक्टूबर-नवम्बर, १५२६ ई० में आगरा से पश्चिमी प्रदेशों की ओर प्रस्थान किया। सरहिन्द पहुँचनेपर कहलर के राजा नेउसका स्वागत किया और उसे ३ मन सोना भेंट में प्रदान किया।[1] बाबर ने राजा को उसकी जागीरों में रहने दिया। तत्पश्चात् वह लाहौर पहुँचा जहाँ उसकी भेंट कामरान से हुई। कामरान ने सिन्ध के स्थानीय सरदारों को बाबर के सामने उपस्थित किया। इन सभी सरदारों ने मुग़ल सम्राट की अधीनता स्वीकार कर ली। अहमद यादगार का कहना है कि हिन्दाल ने भी काबुल से आकर यहीं बाबर से भेंट की और उसका अभिवादन किया[2]। शीत-ऋतु बाबर ने कामरान तथा हिन्दाल के साथ लाहौर में व्यतीत की और उसके बाद कामरान तथा हिन्दाल वापस काबुल चले गए। सम्भवतः लाहौर ही में बाबर को ईरानियों द्वारा कन्धार पर आक्रमण करने के विचार, कशग़र के शासक सुल्तान सईद द्वारा बदख़्शाँ पर आक्रमण तथा मुग़ल शासन के प्रति बदख़्शाँ के अमीरों के दृष्टिकोण के बारे में ज्ञात हुआ। बदख़्शाँ पर अपना प्रभुत्व बनाए रखने के लिए उसने वहाँ के अमीरों को सन्तुष्ट करने का निश्चय किया। जैसे ही उसे मालूम हुआ कि सुल्तान सईद स्वदेश वापस लौट गया है, उसने सुल्तान सुलेमान के हाथों में बदख़्शाँ इस शर्त पर सौंप दिया कि मुगल सम्राटके नाम का ही वहाँ सिक्काचलेगा औरख़ुतबा में भी उसका नाम होगा।[3] बाबरने हिन्दाल के पास आदेश भेजा कि वह मिर्ज़ा सुलेमान के हाथों में बदख़्शाँ सौंप कर काबुल चला आये[4]। हिन्दाल ने ऐसा ही किया। इस प्रकार फरवरी

---

१. अहमद यादगार 'तारीख़े सलातीने अफ़ग़ना', पृ०, १२४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५६;

२. अहमद यादगार 'तारीख़े सलातीने अफ़ग़ना', पृ०, १२४; रिज़वी", "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५६;

३. तारीख़े-ए-रशीदी, (अनु०) पृ०, ३८८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ६३२; अब्दुल फ़ज़ल ने इन शर्तों के बारे में कुछ नहीं लिखा; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७४।

४. मिर्ज़ा हैदर ने लिखा है कि बहुत कुछ सोच विचार के बाद बाबर ने सुलेमान शाह मिर्ज़ा को बदख़्शां भेजा और हिन्दाल को वहां से वापस बुला लिया। इसी समय बाबर ने ख़ान को लिखा, "मेरे अत्यधिक उपकारों एवं हमारे पारस्परिक सम्बन्धों को देखते हुए मुझे इस घटना पर बड़ा आश्चर्य होता है।

मार्च १५३० ई० तक बाबर ने बदख़्शां के राज्य के शासन की व्यवस्था तथा अपने साम्राज्य की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं की प्रतिरक्षा का प्रबन्ध कर लिया। इसके पश्चात् ४ रजब, ९३६ हि० । ४ मार्च, १५३० ई० को वह लाहौर से आगरा के लिए चल पड़ा।

अपनी वापसी यात्रा के समय जब बाबर सरहिन्द पहुँचा तो समाना के क़ाज़ी ने उससे फरियाद की कि मोहन मुण्डाहीर राजपूत ने उसकी सम्पत्ति पर आक्रमण कर उसे जला दिया है तथा उसके पुत्र को मारडाला है। बाबर ने हमदान के अली क़ुली को मोहन मुण्डहीर के विरुद्ध ३,००० अश्वारोहियों के साथ भेजा। किन्तु शाही सेना को भी उसने परास्त कर भगा दिया। अली क़ुली की असफलता का समाचार पाकर बाबर ने तरसून बहादुर और नारंग बेग को ६००० अश्वारोहियों तथा अनेक हाथियों के साथ उस विद्रोही सरदार को दबाने के लिए भेजा। शाही सेना के एक भाग को गाँव वालों ने मार कर भगा दिया, किन्तु शाही सेना के दूसरे भागने १००० पुरुषों, महिलाओं तथा बच्चों को बन्दी बना लिया। मोहन मुण्डाहीर पकड़ा गया और उसे मौत के घाट उतार दिया गया।[1] इस विद्रोह को दबाने के पश्चात् कुछ समय तक बाबर ने सरहिन्द में ठहर कर अपना समय आखेट में व्यतीत किया, उसके बाद कैथाल और नरदक होते हुए वह आगरा लौट गया।[2]

मैंने हिन्दाल मिर्ज़ा को बुलवा लिया है और सुलेमान को भेज दिया है। यदि तुम पूर्वजों के हक़ पर ध्यान दोगे तो सुलेमान शाह के प्रति कृपा-दृष्टि प्रदर्शित करोगे और बदख़्शां उसके अधिकार में रहने दोगे, कारण यह कि वह हम दोनों का पुत्र है। यह बड़ा अच्छा होगा अन्यथा मैं अपने उत्तरदायित्व को पूरा करके विरासत को उसके वारिस को दिलवा दूंगा। शेष तुम जानो"—तारीखे-ए-रशीदी (अनु०), पृ०, ३८६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ६३२।

१. अहमद यादगार, 'तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना,' पृ०, १२८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४६१।

२. अहमद यादगार, 'तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना', पृ०, १२८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत' (बाबर), पृ०, ४६१।

आगरा पहुँचने पर बाबर को हुमायूँ की बीमारी के बारे में पता चला। यह सोचकर कि आगरा में अनेक वैद्य और हकीम मौजूद हैं जो कि उसकी भलीभाँति चिकित्सा कर सकते हैं,बाबर ने आदेश दिया कि हुमायूँ को सम्भल से आगरा लाया जाय। तदनुसार हुमायूँ को सम्भल से दिल्लीऔर दिल्ली से नौकामें आगरा लाया गया।[1] मार्ग में मथुरा में हुमायूं अपनी माँ से मिला जो कि उसकी बीमारी का समाचार सुन कर बहुत ही चिन्तित थी। उसने हुमायूँ को बहुत ही दुर्बल पाया और उसे देख कर यह आश्चर्य हुआ कि जैसा उसने धौलपुर में सुना था, उससे कहीं अधिक वह बीमार है। हुमायूं के आगरा पहुँचने पर बाबर ने ही स्वयं उसकी देखभाल करना प्रारम्भ किया। मीर ख़लीफ़ा तथा अन्य विशिष्ट चिकित्सकों से उसका इलाज कराया गया। सम्भल से आगरा तक की लम्बी यात्रा का भी रुग्ण हुमायूं पर प्रभाव पड़ा और उसकी दशा और भी बिगड़ गई। गुलबदन बेगम के अनुसार जब कभी उसे अधिक ज्वर हो जाता था तो वह सन्निपात की अवस्था में बहकी-बहकी बातें करने लगता था। हुमायूँ की बिगड़ती हुई दशा से बाबर तथा माहम दोनों को चिन्ता होने लगी। कुछ ही दिनों पूर्व उनकेसबसे छोटे पुत्र अलवर की मृत्यु हो चुकी थी और इसी कारण वे और भी चिन्तित थे। माहम ने उसे धैर्य बँधाने की चेष्टा की और कहा, "तुम मेरे पुत्र की चिन्ता न करो। तुम एक सम्राट हो। तुम्हें किस प्रकार का दुःख ? तुम्हारे तो और भी पुत्र हैं। दुःख तो मुझे है क्योंकि मेरे तो केवल यही एक पुत्र है"।[2] माहम के इन शब्दों ने बाबर के हृदय को झकझोर दिया और जब वह अपनी भावनाओं को दबा सकने में असमर्थ रहा तो उसने उत्तर देते हुए कहा,"माहम ! यद्यपि मेरे अन्य पुत्र भी हैं, किन्तु मैं तेरे हुमायूं के बराबर किसी भी पुत्र को प्रिय नहीं समझता, कारण कि मैं सल्तनत एवं बादशाही तथा समृद्ध संसार, दुनिया के अद्वितीय, अपने काल के विशिष्ट व्यक्ति, प्रतापी,सफल एवं प्रिय पुत्र हुमायूँ के लिए चाहता हूँ न कि अन्य लोगों के लिए[3]"

---

१. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा"(अनु०) पृ०, १०४-१०५; जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसायटी, बंगाल, १९२६, पृ०, २८५-८८।

२. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ०, १०४; रिज़वी,"मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३७०।

३. गुलबदन बेगम,"हुमायूँ नामा" (अनु०), पृ०, १०४;"रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ० ३७०।

अबुल फ़ज़ल के अनुसार एक दिन संध्या समय बाबर जमुना नदी के किनारे एक उद्यान में बैठा हुआ चिकित्सकों से युवराज की बीमारी को जल्द से जल्द ठीक करने के विषय में बातचीत कर रहा था कि मीर अब्दुल बका, जो कि उस समय के महान् वैद्यों में से था, और जिसका सभी आदर करते थे, ने उसे सुझाव दिया कि अब युवराज को स्वस्थ देखने के लिए एक ही उपचार है; वह यह कि जो उसे सबसे अधिक वस्तु प्यारी हो, उसे वह दान दे दे और रोगी को भगवान की दया पर छोड़ दे।[1] बाबर ने मीर अब्दुल बक़ा की बात सुनी। इस अवसर पर जो भी व्यक्ति वहाँ उपस्थित थे उन्होंने भी मीर अब्दुल बक़ा के सुझाव को माना और बाबर से अनुरोध किया कि युवराज ने जो कोहनूर हीरा, ग्वालियर के शासक से प्राप्त किया है और जो उसे बहुत प्रिय है, वह उससे लेकर दान कर देना चाहिए। किन्तु उस हीरे की अपेक्षा बाबर ने अपने को उसकी प्रिय निधि समझ कर अपने जीवन का उत्सर्ग करना ठीक समझा। गुलबदन बेगम जिसकी आयु उस समय केवल ८ वर्ष की थी, को इस अवसर की याद रही और उसने लिखा है कि उसके पिता ने युवराज की चारपाई के चार चक्कर लगा कर ईश्वर से प्रार्थना की कि, "हे ईश्वर! यदि किसी के प्राणों का दूसरे के प्राणों से आदान-प्रदान हो सकता है तो मैं बाबर अपने प्राण तथा अपने आपको हुमायूं को प्रदान करता हूँ"।[2] दूसरे दिन बादशाह सलामत ने जीवन के उत्सर्ग की शपथ को सत्य एवं सफल बनाने के लिए व्रत रखा और उसे अनुभव हुआ कि ईश्वर ने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली है।

निरन्तर इसी प्रकार से व्रत तथा उपवास रखने के कारण बाबर का स्वास्थ्य गिरने लगा। हुमायूँ के रोग का ठीक तरह से उपचार हुआ और वह कुछ ही दिनों में ठीक हो गया। मध्यकालीन इतिहासकारों का यह विश्वास था कि बाबर द्वारा प्राणों के उत्सर्ग करने के परिणाम स्वरूप ही हुमायूं स्वस्थ हुआ और बाबर का स्वास्थ्य दिन-प्रतिदिन गिरने लगा। इस विचार धारा का आधुनिक इतिहासकारों

---

१. अबुल फ़जल, 'अकबर नामा' (मूल) भाग १, पृ०, ११६-११७; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७५-६; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४१० ।

२. गुलबदन बेगम, "हुमायूँ नामा" (अनु०), पृ०, १०५; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३७०-७१; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७६ ।

ने बिल्कुल खण्डन कर दिया है। उनका कहना है कि खनवा के युद्ध के बाद से ही हिन्दुस्तान की गर्म जलवायु का प्रभाव उसके शरीर पर पड़ने लगा। लगातार युद्ध करने, एक स्थान से दूसरे स्थान तक अभियान के दौरान यात्रा करने, सुल्तान इब्राहीम लोदी की माँ द्वारा विष दिए जाने और अधिक मात्रा में माजूम, अफ़ीम, मदिरा के सेवन के कारण उसका बलिष्ठ शरीर दुर्बल होने लगा। इस प्रकार १५२८ ई० के बाद कम से कम बाबर छः बार बीमार पड़ा और कई बार तो वह दो-दो सप्ताह तक बीमार पड़ा रहा। शारीरिक दुर्बलता, मानसिक चिन्ता, थकान कमजोरी के कारण वह 'आत्मकथा' को दैनन्दिनी के रूप में इस अवधि में लिखने में असमर्थ रहा तथा कभी-कभी अपने राजनीतिक जीवन से अवकाश ग्रहण कर जफ़र खान के उद्यान में शान्तिमय जीवन व्यतीत करने की बात करने लगा। पूर्वी प्रदेशों में भी अभियान के दौरान भी वह कई बार बीमार पड़ा, और यही कारण है कि उस प्रदेश की व्यवस्था करने के उपरान्त वह शीघ्र से शीघ्र आगरा वापस लौटने का इच्छुक हो गया। पूर्वी प्रदेश से लौटने से पूर्व उसने हुमायूँ को बदख्शाँ से बुलाया ताकि यदि उसकी आकस्मिक मृत्यु हो जाय तो उसका उत्तराधिकारी उसका स्थान ग्रहण कर ले।

स्वस्थ हो जाने के पश्चात् हुमायूं अपनी जागीर सम्भल वापस लौट गया (मुहर्रम, ९३७ हि०। सितम्बर, १५३० ई०)। बाबर भी अपने स्वास्थ्य को सम्भालने तथा विश्राम करने के लिए धौलपुर चला गया। धौलपुर से वापस आने के पश्चात् बाबर ने हुमायूं कोअपनाउत्तराधिकारीघोषित करनेका निश्चय किया। अहमद यादगार के अनुसार एक दिन सन्ध्या के समय मदिरापान करते समय बाबर ने हुमायूं को बुला भेजा। इससे पूर्व कि हुमायूं उसके पास पहुँचता, बादशाह सलामत विश्राम करने के लिए जा चुके थे। हुमायूं उनके पास पहुँचा तथा चारपाई के निकट स्तब्ध खड़ा रहा। आधी रात में जब बादशाह की आँख खुली तो उन्होंने देखा कि हुमायूं हाथ जोड़े हुए उनके पास खड़ा हुआ है। उन्होंने उससे ऐसे समय आने का कारण पूछा। हुमायूं ने उत्तर दिया कि आपने बुलाया था। हुमायूं की बात सुनकर उन्हें याद आई कि उन्होंने उसे बुलाया था। बहुत ही स्नेह से उन्होंने उससे कहा कि यदि ईश्वर तुम्हें सिंहासन पर बिठाए तो तुम अपने भाइयों के साथ नम्रतापूर्वक व्यवहार करना।[1] हुमायूं ने झुककर उसकी बात

---

१. अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़गना", पृ०, १२८-२९; रिज़वी "मुगल

स्वीकार की। इस घटना के कुछ ही समय पश्चात् बाबर को सूचना मिली कि कालिंजर के शासक ने कालपी पर आक्रमण कर वहाँ के दुर्ग को जीत लिया है। अतएव बाबर ने हुमायूं को कालपी की ओर जाने का आदेश दिया। कालपी के दुर्ग को विजय करने के बाद हुमायूं अपनी जागीर सम्भल को वापस लौट गया।[1]

कुछ समय पश्चात् हुमायूं पुनः कालिंजर के शासक के विरुद्ध बढ़ा, किन्तु बाबर की अस्वस्थता का समाचार पाते ही वह इस अभियान से लौट पड़ा। जब तक बाबर की तबियत ठीक नहीं हो गई, हुमायूं आगरा में ही रुका रहा, तत्पश्चात् अपनी जागीर को चला गया।[2]

जिस समय हुमायूं कालिंजर अभियान में व्यस्त था उसी समय उसकी अनुपस्थिति में ही बाबर ने अपनी दो पुत्रियां, गुलरंग बेगम तथा गुल चेहरा बेगम का विवाह ईसान तैमूर सुल्तान और तुख्ता बुग़ा सुल्तान से किया।[3] तत्पश्चात् ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर पुनः बीमार पड़ गया।

इस बार वह खाट से लग गया। शाही चिकित्सकों के सुझाव पर उसे घरेलू सेवकों के साथ चार बाग उद्यान में ले जाया गया। हुमायूं उसे देखने के लिए आया और

कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४६१; डा० रमाशंकर अवस्थी, 'दि मुग़ल इम्परर हुमायूं' पृ०, ४४; प्रो० रशब्रुक विलियम्स, "एन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १७४; डा० हरी शंकर श्रीवास्तव, 'हुमायूं', पृ० ३२; डा० एस० के० बनर्जी, 'हुमायूं बादशाह' भाग १, पृ०, १४; डा० ईश्वरी प्रसाद "लाइफ एण्ड टाइम्स आफ़ हुमायूं" पृ० २३।

१. गुलबदन बेगम, 'हुमायूं नामा' (अनु०), पृ०, १०५; डा० एस के० बनर्जी, 'हुमायूं बादशाह' भाग १, पृ०, १४; कालिंजर में एक शिलालेख मिला है जिसमें लिखा हुआ है कि:—
"मुहम्मद हुमायूं बादशाह ग़ाजी बतारीख सनेह रजब अल रजब, ६३७, हि०"
—जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसाइटी आफ़ बंगाल, १८४८, पृ०, १८६; शिलालेख में कालिंजर के दुर्ग को विजय करने की तिथि ग़लत मालूम होती है।

२. गुलबदन बेगम, 'हुमायूं नामा' (अनु०), पृ०, १०५।

३. गुलबदन बेगम 'हुमायूं नामा' (अनु०), पृ०, १०६; डा० एस० के० बनर्जी, 'हुमायूं बादशाह' पृ०, १४।

जब फिर उसकी तबियत कुछ ठीक हुई तो वह पुनः अपनी जागीर वापस लौट गया।[1]

बाबर के बीमार रहने के कारण उसके वज़ीर मीर खलीफ़ा को यह अवसर मिल गया कि जो कुछ वह अपने हित में उचित समझे करे। कुछ समय से वह शाही अन्तःपुर में माहम के बढ़ते हुए प्रभाव को देख रहा था और इस प्रकार पुरानी ईरानी-तूरानी वैमनस्यता तथा उसकी व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं ने उसे बाध्य कर दिया कि वह दरबार में अपने प्रभुत्व को बनाए रखने, अपने हितों को सुरक्षित रखने तथा अपने को ऐसी स्थिति में बनाए रखने का प्रयास करे और वह भविष्य में वज़ीर-ए-तौफ़ी की तरह राजनीति की बागडोर अपने हाथों में ले। हुमायूं से वह पहले से ही किन्हीं कारणों से असन्तुष्ट था। वह उसकी दुर्बलताओं से भी भलीभाँति परिचित था। अतएव उसने हुमायूं तथा उसके भाइयों को गद्दी पर बैठने के अधिकार से वंचित करने तथा खान ज़ादा बेगम के पति महदी ख्वाजा को बाबर की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर बैठाने की योजना बनाई। किन्तु उसे यह सुनकर आश्चर्य हुआ कि गद्दी पर बैठाने के पश्चात् महदी ख्वाजा उसे इस प्रकार का विश्वासघात करने के लिए मौत के घाट उतार देगा। अतएव तुरन्त ही उसने अपने विचार परिवर्तित कर दिए और हुमायूं को सम्भल से बुला भेजा।[2]

बाबर इस समय अत्यधिक बीमार था। इस समय भी वह अपने जीवन और मृत्यु से संघर्ष कर रहा था। उसकी अभिलाषा हिन्दाल को देखने की थी, क्योंकि वह उसे बहुत प्यार करता था। अधिक से अधिक प्रतीक्षा के उपरान्त भी वह उसे न देख सका। हुमायूं को पास देखकर उसने उस कार्य को भी पूर्ण करना चाहा जो कि अभी तक अपूर्ण रह गया था। उसने अपने अमीरों ख्वाजा खलीफा

---

१. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, १०५; डा० एस० के० बनर्जी, "हुमायूं पादशाह", भाग १, पृ०, १४।
२. मीर खलीफ़ा द्वारा रचे गए षड्यन्त्र के विस्तृत विवरण के लिए देखिए— निज़ामुद्दीन अहमद 'तबक़ाते अकबरी', भाग १, पृ०, २८-२९; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४३५-३६; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २७७; श्रीमती बेविज, "बाबर नामा" (अनु०) भाग २, पृ०, ७०२-७०८, डा० रमाशंकर अवस्थी, 'दि मुग़ल इम्परर हुमायूं,' पृ० ४६-५८; डा० एस० के० बनर्जी, 'हुमायूं बादशाह' भाग १, पृ०, १७-२७; डा० ईश्वरी प्रसाद, "दि लाइफ़ एण्ड टाइम्स आफ़ हुमायूं," पृ०, २५-४०।

कम्बर अली बेग तारदी बेग तथा हिन्दू बेग को बुलवाया और उनसे कहा कि "वर्षों से मेरे हृदय में यह इच्छा थी कि मैं अपनी बादशाही हुमायूं मिर्ज़ा को दे दूँ और स्वयं ज़र अफ़शा बाग़ में एकान्तवास ग्रहण कर लूँ। ईश्वर की कृपा से मुझे सभी बातें प्राप्त हो गई हैं केवल इस कार्य को जब तक मैं स्वस्थ रहा, न कर सका। इस समय इस रोग ने मेरी बुरी दशा कर दी है। मैं इस बात की वसीयत करता हूँ कि तुम सब लोग हुमायूं को मेरे स्थान पर समझो और उसके प्रति निष्ठावान होने में कमी न करो। उसके साथ दिल व जान से मेल रखो। मुझे ईश्वर से आशा है कि हुमायूँ भी अपने आदमियों के साथ भली-भाँति व्यवहार करेगा"।[1] इसके पश्चात् बाबर ने हुमायूं[2] से कहा "तुझे तेरे भाइयों एवं

---

१. गुलबदन बेगम, "हुमायूँ नामा" (अनु०), पृ०, १०८-१०९;"अकबर नामा" (मूल)पृ०, ११७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत"(बाबर), पृ०, ४११।

२. अपने पिता की मृत्यु के समय हुमायूं आगरा में उपस्थित था या नहीं, एक विवादग्रस्त विषय है। गुलबदन तथा अबुल फ़ज़ल का विचार है कि अपने पिता की मृत्यु के समय हुमायूँ वहाँ मौजूद था।—"हुमायूंनामा" (अनु०), पृ०, १०८-१०९; अकबर नामा (मू०)भाग १, पृ०, ११७; किन्तु निज़ामुद्दीन अहमद ने लिखा है, "उसी समय मीर खलीफ़ा ने शीघ्रातिशीघ्र एक सन्देश वाहक को हुमायूं मिर्ज़ा के पास भेजा। जब बादशाह सलामत इस नश्वर संसार से विदा हो गए तो मुहम्मद हुमायूं मिर्ज़ा सम्भल से आए और वकील-उत-सल्तनत अमीर निज़ामुद्दीन खलीफा की सहायता से गद्दी पर ९ जमादी-उल-अव्वल,९३७ हि० को गद्दी पर बैठे और आगरा को उन्होंने .. "तबकाते अकबरी" भाग १, पृ०, २९-३०; अरस्किन, प्रो० रशब्रुक विलियम्स और डा० एस० के० बनर्जी ने गुलबदन बेगम तथा अबुल फ़ज़ल के कथनों को ठीक माना है, "हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ" अरस्किन, भाग, १, पृ०, ५१७; प्रो० रशब्रुक विलियम्स "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १७८; डा० एस० के बनर्जी, 'हुमायूं पादशाह' भाग १ पृ०,१४; डा० ईश्वरी प्रसाद, "लाइफ़ एण्ड टाइम्स आफ़ हुमायूँ, पृ०, २४; किन्तु डा० रमा शंकर अवस्थी का मत है कि हुमायूं अपने पिता की मृत्यु के समय आगरा में उपस्थित न था। उनके इस मत के लिए देखिए—"मुग़ल इम्परर हुमायूँ", पृ०, ५८।

अपने सभी सम्बन्धियों तथा आदमियों को ईश्वर को सौंपता हूँ और इन लोगों को तेरे सुपुर्द करता हूँ।"[1]

हुमायूँ को अपना उत्तराधिकारी घोषित करने के तीन दिन पश्चात् सोमवार ६ जमादी-उल-अव्वल ९३७ हि० । २६ दिसम्बर १५३० ई०[2] को बाबर

---

१. गुलबदन बेगम, 'हुमायूँ नामा' (अनु०), पृ० १०९ ।

२. गुलबदन बेगम के अनुसार उस दिन सोमवार था, किन्तु ५ जमादी-उल-अव्वल तिथि उसने दी है। हो सकता है कि उसे दिन याद रहा हो, किन्तु ६ जमादी-उल-अव्वल के स्थान पर भूल से वह पाँच जमादी-उल-अव्वल लिख गई हो—"हुमायूँ नामा" (अनु०), पृ०, १०९; अब्दुल फज़ल के अनुसार बाबर की मृत्यु, ६ जमादी-उल-अव्वल को हुई—अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० २७७; फिरिश्ता ने भी ५ जमादी-उल-अव्वल, ९३७ हि० लिखा है—फिरिश्ता के अनुसार बाबर की मृत्यु की तारीख इन शब्दों में है : बहिश्त रोज़ए तारीख़ वफात, "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ), पृ०, २११; ब्रिग्स, "दि हिस्ट्री आफ दि राइज़ आफ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया," भाग २, पृ०, ६१; निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार बाबर की मृत्यु ५ जमादी. उल-अव्वल ९३७ हि० को हुई—तबक़ात-ए अकबरी (अनु०) भाग २, पृ०, ३९-४०; अहमद यादगार के अनुसार बाबर की मृत्यु, ४ शाबान, ९३७ हि० को हुई—"तारीखे सलातीने अफ़ग़ना", पृ०, १३०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ४६१, तारीखे अल्फ़ी में ५ जमादी-उल-अव्वल ९३७ हि० २५ दिसम्बर, १५३०, बाबर की मृत्यु तिथि दी गई है, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ६४६; अरस्किन ने ५ जमादी-उल-अव्वल को सही माना है, "दि हिस्ट्री आफ इण्डिया अण्डर बाबर एण्ड हुमायूँ" भाग १; डा० रमा शंकर अवस्थी ने भी अरस्किन द्वारा दी गई हुई तिथि को ठीक माना है, किन्तु कोष्ठक में उन्होंने अंग्रेजी तारीख २० दिसम्बर, १५३० दी है जो कि गल्ती से छपी हुई मालूम होती है—"दि मुगल इम्परर हुमायूँ," पृ०, ५६; प्रो० रशब्रुक विलियम्स ने २६ दिसम्बर, १५३० ई० ही को ठीक माना है—"ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी" पृ०, १७९; डा० ईश्वरी प्रसाद ने भी बाबर की मृत्यु की तिथि २६ दिसम्बर १५३० ई० दी है—"लाइफ एण्ड टाइम्स आफ हुमायूँ" पृ०, २३; कविराज

की मृत्यु हो गई। बाबर का पार्थिव शरीर चार बाग अथवा आराम बाग में दफ़ना दिया गया। गुलबदन बेगम के अनुसार मुहम्मद अली असास को उसके मकबरे की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया गया। छः क़ुरान पढ़ने वालों को भी नियुक्त किया गया कि वे दिन में पाँच बार दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना करें। यही नहीं फतेहपुर सीकरी की सम्पूर्ण मालगुज़ारी तथा ब्याना की मालगुज़ारी में ५ लाख दाम बाबर के मक़बरे में कुरान पढ़ने वालों तथा विद्वानों को दान में देने की व्यवस्था की गई। माहम ने दिन में दो बार ग़रीब आदमियों को मुफ्त भोजन देने की भी व्यवस्था की। इसका खर्च वह स्वयं अपने जीवन के २ १।२ वर्षों तक उठाती रही।[1] शेरशाह के राज्यकाल में बाबर की अस्थियों को उसकी विधवा पत्नी बीबी मुबारिका काबुल ले गई और वहाँ शाहे काबुल के दलान पर जो मकबरा बाबर ने एक उद्यान में बनवाया था, वहाँ दफ़नवा दिया। यह बहुत ही सुन्दर स्थान है। यहाँ से दूर तक चारदिह के हरे भरे मैदान, फग़मन की पहाड़ियों पर जमी हुई बर्फ, बड़ी-बड़ी चट्टानें, पहाड़ियों, जो कि इसी शासक के लिए आखेट खेलने के लिए स्थानों में से थे दिखाई देती थी। बाबर के वंशज इस मक़बरे को देखने आये और उन्होंने उद्यान को सजाने की व्यवस्था समय समय पर की। सम्राट जहाँगीर ने यहाँ एक शिलालेख लगवाया जिसमें खुदा हुआ है :—

"मुहम्मद बाबर पादशाह एक शासक था जिसकी भौंहों में ईश्वरीय प्रकाश की जगमगाहट होती थी, और जो कि अपने धर्म का रक्षक था, तथा जिसके साथ उसका गौरव, साम्राज्य, भाग्य, सहृदयी स्वभाव, उसकी दानशीलता, धर्म में उसका अटल विश्वास, समृद्धि से उसके भाग्य, भरा पूरा संसार तथा उसकी सैन्य सफलता चमकती थी। उसने इस विश्व को जीत लिया था और स्वयं प्रकाश की भाँति हो गया था! वह अपनी विजय के लिए कभी भी उस प्रकाश की ओर न देखता था और न ही इस संसार में रहने वाले प्राणियों की ओर। जब कि स्वर्ग उसका निवास स्थान तथा रज़वान हो गया, तो उसने मुझसे इस

श्यामलदास के अनुसार बाबर की मृत्यु, ३ जमादी-उल अव्वल ९३७ हि० । २४ दिसम्बर १५३० ई० को हुई—वीर विनोद, भाग १, (अ) पृ०, २३ ।

१. गुलबदन बेगम, 'हुमायूँ नामा' (अनु०), पृ०, ११० ।

समय की तिथि के बारे से पूछा तो मैंने उत्तर दिया, "स्वर्ग सदैव बाबर पादशाह का निवास स्थान रहेगा।"[1] शाहजहाँ ने बाबर की मजार के निकट एक मस्जिद बनवाई जो कि देखने में बहुत ही साधारण किन्तु आकर्षक है।

इस प्रकार बाबर के जीवन की इह लीला समाप्त हुई। उसकी अनेक पत्नियाँ थी। बाबर ने जो नाम अपनी पत्नियों के अपनी "आत्मकथा" में दिए हैं, वह पूर्ण नहीं है। उनसे में कुछ नाम छूटे हुए मालूम देते हैं। उसकी पुत्री गुलबदन बेगम ने उसकी पत्नियों तथा उसके बच्चों की जो सूची दी वह पूरी है। जब बाबर पाँच वर्ष का था (८६४ हि०। १४८८ ई०) तो उसकी सगाई आएशा सुल्तान बेगम, जो कि सुल्तान अहमद मिर्ज़ा मीरान शाही की पुत्री थी, से हुई। आएशा सुल्तान बेगम ने ६०६ हि०। १५०१ ई० में फ़ख्रुन्निसाँ को जन्म दिया, जो कि एक माह के बाद मर गई और तीन वर्ष पश्चात् उसकी मां की भी मृत्यु हो गई।[2] आएशा सुल्तान बेगम की मृत्यु के पश्चात् बाबर ने महमूद मिर्ज़ा मीरान शाही की पुत्री ज़ैनाब सुल्तान बेगम से ६१० हि०। १५०४-१५०५ से विवाह किया। दो अथवा तीन वर्ष पश्चात् वह निःसन्तान ही मर गई।[3] बाबर ने ६१२ हि०। १५०६ ई० में माहम से विवाह किया। माहम के गर्भ से बर-बूद, मिहर जान, ऐसान दौलत, फ़ारुख़, जो कि बचपन ही में स्वर्ग सिधार गए, तथा हुमायूं पैदा हुए।[4] बाबर की चौथी पत्नी का नाम था मासूमा सुल्तान बेगम, जो कि सुल्तान अहमद मिर्ज़ा मीरान शाही की पुत्री थी।[5] बाबर ने मासूमा सुल्तान बेगम से ६१३ हि०। १५०७ ई० से विवाह किया था। उससे एक पुत्री पैदा हुई और सम्भवतः प्रसव काल ही में ६१४-१५ हि०। १५०८-१५०६ ई० में वह स्वर्ग सिधार गई। सम्भवतः ६१४-२५ हि०। १५०८-१५१६ ई० में किसी समय बाबर ने गुल रुख बेगम बेगचिक

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ७११।

२. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, २०६-१०।

३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ४८।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३५८; गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, ६२।

५. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, ६०, २६३।

मुग़ल से विवाह किया।[1] उसके गर्भ से शाहरूख, अहमद, गुलज़ार, जिनकी मृत्यु शैशवकाल ही में हो गई तथा कामरान व अस्करी पैदा हुए। लगभग उसी समय जिस समय उसने गुलरुख से विवाह किया, बाबर ने दिलदार अगचा[2] से भी विवाह किया। दिलदार अगचा के गर्भ से गुलरंग, गुल चेहरा, हिन्दाल, गुलबदन और अलवर जिसकी मृत्यु बचपन ही में हो गई पैदा हुए। बाबर की सातवीं पत्नी का नाम बीबी मुबारिका यूसुफ़ज़ई था। बाबर ने उससे ९२५ हि०। १५१९ ई० में विवाह किया और उसके कोई सन्तान न हुई।[3] इन पत्नियों के अतिरिक्त बाबर अपना समय, गुलनार अगचा तथा नूरगल अगचा, जिन्हें कि फ़ारस के शासक शाह तहमस्प ने उपहार के रूप में ९३३ हि०। में उसके पास भेजी थी, के साथ व्यतीत किया करता था।[4]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७४, ३८८; तारीखे-ए-रशीदी, पृ०, १८३; गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, २३३-३४।

२. गुलबदन बेगम "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, २२५-२६; दिलदार अगचा के लिए देखिए परिशिष्ट।

३. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, ९१—९२, २६६।

४. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, २३२; "अकबर नामा", भाग १, पृ०, १४५।

आठवाँ अध्याय

प्रशासन

प्रशासन

अभी तक इतिहासकारों की यह धारणा रही है कि बाबर एक प्रशासक नहीं था। न उसमें प्रशासक के गुण ही विद्यमान् थे और न ही उसमें प्रशासनिक प्रतिभा थी। किन्तु जब हम उसकी "आत्मकथा" का सूक्ष्म अध्ययन करते हैं तो हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उसमें प्रशासन करने के गुणों का क्रमशः विकास हुआ और तत्कालीन वातावरण में रहकर, उसी वातावरण की परिधि में प्रशासन को चलाने के लिए जो कुछ भी वह कर सकता था, उसने किया। जीवन के विभिन्न पर्वों में जो भी उसने प्रशासनिक कार्य किया बिना उस पर दृष्टि डाले हुए किसी भी व्यक्ति के लिए यह समझना असम्भव होगा कि वह एक कुशल प्रशासक भी था। फ़रग़ना काल में, सबमें पहले जो सन्दर्भ उसके प्रशासन के सम्बन्ध से मिलता है, वह उस समय का है जब कि १४९४ ई० में सुल्तान अहमद तथा सुल्तान महमूद खान उसके देश से अपनी-अपनी सेनाओं को हटा कर स्वदेश चले जाते हैं। बाबर अपनी "आत्मकथा" में लिखता है कि, "इन कार्यों से अवकाश के उपरान्त राज्य को सुशासित तथा सेना को सुव्यवस्थित करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया गया। अन्दीजान का शासन तथा मेरे (दुर्ग) के फाटक की सुरक्षा का भार हसन बिन (पुत्र) याकूब के सुपुर्द किया गया। उश, क़ासिम कुचीन को देने के लिए (करार) निश्चय किया गया। अख्सी और मर्गिनान ऊज़ून हसन एवं अली दोस्त तग़ाई को प्रदान (तँन) किए गए। उमर शैख मिर्ज़ा के शेष बेगों (अमीरों) तथा वीरों को उनकी योग्यतानुसार विलायत, या भूमि (ईर) या यद (मौज़ा) या सरदारी (जिरगा) या वृत्ति (वजह) प्रदान की गई।"[1] इस समय फ़रग़ना का राज्य चारों ओर से महत्वाकांक्षी शासकों से घिरा हुआ था। बाबर की आयु अभी केवल १२ वर्ष की थी, अतएव अपनी दादी तथा अन्य वरिष्ठ उमराव की सहायता से तथा उनके सुझाव पर उसने राज्य की

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३२-३३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४८४।

प्रतिरक्षा का प्रबन्ध करना आवश्यक समझा। गद्दी पर बैठने के पश्चात् अन्य तैमूरी शासकों की भाँति उसने भी अपने अमीरों को उच्च पद, जागीरें तथा गणमान्य व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुसार वृत्ति आदि देकर सम्मानित किया। समय एवं परिस्थितियों को देखते हुए बाबर के लिए यही उचित था कि वह उन सब परम्पराओं को ज़ारी रखे जो कि उसके पिता उमरशेख़ मिर्ज़ा के समय से चली आ रही थी, और प्रशासन को भी उसी प्रकार से चलने दे। न तो उसमें इतनी क्षमता थी कि इस समय वह प्रशासन में किसी प्रकार का परिवर्तन कर सकता और न ही किसी परिवर्तन की आवश्यकता ही थी। अपने परिवार के सदस्यों तथा पुराने अमीरों की भाँति वह भी केवल यही चाहता था कि उसका राज्य बना रहे और उन्हीं अमीरों की सहायता से तथा उनके सुझावों के अनुसार वह अपने पैतृक राज्य पर शासन करता रहे। नवम्बर, १४९७ ई० से समरकन्द को विजय करने के पश्चात् उसने पुनः अपने उमराव को सन्तुष्ट रखने तथा अपने देश की दशा को सुधारने का यत्न किया। समरकन्द को छोड़ कर फ़रगना राज्य के सभी भागों पर निकटवर्ती शासकों के निरन्तर आक्रमणों तथा छापा मारने के कारण जनता की दशा खराब हो गई थी। उन्हें धन तथा बोने के लिए बीज की आवश्यकता थी। ऐसी अवस्था में बाबर ने जनता पर करों का भार डालना और न तलवार की नोक पर ही उनसे कर वसूल करना उचित समझा। इसकी अपेक्षा उसने करों में छूट दे दी। उसने स्वयं इस सम्बन्ध में लिखा, "इस स्थान के लोगों से क्या वसूल किया जाय?"[1] उसकी इस नीति से उसके भाग्य पर बहुत ही बुरा प्रभाव अवश्य ही पड़ा, किन्तु फिर भी इस बात से हमें उसके विचारों तथा जनता की भलाई में विश्वास के बारे में पता चलता है। फ़रगना काल में उसकी प्रशासनिक क्षमता का यद्यपि हमें न कोई आभास मिलता और न ही हमें कहीं अवसर ही मिलता है कि हम प्रशासन के क्षेत्र में उसके कार्यों की सराहना कर सकें। किन्तु हमें कभी भी यह नहीं भूलना चाहिए कि वह इस समय केवल एक किशोर था। उसे प्रशासन का न तो अनुभव था और न ही प्रशासन के सम्बन्ध में उसके विचार परिपक्व थे। भविष्य की महानता की ओर उसने अभी केवल पैर रखा ही था कि उसके शत्रुओं ने उसे उसके राज्य से वंचित कर दिया।

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ८६।

१४९७ से १५०४ ई० तक का काल उसके लिए बहुत ही दुःखमय था। निष्कासन के इस काल में उसे अपने जीवन के साथ संघर्ष करना पड़ा। कहीं भी उसे शान्ति न मिली। मध्य एशियाई राजनीति करवटें बदल रही थी और उसका भाग्य बीच ही में टँगा हुआ था। ऐसी स्थिति में कब और कहाँ वह अपने प्रशासनिक गुणों का परिचय देता? काबुल को विजय करने के बाद जब उसे यह अनुभव हुआ कि उसके जीवन में कुछ स्थिरता आ गई है, वह एक राज्य का शासक हो गया है, तो अपनी सुविधा के लिए उसने कुछ प्रशासनिक व्यवस्था करने का निश्चय किया। किन्तु ऐसा करने से पूर्व उसने काबुल की भौगोलिक दशा, वहाँ रहने वाले लोगों की मनोवृत्ति, स्वभाव, आचरण, उत्पादन, आय के साधन तथा वहाँ की प्रशासनिक इकाइयों की जानकारी प्राप्त कर लेना उचित समझा। उसे यह जानने में देर न लगी कि काबुल एक पहाड़ी देश है, किन्तु कहीं-कहीं इस देश से भी हरे-भरे चरागाह और मैदान हैं। यही नहीं काबुल एक महान् व्यापारिक केन्द्र भी है।[1] बाबर ने देखा कि इस देश में न जाने कितनी अफ़ग़ान

---

१. बाबर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि, "किस प्रकार अरब वाले अरब के अतिरिक्त समस्त स्थानों को अजम करते हैं उसी प्रकार हिन्दुस्तान वाले हिन्दुस्तान के अतिरिक्त समस्त स्थानों को खुरासान कहते हैं। हिन्दुस्तान तथा खुरासान के स्थल मार्ग में दो व्यापार की मण्डियाँ हैं—एक काबुल, दूसरी कन्धार, काबुल में काशगर, फरग़ाना, तुर्किस्तान, समरकन्द, बुखारा, बल्ख, हिसार तथा बदख्शा से कारवाँ आते रहते हैं। कन्धार में कारवाँ खुरासान से आते हैं। यह देश हिन्दुस्तान तथा खुरासान के मध्य स्थित हैं। यह बड़ा अच्छा व्यापारिक केन्द्र हैं। यदि व्यापारी खिता अथवा रूम जावें तो उनको अधिक लाभ नहीं हो सकता। प्रत्येक वर्ष ७—८ अथवा १०,०००घोड़े काबुल आते रहते हैं। हिन्दुस्तान से भी १०–१५, २०,००० घरवालों के कारवान आते रहते हैं। वे हिन्दुस्तान से दास, सफेद, कपड़े, मिश्री, साधारण तथा उत्तम प्रकार की शकर तथा सुगन्धित जड़ी-बूटियाँ लाते हैं। बहुत से व्यापारी १० प्रतिशत ३० एवं ४० प्रतिशत लाभ प्राप्त करके भी सन्तुष्ट नहीं होते।

तथा ग़ैर अफ़ग़ान जातियाँ रहती हैं। इसकी घाटियों तथा मैदानों में तुर्क, ऐमक, अरब, इसके शहरों में और गांवों में सार्ट, रेगिस्तान में पेशाई, पाराजी, ताजिक, दिर्की, तथा अन्य अफ़ग़ान जातियाँ रहती हैं। काबुल की पश्चिमी पहाड़ियों से हज़ारा, नुकदारी अफ़ग़ान जातियां, उत्तर-पूर्व तथा दक्षिणी पहाड़ी क्षेत्र में काफिर, कितूर (गवार), गिवरिक, और अन्य अफ़ग़ान जातियाँ रहती थीं। इन सभी जातियों की भिन्न-भिन्न भाषाएँ तथा रहन-सहन का ढंग भिन्न था। भाषा तथा जाति के मामलों में उनमें बहुत ही अन्तर था।

काबुल में रह कर बाबर को दो बातों की आवश्यकता प्रतीत हुई। प्रथम यह कि यहाँ के देशवासियों पर किसी न किसी तरह से प्रभुत्व स्थापित किया जाय तथा दूसरे कि अपने अमीरों को भी इस बात पर बाध्य किया जाय कि उसके प्रति वे निष्ठावान बने रहें। अब तक वह यह भी समझ गया था कि यह देश तलवार का है, और सरलता से अफ़ग़ान तथा ग़ैर-अफ़ग़ान जातियाँ काबू में नहीं आएगी। अतएव अपने अमीरों तथा काबुल के निवासियों पर अपना आधिपत्य पूर्ण रूप से स्थापित करने के लिए उसे केन्द्रीय प्रशासन की आवश्यकता हुई। ऐसे प्रशासन की स्थापना का श्रीगणेश उसने १५०७ ई० में "पादशाह" की पदवी को ग्रहण करके किया।[१] बाबर द्वारा इस उपाधि के ग्रहण करने का विषय

खुरासान, रूम, ईराक़, तथा चीन की वस्तुएं काबुल में मिल जाती हैं। हिन्दुस्तान का तो काबुल बाज़ार ही है—बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २०२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, १४-१५।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३४४; गुलबदन बेगम ने लिखा है कि,

"उसी वर्ष हज़रत फिरदौस मकानी ने अपने अमीरों तथा सब लोगों को आदेश दिया कि उन्हें बाबर बादशाह कहा जाया करे अन्यथा हुमायूं बादशाह के जन्म के पूर्व उन्हें मिर्ज़ा बाबर के नाम से पुकारा जाता था, अपितु सभी बादशाह के पुत्रों को मिर्ज़ा कहा जाता था। हुमायूं बादशाह के जन्म के वर्ष में उन्होंने अपने आपको बादशाह कहलाया।" "हुमायूं नामा" (अनु०), पृ०, ६०।

इतिहासकारों के लिए विवाद का विषय रहा है। श्रीमती बेव्रिज ने एक स्थान पर इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन परिस्थितियों का स्पष्टरूप से वर्णन किया है, जिन्होंने बाबर को इस उपाधि ग्रहण करने पर विवश किया। उन्होंने लिखा है कि उसकी "आत्मकथा" में दिए गए विभिन्न उद्धरणों से यह पता चलता है कि इस समय बाबर ने किस उद्देश्य में अपनी प्रभुसत्ता पर बल देने के लिए यह पग उठाया। इस समय वही एक तैमूरी शासक था और एक पराक्रमी व्यक्ति। तैमूरी शासकों में जो स्थान हुसैन बैक़रा का था, उसने वह स्थान ले लिया था। लम्बे अर्से से उसकी कार्यवाहियों को देखकर ऐसा लगता था कि वह तैमूर बेग का स्थान लेना चाहता था। इस समय वे लोग भी थे, जो कि उसकी अधीनता को मानने के लिए तैयार न थे—वे तैमूरी जिन्होंने कि विद्रोह कर दिया था, वे मुग़ल जिन्होंने कि उन्हें सहायता पहुँचाई थी, और जो कि सईद खान चग़ताई की, यदि वह अपने आश्रयदाता एवं सहायकों के प्रति विश्वासघात करने से मना न करता, सहायता करते, इसके अलावा वे अरग़ून तथा कुलीन चग़ेज़ खानी भी थे, जिन्होंने कि उसकी प्रभुसत्ता स्वीकार न की। पुराने ज़माने में मुग़ल ख़ाक़ान पादशाह (सार्व भौम) थे, इतिहास में पादशाह शब्द का प्रयोग सातूक़ बुग़रा खान पादशाह ग़ाजी के लिए हुआ है, मिर्ज़ाओं को लेकर किसी तैमूरी को इस उपाधि का प्रयोग करने का गौरव प्राप्त न हुआ। जब तैमूरी शक्तिशाली हो गए बाबर के पितामह आबू सईद ने बाबर के चग़ताई नाना यूनुस के ऊपर अपनी सार्वभौमिकता का दावा किया। ख़ाक़ानो की तरह बाबर का उसी प्रकार अपनी सार्वभौमिकता का इस समय दावा करना अवसर के उपयुक्त था। बाबर का सर्वोपरि होना, मुग़लों तथा चग़ताईयों के ऊपर अधिराज होने की घोषणा करने के बराबर था। बाबर ने ऐसा उस समय किया जबकि आकाश से बादल छट गए, मिर्ज़ा खान का विद्रोह दबा दिया गया था, अरग़ून परास्त किए जा चुके थे और उनके खोये हुए राज्य के सामने वह उनसे अधिक शक्तिशाली था और काबुल एक बार पुनः उसके हाथों में था।"[1] इन कारणोंतथा परिस्थितियों के अतिरिक्त कुछ और कारण एवं परिस्थितियाँ थी जिसमें बाबर ने उपरोक्त पदवी ग्रहण की। डा० राम प्रसाद त्रिपाठी ने लिखा है कि अपनी सार्वभौमिकता का दावा करने की आवश्यकता उसके सामने आ गई थी। पूर्व में आटोमनो की बढ़ती हुई शक्ति,

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३४४ (नोट)।

फ़ारस में सफ़वियों का उद्भव, और मुवारुन्नहर (मध्य-एशिया) में शैवानियो के वढ़ते हुए प्रभुत्व के कारण ऐसा प्रतीत होने लगा कि तैमूर के वंशजों जिनका कि कभी उन सभी शक्तियों पर प्रभुत्व था, का कोई नाम-निशान तक न शेष रहेगा। आटोमन सुल्तान ने क़ैसर, सफ़वियों ने शाह की और शैवानियों ने, सुल्तान की उपाधि ग्रहण की थी। सम्भवतः आवू सईद मिर्ज़ा के विचारों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए वावर ने भी पादशाह की महान् एवं विशिष्ट उपाधि ग्रहण की।[1] श्रीमती वेव्रिज तथा डा० राम प्रसाद त्रिपाठी के विचारों से ऐसा प्रतीत होता है कि वावर का ध्यान अपनी निजी आवश्यकताओं की ओर कम था और वह तत्कालीन शासकों की भाँति अपने व्यक्तित्व को भी ऊपर उठाने, तथा तैमूरी वंश की प्रतिष्ठा को वनाए रखने के लिए ही लालायित था। वावर के सामने दोनों वातें थीं, अपनी आवश्यकता तथा अपने व्यक्तित्व को समकालीन शासकों के वरावर उठाने का विचार। अतएव १५०७ ई० में जव उसने पादशाह की पदवी ग्रहण की तव से उसके जीवन के इतिहास में एक नए अध्याय का प्रारम्भ होता है और इसी समय में वादशाहत के सम्वन्ध में उसके विचार पनपने लगते हैं, जो कि आगे चलकर उसके राजत्व-सिद्धान्त का रूप ले लेते हैं। अन्य शब्दों में वावर का पादशाह की पदवी ग्रहण करना उसके जीवन की एक महत्वपूर्ण घटना थी।[2]

---

१. डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "सम आसपेक्टस आफ़ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन" पृ०, ११०-११।

२. डा० वनारसी प्रसाद सक्सेना, श्रीमती वेव्रिज तथा डा० राम प्रसाद त्रिपाठी के मत से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि पादशाह की पदवी को ग्रहण करने के वारे में वहुत सी वातें कही गई हैं। कुछ लोगों ने यह समझा है कि इसके माने एक नए राजत्व सिद्धान्त का प्रतिपादन करना और अपनी उस इच्छा को, कि वह तैमूरी वंश का सवसे महान् प्रतिनिधि है, अभिव्यक्ति करना था। किन्तु अमीर या सुल्तान के साथ-साथ यदि मिर्ज़ा की पदवी लगी होती तव भी उस उद्देश्य की पूर्ति हो गई होती। तैमूर को भी लोग अमीर कहते थे, और पादशाह की उपाधि की अनुपस्थिति में शासक के रूप में न उसके प्रभुत्व में न उसकी प्रतिष्ठा में कोई कमी आई। वावर ने केवल फ़ारस के शाह के उदाहरण का

बाबर को अपने वंश पर अहंकार था और उसका विश्वास था कि केवल तैमूरियों को ही शासन करने का अधिकार है।[1] बदख्शां के सिंहासन पर उत्तराधिकार के प्रश्न के सम्बन्ध में जो पत्र उसने सुल्तान सईद को लिखा, उसमें उसने सुलेमान मिर्ज़ा के वंशानुगत अधिकार पर ज़ोर दिया।[2] परन्तु यह कहना कठिन है कि वह पूर्णरूप से तुर्की-मंगोल राजत्व सिद्धान्त में विश्वास रखता था। राजत्व सिद्धान्त के सम्बन्ध में उसके विचार समय समय पर बदलते रहे लेकिन फिर भी वंशानुगत निरंकुश शासन में उसका दृढ़ विश्वास था।[3] हिन्दुस्तान को विजित कर, वहाँ के सिंहासन पर बैठने को, वह केवल अपना पैतृक एवं जन्मजात अधिकार समझता था। बाबर ने १५२६ ई० में जो पत्र हुमायूं को लिखा उसे भी उसके राजत्व सिद्धान्त पर प्रकाश पड़ता है। इसी पत्र में बाबर ने हज़रत सादी के शेर की पंक्तियाँ लिखीं और यह लिखा कि बादशाही के बन्धन से बड़ा कोई बन्धन नहीं।[4]

अनुसरण किया और इस अभियोग से बचने के लिए उसने शाह के साथ-साथ 'पादशाह' और लगा दिया, जिसका अर्थ एक ही था।" देखिए, उनका शोध-निबन्ध "आइडियल्स आफ़ मुग़ल सावरेन्स", पृ०, ६१।

१. डा० एम० एल० राय चौधरी, "दि स्टेट एण्ड रिलिजन इन मुग़ल इण्डिया", पृ०, ७६।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १; पृ०, २७४; तारीख़-ए-रशीदी (अनु०), पृ० ३८६; अकबर नामा (मूल), भाग १; रिज़वी पृ०, ११५; "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ४०६; डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "सम आस्पेक्टस आफ़ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन", पृ०, १११।

३. बंगाल में प्रचलित उस प्रथा के बारे में कि जो भी व्यक्ति चाहे शासक को मार कर गद्दी पर बैठ जावे और तत्पश्चात् अमीर एवं अफसर उसका अभिवादन भी करें, पर बाबर आश्चर्य प्रकट करता है। बंगालियों के उस राजत्व सिद्धान्त पर कि, "हम लोग सिंहासन के प्रति वफ़ादार हैं और हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं, जो उस पर बैठता है, पर भी वह आश्चर्य प्रकट करता है।"—बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ४८२-८३।

४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६२६; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ०, २८६।

बाबर ने हुमायूं को सुझाव दिया कि वह योग्य तथा अनुभवी बेगों (अमीरों) से परामर्श लेकर कार्य किया करे।[1] बाबर के यह विचार किसी भी तरह अन्य शासकों से भिन्न नहीं, लेकिन फिर भी पूर्व मध्यकालीन भारत के सुलतानों और राज प्रतिष्ठा के प्रति उसके दृष्टिकोण में बहुत अन्तर था। सुल्तान बलबन, अलाउद्दीन, मुहम्मद बिन तुग़लक, सिकन्दर लोदी तथा इब्राहीम लोदी पूर्ण रूप से निरंकुश शासक थे, और उनमें निरंकुशता कूट-कूट कर भरी हुई थी। अपने निजी तथा राजनीतिक जीवन में वे सदैव उलमा, उमराव तथा जनता में कहीं सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम समझते रहे। उन्होंने कभी भी इस बात की परवाह नहीं की कि वे इस्लामी कानूनों का पालन या उल्लंघन कर रहे हैं या नहीं। जो उन्होंने ठीक समझा किया। किन्तु बाबर ने अपने राजत्व-सिद्धान्त को मानवता के रंग में रंग दिया। उसने कभी भी अपने को समाज के विभिन्न वर्गों से दूर न रखा। वह अपने अमीरों के साथ मिलता-जुलता था, उनके निमंत्रण स्वीकार करता था, उनके साथ मदिरापान करता था, उनके साथ भोजन करता था क्योंकि वह जानता था कि सामन्त युग में शासक की प्रतिष्ठा सामन्तों के सहयोग पर निर्भर करती है। किन्तु उसका लोक जीवन निजी जीवन से भिन्न था। दरबार में वह दूसरे ही प्रकार से व्यवहार करता था। अपने आदेशों के पालन तथा दरबारी शिष्टाचार को बनाए रखने के लिए उसने दैवी-शक्ति के सिद्धान्त का पालन न कर अपने निजी व्यक्तित्व पर निर्भर रहना पसन्द किया।

राजनीति के रंगमंच पर बाबर ऐसे समय आया जब कि दो विरोधी प्रवृत्तियों में संघर्ष हो रहा था। पहली प्रवृत्ति साम्राज्य के विभाजन के विरोध में और दूसरी उसके पक्ष में। जब बाबर ने अपने पूर्वज अमीर तैमूर के विशाल साम्राज्य को छिन्न-भिन्न होते हुए देखा तो उसे लगा कि साम्राज्य का विभाजन साम्राज्य के हित में नहीं होता और यही कारण था कि काबुल-काल में एक अवसर पर उसने कहा कि शासन में किसी प्रकार की साझेदारी के बारे में कभी भी सुना नहीं गया। इससे पूर्व भी जब भी उसके उमराव ने उसके तथा उसके भाइयों के

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६२६-२७; बाबर ने मिर्ज़ा कामरान को भी इसी प्रकार के सुझाव दिए—देखिए, एच० बेव्रिज का शोध-निबन्ध, "ए लेटर फ्राम दि इम्परर बाबर टू हिज़ सन कामरान", जरनल आफ रायेल एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, (न्यू सिरीज़), १६१०, पृ०, ३२६।

मध्य पैतृक राज्य के बँटवारे के बारे में बात की तो उसे उनकी बात पसन्द न आयी, किन्तु वह ऐसी स्थिति में कभी भी न रहा कि उनका विरोध कर सकता। हिन्दुस्तान-काल में जब उसने हुमायूं को साम्राज्य के बँटवारे के सम्बन्ध में सुझाव दिया तो उसने वही किया जो अमीर तैमूर ने समरकन्द में किया। फल-स्वरूप अमीर तैमूर के साम्राज्य की भाँति उसका साम्राज्य भी अस्थाई सिद्ध हुआ।

संक्षेप में काबुल तथा हिन्दुस्तान काल में समय की आवश्यकतानुसार बाबर की राजनीतिक विचारधारा परिवर्तित होती रही। यहाँ हमें ध्यान में रखना चाहिए कि समकालीन वातावरण एवं राजनैतिक स्वार्थ दोनों ही तत्व उसकी विचारधारा के निर्माण करने में सहायक थे और राजनीतिक स्वार्थ ही सदा उसके मार्ग का निर्देशन करता रहा। कुछ भी हो, शासक का राज्य में क्या स्थान होना चाहिए ? उसे किस प्रकार व्यवहार करना चाहिए ?[1] इन सब बातों पर उसके विचार बिल्कुल निश्चित थे। उसका विचार था कि, "शासन में शासक सर्वोच्च स्थान ग्रहण करता है।" उसको शासन करने का वंशानुगत अधिकार प्राप्त होता है और उसके उमराव तथा उसकी जनता को उससे स्नेह होना चाहिए तथा डरना भी चाहिए।

---

१. बाबर ने कामरान को लिखा कि, "देखो तुम अच्छे मार्ग से कभी न भटकना, और तुम्हारे दिमाग में सदैव ख्वाजा हाफिज के यह शब्द बने रहें, "वृद्ध पुरुष अपने अनुभव की बात बताते हैं।" हां, यही मैं तुमसे, अपने बच्चे से कह रहा हूँ कि तुम इस वृद्ध की हिदायतों को सुनो—"तुम कभी भी युवा अवस्था के लोगों की बातों में आसानी से न आना और न ही उनके हाथों में राज कार्य देना। तुम सदैव वृद्ध, अनुभवी, उदार एवं निष्ठावान तथा सत्यवादी बेगों जो कि परामर्श बहुत अच्छी तरह से देते हैं, उनकी इच्छाओं तथा सुझावों के अनुसार कार्य करना। तुम उन लोगों की मनोवृत्ति का भी उल्लंघन न करना जो कि कार्य करने में होशियार हैं, मृदु भाषी हैं, तथा तर्क करने में कुशल हैं। कभी भी चापलूसों तथा कपटी लोगों की बातों में न आना. ..एच० बेव्रिज का शोध निबन्ध, "ए लेटर आफ दी इम्परर बाबर टू हिज सन कामरान," जरनल आफ एशियाटिक सोसाइटी आफ बंगाल, (न्यू सिरीज), १९१०, पृ०, ३२६।

"पादशाह" की उपाधि ग्रहण करने के पश्चात् बाबर ने अपने दरबार को ईरानी ढंग से व्यवस्थित करना प्रारम्भ किया। उसे केन्द्रीय स्तर पर विभिन्न प्रशासनिक विभागों की आवश्यकता महसूस हुई। अतएव उसने दीवान-ए-विज़ारत विभाग की स्थापना की और मिरीम को दीवान नियुक्त किया। लगभग इसी समय वली को उसने ख़ज़ान्ची नियुक्त किया। कन्धार के युद्ध के पश्चात् हमें कुछ अन्य अफ़सरों के नाम उसकी 'आत्मकथा' में मिलते हैं, उदाहरणार्थ-दोस्त-ए-नासिर और कुल-ए-बायज़ीद (भोजन चखने वाले), मुहम्मद बख़्शी तथा तग़ाई बख़्शी, बख़्शी के पद पर कार्य कर रहे थे। यदि 'आत्मकथा' में दिए गए नामों की सूची बनाई जाय और व्यक्तियों की पदवियाँ एकत्र कर ली जायं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अफ़सरों की चार श्रेणियाँ थीं। प्रथम श्रेणी में बाबर के निजी सेवक थे, जैसे दर्बान, बकावल, शरबतची, यसावल, रिकाब पकड़ने वाला, सामानची, घड़ियालची आदि-आदि। यह सब अफ़सर उसके घरेलू विभाग के अफ़सरों में से थे। दूसरी श्रेणी में सद्र, काज़ी, कोतवाल, मुहतासिब, ख़ातिब, ख़ज़ान्ची तथा बख़्शी थे। तीसरी श्रेणी में वे अफ़सर थे जो कि बाबर के निजी अफ़सर के रूप में कार्य करते थे जैसे—शाही मुहरदार, परवान्ची, वाक़्या नवीस तथा किताबदार। चौथी श्रेणी में दरबार की व्यवस्था करने वाले तथा सैन्य विभाग के कुछ अफ़सर थे, जैसे—करची, कुरबेगी, मुशाविर, अश्वारोहियों का सरदार आदि-आदि। यह सब अफ़सर बख़्शी के अधीन थे। बख़्शी के अधीन तोपख़ाने के दरोग़ा, उस्ताद अली क़ुली तथा मुस्तफ़ा भी रहे होंगे। यह सब नाम हमें फ़ारस साम्राज्य के प्रशासन में मिलते हैं, अतएव हम कह सकते हैं कि बाबर ने ईरानी प्रशासन के विभिन्न भागों को स्थानीय जनता की आवश्यकतानुसार काबुल में स्थापित करने की चेष्टा की। यदि अगले ११ वर्षों में वह पश्चिमी एवं पूर्वी अभियानों में व्यस्त न होता तो इस प्रशासन के विभागों को बहुत ही अच्छी तरह से सुव्यवस्थित करने में सफल होता।

काबुल को विजित करने के बाद बाबर ने वहाँ की विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों को ज्यों का त्यों बनाए रखा। काबुल राज्य १४ तुमानों[1] तथा ७ बलूकों[2]

---

१. लमग़ान, निन्गनहर, अली शांग, अलानगर, कुनार, निजराऊ, पंजहीर, गोरबन्द, मुहुगुर, गज़नी, ज़ुरमुत, फ़रमूल, बगाश, बाजौर—यह काबुल के १४ तुमानों में से थे। काबुल के ७ बलूकों में से थे, नूर घाटी, चग़ान

तथा २ विलायतों[1] में विभाजित था। इन विभिन्न प्रशासनिक इकाइयों के अफ़-सरों के बारे में बाबर ने कुछ भी नहीं लिखा किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि कि प्रत्येक तुमान में एक दरोग़ा रहा होगा जिसके हाथों में वहाँ का प्रशासन होगा। बलूकों के शासन का भार किस पर था यह कहना कठिन है। सम्भवतः उनका शासन स्थानीय सरदारों के हाथों में रहा होगा। काबुल की विलायत का प्रशासन उसने अपने हाथों में रखा और ग़ज़नी का प्रशासन जहाँगीर मिर्ज़ा के हाथों में रहा और उसके पश्चात् नासिर मिर्ज़ा से हाथों में रहा।

पूर्वी तथा पश्चिमी अभियानों में निरन्तर व्यस्त रहने के बाद भी बाबर ने काबुल को समृद्धिशाली बनाने का प्रयास किया और यह चेष्टा की कि इस राज्य की वार्षिक मालगुजारी (जमा) भी बढ़े।[2] इस हेतु उसने कुछ सुधार कृषि के क्षेत्र में किए और कुछ नई फसलों को उगाने की व्यवस्था की। निन्गनहर तुमान में जहाँ कि गेहूँ तथा चावल की अच्छी पैदावार होती थी, वहाँ १५०८–१५०९ ई० में उसने अनेक उद्यान लगवाए। फलों के यह बाग़ सुखरूद तथा अदीनापुर के दुर्ग के बीच में लगवाए गए थे और बाग़-ए-वफ़ा के नाम से प्रसिद्ध थे। लाहौर और दीपालपुर को विजय करने के एक वर्ष पश्चात् बाबर ने वहाँ, गन्ने की खेती कर-

---

सराय, अलासै, बदराऊ ग़ज़नी, सवाद, और हश नगर। दो विलायतों में से थे, काबुल तथा ग़ज़नी।

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २१७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २१७; रिज़वी, "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ८८; इससे पूर्व नासिर मिर्ज़ा के पास नीनानहर का तुमान, मदरावर, नूर घाटी, नूरगल, तथा चग़न सराय थे—बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, २२७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर); पृ०, ३२; नासिर मिर्ज़ा को ग़ज़नी का प्रशासन देने के पश्चात् बाबर ने अब्दुर रज़्ज़ाक मिर्ज़ा को यह सब प्रदेश सौंप दिए—बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ०, ३४४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ८८,

३. १५०४ में काबुल की कुल जमा ८ लाख शाहरुखी थी—बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, २२१; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २८।

बाई तथा केलों के पेड़ लगवाए। गन्ने की खेती इतनी अच्छी होती थी कि अधिक से अधिक मात्रा में चीनी, तैयार करके बुख़ारा और बदख़्शाँ भेजी जाने लगी। निश्चित ही रूप से बाबर को इन नए कृषिक सुधारों से आमदनी हुई होगी और राज्य को लाभ पहुँचा होगा।[1]

किन्तु काबुल की बढ़ती हुई जनसंख्या के सामने विभिन्न साधनों से प्राप्त धन भी उसकी आर्थिक कठिनाइयों को दूर न कर सका जिसके फलस्वरूप उसे अफ़ग़ान जातियों के ऊपर अधिक से अधिक कर लगाना पड़ा और जब वे उस कर को देने में असफल रहे तो उसे उनके विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ करनी पड़ीं।[2] काबुल की भौगोलिक दशा को देखते हुए तथा अफ़ग़ानों की कबीली मनोवृत्ति को देखते हुए कर वसूल करना कोई सरल बात न थी। केवल व्यापारियों से तमग़ा और अन्य कुछ प्रदेशों से भूमिकर ही बाबर को मिल पाता था। कुछ भी हो अपने सीमित साधनों के द्वारा बाबर ने काबुल में विद्रोहों का दमन किया, वहाँ की प्रशासनिक व्यवस्था बनाए रखी तथा साम्राज्य स्थापित करने की दिशा में भी ठोस कदम उठाए। काबुल के राज्य पर उसने अपने बेगों, अमीरों तथा स्थानीय सरदारों की सहायता से शासन किया।

पानीपत के युद्ध के पश्चात् मुग़ल साम्राज्य की नींव बाबर ने डाली। अगले चार वर्षों में निर्माण कार्य करने के साथ उसे प्रादेशिक शक्तियों से लगातार संघर्ष भी करना पड़ा। इसी अवधि में उसने साम्राज्य की सीमाओं का विस्तार किया और सीमाओं को निर्धारित किया। उसकी मृत्यु के समय मुग़ल साम्राज्य की सीमाएँ उत्तर-पूर्व में आक्सस को छूती थी और उसके साम्राज्य के पश्चिमी भाग में कुबैदियाँ, बल्ख़, बदख़्शाँ, काबुल, गज़नी, कुन्दुज़ और कन्धार के प्रान्त सम्मिलित थे। हिन्दुस्तान में उसका साम्राज्य सिन्ध नदी से लेकर पूर्व में उत्तरी बिहार तक फैला हुआ था। इस विशाल क्षेत्र में पंजाब, सिन्ध, मुल्तान, अबहोर, सिरसा, हाँसी, हिसार आदि सतलज नदी तक के प्रदेश सम्मिलित थे। दक्षिण-पश्चिम में बाबर का प्रभुत्व सम्भल, अलवर, धौलपुर, ग्वालियर, चन्देरी और ब्याना पर था। इस प्रकार अपने जीवन काल ही में बाबर ने उत्तर, उत्तर-पश्चिम,

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २०८।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २२८-५३।

बाबर - साम्राज्य
१५३० ई०

उत्तर

तिब्बत

शाहरुखिया
मर्ज़दवान
ताशकंद
खोजंद
मारगीलान
अंदेजान
असफ़रा
समरकंद
फ़रग़ाना
कुरशी
सुख्खर
हिसार
ओ क्सि आ ना
तिरमिज
मर्व
ट्रांस
शिबर्गन
बल्ख
मैमना
कुंदुज
बदख़्शां
खो रा सा न
कहमर्द
हिन्दूकुश
हिरात
ह ज़ा रा
काबुल
अफ़ग़ानिस्तान
ग़ज़नी
कंधार
खोतन
काशगर
बाजौर
स्वात
का श्मी र
बलूचिस्तान
पेशावर
अटक
श्रीनगर
मालोत
नोशेरा
सियालकोट
भीरा
लाहौर
जलंधर
मुल्तान
दिपालपुर
सरहिंद
अम्बाला
सामाना
पानीपत
हिसार
दिल्ली
सम्भल
बदायूं
बहराइच
अवध
जौनपुर
हाजीपुर
तिलिमागढ़ी
कलात
भक्खर
सेहवान
रा ज स्था न
मारवाड़
अजमेर
मेवात
मथुरा
खनवा
फ़तहपुर सीकरी
धौलपुर
ग्वालियर
कन्नौज
कालपी
चंदेरी
रणथम्भौर
चित्तौड़
अमरकोट
ठट्ठा

अरब सागर

बंगाल की खाड़ी

गुजरात
अहमदाबाद
चम्पानेर
उज्जैन
भीलसा
रायसेन
ओरछा
गोंडवाना
बंगाल
खानदेश
असीरगढ़
ग्वालीगढ़
दौलताबाद
बरार
उड़ीसा
अहमदनगर
बीजापुर
बीदर
गोलकुंडा
रायचूर
राजमुंदरी
विजयनगर साम्राज्य
कांची
तंजौर
मदुरा

साम्राज्य की सीमा

दक्षिण -पश्चिम तथा पूर्व में मुग़ल साम्राज्य की सीमाओं का निर्धारण किया।

हिन्दुस्तान में उसने अपने को एक ऐसे देश में पाया जहाँ की परम्पराएँ भूमि की अन्तिम सतह तक पहुँच चुकी थीं और उन रीति-रिवाजों तथा परम्पराओं को उखाड़ फेंकना इतना सरल कार्य न था। अतएव बाबर ने बड़ी सावधानी से यहाँ शासन करने की चेष्टा की। यहाँ की सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था को उसने छेड़ना उचित न समझा। न ही इस बात की आवश्यकता थी कि प्रचलित प्रशासन के स्थान पर एक नई प्रशासनिक व्यवस्था या शासन प्रणाली लागू की जाय। हाँ; अपने अमीरों को प्रशासन में स्थान देने के लिए, अफ़ग़ान तथा ग़ैर-अफ़ग़ान अमीरों को अपनी ओर मिलाने के लिए, देश के विभिन्न भागों में शान्ति और सुरक्षा स्थापित करने के लिए तथा अपने प्रभुत्व को बनाए रखने के लिए बाबर को ऐसी शासन-प्रणाली की स्थापना करनी पड़ी जो कि उपरोक्त सभी लक्ष्यों को प्राप्त करने में उसे सहायता पहुँचा सके।

जब भी कभी मध्य युग में किसी साम्राज्य की स्थापना हुई, तो प्रारम्भ में शासन का स्वरूप सैनिक ही रहा। सेना की ही सहायता से विरोधी तत्वों का दमन किया गया। और अधिक से अधिक प्रदेश को अपने अधीन लाने की चेष्टा की गई। हिन्दुस्तान में बाबर के शासन का स्वरूप भी कुछ ऐसा ही था। जिस प्रशासन की स्थापना उसने की, वह केन्द्रीयकरण की नीति पर आधारित था। केन्द्रीय शासन में केवल दो प्रमुख विभाग थे। सम्राट के पश्चात् अफ़सरों की श्रेणी में सबसे उच्च स्थान वज़ीर का था। इस पद पर ख्वाजा निज़ामुद्दीन ख़लीफ़ा था, जो कि बहुत ही कुशल व्यक्ति था[1]। मुग़ल सम्राट बाबर तथा उसके उमराव

१. उसका सम्बन्ध खुरासान के एक कुलीन परिवार से था। १४९४-९५ ई० की घटनाओं का उल्लेख करते हुए बाबर प्रथम बार उसके नाम का उल्लेख करता है; बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ० ५५; और तब से निरन्तर वह अपने स्वामी के साथ रहा। ९०३ हि० ।१५०७-१५०८ ई० में बाबर ने उसके हाथों में काबुल का शासन सौंपा, बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५६५; मिर्ज़ा हैदर के अनुसार सभी उमराव में उसका सबसे ऊपर स्थान था। तारीख़-ए-रशीदी, पृ०, २८७; ९१६ हि० । १५१०-११, में वह बाबर के साथ ट्रान्सआक्सेनियन अभियान पर गया; अहसान-उत-

सभी उसको आदर की दृष्टि से देखते थे। कुलीन परिवार से सम्बन्धित होने के और इस उच्च पद पर आसीन होने के कारण वह राज्य के सभी कार्यों को देखभाल किया करता था तथा सभी पर उसका प्रभाव रहता था। सम्भवतः इसी कारण शैख़ ज़ैन ने उसको मुकर्रब अल हज़रत अल सुल्तान अलमद अल दौलत अल खक़ान (हजरत सुल्तान के बहुत ही निकट तथा ख़ाकान के साम्राज्य का आधार (स्तम्भ) कहा है। इसी प्रकार तारीख़ें सलातीनें अफ़गना के रचयिता, अहमद यादगार का मत है कि उसे राज्य कार्य के सभी अधिकार प्राप्त थे। उसे शासक का पूरा-पूरा सहयोग प्राप्त था तथा उसके आदेश सम्राट के आदेशों के बराबर थे[1]। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं है कि खलीफ़ा बाबर का विश्वास पात्र था और बाबर के प्रति उसे निष्ठा थी। उसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर ही बाबर ने उसे शाही भाग्य का मुख्य स्तम्भ कहा और उसे सम्मानित किया डा० रामप्रसाद त्रिपाठी के अनुसार निज़ामुद्दीन ख़लीफ़ा बाबर के प्रशासन के वित्तीय एवं राजनीतिक विभाग का अध्यक्ष था। शासन में उसका वही स्थान था जैसा कि दिल्ली सल्तनत के वज़ीर का। उसने अनेक अभियानों में भाग लिया। बाजौर अभियान में सेना का नेतृत्व उसने किया। खनवा के युद्ध से पूर्व उसने अपनी देख-रेख में खाइयाँ खुदवाई और इस कार्य के लिए लोगों को नियुक्त भी किया। पूर्वी तथा चन्देरी अभियानों में भी उसने भाग लिया।

तवारीख (अनु०) भाग २, पृ०, १३३। उसने बाबर के साथ हिन्दुस्तान के अभियानों में भी भाग लिया और सिन्ध के अरग़ून शासक के परिवार के साथ पारिवारिक सम्बन्ध भी स्थापित किए। उसके भाई सुल्तान जुनैद बरलास का विवाह बाबर की बहन शहरबानू बेगम के साथ हुआ था और उसकी अपनी पुत्री का विवाह सिंध के शासक शाह हुसैन अरगून के साथ हुआ था। उसे तीन पारिवारिक उपाधियां प्राप्त थी—सैय्यद, ख्वाजा, बरलास तुर्क, तथा उसको चार पद, अमीर, वकील, सुल्तान तथा खलीफा, प्राप्त थे। डा० रमाशंकर अवस्थी, "दि मुग़ल इम्परर हुमायूं" पृ०, ४८; डा० एस० के०बनर्जी, "हुमायूं बादशाह" भाग १, पृ०, १७-१८।

१. अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना," पृ०, १३०; डा० रमा शंकर अवस्थी, "दि मुग़ल इम्परर हुमायूं", पृ०, ४८-४६; डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "सम आस्पेक्टस् आफ मुस्लिम एडमिनिस्ट्रेशन", पृ०, १६७।

उसके बारे में जो विवरण दिया गया है, उससे ऐसा प्रतीत होता है कि उसे दीवानी तथा सैनिक विभाग दोनों में ही कार्य करना पड़ता था। बाबर की मृत्यु तक वह वज़ीर के पद पर रहा। आवश्यक ऐतिहासिक सामग्री के के अभाव में यह कहना कठिन है कि दीवान-ए-विज़ारत विभाग में उसका क्या योगदान रहा। कुछ भी हो, मीर ख़लीफ़ा ने अपने स्वामी की सहायता, साम्राज्य के विस्तार तथा उसे सुदृढ़ करने में की। इन दोनों कार्यों में सम्भवतः अपने सम्राट के साथ वह इतना व्यस्त रहा कि दीवान-ए-विज़ारत के अन्य कार्यों की की ओर वह ध्यान न दे सका।

केन्द्रीय शासन में वज़ीर के पश्चात् अन्य प्रभावशाली व्यक्ति बख्शी होता था, जो सैन्य विभाग का अध्यक्ष होता था। उसके कार्य मूल रूप से वे ही थे, जो कि अकबर के समय मीर बख्शी किया करता था। तोपख़ाने के विभाग के अतिरिक्त, जो कि स्वतंत्र रूप से उस्ताद अली क़ुली तथा मुस्तफ़ा के अधीन था, अन्य सभी सैनिकों पर उसका प्रभाव होता था।

वज़ीर तथा बख्शी के साथ-साथ केन्द्रीय शासन में सद्र तथा काज़ी भी होते थे जो कि न्याय तथा धार्मिक विभागों की देख-रेख किया करते थे।

प्रशासन की कौन-कौन सी इकाइयाँ थीं उनके विषय में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता क्योंकि बाबर की प्रशासनिक व्यवस्था एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश और एक स्थान की दूसरे स्थान से भिन्न थी। हिन्दुस्तान के बाहर बदख्शाँ का प्रान्त पहले हुमायूं के हाथों में रहा, फिर मीर फख्र अली और उसके पश्चात् हिन्दाल के हाथों में और अन्त में मिर्ज़ा सुलेमान को वहाँ का शासन सौंपा गया। काबुल, गजनी, कन्धार तथा मुल्तान कामरान[१] के हाथों में थे।

---

१. १५२२ ई० में जब मिर्ज़ा कामरान की आयु केवल १३ वर्ष की थी तो उसे कन्धार का शासन सौंपा गया। १५२२-२७ ई० तक वह कन्धार ही में रहा। १५२५ ई० में जब बाबर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण किया तब काबुल भी उसके अधीन रखा गया, किन्तु वह कन्धार ही में रहता रहा। १५२६ ई० के अन्त में जब ख्वाजा क़लां हिन्दुस्तान से वापस आया तो काबुल ग़ज़नी, गिरदीज तथा हजारा प्रदेश में कुछ स्थान उसे सौंप दिए गए। ख्वाजा कलां कामरान का मुख्य परामर्श दाता भी बन गया। कामरान तत्पश्चात् कन्धार से काबुल आया और जुलाई १५२७ ई०

उसका नियन्त्रण उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों पर भी था। सतलज नदी के उस पार के प्रदेश जिसमें भीरा, लाहौर, सियालकोट, दीपालपुर, सरहिन्द तथा हिसार फ़िरोज़ा सम्मिलित थे, वे मीर यूनुस अली के हाथों में थे, क्योंकि उसे पंजाब का गवर्नर नियुक्त कर दिया गया था[1]। मीर यूनुस अली १५३० ई० तक पंजाब का गवर्नर रहा। हिसार फिरोज़ा से लेकर बलिया में खारिद तक के प्रदेश तथा ब्याना, चन्देरी और ग्वालियर तक के प्रदेशों में बाबर ने एक नई शासन-व्यवस्था जो कि इससे पूर्व न थी, तथा जो बाबर की सैनिक तथा दीवानी आवश्यकताओं की पूर्ति करती थी, लागू की[2]।

इस प्रशासनिक व्यवस्था को समझने में लेनपूल, प्रो० रशब्रुक विलियम्स तथा डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने भूल की है। लेनपूल ने कहा है, "पानीपत के युद्ध के पश्चात् आबाद प्रदेशों के शहरों तथा भूमि को उसके अफ़सरों या जागीरदारों के मध्य बाँट दिया गया., जो कि किसानों तथा काश्तकारों से भूमि कर, व्यापारियों से तथा दूकानदारों से चुंगी तथा हिन्दुओं से जज़िया वसूल करते रहे।" इसी प्रकार प्रो० रशब्रुक विलियम्स ने भी लिखा है कि पानीपत के युद्ध के बाद बाबर ने एक ऐसी योजना लागू की, जिसने कि उसके अमीरों को सन्तुष्ट कर दिया तथा अधिक से अधिक प्रदेश उसके हाथों में आ गया। उसने शहर या दुर्ग जो अभी तक विजित नहीं हुए थे, उन्हें मुख्य व्यक्तियों को प्रदान कर दिए और उन्हें कुछ सैनिकों को देकर उस ओर उन प्रदेशों को विजित करने तथा अपने हाथों में लेने के लिए भेजा[3]। एक अन्य स्थान पर प्रो० रशब्रुक विलि-

---

तक उसके साथ रहा। १५२८ ई० के मध्य तक कामरान काबुल के शासन की देखभाल करता रहा। उसके पश्चात् बाबर ने उसे खालसा में सम्मिलित कर लिया और उसकी जागीर में मुल्तान मिला दी। इसके पश्चात् कामरान १५३० ई० तक कन्धार ही में रहा—इक़्तिदार आलम खान, "मिर्ज़ा कामरान", पृ०, ५-६।

१. बख्शीश सिंह निज्जर, "पंजाब अण्डर दि मुग़ल्स" पृ०, १८।

२. एहसान रज़ा खान का शोध निबन्ध "बाबर' स सेटिलमेन्टस आफ दि कानक्वेस्ट आफ हिन्दुस्तान", प्रोसीडिंग्स आफ दि इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस (पटना) भाग १, (१९६८), पृ०, २१६।

३. प्रो० रशब्रुक विलियम्स "ऐन इम्पायर बिल्डर आफ दि सिक्सटीन्थ सेन्चुरी," पृष्ठ, १४२।

यम्स ने इसी सन्दर्भ में लिखा है कि बाबर में प्रशासनिक प्रतिभा न थी, अतएव उसने जो प्रशासनिक व्यवस्था यहाँ पर मौजूद थी, उसी के अनुसार प्रशासनिक योजना बनाई जिसके अनसार उसने उस प्रदेश को, जो कि उसके हाथों में था, अपने मुख्य अमीरों में इस समझौते पर बाँट दिया कि प्रत्येक अमीर अपनी सरकारमें जो उसके अधीन है, शान्ति एवं सुव्यवस्था बनाए रखने का उत्तरदायित्व संभालेगा[1]। सम्भवतः इन्हीं दो इतिहासकारों के कथनों के आधार पर डा० रामप्रसाद त्रिपाठी ने भी लिख दिया कि बाक़ी बचे उन अफ़गान सरदारों से निपटने के लिए जिन्होंने अब तक उसकी आधीनता स्वीकार न की थी, उसने अविजित प्रदेशों को विभिन्न भागों में बाँट दिया और उन्हें अपने बेगों को सौंप दिए कि, "बाबर ने कुछ समय के लिए सबसे पुराना ढंग तथा सबसे सरल ढंग अपना लिया अर्थात् उसने अपने अमीरों के मध्य अविजित प्रदेशों को बाँट दिया और उन्हें आदेश दिया कि वे उन्हें विजय कर सुव्यवस्थित करें।" इस प्रकार उपरोक्त तीन इतिहासकारों के क़थनों से ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर ने विभिन्न प्रदेशों को विजित करने से पूर्व ही उन प्रदेशों को अपने अमीरों के मध्य बाँट दिया; कि उसने प्रचलित शासन-प्रणाली में तनिक भी परिवर्तन न किया तथा अफ़गान सरदारों के स्थान पर अपने अमीरों को नियुक्त कर दिया। लेकिन बात ऐसी न थी। कोई भी विजेता चाहे कितनी भी उसमें प्रशासनिक योग्यता क्यों न हो, कभी भी उन प्रदेशों को जिन पर कि उसका कोई अधिकार नहीं है और न ही उसने उन्हें विजित किया है, अपने अमीरों को जागीर में देना पसन्द करेगा। फ़रगना तथा काबुल काल में बाबर ने कभी भी ऐसा न किया और न ही हिन्दुस्तान में प्रवेश करने के उपरान्त उसने ऐसा किया। केवल दो या तीन उदाहरणों को छोड़ कर बाबर ने पहले उस अमुक स्थान अथवा प्रदेश को विजित किया। उस पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के पश्चात् ही वह उस स्थान अथवा प्रदेश को किसी मुग़ल या अफ़गान सरदार को जागीर में प्रदान किया करता था। वह इस बात का पहले ही निश्चय किया करता था कि कौन-कौन व्यक्ति अमुक प्रदेश या स्थान पर आक्रमण करेंगे और वह प्रदेश या स्थान किसको दिया जाएगा। निम्नलिखित

---

१. वही, पृ० १६१।
२. डा० राम प्रसाद त्रिपाठी, "मुग़ल साम्राज्य का उत्थान और पतन" पृ०, २६।

कुछ उदाहरणों से यह वात स्पष्ट हो जाती है। महदी ख्वाजा को इटावा जागीर में प्रदान किया गया और उसे इटावा विजित करने के लिए भेजा भी गया किन्तु सेना का नेतृत्व उसे न दिया गया वरन् इस सेना का नेतृत्व मुहम्मद सुल्तान ने किया[1]। इससे पूर्व कि मुहम्मद सुल्तान महदी ख्वाजा के लिए इटावा को विजित कर उसके हाथों में सौंपता वावर ने दोनों को इस अभियान से वापस वुला लिया और आदेश दिया कि वे हुमायूं से मिलकर पूर्वी प्रदेशों में अफ़ग़ानों के विरुद्ध उसकी सहायता करें[2]। कुछ समय पश्चात् मुहम्मद अली जंग जंग जो कि कलानौर तथा मल्लौत का अभ्यर्पित्ती था ने इटावा को विजित किया[3]। इसी प्रकार सुल्तान जुनैद वरलास को वावर ने धौलपुर प्रदान किया। अन्य उमराव के साथ सुल्तान जुनैद वरलास धौलपुर के दुर्ग को अपने हाथों में लेने के लिए वढ़ा किन्तु इससे पूर्व कि वह दुर्ग को हस्तगत कर सकता, उसे वावर का आदेश मिला कि वह शीघ्र ही अपनी सेनाओं के साथ चन्दवार की ओर वढ़ कर हुमायूं जो कि पूर्व की ओर वढ़ रहा है, सहायता करें। इस प्रकार कुछ समय के लिए धौलपुर विजय करने का कार्य रुक गया। कुछ समय उपरान्त मुहम्मद ज़ैतून ने यह दुर्ग वावर को समर्पित कर दिया। किन्तु दुर्ग को अधिकृत करने के पश्चात् यह दुर्ग वावर ने सुल्तान जुनैद वरलास को प्रदान नहीं किया, क्योंकि अब तक उसे जौनपुर प्रदान किया जा चुका था। वावर ने धौलपुर को खालसा में सम्मिलित कर लिया[4]। तीसरा उदाहरण हम लोगों के सामने सम्भल का है। पूर्वी क्षेत्रों में नासिर खान नोहानी तथा मारुफ़ फ़ारमूली के विरुद्ध हुमायूं को भेजने से पूर्व वावर ने उसे सम्भल की जागीर प्रदान की। क्योंकि हुमायूं इस समय अफ़गानों के विरुद्ध व्यस्त था, वावर ने हिन्दू वेग तथा शैख़ घूरन को सम्भल विजय करने के लिए भेजा[5]। इस प्रकार हम देखते हैं कि यह आवश्यक नहीं था कि अमुक प्रदेश अथवा स्थान को विजय करते समय वह व्यक्ति भी उस अवसर पर उपस्थित रहे जिसे कि वह स्थान या प्रदेश जागीर में प्रदान किया गया हो। और न

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२६-३० ।
२. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५३१ ।
३. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५३२ ।
४. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५४० ।
५. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२८-२६ ।

हीं हमें यह सोचना चाहिए कि बाबर ने हिन्दुस्तान के विशाल प्रदेशों का शासन केवल अपने अमीरों द्वारा, जो कि उसके साथ काबुल से आए थे, किया।

वास्तव में उसने इस विशाल भूभाग पर शासन मुग़ल तथा ग़ैर-मुग़लों की सहायता से किया। जो भी प्रदेश उसके अधीन थे उसका कुछ भाग या तो उसने अफ़ग़ानों को वापस दे दिया या अफ़ग़ान सरदारों को जागीर में प्रदान कर दिया। कन्नौज के उस पार के समस्त प्रदेश में केवल जौनपुर को छोड़कर बाबर ने अपने किसी भी अमीर को जागीर प्रदान न की। उसके कई कारण थे। मुगलों की स्थिति इस प्रदेश में बहुत ही कमज़ोर थी और उनके लिए यह सम्भव न था कि वे अफ़ग़ानों को इस प्रदेश से खदेड़ सकते। यहाँ तक कि जौनपुर तक को, जिसकी कुल मालगुज़ारी ४००८८३३३ टंकें थी, बाबर ने सुल्तान जुनैद बरलास तथा शाह मीर की संयुक्त गवर्नरी में रखा और उनके पश्चात् जौनपुर में मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को नियुक्त किया गया। यहाँ भी ४००८८३३३ टंकों की मालगुज़ारी में से १,६८,०५,००० टंके के मूल्य की जागीरें अफ़ग़ानों को बाबर ने प्रदान की। जौनपुर की जागीरों में से १४६,५०,००० टंके के मूल्य की जागीर फ़िरोज़ खान सारंग खानी को तथा २० लाख टंके के मूल्य की जागीर, काज़ी ज़िया को प्रदान की गई[1]। इसी प्रकार बिहार की कुल मालगुज़ारी ४०५६०,००० टंकों में से केवल एक करोड़ टंका खालसा के लिए निश्चित कर दी गई और शेष अफ़ग़ान सरदारों को प्रदान कर दी गई। महमूद खान नोहानी को ५० लाख टंका मालगुज़ारी की जागीर प्रदान की गई तथा ३ करोड़, ६६ लाख, ६० हज़ार टंका मालगुज़ारी की जागीर जलाल खान को प्रदान कर दी गई[2]। अवध भी शेख बायज़ीद को दे दिया गया। इसकी सम्पूर्ण मालगुज़ारी १,१७०१,३६६ टंका थी[3]। घाघरा नदी के उस पार सरवर तथा सारन अफ़ग़ान सरदारों को जैसे इस्माइल जिलवानी तथा मारूफ़ फारमूली के पुत्र शाह महमूद को प्रदान कर दिए गए[4]। गाज़ीपुर की मालगुज़ारी में से ६५,३५,००० टंके की मालगुज़ारी की जागीर महमूद खान

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२७।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२१, ५२७।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६।
४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६।

नोहानी को प्रदान कर दी गई[1]। अफ़ग़ान सरदार आलम खान को कालपी प्रदान कर दिया गया जिसकी मालगुज़ारी सिओवा को मिला कर ४२८,५५,६५० टंका थी[2]। इसी प्रकार चुनार ताज खान सारंग खानी को प्रदान कर दिया गया[3]। उपरोक्त विवरण से पता चलता है कि कन्नौज से लेकर बिहार तक के प्रदेश में केवल जौनपुर को छोड़ कर, बाबर ने अफ़ग़ान वजहदारों की सहायता से शासन किया। हिन्दुस्तान की कुल मालगुज़ारी, जो कि उस समय बाबर के अनुसार ५२ करोड़ टंका[4] थी, का लगभग १।४ भाग की मालगुज़ारी की जागीरें अफ़ग़ानों के पास थीं।

कुछ ऐसे प्रदेश भी थे जिन पर मुग़लों ने विजय द्वारा अपना प्रभुत्व स्थापित तो कर दिया था, किन्तु इन प्रदेशों के शासन का उत्तरदायित्व स्थानीय सरदारों पर रहा। इन स्थानीय सरदारों के स्थानीय ज़मींदारों से बहुत ही घनिष्ठ सम्बन्ध थे और इन स्थानीय ज़मींदारों की सहायता से स्थानीय सरदार उन प्रदेशों पर जो कि उनके अधीन थे, मुग़ल सम्राट की ओर से शासन करते रहे। बाबर ने इन स्थानीय सरदारों को असन्तुष्ट करना उचित न समझा क्योंकि अपनी अपनी जागीरों में वे अब तक बहुत ही शक्तिशाली एवं प्रभावशाली बन चुके थे। दूसरे उसके निजी अमीर उन स्थानों पर नहीं जाना चाहते थे[5], जहाँ कि इन स्थानीय सरदारों का बोलबाला था। अतएव बाबर ने उन स्थानों को जीत कर उन्हीं को वापस कर दिया। किन्तु उसने वहाँ मालगुज़ारी वसूल करने के लिए

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५२७।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५२१, ५४४, ५६०।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६५७।
४. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२०।
५. अफ़ग़ानों की विद्रोही कार्यवाहियों के कारण सुल्तान मुहम्मद दुल्दाई ने अपनी जागीर कन्नौज जाने से इन्कार कर दिया। अतः बाबर को मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा को कन्नौज सौंपना पड़ा और जब मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा भी वहाँ न टिक सका तो अफ़ग़ान सरदार को कन्नौज वापस कर दिया गया। इसी प्रकार जब बिहार में मुहम्मद ज़मान मिर्ज़ा न टिक सका तो उसे जौनपुर दिया गया और बिहार में अफ़ग़ान सरदारों को बहाल किया गया। बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५८२, ६७६।

अपना शिक़दार अवश्य नियुक्त किया। चन्देरी को विजित करने के बाद बाबर ने वहाँ की मालगुजारी में से ५० लाख खालसा घोषित कर दी और वहाँ अपना शिक़दार नियुक्त किया तथा चन्देरी को मालवा के शासक के सम्बन्धी अहमद शाह को प्रदान कर दिया[1]। इसी प्रकार बनारस, अवध और बिहार में भी उसने इसी प्रकार की व्यवस्था की[2]।

वजहदारों[3] के अतिरिक्त कुछ ऐसे अमीर भी थे, जिन्हें कई परग़ने या तो

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५६७।

२. बनारस में सुल्तान हुसैन शर्क़ी, अवध में शेख बायज़ीद तथा बिहार में नोहानियों को उसने उनकी जागीरें वापस कर दीं, क्योंकि बहुत अर्से से वहाँ रहते चले आए थे। निजामुद्दीन अहमद, "तबक़ाते अकबरी," भाग १, पृ०, ३२०; अब्दुल्लाह, "तारीखे दाऊदी" (अलीगढ़), पृ०, ६६।

३. बाबर ने जो राजस्व आवटन दिए, उन्हें उनके लिए उसने 'वजह' के शब्द का प्रयोग किया है। लेकिन कहीं-कहीं उसने दो समानार्थक शब्दों, वजह इस्तक़ामत तथा वजेह उलूफ़ा का प्रयोग किया है। अर्थापिती आम तौर से वजहदार के नाम से जाना जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि बाबर ने बड़े-बड़े प्रदेशों को एक निश्चित् धनराशि के साथ, जो कि उस प्रदेश की कुल मालगुजारी या उसका भाग होती थी, वजह के रूप में दिया। अन्य शब्दों में बाबर के वजहदारों को भूमि के बजाय अमुक प्रदेश की कुल मालगुज़ारी दी जाती थी। यह प्रदेश उन्हें जागीर में नहीं प्रदान की जाती थी, क्योंकि इन वजहदारों को मालगुजारी से प्राप्त धन को अपने तथा अपने सैनिकों पर खर्च करना पड़ता था। उदाहरण स्वरूप पानीपत के युद्ध के पश्चात् बाबर ने सुल्तान मुहम्मद दुग़ली को पानीपत शहर की रक्षा के लिए १०,००० सवारों के साथ छोड़ दिया और उसे एक फ़सल की मालगुजारी (मुवाजिबे एक फसल) उसी क्षेत्र में प्रदान की ताकि वह उस धन का प्रयोग अपने सैनिकों को रखने पर कर सके। अहमद यादगार, "तारीखे सलातीने अफ़ग़ाना", पृ०, ११३; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५४; इसी प्रकार का एक उदाहरण और है। घाघरा के युद्ध के उपरान्त, मारुफ़ फ़ारमूली के पुत्र शाह मुहम्मद को दो प्रकार के आवटन प्रदान किए गए। सारन

उनकी पूरी मालगुज़ारी या मालगुज़ारी का एक भाग के रूप में प्रदान किए गए। यह अपने-अपने परगनों के शासन-प्रबन्ध तथा मालगुज़ारी को एकत्रित करने के लिए उत्तरदायी होते थे। बाबर ने कुहराम, समाना, आदि परगनों को ख्वाजा कला[1] तथा मुहम्मदी कोकुलदाश[2] को प्रदान किए, हिसार फ़िरोज़ा में रोहतक के परगने बाबा सुल्तान[3] को प्रदान किए गए तथा नरनौल के परगने की मालगुज़ारी में से ३० लाख टंके अमीर तैमूर सुल्तान[4] को प्रदान किए गए। मेवात चीन तैमूर सुल्तान[5] को इटावा महदी ख्वाजा को, तथा महदी ख्वाजा के पश्चात् उसके पुत्र ज़ाफर ख्वाजा को प्रदान किए गए[6]। इसी प्रकार अमरोहा तथा सरकार सम्भल और कन्नौज के परगने मूसा फ़ारमूली, और अब्दुल मुहम्मद नेज़ाबाज को प्रदान किए गए[7]। गाज़ीपुर की मालगुजारी से ९०,३५,००० टंके महमूद खां को प्रदान किए गए।[8] यद्यपि इन अभ्यर्पितियों के अन्तर्गत परगना जैसी छोटी प्रशासनिक इकाई रहती थीं, लेकिन वजहदारों की ही तरह वे अपने-अपने परगनों में सर्वेसर्वा होते थे। प्रायः इन अमीरों को वजहदारों से अधिक धन राजस्व आवटन के रूप में मिलता था जबकि उनके पास केवल कुछ ही परगने होते और वजहदारों के हाथ में पूरा का पूरा प्रदेश या प्रान्त का अधिक से अधिक भूभाग। उदाहरणार्थ, शम्साबाद, सरकार कन्नौज के अभ्यर्पिती को ३० लाख टंके मिलते थे, जबकि कन्नौज के वजहदार को १५ लाख।

वज़हे उलूफ़ा के रूप में दिया गया और कुन्दाल उसे विशेष रूप से प्रदान किया गया कि वह तीर चलाने वालों को रख सके—बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६७९; यदि उन्हें एक ही फ़सल की मालगुज़ारी सैनिकों को रखने के लिए दी जाती तो दूसरी फ़सल की मालगुज़ारी सम्भवतः उन्हें अपने निजी व्यय के लिए दी जाती थी।

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५२५।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५२८।
३. तारीख़-ए-रशीदी, (अनु०)।
४. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६७७।
५. तारीख़े अलफ़ी, रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ०, ६४२।
६. वही, पृ०, ६४२।
७. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ४४६।
८. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५४४।

बड़े राजस्व आवटन या छोटी इकाईयों पर नियुक्ति सम्राट स्वयं करता था। वजहदार को यह अधिकार न था कि वह अपने अधिकृत प्रदेशों में से कोई भी भाग किसी और व्यक्ति को दे दे। वजहदार तथा परगनों के अमीर दोनों ही सम्राट के प्रति उत्तरदायी होते थे और अपने पद पर वे तभी तक बने रहते थे, जब तक कि वे सम्राट की निगाहों से उतर न जायं।

वजहदारों तथा परगना जैसी छोटी इकाई के अफसर के ऊपर बाबर ने हाकिम तथा अन्य अधिकारी नियुक्त किए ताकि वे उन पर पूरा-पूरा नियंत्रण रख सकें। हाकिम पूरे प्रान्त की देखभाल करता था। उसका कार्य कर को हासिल करना, राजस्व विभाग के अधिकारियों को सहायता प्रदान करना, प्रान्त में शान्ति स्थापित करने का यत्न करना, विद्रोहों को दबाना था। जिन प्रान्तों में खालसा भूमि या राजस्व की घोषणा की गई, वहाँ बाबर ने शाही शिक़दारों की भी नियुक्ति की। साधारणतया: प्रान्त में हाकिम, दीवान या शिक़दार की ही नियुक्ति हुआ करती थी। लाहौर में बाबर ने हाकिम तथा दीवान की नियुक्ति की'[1]। देहली में शिक़दार तथा दीवान[2] की नियुक्ति की और जौनपुर में उसने संयुक्त गवर्नरी की तत्पश्चात् एक हाकिम की व्यवस्था की[3]।

इस विशाल साम्राज्य में कुछ ऐसे भाग थे जिन्हें कि बाबर ने खालसा घोषित किया। धौलपुर तथा बहलोलपुर में कुछ परगने खालसा घोषित किए गए[4]। किन्तु अन्यत्र उसने सरकार की सम्पूर्ण मालगुज़ारी का कुछ भाग खालसा के रूप में निश्चित किया। अफ़ग़ानों के लिए बिहार में व्यवस्था करते समय बाबर ने एक करोड़ टंके की धनराशि ख़ालसा के रूप में निश्चित की और मालगुज़ारी की शेष रक़म जलाल खान तथा अन्य अफ़ग़ान अमीरों को अवंटन के रूप में बाँट दी[5]। इसी प्रकार चन्देरी को विजित करने के पश्चात् बाबर ने ५० लाख टंके की धनराशि ख़ालसा निश्चित की। इन दोनों ही प्रदेशों में बाबर ने न तो अभ्यर्पितों को मिलने वाले राजस्व आवंटन का क्षेत्र और न भूमि का वह भाग जो ख़ालसा के रूप में सुरक्षित रखा गया निश्चित किया। ऐसा प्रतीत होता है कि बिहार

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ४४६।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५४४।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३६-३७।
४. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६।
५. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६७६।

और चन्देरी के स्थानीय सरदारों को, जिन्हें कि उन क्षेत्रों की मालगुज़ारी का पर्याप्त ज्ञान प्राप्त था, ने स्वयं खालसा के रूप में निश्चित की गई धनराशि को दीवान या शिक़दार द्वारा देना स्वीकार किया। अतएव बाबर ने दोनों ही स्थानों पर भूमि का कोई भाग खालसा के लिए सुरक्षित घोषित न किया। इस प्रकार उसने खालसा का प्रबन्ध किया।

अपने विशाल साम्राज्य के कुछ क्षेत्रों पर उसने स्थानीय ज़मींदारों की सहायता से भी शासन किया।[1] उसे यह मालूम हो चुका था कि यह ज़मींदार इस देश की शासन व्यवस्था की आधार शिला हैं। अतएव उनके अस्तित्व को मिटा देना उसने ठीक न समझा। लगभग १५१६ ई० में वह इन ज़मींदारों के सम्पर्क में आया और उसने इन्हें बहुत ही शक्तिशाली देखा। इसी वर्ष जब वह सिन्ध नदी को पार कर भीरा की ओर बढ़ा, नीलाब के ज़मींदारों ने उसका अभिवादन किया और ३०० शाहरुखियाँ तथा एक घोड़ा उसे पेशकश में दिया। इसके पश्चात् जनजूहा सरदार मलिक हस्त उसके सामने आया और उसने उसे एक घोड़ा पेशकश में दिया। जनजूहा ज़मींदारों की सहायता से उसने गक्खरों को परास्त किया और हाथी गक्खर को आधीनता स्वीकार करने पर बाध्य किया। हाथी गक्खर के परिवार को उसने उनकी पैतृक भूमि उन्हें वापस कर दी और उन्हें अपने अधिकारों का उपयोग करने की भी अनुमति प्रदान की। इस समय से बाबर ज़मींदारों के महत्व को समझ गया और उनके प्रति उसने सहृदयता की नीति अपनाई। उसने न कभी उनके आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने की चेष्टा की और न उनकी ज़मींदारी में से कोई भाग किसी व्यक्ति को प्रदान किया। सम्भवतः इसी कारण से अनेक ज़मींदारों ने बाबर की आधीनता स्वीकार कर ली और उसे सदैव कर देना स्वीकार किया। १५२६ ई० में कहलुर के राजा ने बाबर की आधीनता स्वीकार की और उसे पर्याप्त धन पेशकश के रूप में दिया। बाबर ने उसे उसकी ज़मींदारी वापस दे दी।

---

१. बाबर ने लिखा है कि ५२ करोड़ जो कि उस समय हिन्दुस्तान की सम्पूर्ण मालगुज़ारी से प्राप्त आमदनी थी उसमें से ८ और ६ करोड़ उसे उन राय या राजाओं से प्राप्त होते थे। जिन्होंने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली थी और जिन्हें उनके परगने स्थायी रूप से दे दिए गए थे—बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५२०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २०० ।

भारतीय अभियानों में इन ज़मींदारों ने बाबर की अत्यधिक सहायता की। आदम गक्खर ने गक्खरों की विशाल सेना के साथ खनवा के युद्ध में बाबर की सहायता की और इसी युद्ध में संगूर गक्खर की मृत्यु हुई। जिस समय सुल्तान महमूद लोदी बिहार में प्रवेश कर रहा था, उसके बारे में यह सूचना भाटा के वीर सिंह देव ने बाबर को दी और बाबर के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किए। इसी प्रकार मीम्बर के राजा ने भी बाबर की सहायता की और बाबर ने उसे उसकी ज़मींदारी में रहने दिया। बाबर ने एक भट्टी जमींदार, संगूर भट्टी के पुत्र बरयून को दिल्ली के दक्षिण-पश्चिमी क्षेत्रों की चौधरियाना प्रदानकी। इस प्रकार हम देखते हैं कि बाबर ने स्थानीय जमींदारों के प्रति दूरदर्शी नीति अपनाई। उनके ऊपर उसने अपनी प्रभुसत्ता स्थापित करने की कदापि चेष्टा न की और न ही उन्हें उनके अधिकारों से वंचित रखा। जब तक वे उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित करते रहे: उसे पेशकश देते रहे तथा उसकी सैनिक सहायता करते रहे, बाबर ने उन्हें किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचाई। हाँ, विद्रोही जमींदारों के प्रति उसे दूसरी ही नीति अपनानी पड़ी। नीलाब और भीरा के मध्य के प्रदेशों के शासन के लिए मुहम्मद अली जंग जंग को नियुक्त करते समय बाबर ने उसे आदेश दिया कि जब कोई (ज़मींदार) एक रैय्यत की भांति सिर झुका दें तो उसके साथ उसी प्रकार का व्यवहार करो। यदि कोई अधीनता स्वीकार करने से इन्कार कर दे, तो उसे मारो, सताओ, दबाओ और उसे बाध्य करो कि वह आधीनता स्वीकार कर ले। सम्भवत: इसी नीति का अनुसरण करते हुए बाबर ने मेवात को विजित कर लिया तथा मुन्डाहार ज़मींदारों पर आक्रमण कर उन्हें समाप्त कर दिया।

उपरोक्त विवरण से बाबर की प्रशासनिक व्यवस्था का हमें आभास मिलता है और उससे यह पता चलता है कि उसकी प्रशासनिक व्यवस्था में किसी प्रकार की एकरूपता न थी। साम्राज्य के प्रान्तों का शासन, हाकिमों तथा दीवानों के हाथ में था। पूर्वी प्रदेशों का शासन प्रबन्ध उन अफ़ग़ान वजहदारों के हाथों में था, जिन्होंने की उसकी अधीनता स्वीकार कर ली थी और इसी प्रकार साम्राज्य के अधिक से अधिक भाग पर बाबर ने शासन वजहदारों, जमींदारों, स्थानीय सरदारों तथा उन लोगों के द्वारा किया जिनको कि उसने कुछ परगने प्रदान किए थे। जो प्रशासनिक व्यवस्था बाबर ने की, वह उसके तथा अफ़ग़ान सरदारों, स्थानीय अमीरों, ज़मींदारों तथा स्थानीय वातावरण के अनुकूल थी। उससे सभी के हितों की सुरक्षा हुई। यदि बाबर प्रचलित प्रशासनिक व्यवस्था को न अपनाता या

अफ़ग़ान सरदारों तथा स्थानीय जनता की मनोवृत्तियों को ध्यान में न रखता तो उसके सामने और मार्ग ही कौन सा था ? उसके अतिरिक्त उसे ऐसी प्रशासनिक व्यवस्था को लागू करने की आवश्यकता थी जो थोड़े से थोड़े समय में मुगल साम्राज्य में सामान्य राजनैतिक एवं आर्थिक दशा पुनः प्रतिष्ठित कर दे और साम्राज्य पर उसके प्रभुत्व को सुदृढ़ कर दे।

कुछ इतिहासकारोंने पानीपत के युद्ध के उपरान्त हिन्दुस्तान में बाबर द्वारा की गई प्रशासनिक व्यवस्था की, आलोचना की है। उनका मत है कि उसने अनेक भूलें की, जिसके कारण मुग़ल साम्राज्य की नींव दृढ़ न हो सकी। डा० एस० के० बनर्जी का यह कहना है कि इस नए देश में आकर इसकी चिन्ता न करते हुए कि भविष्य में उसे क्या कार्य करना है, बाबर ने आगरा में प्रवेश करने के उपरान्त, बजाय इसके कि वह राजकोष में धन संचित रखता, आगरा में प्राप्त धन को दोनों हाथों से दान में देना प्रारम्भ किया और इस प्रकार अपनी दानशीलता का प्रमाण दिया[1]। यही नहीं कुछ समय तक वह ऐसा ही करता रहा। इसमें तनिक भी सन्देह नहीं कि इस प्रकार धन लुटा कर बाबर ने एक भूल की किन्तु अपने असन्तुष्ट उमराव वर्ग को सन्तुष्ट करने के अतिरिक्त बाबर के पास और कौन सा उपाय था ? यदि इस समय उसने धन वितरित किया तो इसके पीछे उसका एक उद्देश्य था कि वह इस प्रकार से प्रत्येक उमराव को सन्तुष्ट करें और इसी प्रकार, अन्य अफ़ग़ान तथा ग़ैर-अफ़ग़ान सरदारों को भी किस भांति अपने पक्ष में करे। यही नहीं उसने बुखारा, समरकन्द, काबुल और गज़नी तथा अन्य स्थानों में रहने वाले अपने सम्बन्धियों के पास धन इस आशय से भेजा कि वे इस देश में आएँ, उसकी सहायता करें और साथ ही साथ अपना भविष्य बनाएँ। डा० बनर्जी के अनुसार बाबर की दूसरी भूल यह थी कि उसने अफ़ग़ान सरदारों को अपने पक्ष में करने के लिए, फ़िरोज़ खान सारंगखानी को जौनपुर की मालगुजारी में से एक करोड़ छियालीस लाख और पचास हजार टंके, शेख बायजीद को अवध की मालगुज़ारी से एक करोड़ अड़तालीस लाख और पचास हजार टंके, महमूद खान को गाज़ीपुर की मालगुज़ारी से ३६ लाख, ३५ हजार टंके, काज़ी ज़िया को २० लाख टंके,

---

१. डा० एस० के० बनर्जी का शोध-निबंध" पोस्ट वार सेटिलमेन्ट्स इन दोआब, मालवा, एण्ड विहार", प्रोसीडिंग्स आफ इण्डियन हिस्ट्री कांग्रेस, (पटना), १६४६, पृ०, २६६।

निज़ाम खां को २० लाख टंके के मूल्य की जागीर दोआब में, तातार खान को २० लाख टंके के मूल्य की इक्ता, तथा सुल्तान इब्राहीम लोदी की माँ को ७ लाख टंके के मूल्य के परगने प्रदान किए। इस प्रकार अफ़गानों को हिन्दुस्तान की मालगुज़ारी का १।४ भाग प्रति वर्ष मिलता रहा और इसके बावजूद भी अफ़गानों को वह अपने पक्ष में न कर सका। कुछ सीमा तक हम डा० बनर्जी के इस तर्क को स्वीकार कर सकते हैं। किन्तु हमें ध्यान में रखना चाहिए कि राजनीतिक आवश्यकता न बाबर को इस बात पर बाध्य कर दिया था कि वह अफ़गानों के प्रति सहृदयता की नीति अपनाए। आवंटन, खिलअत, उपाधियाँ प्रदान करके ही विरोधी सरदारों को वह अपने पक्ष में कर सकता था। बाबर को उन पर विश्वास करना पड़ा और उन्हें अपने साथ रखना पड़ा। तत्कालीन परिस्थितियों में किसी प्रकार से वह उनकी उपेक्षा नहीं कर सका। बाबर का साथ छोड़ देने पर भी उसके जीवन काल में अफ़ग़ान सरदार मुग़ल साम्राज्य की नींव को न हिला सके। अतएव डा० बनर्जी का यह तर्क कि बाबर की अफ़गान नीति त्रुटिपूर्ण थी; न्याय संगत नहीं माना जा सकता।

डा० बनर्जी के अनुसार बाबर ने पश्चिमी प्रदेश में भी अनेक भूलें कीं; वे थीं चन्देरी को विजित करने के उपरान्त उसने मालवा के शासक के साथ कोई समझौता न किया। उसने चन्देरी को मालवा के सुल्तान के वंशज अहमद शाह के हाथों में सौंप दिया और उसकी सहायता के लिए २००० से ३००० सैनिक वहाँ रखे, और उसने चन्देरी में ५० लाख टंके खालसा के रूप में निश्चित किए। डा० बनर्जी के अनुसार बाबर की यह व्यवस्था व्यर्थ सिद्ध हुई और इससे उसे कोई भी लाभ न हुआ, क्योंकि न तो हमें अहमद शाह के बारे में, न मुल्ला अपाक के बारे में, और न ही चन्देरी की खालसा भूमि के बारे में कुछ पता चलता है। सम्भवतः कुछ समय बाद गुजरात के शासक बहादुर शाह ने चन्देरी को विजित कर लिया। संक्षेप में डा० बनर्जी का यह मत है कि बाबर ने चन्देरी को विजित कर एक भूल की और एक प्रकार से चन्देरी में जो उसने व्यवस्था की वह व्यर्थ सिद्ध हुई। यदि हम अन्य ऐतिहासिक तथ्यों को ध्यान में रखें तो डा० बनर्जी का विचार हम स्वीकार नहीं कर सकते। चन्देरी पर आक्रमण करते समय बाबर के सामने तीन मुख्य उद्देश्य थे: प्रथम मेदनी राय को परास्त करना तथा राजपूतों को शक्तिहीन बनाना, दूसरे कि मुग़ल साम्राज्य की पश्चिमी सीमा की प्रतिरक्षा का प्रबन्ध तथा मालवा और गुजरात के राज्यों में सन्तुलन स्थापित

करना। मालवा और गुजरात के राज्यों को अपने-अपने झगड़ों में व्यस्त रखने के लिए उसने चन्देरी को विजित कर अहमद शाह को सौंप दिया। अपने साम्राज्य के पश्चिमी प्रदेशों की रक्षा करने के लिए बाबर की यह एक चाल थी। इसी प्रकार मुल्ला अपाक को २००० से ३००० सैनिकों के साथ उसने उसे इसलिए वहाँ रखा कि वह अहमद शाह को मालवा तथा गुजरात के शासकों के आक्रमण से बचाया जा सके तथा चन्देरी की रक्षा की जा सके और २००० से ३००० सैनिकों पर खर्च करने के लिए उसने चन्देरी की मालगुजारी में से ५० लाख टंके, खालसा के रूप में निश्चित कर दिए। डा० बनर्जी का यह कहना ठीक है कि चन्देरी में व्यवस्था करते समय न तो उसने खालसा भूमि के क्षेत्र निर्धारित किए और न ही यह निश्चित किया कि अभ्यर्पितों के पास राजस्व आवंटन कौन-कौन से होंगे। लेकिन इन बातों को तय करने की आवश्यकता क्या थी? चन्देरी में बाबर ने मुल्ला अपाक को शिक़दार नियुक्त किया और यह उसका कार्य था कि वह स्थानीय ज़मीदारों तथा अफ़सरों से मिल कर खालसा में निश्चित की गई मालगुजारी उनसे ले और उनके आवंटन सम्बन्धी प्रश्नों का निपटारा करे। डा० बनर्जी का यह कहना कि बाबर ने खालसा के रूप में धनराशि को एकत्र करने के लिए किसी स्थायी प्रशासनिक व्यवस्था न की, न्यायसंगत नहीं प्रतीत होता।

इसी प्रकार पूर्वी प्रदेश में बाबर के कार्यों की आलोचना करते हुए डा० बनर्जी ने लिखा है कि बाबर ने विहार के अफ़ग़ानों को शक्तिहीन तो कर दिया, किन्तु न तो वह उनके साथ सन्तोषजनक सम्बन्ध ही स्थापित कर सका और न उन्हें अपने पक्ष में कर सका और न ही बंगाल के शासक के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित कर सका। बाबर ने महमूद तथा जलालुद्दीन नोहानी को १ करोड़ की माल-गुजारी की जागीरें देकर भूल की। जुनैद बरलास को जौनपुर में नियुक्त कर उसने भूल की, बिहार को अफ़ग़ानों के हाथों में सौंप कर भूल की, शर्की वंश के वंशज जलालुद्दीन शर्की जिसने कि घाघरा के युद्ध में उसकी सहायता की थी, के लिए उसने कुछ भी न किया। महमूद नोहानी, जिसे उसने ५० लाख टंके की मालगुज़ारी वाली भूमि प्रदान की, ने उसकी कोई सहायता न की, और उसने अफ़ग़ानों को पूर्वी प्रदेश में सर्वोपरि छोड़ दिया। डा० बनर्जी के यह सब तर्क इस बात को इंगित करते हैं कि वे न तो पूर्वी प्रश्न को समझ सके और न बाबर की नीति को। तत्कालीन परिस्थितियों में न तो बिहार को पूर्ण रूप से विजित करना और न ही साम्राज्य में उसे मिलाना सम्भव था। घाघरा के युद्ध के

पश्चात् जब उसने देखा कि अफ़ग़ानों को समाप्त करना बहुत ही कठिन है तो उसने उनके प्रति सहृदयता की नीति अपनाई। इसके अतिरिक्त क्या उसे अफ़-ग़ानों को तितर-बितर करने, उन्हें बिहार से खदेड़ने नोहानी राज्य को समाप्त करने तथा विभिन्न अफ़ग़ान सरदारों में मतभेद पैदा करने, उन्हें शक्तिहीन तथा नेता रहित करने में सफलता प्राप्त न हुई ? बाबरा के युद्ध से लेकर १५३० ई० में उसकी मृत्यु तक अफ़ग़ानों ने पुनः मुग़ल साम्राज्य को चुनौती न दी। अतः हम कह सकते हैं कि पूर्वी प्रदेश में भी उसने कोई ऐसी भूल न की जिसके कारण मुग़लों के हित संकट में पड़ गए ।

बाबर की प्रशासनिक व्यवस्था दोषों से मुक्त भी न थी । अभी तक कोई भी ऐसी शासन-प्रणाली स्थापित नहीं हुई है जिसमें दोष न हों। बाबर की शासन-प्रणाली में भी कई दोष थे। विभिन्न स्तरों पर प्रशासन में न तो एक रूपता थी और न हीं शासन के विभिन्न विभागों को ठीक तरह से वह जमा सका। राजस्व व्यवस्था की ओर उसका ध्यान तनिक भी न गया। इसके अतिरिक्त वजहदारी प्रथा में भी कुछ दोष रह गए जिन पर उसे ध्यान देने का समय न मिल सका। इस प्रथा के अन्तर्गत, जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, प्रत्येक वजहदार से यह आशा की जाती थी कि वह अपनी तथा सर-कार की ओर से अपने क्षेत्रों में किसानों से पूरा-पूरा लगान वसूल कर लेगा। किन्तु यह वजहदार पहले अपना भाग किसानों से वसूल कर लेते थे। सरकार का भाग वसूल करना या न करना, या वसूल करके अपने पास ही रख लेना, यह उन पर निर्भर करता था। बाबर हाकिम तथा वजहदार के सम्बन्धों को निर्धारित न कर सका जिसके कारण वजहदार को सरकार का भाग भी हड़पने का अवसर मिल गया। वे जानते थे कि बाबर के पास केन्द्र या प्रान्त में कोई ऐसी शक्तिशाली प्रशासनिक व्यवस्था नहीं है जिसकी सहायता से वह उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही कर सके। इस प्रकार की केन्द्रीय शासन की कमजोरी का पूरा-पूरा लाभ इन वजहदारों ने उठाया। यही कारण है कि विवश होकर बाबर ने आदेश दिया कि वजहदारों की वजह का ३० प्रतिशत उनसे वसूल किया जाय और प्राप्त धन सेना पर खर्च किया जाय। यदि यह वजहदार ईमानदार होते तो बाबर को कभी भी किसी आर्थिक कठिनाई का सामना न करना पड़ता। जिस आर्थिक कठिनाई का उसे १५२८ ई० में सामना करना पड़ा वह भी थोड़े समय के लिए थी न कि दीर्घ-कालीन।

बाबर की उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती नीति :—

काबुल के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् बाबर ने धीरे-धीरे हिन्दुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। साम्राज्य स्थापित करने की दिशा में उसके पग आगे बढ़ते गए और सर्वप्रथम उसे इस प्रदेश में रहने वाली जातियों का सामना करना पड़ा। सिन्ध नदी के उस पार से लेकर काबुल तक का प्रदेश पहाड़ियों तथा घाटियों का देश है। कहीं-कहीं नदियों के किनारे समतल भूमि पर उपजाऊ प्रदेश भी हैं। १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में इस प्रदेश में अनेक अफ़ग़ान तथा ग़ैर-अफ़ग़ान जातियाँ रहती थीं। ग़ैर-अफ़ग़ान जातियों में से काफिर तथा हज़ारा जातियाँ प्रमुख थीं और अफ़ग़ान जातियों में से दिलज़ाक, यूसुफ़ज़ई, मण्डार, किगियानी, अफ़रीदी, गिलज़ई तथा अन्य जातियाँ थीं। यह जातियाँ इस प्रदेश में फैली हुई थीं और वे किसी के आधीन न थीं। किसी भी केन्द्रीय सत्ता की शक्ति को स्वीकार करने की उन्हें आदत न थी। प्रत्येक अफ़ग़ान जाति के अपने-अपने रीति-रिवाज़, परम्पराएँ, अपने अपने कबायली कानून थे। प्रत्येक कबीले का एक सरदार होता था जो कि कबीले का नेतृत्व करता था। किन्तु उसके अधिकार सीमित थे क्योंकि अपने कबीले की इच्छानुसार उसे कार्य करना पड़ता था। जो जातियाँ उपजाऊ प्रदेशों में निवास करती थीं, उनका मुख्य व्यवसाय कृषि था और वे प्रधानतः एक ही-स्थान पर रहा करती थीं। अन्य जातियाँ चरागाह की खोज में इधर-उधर भटकती रहती थीं और उस प्रदेश से आने-जाने वाले व्यापारियों को या बाह्य आक्रमण कारी की सेना के पार्श्व भाग को लूट कर अपना जीवन निर्वाह करती थीं। वास्तव में इन्हीं जातियों के बाह्य आक्रमणकारी के साथ सम्बन्धों पर आक्रमण कारी की सफलता तथा असफलता निर्भर करती थी।

जिस समय बाबर ने हिन्दुस्तान की उत्तरी-पश्चिमी सीमाओं की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया उस समय उसके सामने कई कठिनाइयाँ थीं। उन कठिनाईयों में से सबसे प्रमुख आर्थिक कठिनाई थी। अतएव उस कठिनाई को दूर करने के लिए उसे इस ओर बढ़ना पड़ा। काबुल से चलकर अदीनापुर और खैबर के दर्रे को पार करता हुआ कोहट के अफ़ग़ानों के विरुद्ध, उनसे धन प्राप्त करने के लिए बढ़ा।[1] पेशावर के निकट गगियानी अफ़ग़ानों के एक सरदार ने बाबर

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, २२६।

की आधीनता स्वीकार कर ली और वावर ने उसकी सहायता से दिलज़ाक, यूसुफ़-ज़ई तथा गगियानी अफ़ग़ान जातियों पर आक्रमण किए और उनके अनेक मवेशी आदि छीन लिए। तत्पश्चात् वावर ने दरिया ख़ान को अन्य अफगान जातियों पर आक्रमण करने के लिए भेजा और स्वयं वह बंगश की ओर वढ़ा। घाटी को पार कर टेढ़े-मेढ़े मार्गों से होता हुआ वह हंगू पहुँचा। यहाँ उसने अफ़ग़ानों के गढ़ों को तोड़ा और उन्हें तितर-बितर कर दिया। तत्पश्चात् आगे वढ़कर टील पहुँच कर उसने अपनी सैनिक टुकड़ियों को निकटवर्ती प्रदेशों में रहने वाली अफ़ग़ान जातियों पर आक्रमण करने के लिए रवाना किया। उसने जहाँगीर मिर्ज़ा को करानी, कीवी, सूर, ईसा, ख़ैल और नियाज़ी अफगानों पर आक्रमण करने के लिए रवाना किया। जहाँगीर मिर्ज़ा वन्नू प्रदेश में घुसा। उसने कीवी अफ़ग़ानों के गढ़ों को तोड़ा और उनके सरदार शादी ख़ान को वावर की आधीनता स्वीकार करने पर वाध्य किया। वावर ने तत्पश्चात् उसे अपनी सेना में ले लिया। वन्नू प्रदेश को लूटते हुए वावर दश्त की ओर वढ़ा। ईसा ख़ैल अफ़गानों के गाँवों को उजाड़ता हुआ तथा उनके गढ़ों को तोड़ता हुआ उसने दश्त में प्रवेश किया। यहाँ उसने अनेक अफ़ग़ानों को लूटा। तत्पश्चात् गोमल नदी को पार करते हुए मिहतर सुलेमान पहाड़ियों के किनारे-किनारे होते हुए वावर वीलह पहुँचा। उसके आगे वढ़ने का समाचार पाते ही अफ़ग़ान भाग खड़े हुए। वीलह पहुँच कर वावर ने उनका सामान वटोर लिया। वीलह से वह सिविस्तान तथा दूख़ी को पार करता हुआ आवे इस्तदाह के निकट पहुँचा। उसके यहाँ पहुँचने से पूर्व जहाँ-गीर मिर्ज़ा गिलज़ई अफ़ग़ानों को लूट चुका था। आवे इस्तादह की झील के किनारे पड़ाव डालने के पश्चात् वावर ने नासिर मिर्ज़ा और वहलोल को नूर घाटी में रहने वाले अफ़ग़ानों पर आक्रमण करने के लिए भेजा। यद्यपि नासिर मिर्ज़ा को इस अभियान में तनिक भी सफलता न मिली किन्तु वहलोल ने लमग़ान प्रान्त के मन्डवार तुमान में रहने वाले तरकलानी अफ़ग़ानों को लूट लिया। अभी नासिर मिर्ज़ा और वहलोल अफ़ग़ानों के विरुद्ध व्यस्त ही थे कि एकाएक वावर कावुल लौट गया जहाँ वह ५ मई १५०५ ई० को पहुँचा।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि अभियान का लक्ष्य केवल अफ़ग़ानों को लूटना और उन्हें शक्तिहीन वना देना था। लूट में तो उसे पर्याप्त धन अथवा सामग्री न मिल सकी किन्तु इस प्रदेश की भौगोलिक दशा का ज्ञान उसे अवश्य हो गया। वावर को यह भी पता चल गया कि इन अफ़ग़ान जातियों में किसी

प्रकार की एकता नहीं और वे शत्रु के विरुद्ध मिलकर नहीं लड़ सकती हैं। यही नहीं पहली बार उसे मालूम हुआ कि यह जातियाँ उसकी आय का साधन नहीं बन सकती हैं और न ही इस प्रदेश में भारी सामान के साथ आगे कोई भी आक्र-मणकारी बढ़ सकता है। संक्षेप में उसके अनुभव ने उसे इस बात पर बाध्य किया कि वह सीमावर्ती प्रदेशों में रहने वाली जातियों के प्रति एक नीति बना ले।

१५०६ ई० के प्रारम्भ में बाबर ने पुनः क़लात के दक्षिण में सावासन्ग तथा अलातक़ में रहने वाले गिलज़ई अफ़ग़ानों पर आक्रमण किया। किन्तु बाक़ी चग़ानियानी और जहाँगीर मिर्ज़ा में अभियान की योजना पर मतभेद होने के कारण बाबर ने क़लात के दुर्ग को विजित करने का विचार त्याग दिया और वापस लौट गया। फरवरी १५०६ में जब उसे सूचना मिली कि तुर्कमान हज़ारा अफ़ग़ानों ने लूट-मार करना प्रारम्भ कर दिया है तो वह काबुल से उनको दबाने के लिए चल पड़ा। दाराए खुश के निकट जंगलिक नामक स्थान पर उसने उन पर आक्र-मण किया और उन्हें तितर- बितर कर दिया। तत्पश्चात् क़ासिम बेग और सुल्तान क़ुली चुनक के साथ उसने हज़ारा शिविर को लूटा और उनकी अनेक भेड़ें तथा घोड़े छीन कर काबुल की ओर प्रस्थान किया। इस अभियान से लौटते समय यद्यपि वह बीमार पड़ गया किन्तु उसने क़ासिम बेग तथा जहाँगीर मिर्ज़ा को हुसैन घनी और उसके भाईयों को दण्ड देने के लिए पिचकन की घाटी में भेजा। शाही सेना ने बढ़कर उनके गढ़ों को तोड़ा और अनेक अफ़ग़ानों को मौत के घाट उतार कर वे वापस लौट गए[1]।

१५०७ ई० में जब बाबर खुरासान से वापस लौट रहा था तो तुर्कमान हज़ारा ने उसका मार्ग रोका। बाबर ने उन पर आक्रमण कर उनकी भेड़-बकरि-रियाँ छीन लीं और उनमें से अनेक को बन्दी बना कर मार डाला[2]। मई, १५०७ ई० में उसने पुनः काबुल से प्रस्थान किया। सारेदिह, कट्टाबाज तथा कैकतू होते हुए वह ख्वाज़ा इस्माइल सिरीनी पहुँचा, जहाँ कि गिल्ज़ी अफगान पड़ाव डाले हुए पड़े थे। बाबर ने उन्हें परास्त किया और उनकी ८०,००० भेड़ें छीन लीं और तत्पश्चात् वह काबुल लौट गया[3]। इसी वर्ष शैबानी ख़ाँ के भय से जब

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, २५४।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३१३।
३. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३२३-२५।

वह काबुल छोड़ कर हिन्दुस्तान को उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्त्ती प्रदेशों में शरण लेने के लिए बढ़ा तो खिज़्रखैल, शम्मू खैल, खिरीलची और खोगियानी अफ़ग़ान जातियों ने उसका मार्ग रोका। बाबर ने उन्हें परास्त किया और वह पुर आमिन की घाटी तक आगे बढ़ता ही गया। शैबानी खाँ के कन्धार से वापस होने की सूचना पाकर बाबर भी काबुल वापस लौट गया[1]।

मई, १५०८ ई० से लेकर अगले ११ वर्षों तक "आत्मकथा" विवरण का क्रम छूटा हुआ है अतः हमें बाबर की अफ़ग़ानों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियों के बारे में कुछ भी नहीं पता चलता। १५१६ ई० में उसने बाजौर का दुर्ग जीता[2]। उसके बाद ही सवाद के अफगान सरदार सुल्तान अलाउद्दीन ने बाबर की आधीनता स्वीकार की। इसके पश्चात् यूसुफज़ई अफ़ग़ानों के शत्रु दिलज़ाक अफ़ग़ानों की सहायता से उसने युसुफजइयों पर अपने प्रभुत्व को स्थापित करने की चेष्टा की। शाह मन्सूर यूसुफज़ई ने उसकी आधीनता स्वीकार कर ली और उसने अपनी पुत्री बीबी मुबारिका का विवाह भी उससे करना स्वीकार किया। इस प्रकार जनवरी, १५१८ ई० में बाबर और यूसुफज़ई अफ़ग़ानों के सम्बन्ध पक्के हो गए[3]। संवाद के अफ़ग़ान सरदार सुल्तान अलाउद्दीन तथा अन्य अफ़गान जातियों की सहायता से बाबर ने इस प्रदेश के लोगों से कर वसूलना प्रारम्भ किया। उसने सुल्तान अलाउद्दीन को एक सैनिक टुकड़ी के साथ कहराज की ओर ४,००० खरवार अनाज कर के रूप में वसूल करने के लिए भेजा[4]। वहाँ के लोग कर न दे सके, फलस्वरूप सुल्तान अलाउद्दीन ने उन पर आक्रमण किया और उन्हें दण्ड दिया[5]। लगभग इसी समय बाबर ने अपनी सेनाओं को पंजकोरा के यूसुफज़ई, हश्तनगर तथा मुहम्मदी अफ़ग़ानों के विरुद्ध सेनाएँ भेजीं[6]। हश्त नगर से बढ़ कर बाबर भीरा पहुँचा। मलिक हश्त ने उसकी आधीनता स्वीकार की। क्योंकि बाबर इस समय

---

१. वही।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३४१-३।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३७०।
४. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३७५।
५. वही।
६. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३७६-८४।

भीरा से लेकर नीलाब तक अपना प्रभुत्व स्थायी रूप से स्थापित करना चाहता था, अतएव उसने आदेश दिया कि कोई भी इस प्रदेश के निवासियों को नहीं लूटेगा। काबुल वापस लौटते समय, जनजुहा कबीलों के कहने पर उसने बेहरालेह पर आक्रमण किया तथा हाथी गक्खर को आधीनता स्वीकार करने पर बाध्य किया[1]। इसके पश्चात् जब वह काबुल पहुँचा तो अनेक अफ़ग़ान सरदार मलिक शाह मन्सूर के साथ आए और उन्होंने उसकी आधीनता स्वीकार की। बाबर ने उनके साथ सन्धि की और उनसे कहा कि बाजौर तथा सवाद के किसानों पर उनका कोई अधिकार न होगा और नही उस प्रदेश पर तथा वहाँ के किसान अब उसे ६,००० खरवार चावल कर के रूप में दें[2]। इस प्रकार बाजौर तथा सवाद तक बाबर का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

जुलाई, १५१६ ई० में बाबर ने पुनः अफ़ग़ान कबीलों के विरुद्ध बढ़ना प्रारम्भ किया। इस बार उसने अब्दुर रहमान अफ़ग़ानों पर, गिरदीज़ की सीमा पर आक्रमण किया। उसने अनेक को बन्दी बनाया और शेष को या तो मौत के घाट उतार दिया या भगा दिया। १ सितम्बर, १५१६ ई० में शाह मीर हुसैन के सुझाव पर उसने बारा नदी के पास अफ़रीदी अफ़ग़ानों पर आक्रमण किया[3]। इसी समय उसे सूचना मिली कि सुल्तान सईद खान ने बदख़्शाँ पर आक्रमण कर दिया है, अतः वह काबुल वापस लौट गया। मार्ग में खिज्र खैल, वज़ीर, कोरालसी, और शम्भू खैल अफ़ग़ानों के सरदारों ने उसे कर दिए और उसका अभिवादन किया[4]। अगले वर्ष जनवरी, १५२० ई० में बाबर ने हैदर को कफीरिस्तान भेजा। वहाँ से सात अफ़ग़ान सरदार आए और उन्होंने बाबर की आधीनता स्वीकार की।[5] जनवरी, १५२० से अगले पाँच वर्षों की घटनाओं का विवरण 'आत्मकथा' में नहीं मिलता, अतएव बाबर की कार्यवाहियों के बारे में कुछ भी नहीं मालूम होता। श्रीमती बेव्रिज का कहना है कि इस अवधि में बाबर ने दो बार अफ़ग़ानों को दण्ड दिया और उन्हें अपने अधीन लाने की चेष्टा की।

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३७६ ।
२. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३६६-४०० ।
३. बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ०, ४०३ ।
४. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ४१२ ।
५. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ४१४ ।

पानीपत के युद्ध के पहले तक बाबर ने हिन्दुस्तान के उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती प्रदेशों पर अपना प्रभुत्व पूर्णरूप से स्थापित कर लिया। अफ़ग़ानों के प्रति उसने जो सहृदयता एवं कठोरता की नीति अपनाई उससे अफगानों को तो विशेष लाभ न हुआ किन्तु बाबर को बहुत ही लाभ हुआ। शत्रु के देश में उसे पैर रखने को मिल गया, तथा उसे अब तनिक भी यह भय न रहा कि अफ़ग़ान जातियाँ उसे आगे न बढ़ने देगीं। भविष्य में भी बाबर के सम्बन्ध अफ़गान जातियों से अच्छे बने रहे और वे निरंतर उनकी सहायता करती रहीं।

बाबर के ईरान के साथ सम्बन्ध :—

मुग़ल साम्राज्य के सम्राट के रूप में बाबर ने ईरान तथा ट्रैन्स-आक्सियाना के निकटवर्ती राज्यों से राजनयिक सम्बन्ध भी स्थापित किए। मुग़ल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए तथा उसकी रक्षा के लिए और यह जताने के लिए कि मुग़ल सम्राट किसी भी भाँति उनसे कम नहीं है, बाबर के लिए यह आवश्यक था कि वह निकटवर्ती देशों से राजनयिक सम्बन्ध स्थापित करे। ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करने के पीछे और भी कई महत्वपूर्ण कारण थे। मध्ययुग में हिन्दुस्तान के मुसलमान शासकों को ईरान और तूरान दो ही देश निरन्तर सांस्कृतिक प्रेरणा प्रदान करते रहे और यही कारण है कि बाबर का ध्यान भी उधर ही लगा रहा। इसके अतिरिक्त उसके मन में सदैव अपने पैतृक राज्य को पुनः हस्तगत करने की लालसा रही। इस लालसा ने भी उसे इस बात पर विवश कर दिया कि वह ईरान के शासक के निकट रहे और समय पर उसकी सहायता से अपनी महत्वाकांक्षा पूर्ण कर ले। वह सदैव इस अवसर की खोज में रहा कि ईरान के शासक के साथ सन्धि कर वह अपने खोए हुए राज्य को वापस ले ले और ईरान के शासक की यह वाह्य नीति थी कि वह टर्की के सुल्तान को मध्य एशिया तथा हिन्दुस्तान की सुन्नी शक्तियों का ईरान की शिया शक्ति के विरुद्ध कोई संघ न बनने दे। इस प्रकार ईरान का शाह भी सदैव ऐसे अवसरों का स्वागत करता था, जब कि हिन्दुस्तान के शासक के साथ उसे मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने को मिल जांय। संक्षेप में ईरान के शाह का मुख्य ध्येय अपने साम्राज्य की सुरक्षा करना था और बाबर का ध्येय उसके साधनों का प्रयोग कर ट्रान्स आक्सियाना से उज़बेगों को भगा कर समरकन्द पर अपना अधिकार स्थापित करना था।

इस प्रकार हिन्दुस्तान तथा ईरान के शासकों में राजनयिक होड़ लग गई। हिन्दुस्तान को विजित करने के बाद बाबर ने ख्वाजगी असद को ईरान भेजा कि

वह उसकी ओर से शाह तहमस्प को सिंहासन पर बैठने की बधाई दे दे। शाह ने ख्वाजगी असद के साथ ईरानी राजदूत सुलेमान को हिन्दुस्तान भेजा और बाबर के लिए दो कारकेसियन युवतियाँ उपहार में भेजी। बाबर ने १७ मई, १५२७ ई० को सुलेमान को ईरान वापस लौटने की अनुमति प्रदान की और उसके साथ शाह के लिए उपहार में दो युवतियाँ भेजीं। कुछ समय पश्चात् मध्य-एशिया में प्रभावात्मक घटनाएँ घटीं। १० मुहर्रम, ९३४ हि०। २६ सितम्बर, १५२८ ई० को ईरानियों तथा उज़बेगों के मध्य जाम में युद्ध हुआ, जिसमें उज़बेग बुरी तरह पराजित हुए और उन्हें बहुत ही अधिक हानि उठानी पड़ी[1]। उज़बेगों की हार की सूचना पाकर अपने पैतृक राज्य को विजय करने की आशा बाबर में पुनः जागी। हुमायूं को जो पत्र उसने २८ नवम्बर, १५२८ को भेजा, उसमें बाबर ने उसे आदेश दिया कि कामरान तथा काबुल के अमीरों के साथ वह हिसार, समरकन्द तथा हिरात की ओर बढ़े[2]। किन्तु इस पत्र में बाबर ने ईरानियों से सहायता प्राप्त करने के सम्बन्ध में कुछ नहीं लिखा। सम्भवतः उसे यह आशा थी कि ईरानी सैनिक मुग़लों को सहायता अवश्य करेंगे। इसी आशा में बाबर रहा। दिसम्बर, १५२८ में जब हसन चलाबी के छोटे भाई के साथ ईरानी राजदूत बाबर के दरबार में पहुँचे तो बाबर ने उनका अतिथ्य-सत्कार किया और १८ दिसम्बर को उनके स्वागत में बहुत ही शानदार भोज का आयोजन किया। इस अवसर पर बाबर ने ईरानी राजदूतों से समरकन्द पर संयुक्त आक्रमण करने के सम्बन्ध में बातचीत की या नहीं, इस विषय में बाबर की "आत्मकथा' से कुछ भी पता नहीं चलता। २८ दिसम्बर को उसके दरबार में शाह तहमस्प का संरक्षक देव सुल्तान आया और उसी से बाबर को जाम के युद्ध के बारे में और भी बातें मालूम हुईं। जनवरी, १५२९ ई० में बाबर को काबुल के कुछ अफ़सरों के पत्र प्राप्त हुए, और उन पत्रों से बाबर को ज्ञात हुआ कि हुमायूं ने एक बड़ी सेना एकत्र कर ली है, सुल्तान वएस उसके पास आ गया है, और उसके साथ ४००० सैनिकों को लेकर वह समरकन्द की ओर प्रस्थान कर चुका है। बाबर को यह भी पता चला कि सुल्तान वएस के भाई शाह क़ुली ने हिसार में प्रवेश किया है और तरसून मुहम्मद ने आगे बढ़कर कुबैदियान को अधिकृत कर लिया है, तथा वह वहाँ

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ६२४-२५।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६४०।

हुमायूं की सहायतार्थ सेनाओं की प्रतीक्षा कर रहा है और हुमायूं ने तुलिक कोकुलदाश और मीरखुर्द को उसकी सहायता के लिए भेज दिया है तथा स्वयं भी उस ओर बढ़ रहा है ?[1] हुमायूं की उस प्रदेश में प्रगति से असन्तुष्ट होकर बाबर ने उसे आदेश दिया कि वह सैनिक कार्यवाहियाँ स्थगित कर दे। ३ फरवरी, १५२९ ई० को उसने अब्दुल मलिक को मुग़ल राजदूत के रूप में ईरान के शाह के पास इस आशय से भेजा कि ईरानियों की सहायता से उजबेगों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही की जा सके। अब तक बाबर को यह विश्वास हो गया था कि बिना ईरानियों की सहायता से उस प्रदेश में मुग़लों को तनिक भी सफलता नहीं प्राप्त हो सकती। ईरान के शाह से सहायता उपलब्ध करने के विचार से बाबर ने कामरान को फरवरी, १५२९ ई० को भेजे गए पत्र में लिखा कि "शाहजादे (शाह) से बातचीत करते समय पूरी-पूरी सावधानी दिखाए।"[2] दो दिन-पश्चात् सम्भवतः शाह के साथ शीघ्र से शीघ्र संधि की शर्तों को तय करने के लिए जिससे कि ईरानी सैनिक हुमायूं की सहायता कर सके, बाबर ने शाह क़ुली को ईरान वापस जाने की अनुमति प्रदान कर दी।[3] इस प्रकार मार्च, १५२९ तक बाबर निरन्तर इस चेष्टा में लगा रहा कि शाह की सहायता प्राप्त कर वह अपने पैतृक राज्य को वापस ले ले। २८ अप्रैल को जब वह पूर्व की ओर बढ़ रहा था तो ईरानी राजदूत मुराद कजर उसके पास संधि के सम्बन्ध में शाह तहमस्प का सन्देश लेकर पहुँचा। अफ़ग़ानों के विरुद्ध बाबर अगले कुछ महीनों तक इतना व्यस्त रहा कि मुराद कजर को वह कोई निश्चित उत्तर न दे सका और अकारण ही उसे २८ जुलाई, १५२९ तक रोके रहा। ऐसा प्रतीत होता है कि अप्रैल से जुलाई तक बाबर हुमायूं से यह आशा करता रहा कि वह कामरान तथा काबुल के अमीरों की सहायता से ही समरकन्द को विजित कर लेगा या शाह तहमस्प से मिल कर संधि की शर्तों को तय कर ईरानियों की सहायता से उस कार्य को पूर्ण कर लेगा। किन्तु किन्हीं आदेशों के अभाव में हुमायूं यह सब कैसे करता ? अगस्त, १५२९ ई० में बाबर बीमार पड़ गया और उसके पश्चात् समय-समय पर बीमार पड़ता रहा, जिसके कारण समरकन्द को विजित करने की दिशा

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६४२।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६४५।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६४९।

में कोई कार्य न किया जा सका। सितम्बर, अक्टूबर में हुमायूं बदख्शाँ से हिन्दुस्तान आ गया और उसके पश्चात् मध्य-एशियाई अभियानकी योजना को कार्यान्वित करने का अवसर बाबर को न मिल सका। काबुल के गवर्नर के रूप में कामरान पश्चिमी प्रदेशों में अवश्य रहा किन्तु वह अपने प्रान्त की आन्तरिक समस्याओं में इतना उलझा रहा कि न तो वह शाह से भेंट कर सका और न ही उसकी सहायता से ट्रान्सआक्सियाना को विजय करने की योजना को कार्यान्वित कर सका। हिन्दुस्तान में भी बाबर के सामने अनेक समस्याएँ थी ? जो कि उसे निरन्तर घेरे रहीं। पंजाब में अब्दुल अज़ीज़ ने विद्रोह कर दिया, अफ़ग़ानों ने बिबन और बायज़ीद के नेतृत्व में सिर उठाया, हुमायूं बीमार पड़ा और उसकी अपनी बीमारी ने भी उसका पीछा न छोड़ा। ऐसी परिस्थिति में वह कैसे हिन्दुस्तान छोड़ सकता था? और न ही वह इस स्थिति में था कि शाह के साथ उज़बेगों के विरुद्ध सन्धि कर सकता। कुछ भी हो अपने स्वप्नों को साकार बनाने की चेष्टा उसने अवश्य की, यद्यपि उसमें उसे तनिक भी सफलता न मिली। राजनयिक की इस घुड़-दौड़ के कारण बाबर तथा ईरान के शाह तहमस्प के मध्य मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध बने रहे। वास्तव में इस मित्रता काआधार दोनों शासकों की साम्राज्यवादी विचारधारा और उज़बेगों का विनाश कर अपने साम्राज्य की सीमाओं को बढ़ने का स्वप्न देखना था। दोनों सम्राटों में मित्रता तो बनी रही, किन्तु एक दूसरे की सहायता से वे अपने साम्राज्यों का विस्तार करने में असफल रहे।

बाबर की मध्य एशियाई नीति :—

हम पहले ही बता चुके हैं कि १५१२ ई० में जब बाबर समरकन्द को अपने हाथों में न रख सका और उज़बेगों का सामना करने में असफल रहा तो उसे विश्वास हो गया कि ट्रान्स आक्सियाना में किसी प्रकार की सफलता, जब तक कि उसके पास साधनों की कमी है तब तक नहीं मिल सकती। निराश होकर उसने हिन्दुस्तान की ओर बढ़ना प्रारम्भ किया। १५१२ ई० से १५२५ ई० तक वह हिन्दुस्तान के द्वारों को खटखटाने में व्यस्त रहा। किन्तु इस बीच उसे समरकन्द की याद सदैव सताती रही और वह खोए हुए पैतृक राज्य को प्राप्त करने का अवसर ढूंढ़ता रहा। ट्रांस आक्सियाना में उज़बेगों के लिए निरन्तर विरोध की चिनगारी को बनाए रखने के लिए उसने वहाँ के लोगों को जो कि उसके

हितैषी थे तथा अपने सहायकों को नैतिक बल प्रदान करने की नीति अपनाई। इसी नीति के अनुसार बाबर ने बाक़ी शग़ावल को अपनी सेना के साथ उज़बेगों के सरदार क़राकितीन सुल्तान के विरुद्ध भेजा, जो कि इस समय बल्ख़ के दुर्ग का अवरोध कर रहा था। इसके बावजूद भी बल्ख़ का दुर्ग ईरानियों के हाथ से उज़बेगों ने छीन लिया। बाबर की इस नीति का तत्कालीन परिणाम यह हुआ कि जैसे ही हुमायूं ने बदख़्शाँ छोड़ा और वह बाबर की सहायता के लिए हिन्दुस्तान की ओर बढ़ा, उज़बेग सरदार करा कितीन सुल्तान ने हुमायूं के दो अधिकारियों मुल्ला बाबा पाशग़रही तथा बाबा शेख़ को अपनी ओर मिला लिया और उनके अधीन उज़बेग सेना को बाबर के राज्य के उत्तरी भागों पर आक्रमण करने के लिए भेज दिया। मुल्ला बाबा तथा बाबा शेख़ ने उज़बेगों के साथ मिल कर काबुल राज्य की सीमा पर स्थित अनेक स्थानों को जीता। उज़बेग सेनाएँ ग़ोरी तथा ओशे की ओर बढ़ीं। जब ओशे के दुर्ग के मुग़ल सेनाध्यक्ष मीर होमा को उज़बेगों के आगे बढ़ने की सूचना मिली तो उसने उन्हें सन्देश भेजा कि वह दुर्ग को समर्पित करना चाहता है। बाबा शेख़ कुछ उज़बेगों को लेकर ओशे की ओर बढ़ा, और जब वह दुर्ग के निकट पहुँचा तो मीर होमा ने धोखे से उसे पकड़ कर मौत के घाट उतार दिया और उज़बेगों को भगा दिया। तत्पश्चात् मीर होमा हिन्दुस्तान की ओर रवाना हुआ। उसके आगे बढ़ने पर जब मुल्ला बाबा पाशग़रही ने उसका मार्ग रोकने की चेष्टा की तो उसने उसका काम तमाम कर दिया और उसका सिर काट कर आगरा भेज दिया[1]। इस प्रकार उज़बेगों की वह योजना जिसके द्वारा वे बाबर के भारतीय अभियान को विफल बनाना चाहते थे असफल सिद्ध हुई। और न ही बाबर के हितैषी ने इस समय ट्रान्स अक्सियाना में उज़बेगों के विरुद्ध विद्रोह कर उसको आशा दिला सके कि वे उसके पक्ष में हैं।

पानीपत के युद्ध के बाद बाबर ने मई, १५२६ ई० तथा जून, १५२६ ई० में अपने सम्बन्धियों एवं हितैषियों के लिए समरकन्द धन भेजा और यह आशा की कि वे उसके पक्ष में उजबेगों के विरुद्ध विद्रोह करेंगे और उन्हें वहाँ से भगाने की चेष्टा करेंगे। किन्तु जब उन्होंने ऐसा न किया तो वह बहुत ही निराश हुआ। उसने अक्तूबर, १५२८ ई० में बुख़ारा में रहने वाले अपने समर्थकों के पास पत्र भेजा जिसमें उसने लिखा, "हमारा हृदय हिन्दुस्तान में, पूर्व एवं पश्चिम के विद्रो-

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५४५-४६।

हियों एवं काफिरों की ओर से सन्तुष्ट हो गया है।यदि ईश्वर की कृपा से सव कुछ ठीक रहा तो हम पूर्ण रूप से प्रयत्न करेंगे और निःसन्देह आगामी वहार में अपने लक्ष्य को पा लेंगे[1]। इस प्रकार पत्र भेजकर उसने अपने समर्थकों की भावनाओं को उज़वेगों के विरुद्ध उकसाने का प्रयास किया। उसने हुमायूं से भी उस ओर वढ़ने के लिए कहा किन्तु वह कुवँदियान से आगे न वढ़ सका। दिसम्वर, १५२८ ई० में जव कुछ उज़वेग राजदूत उसके दरवार में उपस्थित हुए तो उसे वड़ा आश्चर्य हुआ। मुग़ल दरवार में उज़वेगों का आने का उद्देश्य क्या था, यह तो ठीक तरह से मालूम नहीं, किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि उनका मुख्य उद्देश्य वावर को शाह तहमस्प के साथ सन्धि करने से रोकना था तथा ऐसा वातावरण पैदा करना था जिसमें उज़वेग तथा मुग़ल शासक अपनी आपसी वैमनस्यता को भूल जायं। वावर ने उज़वेग राजदूतों से संधि के विषय में कोई भी वात न की, कारण यह कि हुमायूं अव भी उज़वेगों के विरुद्ध अभियान में व्यस्त था। जनवरी, १५२६ ई० में जव वावर को सूचना मिली कि हुमायूं अपने लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सका तो उसने तुरन्त उज़वेग राजदूतों की ओर मित्रता का हाथ वढ़ा दिया। उसने ख्वाजा कलाँ को आदेश दिया कि वह कावुल से समरकन्द जाए और उज़वेग शासक से सन्धि की वातचीत करे। फरवरी, १५२६ ई० में उसने चापुक को भी इसी आशय से उज़वेग सुल्तान के पास भेजा। उसने हुमायूं को भी आदेश दिया कि उज़वेगों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाहियाँ वन्द कर दी जायं, और उनसे मैत्रीपूर्ण-सम्वन्ध स्थापित किए जायं[2]। इन आदेशों के वावजूद भी मुग़ल सैनिक निरन्तर वल्ख पर छापे मारते रहे। फरवरी, १५२६ ई० में क़रा कितीन सुल्तान का राजदूत वावर के दरवार में उपस्थित हुआ और उसने यह शिकायत की कि मुग़ल वल्ख पर छापे मारते जा रहे हैं। इस पर वावर ने पुनः हुमायूं को आदेश दिया कि वह ऐसा न करे और उज़वेगों से मैत्रीपूर्ण सम्वन्ध वनाए रखने की चेष्टा करे। मार्च-अप्रैल, १५२६ ई० में हुमायूं ने मुग़ल सैनिकों को वापस वुला लिया। इसके पश्चात् वावर के जीवन के अन्त तक पुनः ट्रान्सआक्सि-

---

१. वावर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६१७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ० २८२।
२. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६४३-६४५।

याना पर आक्रमण करने का कोई भी प्रयास न किया गया। अपनी प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए बाबर ने उज़बेगों से वैमनस्यता त्याग दी।

उपरोक्त विवरण से यह स्पष्ट है कि बाबर अपने साम्राज्य के निकटवर्ती राज्यों के शासकों के साथ किस प्रकार के सम्बन्ध स्थापित रखना चाहता था। हिन्दुस्तान के बाहर भी उसने अपनी प्रतिष्ठा का प्रचार कर मुग़ल साम्राज्य को गौरवान्वित किया और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ाई। यही नहीं, उसने अपने वंशजों के लिए उस मार्ग का प्रदर्शन किया जिसका अनुसरण कर वे अपनी साम्राज्यवादी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण कर सकते थे। इनमें तनिक भी सन्देह नहीं कि जिस उत्तरी-पश्चिमी सीमावर्ती तथा मध्य-एशियाई नीति का बाबर ने अनुसरण किया, उसने उन द्वारों को खोल दिया जहाँ से होकर मध्य-एशियाई एवं ईरानी संस्कृति ने इस देश में प्रवेश कर यहाँ के लोगों में नई चेतना उत्पन्न की तथा यहाँ की संस्कृति को नई दिशा प्रदान की।

नवां अध्याय

चरित्र-चित्रण एवं उपसंहार

चरित्र-चित्रण एवं उपसंहार

वावर का शरीर वलिष्ठ[1], कद मंझला, रंग गोरा था। उसकी आँखें मंगोलों की तरह छोटी व पैनी दृष्टि वाली थी तथा उसका चेहरा गोल था। सुख-दुःख, उस युग के प्रभावशाली व्यक्तियों, मित्रों एवं शत्रुओं तथा तत्कालीन वातावरण एवं परिस्थितियों ने उसे जैसा वना दिया, वैसा ही वह था। वह एक कुशल सेनानायक, योद्धा, राजनीतिज्ञ एवं कूटनीतिज्ञ भी था। वह एक कर्त्तव्य परायण पति एवं स्नेही पिता था। उस युग को देखते हुए इतने सव गुणों का एक व्यक्ति में समावेश होना एक आश्चर्य जनक वात मालूम होती है। परिवर्ती एवं आधुनिक इतिहासकारों ने उसके गुणों की प्रशंसा अनेक शब्दों में की है और उसके व्यक्तित्व पर पूर्ण रूप से प्रकाश डाला है। नफायसुल माआसिर के रचयिता, अलाउद्दौला विन यहिया कज़वीनी ने लिखा है कि, "वह ऐसा वादशाह था जो युद्ध के लिए कटिवद्ध होता तो आकाश के दुर्ग को विजित कर लेता था और कभी समादान के हाथ खोलता तो आवश्यकता ग्रस्त लोगों के द्वार वन्द कर देता। उनके गुण, पराक्रम, वीरता एवं विजय असीम एवं असंख्य हैं। उन्होंने जितने पौरुष का प्रदर्शन किया उसका वुद्धि के लिए समझना सम्भव नहीं"[2]। अवुल फज़ल के अनुसार, "उस पवित्र व्यक्ति के गुणों का विवरण ग्रन्थों में करना सम्भव नहीं। संक्षिप्त रूप से राज्य व्यवस्था के निम्नलिखित आठ नियम उसमें पूर्ण रूप से पाए जाते थे—(१) उत्कृष्ट भाग्य (वख्ते वुलन्द), (२)

---

१. निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार, "इस वादशाह की विशेषताओं में से सवसे विचित्र विशेषता यह है कि दो पाशाना मोजो से किले के कंगूरो पर दौड़ते हुए चले जाते थे। कभी कभी दो आदमियों को वग़ल में लेकर वे एक कंगूरे से दूसरे कंगूरे पर फांद जाते थे।—"तवक़ात-ए-अकवरी," अनु० पृ०, ४०, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर), पृ०, ४३५।

२. रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ३५१-२।

बुलन्द हिम्मत (हिम्मते अरजूमन्द), (३) संसार विजय करने की शक्ति, (कुदरतें किशवर कुशांई), (४) राज्य व्यवस्था (मुल्क दारी), (५) नगरों को आबाद करने की कुशलता (कोशिश दर मामूलिए बलाद), (६) लोगों के कल्याण करने में संलग्न रहना (सफेनीयत बर रिफायते एबाद), (७) सैनिकों को प्रसन्न रखना (खुशदिल साख्तने सिपाही, (८) विनाश से उनकी रक्षा,(जब्ने एशाँ अज़ तबाही)[1]। फिरिश्ता ने उसके गुणों की प्रशंसा करते हुए लिखा है, "यह बादशाह बारह वर्ष की आयु में सिंहासन पर बैठा और उसने ३८ वर्षों तक राज्य किया। वह बहुत ही उदार शासक था और वह कभी-कभी इतना उदार हो जाता था कि उसकी उदारता दानशीलता के बराबर भी हो जाती थी। वह इतना उदार था कि कभी कभी वह अक्षम्य तथा विद्रोही को भी क्षमा कर देता था और ऐसे समय ऐसा प्रतीत होता था कि वह बुरे लोगों के प्रति भी भलाई करने के सिद्धान्त का अनुकरण कर रहा हो। इस प्रकार से वह अपने शत्रुओं के मन से बुरे विचार निकाल देता था, और उन्हें इस प्रकार बना देता था कि वे उसके गुणों की प्रशंसा करने के योग्य हो जायँ। वह अनेक मत के सिद्धान्तों को जानने वाला विद्वान था और कभी भी प्रतिदिन की नमाज़ पढ़ना नहीं चूकता था। कविता करने में, गद्य की रचना एवं निबंध लिखने तथा संगीत में कुछ ही व्यक्ति उसकी बराबरी कर सकते थे। उसने तुर्की भाषा में निर्भयता पूर्वक रोचक शैली में अपनी आत्म कथा की रचना की, जिसकी प्रशंसा चारों ओर हुई। बाबर देखने में सुन्दर, उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली, मृदु भाषी, उसका आचरण मनमोहक और उसका व्यवहार मैत्रीपूर्ण था।[2]" आगे चलकर फिरिश्ता ने लिखा है कि, "यदि हम युद्धों को ध्यान न दें तो हम उसे दरबार के विलासी जीवन, सुरा व सुन्दरी में डूबा हुआ पाते हैं। कभी कभी जब वह आमोद-प्रमोद मनाया करता था तो वह काबुल में एक उद्यान में हौज़ में शराब भरवा दिया करता था, और इस हौज़ पर यह पंक्तियाँ खुदी हुई थी:—

१: अकबर नामा (मू० ग्रन्थ), पृ०, ११८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४१२।

२: फिरिश्ता, (मू० ग्रन्थ), "तारीख-ए-फिरिश्ता" पृ० २११, ब्रिग्स, "राइज़ आफ़ दि मुहमडन पावर इन इण्डिया", भाग २, पृ०, ६५।

"नौरोज़ व नौबहार व मन व दिलबरश ख्वेश अस्त,
बाबर व फैश कोशिश आलम व दो-बारह नीस्त;"[१]

इस प्रकार अन्य इतिहासकारों नेभी उसके जीवन के विभिन्न पहलुओं की सराहना की है। बाबर अपनी उदारता, दानशीलता, नम्र स्वभाव, न्यायप्रियता तथा अपने स्वभाव को परिस्थिति के अनुकूल बना सकने के लिए प्रसिद्ध था। उसके पौरुष, आकर्षक व्यक्तित्व, अदम्य उत्साह, और कार्य क्षमता एवं दूरदर्शिता, कुशाग्र बुद्धि को देखकर कुछ इतिहासकारों ने उसकी तुलना मध्य युग के महान् सेनानायकों एवं विजेताओं से की है।उसके सन्तुलित व्यक्तित्व को देखकर कभी-कभी लोग चकित रह जाते थे। कभी-कभी उसका हृदयग्राही एवं सौम्य स्वभाव उसके अनुयाइयों एवं समर्थकों तथा उसके सैनिकों में आत्म बल उत्पन्न कर देता था। मृदुलता और कठोरता का प्रचुर मात्रा में उसमें समावेश था। यही कारण है कि लोग उसकी आज्ञाओं का सुलभतः पालन करते थे और उससे स्नेह रखते थे। बाबर के सम्बन्ध में यह भी कहा गया है कि उसमें मंगोल की सैनिक क्षमता, तुर्क का अदम्य साहस और ईरानी की सौम्यता विद्यमान थी। निस्संदेह इसमें से कुछ गुण उसने अपने पूर्वजों से ग्रहण किए, कुछ समकालीन व्यक्तियों से और कुछ गुण धीरे-धीरे उसने लोगों के साथ गोष्ठियों में बैठकर अथवा युद्ध में भाग लेकर या अपने मामा के पास अतिथि के रूप में रहकर अथवा अपने पूर्वजों के बारे में सुनकर उपार्जित किए। यह बहुत ही सारगर्भित एवं आश्चर्यजनक बात थी कि विषम परिस्थितियों में भी उसने कभी अपना मानसिक सन्तुलन न खोया। फरग़ना व समरकन्द के शासक के रूप में निष्कासित शासक के रूप में, समरकन्द, काबुल या आगरे की गलियों में विजयी पताकाओं को फहराते हुए हम उसे कभी भी उदास नहीं देखते।

उसमें कार्य करने की अदम्य क्षमता थी। उसकी महत्वाकांक्षाओं की कोई सीमा न थी। उसे अपने जीवन में यद्यपि अनेक अवसरों पर पराजय का मुँह देखना पड़ा और दुखी जीवन व्यतीत करना पड़ा, किन्तु कोई भी पराजय तथा यातना उसको इस बात पर विवश न कर सकी कि वह अपनी महत्वाकांक्षी योजनाओं को त्याग दे या चुप बैठ जाय। इसके विपरीत प्रत्येक पराजय उसकी महत्वाकांक्षाओं को नया जीवन प्रदान करती रही तथा उसका मार्ग प्रशस्त करती

१. फिरिश्ता "तारीख-ए-फिरिश्ता", (मू० ग्रन्थ); पृ०, २११-१२ ।

रही। विपदाओं के पहाड़ के सन्मुख उसने कभी भी मुँह न मोड़ा। वह निरन्तर शक्तिशाली से शक्तिशाली शत्रु का सामना करता रहा और इस बात की चेष्टा में लगा रहा कि वह अपने खोए हुए पैतृक साम्राज्य को या तो वापस ले ले या अन्यत्र अपने अस्तित्व को बनाए रखने के लिए साम्राज्य की स्थापना करे। उसका सम्पूर्ण जीवन इस बात का द्योतक है कि कठिनाइयों के अथाह सागर में रहकर भी वह कभी विचलित या हतोत्साहित न हुआ। अपनी प्रत्येक पराजय के उपरान्त थके हुए योद्धा की भाँति वह विश्राम करने के लिए बैठ जाया करता था और इसी बीच, जैसा कि हम सोच भी नहीं सकते हैं, वह अपनी पराजय के कारणों पर विचार करता, शत्रु की सैन्य व्यवस्था एवं युक्ति को समझने का प्रयास करता और पुनः अपने साधनों को जुटा कर वह युद्धस्थल में अपने प्रतिद्वन्दियों से लड़ने के लिए उतर पड़ता था। इस प्रकार प्रत्येक पराजय से उसने अनुभव प्राप्त किया और यही अनुभव उसका मार्ग निर्देशक था। इसी अनुभव से धीरे धीरे उसने युद्ध जीते और एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इस बात पर दो मत कदापि नहीं हो सकते कि वह एक कुशल योद्धा, कूटनीतिज्ञ था। सैन्य पद्धति में उस समय हिन्दुस्तान में उसका कोई भी मुकाबला नहीं कर सकता था।

उसकी आत्मकथा में ही हमें उसके व्यक्तित्व एवं चरित्र की झलक मिलती है। अपनी भूलों तथा अपने चारित्रिक दोषों को स्वीकार करना वह जानता था। अपनी अज्ञानता को स्वीकार करने में भी कभी भी उसे संकोच न हुआ करता था। उसकी आत्म-कथा में से निम्नलिखित उदाहरणों से यह बात स्पष्ट होती है। हिरात में बदी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा ने उसे दावत में आमंत्रित किया। खाने में पका हुआ काज़ (एक पक्षी) लाया गया। बाबर को काज़ काटना व उसके टुकड़े करना न आता था अतः उसने उसे ज्यों का त्यों छोड़ दिया। जब बदी-उज़-ज़मान मिर्ज़ा ने उससे पूछा कि "क्या तुम्हें काज़ पसन्द नहीं?" तो बाबर ने निःसंकोच उत्तर दिया; "मुझे काज़ काटना नहीं आता।[1]" इसी प्रकार अपने प्रथम विवाह के सम्बन्ध में जो बातें लिखी हैं, वे केवल रोचक ही नहीं वरन् उसके शील तथा स्पष्टवादी स्वभाव का भी परिचय देती हैं। उसने लिखा है कि, "आएशा सुलतान बेगम से; जो सुल्तान अहमद मिर्ज़ा की पुत्री थी, मेरी मंगनी मेरे पिता

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३०४।

तथा चाचा के जीवन काल में हो गई थी। खोजन्द पहुँच कर शावान मार्च १५०० ई० में मैंने उससे विवाह कर लिया। यह मेरे वैवाहिक जीवन का प्रथम अवसर था। यद्यपि मुझे उसके प्रति कम स्नेह न था, किन्तु लज्जा व सुशीलता के कारण मैं उसके पास १०, १५ या २० दिन में एक वार जाया करता था। वाद में जव मेरा उसके प्रति स्नेह कम हो गया तो मेरी लज्जा और भी वढ़ गई, यहाँ तक कि मेरी माता खानम मुझसे जवरजस्ती करती और मुझे डाँट फटकार कर महीने अथवा ४० दिन में एक वार अपराधी के समान उसके पास भेजती थी"।[1] वावर अपने वारे में अपने पाठकों से कुछ भी छिपाने की चेप्टा कभी भी नहीं करता है। वह हमें वताता है कि सोलह या सत्रह वर्ष की आयु में उसे वावुरी नामक तरुण से प्रेम हो गया। अपने इस प्रेम का वर्णन उसने इन शव्दों में किया है—"मैं उन्माद एवं झेंप में उसके आने पर उसे धन्यवाद भी न दे पाता था, तो उसके चले जाने की शिकायत ही किस प्रकार कर सकता था? मुझमें इतनी शक्ति न थी कि मैं उसका उचित रूप से स्वागत ही कर सकता। एक दिन प्रेम के उन्माद में मैं अपने मित्रों के साथ एक गली में जा रहा था कि यकायक मेरा और उसका सामना हो गया। झेंप एवं घवराहट में मेरी दशा यह हो गई कि मैं उससे आँख भी न मिला सका और न उससे एक शव्द ही कह सका। झेंप व घवराहट में मुहम्मद सालेह का शेर मुझे याद आया :—

"जव मैं अपने माशूक को देखता हूँ तो झेंप जाता हूँ,
मेरे मित्र मेरी ओर देखते हैं और मैं दूसरों की ओर"[2]।

वावर में सवसे वड़ी अच्छाई यह थी कि वह कभी भी मुसीवत में घवड़ाता न था और न ही अपना धैर्य खोता था। एक वार फरग़ाना और समरकन्द को खोकर पुनः उसे हस्तगत करने के लिए यद्यपि उसे अधिक समय तक संघर्प करना पड़ा एवं उसे असाधारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ा फिर भी उसने कभी न तो हिम्मत हारी और न कभी धैर्य खोया। अपनी प्रत्येक असफलता में उसने सदैव अपनी चारित्रिक विजय का अनुभव किया। अपनी आत्मकथा में उसने

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, १२०; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ५२८।
२. वावर नामा (अनु०), भाग १, पृ०, १२१; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, २२६।

स्पष्ट रूप से लिखा है कि, "चूंकि मुझे राज्य पर अधिकार करने तथा बादशाह बनने की आकाँक्षा थी अतः मैं बैठ न सकता था।" धैर्यवान होने के साथ-साथ उसमें कष्टों को सहन करने की भी अत्यधिक क्षमता थी।

बाबर की सहृदयता एवं कोमल स्वभाव की एक झलक उस समय मिलती है जबकि वह हिरात से काबुल वापस लौट रहा था और मार्ग में उसे अनेक कष्ट भोगने पड़ रहें थे। वह अपने मित्रों से कभी भी पृथक न होना चाहता था और सदैव उनके साथ सुख एवं दुःख भोगने के लिए लालायित रहता था। अकेले किसी सुरक्षित स्थान पर ठहरना जबकि उसके साथी कठिनाइयों में घिरे हों, उसने कभी भी पसन्द न किया। साथियों के प्रति व्यवहार की झलक हमें फारसी की उस लोकोक्ति में जो कि उसने अपनी आत्मकथा में इस समय लिखी, "मित्रों साथ मरना ईद के समान होता है," मिलती हैं। उसने सदैव अपने अमीरों, बेगों, साथियों के प्रति मित्रता का व्यवहार किया, उनके प्रति सहृदयता दिखलाई और सदैव सौम्य स्वभाव का परिचय दिया।

पिछले कुछ अध्यायों में दिए गए विवरण के आधार पर हम निःसन्देह यह कह सकते हैं कि बाबर में वीरता एवं साहस की कमी न थी। अल्पायु से ही उसने अपने शत्रुओं का सामना करना प्रारंम्भ कर दिया था। शत्रुओं के टक्कर लेते समय उसने सदैव अपनी वीरता एवं साहस का परिचय दिया। तुर्कमान हज़ारा के विरुद्ध बढ़ते समय, जैसा कि उसने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है, बिना कवच धारण किए हुए अपने साथियों को लेकर आगे बढ़ता चला गया। इस अवसर का विवरण देते हुए उसने लिखा है कि हमारे ऊपर से बाण उड़ उड़ कर जाने लगे। यूसुफ मुहम्मद ने चिन्ता प्रकट करते हुए प्रत्येक व्यक्ति से कहना प्रारम्भ किया कि तुम लोग इस प्रकार नंगे ही जा रहे हो, हमने दो बाणों को तुम्हारे सिर पर से गुज़रते हुए देखा है। मैंने कहा, "तुम चिन्ता न करो ऐसे बहुत से बाण मेरे सिर पर से गुजर चुके हैं।" बाबर के इन शब्दों में हमें उसके अदम्य साहस की झलक मिलती है।

आखेट खेलने, घुड़सवारी करने, तैरने, भ्रमण करने तथा प्रकृति का परीक्षण करने की उसमें रुचि थी। प्राकृतिक दृश्यों को देखकर वह बहुत प्रसन्न होता था। शब्दों के माध्यम से उन दृश्यों का वर्णन करने की उसमें प्रतिभा थी। ऐसे दृश्यों को अपनी आत्मकथा के पृष्ठों पर उतारने की उसे धुन थी। उसकी आत्मकथा में हमें अनेक ऐसे स्थल मिलते हैं जहाँ कि प्रकृति का निरूपण उसने

किया है। ऐसे स्थलों पर उसने पेड़, पौधों, जानवरों, पक्षियों, फल-फूल आदि का विस्तृत ब्योरा दिया। उसकी निरीक्षण शक्ति प्रखर थी। जहाँ कहीं उसने प्रकृति का निरीक्षण करते हुए विवरण दिया है, वहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि प्रकृति से उसे विशेष प्रेम था और विभिन्न विषयों की वह जानकारी रखता था।

बाबर को संगीत से भी प्रेम था।[1] गोष्ठियों में प्रायः संगीत, मदिरा, माजूम और अरक का आयोजन हुआ करता था। १५०६ ई० तक जैसा कि बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है, उसने कभी भी मदिरा पान न किया। १५०६ ई० में जब वह हिरात पहुँचा तो बदी-उज़-जमान मिर्ज़ा व मुज़फ्फर मिर्ज़ा की मदिरा पान की गोष्ठियों में जब वह पहुँचा तो मदिरा-पान करने की इच्छा उसे होने लगी। मिर्ज़ाओं द्वारा आयोजित ऐसी गोष्ठियों में से एक गोष्ठी के बारे में वह लिखता है "उत्तरी शाह नशीन में दो तुशुक एक दूसरे के समक्ष उत्तर की ओर बिछे थे। एक तुशुक पर मैं तथा मुज़फ्फर हुसैन मिर्ज़ा बैठे और दूसरे पर सुल्तान मसऊद मिर्ज़ा तथा जहाँगीर मिर्ज़ा बैठे। चूंकि हम लोग मुज़फ्फर हुसैन मिर्ज़ा के घर में मेहमान थे अतः मुज़फ्फर हुसैन मिर्ज़ा ने मुझे अपने से ऊपर बैठने के लिए स्थान दिया। मदिरा के प्याले भरे गए साक़ियों को प्याले मेहमानों तक पहुँचाने का आदेश हुआ। अतिथि लोग उसे आबे ह्यात समझ कर पीने लगे। जब मदिरा का नशा अधिक चढ़ गया तो महफिल में गर्मी आ गई। उन्होंने मुझे भी मदिरा पान कराना चाहा और अपने साथ घसीटना चाहा। यद्यपि मैंने इस समय तक मदिरा पान न किया था और उसके आनन्द एवं स्वाद को भलीभांति न जानता था, किन्तु मुझे मदिरापान की इच्छा होने लगी

---

१. अपनी आत्मकथा में बाबर ने लिखा है कि बुधवार १६ मुहर्रम को जब हम लोग प्रातःकाल के नशे का सेवन कर रहे थे तो यह बात मजाक में कही गई कि जो कोई तांत्रिकों के समान गाना गा ले वह एक प्याला पिए। इस प्रकार बहुत से लोगों ने पिया। सुन्नत के समय फिर जब कि हम चिनार के वृक्षों के बीच में बैठे हुए थे, यह कहा गया कि जो कोई तुर्कों के समान गाना गा ले वह एक प्याला पिए। इस प्रकार भी बहुत से लोगों ने पिया।" इन पंक्तियों से यह स्पष्ट हो जाता है कि बाबर संगीत प्रेमी था—बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ४२२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, १३०।

और इस घाटी की सैर करने को मेरा दिल चाहने लगा। मुझे मदिरा पान से बाल्यावस्था में कोई रुचि न थी। मुझे उसके आनन्द तथा नशे का कोई ज्ञान न था। कभी-कभी मेरे पिता मुझसे मदिरा पान करने के लिए कहते तो मैं बहाना बना देता और यह पाप न करता। मैं उस समय संदिग्ध भोजन का भी प्रयोग न करता था तो मदिरापान का पाप कर ही कैसे सकता था ? अन्त में युवावस्था की मस्ती तथा वासना की तृप्ति के हेतु मैं मदिरापान की ओर आकृष्ट हुआ तो उस समय कोई ऐसा न था जो कि मुझे आग्रह करके पिलाता और न।किसी को मेरी रुचि का ज्ञान था। यद्यपि मेरी हार्दिक इच्छा मदिरापान की होती थी किन्तु ऐसे कार्य को जिसको अभी तक न किया हो एकाएक ही प्रारम्भ कर देना मेरे लिए कठिन था। मैंने इस समय सोचा कि अब मिर्ज़ा लोग मुझसे आग्रह कर रहे हैं और हम हेरी सरीखे सुन्दर नगर में हैं जहाँ भोग विलास की समस्त सामग्री उपलब्ध हैं तो यदि हम ऐसे स्थान पर भी मदिरापान न करेंगे तो फिर कब करेंगे ? मैंने मदिरापान का संकल्प कर लिया। किन्तु मैंने यह सोचा कि, "मैं बदीउज़्-ज़मान मिर्ज़ा के घर में उसके हाथ से, जो मेरे बड़े भाई के समान था, मदिरा न पी थी। यदि मैं उसके छोटे भाई के घर में उसके हाथ से मदिरापान करता हूँ तो यह उसे अच्छा न लगेगा।" यह सोचकर मैंने अपनी कठिनाई उनके सामने रखी। उन्होंने इस कठिनाई को न्यायसंगत समझते हुए उस महफ़िल में मुझसे मदिरापान के लिए आग्रह न किया और यह निश्चय हुआ कि जब मैं दोनों मिर्ज़ाओं के साथ होऊँ तो मैं उनके आग्रह पर मदिरापान करूँ।[1] इस समय तो उसने मदिरा पान करना प्रारम्भ न कया, किन्तु आगे चलकर वह अपने को रोक न सका। अपनी आत्मकथा में बाबर ने १५०८–६ ई० तक मदिरापान का कहीं उल्लेख नहीं किया। १५०६–१० से १५१८–१६ ई० तक का वृतान्त उसकी आत्मकथा में नहीं है। अतएव यह कह सकना कठिन है कि हिरात से वापस लौट कर १५१८–१६ ई० उसने कभी मदिरापान किया या नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने १५०६–१० ई० और १५१८-१६ ई० के मध्य किसी समय मदिरापान करना प्रारम्भ कर दिया होगा।[2]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ३०२-३०३; रिज़वी "मुगल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ३२-३; ६२।

२. १४ नवम्बर १५१६ ई० को उसने एकान्त में मदिरापान करने के लिए इच्छा प्रकट की और तारदी बेग को मदिरा लाने के लिए भेजा।

चूंकि १५१६ ई० से उसकी आत्म-कथा में जो विवरण मिलता है उससे यह स्पष्ट है कि वह इस समय तक बहुत ही अधिक शराब पीने लगा था तथा अन्य नशीली वस्तुओं का सेवन करने लगा था। मदिरापान की गोष्ठियों का रोचक वर्णन उसने अपनी आत्मकथा में किया है[1]। खनवा के युद्ध से पूर्व उसने मदिरापान त्याग करने की कसम खाई। मदिरापान त्यागने के सम्बन्ध में उसने लिखा है, "सोमवार २३ जमादि-उल-अव्वल को मैं सैर के लिए सवार हुआ था। सैर के समय मेरे हृदय में आया कि जिस पाप की तोबा के विषय में मैं सोचा करता था और जो कार्य मैं शरा के विरुद्ध किया करता था, उसने मेरे हृदय पर अमिट छाप लगा दी है। मैंने अपनी आत्मा से कहा :—

तारदी बेग ने जब उसे सूचना दी कि हुलहुल अनीगा नामक एक स्त्री उसके साथ मदिरा पान करना चाहती है तो उसे आश्चर्य हुआ किन्तु उसने स्त्री के मदिरापान करने की शक्ति की परीक्षा करने के लिए उसे बुलवा भेजा। बाबर ने इस अवसर के बारे में लिखा है कि "हमने शाही नामक एक कलन्दर को भी तथा कारेज़ के एक आदमी को, जो रबाब अच्छा बजा लेता था, भी बुलवाया। सायंकाल की नमाज़ के समय तक कारेज के पीछे एक पुश्ते पर मदिरापान होता रहा। तदुपरान्त हम लोग तारदी बेग के घर पहुँचे और दीपक के प्रकाश में लगभग सोने की नमाज़ तक मदिरापान करते रहे। यह गोष्ठी बड़े स्वतंत्र रूप से आयोजित हुई और इसमें कोई भी दिखावा न था। मैं लेट गया। अन्य लोग दूसरे घर में चले गए और वहाँ नक्कारा बजने तक मदिरापान करते रहे। हुलहुल अनीगा आ गई और उसने मुझे बहुत परेशान किया। मैंने अपने आपको इस प्रकार नीचे गिरा दिया मानों मैं अत्यधिक मदिरापान कर गया हूँ और उससे मुक्त हो गया। मेरी यह इच्छा थी कि मैं किसी को पता न चलने दूँ और अकेला चला जाऊँ किन्तु यह सम्भव न हो सका और लोगों को इस बात का पता चल गया।" —बाबर नामा (अनु०), भाग १, पृ०, ४१७-१८; रिजवी, 'मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ० ३४।

१. पाँच मार्च १५१६ ई० को एक मदिरापान की गोष्ठी के बाद उसकी जो दशा हुई उसका उल्लेख उसने इस प्रकार किया है, "हम सोने के

शेर

"कब तक तू पाप से स्वाद लेती रहेगी,
तोबा स्वाद से शून्य नहीं है, इसे चख ॥

पद्य

"वर्षों तक कितने पापों ने तुझे अपवित्र किया,
कितनी शान्ति तुझे पापों ने दी ?
कितना तू अपनी वासनाओं का दास रहा,
कितना तेरा जीवन व्यर्थ गया?"

समय की नमाज़ तक पीते रहे। तदुपरान्त नौका से उतर कर मदिरा के नशे में चूर हम लोग घोड़ों पर सवार हो गए और अपने हाथों में मशालें ले कर नदी तट से घोड़ों को सरपट दौड़ते हुए नशे में कभी इस ओर और कभी उस ओर लुढ़कते हुए शिविर तक पहुँचे। मैंने वास्तव में बहुत पी ली होगी कारण कि जब लोगों ने मुझे दूसरे दिन बताया कि हम लोग मशाले लिए घोड़ों को सरपट भगाते हुए अपने शिविर में पहुंचे थे, तो मैं इस घटना का स्मरण न कर सका। अपने खेमे में पहुँच कर मैंने अत्यधिक क़ै की।" बाबर नामा (अनु०), भाग २, पृ०, ३८५-६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, १०५।

बाबर की मदिरापान की कुछ गोष्ठियों का विवरण इस प्रकार से है:—

(अ) आठ जून १५१६ ई० मंगलवार को शाहबेग के शाह हसन ने मदिरापान की एक गोष्ठी में सम्मिलित होने की अनुमति चाही। वह ख्वाजा मुहम्मद अली तथा हमारे घर के कुछ बेगों को अपने घर ले गया। मेरी सेवा में यूनुस अली तथा गदाई तगाई रह गए। मैंने उस समय मदिरापान बन्द कर रक्खी थी। मैंने कहा, "यह कभी नहीं हुआ कि अन्य लोग मंदिरापान करते रहें और मैं चुपचाप बैठा रहूँ। और न कभी ऐसा हुआ है कि लोग मदिरा का आनन्द लेते रहें हों और मैं शान्त बैठा रहा हूं। तुम लोग मेरे सामने मदिरापान करो। मैं इस बात से आनन्द लूँगा कि जब मदिरापान करने वाले तथा न करने वाले दोनों ही एकत्र होते हैं तो क्या होता है।" वह गोष्ठी एक छोटे खेमे में, जिसमें मैं कभी कभी बैठा करता था, हुई—बाबर नामा (अनु०),

अब तू गाज़ियों के समान संकल्प करके अग्रसर हुआ है,
तू ने अपने मुख में अपनी मृत्यु देख ली है।
जो कोई मृत्यु को दृढ़तापूर्वक पकड़ने का संकल्प कर लेता है,
तू जानता है कि उसमें क्या परिवर्तन हो जाता है॥

× × × ×

"वह अपने आपको निषिद्ध वस्तुओं से बड़ी दूर ले जाता है,
वह अपने समस्त पापों से अपने आपको साफ कर लेता है,
अपने ही भले को सामने रखते हुए, मैंने शपथ ली कि त्यागूंगा
मैं अपने पापों में से मदिरापान।"

× × × ×

"चाँदी सोने की सुराहियाँ तथा प्याले और दावत के बरतन,
मैंने सब के सब मंगवाए।
मैंने तत्काल उन्हें वहीं तुड़वा दिया,
इस प्रकार मदिरापान त्याग कर मेरे हृदय को शान्ति प्राप्त हो गई।"

भाग २, पृ० ४००; रिज़वी "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ११५। (ब) शनिवार ११ रजब को कबूतर खाने की छत के ऊपर मध्यानोत्तर की दूसरी नमाज़ एवं सायंकाल की नमाज़ के मध्य में मदिरापान का आयोजन हुआ। दिन ढलने के समय कुछ नसवान देहे अफ़गान से नगर की ओर जाते हुए दिखाई पड़े। पता चला कि दरवेश मुहम्मद सारबान, मिर्ज़ाखान, का दूत बन कर मेरी सेवा में आ रहा है। हमने छत से चिल्लाकर उसे पुकारा, "दूत की प्रथाओं एवं नियमितता को छोड़कर बिना किसी संकोच के तुरन्त आ जाओ"। वह उपस्थित हो कर गोष्ठी में बैठ गया। उस समय उसने तोबा कर रखी थी और मदिरापान न करता था। सायंकाल के अन्त तक मदिरापान होता रहा। बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ४०१-२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ११६; ऐसी अन्य मदिरापान की गोष्ठियों के लिए देखिए—बाबर नामा, (अनु०), रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, ११८, ११९, १२०, १२२, १२३, १२५, १२६, १२७, १२८, १३०, १३१, १३२, १३४, १४०, १४१।

"मैंने सोने चाँदी के बरतनों को तुड़वा कर सहायता के पात्रों एवं दरवेशों में बाँट दिया। सर्व प्रथम मदिरापान त्यागने में मेरा साथ जिसने दिया वह असस था। वह दाढ़ी मुडवाने में भी मेरा साथ दे चुका था। उस रात्रि में तथा दूसरे दिन तक बेगों, घरेलू सैनिकों, अन्य सैनिकों तथा असैनिकों में से लगभग ३०० व्यक्तियों ने तोबा कर ली। जो मदिरा हमारे साथ थी वह भी भूमि पर फेंक दी गई। जो मदिरा बाबा दोस्त लाया था, उसके विषय में आदेश हुआ कि उसमें नमक मिला कर सिर्का बना दिया जाय। जिस स्थान पर मदिरा फेंकी गई थी वहाँ एक कुंआ खुदवाने तथा उसके बराबर एक खैरात खाना बनवाने का आदेश दे दिया गया।"[1] इसी समय बाबर ने मदिरापान त्यागने के सम्बन्ध में एक फरमान भी जारी किया जो कि उसने आत्म कथा में दिया है[2]। उसके इस आदेश का कहां तक पालन हुआ, यह कहना कठिन है। मदिरापान त्याग करने का एकमात्र कारण केवल उसके स्वास्थ का निरन्तर खराब होना ही नहीं वरन् वहां के कट्टर मुसलमानों को, जिनके सहयोग की उसे इस समय बड़ी आवश्यकता थी, यह विश्वास दिला देना कि वह अधर्मी नहीं हैं, भी था। मदिरा पान त्याग करने का कारण कुछ भी रहा हो, अपने जीवन में कभी उसने अपनी मानसिक दुर्बलता का परिचय नहीं दिया।

बाबर के धार्मिक विचारों एवं निजी धर्म के सम्बन्ध में आधुनिक इतिहासकारों में मतभेद है। इससे पूर्व कि हम आधुनिक इतिहासकारों के विचारों का परीक्षण करें या उनके कथनों को स्वीकार करें, हमारे लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि जिस युग में उसका जन्म हुआ हम उस युग के धार्मिक वातावरण एवं धार्मिक विचारधाराओं के विषय में भी जानकारी प्राप्त कर लें। बाबर पर अपने युग का प्रभाव पूर्ण रूप से पड़ा। साथ ही साथ अपने पूर्वजों, काल एवं परिस्थितियों के प्रभाव के अन्तर्गत उसके धार्मिक विचार ढलते गए। वास्तव में १५ वीं तथा १६ वीं शताब्दी का काल एक सन्धि युग था। संसार के सभी देशों में धार्मिक वातावरण लगभग एक जैसा ही था। धर्म के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने वालों

---

१. बाबर नामा (अनु:) भाग २, पृ०, ५५१-२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २३०-३१।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५५३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, २३२-४।

तथा संकीर्ण दृष्टिकोण रखने वालों के मध्य मतभेद था। विभिन्न धर्मों एवं मतों के मानने वाले धर्म के मूल सिद्धान्तों से हट कर धार्मिक रूढ़ियों एवं संकीर्णता तथा वाह्य आडम्वर के जाल में फंसकर, परस्पर लड़ रहे थे। वे अपने-अपने धर्म की दुहाई देते हुए, धर्म के नाम पर अपने स्वार्थ को सिद्ध करने में लगे हुये थे। विरोधी मतावलम्वियों और कट्टर पंथियों के मध्य सभी देशों में समाज में एक ऐसा वर्ग भी था जो कि ईश्वर की प्रभुसत्ता, एकेश्वरवाद, धार्मिक सहिष्णुता, भ्रातृत्व एवं वन्धुत्व के पक्ष में था। समाज के इस वर्ग का धार्मिक दृष्टिकोण विल्कुल भिन्न था। इस वर्ग में से भी कुछ साहित्यकार, दार्शनिक एवं सन्त हुए जिन्होंने पुरानी और नई मान्यताओं को समन्वित करने तथा उनमें सन्तुलन वनाए रखने की सदैव चेष्टा की। ऐसे व्यक्तियों के सतत् प्रयासों के कारण ही मध्य एशिया और भारतवर्ष में धार्मिक संघर्ष के दौरान वैसी विषमता न आई जैसी कि हमें इसी काल में अन्य-एशियाई देशों अथवा योरुप में दीख पड़ती है।

वावर ने अपने पूर्वजों उदार धार्मिक दृष्टिकोण अपनाया। अपने पूर्वजों की भाँति उसे भी ईश्वर की महान् शक्ति में विश्वास था। उसकी आत्म कथा में ऐसे अनेक उद्धरण हैं जहाँ कि हमें ईश्वर में उसकी आस्था का पूर्ण आभास मिलता है। अपने पिता उमर शेख मिर्ज़ा की भांति वह भी नक्श वन्दी सिलसिले से सम्वन्ध रखता था। जेक्सारटेज़ के उस पार के देशों में यह सिलसिला वहुत ही प्रसिद्ध था। वुख़ारा के निकट स्थित ग़जदवान के निवासी ख्वाजा खालिक ने अपने प्रयत्नों द्वारा इस सिलसिले को कट्टर वना दिया। उसने अपने शिष्यों को उपदेश दिया कि वे शरा का अक्षरशतः पालन करें, फिक़ या हदीस का पूर्णतः नियमपूर्वक अध्ययन करें और अज्ञानी सूफी सन्तों से दूर रहें। उसने अपने शिष्यों को यह भी उपदेश दिया कि वे न तो वादशाहों से और न उनके अमीरों से सम्पर्क स्थापित करें और न सरकारी नौकरी करें। अन्य शब्दों में ख्वाजा खालिक़ ने अपने शिष्यों के लिए एक कठोर विधान वनाया। उसकी मृत्यु के वाद इस सिलसिले के सिद्धान्तों का प्रचार ख्वाजा वहाउद्दीन नक्शवन्दी ने वुखारा के निकट रह कर किया। ख्वाजा वहाउद्दीन ने निःस्सन्देह उनसे प्रेरणा ग्रहण की, किन्तु उनके द्वारा निर्देशित मार्ग को न अपना कर उन्होंने स्वतंत्रतापूर्वक एवं निर्भीकता से अपने निजी धार्मिक विचारों का प्रचार करना प्रारम्भ किया। ख्वाजा वहाउद्दीन का यह कहना था कि

तत्कालीन राजनीति में भाग लेना तथा वादशाहों से मेल-जोल स्थापित करना तथा अमीरों के सम्पर्क में रहना कोई बुरी वात नहीं है। इस प्रकार से उन्होंने इस सिलसिले की विचारधारा को व्यापक एवं उदार वनाया। ख्वाजा वहाउद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उनके कार्य को ख्वाजा उवैदुल्लाह अहरार (जन्म मार्च-अप्रैल १४०४ ई०) ने वढ़ाया।

ख्वाजा उवैदुल्लाह अहरार ने ख्वाजा वहाउद्दीन के उपदेशों का पूर्णरूप से पालन किया और तत्कालीन राजनीति में सक्रिय भाग भी लिया। उन्होंने अनेक वार सुल्तान उमर शैख मिर्ज़ा, सुल्तान अहमद मिर्ज़ा तथा सुल्तान महमूद मिर्ज़ा के पारस्परिक झगड़ों का निवटारा किया। तैमूरी राजकुमारों पर उसका प्रभाव वहुत अधिक था। उसका मुख्य ध्येय खुरासान तथा उसके निकटवर्ती प्रदेशों में वढ़ते हुए शिया धर्म के प्रभाव से शरा तथा सुन्नी धर्म की रक्षा करना था। वह यह भली भांति समझता था कि यदि तैमूरी राजकुमारों के आपसी झगड़े शान्ति-पूर्वक तय न होंगे तो वे शक्तिहीन हो जावेंगे और ऐसी स्थित में शिया धर्म का प्रसार रोकना एक कठिन कार्य हो जावेगा।

ख्वाजा उवैदुल्लाह अहरार का प्रभाव उमर शैख मिर्ज़ा पर इतना अधिक था कि जव वावर का जन्म हुआ तो उमर शैख ने उन्हें अपने पुत्र का नाम करण करने के लिए आमंत्रित किया। जव वावर सात वर्ष का हुआ, तो ख्वाजा परलोक सिधार गए। लेकिन फिर भी वावर के मस्तिष्क पर ख्वाजा के व्यक्तित्व एवं विचारों का गहरा प्रभाव पड़ा। वह अपने जीवन में ख्वाजा के उपदेशों से प्रेरणा ग्रहण करता रहा और ख्वाजा के पुत्रों एवं पौत्रों को सम्मानित दृष्टि से देखता रहा।

१५०० ई० में वावर ने प्रथम वार ख्वाजा उवैदुल्लाह अहरार को स्वप्न में देखा कि वे उससे कह रहे हों कि समरकन्द को विजित करने में उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होगी।[1] स्वप्न के साकार होने के साथ ही वावर का विश्वास ख्वाजा उवैदुल्लाह अहरार में दिन प्रतिदिन वढ़ता ही गया। ख्वाजा के परिवार के सदस्यों को वह आदर की दृष्टि से देखने लगा, चूंकि समरकन्द की जनता

---

१. वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, १३२; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर) पृ०, ५३५; "मुस्लिम रिवाविलिस्ट मूलमेन्टस इन नार्दन इण्डिया," पृ०, १७६।

पर उनका अत्यधिक प्रभाव था। यहाँ यह बता देना उपयुक्त होगा कि १४९९-१५०० ई० में उक्त ख्वाजा के सबसे छोटे पौत्र ने समरकन्द में बाबर का स्वागत करने तथा उसे शहर में घुसा लेने का प्रयास किया। किन्तु इस कार्य में उसे विशेष सफलता प्राप्त न हुई। १५०० ई० में ही दूसरी बार उसी की सहायता से बाबर ने समरकन्द विजित किया और अगले वर्ष १५०१-१५०२ ई० में वह ख्वाजकी ख्वाजा से मिलने और सम्भवतः उसके द्वारा समरकन्द की जनता का सहयोग प्राप्त करने के लिए फरकत भी गया।[1] लेकिन; इस उद्देश्य की प्राप्ति में उसे सफलता न मिली।

१५०२ ई० से लेकर ख्वाजा के परिवार की प्रतिष्ठा, परिवार के सदस्यों का प्रभाव कम होता गया। अगले २६ वर्षों में बाबर का सम्बन्ध ख्वाजा उबैदुलाह के परिवार के किसी सदस्य से न रहा। इन्हीं २६ वर्षों में बाबर के जीवन में अनेक उतार चढ़ाव हुए, किन्तु ख्वाजा को कभी भी वह भूल न सका। १५२८ ई० में ख्वाजा के दो पौत्र, ख्वाजा अब्दुश शहीद और ख्वाजा कलां बाबर से भेंट करने हिन्दुस्तान आए। उजबेग तथा हिन्दू राजदूतों का स्वागत करने के उपलक्ष में बाबर ने एक भोज का आयोजन किया। इस अवसर पर बाबर ने ख्वाजा के दोनों पौत्रों को भी आमंत्रित किया। बाबर ने उन्हें अपने पास बिठाया, उनका स्वागत किया और उन्हें भेंट में उपहार प्रदान किए।[2] कुछ समय पश्चात् बाबर ने ख्वाजा कलां को ग़ज़नी वापस जाने की अनुमति प्रदान की।[3] इसी वर्ष बाबर ने ख्वाजा अब्दुश शहीद के साथ पूर्वी प्रदेशों की ओर प्रस्थान किया।[4] जिस प्रकार बाबर ने ख्वाजा के परिवार के सदस्यों का मान-सम्मान करना प्रारम्भ किया, उसी के कारण अगले कुछ वर्षों में भारतवर्ष में अनेक नक्शबन्दी भारत आए। बाबर ने ख्वाजा के पौत्र, ख्वाजा ख्वान्द महमूद, शिहाबुद्दीन, जो कि मखदूमी नूरा के नाम से भी प्रसिद्ध था, के पास अपनी कविता के साथ एक सोने का टुकड़ा उपहार स्वरूप भेजकर उसके प्रति निष्ठा प्रदर्शित की।[5]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६४२।
३. ,, पृ०, ६४२।
४. ,, पृ०, ६५३।
५. डा० ए० शिचमेल द्वारा लिखित शोध निबन्ध, "बाबर पादशाह दि पोयट

उपरोक्त विवरण से यह पता चलता है कि बाबर का सम्बन्ध नक्शबन्दी सिलसिले से था। वह ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार से प्रभावित था और उसके पुत्रों एवं पौत्रों को आदर की दृष्टि से देखता था। लेकिन इन सब बातों के बावजूद भी यह कहना अनुचित न होगा कि उस पर कभी भी किसी एक धार्मिक विचारधारा का प्रभाव न रहा। नक्शबन्दी विचारधारा का कितना प्रभाव उस पर था, यह भी कहना सरल नहीं है। उस समय के साधारण मुसलमानों की भांति, वह भी नियमपूर्वक नमाज पढ़ता था, रमज़ान के महीने में रोज़ा रखता था, सूफ़ी सन्तों की मज़ारों के सामने सिर झुका कर श्रद्धा प्रकट करते हुए उनके प्रति आस्था प्रकट करता था और शेख, मसाहिक तथा धार्मिक व्यक्तियों को बड़ी ही सम्मानित दृष्टि से देखा करता था।[1] यह था उसके व्यक्तित्व का एक पहलू जिसको देखकर हम स्पष्टतः यह कह सकते हैं कि बाबर को अपने

विथ ऐन एकाउन्ट आफ दि पोयटिकल टेलन्टस इन हिस फेमिली,"इस्लामिक कल्चर, भाग २४, अप्रैल १९६०, पृ०, १२५ ।

१. बाबर सूफ़ियों तथा विद्वानों से बहुत अधिक प्रभावित था। अपने व्यस्त जीवन में जब कभी उसे समय मिलता तो वह सूफी सन्तों के मज़ारों के दर्शन अवश्य करता। १५ अगस्त १५०८ ई० को उसने ख्वाजा ख्वान्द सईद के मज़ार का तवाफ किया। १५१४ ई० में चग़नसरा पर अधिकार करने के पश्चात् वह सैयद अली हमदानी के मजार के दर्शन क लिए गया। सुल्तान इब्राहीम लोदी को युद्ध में परास्त करने के उपरान्त २४ अप्रैल, १५२६ ई० को उसने ख्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया के मज़ार की परिक्रमा की। अगले दिन वह ख्वाजा कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी के रोजे पर पहुंचा। अप्रैल १५२९ ई० में उसने शेख सरफुद्दीन यहिया मनेरी के मज़ार का तवाफ किया। ग्वालियर के प्रसिद्ध सूफ़ी शेख ग़ौस के उसके सम्बन्ध बहुत ही अच्छे थ।

हिन्दु योगियों के विषय में जानकारी प्राप्त करने में भी उसे रुचि थी। जनवरी १५०५ ई० में वह बीग्राम पहुंचा और उसने गुर खत्री के हिन्दु योगियों से मिलना चाहा किन्तु उनसे वह न मिल सका। १६ मार्च १५१९ ई० में जब वह पुनः वहां पहुंचा तो उसन योगियों के दर्शन भी किए।

धर्म में निष्ठा थी और अन्य मुसलमानों की भांति वह पूर्ण रूप से अपने धर्म का नियमपूर्वक एवं विधिवत् पालन किया करता था।[1]

किन्तु दूसरी ओर हम उसे ईरान के शासक शाह इस्माइल सफवी की शर्तों का पालन करते हुए भी देखते हैं। जब परिस्थितियों ने उसे विवश किया और जब उन पर काबू पा सकना उसके लिए दुष्कर कार्य हो गया तो उसने शिया धर्म भी ग्रहण किया। शिया टोपी पहनी, अपने सिक्कों पर शिया मत के मूल मंत्र खुदवाए और अली मुर्तजा के नाम का खुतवा भी पढ़ा। समरकन्द में जिस प्रकार उसने इस अवसर पर व्यवहार किया उससे यह बात सिद्ध हो जाती है कि अपने राजनैतिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए वह अपना धर्म छोड़ देने के लिए तैयार भी हो गया किन्तु जैसे ही पुनः समरकन्द उसके हाथों से निकल गया उसने शिया मत भी छोड़ दिया और अपने पूर्वजों का धर्म अपना लिया। यदि उसके धार्मिक दृष्टिकोण में इतनी लचक न होती तो सम्भवतः वह कभी भी शाह इस्माईल सफ़वी के शर्तों को न तो स्वीकार करता और न शिया धर्म को अल्प समय के लिए अपनाता। वास्तव में धर्म का महत्व उसके निजी जीवन तक सीमित था। उसकी दृष्टि में शिया और सुन्नी सब एक समान थे। उसकी पत्नियां माहम जो कि शेख अहमद जामी की वंशज थी और सुल्तान हुसैन मिर्ज़ा बैक़रा की सम्बन्धी थी तथा गुलरुख बेगचिक दोनों ही शिया धर्म को मानने वाली थी।

बाबर ने हिन्दुस्तान में धार्मिक वातावरण कुछ और ही पाया। उसके यहाँ आने से पूर्व सूफ़ी और वैष्णव सन्तों ने हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल देते हुए

---

१. बाबर नमाज व रोजे की कभी उपेक्षा न करता था। १४९४-५ ई० में उसने उन पदार्थों को खाना बन्द कर दिया जो कि शरा के विरुद्ध थे। इस समय से, जैसा कि उसने स्वयं अपनी आत्म कथा में लिखा है कि निरन्तर तहज्जुद की नमाज़ भी नियम पूर्वक पढ़ने लगा। आगे चलकर वह लिखता है कि "मैंने अपनी ११ वर्ष की अवस्था से लेकर इस वर्ष तक कभी भी दो वर्षों तक एक ही स्थान पर ईद न मनाई। पिछले वर्ष मैंने आगरा में ईद मनाई थी। इस वर्ष इस उद्देश्य से कि इस नियम विघ्न न पड़ जाय मैं मास के अन्त में ईद मनाने के लिए सीकरी पहुंच गया।" वह क़ुरान का पाठ भी सुना करता था।

धार्मिक एवं जातीय संकीर्णता को दूर करने की चेष्टा की थी। हिन्दू-मुस्लिम सन्त समाज के निम्न वर्गों तथा मध्यम वर्ग को प्रभावित करने में तो सफल हुए किन्तु हिन्दू-मुस्लिम समाज के कट्टर वर्ग के धार्मिक विचारों को न बदल सके। हिन्दू-मुस्लिम समाज में अब भी कट्टर व्यक्तियों का वह वर्ग विद्यमान था, जो कि एक दूसरे को उपेक्षा की दृष्टि से देखा करता था। इस वर्ग विशेष के अतिरिक्त भी समाज में एक ऐसा वर्ग था जो सामाजिक एवं सांस्कृतिक समन्वय, धार्मिक सहिष्णुता, एकता, एवं बन्धुत्व के पक्ष में था। इस वर्ग के अतिरिक्त एक ऐसा भी वर्ग था जो कि अपनी अपनी धार्मिक एवं सामाजिक परम्पराओं को इस्लाम तथा हिन्दू धर्म की रक्षा और दोनों जातियों को पृथक रहने पर बल दे रहा था। इस प्रकार से हिन्दू-मुस्लिम समाज में विभिन्न प्रकार की धार्मिक विचारधाराएं १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ में उत्तरी भारत में विद्यमान थीं। जो वर्ग सामाजिक एकता एवं समन्वयता तथा धार्मिक सहिष्णुता के पक्ष में था, उसका नेतृत्व इस समय महान् चिश्ती सन्त शैख़ सादुल्लाह मीर अब्दुल बिलगरामी कर रहे थे। उन्होंने अद्वैतवाद और वहादत-उल-वजूद में सिद्धान्तिक एकता स्थापित कर दोनों को मान्यता प्रदान की। उन्हीं की विचार-धाराओं को शत्तारी सन्तों ने भी अपनाया। दोनों ही सिलसिलों के मानने वाले यौगिक क्रियाएं करते थे, योग और वेदान्त का अध्ययन करते थे और हिन्दुओं से स्वतंत्रतापूर्वक मिलते-जुलते थे। १६ वीं शताब्दी के प्रारम्भ ही में शत्तारी सम्प्रदाय ने शैख़ बहलोल तथा उसके भाई शैख़ मुहम्मद ग़ौस के नेतृत्व में ज़ोर पकड़ा।

चिश्ती तथा शत्तारी सन्तों की विचारधाराओं तथा धार्मिक दृष्टिकोण से, उन लोगों का मेल न खाता था, जो कि तौहीद-ए शुहूद के सिद्धान्त पर चलते थे। तौहीद-ए-शुहूद का सिद्धान्त, शरा व इस्लामी कानूनों के अक्षरशः पालन, धार्मिक असहिष्णुता, हिन्दू-मुस्लिम मतभेद, इस्लाम धर्म की प्रतिष्ठा बनाए रखने तथा धार्मिक पुनरोत्थान पर आधारित था। कुछ समय से इस प्रकार की विचारधारा रखने वाले सन्त सूफ़ी धर्म के कुछ सिद्धान्तों के विरुद्ध प्रचार कर रहे थे। उनका यह विश्वास था कि सूफ़ी सन्त इस्लाम धर्म की जड़ों को काट रहे हैं और मुस्लिम समाज की प्रतिष्ठा को मिटा रहे हैं। अतएव वे चाहते थे कि मुसलमानों को पुनः सही रास्ते पर लाया जाय, सूफ़ी मत को शरा के आधार पर आधारित किया जाय और उसे उन सभी बातों से बचाया जाय, जो इस्लाम धर्म के विरुद्ध हैं। इस विचारधारा का प्रचार सैयद मुहम्मद माहदवी, उनके शिष्य शैख़ अली

मुनक्की, उसके शिष्य शैख़ मुहम्मद बिन ताहिर और शैख़ अब्दुस कुद्दूस गंगोही कर रहे थे।

यद्यपि इन दो विरोधी धार्मिक विचारधाराओं के रखने वाले व्यक्तियों में किसी प्रकार की समानता न थी, फिर भी शान्तिपूर्वक वे अपने उपदेशों के द्वारा अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में लगे हुए थे। विचारधाराओं का यह टकराव केवल विचारकों में ही था। यह एक आश्चर्यजनक बात है कि इस टकराव का प्रभाव समाज पर तनिक भी न पड़ा। इससे और भी एक आश्चर्यजनक बात है कि जिस समय बाबर ने हिन्दुस्तान में प्रवेश किया उस समय नानक और शैख़ अब्दुस कुद्दूस गंगोही एक ही प्रदेश में अपने धार्मिक विचारों का प्रचार कर रहे थे और फिर भी उनमें या उनके अनुयाइयों में किसी प्रकार का मलोमालिन्य नहीं दृष्टिगोचर होता। इसी प्रकार से उत्तरी भारत के अन्य भागों में भी हिन्दू-मुस्लिम समाज के दो वर्गों में कट्टर एवं उदार धार्मिक विचारधारा रखने वालों में किसी प्रकार की खुल्लम-खुल्ला धार्मिक वैमनस्यता दिखाई नहीं पड़ती।

पानीपत का युद्ध जीतने के पश्चात् बाबर के पास न तो कभी इतना समय रहा कि वह सन्तों की वाणियों को सुनता अथवा समझता या उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित करता। साम्राज्य स्थापन का कार्य सम्पन्न करते समय उसे हिन्दू व मुसलमानों दोनों के सहयोग की आवश्यकता थी। यह सहयोग उसे प्राप्त हुआ और जब तक वह जीवित रहा तब तक उसे अपने शत्रुओं के विरुद्ध हिन्दू समाज के विभिन्न वर्गों से सहयोग मिलता रहा। धर्म के मामलों में हस्तक्षेप न करते हुए उसने हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को छूट दे दी कि अपने-अपने धर्म का पालन करते रहें।

शैख़ अब्दुस कुद्दूस गंगोही ने बाबर को एक पत्र लिखा, जिसमें उसने उसे सुझाव दिया कि वह शरा का पालन करते हुए एक ऐसा वातावरण उत्पन्न करे जिसमें सभी मुसलमान शान्तिपूर्वक अपने जीवन का निर्वाह कर सकें। उसने यह भी कहा, "महान् ईश्वर को अपनी सफलताओं के लिए धन्यवाद देने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि तुम इस संसार के लोगों पर अपनी न्याय प्रियता की इस प्रकार छाप डालो कि कोई व्यक्ति अपने धर्मावलम्बियों पर किसी प्रकार का अत्याचार न कर सकें और सभी साधारण व्यक्ति एवं सिपाही एक साथ मिलकर शरा का नियमित रूप से पालन करें और उन सभी वस्तुओं से दूर रहें

जो कि शरा के नियमों के अनुसार वर्जित कर दी गई हैं । इसका तुम्हें ध्यान रखना चाहिए कि लोग सामूहिक रूप से प्रार्थना करना न भूलें और वे मुल्ला के सभी उपदेशों को ग्रहण करें। प्रत्येक शहर के बाज़ार को तुम्हें मुहतासिब के अधीन रखना चाहिए, ताकि वह इस बात की देख-रेख कर सके कि शरा का पालन हो रहा है अथवा नहीं। धार्मिक प्रवृत्ति रखने वाले मुसलमानों को प्रान्तों में नियुक्त किया जाना चाहिए ताकि वे शरा के सिद्धान्तों के अनुसार जनता से कर वसूल करें और यह देखें कि शरा का पालन न्यायोचित ढंग से हो रहा है या नहीं। किसी भी काफ़िर (हिन्दू) को इस्लाम की राजधानी तथा इस्लाम के दीवान में नौकरी न दी जाय। अमीर व आमिल के पद पर उसकी नियुक्ति न हो। इसके अतिरिक्त शरा के सिद्धान्तों के अनुसार उनके साथ बुरा से बुरा व्यवहार किया जाय और उनका अपमान किया जाय। उन्हें इस बात पर बाध्य किया जाय कि वे लगान तथा जज़िया दें, ज़कात भी दें और अन्य वस्तुओं पर शरा द्वारा निर्धारित कर भी दें। वेशभूषा के विषय में भी उनकी समानता किसी प्रकार से मुसलमानों से न हो और उन्हें इस बात पर बाध्य किया जाय कि वे अपना कुफ्र छिपा कर रक्खें और उन्हें इस बात की तनिक भी अनुमति न दी जाय कि वे खुल्लम-खुल्ला स्वतंत्रतापूर्वक अपने कुफ्र से सम्बन्धित रीति-रिवाज़ों का पालन करें। उन्हें इस्लाम के बैतुल माल से वज़ीफ़े न दिए जायं। उन्हें इस बात पर बाध्य किया जाय कि वे अपने व्यवसाय में ही लगे रहें। उन्हें इस बात की भी तनिक छूट न दी जाय कि वे अपने को मुसलमानों के समान समझने लगें ताकि इस्लाम धर्म का गौरव अपनी चरम सीमा पर पहुंच सकें ।" यह पत्र बाबर को मिला या नहीं या बाबर ने इस पत्र का क्या उत्तर दिया, इसके सम्बन्ध में हमें कुछ भी मालूम नहीं हैं। अपनी आत्म-कथा में बाबर ने न तो शैख अब्दुस कुद्दूस गंगोही के बारे ही में कुछ लिखा है और न ही उसने इस पत्र के बारे ही में कुछ लिखा है। किन्तु इतना तो स्पष्ट है कि सदैव की भांति हिन्दुस्तान काल में भी बाबर के लिए धर्म और राजनीति दो पृथक बातें रहीं। बाबर, जैसा कि उसकी आत्मकथा से हमें मालूम होता है, शैख अब्दुस कुद्दूस गंगोही द्वारा बताए गए मार्ग पर कभी भी न चला। दोनों ही व्यक्तियों को अपने जीवन का लक्ष्य मालूम था। उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए वे उस समय तक चेष्टा करते रहे, जब तक कि मृत्यु ने उन्हें चिरकाल के लिए सुला नहीं दिया।

एक साधारण मुसलमान की भांति उसे ईश्वर की महान् शक्ति में विश्वास था। इस कथन की पुष्टि उसकी आत्म-कथा से होती है। अपने सिंहासनारोहण के पश्चात् की प्रथम घटना के सम्बन्ध में उल्लेख करते समय उसने लिखा है कि, "पवित्र तथा महान् ईश्वर अपनी पूर्ण शक्ति के बिना किसी मनुष्य के एहसान के, मेरे समस्त कार्य उचित रूप से सम्पन्न करता आ रहा है।" आगे उसने लिखा है, "यदि समस्त संसार की तलवारें चलती भी रहें और ईश्वर की इच्छा न हो, तो एक नस भी कट नहीं सकती।" अपनी सफलता के लिए वह सदैव ईश्वर की इच्छा पर निर्भर रहता था। १५०७-८ ई० में जब वह कन्धार पर आक्रमण करने के लिए बढ़ा तो इस विश्वास में उसने एक शेर पढ़ा, जो इस प्रकार है, "चाहे थोड़े हों, चाहे बहुत, शक्ति देने वाला ईश्वर है, उसके दरबार में किसी की कोई शक्ति नहीं।" ८ दिसम्बर, १५२५ ई० को जब वह बीमार पड़ा तो अपने पूर्व कुकर्मों के लिए उसने ईश्वर से क्षमा माँगी। उसने कहा, "हे! ईश्वर, हमने आत्मा के प्रति अत्याचार किया है, यदि तू हमें क्षमा न करेगा और हमारे प्रति दया न करेगा तो हम निस्सन्देह उन लोगों में होंगे जो कि नष्ट होने वाले हैं।" इस प्रकार अपने संघर्षमयी जीवन में वह ईश्वर को कभी न भूल सका। विषम परिस्थितियों में भी ईश्वर ही उसे शक्ति प्रदान करता रहा।

बाबर के उदार धार्मिक दृष्टिकोण की पुष्टि उसके "वसीयत नामा" जो कि उसने अपने पुत्र हुमायूँ के लिए तैयार करवाया, से हो जाती है। इस "वसीयत-नामा" को कुछ इतिहासकार असली नहीं मानते हैं[१]। यह 'वसीयत नामा", इस प्रकार से है:—

"ओ! पुत्र! हिन्दुस्तान में विभिन्न जातियों के लोग निवास करते हैं। उस महान् ईश्वर की प्रशंसा की जानी चाहिए जिसने कि बादशाहत तुम्हारे ऊपर न्योछावर की हैं। धर्मान्धता से तुम्हें अपने हृदय पटल को स्वच्छन्द रखना चाहिए और प्रत्येक जाति की परम्पराओं के अनुसार उनके प्रति न्याय करना चाहिए। इससे भी पूर्व तुम्हें गौ वध करने से बचना चाहिए, इस प्रकार तुम हिन्दुस्तानियों के हृदय को जीत सकोगे और शाही अनुकम्पा से जनता को निष्ठावान बना सकोगे। जो लोग शाही शासन के अन्तर्गत हैं उनके मन्दिरों या पवित्र स्थानों को न तोड़ना। इस प्रकार शाह जनता से और जनता बादशाह से प्रसन्न

---

१. इस "वसीयतनामा" के सम्बन्ध में देखिए 'परिशिष्ट'

रहेगा। इस्लाम धर्म का प्रचार तलवार के दबाव से नहीं वरन् नम्रता की तलवार द्वारा ही अच्छी तरह से हो सकता है। शिया और सुन्नियों के पारस्परिक मतभेदों की ओर से आँख मूंद लो नहीं तो इस्लाम में यह संघर्ष दृष्टि गोचर होने लगता है। चार तत्वों के माध्यम से अपने विविध विचारों वाली प्रजा को नियंत्रित करो, इस प्रकार सल्तनत बहुत से दोषों से मुक्त हो जावेगी। तुम्हें सदैव महान् अमीर तैमूर साहिब क़िरानी के 'कारनामा' को अपनी आँखों के सामने रखना चाहिए ताकि उसे प्रशासनिक मामलों में दक्षता प्राप्त हो।"[1]

बाबर के इस प्रपत्र को देखकर क्या यह कहा जा सकता है कि वह धर्मान्ध था ?

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राणा संग्राम सिंह तथा चंदेरी के मेदनी राय के विरुद्ध अभियान धर्म से प्रेरित थे। किन्तु ऐसा लिखते समय इन इतिहासकारों का ध्यान युद्ध के मूल कारणों पर केन्द्रित न होकर उसकी धर्मान्धता पर केन्द्रित हो गया। राणा संग्राम सिंह एवं चन्देरी के मेदनी राय से किए गए युद्ध के कारणों के विषय में हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। इन युद्धों की गणना धार्मिक युद्धों में कदापि नहीं की जा सकती। आज की तरह मध्ययुग में युद्ध को जीतना एक कला थी। युद्ध को जीतने के लिए विजेता कभी-कभी धर्म का आश्रय भी ले लिया करते थे। अपने सैनिकों का मनोबल ऊँचा करने तथा युद्धोपरान्त मृतकों के मुण्डों का ढेर बना कर विजयोल्लास में अपने धर्म एवं धर्मावलम्बियों की प्रशंसा कर देना एक विजेता के लिए स्वाभाविक होता था। यह कृत्य अनमयस्क रूप से वह अपनी प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए ही करता है। इसके अतिरिक्त हमें यह भी नहीं भूलना चाहिए कि पानीपत, खनवा और चन्देरी के युद्धों में बाबर की सहायता अनेक हिन्दुओं ने की। इस युद्ध के पश्चात् अनेक हिन्दू राजाओं; ज़मींदारों, जागीरदारों एवं स्थानीय अधिकारियों ने उसकी सहायता अनेक अभियानों में की। मध्य युग के कुछ धर्मान्ध विजेताओं की भांति बाबर ने न ही हिन्दुओं को मुसलमान बनाने की चेष्टा की और न ही हिन्दू सन्तों एवं योगियों पर किसी प्रकार

---

१. मिसेज़ बेव्रिज द्वारा रचित शोध निबन्ध, "फरदर नोट्स आन बाबुरियाना", जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसायटी आफ़ ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड, १९२३, पृ०, ८० ।

के प्रतिबन्ध लगाए, न ही हिन्दुओं को उनके धर्म के लिए मौत के घाट उतरवाया और न ही उसने कोई ऐसा आदेश दिया, जिससे कि उसके धार्मिक विचारों की संकीर्णता का आभास मिलता हो। उसके शासनकाल में हिन्दू सन्त निरन्तर एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश का भ्रमण स्वतंत्रता पूर्वक करते रहे। पंजाब; जहाँ कि उसका पूर्ण रूप से प्रभुत्व था, वहाँ गुरुनानक को अपने उपदेशों का प्रचार करने की पूर्णरूप से स्वतंत्रता थी। बाबर के उदार धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही मथुरा, जो कि आगरा के निकट ही है, के मन्दिर सुरक्षित रहे और मथुरा वैष्णव सन्तों का केन्द्र बना रहा। वीर भनुदय काव्यम में अरैल के बघेल शासक, वीर सिंह देव और बाबर के मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध का उल्लेख मिलता है।[1]

इन सब ऐतिहासिक तथ्यों के बावजूद भी कभी-कभी उसे धर्मान्ध बताने का प्रयास किया जाता है। अपने कथनों एवं अपनी विचारधारा की पुष्टि के लिए कुछ इतिहासकारों ने यह तर्क प्रस्तुत किया है कि उसके राज्यकाल में हिन्दुओं के कुछ मंदिर तोड़े गए या मन्दिरों को मस्जिद में परिवर्तन कर दिया गया। उदाहरणार्थ सम्भल में हिन्दू बेग ने एक मन्दिर को मस्जिद में परिवर्तित कर दिया।[2] चन्देरी को विजित करने के उपरान्त, बाबर के सद्र, शेख ज़ैन ने अनेक हिन्दू मंदिरों का विध्वंस कर डाला। बाबर के आदेशों का पालन करते हुए मीर बाक़ी ने अयोध्या में राम जन्म स्थान पर बने हुए मन्दिर को तोड़कर १५२८-२९ ई० में एक मस्जिद बनवाया।[3] बाबर ने स्वयं ग्वालियर के निकट उर्वा में अनेक जैन मन्दिरों को तोड़ा।[4]

इससे पूर्व कि उपरोक्त मन्दिरों को तोड़े जाने के सम्बन्ध में विचार प्रकट किए जाएं, हमें कई अन्य प्रश्नों पर अवश्य विचार कर लेना चाहिए। क्या

---

१. डा० रमाशंकर अवस्थी, "दि मुग़ल इम्परर हुमायूं" (इलाहाबाद), पृ०, २।
२. आरकियालोजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग १२, पृ०, २६-२७; प्रो० श्रीराम शर्मा, "रिलीजस पोलिसी आफ दि मुग़ल इम्परर्स", (एशिया, १९६२) पृ०, ८।
३. प्रो० श्रीराम शर्मा, "रिलीजस पालिसी आफ दि मुग़ल इम्परर्स" (एशिया, १९६२), पृ०, ९।
४. प्रो० श्रीराम शर्मा, "रिलीजस पालिसी आफ दि मुगल इम्परर्स" (एशिया, १९६२), पृ०, ९।

मन्दिरों को तोड़ने से सम्बन्धित बाबर की कोई नीति थी ? क्या बाबर के आदेशानुसार मन्दिरों को तोड़ने अथवा उन्हें मस्जिद में परिवर्तित करने का कार्य हुआ ? बाबर की 'आत्म कथा' के अध्ययन से यह पता चलता है कि मन्दिरों को तोड़ने अथवा उन्हें मस्जिदों में परिवर्तित करने की उसकी कोई नीति न थी और न इस सम्बन्ध में कभी भी, केवल उर्वा की घाटी के जैन मन्दिरों को छोड़कर उसने अपने अफसरों को कोई आदेश दिए। अपने अभियानों तथा सैर-सपाटों के मध्य अनेक बार उसने मन्दिरों को देखा। इनमें से कुछ मन्दिरों का उल्लेख उसने किया है और उनकी बनावट की सराहना भी की है। सितम्बर १५२८ ई० में ग्वालियर की सैर करते समय बाबर ने कुछ हिन्दू मन्दिर देखे, जिनका उल्लेख उसने इस प्रकार किया है। "रहीम दाद के बाग़ीचे के पश्चिम में एक बहुत बड़ा मन्दिर है। सुल्तान शम्सुद्दीन इल्तुतमिश ने इस मन्दिर के बगल में एक जुमा मस्जिद बनवायी थी। यह मन्दिर बड़ा ही भव्य है और किले में इससे बड़ी कोई और इमारत नहीं है। धौलपुर की पहाड़ियों से यह मन्दिर तथा किला दिखाई पड़ते हैं।"[१] "उरवा के तीन ओर ठोस चट्टान हैं। इनका रंग ब्याना की चट्टानों के समान लाल नहीं है अपितु पीला-पीला है। इन चट्टानों पर लोगों ने पत्थर की मूर्तियां कटवा रखी हैं। वे छोटी बड़ी सभी प्रकार की हैं। एक बहुत ही बड़ी मूर्ति जो कि दक्षिण की ओर है, सम्भवतः २० कारी (गज़) ऊंची होगी। यह मूर्तियां पूर्णतः नग्न हैं और गुप्त अंग भी ढके हुए नहीं हैं. . . . नग्न मूर्तियाँ ही इस स्थान का सबसे बड़ा दोष है। मैंने उनको नष्ट करने का आदेश दे दिया।"[२] . . . "हम लोगों ने इस बाग़ीचे से प्रस्थान करके ग्वालियर के मन्दिरों की सैर की। कुछ मन्दिरों में दो-दो और कुछ में तीन-तीन मंजिलें थीं प्रत्येक मंजिल प्राचीन प्रथानुसार नीची थी। उनके पत्थर के स्तम्भ के नीचे की चौकी पर पत्थर की मूर्तियाँ रखी थी। कुछ मन्दिर मदरसों के समान थे। उनमें दालान तथा ऊंचे गुम्बद एवं मदरसों के कमरे के समान कमरे थे। प्रत्येक कमरे के ऊपर पत्थर के तराशे हुए संकरे गुम्बद थे। नीचे की कोठरियों में चट्टान से तराशी हुई मूर्तियाँ थीं।"[३]

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६१० ।
२. वही, पृ०, ६१२ ।
३. वही, पृ०, ६१३ ।

रहीम दाद के बग़ीचे के पश्चिम में स्थित जिस मन्दिर का बाबर ने अपनी आत्म-कथा में उल्लेख किया है वह विवरण ग्वालियर नरेश राजा मान-सिंह की गूजर पत्नी मृगनयनी द्वारा निर्मित "तेली मन्दिर या गूजरी मन्दिर" से सम्बन्धित हैं। उस समय यह बहुत ही प्रसिद्ध मन्दिर था, किन्तु बाबर ने इसे तोड़ने का कोई आदेश न दिया। और न ही उसने ग्वालियर शहर के अन्य किसी मन्दिर को ही तोड़ने के लिए आदेश दिए। उर्वा की जैन मूर्तियों के सम्बन्ध में खोज करने के उपरान्त श्रीमती बैव्रिज ने स्पष्ट रूप से यह लिखा है कि बाबर के लोगों ने वे मूर्तियां नहीं तोड़ीं। बाबर के आदेशों का कभी भी पालन न हुआ। यह मूर्तियाँ बहुत ही टूटी-फूटी अवस्था में थीं और तब तक वैसी बनी रही जब तक कि जैनियों ने उन पर रंगीन पलास्तर चढ़ा कर उनकी मरम्मत नहीं करा दी।"[1] बाबर ने इन मूर्तियों को तोड़ने का आदेश क्यों दिया उसका कारण भी उसने स्वयं बता दिया है। बाबर स्वयं मन्दिर तोड़कर मस्जिद बनवाने के पक्ष में कभी नहीं था। किन्तु फिर भी उसके धर्मान्ध अफसरों ने यह कार्य कर उस पर मन्दिर तोड़ने का अभियोग लगवा दिया। चन्देरी विजय करने के उपरान्त वहां शेख़ जैन जो बाबर का सद्र था ने अनेक हिन्दू मन्दिरों को तोड़ा।[2]

प्रो० श्रीराम शर्मा ने लिखा है कि सम्भल में एक हिन्दू मन्दिर को तोड़कर बाबर के सेनानायक हिन्दू बेग ने उसके स्थान पर मस्जिद बनवाई[3]। प्रो० शर्मा का यह कथन आर्कियालोजिकल सर्वे रिपोर्ट भाग १२, पृ०, २६-२७, पर दिए गए विवरण पर आधारित हैं। रिपोर्ट किस विवरण के आधार पर लिखी गई यह ज्ञात नहीं। सम्भल को विजित करने के उपरान्त हिन्दू बेग ने वहाँ के हिन्दू मन्दिर को स्वयं तुड़वाया और वहाँ मस्जिद बनवाई। किन्तु फिर भी इतिहासकारों में इस सम्बन्ध में दो मत हैं। बाबर जो कि छोटी से छोटी बात भी अपनी आत्मकथा में लिखने से नहीं चूकता था ने हिन्दू

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ० ६१२, (टिप्पणी) १।
२. प्रोफेसर श्रीराम शर्मा, "रिलिजस पालिसी आफ दि मुग़ल इम्परर्स" (एशिया १९६२) पृ०, ९।
३. प्रो० श्रीराम शर्मा, 'रिलीजस पालिसी आफ दि मुग़ल इम्परर्स" (एशिया १९६२) पृ०, ९।

वेग को मन्दिर तोड़ने तथा वहाँ मस्जिद बनवाने के सम्बन्ध में दिए गए आदेश का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है। सितम्बर-अक्तूबर १५२७ ई० के प्रारम्भ में बावर स्वयं सम्भल गया और वहाँ वह तीन दिन तक ठहरा। फिर भी उसने उसका उल्लेख नहीं किया।

इस मस्जिद में बावर का जो शिलालेख[1] है उसको सबसे बड़ी ऐतिहासिक जालसाज़ी" बतलाया गया है। इस सम्बन्ध में मुरादाबाद डिस्ट्रिक्ट गजेटियर (उत्तर प्रदेश) में जो विवरण दिया गया है वह इस प्रकार है। हरि मन्दिर के निर्माता के सम्बन्ध में यह कहा जाता है कि यह मन्दिर पृथ्वीराज ने या जगत सिंह नामक एक राजा ने या राजा विक्रम सेन के पौत्र नूर सिंह ने या बरन के डोरों में से किसी ने बनवाया। अब यह मन्दिर वहाँ नहीं है और इसका स्थान एक बहुत ही सुन्दर मस्जिद ने जो कि मीलों तक आस-पास के प्राकृतिक दृश्यों की शोभा है ले लिया है। यह इमारत केवल पत्थर की बनी हुई है जिसका प्रयोग वास्तव में विशाल केन्द्रीय गुम्बद के लिए बाहरी दीवारों के लिए छज्जे के लिए और चौड़े आँगन की फर्श में किया गया है। १८७४ ई० में कार्लाइल महोदय ने यह मस्जिद देखा और उसका निरीक्षण किया और वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि गुम्बद हिन्दू शिल्पकारों के हाथ का बना हुआ है किन्तु दीवारें मुसलमानों द्वारा बनाई गई छोटी ईंटों की बनी हुई हैं। सारी मस्जिद पर प्लास्टर चढ़ा हुआ है जिसके कारण यह मालूम करना कि इमारत में कौन-कौन सा माल इस्तेमाल किया गया है कठिन है। इमारत के अन्दर दायें व बाएं तरफ दो बरामदे हैं जिसके खम्भों की कतारें हैं जो कि दो गलियारों में विभाजित हैं और प्रत्येक गलियारे में आँगन की ओर तीन मेहराबदार द्वार हैं। बरामदों के दोनों कोनों पर से मस्जिद के ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ हैं और छत पर से आसपास के दृश्य तथा शहर का दृश्य देखा जा सकता है। कार्लाइल महोदय इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि इस मन्दिर का मस्जिद में परिवर्तन हाल

---

१. शिलालेख के लिए देखिए, जी प्रसाद, "बाबर्स मोस्क ऐट सम्भल", जरनल आफ एशियाटिक सोसायटी आफ बंगाल, १८७३; पृ०, ६८-६।

ही में हुआ है। उनका यह निष्कर्ष इस बात पर आधारित है कि जिस स्थान पर मन्दिर हैं उस स्थान को लेकर हिन्दू और मुसलमानों में हाल ही में मुक़दमा चला और ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुओं के तर्क से प्रभावित होकर कि मस्जिद की दीवारों पर लगे हुए पुराने शिलालेख सरासर जाली हैं उन्होंने उपरोक्त विचार प्रकट किए। निःसन्देह हिन्दुओं के दावे को न्यायालयों ने नामंजूर कर दिया है। कार्लाइल महोदय ने उन दस्तावेज़ों को नहीं देखा जो कि जहाँगीर के काल के हैं और जो उस मस्जिद के अभिभावकों के पास हैं। जनरल कनिंघम ने इस सुझाव का खण्डन किया है कि वे शिलालेख वास्तविक नहीं हैं। इन शिलालेखों में से सबसे महत्वपूर्ण यह है जिसमें कि यह खुदा हुआ है कि १५२६ ई० में बाबर के आदेशानुसार हिन्दू बेग ने यह मस्जिद बनवायी। यह आश्चर्यजनक बात है कि इस समय तक यहां यह मन्दिर बना रहा। सम्भल बहुत समय से मुसलमानों के शासन का केन्द्र रहा और यह आश्चर्यजनक बात है कि सिकन्दर लोदी जैसे कट्टर व्यक्ति ने इस पवित्र इमारत को अपनी अस्थायी राजधानी में ज्यों का त्यों बना रहने दिया। इसी तरह का एक उदाहरण अयोध्या में मिलता है जहाँ कि सुप्रसिद्ध राम जन्म स्थान मन्दिर बाबर के समय तक बना रहा, जबकि अयोध्या अवध प्रान्त की २०० वर्ष तक मुसलमानों की राजधानी रही। जैसा कि देखने से मालूम होता है सम्भल की मस्जिद बाबर-काल से भी पुरानी थी। उसकी बनावट कुछ पठान इमारतों जैसे कि बदायूं की विशाल मस्जिद की तरह मिलती जुलती है, जिसमें कि पश्चिम की ओर ढालू बुर्ज हैं। सारी इमारत बहुत ही साधारण, तीखी और विशाल है और यदि हिन्दू माल का इस्तेमाल भी हुआ है तो बहुत ही सुगमतापूर्वक और वह सजावट में छिपा दी गई है। हिन्दू इमारत के चिन्ह, जो कि प्लास्टर में छिपे हुए हैं, केवल उन सीढ़ियों के पत्थरों पर, जिन पर कि गुलाब के फूल बने हुए हैं, जो कि पूर्वी द्वार से अन्दर आंगन की ओर जाती है, दृष्टिगोचर होते हैं। आँगन के मध्य में एक हौज़ तथा एक फुव्वारा है जिसमें कि द्वार के बाहर बने हुए कुएं से पानी भरा जाता है। यह कहना कठिन है कि क्या मस्जिद बाबर ने बनवाई या केवल उसकी मरम्मत करवाई। आइन-ए-अकबरी में सम्भल के इस सुप्रसिद्ध विष्णु मन्दिर का उल्लेख किया गया है। इमारत के पार्श्व भाग में लगे हुए एक शिलालेख में यह दिया गया है कि १६५७ ई० में रुस्तम खान

दक्खिनी ने इस मस्जिद की मरम्मत कराई। इसी प्रकार से उत्तरी भाग में लगे हुए एक शिलालेख में यह दिया गया है कि १६२६ में सैय्यद कुतुव ने यह दीवार वनवाई। इस इमारत के केन्द्रीय कक्ष में अन्दर और वाहर की मेहरावों पर जो शिलालेख लगे हुए हैं उनमें इस वात का उल्लेख किया गया है शहर व सूबे के मुसलमानों ने १८४५ ई० के लगभग मस्जिद की मरम्मत करवाई।" यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि सम्भल की जुमा मस्जिद पहले की वनी हुई थी और इसका निर्माण न तो वावर ने किया और न ही उसके सेनानायक हिन्दू वेग ने। हम केवल इतना ही सोच सकते हैं कि वावर के आदेशानुसार हिन्दू वेग की देख-रेख में उपरोक्त इमारत की मरम्मत हुई होगी और शिलालेख में इस इमारत के उनके द्वारा निर्माण कराने का उल्लेख कर दिया गया।"[1]

डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज़ (मुरादावाद) तथा आरकियालोजिकल सर्वे आफ इण्डिया रिपोर्ट में जो विवरण दिया गया है, उसे यह वात स्पष्ट हो जाती है कि सम्भल में मस्जिद वावर के आदेशानुसार तोड़ कर हिन्दू वेग ने नहीं वनवाई। इस समय केवल उसकी मरम्मत ही करवाई गई होगी। किन्तु सम्भल में मन्दिर का तोड़ा जाना कई वातों से सावित होता है—(१) मस्जिद का हिन्दू मन्दिर के सामान से वनाया जाना, (२) मस्जिद में जो शिलालेख हैं, उसमें उसके निर्माण की तिथि दी हुई है, (३) मुग़ल अफ़सरों का सम्भल में हुमायूं के वहां पहुंचने से पूर्व तक ठहर न सकना। तीनों ही वातें यह सिद्ध कर देती हैं कि हिन्दू वेग ने मन्दिर को तोड़कर वहाँ मस्जिद वनवाई। और वावर ने न इस पर ध्यान दिया और न ही इसका उल्लेख अपनी आत्म-कथा में ही किया।

---

१. डिस्ट्रिक्ट गज़ेटियर आफ यूनाइटेड प्राविन्सेज (मुरादावाद) भाग १६, पृ० २५७-६०; "आरकियालाजिकल सर्वे आफ इण्डिया रिपोर्ट आन दि टूर्स इन दि सेन्ट्रेल दोआव एण्ड गोरखपुर इन १८७४-५, और १८७५-६ वाई मिस्टर ए० सी० एल० कार्लाइल, भाग १२, १८७६, पृ० २४-२७; वी० एम० संखधर, "सम्भल" (ए हिस्टारिकल सर्वे) (दिल्ली १६७१) पृ०, ३५।

अयोध्या में राम जन्म स्थान मन्दिर को तोड़कर वहाँ, बाबर के आदेशानुसार जैसा कि कहा जाता है मस्जिद का बनाना, आज भी एक विवादग्रस्त विषय बना हुआ है। इस मस्जिद पर जो दो शिलालेख हैं, वे इस प्रकार हैं :—

(१) ब फ़रमूदये शाह बाबर कि अदलश,
बिनायेस्त ता काखे गर्दूं मुलाक़ी,
बिना कर्द ई मुहबते क़ुदसियां,
अमीरे सआदत निशान मीर बाक़ी।
बुवद खैरे बक़ी। चो साले बिनायश,
अयां शुद कि गुफ़्तम बुवद खैर बाक़ी॥

अनुवाद :

शाह बाबर के आदेशानुसार जिसका न्याय, एक ऐसी एमारत है जो आकाश की ऊँचाई तक पहुँचती है। निर्माण कराया इस फिरिश्तों के उतरने के स्थान को, सौभाग्यशाली अमीर, मीर बाक़ी नें, बवद खैरे बाक़ी (यह सदाचरण अनन्त तक रहे) जो निर्माण का वर्ष है।

यह स्पष्ट हो गया जो मैं कहूं कि यह सदाचरण अनन्त तक रहें।

(२) बनाम आंकि दाना हस्त अकबर,
कि खालिक़े जुमला आलम ला मकानी,
दरुदे मुस्तफा बाद अज सताइश,
कि सरवरे अम्बियाये दो जहानी॥
फ़साना दर जहां बाबर क़लन्दर,
कि शुद दर दौरे गेती कामरानी॥

अनुवाद :

उसके नाम से जो कि महान् ज्ञानी हैं,
जो समस्त संसार का सृष्टा और बिना घर का है।
उसकी स्तुति के उपरान्त मुस्तफा पर दरुद,
जो दोनों लोकों के नबियों के सरदार हैं।

संसार में चर्चा है कि वावर कलन्दर,
काल चक्र में उसे सफलता प्राप्त हुई ॥[1]

पहले शिलालेख से वावुरी मस्जिद वनवाने की तिथि निकलती है, उससे मालूम होता है कि उक्त मस्जिद ६३५ हि० (१५२८-२६ ई०) में वनाई गई। चन्देरी अभियान के समाप्त होने के पश्चात् ही वावर पूर्वी प्रदेशों की ओर अफ़ग़ानों की विद्रोहात्मक कार्यवाहियों से निवटने के लिए वढ़ा। कालपी, कनूर मार्ग से होते हुए, गंगा पार कर लखनऊ होते हुए शनिवार ७ रजव, ६३४ हि० २८ मार्च, १५२८ ई० को उसने अवध में प्रवेश किया और घाघरा और सरजू नदी के संगम पर पड़ाव डाला। २ अप्रैल तक की कार्यवाहियों का व्यौरा वावर ने अपनी आत्मकथा में दिया है। इसके वाद विवरण का क्रम १७ सितम्बर तक के लिए टूट गया है। २ अप्रैल से लेकर वर्षा ऋतु के प्रारम्भ होने तक वह अफ़गानों के विरुद्ध व्यस्त रहा और अफ़गानों पर कुछ सफलता प्राप्त करने के उपरान्त वह आगरा लौट गया। सम्भवतः इसी अवधि में किसी समय वावर के सेनानायक मीर वाक़ी ने राम जन्म स्थान मन्दिर को तोड़-कर वावुरी मस्जिद का निर्माण कराया जैसा कि मस्ज़िद के शिलालेखों से मालूम होता है। मीर वाक़ी के इस कार्य के लिए हम वावर को कदापि दोषी नहीं ठहरा सकते।

इस प्रकार मन्दिरों को तोड़कर मस्ज़िद वनवाने की वावर की अपनी कोई नीति न थी। यदि इस सम्वन्ध में वह स्वयं कोई आदेश देता तो उसका उल्लेख अपनी आत्म-कथा में अवश्य करता।

अपने जीवन के ४ वर्ष और छः महीने ही वावर ने हिन्दुस्तान में व्यतीत किए। इस अवधि में वह मुख्यतः सैनिक अभियानों ही में व्यस्त रहा। किन्तु जव भी उसे अवसर मिला उसने अपना ध्यान इमारतों को वनवाने, उनकी मरम्मत कराने, उद्यानों को लगाने तथा फ़ुव्वारों, हौज़ों और वावलियों को वनवाने की ओर भी दिया। स्थापत्य कला के क्षेत्र में यद्यपि उसका कोई विशेष योगदान नहीं रहा, फिर भी इस कला में उसकी रुचि थी।[2] उसने

१. रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ६५६-६० ।
२. ग्वालियर में राजा मान सिंह एवं विक्रमाजीत की वनाई हुई इमारतों की वावर ने प्रशंसा की है। उसने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि

आगरा, फतेहपुर सीकरी, धोलपुर, कोल, ग्वालियर तथा अन्य स्थानों में इमारतें बनवाई। चूंकि यह इमारतें तत्कालीन आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर बहुत ही कम समय तथा जल्दी में बनाई गई थी। ये इमारतें प्रकृति के सुन्दर और मनमोहक नमूने के रूप में न बन सकीं। वास्तव में बाबर का केवल यही योगदान रहा कि इन इमारतों की सुन्दरता को बढ़ाने के लिए उसने इमारतों के आस पास उद्यान लगवाने की प्रथा प्रारम्भ की[1]। उसके उत्तराधिकारियों ने भी यह प्रथा अपनाई और अपनी इमारतों के चारों ओर उद्यान लगवाए। इससे पूर्व की बाबर द्वारा बनाई गई इमारतों आदि का हम विवरण दें, हमें कई महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखना चाहिए। उसकी इमारतें बहुत ही कम समय में उसी स्थान या उसके आस पास के स्थानों से प्राप्त सामिग्री से कड़ी धूप तथा लू और आंधियों से बचाव करने के लिए बनाई गई थी। केवल आवश्यकता के कारण ही उसे कुछ महल हम्माम मस्जिदें, हौज, तालाब, चबूतरे और ऐसी बावलियाँ जिन पर छत बनी हुई थी तथा तहखाने बनाने पड़े थे।

अपनी आत्म कथा में बाबर ने लिखा है कि, "हिन्दुस्तान में सबसे बड़ा दोष यह है कि यहाँ जलधाराएं नहीं हैं अतः मैंने निश्चय किया कि जहाँ कहीं मैं ठहरूं वहाँ राहट द्वारा बहते हुए जल की व्यवस्था कराऊं ताकि वहाँ

"मैंने राजा मान सिंह तथा विक्रमाजीत के महलों का भलीभांति निरीक्षण किया। यह भवन बड़ा ही विचित्र हैं। यह भवन अनुपात से शून्य भारी भारी तराशे हुए पत्थरों के बने हुए हैं। समस्त राजाओं के भवनों की अपेक्षा मान सिंह के भवन बड़ा ही उत्तम एवं भव्य हैं।" बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६०८, रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ०, २७५।

१. अहमद यादगार के अनुसार, "गेतिस्तानी ने अपने सिंहासनारोहण के दूसरे वर्ष यमुना के तट के ऊपर एक अद्वितीय उद्यान का निर्माण करवाया। क्यारियों की व्यवस्था सर्वप्रथम उसी ने चालू की अन्यथा इससे पूर्व हिन्दुस्तान में क्यारियों की व्यवस्था न होती थी"—"तारीखे-सलातीन अफ़ग़ाना" (मू० ग्रन्थ) पृ०, १२०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५७।

सुडौल उद्यानों की व्यवस्था की जा सके। इस उद्देश्य से आगरा में प्रविष्ट होने के उपरान्त हमने जून (जमुना) नदी पार करके उद्यान के लिए उपयुक्त स्थान ढूंढना प्रारम्भ कर दिया। वह स्थान इतने खराब तथा अनाकर्षक थे कि वहाँ की यात्रा से हमें अत्यन्त घृणा तथा अप्रसन्नता हुई और मैंने वहाँ चारबाग़ के निर्माण का विचार त्याग दिया किन्तु आगरा के निकट इस भूमि के अतिरिक्त कोई अन्य उचित भूमि थी ही नहीं, अतः कुछ दिन उपरान्त उसी भूमि को चुन लेना पड़ा। सर्वप्रथम बड़ा कुआं जिससे हम्माम के लिए जल आता है बनवाया गया तथा भूमि का वह टुकड़ा, जहाँ कि अब इमली का वृक्ष है वहाँ अष्टभुजाकार हौज़ तैयार कराया गया। तदुपरान्त बड़ा हौज़ तथा उसकी चहारदीवारी तैयार की गई। तत्पश्चात् वह हौज़ तथा दालान जो पत्थर के भवन के सामने हैं बनवाए गए। इसके बाद ख़िलवत ख़ाने उसके उद्यान तथा अन्य भवनों का निर्माण कराया गया। तदुपरान्त हम्माम तैयार करवाया गया। इस प्रकार हिन्द में, जो आकर्षण से शून्य हैं, इस प्रकार के सुव्यवस्थित एवं सुडौल उद्यानों का निर्माण कराया गया जिनके प्रत्येक कोने में उचित क्यारियाँ और हर क्यारी में गुलाब तथा नस्तरन बड़े आकर्षक ढंग से लग गए।"[1] लगभग इसी समय बाबर ने यहीं एक हम्माम बनवाया, जो कि पत्थर का बना हुआ था और जिसमें गरम जल का हौज़ भी था। केवल फ़र्श को छोड़कर यह हम्माम संगमरमर का बना हुआ था। फ़र्श तथा छत ब्याना के लाल पत्थर से बनाई गई थी।[2]

बाबर की भांति उसके अमीरों, ख़लीफा, शेख़ ज़ैन तथा युसुफ अली ने भी नदी के उस पार की भूमि पर हौज़ बनवाए और सुडौल उद्यान लगवाए।[3]

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५३१, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २११-२; "तारीख़-सलातीन अफगाना", पृ० १२०, रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बबर), पृ०, ४५७।

२. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५३२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, १२।

३. बाबर ने लिखा है, "हिन्द वाले, जिन्होंने ऐसे सुडौल स्थान तथा उत्तम उद्यान न देखे थे, जून के उस ओर के स्थान को, जहाँ हमारे भवन थे, काबुल कहने लगे"—बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ५३२।

बाबर ने इस सम्बन्ध में लिखा है कि, "हिन्द वाले, जिन्होंने ऐसे सुडौल स्थान तथा उत्तम उद्यान न देखे थे, जून (जमुना) के उस ओर के स्थान को, जहां हमारे भवन थे, काबुल कहने लगे ।"[1]

गुलबदन बेगम ने अपने ग्रन्थ "हुमायूं नामा" में लिखा है कि शहंशाह ने अपने वास्तुकार ख्वाजा क़ासिम को निम्नलिखित आदेश दिया; "मैं तुम्हें अच्छे कार्य करने के लिए आदेश देता हूँ। आदेश इस प्रकार से है कि कोई भी कार्य हो, चाहे वह बड़े पैमाने पर ही क्यों न हो, जिसके लिए हमारी चाचियाँ अपने महलों में बनवाने के लिए आदेश दें, तो तुम्हें चाहिए कि तुम उसे प्राथमिकता देकर विचार एवं यथाशक्ति से पूर्ण करो।"[2] आगे गुलबदन बेगम ने लिखा है कि बाबर ने आगरे में इमारतें बनवाने का आदेश दिया। नदी के उस पार खिलवत खाना तथा उद्यान के बीच उसने पत्थर का महल अपने लिए बनवाया। उसने एक महल दीवान आम के भी बीच बनवाया। उसमें चारों कक्षों और बुर्जों के बीच में हौज़ भी बनवाया। नदी के किनारे उसने एक चौखड़ा भी बनाया ।"[3]

क़िले के भीतर इब्राहीम लोदी के महल तथा क़िले की चाहरदीवारी के मध्य जो स्थान खाली था वहाँ बाबर ने १०×१० गज़ की एक बाई का निर्माण भी कराया। इस बाई के सम्बन्ध में बाबर ने लिखा है कि "यह एक बड़ा कुआँ होता है, जहाँ नीचे तक सीढ़ियाँ होती हैं। इसे हिन्दुस्तान में बाई कहते हैं। इस कुएं का निर्माण चारबाग़ के पूर्व प्रारम्भ हुआ था। लोग बीच बरसात में इसे खोदने में व्यस्त रहे। कई बार गिर जाने के कारण मज़दूर दब गए। राणा सांगा से जिहाद के उपरान्त इसका निर्माण समाप्त हुआ। इसका उल्लेख उस तारीख़ में है जो कि शिलान्यास के पत्थर पर खुदी हुई है। यह पूरी बाई है जिसके भीतर एक तीन मंजिला मकान है। सबसे नीचे की मंजिल में तीन कमरे हैं, इनमें से प्रत्येक के द्वार उन जीनों की ओर हैं जिनसे बाई में उतरा जाता है। प्रत्येक कमरा तीन-तीन जीन

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५३२; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २१२।
२. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा" (अनु०) पृ०, ९७।
३. वही, पृ०, ९७-९८।

के अन्तर से बना है। जब जल का श्रोत बहुत नीचे होता है तो वह सबसे नीचे वाले कमरे से एक जीना नीचे पहुंच जाता है। जब वर्षा ऋतु में जल अधिक हो जाता है तो वह सबसे ऊंची वाली मंजिल पर पहुंच जाता है। बीच की मंजिल में एक भीतरी कमरा खोद कर बनाया गया है। यह उस गुम्बददार भवन से मिला है जिसमें बैल कुएं का रहट चलाते हैं। सबसे ऊपर की मंजिल मे एक ही कमरा है। इसमें दो दिशाओं से ५-६ जीनों द्वारा नीचे पहुंच सकते हैं। ये जीने कुएं के मुंह के सामने के भवन तक जाते हैं। नीचे जाने वाले मार्ग के दाईं ओर वह पत्थर है जिसमें इसके निर्माण के पूरा होन की तिथि खुदी हुई है।"[1]

बाबर ने फतेहपुर सीकरी में झील में एक चबूतरा बनाने का आदेश दिया। १ दिसम्बर, १५२८ ई० को जब वह पुनः फ़तेहपुर सीकरी को सैर करने के लिए गया तो उसने उस अष्टाकार चबूतरे को जो अब तक तैयार हो चुका था, देखा।[2] ऐसा प्रतीत होता है कि इसी समय उसने उद्यान के चारों ओर दीवारें तथा कुएं और इमारतें बनवाने का आदेश दिया। १४ अक्टूबर, १५२९ ई० जब वह सैर करते हुए पुनः फतेहपुर सीकरी पहुंचा, तो वह कारीगरों के कार्य को देखकर सन्तुष्ट न हुआ। उसने अपनी आतम-कथा में लिखा है कि बाग़ की दीवारों तथा कुएं के निर्माण-कार्य से मैं सन्तुष्ट न हुआ। जिन लोगों के सुपुर्द यह कार्य किया गया था उन्हें मैंने धमकी एवं ताड़ना दी।"[3] सीकरी के उद्यान में ही बाबर ने एक चौखड़ी बनवाई और वहाँ एक तूरखाना रखवाया, जहाँ बैठकर वह अपनी आत्म-कथा लिखा करता था।[4]

बाबर ने कुछ हम्माम, इमारतें और उद्यान धौलपुर में भी बनवाए। अगस्त १५२७ ई० में जब वह धौलपुर गया तो उसने सिकन्दर के बांध के आस पास

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५३३; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २१२-३; अब्दुल लतीफ, "आगरा हिस्टारिकल एण्ड डिस्क्रिप्टिव" (कलकत्ता १८९६) पृ०, ११-१२।

२. बाबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, ८८५।

३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६१६; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ०, २८१।

४. गुलबदन बेगम, "हुमायूं नामा' (अनु०) पृ०, १०३।

की भूमि का सर्वेक्षण किया। वह लिखता है कि, "पहाड़ी के अन्त पर बाँध के नीचे एसे पत्थर की चट्टान हैं जो भवन के लिए उपयुक्त हैं। मैंने उस्ताद शाह मुहम्मद संगतराश को बुलवाया और उसे आदेश दिया कि यदि इस चट्टान में पूरा एक घर एक टुकड़े ही में काटा जा सके तो बड़ा उत्तम है, किन्तु यदि चट्टान घर के लिए नीची हो तो उसे समतल करके एक ही टुकड़े में से एक हौज़ काटा जाए।"[1] उस पहाड़ी की चट्टान का एक ही टुकड़े में घर तो न बन सका, किन्तु अष्टाकार हौज़ अवश्य बना दिया गया। हौज़ के उत्तर में आम, जामुन तथा अन्य प्रकार के वृक्ष भारी संख्या में लगा दिए गए। इन वृक्षों के मध्य में बाबर ने १०×१० फिट का एक कुआं बनवाया। इस कुएं से जल हौज में लाया जाता था, इस हौज़ के उत्तर में सुल्तान सिकन्दर लोदी ने जो बाँध बनवाया था, उस बाँध के ऊपर बाबर ने भवनों का निर्माण करवाया। बाँध के नीचे एक झील है और झील के पूर्व में उद्यान। बाबर ने आदेश दिया कि उद्यान के मध्य चट्टान तराश कर एक चार स्तम्भों का चबूतरा बनवाया जाय और उसके पश्चिम में एक मस्जिद बनवाई जाय।[2] ग्वालियर से लौटते समय ४ अक्टूबर, १५२८ ई० को बाबर कुछ समय के लिए धौलपुर रुका। उसी रात दीपक के प्रकाश में उसने उस हम्माम का, जिसका निर्माण अबुल फतह ने करवाया था, निरीक्षण किया। वहाँ से चलकर वह बाँध के ऊपर जहाँ नए चारबाग़ का निर्माण हो रहा था, पहुंचा। ५ अक्टूबर को उसने उनसभी इमारतों का निरीक्षण किया जिनका निर्माण करने का उसने आदेश दे रखा था। स्थापत्य कला में उसकी रुचि और इस कला में उसके ज्ञान का अनुमान हम उसी के द्वारा दिए गए इस विवरण से लगा सकते हैं। वह लिखता है, कि "जिस छत दार हौज़ को हमने ठोस चट्टान से काटने का आदेश दिया था, उसका मुख सीधा नहीं हो रहा था। मैंने कुछ अन्य पत्थर काटने वालों को बुला कर आदेश दिया कि हौज़ के नीचे की सतह चिकनी करके उसमें जल भर दें और जल की सहायता से वे दीवारों को एक सा कर दें। सायंकाल की नमाज़ के पूर्व उन्होंने मुख को सीधा कर दया।"[3] २१ दिसम्बर १५२८ ई को वह हौज़ व कुएं को देखने के लिए गया;

---

१. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ५८८।
२. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६०७।
३. बाबर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६१५।

जिसको वनाने का उसने आदेश दे रखा था, धौलपुर के लिए रवाना हुआ। २३ दिसम्बर, १५२८ को जब वह धौलपुर पहुंचा तो उसने देखा कि पत्थर का कुआं, २६ पत्थर के फुव्वारे तथा स्तम्भ एवं नालियां जो ढलवा चट्टान से निकाली गई थी, सब तैयार हो गई हैं।[१] जनवरी १५२६ ई० में जब वह धौलपुर पुनः सर करने के लिए गया तो उसने आदेश दिया कि उद्यान के दक्षिण-पश्चिम में भूमि को समतल वनाया जाय और वहाँ एक चवूतरा वनाया जाय, हम्माम तैयार कराया जाय और हम्माम के कमरे में १०×१० गज़ का एक हौज़ तैयार किया जाय।[२] फरवरी १५२६ ई० में आगरा और धौलपुर की इमारतों को वनवाने का कार्य मुल्ला क़ासिम, उस्ताद शाह मुहम्मद, मीरक मीर ग्यास संगतराश और शाह वावा को सौंपा गया और उन्हें विदा कर दिया गया।[३] इस प्रकार जो इमारतें अभी तक वन कर तयार नहीं हुई थी वे सव इन वास्तुकारों की निगरानी में तैयार हुई।

वावर ने सुप्रसिद्ध वास्तुकार सैयद दकिनी को शीराज़ से आगरा के शाही महल की मेहरावों को वनाने के लिए वुलाया और कार्य समाप्त होने पर उसने उसे पुरस्कृत किया और उसका मान सम्मान भी किया।[४] इस प्रकार से वावर के राज्यकाल से ईरानी वास्तुकारों ने भारतवर्ष आना प्रारम्भ किया और उनके संरक्षण में ही वे इमारतें वननी प्रारम्भ हुई जिनमें कि हमें ईरानी-हिन्दुस्तानी स्थापत्य कला के सामंजस्य की झलक मिलती हैं। अन्य शब्दों में स्थापत्यकला के क्षेत्र में इसी समय से धीरे-धीरे ईरानी स्थापत्यकला की छाप भारतीय स्थापत्य कला पर पड़ने लगी और स्थापत्य कला के क्षेत्र में एक नए युग का आविर्भाव हुआ।

चित्रकला में भी वावर की रुचि थी। अपने जीवन में उसे कुछ महान् चित्रकारों के चित्रों को देखने का सौभाग्य मिला। उन चित्रों को देखकर वह अपने विचार प्रकट करता है।[५] किन्तु समयाभाव के कारण न तो वह चित्रकला को प्रोत्साहन दे सका और न चित्रकारों को प्रश्रय।

१. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३४।
२. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६३६।
३. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६४२।
४. वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६१६।
५. अपनी आत्म कथा में वावर ने सुल्तान हुसैन वैक़रा के दरवार के दो

वावर कलम और तलवार दोनों का सिपाही था। एक महान् योद्धा होने के साथ-साथ वह एक महान् साहित्यकार भी था। वह तुर्की एवं फारसी भाषा तथा साहित्य का प्रकाण्ड पंडित था। अपने पूर्वजों की भांति उसने अपनी रुचि तुर्की साहित्य में वनाए रखी और जीवन की संध्या में जव उसे अवकाश मिला तो अपने साहित्यिक योगदान द्वारा उसने फ़ारसी तथा तुर्की साहित्य को और धनी वना दिया।[1] उसने गद्य तथा पद्य दोनों में ही अपनी रचनाएं की। आने वाली

चित्रकारों का विवरण दिया है। विहज़ाद के सम्वन्ध में वह लिखता है, "वह वड़ी नाजुक चित्रकारी करता था। किन्तु विना दाढ़ी के चेहरे अच्छे न वना पाता था। वह गवगव (ठोढ़ी के नीचे का मांस) को वहुत वड़ा वना देता था। दाढ़ी वाले चेहरे वह वड़े उत्तम वनाता था।" इसी प्रकार से मुज़फ्फर नामक प्रसिद्ध चित्रकार के वारे में वह लिखता है कि "वह वड़े नाजुक चित्र वनाता था और वालों को वनाने में वड़ी नजाकत पैदा करता था। उसे वड़ी कम आयु मिली और जव उसकी प्रसिद्धि उन्नति कर रही थी तो वह मृत्यु को प्राप्त हो गया।" वावर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, १६१; रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर) पृ०, ५६५;

१. नफायसुल-मआसिर के रचयिता अलाउद्दीन विन क़जवीनी के अनुसार, "उन्होंने फिक़ह के विषय पर 'मुवीन' नामक पुस्तक की रचना की। इसमें हज़रत इमामे आज़म के सिद्धान्तों की पद्य में रचना की। उन्होंने अपने विषय में तुर्की में एक इतिहास की रचना की और उसमें सच सच वात लिखने में कोई कसर न उठा रक्खी। उन्होंने साधारण लेखकों के समान जो हर समय किसी न किसी वात को ध्यान में रखकर रचना करते हैं और सत्य को त्याग देते हैं, इस इतिहास की रचना नहीं की। उन्होंने तुर्की और फारसी में विद्वतापूर्ण गद्य लिखे"—रिजवी, "मुग़ल कालीन भारत" (वावर), पृ०, ३५२; अबुल फजल के अनुसार "संसार के जो गुण अध्ययन के द्वारा प्राप्त होते हैं, वे उनमें भी पूर्णरूप से थे। गद्य तथा पद्य की रचना में उन्हें वड़ी दक्षता प्राप्त थी विशेषरूप से तुर्की कविता में। वादशाह का तुर्की भाषा में दीवान वड़ा ही कसीद, अलंकारिक तथा मधुर है और उसमें वड़े नवीन विषय लिखे हैं। उनकी मुवीन नामक मसनवी वड़ी प्रसिद्ध रचना है। इस भाषा के विद्वान इसकी

पीढ़ियों की ज्ञान तृप्ति के लिए उसने अपनी 'आत्म-कथा' की रचना तुर्की भाषा में की। तुर्की भाषा एवं साहित्य की यह एक उत्कृष्ट रचना मानी गई है। उसकी आत्म कथा का केवल ऐतिहासिक महत्व ही नहीं है वरन् साहित्यिक महत्व भी है। उसकी "आत्म-कथा', तुज़ुक-ए-बाबरी, बाबर नामा, वाक़ए-बाबरी के नाम से प्रसिद्ध है। तुर्की भाषा-साहित्य में यह ग्रन्थ अमूल्य रोचक एवं मर्मस्पर्शी माना गया है। इस ग्रन्थ की प्रशंसा लगभग सभी इतिहासकारों ने की है।"[1] डा० ए०

बड़ी प्रशंसा करते हैं। ख्वाजए अहरार की वालिदिया नामक पुस्तक थी, जो ज्ञान के समुद्र का मोती हैं, (बादशाह) ने काव्य में रचना की। इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है। उन्होंने अपने राज्यकाल से लेकर मृत्यु तक के वाक़ेआत बड़ी फसीह एवं बलीग़ भाषा में लिखे हैं। वह संसार के बादशाहों के लिए विधान के समान हैं।"—"अकबर नामा (मू० ग्रन्य) पृ०, ११८; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर) पृ० ४१२; तबक़ाते-अकबरी के लेखक ख्वाजा निज़ामुद्दीन अहमद के अनुसार, "उन्होंने एक लिपि का आविष्कार किया था जिसे कि बाबुरी लिपि कहते हैं। इस लिपि में उन्होंने क़ुरान शरीफ लिखकर मक्का भेजा था। ये फारसी तथा तुर्की भाषा में बड़ी उत्तम कविता करते थे—उन्होंने क़लाम तथा हनफी फिक़्ह के ऊपर तुर्की भाषा में एक पुस्तक की पद्य में रचना की थी जिसका नाम 'मुबीन' है। अरूज़ से सम्बन्धित उनकी रचनाएं बहुत ही प्रसिद्ध हैं। उन्होंने अपने "वक़ाए" की रचना तुर्की भाषा में की जो बड़ी ही उत्तम रचना है"—तबक़ाते अकबरी (मू० ग्रन्थ) पृ०, २७; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४३५।

१. एलिफिन्सटन के अनुसार, "The literary and historical value of the Memoirs cannot be estimated too highly, and as a picture of the life of an Eastern sovereign in the Court and Camp, the book stands unrivalled among the Oriental autobiographies....it is almost the only specimen of real history of India..."

"हिस्ट्री आफ इण्डिया", (लन्दन) १६०५, पृ०, ४२६; एडवर्ड, जी० ब्राउन ने लिखा है,

शिचिमुएल के अनुसार, "यह ग्रन्थ केवल उस महान् योद्धा की विद्वत्ता को ही नहीं वरन् उससे कहीं अधिक उस प्रतिभाशाली वाक् पटु कवि तथा कला प्रेमी एवं आलोचक तथा सुलझे हुए मनोवैज्ञानिक के गुणों को प्रदर्शित करता है।" इसी प्रकार एल्फिन्सटन ने कहा है कि यह "पुस्तक पूर्वी देशों में लखी गई आत्म-कथाओं में अद्वितीय है—समस्त एशिया में केवल यही पुस्तक वास्तविक इतिहास का नमूना है।" वास्तव में उसकी "आत्म-कथा" एक ऐसा दर्पण है जिसमें कि हम लेखक के रंगीन युग एवं उसके रंगीन व्यक्तित्व को देखते हैं तथा उस युग की गहराइयों तथा लेखक के हृदय की गहराइयों तक उतर जाते हैं। इस ग्रन्थ की भाषा-शैली को देखकर हम केवल उसकी तुलना सुप्रसिद्ध तुर्की साहित्यकार अली शेर बेग़ नवाई से ही कर सकते हैं।

तुज़ुक-ए-बाबरी या बाबर नामा से मालूम होता है कि बाबर सदैव कुछ न कुछ लिखता ही रहता था। अपनी आत्मकथा में उसने लिखा है, "इस इतिहास में मैं इस बात पर दृढ़ रहा हूं कि हर बात को जो मैं लिखूं वह सच लिखूं और जो घटना जिस प्रकार घटी हो उसका ठीक-ठीक उसी प्रकार उल्लेख करूं। इस कारण यह आवश्यक हो गया कि जो कुछ अच्छा-बुरा ज्ञात हो उसे लिख दूं।"[1] इस सिद्धान्त का बाबर ने पूर्ण रूप से पालन किया। उसने किसी भी स्थान पर किसी घटना को छिपाने या उस पर पर्दा डालने की चेष्टा नहीं की। उसकी आत्म-कथा में विवरण का क्रम कहीं कहीं टूट गया है, जिसके कारण उसके ४७ वर्ष तथा १० मास के जीवनकाल में से लगभग १८ वर्ष का विवरण ही हमें उसमें मिलता है। विवरण के क्रम टूटने या विवरण के अधूरे रहने के

"The book is indeed, extraordinarily frank and intimate, being such a diary as a man writes for his own private delectation rather than for the perusal of even his most confidential friends, such less subjects; and probably no King at any rate ever wrote, or at any rate suffered to be circulated, such confessions." "ए हिस्ट्री आफ परशियन लिटरेचर अण्डर टारतार डोमीनियन्स" (१२६५-१५०२) (कैम्ब्रिज), १९२०, पृ०, ४५४-५५ ।

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग १, पृ०, ३१०; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत", (बाबर), पृ०, १० ।

प्रश्न पर इतिहासकारों में मतभेद है। इस सम्बन्ध में उन्होंने अपने भिन्न-भिन्न विचार प्रकट किए हैं। यहाँ सभी इतिहासकारों के इस सम्बन्ध में विचारों को देना सम्भव नहीं है। उसके द्वारा विवरण, जो उसकी आत्म-कथा में अधूरा रह गया है, उसके तीन प्रमुख कारण वताए गए। उसके व्यस्त जीवन में कभी-कभी ऐसे अवसर भी आए कि जब उसे अपनी दैनन्दिनी लिखने का समय न मिल सका। दूसरे, यात्राओं के दौरान उक्त पुस्तक के पृष्ठों का नष्ट हो जाना भी अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। २५ मई, १५२६ ई० के तूफान के कारण आत्मकथा विवरण का क्रम टूट गया।[1]

वावर ने अपनी आत्म-कथा इन शब्दों से प्रारम्भ की। "मैं रमज़ान ८९९ हि० (जून १४९४ ई०) में फ़रगना की विलायत में १२ वर्ष की अवस्था में वादशाह हुआ।" यह आत्मकथा ४ भागों में विभाजित है (१) फ़रग़ना काल, (२) निष्कासन काल, (३) कावुल काल, (४) हिन्दुस्तान काल। इस ग्रन्थ में दो विभिन्न प्रकार की रचना शैली मिलती है। १४९३-४ ई० से १५०८-९ ई०

---

१. वावर ने इस घटना का उल्लेख करते हुए लिखा है कि उसी रात्रि में एक पहर तथा ५ घड़ी उपरान्त, जब तरावीह समाप्त हो चुकी थी क्षण भर उपरान्त एक बड़ा तूफान आया। वर्षा ऋतु के गहरे काले वादल आकाश पर छा गए और इतनी जोर की हवा चली कि केवल थोड़े ही से खेमे खड़े रह सके। मैं ख़रगाह में कुछ लिखने जा रहा था। मुझे काग़ज तथा लिखे हुए खण्ड को एकत्र करने का भी अवसर न मिल सका और खरगाह पेशखाना सहित मेरे सिर पर गिर पड़ा। तूगलूक टुकड़े-टुकड़े हो गया। ईश्वर की कृपा से मैं वच गया और मुझे कोई हानि न पहुंची। पुस्तक के खण्ड जल में वुरी तरह भीग गए और बड़ी कठिनाई से एकत्र किए जा सके। हमने उन्हें सिंहासन के ऊनी कालीन की तहों के बीच में करके सिंहासन पर रख दिया और ऊपर से वहुत कम्बल लाद दिए। तूफान लगभग दो घड़ी में शान्त हो गया। सोने वाला खेमा लगा दिया गया। एक दीपक जला दिया गया और बड़ी कठिनाई से आग जलाई जा सकी। हम लोग प्रातःकाल तक न सोए और वरकों तथा खण्डों को सुखाते रहे"—वावर नामा (अनु०) भाग २, पृ०, ६७८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (वावर) पृ०, ३३०।

तक का विवरण इतिहास के रूप में है और प्रत्येक वर्ष की समस्त घटनाओं का उल्लेख पूर्ण रूप से किया गया है। १५१८ ई० से लेकर अन्त तक का विवरण दैनन्दिनी के रूप में है और प्रत्येक दिन की घटना का विवरण पृथक-पथक दिया गया है।

"बाबर नामा" में दी गई सभी बातों का व्योरा देना यहाँ सम्भव नहीं है। उक्त ग्रन्थ बहुत ही रोचक है और उसके अध्ययन से मध्य एशियाई राजनीति, तैमूरियों के इतिहास, उमरा वर्ग, मंगोलों और चागताइयों के पारस्परिक सम्बन्ध, बाबर की तत्कालीन कठिनाइयों, ईरानी, उज़बेग शक्ति के उत्थान एवं संघर्ष, बाबर के चरित्र के विभिन्न पहलुओं उसकी निरीक्षण शक्ति, सामरिक कार्यवाहियों, सफलताओं एवं असफलताओं, संघर्षमयी जीवन आदि की जानकारी प्राप्त होती हैं। जीवन के विभिन्न पर्वों में जैसा बाबर ने अनुभव किया, या जो कुछ उसने देखा वह सब कुछ अपनी आत्मकथा में लिख दिया। यही इस ग्रन्थ की महत्ता है।

निजी अनुभव एवं जानकारी के आधार पर बाबर ने हिन्दुस्तान का जो विवरण दिया है वह इस प्रकार है। "हिन्दुस्तान लम्बा चौड़ा देश है। यह मनुष्यों तथा उपज से परिपूर्ण हैं। इसके पूर्वी, दक्षिणी तथा पश्चिमी भागों का अन्त समुद्र पर होता है। इसके उत्तर में पर्वत है जो हिन्दुकुश, काफ़िरिस्तान, तथा कश्मीर के पर्वतों से मिले है। इसके उत्तर-पश्चिम में काबुल, गज़नी तथा कन्धार स्थित हैं। देहली समस्त हिन्दुस्तान की राजधानी है। शिहाबुद्दीन ग़ोरी की मृत्यु से लेकर सुल्तान फिरोज शाह के राज्यकाल के अन्त तक हिन्दुस्तान का अधिकांश भाग देहली के सुल्तानों के आधीन रहा।" "जब मैंने हिन्दुस्तान विजय किया तो वहाँ पाँच मुसलमान तथा दो काफिर बादशाह राज्य करते थे। इन लोगों को बड़ा सम्मान प्राप्त था और यह स्वतंत्ररूप से शासन करते थे। इनके अतिरिक्त पहाड़ियों तथा जंगलों में भी छोटे-छोटे राय एवं राजा थे, उनको भी अधिक आदर एवं सम्मान प्राप्त था।" भारत के तत्कालीन शासकों का विवरण देते हुए उसने लिखा, "सर्व प्रथम अफग़ान थे, जिनकी राजधानी देहली थी। भीरा से बिहार तक के स्थान उनके अधिकार में थे। अफग़ानों के पूर्व जौनपुर सुल्तान हुसैन शर्की के अधीन था। इन लोगों के वंश को हिन्दुस्तानी पूर्वी कहते थे। इनके पूर्वज सुल्तान फ़ीरोज शाह के सक्का (जल पिलाने वाले) रहे होंगे। फ़ीरोज शाह की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने जौनपुर पर अधिकार जमा लिया। देहली

सुल्तान अलाउद्दीन के अधिकार में थी। वे लोग सैय्यद थे। तैमूर बेग देहली विजय करने के उपरान्त उसका राज्य इनके पूर्वजों को देकर चला गया था। सुल्तान बहलोल लोदी तथा उसके पुत्र सुल्तान सिकन्दर लोदी ने जौनपुर की राजधानी को विजय करके देहली की राजधानी से मिला दिया और दोनों एक ही बादशाह के आधीन हो गए।"

बाबर ने गुजरात, दक्षिण के बहमनी राज्य, मालवा तथा बंगाल के मुसलमानी राज्यों तथा मेवाड़ और विजय नगर के हिन्दू राज्यों की भी चर्चा की है। गुजरात के स्वतंत्र राज्य के विषय में उसने लिखा है, "गुजरात में सुल्तान मुज़फ्फर था। इब्राहीम की पराजय के कुछ दिन पूर्व उसकी मृत्यु हो गई थी। वह बादशाह शरा का अत्यधिक पालन करता था। उसे विद्या अध्ययन में भी बड़ी रुचि थी। वह हदीस का अध्ययन करता था और सर्वदा क़ुरान की नक़ल किया करता था। उसका वंश टांक कहलाता था। उसके भी पूर्वज सुल्तान फ़ीरोज़ शाह तथा उन सुल्तानों के शराबदार रहे होंगे। फीरोज़ शाह की मृत्यु के उपरान्त उन्होंने गुजरात पर अधिकार जमा लिया।"

१५२६ ई० तक बहमनी राज्य का विघटन हो चुका था और प्रान्तीय राज्यों की स्थापना हो चुकी थी। वहाँ की राजनीतिक गतिविधियों से भी बाबर परिचित था। इस सम्बन्ध में सूक्ष्म विवरण देते हुए बाबर ने केवल यही लिखा कि "दकिन में बहमनी थे, किन्तु आजकल दकिन के सुल्तानों की शक्ति एवं अधिकार छिन्न-भिन्न हो गया है। उनके समस्त राज्य पर उनके बड़े-बड़े अमीरों ने अधिकार जमा लिया है। उन्हें जिस चीज़ की आवश्यकता होती है उसे वे अपने अमीरों से माँगते हैं।" हिन्दुस्तान में चौथा स्वतंत्र राज्य मालवा का था। "मालवा में जिसे मन्दू भी कहते हैं का सुल्तान सुल्तान महमूद था। वे खिल्जी सुल्तान कहलाते हैं किन्तु राणा सांगा ने उसे पराजित करके उसके राज्य के अधिकांश भाग पर अधिकार जमा लिया था। यह वंश भी शक्तिहीन हो गया था। इनके पूर्वज भी सुल्तान फ़ीरोज़ शाह के अभिवत थे। तदुपरान्त उन्होंने मालवा पर अधिकार जमा लिया था।"

बंगाल के राज्य का विवरण देते हुए बाबर ने लिखा है कि बंगाल के राज्य में नुसरत शाह था। उसका पिता बंगाल में बादशाह रह चुका था। वह सैयद था। उसकी उपाधि सुल्तान अलाउद्दीन थी। नुसरत शाह को राज्य अपने पिता से मीरास में प्राप्त हुआ था। बंगाले की यह बड़ी विचित्र प्रथा है कि राज्य

मीरास में बहुत कम प्राप्त होता है। बादशाह का अर्थ उसके राज्य सिंहासन से समझा जाता है। अमीरों, वज़ीरों तथा अधिकारियों में से प्रत्येक के लिए स्थायी रूप से एक स्थान निश्चित रहता है। बंगाल वाले केवल सिंहासन तथा पद का सम्मान करते हैं। प्रत्येक पद के अधीन नौकर चाकर तथा आज्ञाकारी सेवक निश्चित् रहते हैं। बादशाह यदि किसी को पदच्युत अथवा अन्य किसी को नियुक्त करना चाहता है तो और किसी को किसी के स्थान पर बिठा देता है तो सभी नौकर चाकर एवं सेवक उसी के आज्ञाकारी हो जाते है। बादशाह के सिंहासन की भी यही विशेषता है। जो कोई बादशाह की हत्या कर देता है राज-सिंहासन पर आरुढ़ हो जाता है। बंगाले वालों का यह कहना है कि हम राजसिंहा-सन के भक्त हैं। जो कोई राज सिंहासन पर आरुढ़ होता है हम उसके आज्ञाकारी बन जाते हैं। उदाहरणार्थ नुसरत शाह के पिता अलाउद्दीन के पूर्व एक हब्शी अपने पिछले बादशाह की हत्या करके राजसिंहासन पर आरुढ़ हो गया और कुछ समय तक राज्य करता रहा। सुल्तान अलाउद्दीन ने हब्शी की हत्या करके राजसिंहासन पर अधिकार जमा लिया और स्वयं बादशाह हो गया। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र अपने पिता के मीरास अधिकार से बादशाह हुआ।" "बंगाल में एक यह भी प्रथा है कि जो कोई बादशाह होता है उसे नया ख़ज़ाना एकत्र करना पड़ता है। वहाँ वाले ख़ज़ाना एकत्र करना बड़ गर्व की बात तथा दूसरे के ख़ज़ाने को व्यय करना बड़े अपमान की बात समझते हैं।"... "बंगाल में यह भी प्रथा है कि प्राचीन काल से ख़ज़ाने, अश्वशाला तथा शाही व्यय हेतु परगने निश्चित हैं। इनके व्यय हेतु किसी अन्य स्थान से कुछ भी वसूल नहीं किया जा सकता।"

बाबर ने लिखा है कि उपरोक्त पाँच मुसलमान राज्य हिन्दुस्तान में बड़े ही सम्मानित समझे जाते हैं। वे बड़े ही विस्तृत एवं शक्तिशाली हैं।

हिन्दुओं के जिन स्वतंत्र राज्यों का उल्लेख उसने किया है, वे थे, विजय नगर, मेवाड़ और चन्देरी के राज्य। विजयनगर के राज्य के सम्बन्ध में, बाबर को केवल इतना ही मालूम था कि "विस्तार एवं सेना की अधिकता की दृष्टि से सबसे बड़ा बीजानगर का राज्य है।" चित्तौड़ और चन्देरी के राज्यों के बारे में बाबर ने लिखा है कि हाल ही में राणा सांगा अपनी वीरता एवं तलवार की शक्ति के कारण इतना बड़ा हो गया है। वास्तव में उसका राज्य चित्तौड़ में था। मन्दू के सुल्तानों के राज्य के पतन के कारण उसने बहुत से स्थानों पर, जो मन्दू

के सुल्तान के अधीन थे, अपना अधिकार जमा लिया। उदाहरणार्थ रणथम्भौर, सारंगपुर, भीलसा तथा चन्देरी। "मैंने ९३४ हि० (१५२८ ई०) में चन्देरी पर आक्रमण करके ईश्वर की कृपा से उसे दो-चार घड़ी में विजय कर लिया। वहाँ राणा साँगा का बहुत बड़ा विश्वास-पात्र मेदनी राय राज्य करता था।"

इन राज्यों के अतिरिक्त, जैसा कि बाबर ने लिखा है, "हिन्दुस्तान में चारों ओर राय एवं राजा बहुत ही बड़ी संख्या में फैले हुए हैं।"

बाबर ने हिन्दुस्तान के भूगोल तथा यहाँ की जलवायु का भी उल्लेख किया है। उसके अनुसार हिन्दुस्तान में प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय जलवायु वाले प्रदेश स्थित हैं। इसके अतिरिक्त चौथी जलवायु वाला कोई भी प्रदेश नहीं है। वह लिखता है कि, "हिन्दुस्तान "बड़ा ही आश्चर्यजनक देश है और यदि हम अपने देशों से इसकी तुलना करें, तो यह अन्य संसार ही ज्ञात होगा। यहाँ के पर्वत, नदियाँ, जंगल, ब्याबान, नगर, खेत, पशु, वनस्पति, मनुष्य, भाषाएं, वर्षा, तथा वायु सभी विभिन्न हैं। काबुल के अधीनस्थ स्थानों में गर्म सी रही कुछ बातों में हिन्दुस्तान से मिलता जुलता है और कुछ बातों में नहीं। सिन्ध नदी पार करते ही सभी बातें हिन्दुस्तानी प्रतीत होने लगती हैं, भूमि, जल, वृक्ष, चट्टान, आदमी समूह, आचार विचार एवं प्रथाएं।"

हिन्दुकुश पहाड़ तथा अरावली की पहाड़ियों के वर्णन के साथ साथ सिन्ध, बिहत, चिनाव, रावी, ब्याह, सतलज, जून, गंगा, रहप, गोमती, गग्गर, सरयू, गण्डक, चम्बल, बानस, बेतवा, सीन इत्यादि नदियों का भी बाबर ने उल्लेख किया है।

सिंचाई के विभिन्न साधनों पर प्रकाश डालते हुए बाबर ने लिखा है कि मुख्यतः यहाँ डोल अथवा राहट से सिंचाई होती है। राहट का उल्लेख करते हुए उसने लिखा है कि लाहौर, दीपालपुर, सरहिन्द तथा उस क्षेत्र के स्थानों में राहट से सिंचाई होती है। दो रस्सियों को, जो गोलाई में कुएं तक पहुंच जायं, ले लिया जाता है। दोनों रस्सों के बीच में लकड़ियां बांध दी जाती हैं। लकड़ियों में घड़े बांध दिए जाते हैं। जिन दोनों रस्सियों में लकड़ियाँ तथा घड़े बंधे रहते हैं उन्हें उस चर्ख़ी पर रख देते हैं जो कुएँ पर रहती है। इस चर्ख़ी के धुरे से एक दूसरी चर्ख़ी जुड़ी रहती है उसके निकट ही खड़े धुरे पर एक अन्य चर्ख़ी होती है। इस चर्ख़ी को बैल घुमाता है। इसके दाँत दूसरी चर्ख़ी के दांत से जुड़े रहते हैं। इस प्रकार वह चरखी जिस पर घड़े होते हैं घूमती है। जहां जल गिरता है वह

एक कठौता होता है और जल नालियों से होता हुआ प्रत्येक स्थान पर पहुँच जाता है।"

"आगरा, चन्दवार तथा उस क्षेत्र में डोल से सिंचाई होती हैं—कुएं के किनारे दो शाखाओं वाली एक लम्बी लकड़ी लगा दी जाती है। इन दोनों के मध्य में एक गड़ारी लगा देते हैं। एक बहुत बड़े डोल में एक रस्सी बाँध दी जाती है। रस्सी गड़ारी पर रख दी जाती हैं और उसका एक छोर बैल से बाँध दिया जाता है। एक आदमी को बैल से हाँकना पड़ता है तथा दूसरे को डोल खाली करना पड़ता है। जब बैल डोल खींच कर वापिस होता है तो रस्सी बैल के मार्ग पर जिस पर कि मूत्र तथा गोबर पड़ा रहता है लथेड़ती जाती हैं और फिर वही रस्सी कुएं में पहुँचती हैं।"

बाबर ने पशु-पक्षियों का भी उल्लेख किया है। हाथी, जंगली भैंसा, नील गाय, कोतह पाईचा, कलहरा, मृग, गीनी गाय, बन्दर, नेवले, गिलहरी, मोर, तोता, शारक, लूजा, दुरजि, कंजाल, जंगली मुर्ग, चील सी, शाम, बूदना, खर्चल, सारस, मानेक, बुज़क, गर्मपाई, शाह-मुर्ग, चमगादड़, नीलकण्ठ, कोयल, आदि के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किया गया है। जल-जन्तुओं में से शेरआबी, सियाह-सार, घड़ियाल, खूके आबी, मछलियों आदि का भी उसने विस्तृत ढंग से उल्लेख किया है।

जिन फलों एवं फूलों का बाबर ने अपनी आत्मकथा में उल्लेख किया है वे इस प्रकार हैं। आम, केला, इमली, महुवा, जामुन, कमरख, कटहल, बड़हल, बेर, करौंदा, गूलर, आमला, चिरौंजी, खुर्मा, नारियल, ताड़, नारंगी, नींबू, तुरंज, सन्तरा, गलगल, सदाफल, अमृत फल, जासून, गनेर, केवड़ा यासमान, नरगिस, आदि आदि।

बाबर ने हिन्दुस्तान की ऋतुओं, सप्ताह के दिन, समय के विभाजन, तौल आदि का भी उल्लेख किया है। यहाँ भी जो विवरण उसने दिया है बहुत ही सूक्ष्म है।

हिन्दुस्तान के बारे में बाबर ने स्वतंत्र रूप से अपने विचार व्यक्त किए हैं। यहाँ के निवासियों के बारे में उसने लिखा है कि "हिन्दुस्तान के अधिकांश निवासी काफिर हैं। हिन्द वाले काफर को हिन्दू कहते हैं। अधिकांश हिन्दू पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं। हिन्दुस्तान के समस्त आमिल, कारीगर तथा श्रमिक हिन्दू हैं। हमारे देशों में विभिन्न जंगली कबीलों के नाम, कबीलों के नाम पर होता

है। यहाँ जो लोग बस्तियों एवं ग्रामों में रहते हैं उनके भी नाम कबीलों के नाम पर होते हैं। यहाँ जितने भी शिल्पकार हैं उनके पिता तथा पितामह भी पीढ़ियों से वही कार्य करते चले आ रहे हैं।"

यहाँ बाबर ने जो कुछ भी देखा या अनुभव किया, उसके आधार पर इस देश की कमियों एवं विशेषताओं पर भी उसने अपने विचार व्यक्त किए हैं। उसके विचारों में हिन्दुस्तान एक आकर्षण शून्य देश है। उसी की आत्मकथा से लिए गए निम्नलिखित उद्धरणों से यह बात स्पष्ट हो जाती है। "हिन्दुस्तान की विलायतों तथा नगरों में कोई आकर्षण नहीं है। इसके समस्त नगर एवं समस्त भूमि एक ही प्रकार की हैं। यहाँ के उद्यानों में चाहरदीवारी नहीं होती। इसके अधिकांश स्थानों पर समतल मैदान स्थित है। वर्षा के समय कुछ नदियों तथा नालों में इतनी बाढ़ आ जाती है कि उनका पार करना बड़ा कठिन हो जाता है।" "मैदान के बहुत से भागों में बड़े-बड़े काँटेदार जंगल हैं। परगनों के निवासी उनमें शरण ले लेते हैं और विद्रोह कर देते हैं तथा कर नहीं अदा करते।" "केवल किन्हीं-किन्हीं स्थानों पर नदियाँ तथा जलाशय हैं। उनके अतिरिक्त यहाँ जलधाराएं नहीं हैं, यहाँ तक कि नगरों तथा विलायतों के निवासी या तो कुओं के जल से-जीवन-निर्वाह करते हैं या तालाबों से, जहाँ वर्षा ऋतु में जल एकत्र हो जाता है।"

"यहाँ के निवासी न तो रूपवान होते हैं और न ही सामाजिक व्यवहार में कुशल होते हैं। ये न तो किसी से मिलने जाते हैं और न कोई इनसे मिलने आता है। न इनमें प्रतिभा होती है और न कार्य क्षमता। न इनमें शिष्टाचार होती हैं और न उदारता। कला-कौशल में न तो ये किसी अनुपात पर ध्यान देते हैं और न नियम या गुण पर। न तो यहाँ अच्छे घोड़े होते हैं और न अच्छे कुत्ते, न अंगूर होता है, न खरबूज़ा, और न उत्तम मेवे। यहाँ न तो बरफ मिलती है और न ठण्डा जल। यहाँ के बाजारों में न तो अच्छी रोटी ही मिलती है और न अच्छा भोजन ही प्राप्त होता है। यहाँ न हम्माम हैं, न मदरसे, न शमा, न मशाल और न शमा दान।"

"शमा तथा मशाल के स्थान पर यहाँ बहुत से मैले-कुचैले लोगों का एक समूह होता है जो डीवटी कहलाते हैं......" "बड़ी-बड़ी नदियों तथा तलावों, जो कन्दराओं तथा गड्ढों में बहते रहते हैं, के अतिरिक्त यहाँ जल धाराएं नहीं मिलती। इनके उद्यानों तथा भवनों में जलधाराएं नहीं होतीं। इनके घरों में

कोई आकर्षण नहीं होता। न उनमें हवा जाती है, न उनमें कोई सुडौलपन होता है और न अनुपात।"

"कृषक तथा निम्न वर्ग के लोग अधिकांश नंगे ही रहते हैं। वे लोग एक लत्ते का टुकड़ा बांधते हैं जो लंगोटा कहलाता है। नाभि के नीचे एक लत्ते के टुकड़े को दोनों जांघों के बीच से लेते हुए पीछे ले जाकर बाँध देते हैं। स्त्रियां भी लूंगी बांधती हैं। इसका आधा भाग कमर के नीचे होता है और दूसरा सिर पर डाल लिया जाता है।"

हिन्दुस्तान के लोगों के रहन-सहन, आचार-विचार की आलोचना करने के साथ साथ बाबर ने इस देश की प्रशंसा भी की है। वह लिखता है, 'हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह बहुत बड़ा देश है। यहां अत्यधिक सोना-चाँदी है। वर्षा ऋतु में यहां की हवा बड़ी ही उत्तम होती है। कभी कभी दिन भर में १०–१०–१५–२० बार वर्षा हो जाती है। यहाँ की वर्षा से एकबारगी सैलाब आ जाता है और जिस स्थान पर लेश मात्र को भी जल नहीं होता वहाँ नदियाँ बहने लगती हैं। पानी बरसने के समय तथा वर्षा ऋतु में बड़ी ही उत्तम हवा चलती है। स्वास्थ्य वर्धक तथा आकर्षक होने के कारण इसकी तुलना असम्भव है। इसका दोष यह है कि हवा बड़ी ही तर तथा नम होती हैं। उन देशों के धनुष हिन्दुस्तान की वर्षा के उपरान्त खींचे भी नहीं जा सकते वे नष्ट हो जाते हैं। केवल धनुष ही नहीं अपितु हर वस्तु प्रभावित होती हैं, अस्त्र-शस्त्र, पुस्तकें, वस्त्र तथा बर्तन सभी। घर भी बहुत दिनों तक नहीं चलते।"

"हिन्दुस्तान का एक बहुत बड़ा गुण यह है कि यहाँ हर प्रकार एवं कला के जानने वाले असंख्य कारीगर पाए जाते हैं। प्रत्येक कार्य तथा कला के लिए जातियाँ निश्चित हैं जो अपने पिता और दादा के समय से वही कार्य करते चले आ रहे हैं। मुल्ला शरफ ने तैमूर बेग की पत्थर की मस्जिद के निर्माण के विषय में इस बात पर बड़ा अधिक जोर दिया है कि इसमें आज़रबैइज़ान, फ़ारस, हिन्दुस्तान तथा अन्य देशों के २०० पत्थर काटने वाले रोज़ाना काम करते थे किन्तु केवल आगरा के पत्थर काटने वालों में से ६८० व्यक्ति मेरे आगरा के भवनों के निर्माण में कार्य करते थे। मेरे आगरा, ब्याना, धौलपुर, ग्वालियर तथा कोल के भवनों के निर्माण में १४९१ पत्थर काटने वाले रोज़ाना कार्य करते थे। इसी प्रकार हिन्दुस्तान में प्रत्येक प्रकार के अगणित शिल्पकार तथा कारीगर हैं।"

बाबर की रचनाएं गद्य में तो सर्वोत्तम मानी ही गई हैं, किन्तु पद्य में भी वे किसी प्रकार कम नहीं हैं। उसने अनेक कविताएं तुर्की व फ़ारसी में लिखी। १५०० ई० के लगभग बाबर की भेंट प्रसिद्ध तुर्की कवि एवं साहित्यकार अली शेर बेग नवाई तथा फारसी कवि मुल्ला बिनाई से समरकन्द में हुई। इन दोनों कवियों के सम्पर्क में आकर उसने कविताओं की रचना करना सीखा। बाबर ने स्वयं लिखा है कि इस समय तक मुझे एक गज़ल तक लिखने में सफलता प्राप्त न हुई थी। मैंने केवल एक रुबाई लिखी, जिसका उत्तर मुल्ला बिनाई तथा ख्वाजा अब्दुल्लाह बरकत फ़िराकी ने लिख भेजा।" इन्हीं कवियों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए बाबर ने धीरे-धीरे ग़ज़ल व रुबाइयाँ लिखना प्रारम्भ किया। १५०३ ई० में कशग़र में उसने पहली ग़ज़ल पूर्ण की। १५०५ ई० में जस समय उसे बाबुरी नामक तरुण से प्रेम हो गया और वह इतना प्रेमासक्त हुआ कि वह फारसी के शेरों के माध्यम से अपने हृदय के उद्गारों को प्रकट करने लगा। उस तरुण से प्रेम में विभोर होने के फलस्वरूप उसकी रचना शैली में निखार आया। कविताओं की रचना करने में, उसने न केवल मुहम्मद सालेह से ही वरन् अन्य ईरानी कवियों से भी प्रेरणा ली। बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में यह लिखा है, "कि जिस समय मैं बाबुरी से प्रेम करने में लगा हुआ था, उसी समय मुहम्मद सालेह द्वारा रचित शेर की कुछ पंक्तियाँ मेरे दिमाग़ में आई और झेंप तथा घबराहट में मैं मुहम्मद सालेह के इस शेर का स्मरण करता हुआ उसे छोड़ कर चल दिया।"

"जब मैं अपने माशूक को देखता हूं तो झेंप जाता हूं।'
मेरे मित्र मेरी ओर देखते हैं और मैं दूसरों की ओर।"

बाबर ने अपनी आत्मकथा में अन्य कवियों के पदों के अतिरिक्त यदा-कदा अपने पद भी दिए हैं जिनमें कि उसकी काव्यमयी प्रतिमा दृष्टिगोचर होती हैं। १५०५ ई० से लेकर १५२८–२९ ई० तक बाबर ने ११६ गजलें, ८ मसनवियाँ, १०४ रुबाइयाँ, ५२ मुअम्मा, १८ कितअ, १५ तुयुग़, ७५ नुफरद, २९ शीं-मुसअरा, तुर्की में रचे और ३ ग़ज़लें, १ क़िता, और १८ रुबाइयाँ, फारसी भाषा में लिखी[1]। अबुल फजल ने लिखा है कि बाबर को तुर्की भाषा

१. फारसी में लिखे गए कुछ पद्यों के लिए देखिए—सैयद नेमुद्दीन द्वारा लिखित शोध पत्र "सम अनपब्लिश्ड वरसस आफ बाबर," इस्लामिक कलचर, जनवरी १९५६, पृ०, ४४-५० ।

में दीवान बड़ा ही फसीद एव अलंकारिक तथा मधुर है और उसमें बड़े नवीन विषय लिखे हैं। उनकी "मुबीन" नामक मसनवी बड़ी ही प्रसिद्ध रचना है। इस भाषा के विद्वान इसकी बड़ी प्रशंसा करते हैं। ख्वाजए अहरार की 'वालिदिया" नामक पुस्तक की, जो ज्ञान का समुद्र का मोती है, बादशाह ने इसकी काव्य में रचना की। इसकी बड़ी प्रशंसा की गई है।"[1] ऊपर जिन दो पुस्तकों का उल्लेख अबुल फज़ल ने किया है, उसमें से प्रथम पुस्तक, "मुबीन" हनफी तथा फिकह से सम्बन्धित प्रश्नों से हैं जिन पर उसने अपने निजी विचार प्रकट किए हैं।[2] दूसरी पुस्तक, 'रिसालें-वालिदिया', जो कि ख्वाजा उबैदुल्लाह अहरार ने लिखी थी, का अनुवाद बाबर ने पद्य में २४३ पक्तियों में १५२०–१५२६ ई० में किया। लगभग इसी समय बाबर ने तुर्की अरूज़ (छन्द शास्त्र) से सम्बन्धित "रिसाल-ए-अरूज़" नामक ग्रन्थ की रचना की।[3]

बाबर ने एक नई-लेखन पद्धति जिसे कि ख़ते बाबुरी कहते हैं का भी आविष्कार किया। इसी खत में उसने क़ुरान की एक प्रति तैयार कर मक्का भिजवाई।

जितनी रुचि तैमूरी शासकों को साहित्य में थी, उससे कहीं अधिक बाबर को थी। तैमूरी-परिवार के सदस्यों का योगदान तुर्की-फ़ारसी साहित्य में सम्भवतः इतना नहीं रहा, जितना कि बाबर का था। उसमें केवल साहित्य के सृजन करने की ही क्षमता न थी वरन् वह अन्य विद्वानों की कृतियों की आलोचना करने में भी दक्ष था।

हिरात के शासकों से प्रेरणा ग्रहण करते हुए और अपने पूर्वजों की परम्परा को बनाए रखने के लिए, बाबर ने अनेक साहित्यकारों, दार्शनिकों को, कवियों, विद्वानों एवं इतिहासकारों को अपने दरबार में प्रश्रय दिया।

---

१. अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४१२।
२. तबक़ात-ए-अकबरी (अनु०) पृ०, ४; रिज़वी, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर), पृ०, ४५५।
३. तबक़ात-ए-अकबरी (अनु०) पृ०, ४०; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत" (बाबर) पृ०, ४३५; अकबर नामा (अनु०) भाग १, पृ०, २७८; रिज़वी, "मुग़लकालीन भारत (बाबर) पृ०, ४१३।

कवि, कलाकार, संगीत एवं साहित्यकार उसके दरबार की शोभा थे। उन्हीं की संगति उसे विशेष रूप से रुचिकर थी। उसके दरबार में ख्वान्द मीर, मौलाना शिहाबुद्दीन, हिरात के मिर्ज़ा इब्राहीम, शैख ज़ैन खान, मौलाना बिन अशरफ, मौलाना बकाई शैख अब्दुल वज्द फरीग़ी, सुल्तान मुहम्मद कोसा, मौलाना शिहाब मुअग्माई, मौलाना यूसुफ तबीब, मुल्ला यबाकी, ख्वाजा निज़ामुद्दीन ख़लीफा, मीर दरवेश मुहम्मद सरबान, ख्वाजा कलाँ बेग आदि थे।

ऐसा था बाबर का व्यक्तित्व। यद्यपि अब वह नहीं है, किन्तु उसका प्रेरणा देने वाला कार्य, उसका साहसी जीवन, सैनिक सफलताएं, उत्तम चरित्र, एवं साहित्यिक उपलब्धियाँ, इतिहास के पृष्ठों पर सदैव उसका नाम अंकित रखेंगी।

परिशिष्ट (१)

वाबर का वसीयतनामा

अनुवाद :—

ज़हीरुद्दीन मुहम्मद वावर वादशाह वहादुर गाज़ी सं० ६३३ हिजरी।

यह गोपनीय आदेश पत्र ज़हीरुद्दीन मुहम्मद वादशाह ग़ाजी ने राजकुमार नासिरुद्दीन मुहम्मद हुमायूं (ईश्वर उसको चिरायु करे) को राजकाज को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से लिखा था।

हे! पुत्र! इस भारत देश में विभिन्न सम्प्रदाय विद्यमान् हैं। ईश्वर को धन्यवाद कि दैवी कृपा से वह तुमको प्रदान हुआ है। तुमको चाहिये कि अपने हृदय की सम्प्रदायिक पक्षपात करके प्रत्येक सम्प्रदाय के अनुकूल न्याय कर विशेपकर गौ वध से परहेज़ कर क्योंकि इससे हिन्दुस्तान की जनता के हृदय जीत सकेगा और प्रजा तथा जनता शाही शुभ व्यवहारों द्वारा राज्य से वँध जायेगी तथा प्रत्येक सम्प्रदाय के जो कि शासन के आधीन हैं मन्दिरों एवं पूजा गृहों को ध्वस्त न करना। ऐसा न्याय करना कि प्रजा राजा से और राजा प्रजा से सन्तुष्ट हो। इस्लाम की प्रगति अत्याचार की तलवार की अपेक्षा अनुग्रह की तलवार द्वारा कहीं हितकर है। तथा सुन्नी और शिया के पारस्परिक झगड़ों की ओर ध्यान न देना क्योंकि यह प्रचलित इस्लाम की शाखाएं हैं। विभिन्न सम्प्रदायों की मानने वाली प्रजा का चार तत्वों के अनुसार संगठन करना ताकि साम्राज्य की शरीर व्याधियों से सुरक्षित रहे। आदरणीय अमीर तैमूर साहव क़िरानी का शासन विधान अपनी दृष्टि के सामने रखना ताकि शासन कार्य सुदृढ़ हो हो जाए।

प्रथम जमादी-उल-अव्वल सं० ६३५ हिजरी।

१६२३ ई० में श्रीमती ए० एस० वैव्रिज ने वावर के वसीयतनामा के सम्बन्ध में कुछ विद्वानों द्वारा की गई छानवीन के आधार पर एक नोट तैयार किया। यह

नोट जरनल आफ रायल एशियाटिक सोसायटी आफ ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड (१९२३, पृ० ८०) में "फरदर नोट्स आन बाबुरियाना" नामक शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित हुआ। श्रीमती बैब्रिज ने यह स्वयं स्वीकार किया है कि उन्होंने स्वयं इस वसीयतनामा की मूल प्रति नहीं देखी और इस प्रकार वे इस वसीयतनामा के काग़ज कि वह कितना पुराना है तथा वसीयतनामा की लेखन शैली में जो दोष रह गए हैं, उनके सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट न कर सकी। अपने नोट में उन्होंने निम्नलिखित बातों पर जोर दिया है :—

(१) पाण्डुलिपि (Manuscript) पर जो लेखन शैली हैं, वह १६ वीं शताब्दी की न होकर १८ वीं शताब्दी की हैं।

(२) यह बहुत ही घटिया किस्म की नस्तालिक में उस व्यक्ति के द्वारा लिखा गया, जो कि नस्ख लिखने में अभ्यस्त होगा।

यह वसीयतनामा दो भागों में विभाजित किया जा सकता है :—

पहले भाग में परामर्श, मुहर, शीर्षक का विवरण तथा अन्तिम शब्द दिया हुआ है और दूसरे भाग में केवल वसीयतनामा-ए-मखफी हैं।

(३) इस वसीयतनामा पर जो मुहर है, उसमें तथा बाबर की मुहर में अन्तर है। वह बड़ी है। मुहर की लिखावट नस्ख में है। हिजरी शब्द बहुत संक्षिप्त में लिखा गया है और उसमें फालतू पदवियाँ अंकित हैं तथा बाबर के पूर्वजों का नाम नहीं है।

(४) मुहर पर शीर्षक (Legend) इस प्रकार से है, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह बहादुर गाज़ी (हि० ९३३)। यह मुहर बाबर की उस सुविख्यात मुहर से भिन्न हैं जिस पर शीर्षक इस प्रकार खुदा हुआ है, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर इब्न सुल्तान उमर शैख़ कुरक़ान (हि० ९००)। श्रीमती बैब्रिज का यह कहना है कि 'वसीयतनामा' की मुहर पर 'बहादुर' शब्द का प्रयोग ९१३ हि०। १५०६ ई० में ग्रहण की गई हुई, 'पादशाह' की महान् पदवी के बाद पुरानी लगती हैं।

(५) मुहर की नस्ख लिखावट वसीयतनामा के विषय की नस्तालिक में लिखावट से मिलती-जुलती हैं। मुहर तथा शीर्षक दोनों में ही 'गाज़ी' शब्द के बर्तने में त्रुटि हैं, ज़े शब्द के प्रयोग के स्थान पर ज़ाल का प्रयोग किया गया है।

(६) मुहर तथा वसीयतनामा के अन्त में हिज्री शब्द का संक्षिप्त रूप से हि० लिखकर प्रयोग किया गया है। ऐसा केवल बाद की अरबी की पाण्डुलिपियों

में ही मिलता है, जहाँ कि हिज्री शब्द का प्रयोग हि० लिखकर ही आमतौर पर किया गया है।

(७) यह शीर्षक कि "ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह गाज़ी का गुप्त परामर्श शाहज़ादा नुरुद्दीन हुमायूं (ईश्वर उसे दीर्घ आयु प्रदान करे) को दिया गया ताकि सल्तनत का सुदृढ़ीकरण किया जा सके," श्रीमती वेव्रिज के अनुसार यहाँ दो बातें बाबर की रचनाओं से भिन्न हैं :—

(१) पदवियों का प्रयोग—बाबर अपने लिए तथा अपने पुत्रों के लिए कहीं भी पदवियों का प्रयोग नहीं करता है।

(२) यदि कहीं भी वह पदवियों का प्रयोग करता है तो तैमूरी ढंग से मिर्ज़ा शब्द का प्रयोग पदवी के लिए करता है।

(८) वसीयतनामा के अन्त में यह लिखा है कि इस परामर्श का घोषित करना हमारा कर्त्तव्य है, जमादी-उल-अव्वल हि० ९३५। ११ जनवरी, १५२९। श्रीमती वेव्रिज का विचार है कि "बाबर नामा से यह ठीक तरह से ज्ञात नहीं होता कि क्यों और किस समय हुमायूं को यह परामर्श दिए जाने का विचार किया गया। यह भी ज्ञात नहीं होता कि यह परामर्श किसको और किसके द्वारा दिये जाने थे, चूंकि जमादी-उल-अव्वल हि० ९३५ में हुमायूं समरकन्द अभियान पर था और बाबर धौलपुर के उद्यान में भवनों के निर्माण के लिए स्थान निर्धारित कर रहा था। इसके अतिरिक्त वसीयतनामा एक अन्तिम इच्छा के रूप में था तो उसकी तिथि बाबर की मृत्यु से बहुत पूर्व की है, चूंकि बाबर की मृत्यु २६ दिसम्बर, १५२९ से पूर्व नहीं हुई।"

गुप्त परामर्श के सम्बन्ध में श्रीमती वेव्रिज ने निम्नलिखित त्रुटियाँ इंगित की हैं :—

वसीयतनामा जो कि बाबर ने फारसी में लिखा उसे हम तुर्की से किया गया अनुवाद नहीं मान सकते चूंकि वह बाबर की लेखन शैली से भिन्न है।

(१) बाबर की मृत्यु से पूर्व हुमायूं को किसी प्रकार की सर्वसत्ता (Sovereignty) नहीं प्रदान की गई।

(२) अकबर के राज्यकाल की धर्मान्धता, बाबर के काल में मुसलमानों की स्वामिभक्ति थी।

(३) यह प्रतिबन्ध उस समय के लिए उचित प्रतीत होते हैं जबकि बादशाह और राजा के बीच यह तय हुआ कि राजपूत राज्य में गो-वध नहीं होगा।

(४) ९२३ हि० में ही अयोध्या में एक पुरातन पवित्र हिन्दू मन्दिर के स्थान पर बावर की मस्जिद का निर्माण कार्य समाप्त हुआ।

(५) आठवें परामर्श में दो बातें ऐसी हैं जो कि सन्देह उत्पन्न करती हैं—

१—तैमूर की पदवी, साहिब क़िरान सानी का प्रयोग। बावर नामा में बावर ने सदैव तैमूर को तैमूर बेग ही लिखा। उसके मरणोपरान्त प्रयोग किए गए किसी पदवी का प्रयोग बावर ने नहीं किया।

२—वसीयतनामा में कारनामा नामक पुस्तक का जो उल्लेख है वह भी सही नहीं है।

(६) श्रीमती बेव्रिज ने वसीयतनामा की भाषा में भी त्रुटियां इंगित की हैं।

(७) अन्त में श्रीमती बेव्रिज यह प्रश्न करती हैं कि "९९६ हि०। १५८७ ई० में जब अबुल फज़ल के अभिलेखाकार के लिए ऐतिहासिक सामग्री की खोज की गई तो यह प्रपत्र कहाँ तथा क्यों इतने समय तक छिपा रहा ?'

सम्पूर्ण वादविवाद से निष्कर्ष पर पहुंच कर श्रीमती बेव्रिज का यह विचार है कि बावर ने फारसी में जो दक्षता प्राप्त कर ली थी वह बात "वसीयतनामा-ऐ-मखफी", जैसे त्रुटिपूर्ण प्रपत्र को असली मानने के विपक्ष में ठहरती हैं।[1]

इस वसीयत नामा की यथार्थता के सम्बन्ध में श्रीमती बेव्रिज के सन्देह के कारण जो भी हों, इस बात को हम किसी प्रकार से अस्वीकार नहीं कर सकते कि यह प्रपत्र बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हमारे मस्तिष्क में पहला जो प्रश्न उठता है वह यह है कि यह वसीयतनामा स्वयं बावर ने नहीं लिखा या तैयार करवाया, तो क्यों तथा किस विचार या उद्देश्य से किसी अन्य व्यक्ति ने यह वसीयतनामा लिखा ? यह भी निश्चित् है कि वसीयतनामा में दिए गए परामर्श से हुमायूं के अतिरिक्त किसी अन्य व्यक्ति को लाभ भी नहीं पहुंच सकता था। वास्तव में यह वसीयतनामा एक उत्तराधिकार सम्बन्धी प्रपत्र (Succession Deed) न होकर एक ऐसा प्रपत्र था जिसमें की हुमायूं को महत्वपूर्ण हिदायतें दी गई थी।

निःसन्देह इस वसीयतनामा की भाषा में त्रुटियां हैं और कुछ दोष हैं तथा इसे बावर ने स्वयं नहीं लिखा। इसके अतिरिक्त यह भी बता देना आवश्यक है कि मुहर में दी गई हुई तिथि तथा प्रपत्र के अन्त में दी गई हुई तिथि में अन्तर है।

---

१. श्रीमती बेव्रिज, शोध-निबन्ध, "फरदर नोट्स आन बाबुरियाना" जनरल आफ रायल एशियाटिक सोसायटी आफ ब्रिटेन एण्ड आयरलैण्ड, १९२३, पृ०, ८०।

किन्तु साथ ही साथ कुछ अन्य बातें भी विचार करने के योग्य है, उदाहरणार्थ (१) ९३३ हि० में बाबर का अस्वस्थ रहना। (२) माहम के आगरा आने से पूर्व तथा उसके पश्चात् दरबारी गुटबन्दियों की प्रकृति (३) हिन्दुस्तान के बारे में बाबर को अत्यधिक अनुभव प्राप्त हो चुका था अतएव उसने हुमायूं को जो कि राजनीतिक मामलों से बिल्कुल ही अनभिज्ञ था को कुछ परामर्श देना नितान्त आवश्यक समझा।

खनवा के युद्ध के उपरान्त बाबर निरन्तर बीमार रहने लगा। उसका बलिष्ठ शरीर दिन प्रतिदिन क्षीण होने लगा। बाबर नामा में यदा कदा उसने अपनी बीमारी का उल्लेख किया है। अगस्त ३, १५२७ को वह बीमार पड़ा और सत्रह दिनों तक बीमार रहा ?[१] २ ज़िल हिज्जा, ९३४ हि० को वह पुनः बीमार पड़ा और नौ दिनों तक बीमार रहा।[२] १७ अक्तूबर १५२७ को मलेरिया ज्वर उसे आया और अगले पचीस या छब्बीस दिनों तक वह ज्वर से पीड़ित रहा।[३] इसके उपरान्त १३ अप्रैल से १८ सितम्बर तक उसकी आत्मकथा में विवरण का क्रम टूट गया। विवरण के क्रम के टूटने का एक कारण उसका रुग्ण रहना भी हो सकता है। २६ सितम्बर १५२८ ई० को उसके कान में बहुत ज़ोरों से पीड़ा हुई।[४] १३ अक्टूबर में पुनः उसके कान में दर्द हुआ।[५] ६ नवम्बर, १५२८ ई० को वह बुरी तरह से रोग ग्रस्त हुआ और २८ नवम्बर तक वह बीमार रहा।[६] निरन्तर बीमार रहने के कारण उसका शरीर दुर्बल हो गया और अपनेजीवन से निराश हो गया।

१२ दिसम्बर १५२८ ई० को अपने पुत्रों में से मिर्ज़ा अस्करी, जो कि इस समय उसके पास था, को एक जड़ाऊ खंजर, पेटी, शाही लिबास, पताका, तुग़, नक्कारा, ६ से लेकर ८ तिपुचक घोड़े, १० हाथी, ऊंट तथा खच्चर की एक-एक कितार तथा शाही असबाब एवं शस्त्र आदि देकर सम्मानित किया। उसे आदेश

---

१. बाबर नामा भाग २य(अनु०) पृ०, ५८५ ।
२. " " " पृ०, ५८६ ।
३. " " " पृ०, ५८८ ।
४. " " " पृ०, ६०८ ।
५. " " " पृ०, ६१५ ।
६. " " " पृ०, ६१९-२० ।

दिया गया कि वह दीवान का पद ग्रहण करे।[1] इसी प्रकार उसके मुल्ला तथा दो अल्काओं को बटनदार जैकेट तथा उसके सेवकों को ६ जामो (कोट) के तीन जोड़े प्रदान किए गए। बाबर नामा का यह टीप बहुत महत्वपूर्ण है तथा अर्थहीन नहीं है। इस तिथि से पूर्व बाबर ने अपने किसी पुत्र को कभी इतने अत्युत्तम ढंग से सम्मानित नहीं किया था। जो सम्मान सूचक वस्तुएं मिर्ज़ा अस्करी को इस अवसर पर प्रदान की गई वे बाबर की मानसिक दशा की ओर इशारा करती हैं तथा इस बात को इंगित करती हैं कि इस समय उसका झुकाव अपने तीसरे पुत्र की ओर था। हुमायूं से न वह प्रसन्न था और न ही उसका प्रधान मन्त्री मीर खलीफा। जिस प्रकार मिर्ज़ा अस्करी का सम्मान किया गया उससे दरबार में तहलका मच गया होगा और सभी उमराव ने यह अनुमान लगाया होगा कि बाबर के मरणोपरान्त अस्करी ही सिंहासन पर बैठेगा। किन्तु शीघ्र ही बाबर को अपनी भूल का अहसास हुआ और उसने उत्तराधिकार का प्रश्न तय कर ११ जनवरी, १५२६ ई० को धौलपुर में अपने किसी अनुचर से कहकर वसीयत नामा तैयार करवाया। उसने सोचा होगा कि यदि उसकी आकस्मिक मृत्यु हो गई तो यह वसीयतनामा उसके ज्येष्ठ पुत्र हुमायूं के हितों की रक्षा करने में सहायक होगा। तत्पश्चात् १५ जनवरी, १५२६ को वह अफ़गानों से निबटने के लिए पूर्वी क्षेत्रों की ओर बढ़ा और जून १५२६ ई० तक इस अभियान में व्यस्त रहा। इस प्रकार इस मध्य उसे इतना समय भी न मिल सका कि वह उन दस्तावेज़ को देखकर उसकी त्रुटियों एवं दोषों को दूर कर सकता।

इसी मध्य अस्करी को सम्मानित किए जाने की खबर शीघ्रातिशीघ्र काबुल पहुंची। इस खबर से माहम चिन्तित हुई होगी। अतएव, अपने पुत्र के हितों की रक्षा करने के लिए वह काबुल से चलकर आगरा २६ जून, १५२६ को पहुंची। ऐसा प्रतीत होता है कि उसके आने पर बाबर ने उस वसीयतनामा का जो कि हुमायूं के पक्ष में उसने तैयार करवाया था, उससे कोई भी जिक्र नहीं किया। वसीयतनामा को गुप्त रखना भी आवश्यक था, कारण यह कि उसके विषय में मालूम होते ही (१) उमराव वर्ग की स्वामिभक्ति विभाजित हो गई होती, (२) शाही राजकुमारों में आपस में मन-मुटाव तथा संघर्ष प्रारम्भ हो गया होता, (३) यदि

---

१. बाबर नामा, (अनु०) भाग २, पृ०, ६२८।

वसीयत नामा में शाही राजकुमार को दिए गए गुप्त परामर्श की घोषणा कर दी गई होती तो उलमा वर्ग अवश्य ही बाबर के राज्य को ग़ैर इस्लामी घोषित कर अपना सहयोग देने से इन्कार कर देता, जिसके फलस्वरूप भारत में नव-स्थापित मुगल साम्राज्य को एक बड़ा धक्का पहुंचता और उसको सुरक्षित रखना बाबर के लिए कठिन हो जाता।

माहम के आने के उपरान्त हुमायूं आया और जिससे बाबर की मानसिक चिन्ता दूर हुई। उनके आने से मीर खलीफा की आशाओं पर पानी फिर गया। मीर खलीफा माहम के प्रभाव से भलीभांति परिचित था। वह जानता था कि उत्तराधिकार का प्रश्न हुमायूं के पक्ष में ही तय होगा। बाबर के निकट रहते हुए भी उसे वसीयतनामा जैसे गुप्त दस्तावेज़ की जानकारी न थी। यदि उसे वसीयत नामा के बारे में मालूम होता तो वह षड्यन्त्र रचकर अपनी मूर्खता का परिचय न देता। सम्भवतः वह निरन्तर इस भुलावे में रहा कि बाबर अस्करी के पक्ष में है। वह बादशाह की वास्तविक इच्छा का अनुमान न लगा सका कारण यह कि वह उत्तराधिकार के प्रश्न पर निरन्तर मौन रहा और उसने कुछ समय तक किसी के पक्ष में कोई घोषणा न की। कुछ भी हो, मीर खलीफा हुमायूं के सिंहासन पर बैठने के पक्ष में न था, चूंकि उसके सम्बन्ध उससे खराब थे। वह अस्करी के पक्ष में भी नहीं था, चूंकि वह अभी एक बालक था और बाबर के चार पुत्रों में से तीसरा। यही कारण है कि शाही परिवार के एक अन्य सदस्य का पक्ष उसने लिया। उसकी योजना विफल सिद्ध हुई और मुग़ल साम्राज्य एक दुर्घटना से बच गया।

अपनी मृत्यु से पूर्व बाबर ने अपने अमीरों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे हुमायूं को अपना बादशाह स्वीकार कर लें। उन्होंने उसकी बात का समर्थन कर, हुमायूं को गद्दी पर बिठाया। यह ठीक तौर पर ज्ञात नहीं है कि हुमायूं को सिंहासनारोहण से पहले या बाद में कभी यह वसीयतनामा दिखाया गया या नहीं ? किन्तु उसके जीवन चरित को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि उसने वसीयतनामा में दिए गए परामर्श का अक्षरशः पालन किया।

इस बात को ध्यान में रखकर कि बाबर नामा में अनेक रिक्त स्थान हैं, वसीयतनामा की यथार्थता के सम्बन्ध में जो प्रश्न श्रीमती बेव्रिज ने उठाये हैं, उन प्रश्नों एवं समस्याओं पर विचारकर उनका खण्डन किया जा सकता है—

(अ) बाबर धौलपुर की सैर करने के लिए गया था। उसके मन में हुमायूं को कुछ परामर्श देने की बात यकायक उठी और उसने वसीयतनामा को तैयार करवाने का निश्चय किया। तुरन्त शाही मुहर का तैयार करवाया जाना क्या सम्भव नहीं ? जल्दी में शाही मुहर तैयार की गई जिसके कारण उसमें दोष रह गए। बाबर के बहुत ही कम प्रपत्र (documents) प्राप्त हैं। इस प्रकार एक दूसरी मुहर के बनाए जाने तथा उसके प्रयोग की सम्भावना को हम असम्भव नहीं मान सकते । जहाँ तक 'बहादुर' नामक पदवी के प्रयोग का प्रश्न है, श्रीमती बेव्रिज के विचार निर्णायक नहीं हैं। पन्द्रह सौ छब्बिस के पश्चात् बाबर ने दो निर्णायक युद्ध जीते और दोनों ही में उसने अद्वितीय एवं अदम्य साहस का परिचय दिया और इस प्रकार इस नई पदवी का प्रयोग करने का वह पूर्णरूप से अधिकारी था, जैसा कि उसने खनवा के युद्ध के पश्चात् किया।

(ब) श्रीमती बेव्रिज का यह कहना कि वसीयतनामा की प्रारम्भिक पंक्ति में नासिरुद्दीन हुमायूं के लिए 'शाहज़ादा' शब्द का प्रयोग, अनूठा है और बाबर की लेखन शैली से भिन्न है। इस सम्बन्ध में यह पहले ही कहा जा चुका है कि वसीयतनामा बाबर द्वारा नहीं लिखा गया। यह वसीयतनामा एक ऐसे व्यक्ति द्वारा लिखा गया, जो कि न केवल बाबर की भाषा-शैली एवं लेखन-पद्धति वरन् फारसी भाषा में बहुत अधिक दक्ष नहीं था। यह व्यक्ति बाबर का कोई निजी सेवक हो सकता है। यही कारण है कि उसमें भाषा सम्बन्धी तथा अन्य त्रुटियां रह गईं। (ग) इन शब्दों ने, कि, इनकी घोषणा करना हमारे ऊपर है, जमादी उल-अव्वल, हि० ९३५:११ जनवरी, १५२९ व्यर्थ ही श्रीमती बेव्रिज के मन में भ्रान्ति उत्पन्न कर दी। वसीयतनामा कभी भी किसी भी समय तैयार करवाया जा सकता है और यह वसीयतनामा वसीयत कर्ता की मृत्यु तक गुप्त रखा जाता है। वसीयत कर्ता को जीवनकाल में इसकी घोषणा करना आवश्यक नहीं। (घ) वसीयतनामा की यथार्थता के सम्बन्ध में श्रीमती बेव्रिज की यह आलोचना कि यह यथार्थ इसलिए नहीं हैं कि उसमें बाबर के विचारों के विपरीत बातें दी गई हैं, समर्थनीय नहीं हैं। इस सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि बाबर अपने सिद्धान्तों में कभी अटल नहीं रहा। समय की आवश्यकता ही उसका मार्ग-प्रदर्शन करती थीं और समय को देखते हुए वह अपनी योजनाओं में भी परिवर्तन किया करता था। वह अपने पूर्वज अमीर तैमूर का प्रशंसक अवश्य था किन्तु उसके संकीर्ण विचारों से बंधा हुआ कदापि न था। वसीयतनामा में जो आठ परामर्श

या हिदायतें हैं वे सब उसके अनुभव की उपज हैं। बाबर ने अपने पुत्र तथा उत्तराधिकारी को उन गड्ढों में गिरने से बचने के लिए चेतावनी दी और उसे परामर्श दिया कि वह न्यायप्रिय एवं उदार बने तथा अपने जीवन में अमीर तैमूर का अनुकरण करें।

वसीयतनामा में 'कारनामा' शब्द के प्रयोग का तात्पर्य किसी पुस्तक से नहीं वरन् अमीर तैमूर के महान् कार्यों से है।

श्रीमती बेव्रिज के इस प्रश्न का उत्तर कि यह दस्तावेज़ या प्रपत्र (document) इतने दिनों तक कहाँ तथा क्यों छिपा रहा, इस प्रकार से दिया जा सकता है। हुमायूं के सिंहासनारोहण से लेकर १५४० ई० तक का काल मुग़लों के लिए बहुत ही संघर्षमय था। इसी काल में यह वसीयतनामा संभवतः अन्य राजकीय काग़जों, प्रपत्रों तथा किताबों में मिल गया होगा। हुमायूं के पलायन के समय यह वसीयतनामा कुछ अन्य काग़जों के साथ किसी व्यक्ति या अफ़ग़ानों के हाथ में पड़ गया जिन्होंने उसके बारे में बताने की न तो आवश्यकता समझी और न ही उसकी महत्ता पर ही ध्यान दिया। यह प्रपत्र इस प्रकार अन्धकार ही में पड़ा रहा। आज भी ऐसे अनेक परिवार हिन्दुस्तान के विभिन्न भागों में हैं जिनके पास पुराने दस्तावेज़, प्रपत्र आदि मौजूद हैं और वे उन्हें अपनी व्यक्तिगत धरोहर समझ कर रखे हुए हैं और किसी भी मूल्य पर उन्हें देने को तत्पर नहीं हैं। न ही वे लोगों को यह दस्तावेज या प्रपत्र दिखाने को तैयार होते हैं। इसी प्रकार वसीयतनामा-ए-मख्फी भी मुग़ल साम्राज्य के समाप्त होने के दो सौ वर्षों से अधिक बाद तक किसी परिवार के पास पड़ा रहा और लोगों को इसकी जानकारी बहुत बाद में हुई।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि बाबर का वसीयतनामा-ए-मख्फी, एक मूल प्रपत्र न होकर उसकी प्रतिलिपि है, जिसका विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है तथा जिसकी ऐतिहासिकता एवं यथार्थता पर किसी को कोई सन्देह नहीं होना चाहिए।

—— o ——

परिशिष्ट (२)

शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही का बाबर के नाम पत्र

शेख अब्दुल कुद्दूस गंगोही ने बाबर को पत्र लिखा उसकी प्रतिलिपि[1]

पत्र संख्या १६६। मुहम्मद बाबर बादशाह के नाम, जिसमें कुछ परामर्श एवं सुझाव दिए गए हैं।

हक़ ! हक़ ! हक़। धन्य है ईश्वर और धन्य हैं मुहम्मद साहब. . 'भगवान शाह बाबर को चिर आयु करे और क्रमशः उसके पद की उन्नति करे. . .अपने समय का इमाम, संसार का संरक्षक, युग का सुल्तान, भाग्य का धनी, ईश्वर का भक्त, जगत का पोषक, न्याय वितरक, आकाश के समान भव्य, गगन के समान विशाल, उच्चतम पदाधिकारी अब्दुल मुजाहिद अल मुज़फ़्फ़र, सर्व सम्मानित, ईश्वर की छाया ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर. . . . .

यह सन्तों का सेवक. . . .निवेदन करता है कि युग का इमाम, जगत का पथ प्रदर्शक होता है, अतः उसका प्रमुख कर्त्तव्य है कि मुहम्मद साहब की शरा को सुदृढ़ करना और उलेमाओं इत्यादि के मामलों का हनफ़ी न्याय पद्धति के अनुकूल प्रबन्ध करना. . . .विद्वानों और सन्तों का पोषण करना. . . .

प्रार्थना है कि सर्व सम्मानित सम्राट के राज्य काल में ही उचित और मुनासिब प्रतीत होता है कि विद्वानों, सन्तों, उलेमाओं और संतृप्तों की ओर अधिक से अधिक ध्यान दिया जाय और उनकी मदद-ए-मआश (कर मुक्त भूमि) से उश्र (भूमि कर) न वसूल किया जाए। क्योंकि इस प्रकार का कर अत्यन्त घृणित और अन्यायी है। सन्तो से कुछ भी माँगना विवेक के प्रतिकूल है। गरीबों से कर वसूल करके सरकारी व्यय में लाना अनियमित है। यह शरा

---

(१) देखिए, "मक़तूबात अब्दूल कुद्दूस गंगोही" (पाण्डुलिपि नं० १०४, विश्व-विद्यालय संग्रह, मौलाना आजाद लाइब्रेरी, अलीगढ़ मुस्लिम यूनीवर्सिटी, अलीगढ़) पत्र संख्या १६६ (पृ० ३३२-३२५)।

का घोर उल्लंघन हैं। उसके वसूल करने से जगत में घोर अन्धकार फैल जावेगा और निर्धन और शोषित त्राहि त्राहि करने लगेंगे.....यह कार्य गर्त में गिरने के समान होगा; यह अक्षम्य होगा.....अनुकम्पा करके व उदारता पूर्वक उसको माफ कर दिया जाय। इससे कोई हानि न होगी और न किसी को कष्ट होगा। इसके विपरीत साधु और सैय्यद अपना जीवन सुख शान्ति से व्यतीत कर सकेंगे और सम्मानित सम्राट के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे।

सर्व शक्तिमान ईश्वर धन्य हैं। उसने शाही पताका को अन्य नेताओं और सरदारों की पताका से ऊँचा उठा दिया। उसने सम्मानित सम्राट को शाही वस्त्रों से अलंकृत कर दिया....कितनी लज्जा की बात होगी यदि सम्मानित सम्राट सन्तों, फकीरों दुखियों, विद्वानों और शखों की शुभ चिन्ता के प्रति उदासीन हो जाय....। इसी विचार को सामने रखकर बड़े साहस से यह कहा, "यदि समस्त संसार मेरी मुट्ठी में हो तो मैं एक ही ग्रास बना कर उसकी क्षुधा से पीड़ित व्यक्ति के मुँह में डाल सकता हूँ।

परलोक के व्यक्तियों के लिए इस लोक का कोई महत्व नहीं,
पुरातन और नवीन संसार का पा लेना (कुछ नहीं)
यह संसार नश्वर है और यह अनाज के दाने से भी अधिक नहीं,
जगत की तृषा भक्त का सर्वनाश कर डालती है।
उसकी चकाचौंध से जीवन नष्ट हो जाता है,
संसार बुरा नहीं हैं यदि तुम अपना कर्त्तव्य पालन करो,।
वह बुरा है यदि तुम धन के पीछे दौड़ो।।

इस संसार के लोग परलोक के लिए बीज बोते हैं अतः जो कुछ उनके पास हों उनको चाहिए कि भगवान को अर्पण कर दें। सम्राट को चाहिए कि किसी पर अत्याचार न करें और यह देखें कि जनता और सिपाही शरा के अनुकूल चलते हैं। उसको चाहिए कि समूह के साथ प्रार्थना करें और ज्ञानियों से मैत्रीपूर्ण व्यवहार करें। उसको चाहिए कि प्रत्येक नगर में मुहतासिब नियुक्त करें ताकि नगर और बाज़ार मुहम्मद साहब के न्याय से प्रकाशमान हो जाय।

पवित्र खलीफाओं को परम्पराओं के अनुरूप जुमा की नमाज़ मुसलमानों के समूह के साथ पढ़ना चाहिए। निःसन्देह आपके राज्य में इस प्रथा का पालन होता है। इसको और सम्पन्न करना चाहिए जिसके फलस्वरूप पुराने समय

फिर से जागृत हो जायेगा। अफसरों व कार्यकर्त्ताओं के पद पर निष्ठावान और पवित्र मुसलमानों को नियुक्त करना चाहिए। शरा के अनुकूल कर लगाना चाहिए। राजस्व विभाग में किसी काफिर को नियुक्त न करना चाहिए और न उसमें काफिरों को काम ही करने देना चाहिए। काफिरों को अपमानित करना चाहिए। उनको मुसलमानों के वस्त्र न धारण करने देना चाहिए। जज़िया और ज़कात शरा के अनुसार वसूल करना चाहिए!



परिशिष्ट (३)

दिलदार बेगम

दिलदार बेगम का नाम बेगम दिलदार अगचा के रूप में भी मिलता है। दिलदार के माता-पिता के सम्बन्ध में हमें कुछ भी मालूम नहीं। बाबर तथा उसकी पुत्री गुलबदन बेगम ने अपने ग्रन्थों में उसके माता पिता के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं लिखा। किन्तु श्रीमती बेव्रिज के अनुसार सुल्तान महमूद मिर्ज़ा मीरान शाही की पुत्री सालिहा सुल्तान बेगम का दूसरा नाम दिलदार बेगम था (हुमायूं नामा, अनु० पृ० २७७)। किन्तु उनका यह मत डा० जेड० ए० देसाई साहब ने अस्वीकृत कर दिया और दिलदार बेगम के सम्बन्ध में पुनः नए सिरे से प्रकाश डालने की चेष्टा की है। उनके अनुसार शेख रिज़ाकुल्लाह मुश्ताकी की पुस्तक वाक़यात-ए-मुश्ताकी में, उस स्थान पर जहाँ कि मालवा के शासक नासिरुद्दीन का विवरण है वहाँ दिलदार अगचा नामक एक स्त्री के बारे में यह लिखा हुआ है कि वह एक भद्र, सुशिक्षित, सुन्दर और विद्वान स्त्री थी। अपने अद्वितीय गुणों के कारण उसे नासिरुद्दीन ने नादिमा-ए-मजलिस की उपाधि प्रदान की। उसके गुणों से सुल्तान इतना अधिक प्रभावित था कि उसने एक बार सबके सन्मुख इस बात की चर्चा की कि यदि दिलदार अगचा एक औरत न होती तो वह उसे प्रशासनिक अधिकार प्रदान कर उसके हाथों में शासन की बागडोर सौंप देता। १५१० ई० में सुल्तान नासिरुद्दीन की मृत्यु हुई और मालवा में आन्तरिक गड़बड़ियाँ प्रारम्भ हुई। मालवा राज्य की आन्तरिक दशा देखकर दिलदार अगचा तीन अन्य सुप्रसिद्ध विद्वानों के साथ मालवा छोड़ कर आगरा में आकर रहने लगी। आगरा में शेख सईद ने उसका परिचय सुल्तान सिकन्दर लोदी से करवाया, और इसके बाद उसके बारे में ऐतिहासिक ग्रन्थों में कहीं भी कुछ ठीक तरह से पता नहीं चलता। हाजी-उद-दबीर तथा अब्दुल्लाह के अनुसार सुल्तान सिकन्दर लोदी के राज्यकाल में बाबर कलन्दर के रूप में आगरा

आया और सम्भवतः लगभग इसी समय वह दिलदार अगचा के सम्पर्क में आया। उसके हृदय-ग्राही गुणों से प्रभावित होकर वह उसे अपने साथ काबुल ले गया, या किसी प्रकार वह स्वयं काबुल पहुंची, जहां बाबर जैसे महान् विद्वान् के सम्पर्क में आई और उससे प्रभावित होकर बाबर ने उसके साथ विवाह कर लिया। दिलदार अगचा का नाम बुलन्दशहर में बनी हुई एक ईदगाह के द्वार पर बनी हुई मिहराब के ऊपर लगे हुए अभिलेख में दिया भी हुआ है।

इस अभिलेख के अनुसार १५३८ ई० में मलिक जानलार के पुत्र नेक पाया। खान ने एक मस्जिद का निर्माण करवाया। इस अभिलेख की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उसमें दिलदार अगचा को बुलन्दशहर का शासक तथा उसकी जागीर बताया गया है।

—— o ——

परिशिष्ट (४)

बाबर कालीन अभिलेख

जो इमारतें १५२६ ई० से लेकर १५३० ई० के मध्य बनाई गई उनमें से कुछ में खुदे हुए अभिलेखों में बाबर का नाम अंकित है। इसका व्यौरा इस प्रकार है:—

१—सर्वप्रथम बाबर के नाम का उल्लेख फतेहपुर सीकरी में प्राप्त अभिलेख में मिलता है। बाबर ने फतेहपुर सीकरी में एक भवन का निर्माण किया, जहां बैठकर वह अपनी आत्मकथा लिखा करता था। अब इस भवन का कोई भी चिन्ह उपलब्ध नहीं। किन्तु अजमेरी द्वार के निकट एक कुंआ है जिसकी दीवार पर विकृत अभिलेख है, जिसमें बाबर का नाम अंकित है। बाबर ने स्वयं अपनी आत्मकथा में लिखा है कि खनवा के युद्ध से पूर्व उसने मदिरापान करना छोड़ दिया और सीकरी में एक स्थान पर मदिरा पीने के वर्तनों को तोड़ डाला तथा वहीं यह आदेश दिया कि एक कुआँ खुदवाया जाय। उसके आदेशानुसार एक पत्थर का कुआँ बनवाया गया और उसके निकट दान भवन भी बनाया गया। यह कुआँ बाबर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। कुआँ और दान भवन का निर्माण मदिरा पान परित्याग करने के अवसर की यादगार बनाए रखने के लिए हुआ।

इस सुन्दर अभिलेख की लिखावट बहुत ही अच्छी है। यह अभिलेख कहीं-कहीं मिट गया है और कहीं-कहीं टूट गया है। उक्त अभिलेख ८६ सेन्टीमीटर लम्बा और १-१५ मीटर चौड़ा है। तुग़रा लिखावट से बहुत कुछ मिलती-जुलती थुल्थ लिखावट में इस अभिलेख पर तीन सतरें फारसी में खुदी हुई

१. डा० जेड० ए० देसाई द्वारा लिखित शोध निबन्ध "ऐन यूनीक इन्सक्रिपशन आफ हुमायुं फ्राम बुलन्दशहर", इपीग्रैफिका इण्डिका, अरेबिक एण्ड पर्शियन सप्लिमेन्ट, १९६८, पृ०, २८-३२।

हैं, जिसके अनुसार जिस समय वावर राणा सांगा को युद्ध में पराजित कर लौट रहा था, तो उसके आदेशानुसार ९३३ हि० । १५२७-२८ ई० में कुएं का निर्माण हुआ । इस अभिलेख से ऐसा ज्ञात होता है कि खनवा के युद्ध से पूर्व वावर ने इस कुएं के निर्माण के लिए आदेश दिया और जब वह खनवा के युद्ध से वापस लौटा तब तक यह कुआँ बन कर तैयार हो गया और उस पर शिलालेख लगवा दिया गया। यह अभिलेख इस प्रकार से है :—

अनुवाद :—

(१) ईश्वर उसके राज्य एवं वादशाहत को बनाए रक्खे ज़हीरुद्दीन मुहम्मद वावर वादशाह ग़ाजी की आज्ञानुसार,

(२) ईश्वर की महान् अनुकम्पा के फलस्वरूप इस कुएं के निर्माण का कार्य नौ सौ तैंतीस हिज्री । १५२६-२७ ई० में समाप्त हुआ,

(३) जब कि (वह) काफ़िर राणा सांगा से युद्ध में विजयी तथा सफल होकर लौट रहा था ।"

(२) दूसरा अभिलेख सम्भल में स्थित वावर की मस्जिद में है। जिस पत्थर पर यह अभिलेख है उसकी लम्बाई ९६ सेन्टीमीटर और चौड़ाई ५५ सेन्टीमीटर है। बहुत ही उत्तम फ़ारसी पद्य में ९ पंक्तियों में यह अभिलेख है जिस पर यह खुदा हुआ है कि वावर के एक प्रसिद्ध वरिष्ठ अफ़सर हिन्दूबेग ने वावर के आदेशानुसार एक मस्जिद बनवाई और जो ६ दिसम्बर, १५२६ ई० को बनकर तैयार हुई । इस अभिलेख की अन्तिम पंक्ति में उक्त मस्जिद के बन कर तैयार होने का वर्ष, माह व दिन दिया हुआ है। जिस व्यक्ति ने शिलालेख में दिए गए हुए पद्य की रचना की उसके नाम का उल्लेख उसमें नहीं है । यह शिलालेख नस्ख़ लिखावट में है और इस प्रकार से है—

अनुवाद :—

(१) सर्वश्रेष्ठ वस्तुओं का भण्डार राज्य एवं धर्म की पताकाओं को फहराने वाला शान्ति एवं सुरक्षा के पंखों को फैलाने वाला,

(२) ज्ञान और कर्म की शालाओं का निर्माता,

---

१. स्वर्गीय मौलवी एम० अशरफ द्वारा लिखित निबन्ध, "इन्सक्रिपशन्स आफ इम्परर वावर" "इपीग्रैफिका इण्डिका—अरेबिक एण्ड पर्शियन सप्लिमेन्ट" १९६५, पृ०, ५०-५१ ।

जमशेद के ऐश्वर्य के समान शाह मुहम्मद बाबर सर्व यशस्वी एवं तेजस्वी, ईश्वर उसकी रक्षा करे,

(३) जब उसने भारत में अपने शासन का द्वीप जलाया, उसकी किरण ने सम्भल को प्रकाशमय किया, उससे इस मस्जिद का निर्माण हुआ,

(४) (भगवान) इसकी क्षति एवं हानि से रक्षा करें,

उसने (बाबर) ने इस विनीत सेवक को जो कि शासन का एक स्तम्भ है आदेश दिया, ।

(५) मेघावी एवं प्रज्ञ हिन्दू बेग जो कि अपने दयामय स्वभाव का नमूना है,

जबकि विश्व के राजा की आज्ञानुसार,

(६) शास्वत दैवी कृपा से और विश्व के साम्राट की आज्ञा से इस मस्जिद का (निर्माण कार्य) समाप्त हुआ।

(७) इस कार्य का वर्ष, मास तथा तिथि इस वाक्य से निकला रबी-उल-अव्वल मास का प्रथम दिवस।

३–५–अगले तीन अभिलेख पंजाब के करनाल जिले में स्थित पानीपत के हैं। पानीपत के युद्ध में सुल्तान इब्राहीम लोदी को परास्त करने और उसे मौत के घाट उतार देने के पश्चात् सम्भवतः इस विजय की याद बनाए रखने के लिए बाबर ने वहाँ एक शानदार मस्जिद का निर्माण करवाया। यह मस्जिद बाबुरी मस्जिद के नाम से प्रसिद्ध हैं। उत्तर में लाल पत्थर से बना हुआ मिहराबदार प्रवेशद्वार है। मस्जिद के अन्दर बहुत ही बड़ा आँगन है, जिसके कुछ भाग पर ईंटों का फर्श है। प्रस्तुत तीन अभिलेखों में से प्रथम तो मिहराबदार प्रवेश द्वार पर है, द्वितीय और तृतीय अभिलेख पूजागृह के सामान केन्द्रीय मिहराब पर लगे हुए हैं। प्रथम अभिलेख में यह खुदा हुआ लिखा है कि ९३५ हि०। १५२८–२९ ई० में एक मस्जिद का निर्माण हुआ और एक उद्यान लगवाया गया। दूसरा अभिलेख अपूर्ण है और उसमें केवल सम्राट का नाम एवं उसकी उपाधियों का ही उल्लेख है और तीसरे अभिलेख में मस्जिद के निर्माण की तिथि ९३४ हि०। १५२७–२८ ई० का उल्लेख है। प्रथम और तृतीय अभिलेख में उल्लेखित तिथियों में एक वर्ष का अन्तर है, और इससे यह मालूम होता है कि ९३४ हि० में मस्जिद के निर्माण तथा उद्यान लगाने का कार्य प्रारम्भ हुआ और यह कार्य अगले वर्ष पूर्ण हुआ।

---

१. वही, पृ०, ५१-५३ ।

प्रथम अभिलेख नस्ख लिखावट में दो पंक्तियों में, एक बड़े पत्थर पर है। इस पत्थर की लम्बाई ४.२८ मीटर और चौड़ाई २५ सेन्टीमीटर है तथा यह अभिलेख प्रवेशद्वार पर बनी हुई मिहराब के ऊपर लगा हुआ है। अभिलेख की भाषा फ़ारसी है, तथा पद्य की पाँच पंक्तियाँ हैं। इस अभिलेख में इस बात का उल्लेख है कि बाबर के आदेशानुसार हसन के पुत्र पहलवान मुहम्मद ने एक मस्जिद, एक कुआँ बनवाया तथा चारबाग़ नामक उद्यान ९३५ हि० । १५२८–२९ ई० में लगवाया, इस पद्य की रचना शिहाब नामक मुन्शी एवं कवि ने की। उक्त अभिलेख इस प्रकार से है:–[1]

अनुवाद—

(१) माननीय पैगम्बर के वचनानुसार, ऐश्वर्य के विधाता की आज्ञानुसार तथा स्वर्णदान बिखेरने वाले एवं सर्वसम्पन्न, शाह बाबर के आदेशानुसार,

(२) इस मस्जिद, कुएं और चार बाग़, का निर्माण हुआ,

हिज्री युग का नौ सौ पैंतीस वर्ष था,

(३) दारोगा का वह....

अद्वितीय दानी, न्यायी एवं शालिवान,

(४) ख्वाजा जहाँ पहलवान, जो कि संसार में भाग्यवान है उसका नाम है मुहम्मद पुत्र हसन जो कि योग्य तथा निपुण है,

(५) उसके आदेशानुसार कविता का लेखक मुंशी शिहाब जिसका, हृदय व्यथित है, ने अमृत के समान ईश्वर की कृपा से यह छन्द लिखा।

दूसरा अभिलेख केन्द्रीय मिहराब के ऊपर लगा हुआ है।[2] यह अभिलेख अपूर्ण है तथा कहीं-कहीं पर खराब हो गया है। इस अभिलेख की लम्बाई, २.३ मीटर और चौड़ाई २.३ सेन्टीमीटर है तथा इस पर दो पंक्तियाँ विकृत नस्ख लिखावट में खुदी हुई हैं। यह अभिलेख इस प्रकार से है :–

अनुवाद :—

(१) इस मस्जिद का शिलान्यास आदर के पात्र आकाश के उत्तम तार जहीरुद्दीन मुहम्मद बाबर बादशाह गाज़ी भगवान,

---

१. वही, पृ०, ५५।

२. वही, पृ०, ५४-५५।

(२) उसके राज्य, उसके पद और उसकी विभूति को स्थायी बनाए, (ने किया)

तीसरा अभिलेख अरबी भाषा में है और उसमें मस्जिद के निर्माण तथा अभिलेख तैयार करने वाले, मलिक सालिह के नाम का उल्लेख है। यह अभिलेख इस प्रकार से है :–

अनुवाद :—

रबी-उल-अव्वल ९३४ हि०

—लेखक मलिक सालेह[1]

(६–७) अगले दो अभिलेख रोहतक में स्थित दो पुरानी इमारतों, मस्जिद-ए-खुर्द तथा राजपूतों-की-मस्जिद के हैं।[2] मस्जिद-ए-खुर्द रोहतक के दुर्ग में हैं और राजपूतों की मस्जिद शहर में। मस्जिद-ए-खुर्द में जो शिलालेख हैं, उस अभिलेख के पत्थर की नाप ५३×२३ सेन्टीमीटर है और यह पत्थर मस्जिद के प्रवेशद्वार के ऊपर बनी हुई केन्द्रीय मिहराब पर लगा हुआ है। यह अभिलेख बहुत ही टूटे-फूटे रूप में हैं, और अभिलेख के विषय का अधिक भाग लुप्त हो गया है। इस अभिलेख में ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बाबर के राज्य काल में काज़ी हम्माद द्वारा उक्त मस्जिद बनवाई जाने का उल्लेख है। उक्त अभिलेख बहुत ही अच्छी नस्ख लिखावट में इस प्रकार से हैं :–

अनुवाद :—

ईश्वर के नाम से जो कि दयालु और कृपालु है, इस मस्जिद का निर्माण काज़ी हम्माद ने आदरणीय, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद बादशाह ग़ाजी के राज्यकाल में, परमात्मा उसके राज्य और ऐश्वर्य को चिरस्थायी करे,

नौ सौ तीस...—————— में किया।

दूसरा अभिलेख राजपूतों की मस्जिद के मुख्यद्वार के ऊपर बने हुए, केन्द्रीय मिहराब पर लगा हुआ है। यह अभिलेख १.१ मीटर लम्बा और २१ सेन्टीमीटर चौड़ा है। वास्तव में यह अभिलेख मसनद-ए-अली फीरोज़ खान के मकबरे का है। कब यह मसनद-ए-अली फीरोज खान के मकबरे में से निकाल कर मस्जिद में

---

१. वही, पृ०, ५५-५६।
२. वही, पृ०, ५६-५७।

लगवा दिया गया, यह कहना कठिन है। अभिलेख की दो पंक्तियाँ नस्ख लिखावट में हैं, जो इस बात का उल्लेख करती हैं कि बाबर के राज्यकाल में मसनद-ए-अली जलाल खान के पौत्र और मसनद-ए-अली अहमद खान के पुत्र मसनद-ए-अली फीरोज़ खान ने मकबरा बनवाया। यह अभिलेख[1] इस प्रकार से है:–

अनुवाद :—

(१) इस पवित्र इमारत का (निर्माण कार्य) समाप्त हुआ

आदर के पात्र,

(२) बाबर बादशाह गाज़ी, ईश्वर उसके राज्य एवं देश की रक्षा करें। यह है आदरणीय मसनद अली का मक़बरा,

स्वर्गीय फीरोज़ खां पुत्र मसनद अली अहमद ख़ां पुत्र जमाल ख़ां, तिथि दस मास रबी-उल-अखीर हिजरी ६३४

(८–१०) अगले तीन अभिलेख उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जिले में स्थित अयोध्या के हैं। यह तीनों अभिलेख इस प्रकार से हैं :–

अनुवाद :—

(१) शाह बाबर के आदेशानुसार जिसके कि न्याय की आधारशिला आकाश के महल का चुम्बन करती है,

(२) सौभाग्य के प्रतीक मीर बाक़ी ने इस स्वर्गवासियों की इमारत का निर्माण किया,

(३) इसके निर्माण का वर्ष है, "खैर बाक़ी' (दान अमर हैं) यह खैर बाकी (वाक्य से स्पष्ट होती हैं निर्माण की तिथि)[2]

२—मस्जिद पर लगा हुआ दूसरा अभिलेख[3] भी फारसी भाषा में है। यह अभिलेख इस प्रकार है :–

अनुवाद :—

विश्व के सम्राट की इच्छानुसार

(यह इमारत) जो कि आकाश के महलों के समान है,

सौभाग्य के प्रतीक अमीर मीर खां (ने)

---

१. वही पृष्ठ, ५७।

२. वही, पृ०, ५६।

३. रिज़वी, 'मुग़लकालीन भारत' (बाबर), पृ०, ६५६।

इस सुदृढ़ (इमारत का) निर्माण किया,
इसका निर्माता चिर जीवी है
उसी प्रकार जैसे कि देश और काल का साम्राट,[1]

३—बाबुरी मस्जिद में लगा हुआ एक तीसरा अभिलेख भी है। यह अभिलेख प्रार्थना भवन में प्रवेश करने वाले द्वार के ऊपर मध्य में बने हुए छज्जे पर लगा हुआ है तथा इस अभिलेख में फारसी में पद्य में छः पंक्तियाँ हैं। इस अभिलेख में वे ही बातें लिखी हुई हैं जो प्रथम दो अभिलेखों में उल्लेखित हैं। यह अभिलेख इस प्रकार से है:—

अनुवाद:—

दयालु और कृपालु ईश्वर के नाम पर, उसके प्रति मेरी श्रद्धा है, उसके नाम से जो कि श्रेष्ठ प्रज्ञ हैं।

(१) जो कि समस्त संसार का कर्ता है और स्वयं उत्तम है,

(२) उसकी प्रशंसा के उपरान्त (वह) प्रबल (मुहम्मद साहब) धन्य हों जो कि पैगम्बरों में सर्वश्रेष्ठ हैं और जगत में अद्वितीय हैं,

(३) संसार में बावर कलन्दर के नाम से प्रसिद्ध है जिसे कि जगत में सफलता प्राप्त हुई।

(४) उसने सप्त देशों को इस प्रकार अपने आधीन किया, जैसे कि भूमि को आकाश घेर लेता है,

(५) उसके दरबार में एक वरिष्ठ अमीर (था)
जिसका कि नाम था मीर बाक़ी द्वितीय आसफ,

(६) वह साम्राज्य का स्तम्भ था और राजनीति का विधाता, वह इस मस्जिद एवं दुर्ग का निर्माता है।

(७) भगवान वह इस लोक में चिरजीवी हो,
उसका छत्र, सिंहासन, भाग्य और जीवन भी चिरस्थायी हो,

---

१. स्वर्गीय मौलवी, एम० अशरफ हुसैन के निबन्ध, "इन्सक्रिपशन्स आफ बाबर" इपीग्रेफिका इण्डिका—"अरेबिक एण्ड पर्शियन सप्लिमेन्ट" (१९६५), पृ०, ६० ।

(८) इस (इमारत के) निर्माण की सौभाग्यशाली तिथि हैं नौ सौ पैंतीस का चिन्ह।[1]

११-१२— दिल्ली के निकट स्थित पालम गाँव के दक्षिण पूर्व में एक मस्जिद, जिसका नाम गंज़फर की मस्जिद हैं, वावर के काल की वनी हुई हैं और उस पर लगे हुए जो शिलालेख हैं उनमें वावर का नाम अंकित है।

इन दोनों अभिलेखों में से प्रथम अभिलेख की भाषा अरवी-फ़ारसी मिली-जुली हुई है। यह अभिलेख (३२×५५ सेन्टीमीटर) संगमरमर के पत्थर पर खुदा हुआ है और केन्द्रीय भवन के ऊपर वनी हुई उत्तरी मिहराव पर लगा हुआ है।अभिलेख की छः पंक्तियां वहुत ही अच्छी थुल्यलिखावट में हैं और इसअभिलेख में इस वात का उल्लेख किया गया है कि ज़हीरुद्दीन मुहम्मद वावर के राज्य-काल में नासिरुद्दीन इमाम अब्दुल्लाह के सेवक गंज़फर ने ९३५ हि०। १५२८-२९ में मस्जिद वनवाई। यह अभिलेख इस प्रकार से हैं:—

अनुवाद:—

ज़हीरुद्दीन वावर के राज्यकाल में,
मुहम्मद वावर बादशाह गाज़ी,
ईश्वर उसके साम्राज्य एवं पद की रक्षा करे,
इस मस्जिद और प्रार्थना स्थान का,
निर्माण किया नासिरुद्दीन अमीर अब्दुल्लाह[2]
के गंज़फरुल्ला नामक सेवक ने हिज्री ९३५ में।

इसी मस्जिद पर लगा हुआ दूसरा अभिलेख फारसी भाषा में है। इस अभि-लेख में थुल्थ लिखावट में खुदी हुई तीन दोहों की छः पंक्तियाँ हैं। जिस पत्थर पर यह अभिलेख खुदा हुआ है, वह संगमरमर का है और उसकी लम्बाई ३०× ५५ सेन्टीमीटर है। यह अभिलेख केन्द्रीय भवन के सम्मुख वने हुए दक्षिणी मिहराव के ऊपर लगा हुआ है। इस अभिलेख का विषय वैसा ही है, जैसा कि ऊपर दिए गए अभिलेख में है, अन्तर केवल इतना ही है कि इस अभिलेख में गंजफर के स्वामी का नाम नहीं दिया गया और इसमें पालम गांव का उल्लेख किया गया है। यह अभिलेख इस प्रकार से है:—

१. वही, पृ०, ६०-६१।
२. वही, पृ०, ६२।

अनुवाद :–

गंज़फरुल्ला के इस आकर्षणीय मस्जिद का निर्माण किया,
यहाँ आना काबा (मक्का) की यात्रा के समान लाभदायक है
पालम में यह पुनीत इमारत बनाई,
(इससे) भगवान के समक्ष उसकी प्रतिष्ठा बनी,
पुनीत मस्जिदों द्वारा उसको पुण्य प्राप्त हुआ,
उसके निर्माण की तिथि हैं, "खैर मसाजीद' अर्थात् पुनीत मस्जिदें (६३५ हि०)[1]

१३—अगला अभिलेख उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ जिले में स्थित पीलखान' नामक गांव में बनी हुई मस्जिद का है। यह अभिलेख १.३३ मीटर लम्बा और ३६ सेन्टीमीटर चौड़ा है। इस अभिलेख में तीन पंक्तियां हैं, जिनमें कि इस बात का उल्लेख है कि बाबर के शासनकाल में इस्लाम के पुत्र शैख घूरन ने ६३५ हि० । १५२८-२६ में यह मस्जिद बनवाया। अभिलेख के प्रारम्भ में बिसमिल्लाह तथा हदीस की एक पंक्ति अरबी में हैं और अभिलेख के ऐतिहासिक भाग में फारसी भाषा में कविता की दो दो पंक्तियां हैं। यह अभिलेख सुन्दर नस्ख लिखावट में खुदा हुआ है। उक्त अभिलेख इस प्रकार से हैं :—

अनुवाद—

दयालु और कृपालु ईश्वर के नाम से। श्रद्धेय पैगम्बर ईश्वर की उस पर कृपा अशीश हो, ने कहा है, "प्रार्थना की ओर शीघ्र दौड़ो इसके पूर्व कि मृत्यु तुमको ग्रस्त करले तथा शीघ्र ही पश्चाताप करो इसके पूर्व कि काल के मुंह में चले जाओ।

काबा के समान इस सार्वजनिक मस्जिद का निर्माण,
सर्वश्रेष्ठ घूरन पुत्र मुहम्मद पुत्र इस्लाम ने किया.
गणना में वह वर्ष था नौ सौ पैंतीस.
समय था पराक्रमी ज़हीरुद्दीन मुहम्मद ग़ाज़ी का।[2]

---

१. वही, पृष्ठ, ६३ ।
२. वही पृ०, ६५-६६ ।

१४—रोहतक के उत्तर पूर्व ३० किलोमीटर की दूरी पर स्थित माहम नामक छोटे से शहर में पीरज़ादे की मस्जिद में वावर के समय का एक अभिलेख है। अभिलेख लाल पत्थर का है। अभिलेख की लम्बाई ५० सेन्टीमीटर और चौड़ाई ४० सेन्टीमीटर है। इस पत्थर पर नस्ख लिखावट में पाँच पंक्तियां शिलालेख के विपय की हैं तथा यह अभिलेख पूजागृह की उत्तरी दीवार पर लगा हुआ है। इस अभिलेख में इस वात का उल्लेख है कि हिसार शादमन निवासी शैख यूसुफ के पुत्र खान यूसुफ आग़ा के द्वारा बनाई गई मस्जिद का निर्माण कार्य ५ रबी-उल-अव्वल ६३६ हि० । ७ नवम्बर, १५२६ को पूर्ण हुआ। यह अभिलेख इस प्रकार से है :—

अनुवाद :—

(१) सर्व सम्मानित एवं आदरणीय विश्व साम्राट ज़हीरुद्दीन मुहम्मद वावर,

(२) गाज़ी ईश्वर उसके राज पाट की सुरक्षा करे उसे दरवार के सेवक जिस पर सव लोग आश्रित हैं ,

(३) दुर्वल एवं विनीत खान यूसुफ आगा पुत्र शैख यूसुफ निवासी हिसार शादमान,

(४) दैवी प्रेरणा एवं ईश्वर की कृपा से ,माहिम कस्वे में, इस मस्जिद का निर्माण किया

(५) अनुग्रह पूर्वक उसके पुनीत दान को स्वीकार और ग्रहण करो जो कि उसने भगवान की कृपा एवं अनुकम्पा से पांच रवी-उल-अव्वल हिजरी ६३६ को प्रस्तुत किया है।[1]

१५—दिल्ली में ४५ किलोमीटर दूरी पर स्थित सोनपत नामक छोटे से कस्वे में वनी हुई मस्जिद के वाहर वनी हुई एक मिहराव पर लाल पत्थर का एक अभिलेख लगा हुआ है। इस अभिलेख की नाप ५२×३३ सेन्टीमीटर है। वास्तव में यह अभिलेख एक मकवरे का है किन्तु किसी ने इस अभिलेख को शेखज़ादों की मस्जिद पर लगवा दिया। उक्त अभिलेख थुल्य लिखावट में फारसी भाषा में है और अभिलेख में इस वात का उल्लेख है कि वावर के शासन

१. वही, पृ०, ६५-६६ ।

काल में महमूद खान अफ़ग़ान के भाई अलीखान ने, जो क सोनपत कस्बे का मुक्ती था, ने ६३६ हि०। १५३० ई० में अपना मक़बरा बनवाया। यह अभिलेख[1] इस प्रकार से है:—

अनुवाद :—

हे! परमात्मन (एक ईश्वर के अतिरिक्त अन्य कोई ईश्वर नहीं और मुहम्मद अल्लाह का पैगम्बर है।)

ओ! क्षमा करने वाले हमारे पापों को क्षमा कर दें परमात्मा.

मुहम्मद खां अफगान के भाई अली खां की इस कब्र को जो कि सोनपत के कस्बे का मुक्ती था,

उसको बाबर के शासनकाल में पूर्ण किया गया।
वर्ष का दूसरा मास था और सन् था ६३७ हजरी।।

---

१. वही, पृ०, ६६

ग्रन्थ-सूची

मूल ग्रंथ :

१. अबुल फजल	अकबर नामा (मूल) कलकत्ता १८७३-८७ ई०। अनुवाद एच० वेव्रिज(१८९७-१९२१ ई०)
२. अब्दुल्लाह्	तारीख़-ए-दाऊदी (अलीगढ़, १९५४)
३. अला उद्दौला कज़वीनी	नफायसुल मा-आसिर (बाबर से सम्बन्धित उद्धरणों का अनुवाद, डा० अतहर अब्बास रिज़वी, मुग़ल कालीन भारत (बाबर) अलीगढ़, १९६०।
४. अहमद यादगार	तारीख़-ए-सलातीन अफग़ाना (कलकत्ता १९३९)
५. इस्कन्दर वेग तुर्कमान	तारीख़-ए-आलम आरा-ए-अब्बासी (इस्फहान)
६. ख्वान्द मीर	हबीब-उस-सियर
७. ख्वाफी खान	मुन्तखब-उल-लुबाब, भाग १, (कलकत्ता १८६८ ई०)
८. मुल्ला अहमद इब्न नस्त्रुल्लाह् देवली, टट्टवी, आसफ खां आदि।	तारीख़-ए-अलफी (बाबर से सम्बन्धित उद्धरणों के अनुवाद के लिए देखिए, डा० अतहर अब्बास रिज़वी कृत, "मुग़ल कालीन भारत" (बाबर)
९. गुलबदन बेगम	हुमायूँ नामा (लन्दन १९०२) (अनुवाद ए० एस० बेव्रिज)
१०. निजामुद्दीन अहमद	तबकात-एं-अकबरी (मूल) (कलकत्ता १९२७) अनुवाद, बी० डे० (कलकत्ता १९३६)

११. फ़िरिश्ता, मुहम्मद, क़ासिम हिन्दू शाह	तारीख़-ए-फ़िरिश्ता (नवल किशोर प्रेस, लखनऊ)
१२. बदायुनी, अब्दुल क़ादिर	मुन्तख़ब-उल-तवारीख़ (अनुवाद)
१३. मुश्ताकी, शेख रिज़्क़ुल्लाह	वाक़यात-ए-मुश्ताकी (ब्रिटिश म्यूज़ियम, लन्दन)
१४. मुहम्मद मासूम	तारीख़-ए-सिन्ध (पूना, १९३८)
१५. हसन बेग रूमलू	एहसान-उत-तवारीख़ (अनुवाद) (बड़ौदा, १९३१)
१६. हैदर मिर्ज़ा दोग़लत	तारीख़-ए-रशीदी (अनुवाद) डेनिसन रौस।
१७. हाजी-उद्-दबीर	जफरुल वालेह (लन्दन, १९१०)
१८. बाबर, ज़हीरुद्दीन मुहम्मद	बाबर नामा (अनुवाद, श्रीमती ए० एस० बेव्रिज, लन्दन, १९२२)

हिन्दी :

१. रिज़वी, सैय्यद अतहर अब्बास	मुग़ल कालीन भारत (बाबर) अलीगढ़, १९६०
२. कविराज श्यामल दास	वीर विनोद
३. गौरी शंकर हीरा शंकर ओझा	राजपूताने का इतिहास (अजमेर, १९२८)
४. जगदीश सिंह गहलोत	राजस्थान का इतिहास (जोधपुर, १९३७)
५. जी० एन० शर्मा	राजस्थान का इतिहास, खण्ड १ (आगरा, १९७१)
६. बाँकीदास	बाँकीदास की ख्यात (जयपुर)
७. मुहणोत नैणसी	मुहणोत नैणसी की ख्यात, भाग १–२, (हिन्दी अनुवाद) (काशी नागरी प्रचारिणी सभा, बनारस)

ENGLISH :

Avasthi, R.S.	"The Mughal Emperor Humayun" (Allahabad, 1967).
Beveridge, A.S.	"Babur Nama" (Trans.) (London, 1922).
	"Humayun Nama" (Trans.) (London, 1902).
Beveridge, H.	"Akbar Nama of Abul Fazl, (Trans.) (Calcutta, 1897-1921).
Banerji, S.K.	"Humayun Badshah" (Oxford University Press, 1938).
Chaudhery, M.L.	"State and Religion in Mughal India."
Caldecott, R.M.	"The Life of Babur, the Emperor of Hindustan" (London, 1844).
Chopra, P.N.	"Some Aspects of Medieval Indian Culture" (Ranchi, 1961).
Dorn	"The History of the Afghans" (English Translation of Niyamat Ullah's Makhzan-i-Afghani) (J. Murrey, 1829).
Erskine, William	"The History of India" (Babar & Humayun) (London, 1854).
Elliot, H.M.	"History of India as told by her own historians" (Vol. IV and V, London, 1872, 1873).

Eliphinstone	"History of India."
Edwards, S.M.	"Babur, Diarist and Despot" (London, 1926).
	"Encyclopedia of Islam" (London, 1913-37).
Ghani, Abdul	"Persian Language and literature at the Mughal Court" (Baber & Akbar) (Alld. 1929).
Grenard, Ferdinand	"Baber, the first of the Mughals" (London, 1931).
Hasan, Mohibul	"Historians of Medieval India" (Meerut).
John Briggs	"The History of the Rise of Muhamdan Power in India" (London, 1829).
Khan, Iqtidar Alam	"Mirza Kamran" (Asia, 1964).
Lal, K.S.	"Twilight of the Delhi Sultanat" (Asia, 1963).
	"Studies in Medieval Indian History (Delhi, 1966).
Latif, Sayyid Muhammad	"Agra, Historical and Descriptive" (Calcutta, 1896).
Nijjar, Bakshish Singh	"The Punjab Under the Great Mughals" (Bombay, 1968).
Pandey, A.B.	"The First Afghan Empire" (Calcutta, 1956).
Prasad, Ishwari	"Life and Times of Humayun" (Bombay, 1955).
Qanungo, K.R.	"Sher Shah" (Calcutta, 1921).
	"Sher Shah and His Times",

Rizivi, Athhar Abbas — "Muslim Revivalist Movements of Northern India" (Lucknow, 1965).
Mughal Kalin Bharat (Baber) (Aligarh 1960)

Sharma, S.R. — "Rise and fall of the Mughal Empire" (Bombay, 1940).
"The Religious Policy of the Mughal Emperors" (Asia, 1962).
"Studies in Medieval Indian History."
"A Bibliography of Mughal India."

Srivastava, A.L. — "The History of India" (Agra, 1964).

Srivastava, H.S. — "Humayun" (Agra).

Sharma, G.N. — "Mewar and the Mughal Emperors" (Agra, 1962).

Stanley, Lane Pool — "Baber" (Delhi, 1971).
"Medieval India Under the Muhamdan Rule" (Delhi, 1963).

Siddiqi, I.H. — "History of Sher Shah Suri" (Aligarh, 1971).

Saran, P. — "Islamic Polity" (Allahabad).

Sarda, Harbilas — "Maharana Sanga" (Delhi, 1970).

Sankhdhar, B.M. — "Sambhal" (A Historical Survey) (Delhi, 1971).

Tod, James — "Annals and Antiquities of Rajasthan" (Oxford, 1829).

Tripathi, R. P. — "Some Aspects of Muslim Administration" (Allahabad, 1936).

	"Rise and Fall of the Mughal Empire" (Allahabad, 1955).
Vambrey, Arminus	"History of Bokhara" (London, 1873).
Williams, Rushbrook	"An Empire Builder of the Sixteenth Century" (Delhi).

List of articles:

Abdullah, Ali	The Self Revelation of Babur (Journal of U. P. Historical Society, 1926 (ii) p. 61-82).
Beveridge, A. S.	1. Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Baber's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Societl, London, 1900, p. 439-480). 2. Further Notes on the Manuscripts of the Turki Text of Baber's Memoirs (Journal of the Royal Asiatic Society, London, 1902, p. 635-59). 3. The Hyderabad Codex of the Baber Nama or Waqiyat-i-Baburi (Journal of Royal Asiatic Society, London, 1906, p. 741-62). 4. The Hyderabad Codex of the Babur Nama or Waqiyat-i-Baburi (Journal of Royal Asiatic Society, London, 1906,

p. 79-93).
5. Further Notes on Babur Nama Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1914, p. 440-49.
7. The Babur Nama (Journal of Royal Asiatic Societl, Bengal 1911, p. 66-74).
8. Babur's Wasiyat Nama-i-Makhfi (Journal of Royal Asiatic Society, Lonodn, 1923, p. 801-9).

Blochman
1. Inscription at Sambhal Mosque (Journal of Royal Asiatic Society Bengal, May 1873, p. 98).

Beveridge, H.
1. The Baber Nama Fragments (Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1908, p 39-44).
2. A passage of the Turki Text of Babur Nama, Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1911, p. 221-226.
3. A dubious passage on Ilminishky edition of Baber Nama, Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1911, Vii pt. I, p. 5-7).
4. A letter from Emperor Babur to his son Kamran, Journal

of Royal Asiatic Society, Bengal, 1919, XV, p. 329-334).

5. The Emperor Babur (Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, Vol. V 1995, p. 137-138).

Banerji, S. K.

1. Babur and the Hindus (Journal of U. P. Historical Society, 1936 (ii) p. 70-96.
2. Some of the women relations of Babur (Islamic Culture, 1937 (i) p. 53-60).
3. Post war settlements in Doab, Malwa and Bihar. Proceedings of Indian History Congress, 1946.

Husain Ashraf

1. Inscriptions of Emperor Babur, Epigraphica Indo-Moslemica, 1965, p. 49.

Khan, Ahsan Raza

The settlements of Baber's conquests in Hindustan. Proceedings of Indian History Congress, 1965.

Prasad, Gur

1. Babur's Mosque at Sambhal, Journal of Royal Asiatic Society, 1875, p. 98-99.

Sherwani, H. K.

1. Babur's Inscriptions near Aligarh
Journal of Indian History 1932, p. 190.

Sen, S.N. — A note on the Alwar Manuscript of Waqiyat-i-Baburi (Islamic Culture, 1945, XIX, p. 270-71).

Suri, Pushpa — Babur (Historians of Medieval India, edited by Prof. Mohibul Hasan, Meerut).

S. S. A. Rahman — Babur ki Maut (Maaruf, 1939 (ii) p. 113-129).

Sharma, S.R. — The Story of Babur's death. Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1928, p. 399,

Saksena, B.P. — The Ideals of the Mughal Sovereigns.

Sayyid Naimuddin — Some Unpublished Verses of Babur (Islamic Culture, 1956).

Williams, R. F. Rushbrook — A new Persian authority on Babur, Journal of Royal Asiatic Society, Bengal, 1916 p. 297-98.

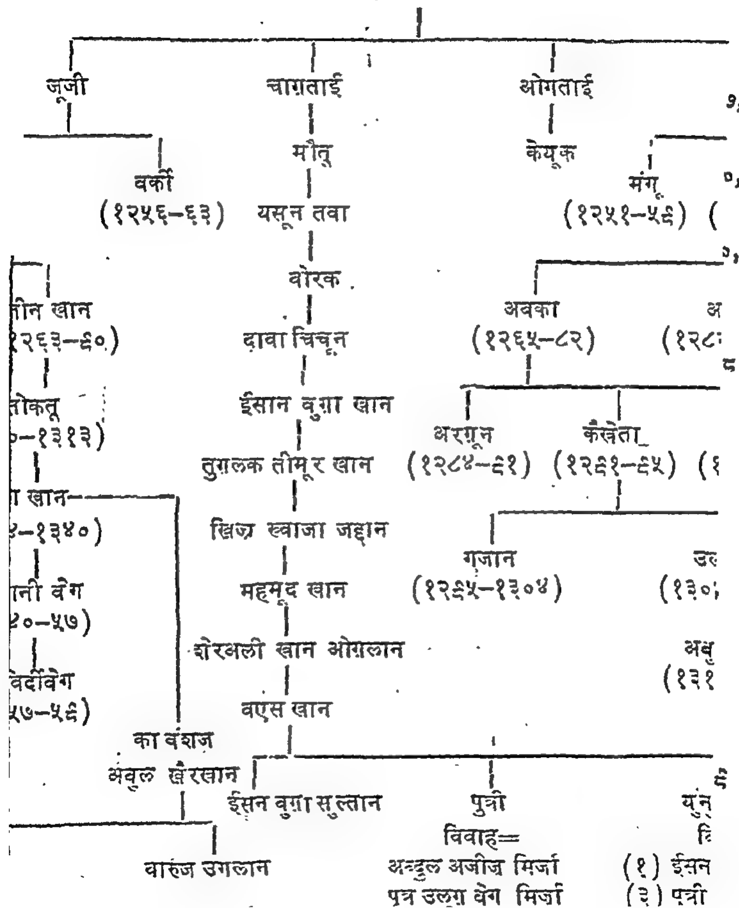
District Gazetteers:

1. Bengal District Gazetteers (Vol. XII) 1908.
2. Faizabad District Gazetteer.
3. Banaras District Gazetteer.

Journals:

1. Journal of Royal Asiatic Society, London.
2. Journal of Royal Asiatic Society, Bengal.
3. Journal of Islamic Culture.

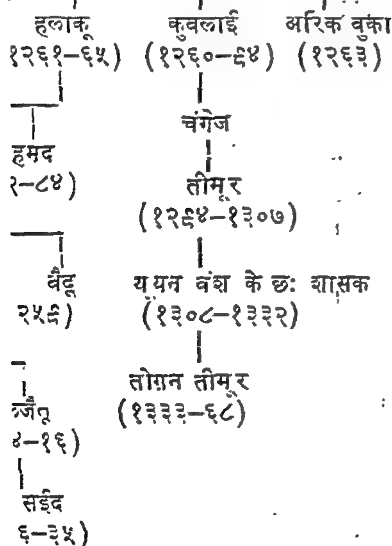
4. Journal of U.P. Historical Society.
5. Proceedings of the Indian History Congress.
6. Journal of Indian History.
7. Medieval Indian Quarterly, Aligarh.
8. Twentieth Century.
9. Calcutta Review.
10. Archeological Survey of India Reports.
11. Indian Review.
12. Current Studies, Patna College Magazine.



चंगेज़ खान
जूजी
चाग़ताई
ओगताई
बर्का
(१२५६–६३)
मौतू
यसून तवा
बोरक
दावा चिचून
ईसान बुग़ा खान
तुग़लक तीमूर खान
ख़िज्र ख्वाजा जहान
महमूद खान
शेरअली खान ओग़लान
वएस खान
केयूक
मंगू
(१२५१–५९)
अबका
(१२६५–८२)
अरग़ून
(१२८४–९१)
कैखेता
(१२९१–९५)
ग़ज़ान
(१२९५–१३०४)
का वंशज
अबुल ख़ैरखान
ईसन बुग़ा सुल्तान
पुत्री
विवाह=
अब्दुल अजीज़ मिर्ज़ा
पुत्र उलग़ बेग मिर्ज़ा
बारुज उगलान

4.
5.
6.
7.
8.
9.
10.
11.
12.

वंशावली (२)



स खान
वाह—
दौलत बेगम (२) पुत्री, शाह सुल्तान मुहम्मद (बदख्शाँ)
अली शेर बेग (४) शाह बेगम

अनुक्रमणिका